बटुकभैरवसपर्या

बटुकभैरव-उपासना का साङ्गोपाङ्ग विवेचन

डॉ० रामप्रिय पाण्डेय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
604

⁂

बटुकभैरवसपर्या

बटुकभैरव-उपासना का साङ्गोपाङ्ग विवेचन

लेखक एवं सम्पादक

डॉ० रामप्रिय पाण्डेय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण या किसी भी विधि (जैसे-इलेक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

बटुकभैरवसपर्या

पृष्ठ : 44+724
ISBN : 978-93-83721-74-0

प्रकाशक
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001
दूरभाष : +91 542-2335263
email : csp_naveen@yahoo.co.in
website : www.chaukhamba.co.in

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण 2016 ई०
मूल्य : ₹ 850.00

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : +91 11-23286537; 32996391
email : chaukhambapublishinghouse@gmail.com

●

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113, दिल्ली 110007

●

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

सम्पादकीय

भीरुणामभयप्रदो भवभयाक्रन्दस्य हेतुस्ततोः,
हृद्धाम्नि प्रथितश्च भीरवरुचामीशोऽन्तकस्यान्तकः।
भीरं वायति यः स्वयोगिनिवहस्तस्य प्रभूर्भैरवो,
विश्वस्तिन्मभरणादिकृद्विजयते विज्ञानरूपः परः॥

भीरुओं (मरण रूपी भय से ग्रस्त लोगों) को अभय प्रदान करनेवाले, भव(सांसारिक) भयों को आक्रान्त करनेवाले, हृद् अन्त:करण में प्रकाश विमर्शात्मक स्वरूपवाले, काल का वारण करनेवाले, योगियों में स्वस्वरूप से प्रकट होनेवाले, इस समस्त विश्वान्धकार पर विजय प्रदान करानेवाले परम विज्ञान रूप भैरव ही है।

साक्षात् परमशिव जो निष्कल स्वरूप से सर्वत्र व्याप्त हैं उनका ही सर्वरूपात्मक लघु रूप ही वटुक भैरव है अर्थात् परमशिव ही छोटे रूप में वटुकभैरव रूप है।

सर्वत्रव्यापितं ब्रह्म शिवभावेनभावितं।
तैः स्वरूपं सकलं वटुकभैरवरूपिणम्॥

इन भैरव की उपासना मुख्यत: तीन रूपों में होती है, जिसे ही भाव कहते है, इन्हीं तीनों भावों की उपासना मनुष्यों में से तीनो मलों को नष्ट करतीं हैं। ये भाव क्रमश: पशु, वीर तथा दिव्यादिभावों के रूप में कहे गये हैं। पाशविक मनुष्यों द्वारा की जानेवाली पशुभाव उपासना वीरभाव के लिए प्रेरित करती है, वीरभावाप्रवृत्ति से मनुष्य में पशुभाव की परिसमाप्ति हो जाती है तथा कार्मणमल नष्ट हो जाते हैं। वीरभावानुसरण से मनुष्य में दिव्यभावानुसरण की प्रवृत्ति बनती है तथा मायीवमल की परिसमाप्ति हो जाती है और अन्त में जब साधक क्रमिक विकाश को प्राप्त करता हुआ दिव्यभाव में प्रवृत्ति होता है तो उसमें से आणवमल परिसमाप्त हो जाते हैं और साधक अपने स्वस्वरूपत्व को प्राप्त कर लेता है तथा दिव्याभाव में विचरण करने लगता है उसे ही जीवनमुक्त कहा जाता है। उसमें शाप देने तथा अनुग्रह करने का सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है। उसमें समस्त सिद्धियाँ आ जाती हैं और साधक स्वयं भैरवरूप हो जाता है।

साधक में से मृत्यु रूपी भय पूर्ण रूप से नष्ट हो जाये और उसे पूर्णत: सच्चिदानन्द की प्राप्ति हो जाये इसके लिए एकमात्र साधन वटुकभैरवोपासना ही है। साधक किसी भी तरह से विना वटुकभैरवोपासना किये इस संसार के जन्ममरण से कभी भी मुक्त नहीं हो

सकता है। किसी भी मनुष्य के लिए मरण का भय स्वाभाविक है, क्योंकि मनुष्य ही नहीं अपितु समस्त सृष्टि के प्राणी मात्र नित्य मरणधर्मा है, जो जन्म लेता है वह निश्चय ही मरता है और जो मरता है वह निश्चय ही पुन: जन्म लेता है।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥

इस जन्म मरण की गति से एकमात्र मुक्ति दिलानेवाला उपाय श्रीमद्बटुकभैरव की उपासना ही है। इसके अतिरिक्त मुक्ति का साधन कोई भी साधना या उपसना नहीं है।

उपासना के दो भेद होते हैं अर्चना तथा जप। अर्चना के पाँच अङ्ग होते हैं, पूजन, कवच, सहस्रनाम, पटल तथा पद्धति पाठ। जप के भी पाँच अङ्ग होते हैं, जप, हवन, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन। दोनों के सङ्कलन करने पर उपासना के कुल दश अङ्ग हो जाते हैं। जो किसी भी साधना में अनिवार्य है, बिना दशाङ्ग अनुसरण किये, किसी भी उपासना का कोई फल नहीं मिलता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीमद्बटुकभैरव की साङ्गोपासना में दशो अङ्गों का समावेश किया गया है। इस पद्धति का आश्रय ग्रहण करने पर साधक को अन्यान्य ग्रन्थों से कोई सहायता नहीं लेती पड़ती है। कोई भी साधक अपने गुरु से श्रीमद्बटुकभैरवोपासना की दीक्षा-शिक्षा ग्रहण करने के बाद साधक केवल इस पुस्तक में बतलाये हुए क्रम से, विधि-पूर्वक कार्य सम्पादन कर, पूर्ण फल की प्राप्ति कर सकता है इसमें कोई संशय नहीं है।

सन्तजनों की प्रेरणा से वटुकभैरवसपर्या ग्रन्थ का लेखन स्वयं महाभैरव की कृपा से सम्पन्न हुआ, इस उपासना पद्धति के अनुसरण करने पर मनुष्य के तीनों प्रकार के आणव, मायिक तथा कार्मिक मल एक ही बार में नष्ट हो जातें हैं, साधक में से पशुता पूर्णत: नष्ट हो जाती है तथा उसे पूर्णत: फल की प्राप्ति हो जाती है। वह पूर्णभैरव स्वरूप ही बन जाता है।

प्रस्तुत प्रबन्ध मनुष्यों की दयनीय अवस्था से रक्षा के लिए तथा उनका भला करने के लिए श्रीपितृचरण स्व० प्रोफेसर वायुनन्दन पाण्डेय जी को समर्पित है, जिसका प्रकाशन श्रीनवनीत गुप्त जी प्रकाशक, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन के द्वारा जनकल्याणार्थ किया गया, सभी जन इसके माध्यम से अपने जीवन को आपत्तिविपत्तियों से मुक्त कर शान्तिमय सुख प्राप्त करें। ग्रन्थ को सरलतम और उपयोगि बनाने में यत्र तत्र विषय विस्तारित हो गया है जो लोककल्याण की भावना से लोकोपयोगी बनाने का प्रयासमात्र है। नित्यं शुभं भवतु।

श्रावणशुक्लापञ्चमी, संवत् २०६९ वि० **रामप्रिय पाण्डेय**

श्रीगुरोः स्तुतिकुसुमाञ्जलिः

काश्यामुपेत्यविधिवत् तपसाबलेन, प्राप्तश्रियः सकलशास्त्रविचारदक्षान्।
अध्यापनेन सततं कृतशास्त्ररक्षान्, श्रीवायुनन्दनबुधान् प्रणमामि नित्यम्॥१॥
पूर्वं नमस्त्रिमुनिशास्त्रविचक्षणाय, साहित्यमर्मविदुषे कृतिने ततश्च।
मीमांसया दलितदुर्व्यसनाय पश्चात्, श्रीवायुनन्दन! महामतये नमस्ते॥२॥
शास्त्राण्यधीत्य बहवः कटुकैर्विवादैर्ग्रस्तान्तरास्तु समयं क्षपयन्ति नित्यम्।
श्रौतप्रभाविलसिता गुरवो मदीयाः श्रीविश्वनाथपदभक्तिजुषः किलासन्॥३॥
साहित्यशास्त्रसुरवृक्षविवर्धनेन, तस्यामृताभफलदानमनोहरेण।
सत्रेण भारतधरा किल यस्य भाति, तस्मै बृहस्पतिनिभाय नमो नमस्ते॥४॥
ये ब्रह्मवंशविभुताकलितान्तरङ्गा, आचारतश्च भृतभूरिविभूतिभङ्गाः।
गङ्गावगाहनशिवार्चनतत्परास्ते, श्रीवायुनन्दनबुधा गुरवो जयन्ति॥५॥
भस्मत्रिपुण्ड्रविलसच्छुभविग्रहाणां, विद्याविलासविगलन्मधुवाग्झराणाम्।
पाण्डेयवर्यविदुषां पदयोर्नतिर्नो, भूयादहर्निशममङ्गलनाशनाय॥६॥
काश्यां विपश्चिदतुलासु सभासु सभ्या, यत्सन्निधौविधृतमौननिभा अभूवन्।
तान् विश्वनाथपदपङ्कजभृङ्गभूतान्, श्रीवायुनन्दनगुरून् सततं स्मरामि॥७॥
जाज्वल्यमाननिजपावनविग्रहेण, लोकोत्तरेण महसा च तपोबलेन।
श्रीविश्वनाथपदमाशुगतं भवन्तं, ध्यात्वा पितः वयमहो कृतिनो भवामः॥८॥

परमपूज्यश्रीपितृचरणगुर्वर्पणमस्तु

⁂

श्रद्धासुमनाञ्जलीः

साहित्योदधिमज्जितोऽतिगहनान् ग्रन्थान् समालोचयन्,
शास्त्राभ्यासपरायणः प्रतिदिनं स्वाध्यायशीलः सुधीः।
शृङ्गारादिरसैः सदार्द्रहृदयो विद्वद्वरेण्याऽग्रणीः,
वन्द्यः पण्डितवायुनन्दनकविर्विश्वेश्वरोपासकः॥१॥
रामे भक्तियुतो यथाऽमितबली वायोः सुतः कीर्तिमान्,
रामाभ्यां समधीतवाननलसः शास्त्रं तथा बुद्धिमान्।
प्राप्नोद् व्याकरणे पटुत्वमचिरं विद्योतितो ज्योतिषा,
सत्संस्कारमथाग्रहीद् द्विजकुलस्याप्यत्र बाल्ये ब्रती॥२॥
विद्याम्भोधिनिमज्जनोद्धुरमना सारस्वतः साधकः,
काशीं मुक्तिकरीमुपेत्य विदुषः कालीप्रसादादसौ।
विज्ञातुं समुपस्थितः प्रमुदितः शास्त्रार्थतत्त्वं परं,
पातुं काव्यसुधारसं च रुचिरं श्रेयस्करं दुर्लभम्॥३॥
काश्यां संस्कृतशिक्षणेऽतिनिपुणोऽयं विश्वविद्यालये,
आचार्येति प्रतिष्ठिते गुरुपदे संशोभितोऽभूदहो।
आदर्शञ्च समस्तशिक्षकगणस्यादर्शयन् सुन्दरम्,
छात्राध्यापनतरः समभवद् विजयते वाणीसुतः सात्त्विकः॥४॥
श्रीवायुनन्दन-पाण्डेयं ज्ञानमार्तण्डरूपिणम्।
आचार्यप्रवरं भक्त्या भूयो भूयो नमाम्यहम्॥५॥

श्रद्धासुमनाञ्जलिः श्रीगुर्वर्णणमस्तु

भूमिका

भैरव तत्त्व जिज्ञासा—भया रवतीति भैरवः। भिया सर्वं रवयति। जिससे समस्त भय समाप्त हो जायें अथवा जो समस्त भयों को रव(समाप्त) कर दे उसे ही भैरव कहते हैं।

भैरव का स्वरूप क्या है, उनका तत्त्वात्मक स्वरूप क्या है, यह जानने के लिए समस्त शैव, वामादि शास्त्रों का ज्ञान आवश्यक है, विना इन शास्त्रों के ज्ञान के भैरव पदार्थ बोध असम्भव है। इसकी जिज्ञासा में भैरव का वास्तविक स्वरूप क्या है? क्या यह स्वरूप शब्द राशि कलात्मक ब्रह्म है? अथवा क्या नव तत्त्वात्मक है? अथवा क्या यह सच्चिदानन्दस्वरूप पूर्ण ब्रह्म भाव भूत पञ्चकृत्यं स्वभाव भूत चैतन्य तत्त्व नर शक्ति और क्या शिवात्मक रूप से त्रिशिरोभेदभिन्न रूप का है? अथवा मातृ, मान और मेय व्यापार रूप जन्य इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्ति स्वरूप है? अथवा क्या नाद स्वरूप है? अथवा अङ्गभूत अर्द्धचन्द्र निरोधात्मक व्यापार रूप है? अथवा षट् चन्द्राकार, षट् पत्रात्मक चक्रों में स्थित मातृस्वरूप है, जो कि स्वरवर्णों से रहित है? अथवा कुण्डलिनी स्वरूप है?

किं रूपं तत्त्वतो देव? शब्दराशिकलामयम्।
किं वा नवात्मभेदेन भैरवे भैरवाकृतौ॥
त्रिशिरोभेदभिन्नं वा किं वा शक्ति त्रयात्मकम्।
नादविन्दुमयं वापि किं चन्द्रार्धनिरोधिकाः॥
चक्रारूढमनच्कं वा किं वा शक्तिस्वरूपकम्।
परापरायाः सकलं अपरायाश्च वा पुनः॥
पराया यदि तद्वत् स्यात् परत्वं तद्विरुध्यते।
न हि वर्णविभेदेन देहभेदेन वा भवेत्॥
परत्वं निष्कलत्वेन सकलत्वेन न तद्भवेत्।

क्या भैरव अकार से लेकर क्षकार तथा वर्णमाला रूप है? जो कि सर्वोत्कृष्ट आनन्द की इच्छा विमर्शशक्ति के द्वारा सारे संसार को अपने भीतर समाहित करती हुई वर्णमाला के रूप में प्रकट होती है तथा विमर्श शक्ति के नाम से कही जाती है अथवा प्रकृति से लेकर शिव पर्यन्त विचार युक्त तथा त्रिशिरोभेद त्रिशिरतन्त्र के अनुसार मनुष्य शक्ति और शिव ये त्रितत्त्वात्मक है, जिसने संसार को अपने भीतर समाहित कर लिया है?

भैरव न तो नवात्मा (नवशक्तिस्वरूप) हैं, न शक्तित्रयस्वरूप हैं, न वे त्रिशिरा हैं, न नादविन्दुस्वरूप हैं, न अर्द्धचन्द्रस्वरूप हैं और न निरोधिका(स्पष्ट रेखा) हैं, न षट् चक्रात्मक हैं और न वर्णचक्रात्मक हैं और न कुण्डलिनी आदि शक्तिस्वरूप ही हैं।

तत्त्वतो न नवात्मासौ शब्दराशिर्न भैरवः।
न चासौ त्रिशिरा देवो न च शक्तित्रयात्मकः॥
नादविन्दुमयो वापि न चन्द्रार्धनिरोधिकाः।
न चक्रक्रमसम्भिन्नो न च शक्तिस्वरूपकः॥

क्रम सृजन अवस्था में स्वातन्त्र्यशक्ति, क्रमसंसिसृक्षा और क्रमात्मकता ये व्यापक परमात्मा की त्रिमूर्तियाँ हैं। ये तीनों ही शक्तियाँ त्रिदेवी हैं, अतः अपराशक्ति और परापराशक्ति का स्वरूप समान होने के कारण इन दोनों में परस्पर भेद प्रक्रिया मात्र है अर्थात् एक ही परमात्मा तत्त्व जो स्वयं प्रकाश है जैसे दर्पण में प्रतिविम्बित सम्पूर्ण संसार दर्पण से भिन्न नहीं होता उसी प्रकार आत्मा और शरीर तथा जगत् की एक्यता है, यह आत्मा शरीर में होने से शरीर से भिन्न नहीं है।

भैरव का सकल और निष्कल जैसा स्वरूप केवल विकल्पात्मक है, यह भैरव का वास्तविक स्वरूप नहीं है, भैरव के स्वरूप का भेद तो केवल काल्पनिक है। जिसका हेतु मात्र यथार्थ की योग्यता निर्मित करना मात्र है। यथार्थ योग्यता के बाद ही साधक परम भैरव के स्वरूप का साक्षात्कार करते हैं।

दिशा और काल के व्यापार से मुक्त, दूर या समीप के भेद से रहित, प्रतिपादन के अयोग्य, यह तत्त्वतः अनिर्वचनीय हैं। वास्तव में अन्तःकरण के भीतर ही भीतर अपने अनुभव मात्र से आनन्द देनेवाली और सङ्कल्प विकल्प से मुक्त होकर अनुभूत होनेवाली जो परिपूर्ण आकारवाली अवस्था है वही भैरवी शक्ति है, उस शक्ति को धारण करनेवाला तथा इस विश्व का भरण करनेवाला ही विमलरूप भैरव का है।

दिक्कालकलनोन्मुक्ता देशोद्देशाविशेषिणी।
व्यपदेष्टुमशक्यासावकथ्या परमार्थतः॥
अन्तः स्वानुभवानन्दा विकल्पोन्मुक्तगोचरा।
यावस्था भरिताकारा भैरवी भैरवात्मनः॥
तद्वपुस्तत्त्वतो ज्ञेयं विमलं विश्वपूरणम्।

भैरव की यही अवस्था परा है, जिसे पर होने के कारण परादेवी कहा जाता है, जैसे शक्ति और शक्तिमान में सदैव अभेद रहता है, उसी प्रकार परमात्मा की शक्ति उस परमात्मा के धर्म(सर्वज्ञत्वादि) से युक्त होने के कारण परमात्मस्वरूपिणि परादेवी कहलाती है।

एवं विधा भैरवस्य यावस्था परिगीयते।
सा परा पररूपेण परादेवी प्रकीर्तिता॥

शक्तिशक्तिमतोर्यद्वत् अभेदः सर्वदा स्थितः।
अतस्तद्धर्मधर्मित्वात् परा शक्तिः परात्मनः॥

जैसे वह्नि विषय बोध में वह्नि की दाहकता शक्ति वह्नि के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होती है, उसी प्रकार यह ज्ञान की सत्ता में प्रवेश करने के लिए निमित्त मात्र है, ज्ञानसत्ता में वह्नि को जानने की इच्छा का अनुभव करने पर जो वह्नि विषयक ज्ञान की जिज्ञासा में वह्नि की दाहकता का अनुभव के पश्चात् ही निर्णय कर पाता है, कि 'यह वह्नि है'। वह्नि विषयक प्रथमोपलब्धि दाहात्मिका शक्ति ही होती है, उसके बाद ही वह्नि की अन्य क्रियाओं का बोध होता है। कहा भी गया है कि फल के भेद से जिसमें भेद आरोपित किया जाता है, ऐसे पदार्थ स्वरूप ही शक्ति का स्वरूप है।

फलभेदादारोपितभेदः पदार्थात्मा शक्तिः।

जो साधक इस पराशक्तिस्वरूप अवस्था में प्रवेश करता है, तो आगे के साधनात्मक उपायों से अणुरूप का उपदेश प्राप्त कर लेता है, तब निर्विभाग भावना दृढ़ होती है, उस बल को प्राप्त कर जीव शिवस्वरूप हो जाता है। शिव की यह पराशक्ति शिवतत्त्व में प्रवेश करने का प्रधान द्वार है अर्थात् पराशक्ति की प्राप्ति से ही शिवत्त्व प्राप्त होता है।

शक्त्यावस्थाप्रविष्टस्य निर्विभागेन भावना।
तदासौ शिवरूपी स्यात् शैवी मुखमिहोच्यते॥

जिस प्रकार प्रकाश से दीपक का और किरणों से सूर्य की दिशा का पता चल जाता है, उसी प्रकार शक्ति के द्वारा शिव का बोध होता है अर्थात् शिवत्व प्राप्त होता है।

यथालोकेन दीपस्य किरणैर्भास्करस्य च।
ज्ञायते दिग्विभागादि तद्वच्छक्त्या शिवः प्रिये॥

ऊर्ध्व गमन करनेवाला वायु ही प्राण कहा जाता है, यह प्राण वाह्य द्वादशान्त से हृदय गत होता है और जब यही वायु हृदय से वाह्य द्वादशान्त के लिए गमन करता है उसे अपान की संज्ञा से उच्चरित करते है। इन प्राण और अपान का विषयों से निरोध कर निर्विषयक स्पन्दन ही परा कहलाता है, यह अन्तः और वाह्य दोनों का उन्मेषक है, यह दोनों उन्मेष वाह्य और आभ्यान्तर स्थान, वाह्य द्वादशान्त तथा हृदय दोनों में भरने के कारण जो भरितावस्था है, यही भैरव की अभिव्यक्ति है।

यह प्राण ही जीव संज्ञक है, यह जीव ही वाह्य द्वादशान्त से हृदय पर्यन्त जब गमन करता है तो प्राण संज्ञक होता है और जब यही जीव हृदय से वाह्य द्वादशान्त पर्यन्त गमन करता है तो अपान संज्ञक होता है। यह प्राण और अपान की गमनागमन क्रिया का सूक्ष्म स्वरूप ही परा कहलाती है। यह नित्य श्वास-प्रश्वास के द्वारा अक्षरोच्चारण करती हुई विद्यमान है। यह निर्गम तथा प्रवेश रूप प्राणापान से रहित केवल स्पन्दोत्पत्ति मात्र जिसका स्वरूप है वह पराशक्ति कहलाती है।

ऊर्ध्वो प्राणो ह्यधो जीवो विसर्गात्मा परोच्चरेत्।
उत्पत्तिद्वितयस्थाने भरणाद्भरितास्थितिः॥

प्राण प्राणमय है और अपान अपानमय है। यह प्राणापान का आगमन निर्गमन ही आपूरण कहलात है। इसी को भरिता स्थिति या पराशक्ति(भैरवी) के नाम से कहा जाता है। यह प्राणापान की उत्पत्ति बाह्य-आभ्यान्तर उत्पादन से हृदय और बाह्यद्वादशान्त में भरने के कारण ही भरिता कहलाती है और नित्य उन्मीषित होने के कारण स्फुरण करती हुई भैरवीशक्ति, भरितास्थिति या भैरवताभिव्यक्ति के नाम से उच्चारित की गयी है।

सम्पूर्ण इन्द्रियों में विषयों का संचार करनेवाला प्राणप्रवाह जब हृदय से ऊर्ध्वद्वादशान्त को गमन करता है तो उसे ही ऊर्ध्व कहा जाता है तथा जब यही प्राण समस्त विषयों में प्रवेश पा लेता है तो जीव कहा जाता है और जब ऊर्ध्व द्वादशान्त से हृदय की ओर गमन करता हुआ वाह्य गमन करता है तो अपान कहलाता है। यही भीतर की ओर गमन करता हुआ वायु ही पराशक्ति कहलाता है। अत: ग्राह्य सूक्ष्म प्राणप्रवाह को ग्रहण करनेवाला स्थान हृदय तथा ग्राहक उत्पत्ति स्थान को ग्रहण करनेवाला द्वादशान्त कहलाता है तथा दोनों स्थानों में संचार करनेवाला वायु ही उन्मेष कहा जाता है।

इस प्रकार प्राण और अपान को भरने के कारण ही भरिता शक्ति कहलाती है। प्राण और अपान उन्मेष और पद नाम से कहे गये हैं। अत: समग्रवाचक वर्णों के भीतर अनुप्राणित होनेवाला अकार ऊर्ध्व कहलाता है और अन्तिम वर्ण सकार **(सान्त मातृकागत वर्णसमुदायः)** अध: कहलाता है। इस प्रकार अकार से सकार तक गमनागमनात्मिकाशक्ति, जिसके अन्त में हकार आता है तथा जो कलनात्मा नाद रूप है परा कहलाती है। वह मातृका चक्र के क्रम से वाच्य और वाचक के अन्तर्गत सम्पूर्ण जगत् में संचार करती है, जो अपने तेज से भेदक पदों को दबाकर उन्मीषित होती है। इसलिए दोनों उत्पत्ति के स्थान अकार और हकार का चिन्तन करने पर शिव और शक्ति का संघटन(हृदय और द्वादशान्त तक जो निरन्तर होता रहता है) भरिता शक्ति या पराशक्ति कहलाती है। उत्कृष्ट होने के कारण सम्पूर्ण संसार में प्राणशक्ति का संचार करने के कारण इच्छा, ज्ञान और क्रिया का प्रसार ऊर्ध्व कहलाता है तथा विमर्श शक्ति के कारण निकृष्ट अर्थात् इच्छा करने योग्य ज्ञेय रूप कार्यात्मा जीव है।

वह जीव सोम अर्थात् मन रूप होने के कारण संसार के प्राणियों की जीवित स्थिति का कारण है, वही अध: कहलाता है। इसी प्रकार शक्ति त्रयात्मा-परा-अपरा और परापरा के रूप में भगवान की तीनों शक्तियाँ ही भरिता कही जाती है। ये उत्कृष्ट होने के कारण स्फुरणा रूप से सम्पूर्ण विश्व में फैलाती हुई ईश्वर तत्त्व की उत्पत्ति के समय में उन्मेष और स्थिति के समय में पद शब्द से प्रतिपादित की गई है। इस प्रकार प्रकाश्य और प्रकाशक रूप से संघट्टात्मक स्थान(हृदय और द्वादशान्त) प्रमाण और प्रमातृ से परिपूर्ण करने के

कारण यह पराशक्ति के नाम से तुर्यावस्था के आनन्द से प्लावित होने के कारण भरितास्थिति कही गयी है।

जैसे तिल के भीतर ही तेल रहता है उसी प्रकार परापरा और अपरा त्रिशक्ति में व्याप्त करनेवाली चतुर्थ शक्ति तुर्या(जो आनन्दमय) है भरिताशक्ति है उसी को पराशक्ति कहते है और ऊर्ध्व स्थित शब्द से मायापर्यन्त चलने का मार्ग प्राण कहा जाता है। वह शुद्ध-अशुद्ध तथा अध्व में व्यापक होकर शिवशक्ति रूप से संचार करता है उसे ही ऊर्ध्व कहते है। मायिक तत्त्व समुदाय को ग्रहण कर लेने के कारण जीव नर शब्द से वाच्य होता है। प्राणवायु का प्रवेश-निर्गम हृदय और द्वादशान्त दोनों स्थानों में उत्पन्न होनेवाला शुद्धाध्व और अशुद्धाध्व दो मार्गों से व्याप्त पराशक्ति को सर्व सर्वमयत्व भावना से सामरस्य उत्पन्न करने के कारण भरितास्थिति है।

अनुत्तराकुलात्माचित्तधाम में स्वयं उन्मीषित होनेवाला हकार ऊर्ध्व है और सकार विसर्गस्वरूप युक्त अध: अर्थात् जीव स्वरूप है। यह हानोपादान रूप हँसी ही परादेवी है। **अहं सः** मै वही हूँ इस प्रकार आत्मप्रत्यभिज्ञान विमर्श समान उपलब्ध होता है क्यो कि उत्पत्ति के दोनों स्थानों में हकार और सकार के उदय होने के कारण तथा हृदय और द्वादशान्त दोनों स्थानों को भरने के कारण उन वर्णों में विमर्श के परिशीलन की युक्ति से शक्ति का बल प्राप्त होता है, वही भैरवीभाव है। 'सम्पूर्ण मैं हूँ' ऐसा सर्वव्यापक भवनात्मक शुद्धविकल्प विमर्श स्वरूप शाक्तभाव कहा जाता है।

मरुतोऽन्तर्बहिर्वापि वियद्युग्मानिवर्तनात्।
भैरव्या भैरवस्येत्थं भैरवि व्यज्यते वपुः॥

प्राण और अपान रूप वायु के भीतर-बाहर हृदयाकाश और वाह्य द्वादशान्ताकाश से आवर्तन-प्रत्यवर्तन के रूप से क्षणमात्र अन्तर्मुख होकर अवस्थित होने से जो स्थिति होती है, वह भैरव रूप भैरवी या भैरवी रूप भैरव कही जाती है। वह अन्त:करण में स्वानुभव से आनन्द मात्र स्वरूपवाली है। यह धर्मी और धर्म के रूप से शिवशक्ति या प्रकाश-विमर्श स्वरूप होते हुए भी परमार्थत: एक ही तत्त्व को प्रकट करती है। अर्थात् प्राणोत्पत्ति स्थान हृदय में स्थित जो हृदयपद्मरूप यन्त्र है उससे प्राणवायु का उदय होता है। वह प्राणवायु बाहर बारह अङ्गुलपर्यन्त आकाश में संचार करता है तब वह प्राण कहलाता है। बारह अङ्गुलपर्यन्त गमन के पश्चात् प्राण गति के क्षण मात्र के लिए अस्त हो जाने के कारण, जब तब अपान गमन उत्पन्न न हो तब तक जो अवस्था रहती है वह भैरव स्वरूप है। क्षण मात्र के बाद जब वायु अपान गमन को धारण कर भीतर जाने लगता है तब बाहर द्वादशान्त आकाश से अपान का उदय होने के बाद हृदयाकाश में पहुचने तक उसमें अपानत्व रहता है। हृदय में पहुचने पर अपानत्व शक्ति नष्ट हो जाने पर प्राणवायु की उत्पत्ति के पूर्व जो शून्याकार स्थिति रहती है वह भैरवी स्वरूप है।

इसी प्रकार जब उसमें प्राणशक्ति उत्पन्न हो जाती है और वह द्वादशान्त तक आता है और प्राणत्व नष्ट हो जाने के कारण क्षणमात्र के लिए भैरवस्थिति में रह कर फिर अपानत्व ग्रहण कर लेता है तब प्राणापान के आगमन-निर्गमन के मध्य में जो स्थिति बनती है वह भैरवीस्थिति के स्वरूप के ही समान और भैरवीस्थिति भैरवस्थिति के स्वरूप के समान होता है। इस प्रकार प्रयत्न न करने पर भी स्वत: ही प्रकृति के द्वारा ही संचालित होता है।

वाह्यानाभ्यन्तरांश्चैतान् कुम्भकादीननारतम्।
प्राणापानस्वभावान् स्वान् बुद्ध्वा भूयो न जायते॥
गच्छतस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोऽपि वा।
एते न रोधमायान्ति प्रकृत्या हि चलाऽनिलः॥

स्व-स्वभाव से(प्राकृतिक रूप से) होनेवाले प्राणायाम को समझ ले तो वह स्वयं मोक्षप्रद हो जाता है। प्राणी के समस्त व्यवहार हैं उसे करते हुए इस ज्ञान के साथ चिन्तन करता हुआ कुम्भकावस्था में रह कर भी उससे मुक्त होता है, वे समस्त कर्म उसके नहीं होते हैं। प्राणापान स्वभाववाले कुम्भकों को समक्ष कर जन्म-मरण के चक्कर में नहीं पड़ते अर्थात् मुक्त हो जाते हैं।

स्वस्वभावतया बुद्धा यदि स्युस्तर्हि मोक्षदा।
यत्करोति यदश्नाति बोधेनैताननुस्मरन्॥
कुम्भकादीन्नरः सोऽन्तस्तत्र कर्ता न किञ्चन।

प्राण जब हृदय कमल से बहिर्मुख होकर स्वत: से ही प्राणवायु की गति उत्पन्न होती है वह प्राणवायु की रेचकावस्था है, हृदय से बाहर निकलते हुए प्राणवायु का प्रत्येक अङ्गों से स्पर्श होना, यह प्राणवायु की प्रथम पूरकावस्था है। बाहर के प्रदेश से बिना किसी प्रयत्न के जब वायु प्रत्यावर्तन करता है तो प्रत्येक अङ्ग का स्पर्श करता हुआ हृदयाकाश पर्यन्त जाता है, वह अपानवायु की पूरकावस्था है। जब तक प्राणवायु का उदय नहीं होता तब तक की उस अवस्था का नाम कुम्भकावस्था है इस अवस्था में योगियों के अनुभव मात्र से गम्य प्राणवायु सदा देह के बाहर और भीतर भ्रमण करता हुआ प्राणायाम में तत्पर रहता है। इसी प्रकार अपानवायु भी भीतर और बाहर अपानायाम करता रहता है। बहर के आकाश में प्राणवायु के अस्त होने पर जब तक अपान वायु का उदय नहीं होता तब तक की अवस्था अपान कुम्भक है।

अपान का अन्तर्मुख होना वाह्य रेचक है और द्वादशान्त से हृदय पर्यन्त जानेवाली गति वाह्यपूरक है। इस प्रकार प्राणायाम और अपानायाम रूप आठ प्रकार का प्राणायाम प्रकृति द्वारा स्वयं संचालित है। जो प्रत्येक चैतन्य प्राणी में नित्य प्रतिदिन होता रहता है। हृदय, कण्ठ, तालु, ललाट और द्वादशान्त ये सभी प्राण की गति के विषय है।

क्षण भर के लिए अस्तंगत प्राण अपान उदित होने के पूर्व जिन निर्विकल्प अवस्था में रहता है वह वाह्यकुम्भक है तथा क्षण भर के लिए अस्त होनेवाला अपानवायु जब तक प्राणवायु का उदय न हो उतने समय तक बिना प्रयत्न के होनवाला अन्तः कुम्भकावस्था है। ये ही प्राण की कुम्भकावस्था भैरवरूप है तथा अपान की कुम्भकावस्था भैरवीरूप है।

न व्रजेन्न विशेच्छक्तिर्मरुद्रूपा विकाशिते।
निर्विकल्पतया मध्ये तया भैरवरूपता॥

वायु शक्ति न हृदय से द्वादशान्त तक जाये और न द्वादशान्त से हृदय में प्रवेश करे बल्कि मध्य अर्थात् मध्यनाड़ी में विकल्प विहीन होकर विकशित हो जाये तो वही भैरवावस्था है।

हृदय से द्वादशान्त पर्यन्त न तो द्वादशान्त से हृदय में जाये न हृदय से द्वादशान्त में आये, इस प्रकार मध्यनाड़ी के भीतर सङ्कल्प-विकल्प से रहित अवस्था ही भैरवावस्था है।

अन्तर्लक्ष्यो बहिर्दृष्टिर्निमेषोन्मेषवर्जिता।
एषा वै भैरवी मुद्रा सद्यस्तत्पददायिनी॥

भैरवी अवस्था में प्रविष्ट कर जाने पर, वायु की शक्ति, प्रवेश-निर्गम रूप व्यापार से रहित होकर रहती है इसी अवस्था का नाम भैरवावस्था है। अथवा जिसमें प्राणापान क्रिया के अभाव की अभिव्यक्ति होती है, वही भैरवीरूप होकर प्रकाश में आता है। उस भैरवीरूप शक्ति से युक्त होकर ही योगी भैरवीमुद्रा सिद्ध हो जाने पर मध्यमधाम में आश्रय करने के कारण ही भैरवावस्था होता है। यही भैरवभैरवी अवस्था जिसे शान्ता शक्ति कहते है। इसे शान्ता शक्ति इसलिए कहते है क्योंकि यह शान्त परमस्वभाव और नाम रूप से अतीत है।

कुम्भिता रेचिता वापि पूरिता वा यदा भवेत्।
तदन्ते शान्तनामासौ शक्त्या शान्तः प्रकाशते॥

मूलाधार से ऊर्ध्व द्वादशान्त चक्र पर्यन्त किरण रूप में प्रकाशित होती हुई क्रमशः सूक्ष्मता को धारण करती हुई जो प्राणवायु की शक्ति है जो कि ऊर्ध्व द्वादशान्त में जाकर शान्त होती है। इस प्रकार अत्यन्त सूक्ष्म ध्येय स्वरूप ध्यान के आधिक्य से उत्थापित वह भैरवस्वरूप को अभिव्यक्ति करनेवाली है। अर्थात् मूलकन्द से ब्रह्मरन्ध्र-पर्यन्त ऊपर उठती हुई, विद्युल्लता के समान देदीप्यमान स्वरूपवाली, बढ़ती हुई प्राणवायु की चित्त(चैतन्य) शक्ति जब द्वादशान्त के अन्त में पहुँचती है तब महान प्रकाश का उदय होता है तब यह प्रकाश विमर्श ही मेरा स्वरूप है भैरवावस्था है। यह सब मेरा वैभव है इस प्रकार जानता हुआ विश्वात्मा के विकल्पों के प्रसार होने पर भी वह जीव महेश्वरता को प्राप्त हो जाता है। अकारादि द्वादश स्वरों के द्वारा, द्वादशचक्रों का भेदन करता हुआ स्थूल और सूक्ष्म परिस्थितियों को छोड़ते छोड़ते अन्त में जीव शिव स्वरूप बन जाता है। यह शिवावस्था ही भैरवावस्था है।

आमूलात्किरणाभासां सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरात्मिकाम्।
चिन्तयेत् तां द्विषट्कान्ते शम्यन्तीं भैरवोदयः॥
उद्गच्छन्तीं तडिद्रूपां प्रतिचक्रं क्रमात्क्रमम्।
ऊर्ध्वं मुष्टित्रयं यावत् तावदान्ते महोदयः॥
क्रमद्वादशकं सम्यग् द्वादशाक्षरभेदितम्।
स्थूलसूक्ष्मपरस्थित्या मुक्त्वा मुक्त्वान्ततः शिवः॥

प्राण शक्ति के द्वारा जन्मग्र, मूल, कन्द, नाभि, हृदय, कण्ठ, तालु, भूमध्य, ललाट, ब्रह्मरन्ध्र, से होते हुए ऊर्ध्व द्वादशान्त में प्रवेश कर मन को निर्विकल्प रूप करने से सर्वव्यापकता स्वरूप भैरवावस्था का उदय होता है।

तयापूर्याशु मूर्धान्तं भङ्क्त्वा भ्रूक्षेपसेतुना।
निर्विकल्पं मनः कृत्वा सर्वोर्ध्वे सर्वगोद्गमः॥

क्रमशः त्याग और ग्रहण के द्वारा गुदा, मूलाधार, जन्म, कन्द, नाभि, हृदय, कण्ठ, तालु, भ्रूमध्य, ललाट, ब्रह्मरन्ध्र, शक्ति और व्यापिनी चक्र में किसी स्थान पर, अपनी आत्मा से अन्य स्थान पर, आत्मा के समानान्तर आकाशादि वाह्य स्थान में निर्मलचित्त हो कर अहर्निश साधना में लीन होकर अपने शरीर के क्रमशः सभी चक्रों का भेदन करते हुए ऊर्ध्व द्वादशान्त में स्थित होने से, स्वयं में लीन होने से जो अवस्था बनती है वह अवस्था वरप्रदा हो जाती है। वही भैरवावस्था है।

सिर में कपाल के भीतर जो तालु स्थान है उस स्थान पर प्रकाश स्वरूप चमकती हुई उत्तम ज्योति का चिन्तन करने से भैरवावस्था प्राप्त होता है और सिद्धों के दर्शन होते है।

कपालान्तर्मनो न्यस्य तिष्ठन्मीलितलोचनः।
क्रमेण मनसो दाढर्यात् लक्षयेल्लक्ष्यमुत्तमम्॥

यही कापालिक क्रिया कहलाती है, कपाल का अर्थ होता है, **कं ब्रह्मं पालतीति कपालः, कं पराशक्ति ब्रह्मस्वरूपिणी, पालः पालकः शिवस्य स्थानं, परंब्रह्मस्थानं कपालम्।** क का अर्थ होता है ब्रह्मशक्ति तथा पालक का अर्थ होता है शिव अर्थात् शिवशक्तिस्थान ही कपाल है इस स्थान की प्राप्ति अर्थात् इस स्थान पर प्रकाशविमर्श ही शिवशक्तिमय है।

कशब्देन पराशक्तिः पालकः शिवसंज्ञया।
शिवशक्तिसमायोगं कपालं परिपठ्यते॥

अन्तःकरणस्थित सुषुम्ना के भीतर, पराशक्ति का ध्यान करने से शक्ति ऊर्ध्व गमन करती है, इस विमर्श से प्रकाश का प्रादुर्भाव होता है, उस प्रकाश में परमशिव के दर्शन होते है। यही भैरवावस्था है। **भ आकाशं रवति प्रकाशयति आच्छादयति भैरवः।** भ अर्थात् ऊर्ध्व द्वादशान्त स्थित चिदाकाश को आच्छादित करने के कारण भैरवभैरवी अवस्था

होती है तथा उस अवस्था को भैरव या भैरवी नाम से कहा जाता है। उस अवस्था में शिव तत्त्व आविर्भूत होता ह, वह शिवतत्त्व ही भैरवतत्त्व है। अर्थात् आकाश तत्त्व का नित्य उदित रहना।

मध्यनाड़ी मध्यसंस्था बिससूत्राभरूपया।
ध्यातान्तर्व्योममया देव्या तया देवः प्रकाशते॥
कररुद्धदृगस्त्रेण भ्रूभेदाद् द्वाररोधनात्।
दृष्टे बिन्दौ क्रमाल्लीने तन्मध्ये परमा स्थितिः॥
धामन्तः क्षोभसम्भूतसूक्ष्माग्नितिलकाकृतिम्।
विन्दुं शिखान्ते हृदये लयान्ते ध्यायतो लयः॥
अनाहते पात्रकर्णेऽभग्नशब्दे सरिद् द्रुते।
शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति॥

प्रणवादि का उच्चारण करता हुआ तथा प्लुतोच्चारण के अन्त में शून्यभाव धारण करता हुआ, शून्यात्मिका परमशक्ति की सहायता से शून्यभाव को प्राप्त कर लेता है।

प्रणवादि में आदि शब्द प्रकार(भेद) का वाचक है। प्रणव क्रिया भेद से कई प्रकार के होते हैं यथा वेद का प्रणव ॐकार, शिव का प्रणव हूँकार, माया का प्रणव ह्रीँकार, काली का प्रणव क्रीँकार इत्यादि का निर्देश श्रीगुरु के द्वारा किये जाते हैं। इसमें क्रमशः ह्रस्व से अर्ध-मात्रा, अर्धमात्रा से विन्दु, विन्दु से नाद, नाद से शून्य, शून्य से परा और परा से परमशून्य की प्राप्ति ही परमभैरवभाव है।

प्रणव ॐकारादि के प्लुतोच्चारण में क्रमशः अकार, उकार तथा अर्धमात्रामकार में प्लुतावस्था अर्धमकार की ही होती है। यही चतुर्थावस्था या तुरीयावस्था है। क्रिया में यही तुरीय सन्ध्या कही गयी है। इस तुरीयावस्था में ही सम्पूर्ण भावों से परिपूर्ण परमेश्वर का चिन्तन करने पर भैरवभाव प्राप्त होता है।

यह चतुर्थ वर्ण अर्धमात्रा ही विद्युत् वेग से समस्त वर्णों में पुरुषदेवता के रूप में अवस्थित होता है, वही ॐकार चार अक्षर, चार पाद और चतुराक्षर मात्रा से स्थूल रूप से ह्रस्व, दीर्ध और प्लुत ॐकार का उच्चारण करके शान्तात्मा चतुर्थावस्था को प्लुत रूप से करने पर समस्त वर्ण ॐकार उच्चारण करता हुआ सूक्ष्म ध्वनियाँ उत्पन्न करता हुआ क्रमशः शून्यावस्था में लीन हो जाता है, यही भैरवावस्था है।

प्रणवादिसमुच्चारात्प्लुतान्ते शुन्यभावनात्।
शुन्यया परया शक्त्या शून्यतामेति भैरवी॥

क्रमशः नव नादों को सुनता हुआ दीर्ध काल तक अनन्यचित्त होकर चिन्तन करता है तो नाद की शून्यता में एकाकार करता हुआ अविच्छिन्न काल में क्रमशः शून्यतावस्था को प्राप्त कर परमाकाश स्वरूप की अवस्था ही भैरवावस्था है।

यस्य कस्यापि वर्णस्य पूर्वान्तावनुभावयेत्।
शून्यया शून्यभूतेऽसौ शून्याकारः पुमान्भवेत्॥
तन्त्रादिवाद्यशब्देषु दीर्घेषु क्रमसंस्थितेः।
अनन्यचेत्ताः प्रत्यन्ते परव्योमवपुर्भवेत्॥

कूटादि वर्णों को जो स्थूल हकार से छठे वर्ण तक नौ प्रकार का है उसमें विन्दु, अर्धचन्द्र और नाद तथा स्वकीय छाया के चिन्तन के समय विन्दु, अर्धचन्द्र और नाद के अन्त में समाप्त होने पर शून्य रूप होकर पुनः प्लुतोच्चारण करने पर शून्यावस्था में अपने को लय कर परमशिव भाव को प्राप्त करता है वही भैरवावस्था है।

पिण्डमन्त्रस्य सर्वस्य स्थूलवर्णक्रमेण तु।
अर्द्धेन्दुविन्दुनादान्तः शून्योच्चाराद्भवेच्छिवः॥

मूलाधार से नाभिपर्यन्त अग्निमण्डल में, नाभि से अनाहत पर्यन्त सूर्यमण्डल में, विशुद्ध से आज्ञा तक चन्द्रमण्डल में तथा तदूर्ध्व पर मण्डल में क्रमशः प्रणव की मात्रा के सोपान के आरोहण से यथा नाभी में अकार, हृदय में उकार तथा आनन में मकार, भ्रूमध्य में विन्दु, ललाट में अर्द्धचन्द्र, ललाटोर्ध्व में निरोधिनी, शिर पर नाद, ब्रह्मरन्ध्र में नादान्त, तदूर्ध्व में शक्ति, शिखामूल में व्यापिनी, शिखा में समना तथा शिखान्त में उन्मना तथा द्वादशान्त का उल्लङ्घन कर निरञ्जनावस्था शिव में अपनी आत्मा का लय करना ही परमशून्यावस्था है। इसे ही भैरवावस्था कहते है।

सा शक्तिः परमासूक्ष्मा उन्मना शिवरूपिणी।
अस्तित्वमात्रमात्मानं क्षोभ्यं क्षोभयते यदा॥
समाना सा विनिर्दिष्टा शक्तिः सर्वाध्ववर्तिनी।
क्रोडीकरोति या विश्वं संहृत्य सृजते पुनः॥
कुण्डल्याख्या महाशक्तिस्तृतीयाप्युपचर्यते।
ध्वनिरूपो यदा स्फोटस्त्वदृष्टाच्छिवविग्रहात्॥
प्रसरत्यतिवेगेन ध्वनिनापूयरयञ्जगत्।
स नादो देवदेवेशः प्रोक्तश्चैव सदाशिवः॥

वाह्यद्वादशान्त से मूलाधार और मूलाधार से ऊर्ध्वद्वादशान्त तक क्रमशः मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा, विन्दु, अर्धेन्दु, रोधिनी, नाद, नादान्त, शक्ति, व्यापिनी, समना, उन्मना में प्राण के रथ पर आरूढ़ चित्त का लय करने हुए ऊर्ध्व द्वादशान्त के भीतर निरञ्जनावस्था स्थित आकाश स्वरूप शिव में लय करने से भैरवत्त्व की प्राप्ति होती है।

प्राणारूढ़ चित्त को मन या कला कहा गया है। इसकी क्रमशः मूलाधार से ऊर्ध्व द्वादशान्त तक षोडश अवस्था ही इसकी कलायें है। इन अवस्थाओं(कलाओं) को प्राप्त

करने के कारण ही मन अर्थात् चित्त षोडश कलाओंवाला कहा जाता है। इस चित्त को प्रणव स्वरूपी नाद से संयुक्त कर महाविन्दुस्थान ऊर्ध्वद्वादशान्त में लय करने नाद, विन्दु और कला का योजन(एकीकरण) है। इस एकीकरण से ही शिवत्त्व की प्राप्ति होती है यही भैरवावस्था है।

हृद् अन्तःकरणं। हृदय का अर्थ अन्तःकरण होता है। अन्तःकरण में सोऽहं का ध्वनन निरन्तर चलता रहता है इसे ही योगीजन अजपाजप कहते है। सोऽहं की ध्वनि सकार स्थूलावस्था और हकार शून्याकाशावस्था का लय होने पर ॐकार ही अवशिष्ट रहता है। मूलाधार में स्थूलावस्था जिसका स्वरूप सकार है और ऊर्ध्व द्वादशान्तस्थित आकाश(शून्य) स्वरूप शिव के मध्य ॐकार ही व्याप्त है। अर्थात् स्थूलावस्था अर्थात् स्थूलशरीर से अतिशय सूक्ष्मावस्था शून्यस्वरूप शिव के बीच ॐकार ही अतिव्याप्त है। इस अवस्था की प्राप्ति ही भैरवावस्था है। यहाँ ॐकार से प्रणवादि नाद से तात्पर्य है।

हृदय चक्र में बिना किसी प्रेरणा या प्रयत्न के ॐकार ध्वनित होता है, जिसके गर्भ में सम्पूर्ण शब्द समुदाय व्याप्त(समाहित) है अन्तःकरण में निरन्तर ध्वनित होने के कारण ॐकार ही परमपद है, वही सत्य है, वही अक्षर है तथा वही ब्रह्म है इस प्रकार का चिन्तन का परमतेजोमय प्रकाश विन्दु में लय ही ब्रह्मावस्था है। हृदंय, कण्ठ, तालु क्रम से अपनी द्वादश मात्रा से लेकर उन्मनी पर्यन्त प्रत्येक स्थल में नाभि से लेकर शिक्षा पर्यन्त, विभागों में स्थित, ॐकार की इस स्थूल वर्णक्रम से उच्चारण की जानेवाली परम्परा नाभि, हृदय और मुख में क्रमशः अकार, उकार और मकार के रूप में उच्चारित होना ही स्थूल भावना है। विन्दु से लेकर समना पर्यन्त अर्धमात्रा और ऊसके ऊपर परमशिव का स्थान है, उसके द्वारा स्थूलाक्षर के आनुपूर्वी से उपलक्षित पिण्डमन्त्र का विन्दु, अर्धेन्दु, रोधिनी, नाद, नादान्त, शक्ति, व्यापिनी, समना, उन्मना जिसका स्वरूप शून्य है इस द्वादशमात्रा उच्चारण काल के चिन्तन से शिवस्वरूप हो जाना ही भैरवावस्था है।

अकार से समना पर्यन्त मात्राओं का शून्य रूप उच्चारण करने से शून्य विमर्श से उन्मना रूप परमशिव भाव को प्राप्त हो जाना ही भैरवावस्था है। समनान्त साधन संसार रूप होने से हेय है, केवल उन्मना रूप जो परमतत्त्व है उसमें प्रवेश करना ही उपादेय है।

सूक्ष्म पराशक्ति उन्मना शिवस्वरूप है, उसका अस्तित्व क्षोभ करते समय क्षोभ्य वस्तु के रूप में ही आत्मा में आभासित होता है उसी का नाम समना है, जो सभी मार्गो में सदा गतिशील है और सम्पूर्ण विश्व को अपने भीतर समा लेती है तथा पुनः उत्पन्न कर देती है वह कुण्डलिनी नामक महाशक्ति है जो तृतीया के रूप में व्यवहृत की जाती है उसके द्वारा शिव का शरीर ध्वनि के रूप में, स्फोट रूप से प्रादुर्भूत होता है और वह अतिवेग से सम्पूर्ण जगत् को परिपूर्ण करता हुआ, अत्यन्त वेग से नाद स्वरूप को प्राप्त करता उस अवस्था को देवाधिदेव महादेव सदाशिव कहा जाता है।

गन्तव्य मार्ग में गतिशील नाद जिसमें नादान्त शक्ति भी समाहित हो चुकी है ऐसा नाद जहाँ बिना अवरोध के विश्राम करता है अर्थात् स्थित होता है उसी शक्ति का नाम निरोधिनी है वही सभी देवताओं का निरोधन करने में समर्थ है, उस निरोधिनी शक्ति सम्पन्न महेश्वरावस्था की महिमा अवर्णनीय है। उस महेश्वर में असंख्य कोटि मन्त्रों की सत्ता है, उस शक्ति में प्रवेश करने पर उन शक्तियों को प्राप्त करता है। यही निरोधिका नामवाली शक्ति ही मन्त्र शक्ति की कला है और वही विन्दु स्वरूपी महेश्वर कहा जाता है। यही विन्दुस्वरूप महेश्वर ही अमृतस्वरूप है, यही शिवामृत मस्तक पर गिरता है तो सृष्टि का कारण बनता है, जो इससे परिप्लावित होता है वही अर्धचन्द्र कहलाता है। यही अर्धचन्द्र विन्दुपात से ऊपर उठता है तब वही संहार नाम धारण करता है। वह सभी भूतों का कारण है, वही नाद का अवरोहण सृष्टि का कारण बनता है, यहाँ मकार रुद्र है जो उत्तम वर्ण संघट्टन से उत्पन्न होता है। जब यह स्थिति को पा जाता है जो अपने अभिमुख होकर सृष्टि का कारण बन जाता है तथा जब इस स्थिति पर प्रतिष्ठित होता है तो पालन करने के कारण उकार रूप हो जाता है।

पूर्वोक्त अवस्था प्राप्त हो जाने के बाद विकल्प विहीन होकर अपने शरीर में समस्त भुवनों तथा दिशाओं में व्याप्त आकाश की एक साथ भावना करते ही समग्र आकाश प्रकाशित हो जाता है। सब साधक आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, दायें, वायें, सर्वत्र शरीर में भी शून्य प्रकाश विमर्श का चिन्तन करता है और निर्विकल्पकता ही भैरवावस्था है।

निजदेहे सर्वदिक्कं युगपद्भावयेद्वियत्।
निर्विकल्पमनस्तस्य वियत्सर्वं प्रवर्तते॥
पृष्टशून्यं मूलशुन्यं युगपद्भावयेच्च यः।
शरीरनिरपेक्षिण्या शक्त्या शून्यमना भवेत्॥
पृष्ठशून्यं मूलशून्यं हृच्छून्यं भावयेत् स्थिरम्।
युगपन्निर्विकल्पत्वान्निर्विकल्पोदयास्ततः ॥
तनूदेशे शून्यतैव क्षणमात्रं विभावयेत्।
निर्विकल्पं निर्विकल्पो निर्विकल्पस्वरूपभाक्॥
सर्वं देहगतं द्रव्यं वियद् व्याप्तं मृगेक्षणे।
विभावयेत् ततस्तस्य भावना सा स्थिरा भवेत्॥
देहान्तरे त्वग्विभागं भित्तिभूतं विचिन्तयेत्।
न किञ्चिदन्तरे तस्य ध्यायन्नध्येयभाग्भवेत्॥
हृद्याकाशे निलीनाक्षः पद्मसम्पुटमध्यगः।
अनन्यचेताः सुभगे परं सौभाग्यमाप्नुयात्॥

अपने शरीर के सभी ओर से ऊर्ध्वद्वादशान्त में मन के लीन हो जाने से स्थिर बुद्धिवाले

योगी के स्थिर मन में परमतत्त्व प्रकाशित होता है। परमतत्त्व के प्रकाशन से ही भैरवभाव होता है। ज्यों ज्यों और जैसे जैसे मन प्रतिक्षण ऊर्ध्व द्वादशान्त चक्र में स्थिर होता है त्यों त्यों प्रतिक्षण वृत्तियाँ क्षीण होती है और कुछ दिनों में ही वैलक्षण्य (असामान्य भैरवावस्था) प्रकट हो जाती है।

सर्वतः स्वशरीरस्य द्वादशान्ते मनो लयात्।
दृढबुद्धेर्दृढीभूतं तत्त्वलक्ष्यं प्रवर्तते॥
यथा तथा यत्र यत्र द्वादशान्ते मनः क्षिपेत्।
प्रतिक्षणं क्षीणवृत्तेर्वैलक्षण्यं दिनैर्भवेत्॥

कालाग्नि रुद्र संज्ञक **'ॐ र क्ष र य ॐ'** मन्त्र का जप करते हुए तथा पैर के अङ्गुष्ठ से उठे हुए अग्नि ज्वाला से शरीर भस्म हो रहा है ऐसा चिन्तन करते हुए योगी शान्त प्रकाश को प्राप्त करता है अर्थात् वह शिवरूप हो जाता है। इस प्रकार सम्पूर्ण संसार को विकल्पों से जला हुआ समझ कर अनन्य चित्तवाले योगी परमपुरुष भाव को प्राप्त हो जाता है तथा भैरवभाव को प्राप्त करता है।

कालाग्निना कालपदादुत्थितेन स्वकं पुरम्।
प्लुष्टं विचिन्तयेदन्ते शान्ताभासस्तदा भवेत्॥
एवमेव जगत्सर्वं दग्धं ध्यात्वा विकल्पतः।
अनन्यचेतसः पुंसः पुंभाव परमो भवेत्॥
स्वदेहे जगतो वापि सुक्ष्मसूक्ष्मतराणि च।
तत्त्वानि यानि निलयं ध्यात्वान्ते व्यज्यते परा॥
पीनां च दुर्बलां शक्तिं ध्यात्वा द्वादशगोचरे।
प्रविश्य हृदये ध्यायन्मुक्तः स्वातन्त्र्यमाप्नुयात्॥

स्थूल, सूक्ष्म और कारण रूप शरीर जिसे भुवनाध्वा कहा जाता है से लेकर वर्ण, मन्त्र, पद, कला, तत्त्व और भुवन ये षडध्वा ही मार्ग है। इन छः अध्वाओं में परम सूक्ष्म, स्थूल रूप से अवस्थित जो वाचक तथा वाच्य के आभास रूप से क्रिया-शक्ति का स्पन्दन होता है, उसी के स्वरूप चिन्तन वर्ण अभेद से मन्त्र रूप बन जाने है और भेद रूप से पद बन जाते है। ये सभी पूर्व पूर्व अध्वा त्रय हैं, उत्तरोत्तर व्यापक स्थिति में आते हैं, उत्तरोत्तर पूर्व पूर्व व्यापक बनकर अन्तर्भाव होते जाते है। अतः यह सम्पूर्ण जगत् सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। इसमें वर्ण पद में, पद कला में, कला तत्त्व में, तत्त्व भुवन में गर्भित होकर व्याप्त हो जाते हैं, इसमें क्रमशः लयत्व को प्राप्त करके शिवतत्त्वपर्यन्त लय को प्राप्त करते हैं। इस प्रकार ये षट्त्रिंशत् तत्त्व हो जाते हैं। ये समस्त षट्त्रिंशत् तत्त्व और मन्त्र, वर्ण तथा पद व्यापक होते हैं। इस प्रकार अनन्त से शिवपर्यन्त जितने भुवन हैं, उन सभी तत्त्वों की पूर्ण व्यापकता होने से छत्तीस तत्त्व, स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन अध्वा, तथा वर्णादि

षडध्वा के योग करने पर पचास तत्त्व है तथा नवनवात्मा वाच्यवाचक भेद से एकाशीति तत्त्व है, ये समस्त तत्त्व द्वादशान्त से लेकर पृथ्वि पर्यन्त अनन्त रूप से वाच्यवाचकभाव से प्रतिबिम्बित होते हैं। अर्थात् उसमें वाचक ग्राहक भाग में अवस्थित परम सूक्ष्म और स्थूल भेद से अभिनिविष्ट होकर कलातत्त्व और भुवनात्मक रूप से प्रतिबिम्बित होता है। अभेद के विचार का सार ही वर्ण है, जो कुछ स्थूल भेदाभेद विमर्श के रूप नादात्मक मन्त्ररूपता को धारण करता है उसमें भी जब स्थूलविमर्श उपस्थित होता है तो वह नादात्मक मन्त्र रूपता को धारण करता है तथा स्थूलता के कारण पद रूप में प्रकाशित होते है, इस प्रकार वाच्य रूप जो परमेश्वर की शक्ति है वह कलाशक्ति उत्तरोत्तर विशिष्टता को धारण करती हुई भुवनात्मकता को प्राप्त हो जाती है।

तत्त्वों का तत्त्वों में लय करने से उससे महान् शून्यता की भावना का उदय होता है, उसके साधन के प्रकारों का वर्णन यहाँ किया गया उसका संक्षेप इस प्रकार है। भुवनादि तीन तत्त्व वाच्य और पदादि तीन तत्त्व वाचक है। इस प्रकार शक्ति ही षडध्वा के रूप में प्रकट होती है। ये छ: प्रकार की शक्तियाँ जिसके भीतर हैं वह शक्तिमान होकर महेश्वर कहलाता है। इस प्रकार षडध्व शोधन की प्रक्रिया अध्वातीन होनेवाला साधक शिवस्वरूप हो जाता है।

भुवनाध्वादिरूपेण चिन्तयेत् क्रमशोऽखिलाम्।
स्थूलसूक्ष्मपरस्थितया यावदन्ते मनोलयः॥

एवञ्च—

भुवनव्यापिता तत्त्वेष्वनन्तादिशिवान्तके।
व्यापकानि च षट्त्रिंशन्मन्त्रवर्णपदात्मकाः॥
तत्त्वान्तर्भाविनः सर्वे वाच्यवाचकयोगतः।
कालान्तर्भाविनस्ते वै निवृत्याद्याश्च ताः स्मृताः॥

तथा च—

भुवनादित्रयं वाच्यं पदादिवाचकं त्रयम्।
शक्तिरेतच्चाध्वषट्कं शक्तिमांस्तु महेश्वरः॥

प्रकाश विमर्शात्मक परमेश्वर के इस शैव तत्त्व के स्वरूप का चिन्तन करने पर साधक के शरीर में प्रकाश की अभिव्यक्ति होती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि कलात्मक भुवन तत्त्व वाच्य है, प्रकाश परमार्थ है और पदस्वरूप मन्त्र वाचक है। ये समुदाय त्रय विमर्श का शरीर है, द्वादशान्त तथा नाभिचक्र ये दोनों संसर्गात्मक अरणि है। उन्मेष और निमेष दोनों शक्तियों का एक साथ चिन्तन करना प्रकाश स्वरूप है। अत: भुवन से अध्व पर्यन्त सम्पूर्ण विश्व(शरीर) शिव के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इसमें से जगत् रूप(पाशविक शरीर) का त्याग करके शिव रूप का चिन्तन करते हुए साधक के हृदय में ज्ञान का उदय होता

है। इस प्रकार भैरवत्त्व प्राप्त कर साधक कालजयी अर्थात् भैरवस्वरूप हो जाता है।

सम्पूर्ण शरीर को चिन्मय स्वरूप का चिन्तन करते हुए एक साथ निर्विकल्प मन से भी परमतत्त्व का उदय होता है।

सर्वं देहं चिन्मयं जगद्वा परिभावयेत्।
युगपन्निर्विकल्पेन मनसा परमोदयः॥

सम्पूर्ण शरीर को आत्मानन्द से परिपूर्ण है ऐसी युगपद् धारणा से उत्पन्न होनेवाले आत्मामृत से साधक परमानन्दमय हो जाता है। अर्थात् भैरवमय हो जाता है।

सर्वं जगत्वदेहं वा स्वानन्दभरितं स्मरेत्।
युगपत् स्वामृतेनैव परानन्दमयो भवेत्॥

सम्पूर्ण इन्द्रियों का निरोध करके प्राणशक्ति को धीरे धीरे ऊपर उठाना उस समय मूलकन्दादि स्थानों में अन्तन्त धीमी गति के समान आभास होता है तभी साधक परमसुख को प्राप्त करता है। अर्थात् भैरवत्व को प्राप्त करता है।

सर्वस्त्रोतोनिबन्धेन प्राणशक्त्योर्ध्वया शनैः।
पिपीलस्पर्शवेलायां प्रथते परमं सुखम्॥

मूलाधार स्त्री(शक्ति) के संग से संक्षुब्ध होकर द्वादशान्तस्थित शिवसंयोग से जो आनन्द के समावेश पर्यन्त सुख होता है वह ही परमात्मानन्द है।

शक्तिसङ्गमसङ्क्षुब्ध शक्त्यावेशावसानिकम्।
यत्सुखं ब्रह्मतत्त्वस्य तत्सुखं स्वाक्यमुच्यते॥

न केवल लिङ्ग(विन्दु) से आनन्द की उत्पत्ति होती है और न केवल भग(तेज) या प्रकाश से ही आनन्द उल्लसित होता है, आनन्द जो शक्ति को उद्दिप्त कर द्वादशान्तस्थित शिव के साथ संयोग से ही उत्पन्न होता है। शिव के साथ संयुक्त शक्ति ही आत्मानन्द का सृजन करती है। यही भैरवावस्था है।

न सृष्टिर्जायते लिङ्गान्न भगान्नापि रेतसः।
आनन्दोच्छलिता शक्तिः सृजत्यात्मानमात्मना॥

शिव शक्ति के सम्मिलन से देहाध्यास समाप्त हो जाने पर चिद्विमर्श की उद्दिप्ति होती है यह चिद्विमर्शोत्पत्ति ही आत्मानन्द का कारक होता है, इस लिए माया से विरक्त होकर योग युक्त माहात्मा लोग, सांसारिक माया के भोग का परित्याग करके आत्मानन्दानुभूति से संयुक्त होने पर उनमें भैरवभावोत्पत्ति होती है।

देहोऽपि विस्मृते यस्य चिद्विमर्शस्य भावनात्।
महात्मनो विरक्तस्य भोगासङ्गे न रोचते॥

शुद्ध निर्मल आकाश(ऊर्ध्व द्वादशान्त) में दृष्टि(चिन्तन) को निरन्तर स्तब्ध रूप करके

स्थिर करने से परममात्मभाव(भैरवभाव) की उत्पत्ति होती है। जिसे प्राप्त कर साधक साक्षात् भैरवत्व प्राप्त करता है।

आकाशं विमलं पश्यन् कृत्वा दृष्टिं निरन्तरम्।
स्तब्धात्मा तत्क्षणाद् देवि भैरवं वपुराप्नुयात्॥

पृथ्वि तत्त्व का जल तत्त्व में, जल तत्त्व का अग्नि तत्त्व में, अग्नि तत्त्व का वायु तत्त्व में, वायुतत्त्व का आकाश तत्त्व में तथा आकाश तत्त्व का महत् तत्त्व में, महत् तत्त्व का क्रमशः मूर्धास्थित द्वादशान्तस्थ महाकाश परमप्रकाश में संहार क्रम से चित्त का विलय करता हुआ साधक प्रकाशतत्त्व भैरवरूप में स्थित हो जाता है तो भैरवरूप होकर भैरवत्व प्राप्त कर लेता है।

लीनं मूर्ध्नि वियत् सर्वं भैरवत्वेन भावयेत्।
तत्सर्वं भैरवाकारस्तेजस्तत्त्वं समाविशेत्॥

कृष्ण पक्ष की मेघाच्छादित रात्रि में चिरकाल तक अन्धकार के स्वरूप चिन्तन से साधक भैरवत्त्व प्राप्त कर लेता है।

एवमेव दुर्निशायां कृष्णपक्षागमे चिरम्।
तैमिरं भावयन् रूपं भैरवं रूपमेष्यति॥

नेत्रों को निमीलित करके अपने सामने फैलाते हुए कृष्ण(पूर्ण) रूप प्रकाशविमर्श का चिन्तन करता हुआ और उस रूप को भैरवस्वरूप समझकर प्रकाशमय भैरव बन जाता है।

एवमेव निमील्यादौ नेत्रे कृष्णाभमग्रतः।
प्रसार्य भैरवं रूपं भावयस्तन्मयो भवेत्॥

इन्द्रियों के निग्रह पूर्वक अद्वितीय शून्य(ऊर्ध्व द्वादशान्त) में प्रवेश कर अन्तर्मुख होने पर चैतन्य तत्त्व का प्रकाश प्राप्त होता है।

यस्य कस्येन्द्रियस्यापि व्याघाताच्च निरोधतः।
प्रविष्टस्याद्वये शून्ये तत्रैवात्मा प्रकाशते॥

विन्दु तथा विसर्ग रहित केवल अकार को जपने मात्र से साधक परमेश्वर के महान् पद और उसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है। अर्थात् भैरवत्व प्राप्त कर लेता है।

अविन्दुमविसर्गं च अकारं जपतो महान्।
उदेति देवि सहसा ज्ञानौघः परमेश्वरः॥

विन्दु अविभक्त चिन्तन अद्वैत ज्ञान को कहते है, विसर्ग भेद प्रथा उत्पादन क्रिया को कहते है। वाह्यादि सृष्टि रूप, ककारादि सृष्टिरूप, इन दोनों तत्त्वों से रहित अकार है। वही प्रथम अक्षर है। **कारः करणं तत् नास्ति सः अकारः** कार अर्थात् करण इसमें नहीं है इसलिए अकार संज्ञा से अवबोधन करते है। समस्त करणों से रहित चिन्तनात्मक अनुत्तर

विमर्श करते हुए अनेक ज्ञानों का प्रसार करनेवाले सृष्ट परमेश्वर का प्रादुर्भाव होने पर **ऐकमेवाद्वितीयं ब्रह्म**, तथा **सर्वं खल्विदं ब्रह्म**, भावोत्पत्ति हो जाता है। इस प्रकार एकत्व चिन्तन से द्वितीय भाव अर्थात् द्वैत भाव अनुत्तर विमर्श में वाणी और मन प्रत्यक्ष होने योग्य ही नहीं रहता है। तत्पद भिन्न कुछ भी नहीं है, तो द्वितीय(द्वैत)कहाँ उत्पन्न होगा। तदवस्था होने पर न केवलत्व है, न अकेवलत्व, न शून्य है, न केवलत्व, अशून्य अद्वैतावस्था सिद्धान्तसिद्ध अनिर्वचनीय है।

नाभि से ऊपर एक बिलस्थ तथा कण्ठ के नीचे छः अङ्गुल मध्य देश में हृदय के भीतर हृदय कमल है उस कमल में स्थित सूक्ष्मकर्णिका में तीन भागों में विभक्त तीन नाड़ियाँ स्थित हैं उसके भीतर अकारादि स्वरूप से आत्मा विद्यमान है। चिन्मय का स्पन्द मात्र ही उसका लक्षण है, यह परम सूक्ष्म विन्दु विसर्ग रहित अकार ही उपास्य है।

अहङ्कारममयी भूमिर्बुद्धिभूमेः परा हि सा।
तया व्याप्तमिदं विश्वं ज्ञाता सैव विमुक्तिदा॥
संविद्रूपा पराशक्तिरभिन्ना परमेश्वरात्।
ज्ञानशक्तिः पुनः सैव मन्त्ररूपा प्रदश्र्यते॥
अहङ्कारः स्मृतो मन्त्रः शिवशक्त्यात्मरूपकः।
यदत्राद्यमवर्णाख्यं स शिवः परमेश्वरः॥
नादविन्दात्मकं यच्च सा शक्तिरैश्वरी स्मृता।
द्वयमेतत्समाख्यातं बीजभूतं चराचरे॥
अज्झलाद्याश्च ये वर्णास्तेऽनेनैव हि मुद्रिताः।
शब्दब्रह्मेति तत्प्राहुर्योगिनस्तत्त्वचिन्तकाः॥
अप्रमाणमश्वरं ध्यात्वा पश्यन्त्या निर्विभागया।
चिन्मात्रमर्शयोगेन निलीनः स्यात्परे पदे॥
तथाहि सिद्धैरादिष्टं कुचित्सिद्धान्तसङ्ग्रहे।
नाभेरूर्ध्वं वितस्तिस्तु कण्ठाधस्तात्षडङ्गुलम्॥
हृदयं मध्यदेशे तु हृन्मध्ये कमलं स्मृतम्।
पद्ममध्येस्थितासूक्ष्मा कर्णिका त्रिपथोपगा॥
तन्मध्ये संस्थितो ह्यात्मा ह्यकारादिस्वरूपधृत्।
अकारान्तः परं सूक्ष्मं चिन्मात्रस्पन्दलक्षणम्॥

आत्मा के स्थान में निराधारा द्वितीया ईश्वरीया शक्ति स्थित है, यही शरीर की प्राणशक्ति है जो हकार के रूप में सदैव विद्यमान रहती है। श्रवणेन्द्रिय के छिद्रों को बन्द कर इसे स्पष्ट देख लेना चाहिये। जो दोनों भ्रुवों के मध्य में विन्दु रूप अपने तेज से देदीप्यमान इस विश्वजननी शक्ति को योगी नित्य देखता है वह चन्द्रसूर्यात्मक वामदक्षिण नेत्र के भीतर

निराश्रय स्थित करके सनातन ब्रह्म में प्रवेश करता है वह भैरवत्व प्राप्त कर तत् स्वरूप हो जाता है।

आत्मस्थाने निराधारा द्वितीया शक्तिरैश्वरी।
बीजभूता कुण्डलिनी सार्द्धत्रिवलयान्विता॥
प्राणशक्तिरियं देहे हकाराख्या वदत्यलम्।
कर्णान्तर्विवरे योगी स्थापित्वा लक्षयेत्स्फुटम्॥
विन्दुरूपा भ्रुवोर्मध्ये संसारजननी शिवा।
लक्ष्यते योगिभिर्नित्यं भ्राजमाना स्वतेजसा॥
तस्य विन्दोस्तु चन्द्रार्कौ वामदक्षिणनेत्रयोः।
निराश्रयौ तु तौ कृत्वा विशेद् ब्रह्म सनातनम्॥

संवेद्य संस्कारों का क्षय करके, निराधार मन से ब्रह्म का चिन्तन करने पर, जिसका अनेक प्रकार की सृष्टि को उत्पन्न करने के स्वभाववाले, वर्ण, समय, वर्णसमूह, ब्राह्मी आदि शक्ति स्वरूप में वर्णन करते है, जो पशुभाव का कारण है, उस सृष्टि के उत्पादन का अन्त हो जाय तथा अन्तर्मुखी स्वभाव के विचार के आधिक्य से उसमें समाविष्ट होकर तन्मय स्वाभाव को प्राप्त हो जाय, ऐसी बुद्धि उत्पन्न होने पर निराश्रय चिन्तन सिद्ध होने पर नित्य परब्रह्मत्व उत्पन्न हो जायेगा।

वर्णस्य सविसर्गस्य विसर्गान्तं चितिं कुरु।
निराधारेण चित्तेन स्पृशेद् ब्रह्म सनातनम्॥

विसर्ग का विश्लेषण करना तथा कला(मन) के विक्षोभ से अनुत्तर अकार का उच्चारण करना ही परमभैरव स्वरूप है, यह अकुलचक्र की पराशक्ति और कौलिकीशक्ति कहलाती है, यही विसर्ग है जिससे सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न होता है तथा जिससे धीरे धीरे क्रम नष्ट हो जाता है, इस प्रकार छः स्वरूपोंवाला विसर्गान्दोलन कहा जाता है, जिसके आगे कोई स्वभाव नहीं है, उस अनुत्तर स्वभाववाले अकार का ही सब प्रपञ्च है, वही अन्तर्प्रविष्ट नित्य प्रस्फुरणत्मक भगवान है, जो अपने ही भीतर स्थित सम्पूर्ण भावनाओं की शक्ति है। समस्त अकुलचक्र का मातृ प्रपञ्च शिव विन्दु तथा शक्ति विसर्ग नाम से सम्बोधित होते हैं। विन्दु ही शिव है तथा अनुत्तर परम स्थान जिसके आगे कुछ भी नहीं है उसी को अकुल कहा जाता है। उस विन्दु स्वरूपी शिव का विसर्ग ही कौलिकी शक्ति है। उसी कौलिकी शक्ति से अकार से क्षकार पर्यन्त वर्णों की उत्पत्ति होती है।

शरीर में सूई चुभाने पर भी जिसकी अनुभूति नहीं होती अर्थात् सूई चुभने से होनवाले कष्ट का अनुभव न होना अथवाँ कष्ट का सहन करना अथवाँ उसमें चेतन का समाविष्ट करना अर्थात् मै अछेद्य हूँ, अदाह्य हूँ, अक्लेद्य हूँ, अशोष्य हूँ इस प्रकार की जो संवेदना शक्ति है, जिसमें अहन्ता का भाव उत्पन्न होता है वही भैरव का स्वरूप है।

ज्यों ही कामनाओं का उदय हो उसकों वहीं पर शमन(शान्त) कर दे तो कामना उत्पन्न होते ही वहीं लय(नष्ट) हो जाती है। एषणा के उत्पन्न होते ही, अमूर्त अवस्था में ही चिन्मात्र माया कृत क्षोभ से उत्पन्न होनेवाली जातमात्र एषणा को देखते ही शीघ्र ही उसका शमन करना चाहिए। चिन्मात्र निराकार है तो उसमें उत्पन्न होनेवाली इच्छा भी निराकार है, तथा इष्यमाण एषणा को भी, अविद्या होने से, शान्तेच्छा हो जाना चाहिये, क्यो कि जिस अविद्या से इच्छा उत्पन्न हुई है, वह भी अविद्या ही है और उसका स्वरूप आकाशात्मक है अत: वह भी आकाश(शून्य) में लीन हो जायेगी अर्थात् नष्ट हो जायेगी। इस प्रकार उन्मेष धारण के अभ्यास से इष्यमाण विषयक दोनों एषणायें उपशान्त हो जायेगी।

झटितीच्छां समुत्पन्नामवलोक्य शमं नयेत्।
यत एव समुद्भूता ततस्तत्रैव लीयते॥

विषयों की उत्पत्ति के पश्चात् उसका उसी में लय कर, यह आत्मा का स्पन्द है इस प्रकार का चिन्तन करना चाहिए, क्यों कि उसी से परमार्थ ज्ञान की उत्पत्ति होगी। इसमें **अयात्मा ब्रह्म** या यह आत्मा ब्रह्म स्वरूप है, इस आधार पर **सर्वं खल्विदं ब्रह्म** ज्ञानोत्पत्ति हो जाती है।

इच्छायामथवा ज्ञाने जाते चित्तं निवेशयेत्।
आत्मबुद्ध्यानन्यचेतास्ततस्तत्त्वार्थदर्शनम् ॥

आधार के बिना ज्ञान निर्हेतुक होने के कारण भ्रमात्मक है ऐसा चिन्तन करने से साधक भैरवस्वरूप हो जाता है। सभी शरीरों में चैतन्य धर्मा आत्मा ही व्याप्त है, उसमें विशेष अन्य कहीं नहीं है अत: सभी इच्छा, ज्ञान और क्रिया ईश्वरमय है इस प्रकार चिन्तन करनेवाला साधक भैरववत्व प्राप्त कर संसार पर विजय प्राप्त कर लेता है।

निर्निमित्तं भवेज्ज्ञानं निराधारं भ्रमात्मकम्।
तत्त्वत: कस्यचिन्नैतदेवम्भावी शिव: प्रिये॥

समस्त शरीर धर्मियों में चैतन्य धर्मा आत्मा ही व्याप्त है, उससे विशेष अन्य कहीं नहीं है अत: ज्ञान, क्रियादि सभी ईश्वरमय है इस प्रकार चिन्तन करता हुआ योगी संसार पर विजय प्राप्त कर लेता है। अर्थात् भैरवत्व प्राप्त करता है।

चिद्धर्मा सर्वदेहेषु विशेषो नास्ति कुत्रचित्।
अतश्च तन्मयं सर्वं भावयन् भवतिज्जन:॥

अपने शरीर के प्रति आस्था का त्याग कर, एकाग्र चिन्तन के द्वारा, मैं सर्वत्र व्याप्त हूँ इत्याकाराकार वृत्ति के बलवति होने पर योगी साक्षात् शरीरधारि भैरव हो जाता है।

विहाय निजदेहास्थां सर्वत्रास्मीति भावयन्।
दृढेन मनसा दृष्ट्या नान्येक्षिण्या सुखी भवेत्॥

अपने शरीर की अपेक्षा का परित्याग करके केवल संवित् मात्र का चिन्तन करता हुआ, दूसरे के बाह्य शरीर में भी उस संवित् ज्ञान को लगाने से साधक स्वशरीर की सहायता के बिना भी दूसरे के शरीर में होनेवाले ज्ञान का अवबोध कर लेगा, ऐसी स्थिति में साधक उसी में बुद्धि लगाकर तन्निष्ठ होकर तादात्म्य की प्राप्ति कर लेगा जिससे विदेहकैवल्य की सिद्धि प्राप्त हो जायेगी अर्थात् सर्वत्र व्यापकता बन जायेगी जिससे साधक पूर्णव्याप्त ब्रह्मावस्था परमशिवत्व को प्राप्त कर कृतार्थ हो जायेगा।

स्ववदन्यशरीरेऽपि संवित्तिमनुभावयेत्।
अपेक्षां स्वशरीरस्य त्यक्त्वा व्याप्तो दिनैर्भवेत्॥

मन को निराधार(विषय विहीन) करके विकल्प भावनाओं का सर्वथा त्याग कर देने से योगी के शरीर में स्थित जीवात्मा तथा परमात्मा दोनों भैरव हो जाते है। अर्थात् योगी वाह्यान्तर मन की कल्पना करके स्थिर कर ले तब जीव और ईश्वर दोनों परमात्मा ही हो जाते है, क्यों कि संकल्प की कल्पना जीव और निर्विकल्प की कल्पना ही ईश्वर अर्थात् ब्रह्म कहलाता है। इस लिये सर्वदा योगी को विकल्प का परित्याग करना चाहिये। इस प्रकार सर्वज्ञ, सर्वकर्त्ता, व्यापक, परमेश्वर, शिवधर्मा मैं ही हूँ, यहीं मेरा स्वरूप है इस प्रकार की दृढ बोधानुभवस्थ साधक योगी साक्षात् शिवस्वरूप भैरव बन जाता है।

निराधारं मनः कृत्वा विकल्पान्न विकल्पयेत्।
तदात्मपरमात्मत्वे भैरवो मृगलोचने॥
सर्वज्ञः सर्वकर्त्ता च व्यापकः परमेश्वरः।
य एवाहं शैवधर्मा इति दार्ढ्याद्भवेच्छिवः॥

समः धीः समाधिः। चित्त की उस चिन्मयावस्थापन्नात्मा के साथ अखण्डाद्वैतभाव से स्थिरी भूत होकर अद्वैतबह्मसत्ता के रूप में प्रतीत होनेवाली अवस्था विशेष को समाधि कहते हैं। यह वाह्य और आभ्यान्तर भेद से दो प्रकार की होती है, सविकल्पक समाधि तथा निर्विकल्पक समाधि। उसमें भी सविकल्पक समाधि दृश्य पदार्थों से मिश्रित और शब्द मिश्रित दो प्रकार के हैं। उनमें से दृश्य सविकल्पक समाधि चित्त के सदृश कामना से और साक्षी चिन्मय का ध्यान करने से उनके साथ अनुबिद्ध समाधी 'सविकल्पक समाधी' कहलाती है। यह स्थूलसविकल्पक समाधी कहलाती है तथा दूसरी सूक्ष्म सविकल्पक समाधि असङ्ग सच्चिदानन्द द्वैतवर्जित स्वयं समर्थ आत्मा स्वरूप व्यापक तत्त्व मैं ही हूँ इस प्रकार शब्दमात्र से अनुबिद्ध सविकल्पकसमाधि को सूक्ष्मसविकल्पकसमाधि कहते है। इस प्रकार प्रयत्न पूर्वक दो प्रकार की समाधियों की सम्पत्तियों को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य निर्विकल्पकसमाधि में प्रवेश करता है। निर्विकल्पकसमाधि का लक्षण है, स्वानुभूति के रसावेश में दृश्य शब्द की अपेक्षा को त्यागकर निर्वात स्थल पर स्थित दीपशिखा के समान ही निश्चल होकर स्थित होना ही निर्विकल्पकसमाधि है। सविकल्पसमाधि के दो भेद तथा

निर्विकल्पसमाधि एक भेद संकलित करने पर तीन प्रकार की समाधियाँ हुई, ये तीनो ही समाधियाँ सूर्य(प्राण), चन्द्र(मन) और आकाश(सहस्त्रार) के बाह्यालम्बनों को प्रतिपादित करती है। हृदय के समान बाह्य देश स्थित किसी वस्तु में समाधि करने से चिन्मात्रावस्था नामरूप से पृथक् होकर रहती है, वह दृश्यानुबिद्ध सविकल्पसमाधि है। चौथी समाधि शब्दानुबिद्ध बाह्यसविकल्पकसमाधि है। जो अखण्ड अविच्छिन्न चिन्तन से जो समाधि उत्पन्न होती है, वह बाह्यशब्दानुबिद्ध सविकल्प समाधि पाँचवी समाधि है। यह बाह्य संज्ञाक समाधि, समाधियों में मध्य की समाधि है। इसमें केवल ब्रह्माकार स्वरूप होने से मन को चेष्टा रहित निर्विकल्पावस्था का अनुभव होता है। इस प्रकार बाह्य पदार्थों में मन को निश्चेष्ट निर्विकल्पावस्था में होनवाली ही छठी समाधि है। मन को निश्चेष्ट स्तब्ध करके आभ्यान्तर निर्विकल्प समाधि के समान ही बाह्य पदार्थों में भी मन को विकल्प रहित बनाकर स्थिर करना बाह्य निर्विकल्प समाधि कहते है। इस प्रकार छहों समाधियों द्वारा निरन्तर आत्मतत्त्व का चिन्तन करते हुए योगियों को स्वकालयापन करने से देहाभिमान के नष्ट हो जाने तथा परमतत्त्वानुभूत होने पर, जहाँ जहाँ मन जाता है, साधक के लिए वहीं समाधि उपलब्ध होती है। अर्थात् बाह्य और अन्त: जगत् में सर्वत्र आत्मतत्त्व के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु का भान नहीं रहता है, इसी अवस्था का नाम सप्तम समाधि है।

देहाभिमाने गलिते विज्ञाते परमात्मनि।
यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र समाधय:॥

वाह्य और आभ्यान्तर इन्द्रियों के द्वारा अभिव्यक्त होनेवाला पदार्थ भी चैतन्यमात्र का ही धर्म है अत: समस्त जगत् की मूल भित्ति चित्त के लय होने पर सभी परम भैरव स्वरूप हो जाते है।

यत्र यत्राक्षमार्गेण चैतन्यं व्यज्यते विभो:।
तस्य तन्मात्रधर्मित्वाच्चिल्लयाद्भरितात्माता॥

जहाँ जहाँ इन्द्रिय मार्गों के द्वारा उस परमात्मा के चैतन्य की अभिव्यक्ति होती है, उस परमात्मा के धर्मी होने के कारण चिति में विश्रान्ति के द्वारा भरितावस्था(भैरवावस्था) होती है। अर्थात् वाह्याभ्यन्तर इन्द्रियों के द्वारा अभिव्यक्त होनेवाला पदार्थ भी चैतन्यमात्र का ही धर्म है अत: समस्त जगत् की मूल भित्ति के लय होने पर सभी परम भैरवस्वरूप हो जाते है।

अल्पज्ञ पुरुष जिसे शुद्धि कहते है, वह शाम्भव दर्शन में अशुद्धि के रूप में मानी गयी है, अत: कुछ भी न पवित्र है और न अपवित्र, केवल निर्विकल्प भाव से सुखी होता है। शाम्भव दर्शन शरीर की शुद्धि मिट्टि, जल आदि के द्वारा करने पर, परमतत्त्व का साक्षात्कार करानेवाले शाम्भव दर्शन में नहीं के बराबर होने से अववित्र के तुल्य है, मिट्टि आदि से की गई शुद्धि का तत्त्वज्ञान से कोई सम्बन्ध न होने से वह शुद्धि भी अशुद्धि ही है। अर्थात् शाम्भव भाववालों में शुद्धाशुद्धि का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता है, वे सदा सर्वदा शुद्ध

ही रहते है, उसे तो साधारण मनुष्य में भी भैरवत्व ही दिखाई देता है। अर्थात् सर्वत्र ब्रह्ममयता ही दिखाई देता है।

किञ्चिज्ज्ञैर्या स्मृता शुद्धिः साऽशुद्धिः शम्भूदर्शने।
न शुचिर्ह्यशुचिस्तस्मान्निर्विकल्पः सुखी भवेत्॥
सर्वत्र भैरवो भावः सामान्यष्वपि गोचरः।
न च तद्व्यतिरेकेण परोऽस्तीतयद्वया गतिः॥

साधक को नित्य, निराश्रय, शून्य, व्यापक और सम्पूर्ण कल्पनाओं से युक्त वाह्याकाश में मन को स्थिर करके आकाश से भी परे अशून्य स्थान में प्रवेश करना चाहिये। जहाँ जहाँ मन जाता है अर्थात् जिन जिन विषयों में मन लगता है उसमें तुरन्त निर्विकल्पावस्था मन को पहुचा कर हटाना चाहिये, इस प्रकार बार बार विषयों से मन हटाने से निश्चलता को ग्रहण करता है। इस प्रकार भय का कारण, संवित् प्रकाश से संचालित करनेवाला सर्व शक्तिमान् भैरवशब्द का निन्तर उच्चारण करते हुए मनुष्य(साधक) भैरवत्व प्राप्त कर भैरव स्वरूप हो जाता है।

नित्ये निराश्रये शून्ये व्यापके कलनाज्झिते।
वाह्याकाशे मनः कृत्वा निराकाशं समाविशेत्॥
यत्र यत्र मनो याति तत्तत् तेनैव तत्क्षणम्।
परित्यज्यानवस्थितया निस्तरङ्गस्ततो भवेत्॥
भया सर्वं रवयति सर्वदो व्यापकोऽखिले।
इति भैरवशब्दस्य सन्ततोच्चारणाच्छिवः॥

भा ऐ र व इति अक्षरचतुष्कस्य अनुत्तररूपोऽकारः, इच्छारूपः इकारः, अनुत्तर-विश्रान्तिरेव आनन्दः, इच्छायां विश्रान्तिः ईशनम्, तेन एष क्रियाशक्तेः प्रारम्भः आकार ईकारश्च, भा संविद्रूपः प्रकाशः, इच्छा ईशनं च आनन्दवपुषि अनुत्तरपरधामनि च प्राग्भाविनि स्वरूपात् अप्रच्याविनि यदा अनुप्रविशति तदा अ आ इ ई इत्येतत् एकारतया सम्पद्यते। अनुत्तरानन्दायोः इच्छायां प्रसरणेन एकारोत्पत्तिः, तत्रापि पुनरनुत्तरानन्दसङ्घट्टात् ऐकारोत्पत्तिः। अत एव सन्ध्यक्षरसंज्ञा एकार-ऐकारयोः। अत एव—इत्यनेन अ आ ए—इत्येतत्, अकार-एकारयोः एकादेशेन अथवा आकार एकारयोः एकादेशेन ऐ-भावः इति संवित्प्रकाशः शबलीभूतः। सा इयं स्फुटा क्रिया-शक्तिः, स्फुटक्रियाशक्तिमत्त्वम् ऐकारार्थः। तेन भैरवपदस्य अयमर्थ—भया संवित् प्रकाशरूपया ऐकारः क्रियाशक्तिमान् महेश्वरः सर्वं रवयति विमृशति इति भैरवः इति एतदेव अभिधेयम्। यद्वा भया ज्ञानात्मिका शक्त्या ऐकारेण माहेश्वर्याव्यञ्जिकया क्रियाशक्त्या सर्वं विमृशति। यदुक्तं प्रत्यभिज्ञायाम्—

भैरवः जडभूतानां प्रतिष्ठा जीवदाश्रया।
ज्ञानं क्रिया च भूतानां जीवतां जीवनं मतम्॥

इति अर्थान्तरं तु द्वितीय पादेन आह—सर्वदो व्यापकोऽखिले इति। तया भया सर्वं शुभाशुभं राति अहर्निशमुच्चारणात् परमशिवो भवति।

भैरव नाम में भा ऐ र व चार अक्षर है, इन चारों का क्रमश: अर्थ इस प्रकार है। अकार अनुत्तर है, इकार इच्छा रूप है, अनुत्तर में विश्रान्ति होना ही आनन्द है, इच्छा में विश्रान्ति होना ही ईषणा है जिसमें '**ईषणम् एष:**' इस व्यप्तत्ति से क्रियाशक्ति का बोध होता है। अकार ईकार प्रारम्भ में भास्वररूप अर्थात् संवित् प्रकाश का अवबोधन कराते हैं और इच्छा आनन्द रूप शरीर में अनुत्तर परमधाम के पूर्वभावी स्वरूपवाली होने से कभी च्युत नहीं होनेवाली भावना है। अनका अनुप्रवेश होने पर अ, आ, इ, ई मिलकर एकाकारता को प्राप्त हो जाते है। अनुत्तरानन्द का इच्छा में प्रवेश होने से एकार की उत्पत्ति होनी है अतएव एकार और ऐकार दोनों सन्ध्यक्षर है, इससे अ, आ, और ए ये तीनों अकार और ऐकार के एकादेश से अथवा आकार और ऐकार के एकादेश से ऐकार उत्पन्न होता है, संवित् प्रकाश से शबलीभूत(मिश्रित) होकर स्फुट क्रिया शक्ति का वाचक बन जाता है, इसलिए एकाक्षरकोष में एकार का अर्थ महेश्वर कहा जाता है। अत: भैरव पद का अर्थ होता है संवित् प्रकाश रूप शक्ति एकार और क्रिया शक्तिमान महेश्वर इन सब को विमर्श रूप में प्रकट करनेवाला भैरव कहलाता है।

भया रवतीति भैरव:, भया संवित्प्रकाशरूपया ऐकार: क्रियाशक्तिमान् महेश्वर: सर्वं रवयति विमृशति इति भैरव: इति एतदेव अभिधेयम्। यद्वा ज्ञानात्मिका शक्त्या ऐकारेण माहेश्वर्यव्यञ्जिकया क्रियाशक्त्या सर्वं विमृशति।' अर्थात् जड़भूत वर्णों की जीवदात्री प्रतिष्ठा के द्वारा ज्ञान, क्रियभूत जीवन देने से इनमें जीवता मानी जाती है, इस प्रकार जीवनदात्री शक्ति से युक्त शुभाशुभ कर्मफल को देने के कारण और सबकों प्रेरित करने के कारण भैरव कहा जाता है।

निर्विकल्प अवस्था प्राप्ति के पश्चात् विश्रान्ति प्राप्त करनेवाला प्रमाता जीवन्मुक्त अवस्था को प्राप्त कर लेता है और देहपात के बाद भी परमेश्वर के स्वरूप से अभेद हो जाने के कारण विदेहमुक्त होकर ईश्वर बन जाता है।

मानसं चेतना शक्तिरात्मा चेति चतुष्टयम्।
यदा प्रिये परिक्षीणं तदा तद् भैरवं वपु:॥

जिज्ञासा रहित शुद्ध निर्विकल्प अवस्था ही परमपद है। इस प्रकार की अवस्था का नाम ही भैरव शरीर है। इसमें साधनानन्तर की अपेक्षा नहीं होती है। क्यो कि कार्मण और आणवादि सभी समाप्त हो जाते है।

जिज्ञासा रहितं शुद्धं निर्विकल्पं परं पदम्।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥

मल किसे कहते हैं? इस विषय में मल का लक्षण इस प्रकार किया गया है।

मलस्वरूपमाह—

अज्ञानं किल बन्धहेतुरुदितः शास्त्रे मलं तत्स्मृतम्।

तथा च—

मलमज्ञानमिच्छन्ति संसाराङ्कुरकारणम्।

एवमेव—

योग्यतामात्रमेवैतत् भावव्यच्छेदसङ्ग्रहे।

अन्ये च—

स्वात्मप्रच्छादनक्रीडामात्रमेव मलं विन्दुः।

आणव, मायीक और कार्मणमल तीन प्रकार के मल कहे गये है।

अप्रतिहतस्वातन्त्र्यरूपा इच्छाशक्तिः सङ्कुचिता सती अपूर्णम्मन्यतारूपम् आणवमलम्। ज्ञानशक्ति क्रमेण सङ्कोचाद् भेदे सर्वज्ञत्वस्य किञ्चिजज्ञत्वप्राप्तः अन्तःकरणबुद्धीन्द्रियतापत्तिपूर्वम् अत्यन्तं संकोच ग्रहणेन भिन्नवेद्यप्रथारूपं मायीवमलम्। क्रियाशक्तिः क्रमेण भेदे सर्वकर्तृत्वस्य किञ्चित्कर्तृत्वाप्तः कर्मेन्द्रियरूपसङ्कोचग्रहणपूर्वकम् अत्यन्तं परिमिततां प्राप्ता शुभाशुभमनुष्ठानमयं कार्मणमलम्।

स्वतन्त्र्य हानिरूप आणवमल विज्ञान केवल में, स्वातन्त्र्य अबोधरूप आणवमल प्रलय काल में (जिसमें कार्ममल भी रहता है और विकल्प से मायीव भी) तथा देवादि सभी संहारी प्रमाताओं में त्रिविध मल और मुख्यत: कार्मणमल होता है।

मनुष्य का शिव स्वरूप, संङ्कोच के करण समाप्त हो जाता है और वह जीव रूप हो जाता है यह सङ्कोचरूप ही आणवमल कहलाता है। साधनाओं में इस मल को नष्ट करना अत्यन्त अनिर्वाय होता है, इनके रहते साधक अपनी अवस्था नहीं प्राप्त कर सकता है।

आणवमलमाह—

सङ्कोच एव पुंसामाणवमलमित्युक्तप्रायम्।
द्विधाणवं मलमिदं स्वस्वरूपापहानितः॥

तत्रैव—

संविन्द्रूपे न भेदोऽस्ति वास्तवो यदपि ध्रुवे।
तथाप्यावृत्तिनिर्ह्लादतारतम्यात् स लक्ष्यते॥

भेद बुद्धि का होना ही मायीवमल है, यही जन्मभोगादि का कारण है।

मायीव मलमाह—

भिन्नवेद्यप्रथात्रैनं मायाख्यं जन्मभोगदम्।

अन्यत्र—

शरीरभुवनाकारा मायीव प्रकीर्तितः।

शरीर विषयक कर्मों का संस्कार ही कार्मण मल है। इस मल के प्रभाव से मनुष्य की सांसारिक प्रवृत्ति नष्ट नहीं होती जिसके कारण स्वस्वरूपत्व की प्राप्ति नहीं होती है।

कार्मणमलमाह—

देवादीनां च सर्वेषां भाविनां त्रिविधं मलम्।
तथापि कार्मनैवैकं मुख्यं संसारकारणम्॥

तथाच—

कर्मकस्तु शरीराणि विषयः करणानि च।

इन समस्त आणव, मायीव और कार्मण मलों को नष्ट करके ही साधक भैरववत्व प्राप्त कर सकता है, भैरववत्व प्राप्त करने का एकमात्र साधन वटुकभैरव की उपासना ही है बिना वटुकभैरव के उपासना किये स्वस्वरूपत्व की प्राप्ति नहीं होती है। वटुक भैरव की उपासना करके मनुष्य परमज्ञानी हो जाता है तथा उसमें शापानुग्रह की शक्ति सद्यः आ जाती है वह साक्षात् शरीर धारी भैरव हो जाता है।

अत्र चैकतमे युक्तो जायते भैरवः स्वयम्।
वाचाकरोति कर्माणि शापानुग्रहकारकः॥

वटुक भैरव की उपासना करनेवाला साधक अणिमादि आठ प्रकार की सिद्धियों के गुणों से युक्त हो जाता है और ज्ञान, क्रिया और आनन्दादि शक्ति रूप योगिनियों का प्रिय होकर सभी वर्णों का अधिपति बन जाता है तथा अजरता अमरता को पा लेता है। वह जीवित रहता हुआ भी तथा सांसारिक कर्म में प्रवृत्त होता हुआ भी जीवनमुक्त होता है। किसके लिए हवन किया जाता है, किसकी पूजा की जाती है, किसकी कथा कही जाती है, किसका जप किया जाता है, जपतपपूजापाठादि से कौन तृप्त होता है इन सबका बोध वटुक भैरवोपासना से साधक प्राप्त कर लेता है, साध्य साधक का उसे बोध हो जाता है तथा साधक पूर्ण निर्मल होकर साक्षात् ब्रह्म हो जाता है।

अजरामरतामेति सोऽणिमादिगुणान्वितः।
योगिनीनां प्रियो देवि! सर्वमेलापकाधिपः॥
जीवन्नपि विमुक्तोऽसौ कुर्वन्नपि च चेष्टितम्।
इदं यदि वपुर्देव परायाश्च महेश्वर!॥
एवमुक्तव्यवस्थायां जप्यते को जपश्च कः।
ध्यायते को महानाथ पूज्यते कश्च तृप्यति॥
हूयते कस्य वा होमो यागः कस्य च किं कथम्।
एषात्र प्रक्रिया वाह्या स्थूलेश्चैव मृगेक्षणे॥

भैरव शब्द की व्युत्पत्ति, निरुक्ति और परिभाषाऐं—तन्त्रालोक और विज्ञान भैरव में भैरव शब्द की सिद्धि भयानक **'भी'** धातु से निष्पन्न भी शब्द और **'अव'** धातु से निष्पन्न

अव शब्द के योग से उत्पत्ति **भैर्भीमादिभिः** (साधनैः) **अवतीति भैरवः** अर्थात् भीमादि भीषण साधनों से रक्षा करनेवाले भैरव है।

अन्यत्र '**भी**' धातु से औणादिक '**डैरव**' प्रत्यय लगाने से भैरव शब्द की निष्पत्ति होती है जिसका अर्थ होगा '**बिभेति क्लेशो यस्मादिति भैरवः**' अर्थात् जिससे क्लेश डरता है उन्हें भैरव कहते है। अथवा '**बिभ्यति लोकेशा यस्मादिति**' किं वा '**बिभेति लोको यस्मादिति**' अर्थात् जिससे लोक डरता है।

'**भी**' धातु से '**भी**' शब्द के साथ '**रु**' प्रत्यय का योग करने पर भीरु शब्द से स्वार्थ में अण् प्रत्यय के योग तथा आदि वृद्धि करने से भैरु शब्द से गुण तथा अवादेश कर भैरव शब्द बनता है जिसका अर्थ होगा भयंकर शब्दकारी। '**भीर्भयजनकं रौतीति भीरुः, स्वार्थेऽणि, आदिवृद्धौ गुणावादेशयोच्च। भैरवो भयङ्करशब्दकारी साधकानां सिद्धिदत्वात् तद्द्वेषिणां च भयदत्वात्**' इति व्युत्पत्तिः।

भी और रव से भी भैरव शब्द की निष्पत्ति स्वीकार की गयी है, '**भीः भयङ्करो रवो यस्य स भैरवः**'।

अन्यत्र '**भी**' और '**रव**' धातु से भेरु शब्द की निष्पत्ति की गयी जिसका अर्थ दुःख समुह कहा गया है। भेरु शब्द से **स्वादेः कन्** सूत्र से कन् प्रत्यय करके भैर शब्द बनाकर '**वा**' धातु के वकार के योग करने पर '**भैरं दुःखसमूहं वाति हिनस्तीति भैरवः**' सिद्ध होता है।

'**भिया सर्वान् रवयतीति भैरवः**' व्युत्पत्ति करने पर अर्थ होता है कि भय से सबको रुलानेवाला भैरव है।

'**भीरूणां समूहो भैरवः**' व्युत्पत्ति भी अन्यत्र प्राप्त होता है।

'**भृ**' धातु से '**डैरव**' प्रत्यय करने पर भैरव शब्द की निष्पत्ति की गयी है जिसका अर्थ है '**भरति विश्वमिति भैरवः**' अथवा '**बिभर्ति धारयति पुष्णाति रचयतीति भैरवः**' अर्थात् सृष्टिस्थितिसंहारकारी भैरव है।

'**विश्वस्य भरणात् रमणात् वमनाद् सृष्टिस्थितिसंहारकारी परशिवो भैरवः**' इस व्युत्पत्ति में भ, र, व इन तीन वर्णो के भरण, रमण तथा वमन अर्थ करते है।

भकार—

भाख्या तु श्यामला चैकवक्त्रा भद्रासने स्थिता।
उद्यद्रविनिभाधत्ते शरचापवराभयान्॥

भकारात्मिक भैरव स्वरूप भद्रासन पर विराजमान, श्यामल तथा उदयकालीन सूर्य के समान, सिन्दूर की कान्तिवाला, एक मुख तथा चार हाथ जिनमें धनुष, बाण, वर तथा अभय धारण किए हुए है।

रकार—

रेफाख्या रेचिका श्यामा सिंहस्था लोहितांशुका।
पञ्चास्याष्टकराधत्ते दक्षवामकरैस्तु सा॥
खड्गखेटाङ्कुशागदा पाशशूल वराभयान्।

रकारात्मक भैरव स्वरूप भद्रासन पर विराजमान, श्यामल वर्ण, रक्तवस्त्र धारण किए हुए, सिंहासनारूढ, पाँच मुख, आठ हाथ तथा खड्ग, खेट(मूसल), अङ्कुश, गदा, पाश, शुल, वर तथा अभय धारण किये हुए है।

वकार—

वाख्या परायणी देवी स्फटिकाभरणांशुका।
स्फुटपद्मासनाधत्ते पद्मद्वयवराभयान्॥

वकारात्मक भैरव स्वरूप का आभूषण और वस्त्र श्वेत है, लोक का परम आश्रय है, खिला हुआ कमल आसन है, चार हाथ जिनमें क्रमश: दो हाथों में कमल, वर तथा अभय धारण किए हुए है।

इस प्रकार की व्युत्पत्ति में क्रमश: सिन्दूर, श्याम और श्वेत वर्ण राजस्, तामस् और सात्विक् गुण हैं। इन तीनों प्रकार के स्वरूप का ध्यानादि भी भिन्न भिन्न हैं।

भैरव पद के वर्ण भकार, रकार और वकार का क्रमश: भरण, रमण और वमन अर्थ प्राण क्रिया में भरण अर्थात् पूरक, रमण अर्थात् कुम्भक तथा वमन अर्थात् रेचन अर्थ का द्योतक है।

'भैरवः सर्वशक्ति भरितः' अर्थ में सर्वशक्ति पद से इच्छाज्ञानक्रिया एवं वामाज्येष्ठारौद्री, का ग्रहण होता है।

'भैरवः भयङ्करः सर्वनियन्ता' अर्थ में 'भयङ्कर पद से पूर्ण व्यापकता (सम्पूर्ण विश्व की आच्छादकता) का ग्रहण होता है।

'भिया सर्वान् रवयति इति भैरवः' अर्थ में **'रव'** क्रिया का मथना अर्थ किया जाता है। मथन शब्द से नाश अर्थ करने पर भैरव की उपसना करने पर समस्त भयों का नाश हो जाना होता है। अर्थात् भैरव भक्त के समस्त भय नष्ट हो जाते हैं।

उद्यमोन्तः परिस्पन्दः पूर्णाहम्भावनामकः।
स एव सर्वशक्तिनां सामरस्याशेषतः॥
विश्वतो भरितत्वेन विकल्पानां विभेदिनाम्।
अलं कवलनेनापीत्यन्वर्थादेव भैरवः॥

वही भैरव देवगणसहित सब शक्तियों के अन्तः परिस्पन्दनात्मक उद्यम स्वरूप पूर्णाहम्भाव नामवाले हैं, विश्व का भरण एवं बुद्धि भेद के जनक विकल्पों का अशेषरूप से

कवलन करने में समर्थ होने के कारण भैरव यह अन्वर्थ नाम धारण करते हैं। इसी प्रकार अन्यान्य तन्त्र ग्रन्थों और उनकी टीका प्रटीकाओं के परिशीलन से और भी व्युत्पत्ति एवं परिभाषाएँ प्राप्त हो सकती हैं।

वटुक शब्दार्थ—

वेष्टनार्थक '**वट**' धातु से '**कटिवटिभ्याञ्च**' इस औणादिक सूत्र से '**उ**' प्रत्यय तथा स्वार्थ में '**कन्**' प्रत्यय लगाने पर वटुक शब्द बनता है।

'**वट्यते वेष्टयते सर्वं जगत् प्रलयेऽनेनेति वटुकः**' अर्थात् प्रलय काल में सम्पूर्ण जगत् को आवेष्टित करने के कारण अथवा सर्वव्यापी होने से भैरव को वटुक कहा जाता है। '**वबयोरभेदः**' व और ब में अभेद मानकर वटुक के स्थान पर बटुक कहने की पद्धति अधिक प्रचलित है। ऐसी स्थिति में इसकी व्युत्पत्ति '**बटून् ब्रह्मचारिणः कायत्युपदिशतीति बटुको गुरुरूपः**' अर्थात् ब्रह्मचारियों को उपदेश देनेवाला गुरुरूप होने से भैरव को वटुक कहा जाता है। इस नाम में वटुक को '**वटु**' और '**कै**' शब्द धातु के योग से गुरुरूप सिद्ध किया गया है। वटुक को क्षुद्रविराट कहा जाता है। विराटपुरुष का क्षुद्र(छोटा) स्वरूप को ही वटुक कहा जाता है अर्थात् सर्व व्यापी शिव का छोटा स्वरूप ही वटुक भैरव हैं।

शक्ति उपासना की पूर्णता, बिना भैरव की उपासना किए नहीं होती है। कार्य भेद से शक्ति में भेद होता है तथा शक्ति भेद से भैरव का भी भेद होता है। दोनों एक दूसरे के अविभाज्य एवं अच्छेद्य अङ्ग है। अनिष्ट निवृत्ति तथा अभीष्ट पूर्ति के लिए इन दोनों की साधना का विधान कहा गया है। दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं।

शक्तयः सर्वदा सेव्याः साधकैर्भैरवार्चिताः।
अतोऽन्यथाः न सिद्धिः स्यात् कल्पकोटिशतैरपि॥

बिना भैरव के उपासना के कोई भी मन्त्र सिद्ध नहीं होता है।

केवलं यो जपेच्छाक्तं मन्त्रं शैवं न योजयेत्।
कोटिजन्मजपेनापि न मन्त्रः सिद्धिभाग्भवेत्॥
यस्या देव्यास्तु यो देवः शिवस्तस्याः शिवो भवेत्।
तेन विद्या महादेवि कलौ सिद्ध्यति सत्वरम्॥

जिस प्रकार क्रोध भैरव के संयोग से यक्षिणियाँ शिघ्र फल प्रदायिनी होती है उसी प्रकार पुंयोग से ही समस्त शक्तियाँ, विद्यायें अथवाँ मन्त्र शिघ्र सिद्धि प्रदायिनी होती है।

क्रोधभैरव संयोगाद् यक्षिण्यः सिद्धिदा यथा।
तथा विद्याः प्रसिद्ध्यन्ति पुंयोगादेव पार्वति॥

भैरव की उपासना समस्त शक्ति की उपासना में अनिवार्य है तथा जो शिव के उपासक होते हैं उनकें लिए शिव ही भैरव रूप होने से परम उपास्य ही है।

जवा पुष्प के समान आभावाले, मदविह्वल नेत्रोंवाले, जगत् के मातापिता श्रीभैरव तथा श्रीभैरवी ही है।

जवाकुसुमसङ्काशौ मदघूर्णितलोचनौ।
जगतः पितरौ वन्दे भैरवी-भैरवात्मकौ॥

शक्ति भेद से भैरव में भी भेद व्यवहृत होते है। कालिका, तारा, सुन्दरी, छिन्ना, भुवना, धूम्रा, महालक्ष्मी, भैरवी, मातङ्गी तथा बगला ये महाशक्तियाँ महाविद्या नाम से ख्याति लब्ध हैं इनके इन्हीं भेद से भैरव भी महाकाल, अक्षोभ्य, ललितेश्वर, विकराल, महादेव, कालभैरव, नारायण, वटुक, मतङ्ग अथवा सदाशिव तथा मृत्युञ्जयभैरव हैं।

कालिकाया महाकालः सुन्दर्या ललितेश्वरः।
तारायाश्च तथाऽक्षोभ्यश्छिन्नाया विकरालकः॥
भुवनाया महादेवो धूम्रायाः कालभैरवः।
नारायणो महालक्ष्म्या भैरव्या वटुकः स्मृतः॥
मातङ्ग्यास्तु मतङ्गः स्यादथवा स्यात् सदाशिवः।
मृत्युञ्जयश्च बगलाविद्यायाः परिकीर्तितः॥

योगिनी भेद से चतुषष्टि योगिनियों के चौसठ भैरव बतलायें गये हैं। जो चराचर जगत् के संचालक हैं।

असिताङ्गो विशालाक्षो मार्तण्डो मोदकप्रियः।
स्वच्छन्दो विघ्नसन्तुष्टः खेचरः सचराचरः॥१॥
रुरुश्च क्रोधदण्डश्च तथैव च जटाधरः।
विश्वरूपो विरूपाक्षो नानारूपधरः परः॥२॥
वज्रहस्तो महाकायः चण्डश्च प्रलयान्तकः।
भूमिकम्पो नीलकण्ठो विष्णुश्च कुलपालकः॥३॥
मुण्डमालः कामपालः क्रोधो वै पिङ्गलेक्षणः।
शङ्करो भूतवेतालः त्रिनेत्रः त्रिपुरान्तकः॥४॥
वरदः पर्वतावासः कपालः शशिभूषणः।
हस्तिचर्माम्बरधरः योगीशो ब्रह्मराक्षसः॥५॥
सर्वज्ञः सर्वदेवेशः सर्वभूत हृदि स्थितः।
भीषणाख्यो भयहरः सर्वज्ञाख्यस्तथैव च॥६॥
कालाग्निश्च महारौद्रो दक्षिणमुखरोस्थिरः।
संहारश्चातिरिक्ताङ्गो प्रलयाग्निः प्रियङ्करः॥७॥
घोरनादो विशालाङ्गो योगीशो दक्षसंस्थितः।
ऐते शुभाऽशुभस्येह कर्मफ़लप्रदायकम्॥८॥

भैरव का गुण भेद से सात्त्विक, राजस और तामस स्वरूप बताया गया है, जो अलग अलग कामनाओं की पूर्ति के लिए है।

यथा कामं तथा ध्यानं कारयेत् साधकोत्तमः।

महाभैरव का सात्त्विक स्वरूप अपमृत्यु निवारक, आयु-आरोग्य का प्रदाता तथा मोक्ष फल देनेवाला है। राजस स्वरूप धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धि देनेवाला है। तामस स्वरूप कृत्या-भूतप्रेत-ग्रहादि तथा शत्रूओं का शमन करनेवाला है।

शान्तिके सात्त्विकं ध्यानं वश्यादौ राजसं मतम्।
मारणादौ तामसं ध्यानं तद्देवं ध्यायन्महेश्वरम्॥

महाभैरव का सात्त्विक स्वरूप—स्फटिक के समान शुभ्रवर्ण, कुण्डलों से देदीप्यमान, दिव्य मणिगण, किंकिणी और नूपुर से भूषित, तेजस्वी प्रसन्नवदन, त्रिनेत्र, शूल और दण्ड धारण किये हुए, वालक सदृश रूपवाला है।

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥

महाभैरव का राजस स्वरूप—उगते हुए सूर्य के समान अरुण वर्ण, त्रिनयन, लालपुष्पों की माला धारण किये हुए, प्रसन्न मुख, हाथों में वरद, कपाल, अभय और शूल धारण किये हुए, नीलग्रीव, उदारता से युक्त, चन्द्रकला से विभूषित एवं लाल वस्त्र धारण किये हुए, समस्त भयों का हरण करनेवाला है।

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥

महाभैरव का तामस स्वरूप—नील पर्वत के समान वर्णवाले, चन्द्रकलाधर, मुण्डमालाधारी, महेश, दिगम्बर, दीपशिखा के समान रंगवाले केशों से युक्त, डमरू, अङ्कुश, खड्ग, पाश, अभय, नाग, घण्टा एवं कपालरूप आयुधों को आठ हाथों में ग्रहण किये हुए, विकराल दाढ़ोंवाले, त्रिनेत्र तथा मणिमय किंकिणी और नूपुरों से विभूषित है।

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिसकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥

महाभैरव का स्वर्णाकर्षण स्वरूप महत्पुण्य तथा सर्वैश्वर्य प्रदायक है, यह स्वरूप उपासकों के लिए चिन्तमणि तथा कल्पतरु है। स्वार्णाकर्षण भैरव की उपासना से साधक त्रिलोकी को वश में कर लेता है और अचला लक्ष्मी तथा श्री को प्राप्त कर लेता है।

चिन्तमणिमवाप्नोति धेनुं कल्पतरुं ध्रुवम्।
स्वर्णराशिमवाप्नोति शीघ्रमेव स मानवः॥
लोकत्रयं वशीकुर्यात् अचलां श्रियमाप्नुयात्।
न भयं विद्यते क्वापि विषभूतादि सम्भवम्॥

भैरव के समस्त भेदो में वटुक स्वरूप की उपासना करने पर, त्वरित सद्यः फल प्रदान करनेवाला है, दुःख में उपसना करने पर शीघ्र ही समस्त दुःख दूर हो जातें हैं, सुख में वटुक भैरव की आराधना करने पर कभी भी किसी प्रकार का कोई दुःख आता ही नहीं है। साधक भोग और मोक्ष दोनों सहजता से ही पा जाता है।

उपासना के दश अङ्ग होते है, मुख्यतः उपासना के दो अङ्ग है, जप एवं पूजन, इनमें जप के हवन, तर्पण, मार्जन तथा मार्जन और पूजन के कवच, सहस्रनाम, स्तोत्र, पटल, पद्धति अङ्ग होते हैं। दोनों का संकलन करने पर उपासना के दश अङ्ग होते है। प्रस्तुत वटुकभैरवसपर्या में उपासना के दशो अङ्गो को प्रकाशित किया गया है।

उपासना का मुख्य नियम है **देवो भूत्वा देवं यजेत्**। इसन नियम का पूर्णतः अनुपालन किया गया है। उपासना का पूर्ण फल तद्वत्ता प्राप्त करना ही होता है। तन्त्र विधि में साधक में सर्वप्रथम तद्वत्ता के लिए अनिवार्य सम्पूर्ण न्यासों का प्रकाशन किया गया है।

'उप समीपे अस् धातोः स्थिति' उप(उपसर्ग) का अर्थ समीप और **'अस्'** धातु का अर्थ स्थित होना है जिससे अर्थ निष्पन्न होता है देव के समीप में बैठना अथवा देव सान्निध्य प्राप्त करना।

ध्यान, प्रणाम, नमस्कार, पूजा, पाठ, जप, होम, भक्ति, सामीप्य, सेवा, सुश्रुषा, परिचर्या, आराधना, चिन्तन, मनन और निदिध्यासन को उपासना कहते हैं। इष्ट की कृपा प्राप्ति में एक मात्र उपासना ही साधन है।

कर्मणामनसावाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
समीपे सेवाविधिना उपास्तिरिती कथ्यते॥

ईश्वर ही संकोच के कारण संकुचित होकर जीव हो गया है तथा अपने कर्मो के अनुसार माया से ग्रस्त हो कर संसार सागर में भ्रमण करता है, उसे इस संसार सागर से छुटकारा दिला कर स्वस्वरूपत्व की प्राप्ति में एक मात्र साधन उपासना ही है, उपसना से अतिरिक्त कोई अन्य साधन स्वस्वरूपत्व की प्राप्ति नहीं करा सकती है।

उपासना से ही जीव में ज्ञान का विकाश होता है, उपसना से ही परमात्मतत्त्व का बोध

हो पाता है, उपासक का चित्त सांसारिक विषयों से विमुखता को प्राप्त कर परमात्मत्त्व को प्राप्त करता है।

इस ग्रन्थ के आश्रयण में अलग से किसी साधनों की कोई आवश्यकता नहीं होती, केवल दीक्षादि ग्रहण करने के पश्चात् उपासना विधि की शिक्षा प्राप्त कर कोई भी साधक इस ग्रन्थ में बतलाये हुए विधियों का अनुसरण करते हुए समस्त कार्य का सम्पादन करता जला जाये तो उस निश्चयेन पूर्ण फल प्राप्ति हो जाती है। इसकी पूर्णरूप से सत्यता का प्रतिपादन भगवान शङ्कर ने रुद्रयामलादि ग्रन्थों में स्वयं किया है, इसमें अन्यान्य किसी प्रमाण की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

साधकों को त्रिविध तापों तथा समस्त आपत्तियों-विपत्तियों से रक्षा करनेवाले श्रीमद्बटुकभैरव ही हैं जिनके स्मरणानुष्ठानादि करने से प्राणियों के शारीरिक, मानसिक, व्यावहारिक समस्त दु:खों के कारणों की आत्यन्तिक परिसमाप्ति हो जाती है। इनके उपासना के लिए सरल तथा पूर्ण समर्चाविधि अनुपलब्ध होने तथा विद्वानों की आग्रह स्वरूप ही प्रस्तुत प्रबन्धनिबन्धन लिपिबद्ध हुआ। यह ग्रन्थ मुख्यत: साधकों के लिए सहायक है, जो स्वात्मकल्याण की कामना से उपासना करतें है, विधिवत् गुरु से श्रीमद्बटुकभैरव की दीक्षा लेकर पुरश्चरण करके समस्त जीवन को आनन्दमय बनाया जा सकता है इस दीक्षा तथा शिक्षा के लिए साधक सम्पर्क कर सकते है तथा नि:शङ्क होकर मानव जन इस विधि से अपना कल्याण कर सकते हैं। यह सर्वथा सरल और सुगम विधि है। श्रीकाशीविश्वनाथस्वरूप मेरे जनक परमपुण्यमय श्रीसद्गुरुस्वरूप ब्रह्मलीन प्रो० वायुनन्दनपाण्डेय जी को जनकल्याणार्थ समर्पित है। यह प्रबन्धग्रन्थ जनकल्याणकारी हो, जनसामान्य तथा साधक गण इस विधि का अनुसरण करके अपना तथा लोक का भला करें।

विद्वच्चरणचञ्चरीक,
रामप्रिय पाण्डेय

विषय-सूची:

मङ्गलाचरणम् १
सपर्या में आवश्यक कृत्य १
गुरु-पूजनम् १
श्रीगुरुपादुका २
यज्ञभूमिपूजनम् ४
तत्त्वशोधनम् ४
प्राणायामम् ५
तिलकम् ६
शिखावन्धनम् ६
समान्यार्घ्य-स्थापनम् ६
द्वारदेवतापूजनम् ७
यज्ञभूमिसंस्कारम् ८
देहरक्षान्यास: १०
भूतशुद्धि-विधि: १२
बुद्धिशोधनम् १३
अभिमन्त्रणम् १५
अघोरकरम् १५
श्रीगुरुतर्पणम् १५
इष्टदेवतातर्पणम् १५
संवित्स्तवनम् १५
भूतशुद्धि: १५
स्वशरीरे इष्टदेवताप्रतिष्ठाविधि: १६
त्वगादिन्यास: १८
प्राणशक्तिपीठदेवतान्यास: १८
स्वशरीरे इष्टयन्त्रविन्यासम् २२
प्रथमावरणम् २३
दिव्यौघादिगुरुणां विन्यासम् २४
सिद्धौघादिगुरुणां विन्यासम् २४
मानवौघादिगुरुणां विन्यासम् २५
त्रिकोणे त्रिदेवानां विन्यासम् २६
पञ्चकोणे ईशानादिविन्यासम् २६
अन्त:पञ्चकोणे पञ्चवक्त्रानां विन्यासम् २६
षड्पत्रोपरि षड्नाथानां विन्यासम् २७
अन्त:षड्पत्रोपरि षड्पुत्रानां विन्यासम् २७
अष्टकोणोंपरि डाकिन्यादिपुत्राणांविन्यासम् २८
अन्तरष्टकोणोंपरि ब्राह्म्यादिपुत्राणांविन्यासम् २९
अष्टपत्रोपर्यष्टभैरवाणां विन्यासम् ३०
षोडशपत्रोपरि कलानां विन्यासम् ३१
षोडशपत्रोपरि कलानां विन्यासम् ३२
षोडशपत्रोपरि कलानां विन्यासम् ३३
भूपुरे हेतुकादि विन्यासम् ३४
भूपुरे लकुलेशादि विन्यासम् ३५
भूपुरे दशदिग्पालानां विन्यासम् ३६
भूपुरे दशदिग्पालास्त्राणां विन्यासम् ३७
मध्यविन्दौ इष्टदेवताप्राणप्रतिष्ठा ३७
मातृकान्यासम् ३८
चक्रन्यासम् ३९
अन्तर्मातृकान्यासम् ३९
चक्रस्थमातृकान्यासम् ४०
बहिर्मातृकान्यासम् ४१
श्रीमातृकाऋषिन्यासम् ४३
श्रीमातृकाछन्दादिन्यासम् ४४
श्रीमातृकाबीजवर्णस्वरूपवाहनन्यासम् ४६
पञ्चब्रह्मन्यासम् ४९
पञ्चवक्त्रध्यानम् ५१
काममातृकान्यासम् ५२
प्रेतबीजन्यासं प्रथमम् ५५
सिंहबीजन्यासं द्वितीयम् ५९
क्वाणबीजन्यासं तृतीयम् ६२
सत्याबीजन्यासं चतुर्थम् ६५
श्रीबीजन्यासं पञ्चमम् ६८
प्राणबीजन्यासं षष्ठम् ७२

घन्टाबीजन्यासं सप्तमम् ७५
ख्यातिर्बीजन्यासं अष्टमम् ७८
मूलन्यासं नवमम् ८१
ग्रामरीर्बीजन्यासं दशमम् ८७
आकूतिबीजन्यासं ९१
कालबीजन्यासं ९५
विमार्वीजन्यासम् ९९
महापरा ख्यार्वीजन्यासम् १०३
महा[illegible]न्यासम् १०७
कलामातृकान्यासम् ११२
पीठन्यासः ११५
आसनन्यासः ११८
अन्तःपूजनम् ११९
कुण्डलिनी ध्यानम् ११९
शिवशिवाध्यानम् १२०
कुण्डलिनीस्तुतिः १२१
अक्षमाला स्तुतिः १२५
अक्षमालाजपविधिः १२७
विशुद्धचक्र के पत्रोंपर अःप्रत्याहार के वर्ण १२८
अनाहतचक्रके पत्रोंपर कठप्रत्याहारके वर्ण १२९
मणिपूरचक्रके पत्रोंपर डफप्रत्याहारके वर्ण १३०
स्वाधिष्ठानचक्रके पत्रोंपर बलप्रत्याहारके वर्ण १३१
मूलाधारचक्रके पत्रोंपर वसप्रत्याहारकेवर्ण १३१
मूलाधार की कर्णिका में लँ बीज १३२
स्वाधिष्ठान की कर्णिका में वँ बीज १३२
मणिपूर की कर्णिका में रँ बीज १३२
अनाहत की कर्णिका में यँ बीज १३३
विशुद्ध की कर्णिका में हँ बीज १३३
आज्ञाचक्र के पत्र पर हकार वर्ण १३३
पुनः आज्ञाचक्र के पत्र पर हकार वर्ण १३४
विशुद्ध की कर्णिका में हँ बीज १३४
अनाहत की कर्णिका में यँ बीज १३४
मणिपूर की कर्णिका में रँ बीज १३५
स्वाधिष्ठान की कर्णिका में वँ बीज १३५
मूलाधार की कर्णिका में लँ बीज १३५
पुनः मूलाधारचक्रके पत्रोंपर वसप्रत्याहारके वर्ण १३६
पुनः स्वाधिष्टानचक्रके पत्रोंपर बलप्रत्याहारके वर्ण १३६
पुनः मणिपूरचक्रके पत्रोंपर डफप्रत्याहारके वर्ण १३७
पुनः अनाहतचक्रके पत्रोंपर कठप्रत्याहारके वर्ण १३७
वटुकभैरवान्तर्यागविशेषः १३९
पात्रासादनम् १४३
वर्धनीकलशाधारचक्रम् १४३
वर्धनीकलशस्थापनम् १४३
गङ्गाद्यावाहनम् १४५
वर्धनीकलशपूजनम् १४६
श्रीपात्रादिसंस्कारम् १५६
शुक्रशापविमोचनम् १५६
कलशे दशदोषनिवारणम् १५७
आनन्दभैरवध्यानम् १५९
आनन्दभैरवीध्यानम् १५९
शक्तिचक्रम् १६०
अग्निमण्डलपूजनम् १६१
अग्निकलानांपूजनम् १६१
अर्कमण्डलपूजनम् १६२
अर्ककलानांपूजनम् १६२
सोममण्डलपूजनम् १६३
सोमकलानांपूजनम् १६३
अङ्कुशमुद्रालक्षणम् १६५
गालिनी मुद्रालक्षणम् १६५
धेनुमुद्रालक्षणम् १६५
शङ्खमुद्रालक्षणम् १६६
कवचमुद्रालक्षणम् १६७
अस्त्रमुद्रालक्षणम् १६७
मत्स्यमुद्रालक्षणम् १६८
योनिमुद्रालक्षणम् १६८
धेनुमुद्रालक्षणम् १६८
श्रीपात्रविशेषः १६८
पाद्यपात्रस्थापनम् १८३
आचमनीयपात्रस्थापनम् १८४
गुरुपात्रस्थापनम् १८४
वीरपात्र स्थापनम् १८५
क्षेत्रकीलनम् १८६
क्षेत्रकीलनाङ्गवलिदानम् १८७
वटुकवलिः १८७

योगिनीबलिः १८८
गणेशबलिः १९०
क्षेत्रपालबलिः १९२
राजराजेश्वरबलिः १९३
कालबलिदानम् १९५
मृत्युबलिदानम् १९७
दिग्पालादिबलिदानम् १९८
भूतादिबलिः २००
दिग्रक्षणम् २०२
पञ्चगव्यकरणम् २०४
आवाहर्नीमुद्रालक्षणम् २०५
अपगमनमुद्रालक्षणम् २०५
मांसमीनमद्यमुद्राकुण्डगोलादिशोधनम् २०६
बाह्यपूजनम् २१३
प्रधानकलशस्थापनम् २१३
कलशपूजनम् २२४
कलशप्रार्थना २२९
पीठदेवतास्थापनंपूजनञ्च २३०
पीठशक्तिनां पूजनम् २३२
श्रीवटुकभैरवपूजनम् २३४
श्रीष्टवटुकभैरवध्यानम् २३४
आवाहनम् २३५
आवाहर्नीमुद्रालक्षणम् २३५
आसनम् २३५
पद्ममुद्रालक्षणम् २३६
स्थापनम् २३६
स्थापनीमुद्रालक्षणम् २३६
प्रतिष्ठा २३६
सन्निधानम् २३७
सन्निधानमुद्रालक्षणम् २३७
सन्निरोधनम् २३७
सन्निरोधनमुद्रालक्षणम् २३८
सम्मुखीकरणम् २३८
सम्मुखीकरणमुद्रालक्षणम् २३८
अवगुंठनम् २३८
अवगुंठन(भ्रामित)मुद्रालक्षणम् २३९
सकलीकरणम् २३९
सकलीकरणमुद्रालक्षणम् २३९
अमृतीकरणम् २४०
धेनुमुद्रालक्षणम् २४०
परमीकरणम् २४०
परमीकरणमुद्रालक्षणम् २४०
स्वागतम् २४१
सुस्वागतम् २४१
प्राणस्थापनम् २४१
लेलिहानमुद्रालक्षणम् २४२
अष्टमुद्राप्रदर्शनम् २४२
योनिमुद्रालक्षणम् २४२
महायोनिमुद्रालक्षणम् २४२
खड्गमुद्रालक्षणम् २४३
मुण्डमुद्रालक्षणम् २४३
डमरुमुद्रालक्षणम् २४३
त्रिशूलमुद्रालक्षणम् २४३
वरमुद्रालक्षणम् २४४
अभयमुद्रालक्षणम् २४४
वटुकभैरवगायत्रीमन्त्रम् २४४
अङ्गपुष्पाञ्जलिम् २४४
पाद्यम् २४५
अर्घ्यम् २४५
आचमनम् २४५
मधुपर्कम् २४६
स्नानीयजलम् २४६
स्नानाङ्गाचमनीयजलम् २४६
पुनरर्घ्यम् २४६
उद्वर्तनम् २४७
शुद्धस्नानीयजलम् २४७
वस्त्रम् २४७
यज्ञोपवीतम् २४७
उत्तरीयम् २४८
पुष्पसारम् २४८
आभूषणम् २४८
विन्यासम् २४८
चन्दनम् २५०
अक्षतम् २५०

पुष्पम् २५१
पुष्पमालाम् २५१
दूर्वाम् २५१
विल्वपत्रम् २५१
नानापरिमलद्रव्यम् २५२
सिन्दूरम् २५२
कुङ्कुमम् २५२
धूपसंस्कारम् २५३
धूपाभिमन्त्रणम् २५३
घण्टापूजनम् २५३
धूपदानम् २५३
दीपदानम् २५४
दीपसमर्पणम् २५४
नैवेद्यसंस्कारम् २५४
नैवेद्यसमर्पणम् २५५
पानीयंजलम् २५५
उद्वर्तनम् २५६
ताम्बूलसंस्कारम् २५६
ताम्बूलसमर्पणम् २५६
ऋतुफलम् २५६
नीराजनम् २५७
तत्त्वमुद्रालक्षणम् २५७
पुष्पाञ्जलिम् २५७
अञ्जलिमुद्रालक्षणम् २५८
पूजनसमपर्णम् २५८
आवरणपूजनम् २५९
परिवार्चनादेशः २५९
प्रथमावरणं विन्दौगुरुपंक्तिसहितवटुकभैरवपूजनम् २५९
दिव्यौघादिगुरुणां पूजनम् २५९
सिद्धौघादिगुरुणां पूजनम् २६०
मानवौघादिगुरुणां पूजनम् २६१
द्वितीयावरणं त्रिकोणे त्रिदेवपूजनम् २६३
तृतीयावरणं पञ्चकोणे ऐशान्यादिपूजनम् २६३
अन्तः पञ्चकोणे पञ्चवक्त्रपूजनम् २६४
चतुर्थावरणं षडदले आनन्दनाथादिपूजनम् २६५
अन्तः षडदले उमादिपुत्राणां पूजनम् २६६
पञ्चमावरणंअष्टकोणेडाकिन्यापुत्राणांपूजनम् २६७
अन्तःअष्टकोणे ब्राह्म्यादिपुत्राणां पूजनम् २६८
षष्ठावरणं द्वितीय अष्टदले भैरवादिपूजनम् २६९
सप्तमावरणं षोडशकोणे कलानां पूजनम् २७०
अन्तः षोडशकोणे कलानां पूजनम् २७२
बहिर्षोडशपत्रे कलानां पूजनम् २७४
अष्टमावरणं प्रथमभूपुरे हेतुकादिपूजनम् २७६
नवमावरणं द्वितीयभूपुरेलकुलीशादिपूजनम् २७७
दशमावरणं तृतीयभूपुरेदिग्पालादिपूजनम् २७८
एकादशावरणं तत्रैव दिग्पालास्त्रपूजनम् २८०
दैनिकबलिदानम् २८२
मूलमन्त्रजपम् २९४
मन्त्रवर्णन्यासम् २९५
मन्त्रपदन्यासम् २९६
महाभैरवध्यानम् २९६
वटुकभैरवसात्त्विकध्यानम् २९७
वटुकभैरवराजसध्यानम् २९७
वटुकभैरवतामसध्यानम् २९७
शापविमोचनम् २९८
मूलमन्त्रप्राणायामम् २९८
मन्त्रकुल्लुका २९८
मन्त्रसेतु २९८
मन्त्रमहासेतु २९८
मन्त्रनिर्वाणम् २९८
मुखशोधनम् २९८
प्राणयोगम् २९८
उद्दीपनम् २९८
मूलमन्त्रम् २९९
मूलमन्त्रार्थम् २९९
मालाप्रार्थना २९९
सहस्रनामार्चनम् ३०१
श्रीवटुकभैरवअष्टोत्तरशतनामार्चनम् ३४१
महाभैरवमातृकान्यासम् ३४१
नित्यपठनीयस्तोत्रम् ३५७
अथभैरवतन्त्रेदेवीरहस्योक्त श्रीमद्वटुकभैरवकवचम् ३५७
अथरुद्रयामलोक्तश्रीमद्वटुकभैरवब्रह्मकवचंद्वितीयम्३६०
अथ श्रीमद्वटुकभैरवकवचंतृतीयम् ३६२
शक्तिरहस्योक्तश्रीमद्वटुकभैरवपञ्जरकवचंचतुर्थम् ३६४

रुद्रयामलोक्त श्रीमद्वटुकभैरवहृदयस्तोत्रम् ३६७
कालसङ्कर्षणतन्त्रोक्त श्रीमद्वटुकभैरवस्तोत्रम् ३७९
श्रीवटुकभैरववकारादिसहस्रनामस्तोत्रम्प्रथमम् ३८४
श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रम् द्वितीयम् ४०३
अथ तृतीयं श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रम् ४१५
अथ चतुर्थं श्रीवटुकभैरवसहस्रानामस्तोत्रम् ४३२
श्रीमद्वटुकभैरवपटलम् ४४३
श्रीमद्वटुकभैरवपद्धतिस्तोत्रम् ५१६
कालभैरवाष्टकम् ५५४
अथापराधक्षमापनम् ५५५
होमार्थतान्त्रिकाग्निस्थापनम् ५५८
स्थण्डिलयन्त्रम् ५५८
अग्नेर्प्रार्थना ५६०
अग्निजिह्वान्यासः ५६०
सात्त्विक न्यासः ५६०
राजस न्यासः ५६१
तामस न्यासः ५६१
अग्न्यधिष्ठाता न्यासः ५६१
मूर्तिन्यासः ५६२
पीठन्यासः ५६३
इष्टशक्तिन्यासः ५६३
पीठदेवताविन्यासः ५६५
पीठशक्तिनांपूजनम् ५७०
अग्नेर्प्राणप्रतिष्ठा ५७२
अग्न्यावरणार्चनम् ५७२
प्रथमावरणपूजनम् ५७२
द्वितीयावरणपूजनम् ५७२
तृतीयावरणपूजनम् ५७३
चतुर्थावरणपूजा ५७३
पञ्चमावरणपूजनम् ५७३
कुशकण्डिकापात्रासादनञ्च ५७५
ब्रह्मा-वरणम् ५७५
सप्तजिह्वाहुतिः ५७८
षडङ्गाहुतिः ५७८
अग्निमूर्त्याहुतिः ५७९
दिक्पालाहुतिः ५७९
दिक्पालास्त्राहुतिः ५७९
पीठदेवतायहवनम् ५८०
पीठशक्तयेहवनम् ५८२
श्रीष्टदेवताय हवनम् ५८२
प्रथमावरणं गुरुणांहवनम् ५८२
दिव्यौघादिगुरुणां हवनम् ५८२
सिद्धौघादिगुरुणां हवनम् ५८२
मानवौघादिगुरुणां हवनम् ५८३
द्वितीयावरणं त्रिदेवायहवनम् ५८३
तृतीयावरणं ऐशान्यादिहवनम् ५८३
पञ्चवक्त्रहवनम् ५८४
चतुर्थावरणं आनन्दनाथादिहवनम् ५८४
उमादिपुत्राणांहवनम् ५८४
पञ्चमावरणं डाकिन्यापुत्राणांहवनम् ५८४
ब्राह्म्यादिपुत्राणांहवनम् ५८४
षष्ठावरणं भैरवादिहवनम् ५८४
सप्तमावरणं कलानांहवनम् ५८४
अष्टमावरणं हेतुकादिहवनम् ५८७
नवमावरणं लकुलीशादिहवनम् ५८८
दशमावरणं दिग्पालादिहवनम् ५८८
एकादशावरणं दिग्पालास्त्रहवनम् ५८८
मूलमन्त्रहवनम् ५८९
क्षमाप्रार्थना ६२६
कुमारी-सुवासिनीपूजनम् ६२९
कुमारीस्तोत्रम् ६३४
पूजनविधिः ६३५
शुभाशुभफलम् ६३५
छागादिबलिदानम् ६४०
पार्श्वपूजनम् ६४०
अङ्गपूजनम् ६४१
बलिगायत्री ६४२
खड्ग-प्रार्थना ६४२
नीराजनविधिः ६४३
दीपज्योतिपूजनम् ६४३
महाभैरवध्यानम् ६४४
श्रीमद्वटुकभैरवयन्त्रस्थापनम् ६४६
यन्त्रप्रतिष्ठा ६४७
यन्त्रेश्रीमद्वटुकभैरवप्राणप्रतिष्ठा ६४७

प्रथमावरणंविन्दौगुरुपंक्तिसहितवटुकभैरवआवाहनम् ६४८
दिव्यौघादिगुरुणां आवाहनम् ६४८
सिद्धौघादिगुरुणां आवाहनम् ६४९
मानवौघादिगुरुणां आवाहनम् ६५०
द्वितीयावरणं त्रिकोणे त्रिदेवआवाहनम् ६५१
तृतीयावरणं पञ्चकोणे ऐशान्यादिआवाहनम् ६५२
अन्त: पञ्चकोणे पञ्चवक्त्रआवाहनम् ६५२
चतुर्थावरणं षडदलेआनन्दनाथादिआवाहनम् ६५३
अन्त: षडदले रुद्रादिपुत्राणां आवाहनम् ६५४
पञ्चमावरणं अष्टकोणेडाकिन्यापुत्राणांआवाहनम् ६५४
अन्त:अष्टकोणे ब्राह्म्यादिपुत्राणां आवाहनम् ६५५
षष्ठावरणं द्वितीय अष्टदलेभैरवादिआवाहनम् ६५६
सप्तमावरणं षोडशकोणेकलानां आवाहनम् ६५९
अन्त: षोडशकोणे कलानां आवाहनम् ६५९
बहिर्षोडशपत्रे कलानां आवाहनम् ६६१
अष्टमावरणंप्रथमभूपुरेहेतुकादिवटुकानावाहनम् ६६३
नवमावरणंद्वितीयभूपुरेलकुलीशादिआवाहनम् ६६४
दशमावरणं तृतीयभूपुरेदिग्पालादिआवाहनम् ६६५
एकादशावरणं तत्रैव दिग्पालास्त्रआवाहनम् ६६६
जपमालासंस्कारम् ६६९
पञ्चगव्यसंस्कारम् ६६९
मातृकाविन्यासम् ६७०
मन्त्रसंस्कारम् ६८०
शापोद्धारम् ६८०
उत्कीलनम् ६८०
चेतनीम् ६८०
आह्लादनीम् ६८१
तेजोद्दीपनम् ६८१
मन्त्राभ्यजननम् ६८१
सूतकनिवारणम् ६८१
उभयसूतकत्यागम् ६८१
मन्त्रप्रत्यक्षम् ६८१
प्राणस्थापनम् ६८२
मन्त्रस्पन्दनम् ६८२
मन्त्रदीपनम् ६८२
मन्त्रताडनम् ६८२
मन्त्रनिबोधनम् ६८२
मन्त्राभिषेचनम् ६८२
मन्त्रदाहनम् ६८२
मन्त्रविमलीकरणम् ६८३
मन्त्रपुनर्जीवनम् ६८३
मन्त्रप्रोक्षणम् ६८३
मन्त्र आप्यायनम् ६८३
तर्पणम् ६८३
पुनर्दीपनम् ६८४
गोपनम् ६८४
शिवागमतन्त्रोक्त श्रीमद्बटुकभैरवदीपदानम् ६८५
अथ दीपदानपद्धति: ६९९
दीपदानकाल: ६९९
दीपदानसम्भारा: ६९९
अथ वीरसाधनम् ७१४
पूजनोपयोगीसामग्री ७२०

।।श्रीः।।

वटुकभैरवसपर्या

मङ्गलाचरणम्

शिवोत्सङ्गे समासीनां लालयन्तीं विनायकम्।
विद्याकल्पलताबीजं वन्दे सर्वार्थदां शिवाम्॥

शिव के साथ दिव्यासन पर बैठी हुई, अपने पुत्र गणेश का लालन(दुलार) करती हुई, विद्याकल्पलता के बीजरूप शिवा भगवती पार्वती की सभी प्रकार से अर्थबोध के लिए वन्दना करता हूँ।

सपर्या में आवश्यक कृत्य

गुरु-पूजनम्

प्रातः नित्यस्नानादिकृत्य से निवृत्त होकर गुरु-इष्टदेवता तथा दिक्पालों को नमन कर सन्ध्यावन्दनादि से निवृत्त होकर दीक्षाप्रदायी स्वगुरु का मानसोपचार पूजन करे।

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्,
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरानद्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम्,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥१॥

श्रीनाथादि तीनों गुरुओं, गणपति, तीनों पीठों के अधिपति भैरवों, मानवौघदिव्यौघ-सिद्धौघों, तीनों वटुकों, दूतीक्रम मण्डलों के समस्त गुरुओं के दोनों चरणों का वन्दन करता हूँ। बयासी, चौसठ तथा नवों प्रकार के वीरों तथा पाँच प्रकार के वीरावलियों के साथ मालिनी मन्त्रराज के सहित समस्त गुरुओं के साथ गुरुमण्डल की वन्दना करता हूँ॥१॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥२॥

गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही महादेव महेश्वर शिव हैं, गुरु ही साक्षात् ब्रह्म हैं, इसलिए श्रीगुरु को नमस्कार है॥२॥

मानसोपचारपूजनम्—**श्री गुरुदेवाय नमः ध्यायामि।** स्वगुरु का नाम पूर्वक ध्यान करे जैसे—**श्रीविश्वनाथाय गुरुदेवाय नमः ध्यायामि।**

ॐ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।
ॐ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।
ॐ यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि नमः।
ॐ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।
ॐ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।
ॐ सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि नमः।

श्रीगुरुपादुका का पाठ करे—

श्रीगुरुपादुका

ब्रह्मरध्रसरसीरुहोदरे नित्यलग्नमवदातमद्भुतम्।
कुण्डलीविवरकाण्डमण्डितं द्वादशार्णसरसीरुहं भजे॥१॥

ब्रह्मरन्ध्र सरोवर से उदर तक कुण्डलीविवर सुषुम्ना में मण्डित द्वादशार्ण सरस में अद्भुत रूप में प्रगट होनेवाली का उह कर नित्य भजन करता हूँ॥१॥

तस्यकन्दलितकर्णिकापुटे क्लृप्तरेखमकथादिरेखया।
कोणलक्षितहलक्षमण्डलीं भावलक्ष्यमबलालयं भजे॥२॥

कमल के कर्णिका पुट में अकथादि रेखा से आक्लृप्त त्रिकोण त्रय से आलक्षित हकार से युक्त लकार क्षकार तक मण्डलों में व्याप्त अबलालय में ध्यान तथा भजन करता हूँ॥२॥

तत्पुटे पटुतड़ित्कडारिमस्पर्द्धमानमणिपाटलप्रभम्।
चिन्तयामि हृदि चिन्मयं वपुर्नादबिन्दुमणिपीठमुज्ज्वलम्॥३॥

कमल की कर्णिका में तडित विद्युत तेज के सदृश, मणियों की कान्ति से स्पर्द्धमान अपने हृदय में चिन्मय रूप से कल्पित शरीर, नाद, विन्दु से युक्त तथा उज्वल मणिपीठ पर चिन्तन करता हूँ॥३॥

ऊर्ध्वमस्य हुतभुक्शिखात्रयं तद्विलासपरिबृंहणास्पदम्।
विश्वघस्मरमहोच्चिदोत्कटं व्यामृशामि युगमादिहंसयोः॥४॥

इसके ऊर्ध्व में हवनीय पदार्थों का भोग करनेवली तीन शिखायें तथा उसके के ऊपर उनके विलास का स्थान, विश्वघ, स्मर, महा उत्कट, चित्त में युगल हंस परम गुरु स्वरूप शिव शक्ति का ध्यान करता हूँ॥४॥

तत्र नाथचरणारविन्दयोः कुङ्कुमासवपरीमरन्दयोः।
द्वन्द्वबिन्दूमकरन्दशीतलं मानसं स्मरति मङ्गलास्पदम्॥५॥

हृद् कमल में श्रीनाथ के कुङ्कुमासव से अनुलिप्त दोनों चरणारविन्द, विन्दू द्वय के शीतल मङ्गलता प्रदान करनेवाले मकरन्द का मानस में ध्यान करता हूँ॥५॥

निषक्तमणिपादुका नियमितौघकोलाहलम्।
स्फुरत्किसलयारुणं नखसमुल्लसच्चन्द्रकम्॥६॥

मणियों से निर्मित पादुका औघ गुरुओं के रूप में संयुक्त कोलाहल से युक्त, अरुण वर्ण के खिले हुए कमल पुष्प, चन्द्र कलाओं से उल्लसित गुरु पादुका को अपने मानस में ध्यान पूर्वक नमस्कार करता हूँ॥६॥

परामृतसरोवरोदितसरोजसद्रोचिषं ।
भजामि शिरसि स्थितं गुरुपादारविन्दद्वयम्॥७॥

पर मण्डल से द्रवीभूत अमृत सरोवर में खिले हुए रक्त आभा से प्रकाशमान कमल के ऊपर स्थित गुरु के दोनों पादारविन्दो का शिर पर ध्यान करते हुए भजन करता हूँ॥७॥

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे।
विद्यावऽतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रहः॥८॥

हमारे नाथ(स्वामी) गुरु रूप में विद्यमान भगवान शिव को नमस्कार है, विद्या की संसिद्धि के लिए अवतार रूपी अनेक विग्रह को स्वीकार करते हैं, उन्हें शिर पर मानस ध्यान पूर्वक नमन करता हूँ॥८॥

नवाय नवरूपाय परमार्थस्वरूपिणे।
सर्वज्ञानतमोभेदभानवे चिद्घनाय ते॥९॥

नव रूपों में विभक्त, नव स्वरूप को ग्रहण करनेवाले, परमार्थ स्वरूपी, समस्त ज्ञान राशी स्वरूपवाले सर्वज्ञ, तम गुण से अभिन्नभासमान, प्रकाशमान, चिद् रूपी शिव स्वरूपी गुरु का अपने मानस में ध्यान पूर्वक नमस्कार करता हूँ॥९॥

स्वतन्त्राय दयाक्लृप्तविग्रहाय शिवात्मने।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे॥१०॥

सर्व तन्त्र स्वतन्त्र, दया के सागर, आत्म रूपी शिव विग्रह, भव्यों में भव्यरूप, पर मण्डल के भेद के लिए चिद् रूपी शिव स्वरूपी गुरु का अपने मानस में ध्यान पूर्वक नमस्कार करता हूँ॥१०॥

विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञानरूपिणे॥११॥

विवेकियों में विवेक के लिए, विमर्श करनेवालों में विमर्श के लिए, प्रकाश जाननेवालों में प्रकाश जानने के लिए, ज्ञानियों में ज्ञानस्वरूप चिद् रूपी शिव स्वरूपी गुरु का अपने मानस में ध्यान पूर्वक नमस्कार करता हूँ॥११॥

पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नामस्कुर्यामुपर्यधः।
सदामच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्॥१२॥

अपने आगे, पीछे, दोनों पार्श्व, ऊपर और अध: सदा चित्तरूपी आसन पर विराजमान चिद् रूपी शिव स्वरूपी गुरु का अपने मानस में ध्यान पूर्वक नमस्कार करता हूँ।।१२।।

इत्येवं पञ्चभिश्लोकैः स्तुवीत यतमानसः।
प्रातः प्रबोधसमये जपात् सुदिवसं भवेत्॥१३॥

इन पाँच श्लोकों से जो साधक अपने मानस से युक्त होकर प्रात: काल ब्रह्म मुहूर्त में जो पाठ करता है, जप करता है, उसका सुदिवस हो जाता हैं।।१३।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥१४॥

अज्ञान रूपी अन्धकार के निवृत्ति के लिए, ज्ञान रूपी अञ्जन की शलाका से, चक्षु को खोलनेवाले चिद् रूपी शिव स्वरूपी श्रीगुरु का अपने मानस में ध्यान पूर्वक नमस्कार करता हूँ।।१४।।

ॐ ह्रीँ वँ गुरुभ्यो नमः, परमगुरुभ्यो नमः, परात्परगुरुभ्यो नमः, परमेष्टिगुरुभ्यो नमः, मानवौघगुरुभ्यो नमः, सिद्धौघगुरुभ्यो नमः, दिव्यौघगुरुभ्यो नमः सर्वेभ्योगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यज्ञभूमिपूजनम्

कुशादि निर्मित पवित्री धारण कर पुरश्चरण स्थान पर जाकर द्वार के चौखट पर गन्धाक्षातपुष्प से अभ्यर्चन करे—

ॐ ह्रीँ वँ भद्रकाल्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। दाहिनी चौखट पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। बायें चौखट पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ लम्बोदराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ऊपरी चौखट पर पूजन करे।

साधक सर्वप्रथम पाँच वर्ण के रंगे हुए अत्यन्त शुद्ध स्थान में बैठकर पूजा वेदी के बाहर अपने गुरु, इष्ट, देवता तथा दिक्पालों को प्रणाम कर पवित्री धारण करे और आचमन प्राणायाम करने के उपरान्त हाथ में कुशा-निर्मित मोटक लेकर मौन होकर पापशान्ति के लिए महाकाली से प्रार्थना करे।

तत्त्वशोधनम्

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ। मूल मन्त्र से तीन बार आचमन करे।

ऊपरिलिखित मन्त्रों से आचमन करने के बाद मूल मन्त्र से तीन बार पुनः आचमन करे, फिर प्राणायाम में एक बार मन्त्र का मानस जप करते हुए जो नासिका उस समय चल रही हो, उससे वायु को मन्त्र जपकाल तक धीरे-धीरे फेफड़े में भरे तथा चार बार जप करते हुए वायु को रोक कर फिर धीरे-धीरे दो बार जप करते हुए बाहर निकाल दे यथा एक बार मूलमन्त्र जप कर पूरक, चार बार जप कर कुम्भक, दो बार जप करके रेचन करे। सर्वत्र इसी विधि से प्राणायाम करे। तदनन्तर पापनिवृत्ति के लिए देवी से प्रार्थना करे।

ॐ देवि! त्वत्प्रकृतं चित्तं पापाक्रान्तक भून्मम।
तन्निस्सरन्तु चित्तान्मे पापं हूँ फट् च ते नमः॥१॥

हे चिद्रूपिणी महादेवि! मैं पाप से आक्रान्त हो गया हूँ, हमारे चित्त में प्रकट होकर समस्त पाप जो हमारे चित्त में समाहित हो गये हैं, उन पापों को निकाल दो, हे हूँ फट् स्वरूपिणि! आपको नमस्कार है॥१॥

सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च।
एते शुभाऽशुभस्येह कर्मणो नवसाक्षिणः॥२॥

सूर्य-सोम-यम-काल तथा पञ्चमहाभूत पृथ्वि-जल-अग्नि-वायु-आकाश कर्म के नव साक्षी देवताओं को नमस्कार है॥२॥

प्राणायामम्

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ। मूल मन्त्र को एक बार पढ़ कर पूरक करे, चार बार पढ़ कर कुम्भक करे, दो बार पढ़ कर रेचन करे, इस प्रकार तीन बार प्राणायाम अवश्य करे।

ॐ ह्रीँ वँ वज्रोदके हूँ फट् स्वाहा। मन्त्र जपते हुए जल नदी कूपादि से ग्रहण करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ स्वाहा। मन्त्र जपते हुए जल को पूजन गृह में लाये।

ॐ ह्रीँ वँ विशुद्ध सर्वपापानि शमयाशेष विकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा। जल शोधन करे।

आचमनम्—**ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।** मूल मन्त्र से तीन बार आचमन करके—

ॐ ह्रीँ वँ वज्रोदके हूँ फट् स्वाहा। पात्र में जल ग्रहण करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ फट् स्वाहा। हाथ में जल ग्रहण करे।

ॐ ह्रीँ वँ विशुद्धं सर्वपापानिशमयाशेषविकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा। मन्त्र से पाद प्रक्षालन करे।

ॐ ह्रीँ वँ स्वाहा। पुनः आचमन करने के पश्चात् अपने ऊपर तिलकादि लगाये।

तिलकम्

देव्यास्त्रं विलिखेद्भाले कालीबीजं ततो हृदि।
शक्तिं मध्यगतां कृत्वा कूर्चबीजं न्यसेत्सुधी॥

ललाट पर देवी का अस्त्र(त्रिशूल) लिखे, हृदय पर **क्रीँ** बीज लिखे, नाभि पर शक्ति बीज **ह्रीँ** लिखे तथा नाभि के नीचे **हूँ** बीज बुद्धिमान साधक को लिखना चाहिये।

रक्त चन्दन से ललाट, उदर, हृदय, कण्ठ, दक्ष पार्श्व, वाम पार्श्व, दोनों अंस, दोनों पृष्ठ, ककुद, दोनों भुजा, मूर्धा इत्यादि चतुर्दश स्थानों में तिलक करे।

शिखाबन्धनम्

ॐ मणिधरिणि वज्रिणि शिखरिणि सर्वलोकवशंकरि हूँ फट् स्वाहा।

ॐ उर्ध्वकेशे विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये चामुण्डे चाऽपराजिते॥१॥

ऊपर की तरफ उठी हुए केशोंवाली (ऊर्ध्व स्थित शिखा के केशों में रहनेवाली) विरूपाक्षी विरूप नेत्रों (विशेष तृतीय नेत्र)वाली, मांस-रक्त का भोजन करनेवाली, अपराजिता (कभी किसी से पराजित न होनेवाली), चामुण्डा (काली) देवी हमारे शिखा में निवास कर हमें तेजोवान् बनायें॥१॥

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजःसमन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥२॥

दिव्य तेज से युक्त चिद् स्वरूपिणी महामाया हमारी शिखा में स्थित होकर हमारे तेज की वृद्धि करें॥२॥

समान्यार्घ्य-स्थापनम्

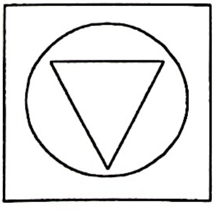

मूल मन्त्र से तीन बार पुनः आचमन करके अपने बाँयें तरफ निर्दिष्ट मण्डल बनाये, फिर अधोलिखित पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ आधारशक्तये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पाक्षतादि से पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ हुं फट्। प्रक्षालित शङ्खपात्र को मण्डल पर स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। शङ्खपात्र में जल भरे।

अङ्कुशमुद्रा द्वारा अन्तरिक्षस्थ सूर्यमण्डल से तीर्थसहित नदियों का आवाहन करे।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥

इस जल में गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी आदि नदियाँ आकर हमें सान्निध्य प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः। शङ्खपात्र स्थित जल में गन्धपुष्पाक्षतादि छोड़ कर, धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर, मत्स्यमुद्रा से आच्छादित कर, प्रणव से अट्ठारह बार अभिमन्त्रित करे।

द्वारदेवतापूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ गणपतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के ऊपर चौखट पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के बाँयें चौखट पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के दक्षिण चौखट पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के नीचे चौखट पर पूजन करे।

चारों दिशाओं में—

ॐ ह्रीँ वँ गंगायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के दक्षिण शाखा पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ यमुनायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के वाम शाखा पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ लक्ष्म्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के ऊपरी शाखा पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के नीचली शाखा पर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ कँ चँ टँ तँ पँ यँ शँ ब्रह्माण्याद्यष्टमातृभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

देहली पर पूजन के बाद दाहिने पैर् को आगे करके बाँयें पैर से किसी भी शाखा को स्पर्श न करते हुए पूजन गृह में प्रवेश करे।

यज्ञभूमिसंस्कारम्

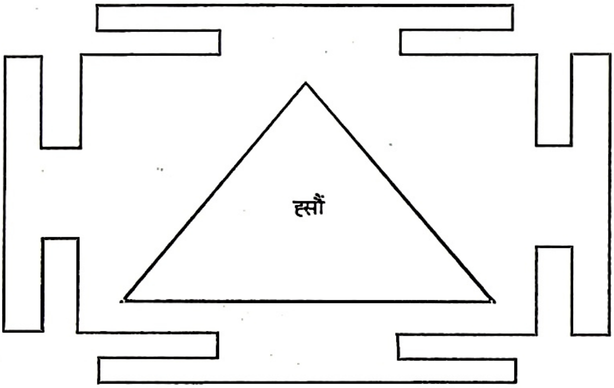

ॐ ह्रीँ वँ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। पूजास्थान पर जल छिड़के।

ॐ ह्रीँ वँ पवित्र वज्रभूमे हूँ फट् स्वाहा। भूमि का स्पर्श करते हुए अभिमन्त्रित करे, जहाँ आसन बिछाना हो वहाँ भूमि पर पूजन करके त्रिकोण बनाये।

ॐ ह्रीँ वँ आसुरेखे वज्ररेखे हूँ फट् स्वाहा। त्रिकोण के बाहर चौकोर मण्डल बना कर त्रिकोण के मध्य प्रेत बीज लिख कर गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौः प्रेतासनाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के नीचे त्रिकोण के मध्य प्रेत बीज लिख कर गन्धाक्षतपुष्प समर्पित करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ आधारशक्तिकमलासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन पर गन्धाक्षतपुष्प समर्पित करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ विमलासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पद्मासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वप्रथम कुशासन बिछाये अथवा पच्चीस कुशाओं से निर्मित मोटक को शवरूप मानकर बिछाकर उसके ऊपर कम्बलासन बिछा कर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौः स्हौः महाप्रेतपद्मासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पुनः आसन का अर्चन करे।

ॐ पृथ्वीत्वयाधृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वञ्च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरुचासनम्॥

हे पृथ्वि! तुमने समस्त लोकों को धारण किया है तथा तुम्हें विष्णुभगवान् ने धारण किया है, तुम हमें धारण करो और आसन को पवित्र करो।

ॐ ह्रीँ वँ भूम्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। सिद्धासन से बैठ कर आसन पर जल छिड़के।

ॐ ह्रीँ वँ वास्तुपुरुषाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नैर्ऋत्य कोण में वास्तुपुरुष का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पूर्व दिशा में ब्रह्मा का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ धर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। दक्षिण दिशा में धर्म का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ज्ञानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पश्चिम दिशा में ज्ञान का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वैराज्ञाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। उत्तर दिशा में वैराज्ञ का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐश्वर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ईशान दिशा में ऐश्वर्य का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अधर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अग्नि दिशा में अधर्म का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अज्ञानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नैर्ऋत्य कोण में अज्ञान का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अवैराज्ञाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। वायव्य कोण में अवैराज्ञ का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनैश्वर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ईशान कोण में अनैश्वर्य पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ स्वाहा शरीरं शोधयामि। जल से शरीर का मार्जन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ स्वाहा वाणीं शोधयामि। आचमन करे।

ॐ ह्रौँ वँ ह्रौँ स्वाहा चित्तं शोधयामि। आचमन करे।

ॐ ह्रौँ वँ ह्रौँ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। पुष्प से हृदय पर स्पर्श करे।

देहरक्षान्यासः—मूल मन्त्र से तीन बार व्यापक न्यास के बाद देह रक्षा न्यास करे—

ॐ ह्रौँ वँ गुरुभ्यो नमः दक्षबाहौ न्यस्यामि। दाहिनी भुजा को स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ गणपतये नमः वामबाहौ न्यस्यामि। वाम भुजा को स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ दुर्गायै नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु को स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु को स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ योगिनीभ्यो नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर को स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ क्षेत्रपालाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि को स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ परमात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय को स्पर्श करे।

नीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयाति नीलांशुकाभरणमाल्यविलेपनम्।
निद्रापुटेन भुवनानि तिरोदधाना खड्गायुधा भगवती परिपातुभक्तान्॥

नील प्रकाशमान सागर के समान शरीर में व्याप्त रहनेवाली, नील आभावाली मालाओं की अभूषण धारण कर नील पदार्थ का अनुलेपन की हुई, निद्रा से युक्त होकर समस्त भुवन को आवृत की हुई भगवती अपने खड्गादि आयुधों से भक्तों की रक्षा करें।

ॐ ह्रौँ वँ क्लीँ ऐँ ग्लौँ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजन-मनश्चक्षुश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा।

ॐ ह्रौँ वँ हसन्ति हसितालापे मातङ्गिपरिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हूँ फट् स्वाहा।

ॐ ह्रौँ वँ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवी सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ हूँ फट् स्वाहा। अपने चारों ओर अग्नि की भावना करे।

ॐ ह्रौँ वँ। चारों ओर चुटकी बजा कर दिग्बन्धन करे।

ॐ ह्रौँ वँ शताभिषेके शताभिषेके पदे हूँ फट् स्वाहा। पुष्प पवित्र करे।

ॐ ह्रौँ वँ पुष्पकेतुराजार्हत् पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे पुष्पचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा। जल से पुष्पाभिमन्त्रण करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

पवित्र हो या अपवित्र हो(किसी भी अवस्था में) सभी अवस्था में जो पुण्डरीकाक्ष(भगवान विष्णु) का स्मरण करता है वह बाहर और भीतर से पवित्र हो जाता है।

सामान्यार्घ्योदक जल से सभी पूजन सामग्रियों का मार्जन करे, पुष्पों के ऊपर धेनुमुद्रा तथा मत्स्यमुद्रा बना कर पुष्प शुद्ध हो गये हैं ऐसी भावना करे।

ॐ ह्रीँ वँ। अपने चारों तरफ जल छिड़के।

ॐ ह्रीँ वँ हुं फट् स्वाहा। अपने चारों तरफ क्रोधमयी दृष्टि से देख कर विघ्नों का निस्सारण करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वविघ्नानुत्सारयोत्सारय हूँ फट् स्वाहा।

ऊपर देख कर अन्तरिक्ष में रहनेवाले, चारों ओर जल छिड़क कर दिशाओं में रहनेवाले तथा बाँयें पैर की एड़ी से तीन बार पृथ्वी पर घात कर भूमि में रहनेवाले भूतप्रेतपिशाचादि तथा विघ्न करनेवालों के साथ समस्त विघ्नों का निस्सारण करे। लावा, रक्त चन्दन, पीला सरसों, तिल, दही, दूर्वा एवं अक्षतादि मे से कोई एक पदार्थ लेकर चारों दिशाओं विदिशाओं तथा ऊपर नीचे प्रच्छेप कर रक्षण करे। विशेषतया पिली सरसों से रक्षाकरण करे।

पूर्वे—पूर्व दिशा में—

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

इस स्थान के आश्रित होकर यहाँ सर्वदा निवास बनाये हुए सभी भूत इस स्थान को त्याग करके जहाँ कहीं अन्यत्र चले जायें॥१॥

दक्षिणे—दक्षिण दिशा में—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता।
ये चाऽत्र विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूतादि इस भूमि में स्थित हैं, वे सभी यहाँ से चले जायें और जो विघ्न करनेवाले हैं, वे सभी शिव की आज्ञा से नष्ट हो जायें।

पश्चिमे—पश्चिम दिशा में—

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

सभी दिशाओं में जो भूतपिशाचादि हैं, वे सभी यहाँ से बिना किसी प्रकार का हमसे विरोध किये चले जायें, हमारा सभी से कोई विरोध नही है, सभी हमसे कोई विरोध न करें, हम किसी से विरोध किये बिना पूजाकर्म प्रारम्भ कर रहे है।

उत्तरे—उत्तर दिशा में—

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यावत्कर्म करोम्यहम्॥

जो यहाँ स्थित होकर भूतादि एवं राक्षसादि हैं, वे जबतक हम पुरश्चरणकर्म कर रहे हैं तब तक यहाँ से अन्यत्र कहीं चले जायें।

ऊपर तथा चारों तरफ पीला सरसों छिड़क कर अपने बाँयें तरफ ध्यान करते हुए अपने गुर्वादि का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ गुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ परमगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ परात्परगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अपने दाहिने तरफ गणेशादि देवताओं का गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे—

ॐ ह्रीँ वँ गणेशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। प्रणाम करके करशुद्धि करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ। चन्दनयुक्त पुष्प ग्रहण करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ। पुष्प से पूरे हाथ का मर्दन(पूरे हाथ में मले) करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ। दक्षिण हाथ में मल कर।

ॐ ह्रीँ वँ तत्सत्। बाँयें हाथ से सूंघ कर।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ। अपने सिर के चारों ओर घुमा कर ईशान कोण में पुष्प को फेंक दे।

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसतिहिंसकाः।
मृत्यु-रोग-भय-क्रोधाः पतन्तु रिपुमस्तके॥

जो हिंसक मेरी हिंसा कर सकते हैं, वे सभी विलय को प्राप्त हो जायें और मृत्यु, रोग, भय, क्रोध आदि सभी हमारे शत्रुओं के मस्तक पर चले जायें।

नाराच मुद्रा से मस्तक के ऊपर चारों ओर घुमाकर फेक कर भूतशुद्धि करे—

भूतशुद्धि-विधिः

भूतशुद्धि प्राणायाम के द्वारा किया जाता है। प्राणायाम करते समय उत्तम विधि का प्रयोग करना ही श्रेयस्कर होता है। सर्वत्र १:४:२ के अनुपात से ही करना चाहिये। मन्त्र तथा बीजों का २० बार उच्चारण करते हुये पूरक करे, पूरक का चतुर्गुणा उच्चारण करते हुये कुम्भक करे तथा पूरक का दोगुणा उच्चारण करते हुये रेचन करे।

विनियोगः—**अस्य श्रीभूतशुद्धिमन्त्रस्य, श्रीमहाकालभैरवऋषिः, वृहतीछन्दः, श्रीकालिकादेवता, क्रीँबीजं, ह्रीँशक्तिः, हूँकीलकं भूतशुद्ध्यर्थे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ महाकालऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वृहतीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कालिकायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्रीँबीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्थान स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँशक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँकीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कालिकायै नमः सर्वाङ्गेन्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ कालिकायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः कालिकायै स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली के पृष्ठ का स्पर्श करे।

षडङ्गन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ कालिकायै नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः कालिकायै स्वाहा अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

व्यापकन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ कालिकायै स्वाहा। मूल मन्त्र से आठ बार व्यापक न्यास करके मूल मन्त्र से ही तीन बार प्राणायाम करे।

बुद्धिशोधनम्

ॐ सिद्धाढ्यं शिवगेहिनी करलसत्पाशाङ्कुशां भैरवीं,
भक्ताभीष्टवरप्रदां सकुशलां संसारबन्धच्छिदाम्।

पीयूषाम्बुधिमन्थनोद्भवरसां संविद्विलासां परां,
वीराराधितपादुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम्॥

शिव के शरीर में रहनेवाली, हाथों में पाश और अङ्कुश धारण करनेवाली, सिद्धि प्रदान करनेवाली भैरवी, भक्तों को अभिष्ट प्रदान करनेवाली, कुशलता पूर्वक संसार के बन्धनों का छेदन करनेवाली, समुद्र मन्थन से उत्पन्न हुए अमृत रस में सदैव विलास करनेवाली, वीर साधकों के द्वारा नित्य आराध्य जगत् को मोहित करनेवाली सुन्दर संवित् स्वरूपिणी विजया देवी का ध्यान करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ भैरव्यै नमः। उपर्युक्त स्वरूप का ध्यान करे।

ॐ संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रीसदानघे।
भैरवानन्दतृप्त्यर्थं पवित्राभव सर्वदा॥

हे ब्रह्म पुत्री अनघ संवित् देवि! भैरव के आनन्द की तृप्ति के लिए तथा हमारे ब्रह्मत्व प्राप्ति के लिए सर्वदा पवित्र हो जाओ।

ॐ ह्रीँ वँ ब्राह्मण्यै नमः। ब्राह्मणी का शोधन करे।

ॐ सिद्धिमूलक्रिये देवि हीनबोधप्रबोधिनि।
राजाप्रजावशङ्करि शत्रुकण्ठनिषूदिनि॥

हे शत्रुकण्ठनिषूदिनि देवि! सिद्धि प्राप्ति के पूर्व क्रियात्मिका रूपिणी, ज्ञान का प्रबोधन करनेवाली हमें सिद्धि प्राप्ति के लिए सर्वदा शुद्ध हो कर परमज्ञान प्रदान करो।

ॐ ह्रीँ वँ क्षत्रियायै नमः। क्षत्रिया का शोधन करे।

ॐ अज्ञानेन्धनदीप्ताग्नि ज्वालाग्निज्ञानरूपिणि।
आनन्दस्यागमप्रीतिं सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे॥

ज्ञान रूपी ज्वालाग्नि से अज्ञान रूपी इन्धन को दीप्त(जला)करके प्रीति रूपी आनन्द की प्राप्ति के लिए हमें पूर्ण रूप से ज्ञान प्रदान करो।

ॐ ह्रीँ वँ वैश्यायै नमः। वैश्या का शोधन करे।

ॐ नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रदर्शिनी।
त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदाभव॥

हे त्रैलाक्य में विजय प्राप्त करनेवाली माता! हमारे समाधि रूपी फल सिद्धि के लिए योगमार्ग का प्रदर्शन करनेवाली, हमारे लिए फल प्रदान करनेवाली हो जाओ, तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

ॐ ह्रीँ वँ शूद्रायै नमः। शूद्रा का शोधन करे।

बुद्यादि का शोधन करने के बाद अभिमन्त्रण करे।

अभिमन्त्रणम्

ॐ ह्रीँ वँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षय आकर्षय सिद्धिं देहि देहि सर्वं मे वशमानय स्वाहा। संवित् ज्ञान शक्ति को अभिमन्त्रित करे।

अघोरकरम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ ह्रीँ लं अः डँ ऐँ महाघोरेशाय नमः। मन्त्र से संवित्(ज्ञान) शक्ति को अभिमन्त्रित कर, फिर मूल मन्त्र से सात बार संवित् शक्ति में भगवती कालिका का आवाहन करके धेनुमुद्रा तथा योनिमुद्रा प्रदर्शित कर चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन कर, मानसोपचार पूजन करने के बाद सहस्रारचक्र में श्रीगुरु का ध्यान पूजन करे।

श्रीगुरुतर्पणम्

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ गुरुपादुकाभ्यो नमः तर्पयामि। तीन बार तर्पण करे।

इष्टदेवतातर्पणम्

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवं तर्पयामि। पाँच बार तर्पण करे।

संवित्स्तवनम्

संविद्देवि गरीयसी गुणमयी वैगुण्यविध्वंसिनी,
मायामोहमदान्धकारशमनी तापत्रयोन्मूलिनी।
वाग्देवी वदनाम्बुजैकरसिका सम्बोधिनी दीपिका,
ब्रह्मज्ञानविवेकसिद्धविजयी विज्ञानमूर्त्यै नमः॥

महानतम गुणोंवाली, समस्त दोषों को सामप्त करनेवाली, मायामोहमद रूपी अन्धकार का शमन करनेवाली, अधिदैविक, अधिभौतिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार के तापों का उन्मूलन करनेवाली, वाणी की अधीश्वरी वाग्रूपिणी, कमल के आसन पर विराजमान, सम्बोधन को प्रकाशित करनेवाली, ब्रह्मज्ञान रूपी विवेक की सिद्धि प्राप्ति के लिए समस्त विज्ञानमूर्ति संवित् देवी को नमस्कार है।

संविदासवयोर्मध्ये संविदेवगरीयसी।
भयत्राशायनिर्गन्धा विख्यातामोदकारिणी॥

संवित् और आसव(ब्रह्मानन्दरस)के मध्य में समस्त भयों से त्राश करानेवाली, परमशुद्ध आनन्द रूप से विख्यात महान् सवित् देवी को नमस्कार है।

स्तुति कर श्रीगुरु, इष्टदेवता को प्रणाम कर भूतशुद्धि करे।

भूतशुद्धिः

प्राणायाम पूर्वक तथा मन्त्रानुसार यथावत् तत्तद् मन्त्रार्थ भावना करे।

ॐ ह्रीँ वँ मूल शृङ्गाटात् सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवपदे योजयामि स्वाहा। मूलाधार में कुण्डलिनी शक्ति को जगाकर उसके मुख में जीव को धारण करा कर सुषुम्नापथ के द्वारा ऊर्ध्वद्वादशान्त में परमशिव के साथ समायोजित करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ संकोच शरीरं शोषय शोषय स्वाहा। संकोच शरीर का वायु के द्वारा शोषण करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐं रँ संकोच शरीरं दह दह पच पच स्वाहा। वायु के द्वारा शोषित संकोच शरीर का दाहन करे।

ॐ ह्रीँ वँ परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा। ऊर्ध्व द्वादशान्त स्थित शिव के पाद तल से अमृत श्राव कराकर संकोच शरीर के दाहन के बाद भस्मिभूत संकोच शरीर के भस्म में मिलाये।

ॐ ह्रीँ वँ लँ शाम्भव-शरीरं उत्पादयोत्पादय स्वाहा। अमृत मिश्रित भस्म से पिण्ड बनाकर कल्याण मय दिव्य शरीर की उत्पत्ति करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ शिवशक्त्यात्मकं शरीरं कुरु कुरु स्वाहा। उत्पन्न दिव्यशरीर को शिवशक्त्यात्मक बनाये।

ॐ ह्रीँ वँ क्रीँ सोऽहं हंसः अवतर अवतर परमशिवं सुषुम्नापथेन प्रविश मूल शृङ्गाटकं उल्लासयोल्लासय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहा। परमशिव से कुण्डलिनी शक्ति के द्वारा शिव को अपने अङ्ग में धारण करके सुषुम्नापथ के द्वारा मूलाधार कमल पर दिव्य शिव को स्थापित करे।

परब्रह्म के संयोग से शिव के पादतल से टपकते हुऐ अमृतरस कुँण्डलिनी शक्ति को ग्रहण करा कर, सम्पूर्ण शरीर को सिंचित कर, आप्लावित कर पुनः विपरीत क्रम से सगर्भित कुण्डलिनी शक्ति को आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान होते हुए मूलाधार में स्थापित कर कुलकुण्डलिनी शक्ति के शरीर से ही आत्मशिव का प्रसव करा कर स्थापित कराये तथा मूलकुलकुण्डलिनी शक्ति के ही शरीर से ही समस्त मातृका शक्तियों को प्रकट करा कर तत्तत् पत्रों पर स्थापित कर विधिवत् मानस पूजन करे।

स्वशरीरे इष्टदेवताप्रतिष्ठाविधिः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः-सामाथर्वणछन्देभ्यः, प्राणशक्तिर्देवता, आँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्रोँ कीलकं मम शरीरे श्रीमद्वटुकभैरवदेवता प्रतिष्ठापने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषिभ्यो नमः शिरसि। सिर पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऋग्यजुस्सामाथर्वण छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख भाग का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ प्राणशक्तिर्देवतायै नमः हृदि। हृदय स्थान पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्थान का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः। दोनों पैरों का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्रौँ कीलकाय नमः नाभौ। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ प्राणशक्तिर्देवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे। सिर से पैर तक समस्त अङ्गों का स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ नभोवाय्वाग्निर्जलभूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः। तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रोत्रत्वक्नयनरसनाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः। मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः। अनामिका अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वक्तव्यआदानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। कनिष्ठिका का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ नभोवाय्वग्निर्जलभूम्यात्मने हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रोत्रत्वक्नयनरसनाघ्राणात्मने शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुम्। दोनों बाहुओं का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वक्तव्यआदानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए घुमा कर हाथ पर ताली बजाये।

व्यापकन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ आँ पादादारभ्यनाभ्यन्तं न्यस्यामि। पैर से नाभि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ नाभ्यादारभ्यहृदयान्तं न्यस्यामि। नाभि से हृदय तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्रौँ हृदयादारभ्यमस्तकान्तं न्यस्यामि। हृदय से मस्तक तक स्पर्श करे।

त्वगादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ यँ त्वगात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ असृगात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ मांसात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मेदात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शँ अस्थ्यात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ षँ मज्जात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ शुक्रात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हौँ ओजसात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ प्राणात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ जीवात्मने नमः। लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सर्वाङ्गे। लेलिहान मुद्रा से सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

प्राणशक्तिपीठदेवतान्यासः

ॐ ह्रीँ वँ मँ मण्डूकाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि। योनि प्रदेश पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि। लिङ्गमूल का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ कच्छपाय नमः मणिपूरे न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ आधारशक्तये नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ प्रकृतये नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ कँ कूर्माय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अनन्ताय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पृँ पृथिव्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षँ क्षीरसमुद्राय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ रत्नद्वीपाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ कल्पवृक्षाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मँ मणिमण्डपाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ स्वर्णसिंहासनाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ धँ धर्माय नमः दक्षिणस्कन्धे न्यस्यामि। दक्षिण स्कन्ध का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ज्ञँ ज्ञानाय नमः वामस्कन्धे न्यस्यामि। वाम स्कन्ध का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ वैराज्ञाय नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ ऐश्वर्याय नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अधर्माय नमः मुखे न्यस्यामि। मुख का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अज्ञानाय नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अवैराज्ञाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अनैश्वर्याय नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ कल्पान्तकायानन्ताय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ पद्माय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ आनन्दकन्दाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ संविन्नालाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ विँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ धूम्रार्चिषे नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ ऊष्मायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ ज्वलिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ज्वालिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ षँ सुश्रियै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ स्वरूपायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ कपिलायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ळँ हव्यवाहनायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षँ कव्यवाहनायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मँ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ भँ तपिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ खँ बँ तापिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ गँ फँ धूम्रायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घँ पँ मरीच्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ चँ धँ रुच्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ छँ दँ सुषुम्णायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जँ थँ भोगदायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झँ तँ विश्वायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ञँ णँ बोधिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ टँ ढँ धारिण्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ठँ डँ क्षमायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ चँ चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अमृतायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ मानदायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ इँ पूषायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ईँ तुष्ट्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ उँ पुष्ट्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऊँ रत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऋँ धृत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॠँ शशिन्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लृँ चण्डिकायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॡँ कान्त्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ एँ ज्योत्स्नायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ श्रियै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ प्रीत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ औँ अङ्गदायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ पूर्णायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अः पूर्णामृतायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ सत्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ रजसे नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ तँ तमसे नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ आत्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अन्तरात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ परमात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ज्ञँ ज्ञानात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मँ मायातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ कलातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ विँ विद्यातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ परतत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

पीठ देवताओं का न्यास के बाद हृदपद्म में पीठशक्तियों का न्यास करे, हृदय प्रदेश में अष्टपत्रात्मक कमलपत्र का ध्यान करके उनके पत्रों पर क्रमशः न्यास, स्थापन पूजन करे।

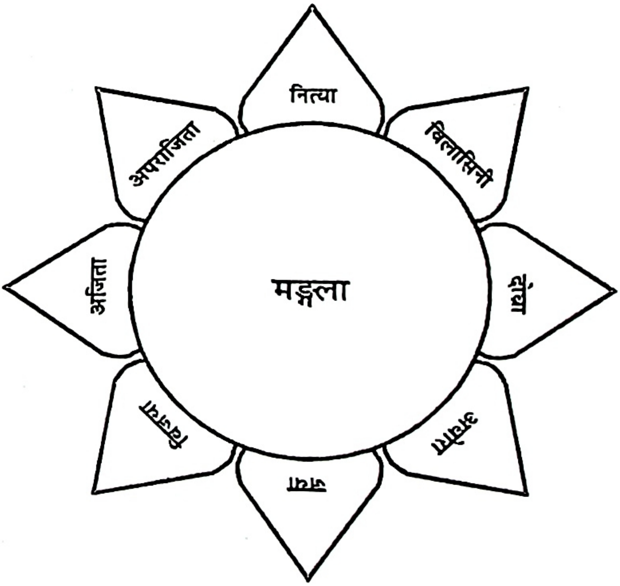

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ जयायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ विजयायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ अजितायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ अपराजितायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ नित्यायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ विलासिन्यै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ दोग्घ्रायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ अघोरायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ मङ्गलायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

मानसोपचारपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ जयादिशक्तिभ्यो नमः।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ पीठाय नमः।

मध्यकर्णिकायां प्राणशक्तिर्ध्यानम्

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।
शूलंकपालंदधतींकराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥१॥

रक्त के समुद्र में पोत के सदृश अरुण वर्ण के पद्म पर आसीन हाथ में पाश, अंकुश, धनुष, खड्ग, बाण, शूल, कपाल से शोभायमान, रक्तवर्ण तथा तीन नेत्रोंवाली प्राणदेवी को प्रणाम॥१॥

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
विभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥२॥

रक्त के समुद्र में पोत पर उल्लसित, अरुण वर्ण के कमल पर अधिरुढ़, हाथों में धनुष, दण्ड, अक्षुद्भव(अक्षमाला), बाण, अंकुश तथा पञ्चबाण धारण की हुई, रक्त बहते हुए कपालों की माला धारण की हुई, उदयकालिका सूर्य के समान वर्णवाली त्रिनेत्रधारी परादेवी प्राणशक्ति हमारे लिये सुखकारी हो, सदा सर्वत्र हमारे हृदय में वास करें तथा सतत शत्रुओं और कालुष्य से हमारी रक्षा करें॥२॥

स्वशरीरे इष्टयन्त्रविन्यासम्

हृदयप्रदेश में अधोलिखित विधि से विन्दु, त्रिकोण, वाह्यपञ्चकोण, अन्त:पञ्चकोण, बाह्यान्तः षड्दल अन्त:बाह्यक्रम से अष्टकोण, पुनः अन्त:वाह्य क्रम से षोडशकोण, अष्टदल, षोडशदल तथा तीन भूपुर की कल्पना कर लेलिहान मुद्रा से आवरण देवताओं की स्थापना कर अपने इष्टदेवता की प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से विधिवत् प्रतिष्ठापूर्वक स्थापना

करके मानस षोडशोपचार विधि से पूजन करके आवरणादि देवताओं का पूजन करे।

यन्त्रोद्धारमिमं देवि! त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
तद्यन्त्रं च प्रवक्ष्यामि यन्त्रे देवं प्रपूजयेत्॥१॥
वर्तुलं चाष्टपत्रं च चतुरस्त्र त्रयात्मकम्।
पञ्चकोणंषड्दलं पत्रंषोडशात्मकम्॥२॥
अन्तर्बहिरष्टकोणं कलाकोणं तथैव हि।
वटुकस्येदमिदंचक्रं भक्ताभीष्टप्रदायकम्॥३॥

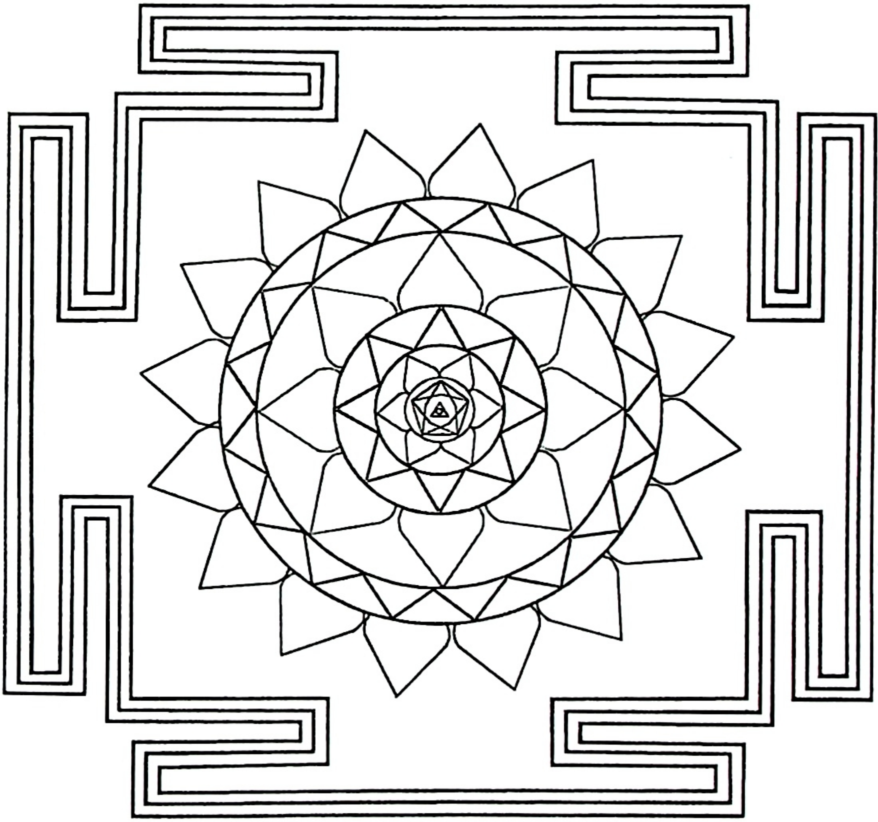

प्रथमावरणम्

दिव्यौघादिगुरुणां विन्यासम्—भूपुर के ईशान कोण में दिव्यौघगुरुओं का विन्यास करे—

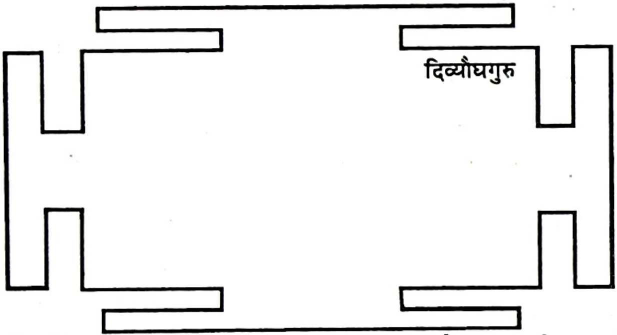

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहादेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीत्रिपुरानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीभैरवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

सिद्धौघादिगुरुणां विन्यासम्—भूपुर के उत्तर दिशा में सिद्धौघ गुरु का विन्यास करे—

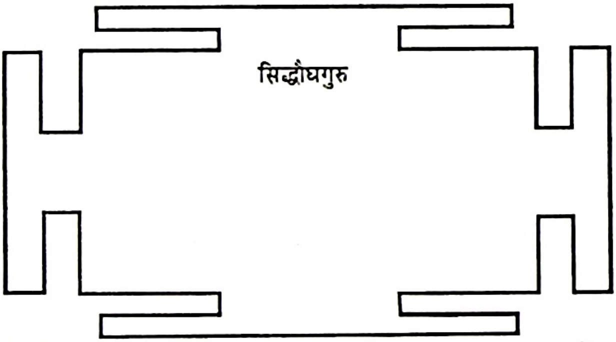

ॐ ह्रीँ वँ श्रीब्रह्मानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीपूर्णदेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचलचित्तानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचलचलानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकुमारानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीक्रोधानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवरदानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीस्मरदीपानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमायाम्बायै नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमायावत्याम्बायै नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

मानवौघादिगुरुणां विन्यासम्—वायव्य कोण में मानवौघगुरुओं का विन्यास करे—

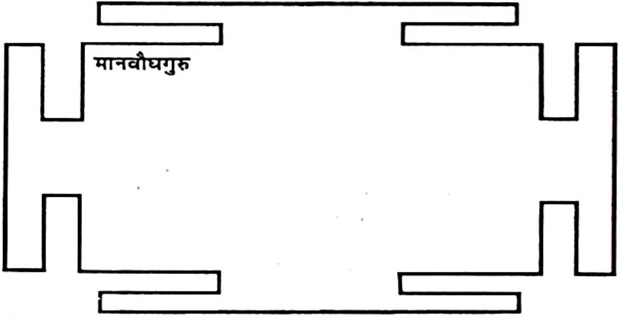

ॐ ह्रीँ वँ श्रीविमलानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकुशलानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमत्सेनानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसुधाकरानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीप्रह्लादानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसनकानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवसिष्ठानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीबोधानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमीनानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीगोरक्षानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीभोजदेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीप्रजापत्यानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमूलदेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीरन्तिदेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीविघ्नेशरानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीहुताशनानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसमयानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसन्तोषानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीनिजगुरवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

त्रिकोणे त्रिदेवानां विन्यासम्—त्रिकोण में ब्रह्माविष्णुशंकर का विन्यास करे—

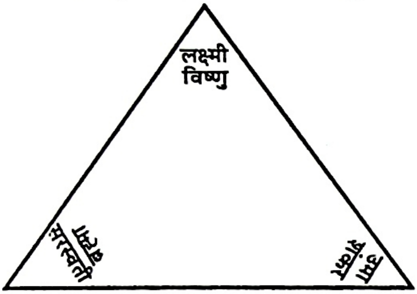
लक्ष्मी
विष्णु
सरस्वती
ब्रह्मा
उमा
शंकर

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वतीसहितब्रह्मणे नमः। ऊर्ध्व कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ लक्ष्मीसहितविष्णवे नमः। बाँयें कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ उमाशङ्कराय नमः। दाहिने कोण में।

पञ्चकोणे ईशानादिविन्यासम्—पञ्चकोण में ईशानादि का विन्यास करे—

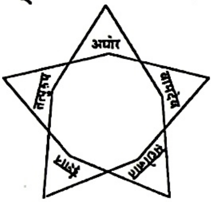
अघोर
तत्पुरुष
वामदेव
ईशान
सद्योजात

ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय नमः। नीचे के वायें में।

ॐ ह्रीँ वँ तत्पुरुषाय नमः। ऊपर के बाँयें कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ अघोराय नमः। ऊपर कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ वामदेवाय नमः। ऊपर के दाहिने कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ सद्योजाताय नमः। नीचे दाँयें कोण में।

अन्तःपञ्चकोणे पञ्चवक्त्रानां विन्यासम्—अन्त:पञ्चकोणों में पञ्चमुखों का विन्यास करे—

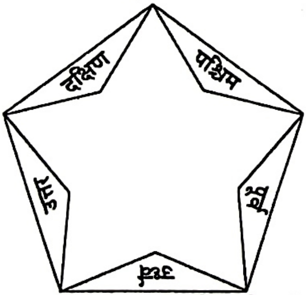
दक्षिण
पश्चिम
उत्तर
पूर्व
ऊर्ध्व

ॐ ह्रीँ वँ ऊर्ध्ववक्त्राय नमः। अन्त:पञ्चकोण के नीचे कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ उत्तरवक्त्राय नमः। अन्त:पञ्चकोण के नीचे वायें कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ दक्षिणवक्त्राय नमः। अन्त:पञ्चकोण के ऊपर वायें कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ पश्चिमवक्त्राय नमः। अन्त:पञ्चकोण के ऊपर दाहिने कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ पूर्ववक्त्राय नमः। अन्त:पञ्चकोण के नीचे दाहिने कोण में।

षड्पत्रोपरि षड्नाथानां विन्यासम्—षड्पत्रों पर षड्नाथों का विन्यास करे—

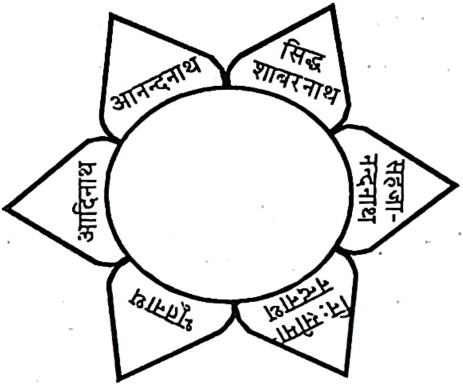
आनन्दनाथ
सिद्ध शाबरनाथ
आदिनाथ
सहजा-नन्दनाथ
भूतनाथ
निःसीमा-नन्दनाथ

ॐ ह्रीँ वँ भूतनाथाय नमः। षड्दल के वाये नीचे दल में।

ॐ ह्रीँ वँ आदिनाथाय नमः। षड्दल के वाये दल में।

ॐ ह्रीँ वँ आनन्दनाथाय नमः। षड्दल के वाये ऊपर दल में।

ॐ ह्रीँ वँ सिद्धशाबरनाथाय नमः। षड्दल के दाहिने ऊपर दल में।

ॐ ह्रीँ वँ सहजानन्दनाथाय नमः। षड्दल के दाहिने दल में।

ॐ ह्रीँ वँ निःसीमानन्दनाथाय नमः। षड्दल के दाहिने नीचे दल में।

अन्तःषड्पत्रोपरि षड्पुत्रानां विन्यासम्—अन्त:षड्पत्रों पर षड्पुत्रों का विन्यास करे—

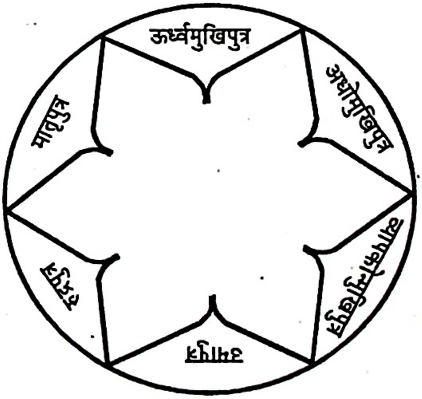
ऊर्ध्वमुखिपुत्र
मातृपुत्र
अधोमुखिपुत्र
रुद्रपुत्र
व्यापकोन्मुखिपुत्र
उमापुत्र

ॐ ह्रीँ वँ उमापुत्राय नमः। अन्त:पद्म के नीचे पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ रुद्रपुत्राय नमः। अन्त:पद्म के वाये नीचे पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ मातृपुत्राय नमः। अन्त:पद्म के वाये ऊपर पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ ऊर्ध्वमुखिपुत्राय नमः। अन्त:पद्म के ऊपर पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ अधोमुखिपुत्राय नमः। अन्त:पद्म के दाये ऊपर पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ व्यापकोन्मुखिपुत्राय नमः। अन्त:पद्म के दाये नीचे पत्र पर।

अष्टकोणोंपरि डाकिन्यादिपुत्राणांविन्यासम्—अष्टकोणों पर डाकिन्यादिपुत्रों का विन्यास करे—

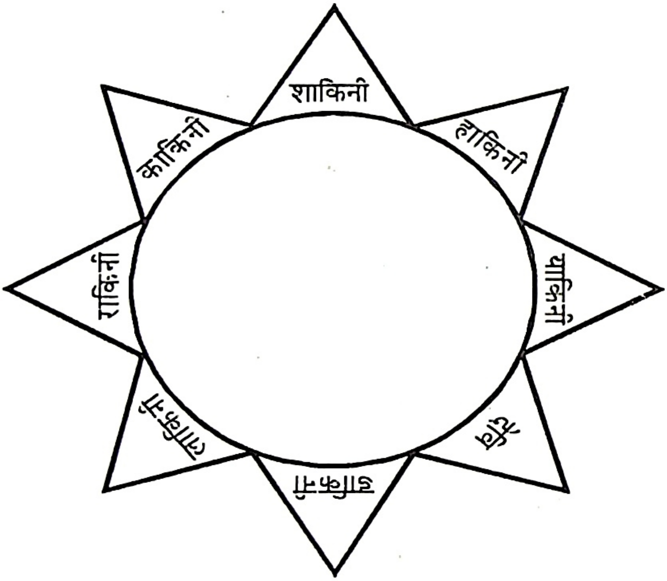

ॐ ह्रीँ वँ डाकिनीपुत्राय नमः। वाह्यकोण के नीचे कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ राकिनीपुत्राय नमः। वाह्यकोण के वाये नीचे कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ लाकिनीपुत्राय नमः। वाह्यकोण के वाये कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ काकिनीपुत्राय नमः। वाह्यकोण के ऊपर वाये कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ शाकिनीपुत्राय नमः। वाह्यकोण के ऊपर कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ हाकिनीपुत्राय नमः। वाह्यकोण के दाहिने ऊपर कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ याकिनीपुत्राय नमः। वाह्यकोण के दाहिने कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ देविपुत्राय नमः। वाह्यकोण के दाहिने नीचे कोण पर।

अन्तरष्टकोणोंपरि ब्राह्यादिपुत्राणांविन्यासम्—अन्त: अष्टकोणों पर ब्राह्यादि पुत्रों का विन्यास करे—

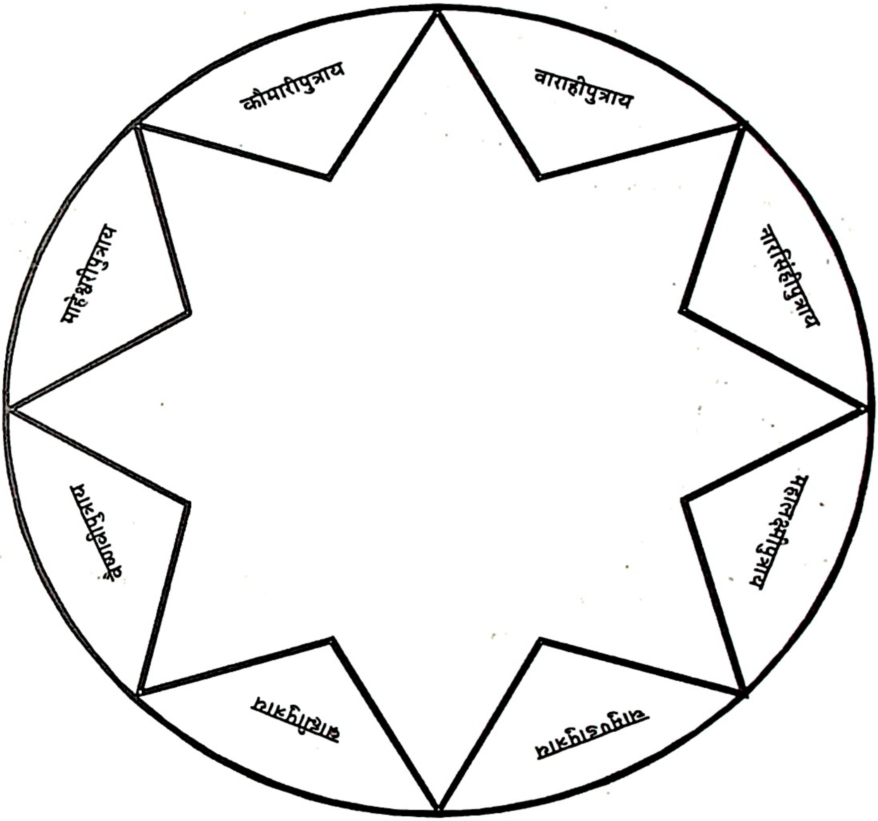
कौमारीपुत्राय
वाराहीपुत्राय
माहेश्वरीपुत्राय
नारसिंहिपुत्राय
वैष्णवीपुत्राय
महालक्ष्मीपुत्राय
ब्राह्मीपुत्राय
चामुण्डापुत्राय

ॐ ह्रीं वँ ब्रह्मीपुत्राय नम:। अन्त:अष्टकोण के वाये नीचे वामावर्त प्रथम कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ वैष्णवीपुत्राय नमः। अन्त:अष्टकोण के वाये नीचे वामावर्त द्वितीय कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ माहेश्वरीपुत्राय नमः। अन्त:अष्टकोण के वाये ऊपर वामावर्त तृतीय कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ कौमारीपुत्राय नमः। अन्त:अष्टकोण के वाये ऊपर वामावर्त चतुर्थ कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ वाराहीपुत्राय नमः। अन्त:अष्टकोण के दाये ऊपर वामावर्त पञ्चम कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ नारसिंहिपुत्राय नमः। अन्त:अष्टकोण के दाये ऊपर वामावर्त षष्ठकोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ ऐन्द्रीपुत्राय नमः। अन्त:अष्टकोण के दाये नीचे वामावर्त सप्तम कोण पर।

ॐ ह्रीँ वँ चामुण्डापुत्राय नमः। अन्त:अष्टकोण के दाये नीचे वामावर्त अष्टम कोण पर।

अष्टपत्रोपर्यष्टभैरवाणां विन्यासम्—अष्टपत्रों पर भैरवों का विन्यास करे—

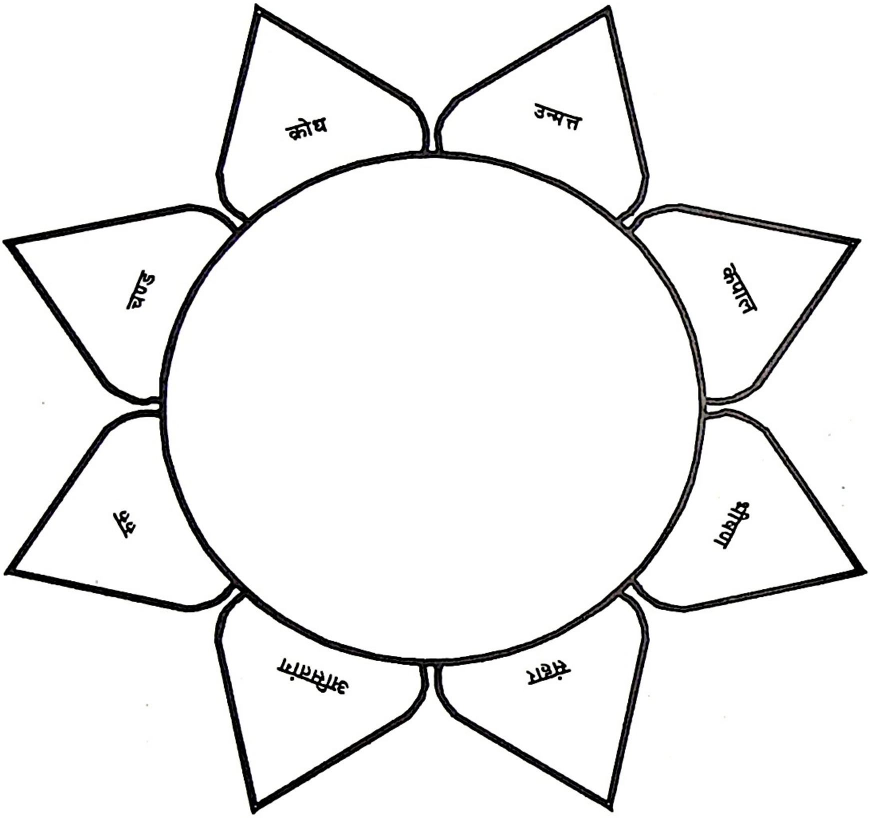

ॐ ह्रीँ वँ असिताङ्गभैरवाय नमः। अष्टदलपद्म में नीचे वामावर्त प्रथम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ रुरुभैरवाय नमः। अष्टदलपद्म में वाये नीचे वामावर्त द्वितीय पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ चण्डभैरवाय नमः। अष्टदलपद्म में वाये वामावर्त तृतीय पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ क्रोधभैरवाय नमः। अष्टदलपद्म में वाये ऊपर वामावर्त चतुर्थ पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ उन्मत्तभैरवाय नमः। अष्टदलपद्म में ऊपर वामावर्त पञ्चम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ कपालभैरवाय नमः। अष्टदलपद्म में दाये ऊपर वामावर्त षष्ठ पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ भीषणभैरवाय नमः। अष्टदलपद्म में दाये वामावर्त सप्तम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ संहारभैरवाय नमः। अष्टदलपद्म में दाये नीचे वामावर्त अष्टम पत्र पर।

षोडशपत्रोपरि कलानां विन्यासम्—सोलह पत्रों पर कलाओं का विन्यास करे—

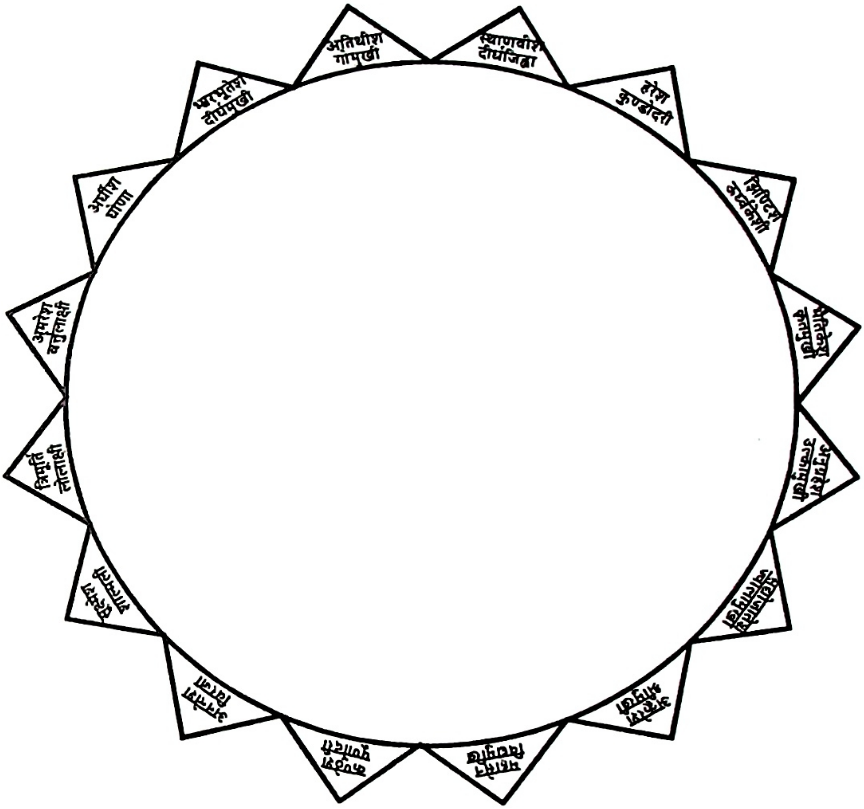
अतिथीश गोमुखी
स्थाणवीश दीर्घजिह्वा
हरेश कुण्डोदरी
झिण्टीश ऊर्ध्वकेशी
भौतिकेश विकृतमुखी
अनुग्रहेश उल्कामुखी
सद्योजात ज्वालामुखी
अक्रूरेश श्रीमुखी
महासेन विद्यामुखी
कण्ठेश पूर्णोदरी
अनन्तेश विरजा
सूक्ष्मेश शाल्मली
त्रिमूर्ति लोलाक्षी
अमरेश वर्तुलाक्षी
अर्धीश घोणा
भारभूतेश दीर्घमुखी

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त प्रथम पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीअनन्तेशविरजाभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त द्वितीय पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त तृतीय पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त चतुर्थ पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीअमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त पञ्चम पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीअर्धीशघोणाभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त षष्ठ पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीभारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त सप्तम पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीअतिथीशगोमुखीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त अष्टम पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त नवम पत्र पर।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीहरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त दशम पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त एकादश पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीभौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त द्वादश पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीसद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नम। षोडशकोण में वामावर्त त्रयोदश पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त चतुर्दश पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीअक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त पञ्चदश पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीमहासेनविद्यामुखीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त षोडश पत्र पर।

षोडशपत्रोपरि कलानां विन्यासम्—सोलह पत्रों पर कलाओं का विन्यास करे—

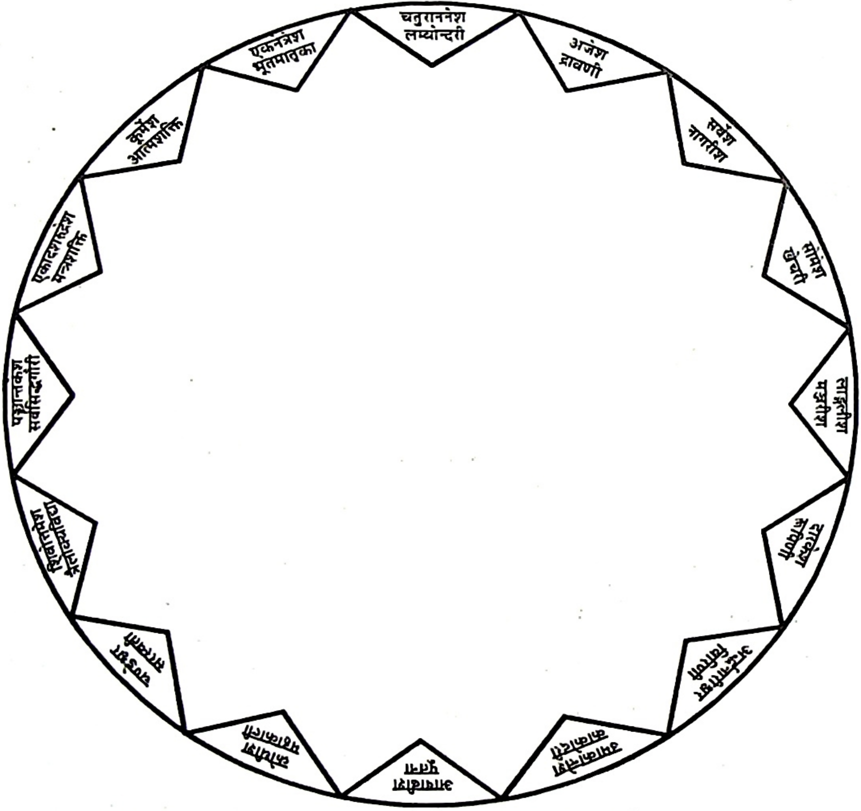
चतुराननेश
लम्ब्योन्दरी
अजेश
द्रावणी
सर्वेश
नागरीश
सोमेश
खेचरी
लाङ्गलीश
मङ्गरीशा
दारुकेश
रूपिणी
अर्द्धनारीश्वर
विरिणी
उमाकान्तेश
काकोदरी
आषाढीश
पूतना
क्रोधीश
महाकाली
चण्डेश्वर
सरस्वती
पञ्चान्तकेश
सर्वसिद्धगौरी
शिवोत्तमेश
त्रैलोक्यविद्या
एकादशरुद्रेश
मन्त्रशक्ति
कूर्मेश
आत्मशक्ति
एकनेत्रेश
भूतमातृका

ॐ ह्रौं वँ श्रीक्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त प्रथम पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीचण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त द्वितीय पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त तृतीय पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त चतुर्थ पत्र पर।

ॐ ह्रौं वँ श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त पञ्चम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त षष्ठ पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीएकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त सप्तम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त अष्टम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीअजेशद्रावणीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त नवम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसर्वेशनागरीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त दशम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसोमेशखेचरीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त एकादश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीलाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त द्वादश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीदारकेशरूपिणीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त त्रयोदश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीअर्द्धनारीशवीरिणीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त चतुर्दश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीउमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त पञ्चदश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीआषाढीशपूतनाभ्यां नमः। षोडशकोण में वामावर्त षोडश पत्र पर।

षोडशपत्रोपरि कलानां विन्यासम्—सोलह पत्रों पर कलाओं का विन्यास करे—

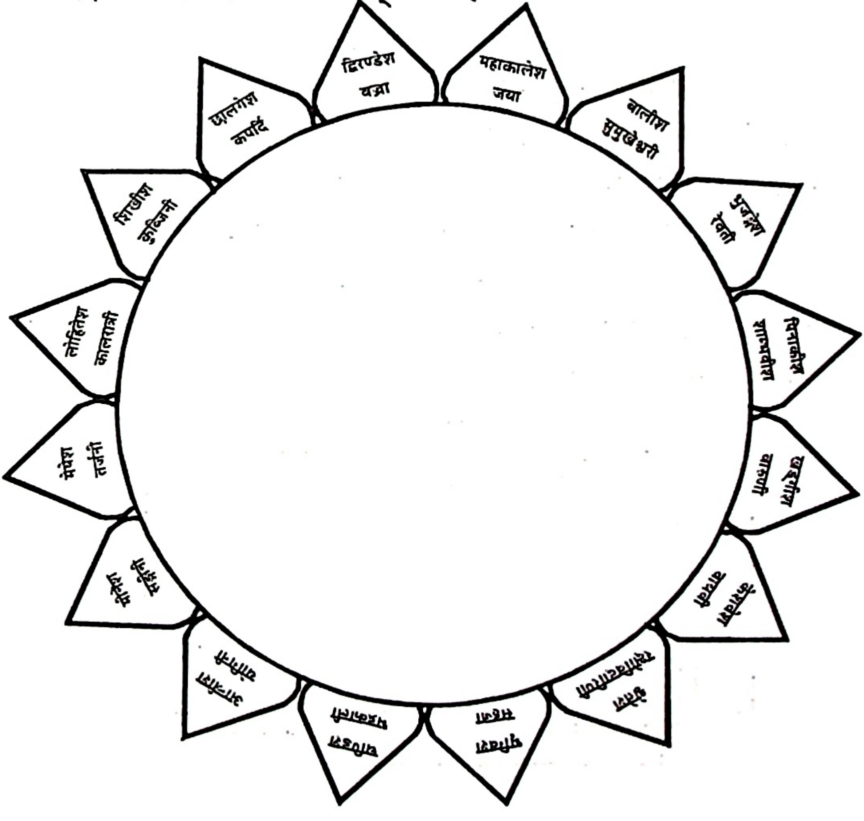
द्विरण्डेश वज्रा
महाकालेश जया
वालीश सुमुखेश्वरी
भुजङ्गेश रेवती
पिनाकीश शाम्भवीश
खड्गीश वारुणी
केशवेश वायवी
श्वेतेश रक्षोविदारिणी
भृग्विश सहजा
चण्डिश भद्रकाली
आन्त्रीश योगिनी
मीनेश मङ्गिनी
मेषेश तर्जनी
लोहितेश कालरात्री
शिखीश कुब्जिनी
छगलेश कपर्दि

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त प्रथम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीआन्त्रीशयोगिनीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त द्वितीय पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त तृतीय पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमेषेशतर्जनीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त चतुर्थ पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीलोहितेशकालरात्रीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त पञ्चम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीशिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त षष्ठ पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीछागलण्डेशकपर्दिभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त सप्तम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीद्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त अष्टम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहाकालेशजयाभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त नवम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीबालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त दशम पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीभुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त एकादश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीपिनाकीशमाधवीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त द्वादश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीखड्गीशवारुणीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त त्रयोदश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकेशवेशवायवीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त चतुर्दश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त पञ्चदश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीभृग्वीशसहजाभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त षोडश पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीनकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त मध्य पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीशिवेशव्यापिनीभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त मध्य पत्र पर।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसंवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः। षोडशदलपद्म में वामावर्त मध्य पत्र पर।

भूपुरे हेतुकादि विन्यासम्—भूपुर में हेतुकादि का विन्यास करे—

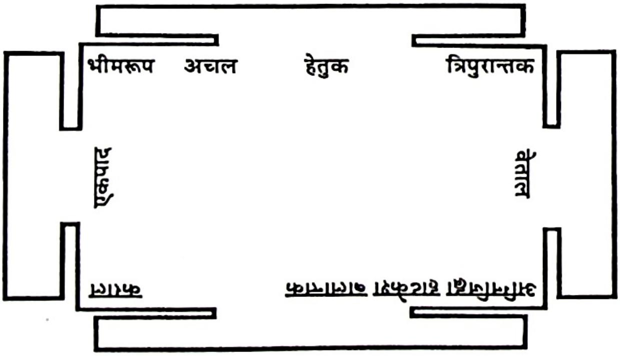

ॐ ह्रीँ वँ हेतुकाय नमः। भूपुर पर पूर्व दिशा में।
ॐ ह्रीँ वँ त्रिपुरान्तकाय नमः। भूपुर पर अग्निकोण में।
ॐ ह्रीँ वँ वेतालाय नमः। भूपुर पर दक्षिण दिशा में।
ॐ ह्रीँ वँ अग्निजिह्वाय नमः। भूपुर पर नैर्ऋत्य कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ कालान्तकाय नमः। भूपुर पर पश्चिम दिशा में।
ॐ ह्रीँ वँ करालाय नमः। भूपुर पर वायव्य कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ एकपादाय नमः। भूपुर पर उत्तर दिशा में।
ॐ ह्रीँ वँ भीमरूपाय नमः। भूपुर पर ईशान कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ अचलाय नमः। भूपुर पर पूर्व और ईशान के मध्य में।
ॐ ह्रीँ वँ हाटकेशाय नमः। भूपुर पर पश्चिम और नैर्ऋत्य के मध्य में।

भूपुरे लकुलेशादि विन्यासम्—भूपुर में लकुलेशादि का विन्यास करे—

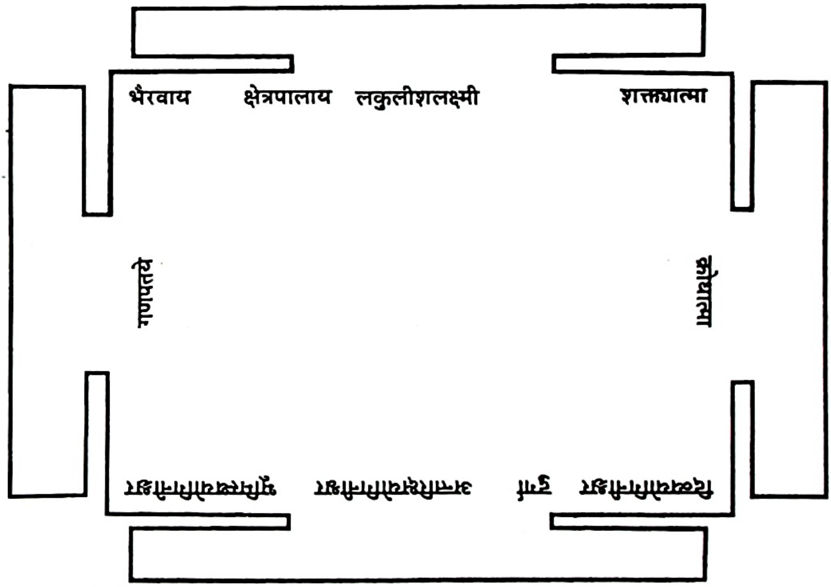
भैरवाय
क्षेत्रपालाय
लकुलीशलक्ष्मी
शक्त्यात्मा
गणपतये
क्रोधात्मा
भूमिस्थयोगिनीश्वर
अन्तरिक्षयोगिनीश्वर
दुर्गा
दिव्ययोगिनीश्वर

ॐ ह्रीँ वँ लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः। भूपुर पर पूर्व दिशा में।
ॐ ह्रीँ वँ शक्त्यात्मने नमः। भूपुर पर अग्निकोण में।
ॐ ह्रीँ वँ क्रोधात्मने नमः। भूपुर पर दक्षिण दिशा में।
ॐ ह्रीँ वँ दिव्ययोगिनीश्वरेभ्यो नमः। भूपुर पर नैर्ऋत्य कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ अन्तरिक्षयोगिनीश्वरेभ्यो नमः। भूपुर पर पश्चिम दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ भूमिस्थयोगिनीश्वरेभ्यो नमः। भूपुर पर वायव्य कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ गणपतये नमः। भूपुर पर उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय नमः। भूपुर पर ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय नमः। भूपुर पर पूर्व और ईशान के मध्य में।

ॐ ह्रीँ वँ दुर्गायै नमः। भूपुर पर पश्चिम और नैर्ऋत्य के मध्य में।

भूपुरे दशदिग्पालानां विन्यासम्—भूपुर में दिग्पालों का विन्यास करे—

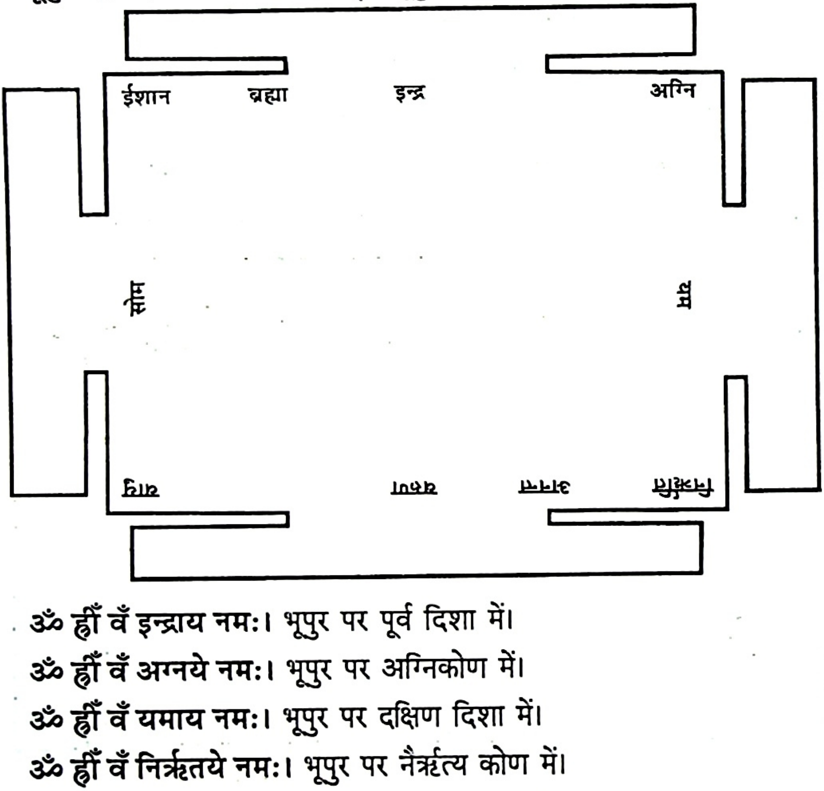

ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राय नमः। भूपुर पर पूर्व दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये नमः। भूपुर पर अग्निकोण में।

ॐ ह्रीँ वँ यमाय नमः। भूपुर पर दक्षिण दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ निर्ऋतये नमः। भूपुर पर नैर्ऋत्य कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाय नमः। भूपुर पर पश्चिम दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ वायवे नमः। भूपुर पर वायव्य कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ सोमाय नमः। भूपुर पर उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय नमः। भूपुर पर ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे नमः। भूपुर पर पूर्व और ईशान के मध्य में।

ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय नमः। भूपुर पर पश्चिम और नैर्ऋत्य के मध्य में।

भूपुरे दशदिग्पालास्त्राणां विन्यासम्—भूपुर में दिग्पालास्त्रों का विन्यास करे—

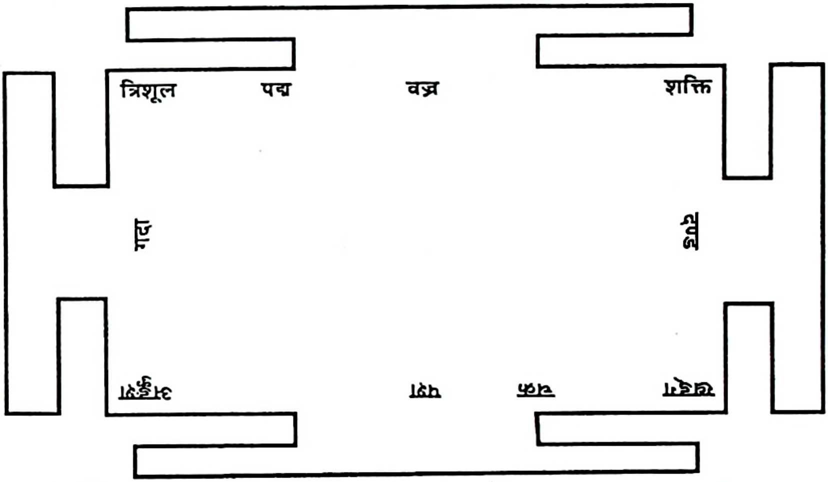

ॐ ह्रीँ वँ वज्राय नमः। भूपुर पर पूर्व दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ शक्तिये नमः। भूपुर पर अग्निकोण में।

ॐ ह्रीँ वँ दण्डय नमः। भूपुर पर दक्षिण दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ खड्गाय नमः। भूपुर पर नैर्ऋत्य कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ पाशाय नमः। भूपुर पर पश्चिम दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ अङ्कुशाय नमः। भूपुर पर वायव्य कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ गदाय नमः। भूपुर पर उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ त्रिशूलाय नमः। भूपुर पर ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ पद्माय नमः। भूपुर पर पूर्व और ईशान के मध्य में।

ॐ ह्रीँ वँ चक्राय नमः। भूपुर पर पश्चिम और नैर्ऋत्य के मध्य में।

मध्यविन्दौ इष्टदेवताप्राणप्रतिष्ठा—हृदकल्पित यन्त्र के मध्य विन्दु में—

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे श्रीवटुकभैरवस्य प्राणा इह प्राणाः। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे श्रीवटुकभैरवस्य जीव इह स्थितः। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे श्रीवटुकभैरवस्य सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

उपर्युक्त मन्त्रों का तीन बार जप करते हुए अपने शरीर में श्रीवटुकभैरव की प्रतिष्ठा करके अधोलिखित मन्त्र से गर्भाधानादि संस्कार करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मम देहस्था श्रीवटुकभैरवस्य गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

अपनी आत्मा को श्रीवटुकभैरव स्वरूपी भावना करके मानसोपचार पूजन करे फिर मूल मन्त्र से तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

मातृकान्यासम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्यब्रह्माऋषिः, गायत्रीछन्दः, मातृका-सरस्वतीदेवता, हलोबीजानि, स्वराःशक्तयः, विन्दुःकीलकं, श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।** विनियोग करके जल को तष्टा में डालने के बाद प्राणायाम करे।

प्राणायामम्

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः। पूरक करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ नमः। कुम्भक करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ लँ हँ नमः। रेचन करे।

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ गायत्री छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ विन्दुः कीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वतीदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ अः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

चक्रन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ लँ नमः चतुर्दलकमलात्मकमूलाधारचक्रः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्यप्रदेश स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ नमः षड्दलकमलात्मकस्वाधिष्ठानचक्रः लिङ्गमूले न्यस्यामि। लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ नमः दशदलकमलात्मकमणिपुरचक्रः नाभौ न्यस्यामि। नाभिप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ नमः द्वादशदलकमलात्मकअनाहतचक्रः हृदये न्यस्यामि। हृदयप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ नमः षोडशदलकमलात्मकविशुद्धचक्रः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ क्षँ नमः द्विदलकमलात्मकआज्ञाचक्रः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्यप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः सहस्रदलकमलात्मकसहस्रारचक्रः कपाले न्यस्यामि। ऊर्ध्व तालु का स्पर्श करे।

अन्तर्मातृकान्यासम्

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदोःयन्मध्यवक्षस्थलां ,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनस्तुङ्गस्तनीम् ।

मुद्रामक्षगुणं मुधाढ्यकलशं व्याख्यां च हस्ताम्बुजे,
विभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

पचास लिपियों में विभक्त, समस्त सुख को प्रदान करनेवाली, जो वक्षस्थल (हृदय) में रहनेवाली, सभी चन्द्रमौली से निबद्ध होकर खिले हुए स्तनोंवाली, आनन्द रूपी अमृत का पान करनेवाली अक्षमाला धारण करनेवाली, हाथ में समस्त ज्ञान की व्याख्याओंवाले पुस्तक को धारण किये हुए, फैले हुए प्रकाश के समान, तीन नेत्रोंवाली, वाणी की देवता, शारदा के रूप में स्थित सरस्वती देवी की वन्दना करता हूँ।

चक्रस्थमातृकान्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धूम्राभे षोडशदले कण्ठे विशुद्धचक्रे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदले प्रवालसन्निभेहृदयोपर्यनाहते न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदले नाभ्योरुपरिमणिपुरे न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युत्सन्निभे षड्दले लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि। लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ शँ षँ सँ लँ नमः सुवर्णाभे चतुर्दले मूलाधारे न्यस्यामि। गुह्यप्रदेश स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ क्षँ नमः द्विदले चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां न्यस्यामि। भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः हिमसन्निभे अनन्तचन्द्राभे सहस्रदले कपाले सहस्रारचक्रे न्यस्यामि। शिरः स्थित तालु स्पर्श करे।

सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते।
अकखादित्रिरेखासु आलक्षत्रयभूषिते॥

सहस्रार चक्र में चन्द्ररूपी हिम(शीतल)पर्वत के सन्निधान में सभी वर्णों से विभूषित अकार, ककार, खकारादि तीन रेखाओं में विभक्त क्षकार पर्यन्त(अकार से लेकर क्षकार तक) भूषित(व्याप्त) है।

ॐ ह्रीँ वँ परबिन्दुभ्यो नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा से ब्रह्मरन्ध्र तक विन्दु-

चिदात्मक ब्रह्मस्वरूपिणी कुण्डलिनी शक्ति को अपनी आत्मा महाकाल सदाशिव के साथ ध्यान करके उन दोनों के पादतल से टपकते हुए अमृतरस के द्वारा समस्तमातृकाओं का तर्पण करके तृप्त करने के बाद मानसोपचार पूजन करे।

आधारे लिङ्गनाभे प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश-दशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासन्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां,
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

आधार (मूलाधार) के चार पत्रों में वल प्रत्याहार के रूप में, लिङ्ग (स्वाधिष्ठान) के छः पत्रों में बल प्रत्याहार के रूप में, नाभि (मणिपुर) के दश पत्रों में डफ प्रत्याहार के रूप में, हृदय (अनाहत) के द्वादश पत्रों में कठ प्रत्याहार के रूप में, तालुमूल (विशुद्ध)के षोडश पत्रों में समस्त स्वर रूप में, ललाट (आज्ञा) के दो पत्रों में हं, क्षं वर्ण रूप में, सहस्रार में समस्त वर्ण रूप में, सभी चक्रकमलदलों में वर्ण रूपी, हे वर्णमातृकादेवि! आपको नमस्कार करते हैं, आपको नमस्कार है, आपको पुनः नमस्कार है, आपको बारम्बार नमस्कार है।

बहिर्मातृकान्यासम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्रीछन्दः, मातृकासरस्वतीदेवता, हलोबीजानि, स्वराः शक्तयः, विन्दुः कीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

मातृकान्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व-दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो-दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अंगुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अंगुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम-बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे!

ॐ ह्रीँ वँ डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

श्रीमातृकाऋषिन्यासम्

सौन्दर्य-माधुर्य-सुधा-समुद्र-विनिद्र-पद्मासन-सन्निविष्टाम् ।
चञ्चद्-विपञ्चीकलनादमुग्धां शुद्धां दधेऽन्तर्विसरत्सुगन्धाम्॥१॥

सौन्दर्य और माधुर्य के अमृत समुद्र में इन्द्रियों(पादादि) को पद्मासन में सन्निविष्ट करके, सदैव चञ्चलायमान कलकल नाद से मुग्ध शुद्ध अन्तःकरण में सुगन्धि को फैलाती हुई॥१॥

श्रुतिस्मृतिस्ततपदपद्मगन्धिप्रभामयं ' वाङ्मयमस्तपारम्।
यत्कोणकोणाभिनिविष्टमिष्टं तामम्बिकां सर्वसितां श्रिताः स्मः॥२॥

श्रुतिस्मृतिरूप में जिनके चरणकमल से निःसृत् प्रभा के समान सम्पूर्ण वाङ्मय में व्याप्त तथा जो सम्पूर्ण संसार के कोने कोने में व्याप्त है उन अम्बिका भगवती की अपने अभिष्ट की पूर्ति के लिए आश्रय लेता हूँ॥२॥

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ अर्जुन्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ इँ ईँ भार्गवऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ उँ ऊँ अग्निवेश्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ गौतमऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ एँ ऐँ लौहित्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ औँ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ अं अः माण्डव्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ कँ मौद्गायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ खँ गँ घँ ङँ अजऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ चँ योज्ञायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ छँ गोपाल्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ जँ नषकऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ झँ अजऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ञँ काश्यपऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ टँ शुनकऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ठँ सौमनस्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ डँ कारणऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ ढँ णँ माण्डव्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ तँ थँ दँ धँ सांकृत्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ नँ पँ फँ कात्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ वँ दाक्षायणऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ भँ व्याघ्रपादऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ मँ शाण्डिल्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ यँ रँ कौण्डिल्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ लँ दाण्डायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ वँ ज्ञातायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ शँ लाट्यायनऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ षँ सँ हँ जयऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।
ॐ ह्रीँ वँ लँ क्षँ माण्डव्यऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

श्रीमातृकाछन्दादिन्यासम्

न कान्दिशीकं रवितोऽतिवेलं तं कौशिकं संस्पृहये निशातम्।
सावित्रसारस्वतधामपश्यं शस्यं तपोब्राह्मणमाद्रिये तम्॥१॥

मध्य दिवस के सूर्य के अतिशय प्रकाश में (गायत्री का) तथा मध्य निशा में कौशिकी

का ध्यान करनेवाले ब्राहणों के तप से आद्रिभूत सिद्धविद्या श्रीशारदा के तेज को अपने शरीर तथा नेत्रों में प्राप्त करने के लिए।।१।।

श्रीशारदां प्रार्थितसिद्धविद्यां श्रीशारदामोज सगोत्रनेत्राम्।
श्रीशारदामोज निविज्यमानां श्रीशारदाङ्गानुजनि भजामि।।२।।

अभिष्ट सिद्धविद्या स्वरूपिणी सरस्वती देवी के तेज को प्राप्त करने के लिए, श्रीशारदा को अपने अङ्गों(हृदय) में धारण के लिए भजन करता हूँ।।२।।

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ मध्याछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ इँ ईँ प्रतिष्ठाछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ उँ ऊँ संप्रतिष्ठा छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ एँ ऐँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ औँ वृहतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अं अः दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ खँ गँ घँ ङँ त्रिष्टुब्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ चँ जगतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ छँ अतिजगतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जँ शक्वरीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झँ शक्वरीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ञँ अतिशक्वरीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ टँ अष्टिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ठँ अत्यष्टिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ डँ धृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ढँ णँ अतिधृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ तँ थँ दँ धँ कृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नँ पँ फँ अतिकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ आकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भँ विकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मँ संकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ रँ अतिकृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ उत्कृतिछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शँ दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ षँ सँ हँ दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ क्षँ दण्डकछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

श्रीमातृकाबीजवर्णस्वरूपवाहनन्यासम्

चक्राङ्गराजाञ्चितपादपद्मां पद्मालयाऽभ्यर्थितसुस्मितश्रीः।
स्मितश्रिया वर्षितसर्वकामा वामाविधेः पूरयतां प्रियं नः॥१॥

चरण कमल में चक्र के चिह्नों से चिह्नित, पद्मालय में निवास करनेवाली श्रीदेवी, हमारे ऊपर समस्त ऐश्वर्यों की वर्षा करने के लिए, वाममार्ग की विधि से प्रसन्न होनेवाली महादेवी हमारे ऊपर प्रसन्न हों॥१॥

बाहो रमायाः किल कौशिकोऽसौ हंसो भवत्याः प्रथितो विविक्तः।
जगद् विधातुर्महिषिं त्वमस्मान् विधेहि सभ्यान्नहि मातरिभ्यान्॥२॥

लक्ष्मी ही अपने बाहु कोशों में हंस धारण करके स्थित हो कर शोभा पाती हुई, जगद् का विधान करनेवाली हे महामहिषी महादेवी माता शारदा हमारे ऊपर प्रसन्न होकर हमें प्राप्त हों॥२॥

ॐ ह्रीँ वँ अँ मृत्युबीजाय स्वर्णवर्णाष्टभुजीचतुर्मुखीकूर्मवाहनायै नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ आकर्षणबीजाय श्वेतवर्णकमलासनपाशहस्तहस्तिवाहनायै नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ इँ पुष्टिबीजाय पीतवर्णपरशुधारिणीकच्छपवाहनायै नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ईँ आकर्षणबीजाय श्वेतवर्णमौक्तिकयुक्तहंसवाहनायै नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ उँ बलदायकबीजाय कृष्णवर्णगदाधारिणीकाकवाहनायै नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षकर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऊँ उच्चाटनबीजाय कृष्णवर्णगदाधारिणीकाकवाहनायै नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऋँ स्तम्भनबीजाय रक्तवर्णपाशधारिणीउष्ट्रवाहनायै नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षनासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॠँ मोहनबीजाय रक्तवर्णपाशधारिणीउष्ट्रवाहनायै नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वामनासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऌँ विद्वेषणबीजाय पुष्पवर्णवज्रधारिणीकमलवाहनायै नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षकपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लृँ उच्चाटनबीजाय पुष्पवर्णवज्रधारिणीकमलवाहनायै नमः वामकपोले न्यस्यामि। वामकपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ एँ वशीकरणबीजाय श्यामवर्णहारभूषणधारिणीचक्रवाकवाहनायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ पुरुषवशीकरणबीजाय नवपुष्पवर्णशूलवज्रधारिणीद्विपदवाहनायै नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ लोकवशीकरणबीजाय पीतवर्णसर्वगतवृषभवाहनायै नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ औँ राजवशीकरणबीजाय तप्तकांचनवर्णपाशधारिणीव्याघ्रवाहनायै नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ पशुवशीकरणबीजाय कुंकुमवर्णरक्तभूषणरिपुनाशकगजवाहनायै नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अः मृत्युनाशकबीजाय कुंकुमवर्णद्विभुजखरवाहनायै नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ विषबीजाय नवकुंकुमवर्णशूलवज्रधारिणीगजवाहनायै नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ खँ स्तम्भनबीजाय कृष्णवर्णपाशतोमरधारिणीमेषवाहनायै नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिणकूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ गँ गणपतिबीजायारुण वर्णपाशाङ्कुशधारिणीसर्पवाहनायै नमः दक्षिण-मणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिणमणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घँ स्तम्भनबीजाय कृष्णवर्णगदाधारिणीउष्ट्रवाहनायै नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ङँआसुरीबीजाय कृष्णवर्णगदाधारिणीकाकवाहनायै नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहस्ताङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ चँ चन्द्रबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीकाकवाहनायै नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ छँ मृत्युनाशकबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणी काकवाहनायै नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जँ ब्रह्मबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीकाकवाहनायै नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झँ चन्द्रबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीकाकवाहनायै नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हस्त अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ञँ मोहनबीजाय कृष्णवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीकाकवाहनायै नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हस्त अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ टँ क्षोभणबीजाय कृष्णवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीक्रौञ्चवाहनायै नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ठँ चन्द्रघातबीजाय उज्वलवर्णद्विभुजकपर्दिकाधारिणीगजेन्द्रवाहनायै नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ डँ गरुणबीजाय उज्वलवर्णअष्टभुजाकमलधारिणीकमलवाहनायै नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ढँ कुबेरबीजाय ज्वलत् कान्तिवर्णदशबाहुअजवाहनायै नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षपदाङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ णँ असुरबीजाय ज्वलत् कान्तिवर्णविस्तृतदेहबाहुव्याघ्रवाहनायै नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षपादाङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ तँ गुरुशक्तिबीजाय कुंकुमवर्णचतुर्बाहुअलंकृतवृषवाहनायै नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ थँ यमबीजाय पीतवर्ण चतुर्बाहुमहिषवाहनायै नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ दँ दुर्गाबीजाय रक्तवर्णषड्भुजमहिषवाहनायै नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ धँ सूर्यबीजाय रक्तवर्णचतुर्बाहुसिंहवाहनायै नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वामपादाङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नँ ज्वरनाशकबीजाय रक्तवर्णद्विभुजकाकवाहनायै नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामपादाङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ वरुणबीजाय रक्तवर्णविंशभुजकाकवाहनायै नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्वस्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ फँ विष्णुबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजसिंहवाहनायै नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ बँ ब्रह्मबीजाय अरुणवर्णद्विभुजहंसवाहनायै नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ भँ भद्रकालीबीजाय कृष्णवर्णत्रिहस्तत्रिमुखव्याघ्रवाहनायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ मँ रुद्रबीजाय रक्तवर्णचतुर्मुखविषयुक्तसंवर्तव्याघ्रवाहनायै नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ यँ त्वगात्मने वायुबीजाय धूम्रवर्णचतुर्मुखमृगवाहनायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ रँ असृगात्मने अग्निबीजाय रक्तवर्णचतुर्मुखमेषवाहनायै नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ लँ मांसात्मने इन्द्रबीजाय केशरवर्णचतुर्मुखगजवाहनायै नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ मेदात्मने वरुणबीजाय श्वेतवर्णद्विबाहुनक्रवाहनायै नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ शँ अस्थ्यात्मने लक्ष्मीबीजाय हेमवर्णद्विबाहुकमलवाहनायै नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ षँ मज्जात्मने सूर्यबीजाय कृष्णवर्णद्विभुजहंसवाहनायै नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ सँ शुक्रात्मने वाणीबीजाय श्वेतवर्णद्विभुजहंसवाहनायै नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ हँ आत्मने आकाशबीजाय श्वेतवर्णत्रिबाहुहंसवाहनायै नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ लँ परमात्मने पृथ्वीबीजाय केशरवर्णचतुर्भुजगजवाहनायै नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने शक्तिबीजाय मणिप्रभावर्णदशबाहुहंसवाहनायै नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

पञ्चब्रह्मन्यासम्

विनियोग:—**अस्य श्रीपञ्चब्रह्मन्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, जगतिछन्दः, अर्ध-**

नारीश्वरोदेवता, ह्साँस्हाँबीजं, ह्सीँस्हीँशक्तिः, ह्सूँस्हूँकीलकं श्रीमद्वटुकभैरवप्रीतये न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जगतिछन्दसे नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पञ्चवक्त्रार्धनारीश्वरो देवतायै नमः हृदये। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्साँ स्हाँ बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सीँ स्हीँ शक्तये नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सूँ स्हूँ कीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पञ्चवक्त्रार्धनारीश्वरो देवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ हौँ ईशानाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हैँ तत्पुरुषाय तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ अघोराय मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हीँ वामदेवाय अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ सद्योजाताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हः पञ्चवक्त्रार्धनारीश्वरोदेवतायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ हौँ ईशानाय हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हैँ तत्पुरुषाय शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ अघोराय शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हीँ वामदेवाय कवचाय हूम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ सद्योजाताय नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हः पञ्चवक्त्रार्धनारीश्वरोदेवतायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

मूर्धादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ हौँ ईशानाय मूर्ध्नि न्यस्यामि। मूर्धा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हैँ तत्पुरुषाय मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ अघोराय हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हीँ वामदेवाय गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ सद्योजाताय पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हः पञ्चवक्त्रार्धनारीश्वरोदेवतायै सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

पञ्चवक्त्रादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ हाँ ईशानायोर्ध्ववक्त्राय नमः मूर्ध्नि न्यस्यामि। मूर्धा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हैँ तत्पुरुषायोत्तरवक्त्राय नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हीँ वामदेवाय पूर्ववक्त्राय नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः चोरकूपे न्यस्यामि। चोर कूप स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हः पञ्चवक्त्रार्धनारीश्वरोदेवतायै नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्साँ स्हाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सीँ स्हीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सूँ स्हूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सैँ स्हैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सः स्हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्साँ स्हाँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सीँ स्हीँ शिरसे स्वाहा। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सूँ स्हूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सैँ स्हैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सः स्हः अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए ताली बजाये।

पञ्चवक्त्रध्यानम्

पञ्चवक्त्रं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्।
चन्द्रसूर्यसहस्राभं शिवशक्त्यात्मकं भजे॥

रंग विरंगे रत्नों से जटित आभूषाणों से सम्पूर्ण अङ्गप्रत्यङ्गों में आभूषित, चार भुजाओं और पाँच मुखोंवाले, सहस्त्रों चन्द्र तथा सूर्य की प्रभावाले, शिवशक्ति(पार्वती) का न्यास सिद्धि के लिए ध्यान करता हूँ।

काममातृकान्यासम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीकाममातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीवटुकभैरवोदेवता, ॐकारबीजं, क्लीँशक्तयः, ह्रीँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐकारबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवताय नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ क्लाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ क्लाँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं,
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयीं पुस्तकं ज्ञानगम्या।
सा वीणां वादयन्तीं स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना॥

श्वेत हंस(सत्य असत्य का विवेचन करने में समर्थ) पर आरूढ, गगन में भ्रमण करती हुई, दक्षिण हाथ में अक्षसूत्र(माला) धारण की हुई, सुवर्ण के समान बायें हाथ में दिव्यज्ञान प्रदान करनेवाली पुस्तक धारण की हुई, वीणा बजाती हुई, शास्त्र विज्ञान के ज्ञानराशि को दिव्य रूप से जपती (वर्णन तथा विवेचन व उपदेश) हुई भारती हमारे ऊपर प्रसन्न हों।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ अँ क्लीँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ आँ क्लीँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ इँ क्लीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ईँ क्लीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ उँ क्लीँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ऊँ क्लीँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ऋँ क्लीँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ॠँ क्लीँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ऌँ क्लीँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ॡँ क्लीँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ एँ क्लीँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ऐँ क्लीँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ओँ क्लीँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ औँ क्लीँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ अँ क्लीँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ अः क्लीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ कँ क्लीँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ खँ क्लीँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ गँ क्लीँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ घँ क्लीँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ङँ क्लीँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ चँ क्लीँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ छँ क्लीँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ जँ क्लीँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ झँ क्लीँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ञँ क्लीँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ टँ क्लीँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ठँ क्लीँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ डँ क्लीँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ ढँ क्लीँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ णँ क्लीँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ तँ क्लीँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ थँ क्लीँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ दँ क्लीँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ धँ क्लीँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ नँ क्लीँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ पँ क्लीँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ फँ क्लीँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ बँ क्लीँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ भँ क्लीँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ मँ क्लीँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ यँ क्लीँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ रँ क्लीँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ लँ क्लीँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ वँ क्लीँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ शँ क्लीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ षँ क्लीँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ सँ क्लीँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ हँ क्लीँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ लँ क्लीँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ क्षँ क्लीँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

प्रेतबीजन्यासं प्रथमम्

विनियोगः—**अस्य श्रीप्रेतबीजन्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, जगतिछन्दः, शङ्करोदेवता, ह्सौँबीजं, स्हौँशक्तिः, सौःकीलकं श्रीमद्बटुकभैरवप्रीतये न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जगतिछन्दसे नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीशङ्करोदेवतायै नमः हृदये। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्साँ स्हाँ बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सीँ स्हीँ शक्तये नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सूँ स्हूँ कीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीशङ्करोदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्साँ स्हाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सीँ स्हीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सूँ स्हूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सैँ स्हैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्संः स्हंः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्साँ स्हाँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सीँ स्हीँ शिरसे स्वाहा। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सूँ स्हूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सैँ स्हैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सः स्हः अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए ताली बजाये।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं विद्याकरैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम्।
अर्द्धेन्दुमौलिभरणामरविन्दवासां वर्णेश्वरीं प्रणतस्तनभारनमिता॥

अकार से क्षकार तक वर्णों से नि:सृत, हरित वर्ण के पोत सदृश उग्र खड्ग हाथों में सदैव धारण की हुई, विद्या(ज्ञान) धारण करनेवाली, तीन नेत्रोंवाली, अर्द्धचन्द्र को आभूषण के समान धारण की हुई, चन्द्रमा के समान धवल वस्त्र धारण करनेवाली, स्तन के भार से खिली हुई, प्रसन्न मुद्राओंवाली, वर्णों की अधिश्वरी देवी को प्रणाम करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः अँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः आँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः इँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिणनेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ईँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वामनेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः उँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ऊँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ॠँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षनासापुटे न्यस्यामि। दक्षनासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ॠँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः लृँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षकपोले न्यस्यामि। दक्षकपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः लॄँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः एँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ऐँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ओँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः औँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः अँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः अः ह्सौँ स्हौँ सौः नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः कँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः खँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः गँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः घँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ङँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः चँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः छँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वामकूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः जँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः झँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ञँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः टँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ठँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः डँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः ढँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः णँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः तँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः थँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः दँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः धँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः नँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ पँ सौः ह्सौँ स्हौँ सौः नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिणपार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः फँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वामपार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः बँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः भँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः मँ ह्सौँ स्हौँ सौः नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः यँ ह्सौँ स्हौँ सौः त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः रँ ह्सौँ स्हौँ सौः असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः लँ ह्सौँ स्हौँ सौः मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः वँ ह्सौँ स्हौँ सौः मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः शँ ह्सौँ स्हौँ सौः अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः षँ ह्सौँ स्हौँ सौः मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः सँ ह्सौँ स्हौँ सौः शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः हँ ह्सौँ स्हौँ सौः आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः लँ ह्सौँ स्हौँ सौः परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्सौँ स्हौँ सौः क्षँ ह्सौँ स्हौँ सौः ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

सिंहबीजन्यासं द्वितीयम्

विनियोगः—**अस्य श्रीसिंहबीजन्यासमन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, जगतिछन्दः, नृसिंहोदेवता, हसक्षैँबीजं, हसक्षीँशक्तिः, हसक्षूँकीलकं श्रीमद्वटुकभैरवप्रीतये न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मात्रऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जगतिछन्दसे नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नृसिंहोदेवतायै नमः हृदये। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षीँशक्तये नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षूँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षाँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षीं शिरसे स्वाहा। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षः अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए ताली बजाये।

ध्यानम्

सिन्दूरकान्तिमसिताभरणां त्रिनेत्रां विद्याक्षसूत्रमृगपोतवरं दधाना।
पार्श्वस्थितांभगवतीमपिकाञ्चनाङ्गीं ध्याये कराब्जधृतपुस्तकवर्णमालाम्॥

सिन्दूर की कान्तिवाले आभूषणों से सुसज्जित, तीन नेत्रोंवाली, विद्यारूपी अक्षमाला धारण करनेवाली, वर प्रदान करनेवाली, सुवर्ण के सदृश अङ्गोंवाली, हाथ में पुस्तक और वर्णमालाओं को धारण करनेवाली सरस्वती देवी का ध्यान करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं अँ हसर्क्षैं नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं आँ हसर्क्षैं नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं इँ हसर्क्षैं नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं ईँ हसर्क्षैं नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं उँ हसर्क्षैं नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं ऊँ हसर्क्षैं नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं ऋँ हसर्क्षैं नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं ॠँ हसर्क्षैं नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं ऌँ हसर्क्षैं नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं ॡँ हसर्क्षैं नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं एँ हसर्क्षैं नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं ऐँ हसर्क्षैं नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं ओँ हसर्क्षैं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं औँ हसर्क्षैं नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसर्क्षैं अँ हसर्क्षैं नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ अः हसक्ष्रौँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ कँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ खँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ गँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ घँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ ङँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ चँ हसक्ष्रौँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ छँ हसक्ष्रौँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ जँ हसक्ष्रौँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ झँ हसक्ष्रौँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ ञँ हसक्ष्रौँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ टँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ ठँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ डँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ ढँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ णँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ तँ हसक्ष्रौँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ थँ हसक्ष्रौँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ दँ हसक्ष्रौँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ धँ हसक्ष्रौँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ नँ हसक्ष्रौँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ पँ हसक्ष्रौँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हसक्ष्रौँ फँ हसक्ष्रौँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ बँ हसक्षैँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ भँ हसक्षैँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ मँ हसक्षैँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ यँ हसक्षैँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ रँ हसक्षैँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ लँ हसक्षैँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ हसक्षैँ वँ हसक्षैँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ षँ हसक्षैँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ सँ हसक्षैँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ हँ हसक्षैँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ हसक्षैँ लँ हसक्षैँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हसक्षैँ क्षँ हसक्षैँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

क्वाणबीजन्यासं तृतीयम्

विनियोगः—**अस्य श्रीक्वाणबीजन्यासमन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, जगतिछन्दः, शङ्करोदेवता, झ्रौँबीजं, झ्रीँशक्तिः, झ्रूँकीलकं श्रीमद्वटुकभैरवप्रीतये न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मात्रऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जगतिछन्दसे नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीशङ्करोदेवतायै नमः हृदये। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रीँशक्तये नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रूँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ झ्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ झ्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रीँ शिरसे स्वाहा। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रः अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए ताली बजाये।

ध्यानम्

शूलखड्गडमरूलसत्करं सव्यहस्तमपरं करोज्ज्वलम्।
सततं हृदि भजामि भैरवं स्वाधिरूढमधिकारसिद्धये॥

हाथों में शूल, खड्ग, डमरू तथा शर से सुशोभित भैरव की अधिकार की सिद्धि के लिए हृदय में ध्यान करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ अँ झ्रौँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ आँ झ्रौँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ इँ झ्रौँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ ईँ झ्रौँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ उँ झ्रौँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ ऊँ झ्रौँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ ऋँ झ्रौँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ ॠँ झ्रौँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ ऌँ झ्रौँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ ॡँ झ्रौँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं एँ झ्रौं नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं ऐँ झ्रौं नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं ओँ झ्रौं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्व-दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं औँ झ्रौं नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधो-दन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं अँ झ्रौं नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं अः झ्रौं नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं कँ झ्रौं नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं खँ झ्रौं नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं गँ झ्रौं नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं घँ झ्रौं नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं ङँ झ्रौं नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं चँ झ्रौं नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं छँ झ्रौं नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं जँ झ्रौं नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं झँ झ्रौं नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हस्ताङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं ञँ झ्रौं नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हस्ताङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं टँ झ्रौं नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं ठँ झ्रौं नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं डँ झ्रौं नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं ढँ झ्रौं नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षपादाङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं णँ झ्रौं नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षपादाङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं तँ झ्रौं नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं थँ झ्रौं नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं दँ झ्रौं नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं धँ झ्रौं नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं नँ झ्रौं नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं पँ झ्रौं नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ झ्रौं फँ झ्रौं नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ बँ झ्रौँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ भँ झ्रौँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ मँ झ्रौँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ यँ झ्रौँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ रँ झ्रौँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ लँ झ्रौँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ वँ झ्रौँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ शँ झ्रौँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ षँ झ्रौँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ सँ झ्रौँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ हँ झ्रौँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ लँ झ्रौँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झ्रौँ क्षँ झ्रौँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

सत्याबीजन्यासं चतुर्थम्

विनियोगः—**अस्य श्रीसत्याबीजन्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, जगतिछन्दः, वटुकोदेवता, मलहौँबीजं, मलहीँशक्तिः, मलहूँकीलकं श्रीमद्वटुकभैरवप्रीतये न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जगतिछन्दसे नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकोदेवतायै नमः हृदये। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहीँ शक्तये नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहूँ कीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ मलहाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिका स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ मलहाँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहीँ शिरसे स्वाहा। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहः अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए ताली बजाये।

ध्यानम्

सौन्दर्यमाधुर्यसुधासमुद्रविनिद्रपद्मासनसन्निविष्टाम् ।
चञ्चद्विपञ्चीकलनादमुग्धां शुद्धां दधेऽन्तर्विसरत्सुगन्धाम्॥

सौन्दर्य और माधुर्य के अमृत समुद्र में इन्द्रियों(पादादि) को पद्मासन में सन्निविष्ट करके, सदैव चञ्चलायमान कलकल नाद से मुग्ध शुद्ध अन्तःकरण में सुगन्धि को फैलाती हुई देवी का ध्यान करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ अँ मलहौँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ आँ मलहौँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ इँ मलहौँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ईँ मलहौँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ उँ मलहौँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ऊँ मलहौँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ऋँ मलहौँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ॠँ मलहौँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ लृँ मलहौँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ लॄँ मलहौँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ एँ मलहौँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ऐँ मलहौँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ओँ मलहौँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ औँ मलहौँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ अँ मलहौँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ अः मलहौँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ कँ मलहौँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ खँ मलहौँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ गँ मलहौँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ घँ मलहौँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ङँ मलहौँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ चँ मलहौँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ छँ मलहौँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ जँ मलहौँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ झँ मलहौँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ञँ मलहौँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ टँ मलहौँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ठँ मलहौँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ डँ मलहौँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ढँ मलहौँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ णँ मलहौँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ तँ मलहौँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ थँ मलहौँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ दँ मलहौँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ धँ मलहौँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ नँ मलहौँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ पँ मलहौँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ फँ मलहौँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ बँ मलहौँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ भँ मलहौँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ मँ मलहौँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ यँ मलहौँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ रँ मलहौँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ लँ मलहौँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ वँ मलहौँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ शँ मलहौँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ षँ मलहौँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ सँ मलहौँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ हँ मलहौँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ ळँ मलहौँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मलहौँ क्षँ मलहौँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

श्रीबीजन्यासं पञ्चमम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीबीजन्यासमन्त्रस्य वृहदारण्यऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, श्रीँबीजं, ह्रीँशक्तयः, हूँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ वृहदारण्यऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

ईषत्प्रभावकलुषाः कति नामसन्ति,
ब्रह्मादयः प्रतिदिनम्प्रलयाभिभूताः।
एकः स एव जननि! स्थिरसिद्धिरास्ते,
यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति॥

कालुष्य के अत्यल्प प्रभाव से ब्रह्मादि भी प्रतिदिन प्रलय को प्रांप्त हो जाते हैं(अन्यो की तो कोई बात ही नहीं है), हे जननि! केवल आपही स्थिरता प्रदान करती हैं, जिसके चरणों में पूर्णरूप से प्रणाम करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ अँ श्रीँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ आँ श्रीँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ इँ श्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ईँ श्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ उँ श्रीँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ऊँ श्रीँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ऋँ श्रीँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ॠँ श्रीँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ऌँ श्रीँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ॡँ श्रीँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ एँ श्रीँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ऐँ श्रीँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ओँ श्रीँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ औँ श्रीँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ अँ श्रीँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ अः श्रीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ कँ श्रीँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ खँ श्रीँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ गँ श्रीँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ घँ श्रीँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ङँश्रीँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ चँ श्रीँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ छँ श्रीँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ जँ श्रीँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ झँ श्रीँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ श्रीँ जँ श्रीँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ टँ श्रीँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ठँ श्रीँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ डँ श्रीँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ ढँ श्रीँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ णँ श्रीँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ तँ श्रीँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ थँ श्रीँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ दँ श्रीँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ धँ श्रीँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ नँ श्रीँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ पँ श्रीँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ फँ श्रीँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ बँ श्रीँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ भँ श्रीँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ मँ श्रीँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ यँ श्रीँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ रँ श्रीँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ लँ श्रीँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ वँ श्रीँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ शँ श्रीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ षँ श्रीँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ सँ श्रीँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ हँ श्रीँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ लँ श्रीँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ क्षँ श्रीँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

प्राणबीजन्यासं षष्ठम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीप्राणबीजन्यासमन्त्रस्य वृहदारण्यऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, य्रूँकारबीजं, य्रीँशक्तयः, य्रौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवः प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ वृहदारण्यऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँकारबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रीँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ य्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ य्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रैं कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर तालो बजाये।

ध्यानम्

श्रुतिस्मृतिस्ततपदपद्मगन्धिप्रभामयं वाङ्मयमस्तपारम्।
यत्कोणकोणाभिनिविष्टमिष्टं तामम्बिकां सर्वसितां श्रिताः स्मः॥

श्रुतिस्मृतिरूप में जिनके चरणकमल से निःसृत् प्रभा के समान सम्पूर्ण वाङ्मय में व्याप्त तथा जो सम्पूर्ण संसार के कोने कोने में व्याप्त है उन अम्बिका भगवती की अपने अभिष्ट की पूर्ति के लिए आश्रय लेता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ अँ यूँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ आँ यूँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ इँ यूँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ ईँ यूँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ उँ यूँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यांमि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ ऊँ यूँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ ऋँ यूँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ ॠँ यूँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ ऌँ यूँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ ॡँ यूँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ एँ यूँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ ऐँ यूँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ ओँ यूँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ औँ यूँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ अँ यूँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ अः यूँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ कँ यूँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ खँ यूँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ गँ यूँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ घँ यूँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ ङँ य्रूँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ चँ य्रूँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ छँ य्रूँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ जँ य्रूँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ झँ य्रूँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ ञँ य्रूँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ टँ य्रूँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ ठँ य्रूँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ डँय्रूँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ ढँ य्रूँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ णँ य्रूँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ तँ य्रूँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ थँ य्रूँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ दँ य्रूँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ धँ य्रूँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ नँ य्रूँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ पँ य्रूँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ फँ य्रूँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ बँ य्रूँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ भँ य्रूँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ मँ य्रूँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ यँ य्रूँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ रँ य्रूँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ लँ य्रूँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ वँ य्रूँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ शँ य्रूँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ य्रूँ षँ य्रूँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ सँ यूँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ हँ यूँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ लँ यूँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यूँ क्षँ यूँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

घन्टाबीजन्यासं सप्तमम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीघण्टाबीजन्यासमन्त्रस्य वृहदारण्यऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, घ्य्रूँबीजं, घ्य्रीँशक्तयः, घ्य्रौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ वृहदारण्यऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ कारबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रीँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

घोररूपे महारावे सर्वशत्रुभयङ्करि।
भक्तेभ्यो वरदे देवि त्राहि मां शरणागतम्॥

घोर रूपवाली, महा घोष करनेवाली, सभी शत्रूओं को भयङ्कर लगनेवाली, भक्तों को वर प्रदान करनेवाली, हे भगवति! आपकी शरण में हूँ रक्षा कीजिये।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ अँ घ्य्रूँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ आँ घ्य्रूँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ इँ घ्य्रूँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ ईँ घ्य्रूँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ उँ घ्य्रूँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ ऊँ घ्य्रूँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ ऋँ घ्य्रूँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ ॠँ घ्य्रूँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ ऌँ घ्य्रूँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ ॡँ घ्य्रूँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ एँ घ्य्रूँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ ऐँ घ्य्रूँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ ओँ घ्य्रूँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ औँ घ्य्रूँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ अँ घ्य्रूँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ अः घ्य्रूँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ कँ घ्य्रूँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ खँ घ्य्रूँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ गँ घ्यूँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ घँ घ्यूँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ ङँ घ्यूँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ चँ घ्यूँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ छँ घ्यूँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ जँ घ्यूँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ झँ घ्यूँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ ञँ घ्यूँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ टँ घ्यूँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ ठँ घ्यूँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ डँ घ्यूँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ ढँ घ्यूँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ णँ घ्यूँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ तँ घ्यूँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ थँ घ्यूँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ दँ घ्यूँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ धँ घ्यूँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ नँ घ्यूँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ पँ घ्यूँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ फँ घ्यूँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ बँ घ्यूँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ भँ घ्यूँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ मँ घ्यूँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ यँ घ्यूँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ रँ घ्यूँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ लँ घ्यूँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ वँ घ्यूँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्यूँ शँ घ्यूँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ षँ घ्य्रूँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ सँ घ्य्रूँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ हँ घ्य्रूँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ लँ घ्य्रूँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घ्य्रूँ क्षँ घ्य्रूँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

ख्यातिबीजन्यासं अष्टमम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीख्यातिबीजन्यासमन्त्रस्य वृहदारण्यऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, ख्य्रूँबीजं, ख्य्रीँशक्तयः, ख्य्रौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ वृहदारण्यऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्रूँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्रीँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्रौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्य्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्रः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम्।
ईडे सकलसम्पत्त्यै जगत्कारणमम्बिकाम्॥

साक्षात् ब्रह्म स्वरूपिणी, आनन्दमयी, ईश्वरी, कलाओंवाली, जगत् की कारण भूता अम्बिका को नमस्कार है।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ अँ ख्व्यूँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ आँ ख्व्यूँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ इँ ख्व्यूँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ ईँ ख्व्यूँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ उँ ख्व्यूँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ ऊँ ख्व्यूँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ ऋँ ख्व्यूँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ ॠँ ख्व्यूँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ ऌँ ख्व्यूँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ ॡँ ख्व्यूँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ एँ ख्व्यूँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ ऐँ ख्व्यूँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ ओँ ख्व्यूँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ औँ ख्व्यूँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ अँ ख्व्यूँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ अः ख्व्यूँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ कँ ख्व्यूँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्व्यूँ खँ ख्व्यूँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ गँ ख्यूँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ घँ ख्यूँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ ङँ ख्यूँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ चँ ख्यूँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ छँ ख्यूँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ जँ ख्यूँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ झँ ख्यूँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ ञँ ख्यूँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ टँ ख्यूँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ ठँ ख्यूँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ डँ ख्यूँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ ढँ ख्यूँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ णँ ख्यूँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ तँ ख्यूँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ थँ ख्यूँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ दँ ख्यूँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ धँ ख्यूँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ नँ ख्यूँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ पँ ख्यूँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ फँ ख्यूँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ बँ ख्यूँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ भँ ख्यूँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ मँ ख्यूँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ यँ ख्यूँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ रँ ख्यूँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ख्यूँ लँ ख्यूँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्यूँ वँ ख्यूँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्यूँ शँ ख्यूँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्यूँ षँ ख्यूँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्यूँ सँ ख्यूँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्यूँ हँ ख्यूँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्यूँ लँ ख्यूँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ख्यूँ क्षँ ख्यूँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

मूलन्यासं नवमम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीमूलन्यासमन्त्रस्य वृहदारण्यऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, ह्रीँ बीजं, ह्रूँशक्तयः, ह्रौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीवटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ वृहदारण्यऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर.स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

ॐ करकलित-कपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुण-तिमिर-नीलः व्याल-यज्ञोपवीती।
क्रतु-समय-सपर्या-विघ्न-विच्छेद-हेतुः ,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्थावाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालोंवाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, हमारे विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ईँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ उँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऋँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॠँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लृँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॡँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ एँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऐँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ओँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ औँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ ॐ ह्रीँ वँ

वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अः ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ङँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ञँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ टँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ठँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ढँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ णँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ थँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ फँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

भ्रामरीबीजन्यासं दशमम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीभ्रामरीबीजन्यासमन्त्रस्य भैरवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, भरलसहीँबीजं, भरलसहूँशक्तयः, भरलसहौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ भैरवऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहूँशक्तभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

विद्यामशेषजननीमरविन्दयोनेः ,
विष्णोः शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीम्।
सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतान्त्रयाणां,
स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके! त्वाम्॥

समस्त विद्यओं की जननी, अरविन्दयोनि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के शरीर का प्रतिपादन करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की सृष्टि, स्थिति तथा क्षय करनेवाली, हे परमशुद्धा विमल अम्बिके! तुम्हारी स्तुति करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ अँ भरलसहीँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ आँ भरलसहीँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ इँ भरलसहीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ईँ भरलसहीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ उँ भरलसहीँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ऊँ भरलसहीँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ऋँ भरलसहीँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ॠँ भरलसहीँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ लृँ भरलसहीँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ लॄँ भरलसहीँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ एँ भरलसहीँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ऐँ भरलसहीँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ओँ भरलसहीँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ औँ भरलसहीँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ अँ भरलसहीँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ अः भरलसहीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ कँ भरलसहीँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ खँ भरलसहीँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ गँ भरलसहीँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ घँ भरलसहीँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ङँ भरलसहीँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ चँ भरलसहीँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ छँ भरलसहीँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ जँ भरलसहीँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ झँ भरलसहीँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ञँ भरलसहीँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ टँ भरलसहीँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ठँ भरलसहीँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ डँ भरलसहीँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ ढँ भरलसहीँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ णँ भरलसहीँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ तँ भरलसहीँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ थँ भरलसहीँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ दँ भरलसहीँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ धँ भरलसहीँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ नँ भरलसहीँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ पँ भरलसहीँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ फँ भरलसहीँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ बँ भरलसहीँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ भँ भरलसहीँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ मँ भरलसहीँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ यँ भरलसहीँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ रँ भरलसहीँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ लँ भरलसहीँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ वँ भरलसहीँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ शँ भरलसहीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ षँ भरलसहीँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ सँ भरलसहीँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ हँ भरलसहीँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ लँ भरलसहीँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भरलसहीँ क्षँ भरलसहीँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

आकूतिबीजन्यासं

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीआकूतिबीजन्यासमन्त्रस्य भैरवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, नमरलमरक्षरशरह्स्रीँबीजं, नमरलमरक्षरशरह्स्रूँशक्तयः, नमरलमरक्षरशरह्स्रौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ भैरवऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रीँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रूँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिर्ष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरह्स्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरह्सः अस्त्राय फट्। अपने सिर के चारों ओर चुटकी बजाते हुए हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

कल्याणवृष्टिभिरिवाऽमृतपूरिताभिः ,
लक्ष्मीस्वयम्वरणमङ्गलदीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब! तव पादसरोजमूले,
नाऽऽकारि किम्मनसि भक्तिमताञ्जनानाम्॥

कल्याण की वर्षा करनेवाली, अमृत पूरित कलश को धारण करनेवाली, लक्ष्मी स्वयं मङ्गल दीपकों का वरण करके, आपके पादकमल की सेवा में संलग्न रहती है, हे अम्बिके! भक्ति पूर्वक आपमें मन लगाकर ध्यान करते हैं।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ अँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ आँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ इँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ ईँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ उँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ ऊँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ ऋँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ ॠँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ ऌँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ ॡँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ नमरलमरक्षरशरहसौँ एँ नमरलमरक्षरशरहसौँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ ऐँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ औँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ औँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ अँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ अः नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ कँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ खँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ गँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ घँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ ङँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ चँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वाम-बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ छँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ जँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ झँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ ञँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ टँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ ठँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ डँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ ढँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ णँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ तँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ थँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ दँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ धँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ पँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ फँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ बँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ भँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ मँ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ यँ नमरलमरक्षरशरहसीँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ रँ नमरलमरक्षरशरहसीँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ लँ नमरलमरक्षरशरहसीँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ शँ नमरलमरक्षरशरहसीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि-दक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ षँ नमरलमरक्षरशरहसीँ मज्जात्मने नमः हृदयादि-वामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ सँ नमरलमरक्षरशरहसीँ शुक्रात्मने नमः हृदयादि-दक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ हँ नमरलमरक्षरशरहसीँ आत्मने नमः हृदयादि-वामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ लँ नमरलमरक्षरशरहसीँ परमात्मने नमः कट्यादि-पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमरलमरक्षरशरहसीँ क्षँ नमरलमरक्षरशरहसीँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

कालबीजन्यासं

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीकालबीजन्यासमन्त्रस्य भैरवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, करलसरमरीँबीजं, करलसरमरूँशक्तयः, करलसरमरौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ भैरवऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरूँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमराँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमराँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

आधारे तरुणार्कबिम्बरुचिरं सोमप्रभं वाग्भवं,
बीजं मन्मथमिन्द्रगोपनिभं हृत्पङ्कजे संस्थितम्।
रन्ध्रे ब्रह्मपदे च शाक्तमपरं चन्द्रप्रभाभासुरं,
ये ध्यायन्ति पदत्रयं तव शिवे यान्ति सौख्यं पदम्॥

आधार में तरुण सूर्य बिम्ब के समान, चन्द्रमा के प्रकाश सदृश वाग्भव बीज का समस्त इन्द्रियों के सहित मन लगाकर अपने हृदय पद्म में धारण करके तथा ब्रह्म रन्ध्र में शक्ति का चन्द्रमा के प्रकाश के समान जो पद त्रय(अग्नि, आदित्य और सोम मण्डलों) के सहित पर मण्डलों में जो साधक ध्यान करता है वह शिवपद के सुख को प्राप्त करता है।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ अँ करलसरमरीँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ आँ करलसरमरीँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ इँ करलसरमरीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ईँ करलसरमरीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ उँ करलसरमरीँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ऊँ करलसरमरीँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ऋँ करलसरमरीँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ॠँ करलसरमरीँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ऌँ करलसरमरीँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ॡँ करलसरमरीँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ एँ करलसरमरीँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ऐँ करलसरमरीँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ओँ करलसरमरीँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ औँ करलसरमरीँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ अँ करलसरमरीँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ अः करलसरमरीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ कँ करलसरमरीँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ खँ करलसरमरीँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ गँ करलसरमरीँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ घँ करलसरमरीँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ङँ करलसरमरीँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ चँ करलसरमरीँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ छँ करलसरमरीँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ जँ करलसरमरीँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ झँ करलसरमरीँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ व्वँ करलसरमरीँ ञँ करलसरमरीँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ टँ करलसरमरीँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ठँ करलसरमरीँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ डँ करलसरमरीँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ ढँ करलसरमरीँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ णँ करलसरमरीँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ तँ करलसरमरीँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ थँ करलसरमरीँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ दँ करलसरमरीँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ धँ करलसरमरीँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ नँ करलसरमरीँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ पँ करलसरमरीँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ फँ करलसरमरीँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ बँ करलसरमरीँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ भँ करलसरमरीँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ मँ करलसरमरीँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ यँ करलसरमरीँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ रँ करलसरमरीँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ लँ करलसरमरीँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ वँ करलसरमरीँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ शँ करलसरमरीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ षँ करलसरमरीँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ सँ करलसरमरीँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ हँ करलसरमरीँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ लँ करलसरमरीँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ करलसरमरीँ क्षँ करलसरमरीँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

विद्याबीजन्यासम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीविद्याबीजन्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, क्षरसरहसीँबीजं, क्षरसरहसूँशक्तयः, क्षरसरहसौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसूँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसाँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

सन्ध्यात्रये सकल भूसुर सेव्यमाने,
स्वाहा स्वधासि पितृदेवगणार्तिहन्त्री।
जायाः सुताः परिजनातिथयोऽन्नकामाः,
सिद्धिं प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम्॥

तीनों सन्ध्याओं में समस्त ब्राह्मणों से सेवनीय, स्वाहा स्वधा के द्वारा पितृ तथा देवगणों के दु:खों का हरण करनेवाली, पत्नी, पुत्र, परिजन तथा अतिथियों के अन्न की कामना से क्षुधा निवृत्ति के लिए हे गिरिजा! हमें सिद्धि प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ अँ क्षरसरहसीँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ आँ क्षरसरहसीँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ इँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ईँ क्षरसरहसीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ उँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ऊँ क्षरसरहसीँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ऋँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ॠँ क्षरसरहसीँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ऌँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ॡँ क्षरसरहसीँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ एँ क्षरसरहसीँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ऐँ क्षरसरहसीँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ओँ क्षरसरहसीँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ औँ क्षरसरहसीँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ अँ क्षरसरहसीँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ अः क्षरसरहसीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ कँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ खँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ गँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ घँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ङँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ चँ क्षरसरहसीँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ छँ क्षरसरहसीँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसंरहसीँ जँ क्षरसरहसीँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ झँ क्षरसरहसीँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ञँ क्षरसरहसीँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ टँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ठँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ डँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ ढँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ णँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ तँ क्षरसरहसीँ नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ थँ क्षरसरहसीँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ दँ क्षरसरहसीँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ धँ क्षरसरहसीँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ नँ क्षरसरहसीँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ पँ क्षरसरहसीँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ फँ क्षरसरहसीँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ बँ क्षरसरहसीँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ भँ क्षरसरहसीँ नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ मँ क्षरसरहसीँ नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ यँ क्षरसरहसीँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ रँ क्षरसरहसीँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ लँ क्षरसरहसीँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ वँ क्षरसरहसीँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ शँ क्षरसरहसीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ षँ क्षरसरहसीँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ सँ क्षरसरहसीँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ हँ क्षरसरहसीँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ लँ क्षरसरहसीँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षरसरहसीँ क्षँ क्षरसरहसीँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

महापराख्यबीजन्यासम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीपराबीजन्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, सहसहलकलइशरवरवलवऊईबीजं, सहसहलकलइशरवरवलवऊईक्रौँशक्तयः, सहसहलकलइशरवरवलवऊईह्रौँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईक्रौँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईह्रौँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईक्राँह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईक्रीँह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईक्रूँह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईक्रैँह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईक्रौँह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईंक्रःह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईंक्राँह्राँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईंक्रीँह्रीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईंक्रूँह्रूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईंक्रैँह्रैँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईंक्रौँह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईंक्रःह्रः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

सन्ध्यात्रये सकल भूसुर सेव्यमाने,
स्वाहा स्वधासि पितृदेवगणार्तिहन्त्री।
जायाः सुताः परिजनातिथयोऽन्नकामाः,
सिद्धिं प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम्॥

तीनों सन्ध्याओं में समस्त ब्राह्मणों से सेवनीय, स्वाहा स्वधा के द्वारा पितृ तथा देवगणों के दुःखों का हरण करनेवाली, पत्नी, पुत्र, परिजन तथा अतिथियों के अन्न की कामना से क्षुधा निवृत्ति के लिए हे गिरिजा! हमें सिद्धि प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई अँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई आँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई इँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई ईँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई उँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई ऊँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं ऋँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं ॠँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं लृँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं लॄँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं एँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं ऐँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं ओँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं औँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं अँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं अः सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं कँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं खँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं गँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं घँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं ङँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं चँ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई छँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई जँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई झँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई ञँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई टँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई ठँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई डँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई ढँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई णँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई तँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई थँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई दँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जंघा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई धँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई पँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई फँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई बँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई भँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई मँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई यँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई रँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई लँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई शँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई षँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई सँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई हँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई लँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई परंमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई क्षँ सहसहलकलइशरवरवलवऊई ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

महासरस्वतीबीजन्यासम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीमहासरस्वतीबीजन्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वटुकोदेवता, कलडरसहरक्षशरईँबीजं, कलडरसहरक्षशरऊँशक्तयः, कलडरसहरक्षशरऔँकीलकं, अखिलाप्तये श्रीमद्वटुकभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकदेवतायै नमः हृदि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरऊँशक्तिभ्यो नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरऔँकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईआँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईईँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईऊँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईऐँअनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईऔँकनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईआँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईईँशिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईऊँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईऐँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईऔँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईअः अस्त्राय फट्। चारों ओर हाथ घुमाकर ताली बजाये।

ध्यानम्

अम्ब! त्वदीयचरणाम्बुजसंश्रयेण,
ब्रह्मादयोप्यविकलां श्रियमाश्रयन्ते।

तस्मादहं तव नतोऽस्मि पदारविन्दं,
सिद्धिं प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्यम्॥

हे अम्ब! श्री की कामना से ब्रह्मादि देवता आपके चरणारविन्द की सेवा में सदैव सलग्न रहते है इसलिए हम भी आपके चरण कमल में सिर झुकायें है सिद्धि कामना से त्रस्त हमें समस्त सिद्धि प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ अँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ आँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ इँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ ईँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ उँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ ऊँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ ऋँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ ॠँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ लृँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ ॡँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ एँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ ऐँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ ओँ कलडरसहरक्षशरईँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं औँ कलडरसहरक्षशरईं नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं अँ कलडरसहरक्षशरईं नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं अः कलडरसहरक्षशरईं नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं कँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं खँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं गँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं घँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं ङँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वामहाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं चँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं छँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं जँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं झँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं ञँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्रस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं टँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं ठँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानुस्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं डँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ कलडरसहरक्षशरईं ढँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं णँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं तँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं थँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं दँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं धँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं नँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर का अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं पँ कलडरसहरक्षशरईं नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं फँ कलडरसहरक्षशरईं नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं बँ कलडरसहरक्षशरईं नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं भँ कलडरसहरक्षशरईं नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं मँ कलडरसहरक्षशरईं नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं यँ कलडरसहरक्षशरईं त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं रँ कलडरसहरक्षशरईं असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं लँ कलडरसहरक्षशरईं मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कलडरसहरक्षशरईं वँ कलडरसहरक्षशरईं मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ शँ कलडरसहरक्षशरईँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि-दक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ षँ कलडरसहरक्षशरईँ मज्जात्मने नमः हृदयादि-वामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ सँ कलडरसहरक्षशरईँ शुक्रात्मने नमः हृदयादि-दक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ हँ कलडरसहरक्षशरईँ आत्मने नमः हृदयादि-वामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ लँ कलडरसहरक्षशरईँ परमात्मने नमः कट्यादि पादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ कलडरसहरक्षशरईँ क्षँ कलडरसहरक्षशरईँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादि-मस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

कलामातृकान्यासम्

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीकलामातृकान्यासमन्त्रस्य प्रजापतिऋषिः, गायत्रीछन्दः, शारदादेवता, हल्भ्योबीजानि, स्वराःशक्तयः, विन्दुःकीलकं श्रीवटुकभैरवप्रीत्यर्थे सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रौँ वँ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ शारदादेवतायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ विन्दुः कीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ शारदादेवतायै नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्रौँ वँ अँ ॐ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ इँ ॐ ईँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ उँ ॐ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमा अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ एँ ॐ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिका अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ओँ ॐ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिका अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ अं ॐ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादियासः

ॐ ह्रौँ वँ अँ ॐ आँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ इँ ॐ ईँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ उँ ॐ ऊँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ एँ ॐ ऐँ कवचाय हुम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ओँ ॐ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ अं ॐ अः अस्त्राय फट्। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

शंखचक्राब्जपरशुकपालान्यक्षमालिकाम् ।
पुस्तकामृतकुम्भौ च त्रिशूलं दधतीं करैः॥१॥

शङ्ख, चक्र, अब्ज, परशु, कपाल अक्षमाला, पुस्तक, अमृतकलश तथा त्रिशूल हाथों में धारण की हुई॥१॥

सितपीतासितश्वेतरक्तवर्णैस्त्रिलोचनैः ।
पञ्चास्यैः संयुतां चन्द्रसकान्तिं शारदां भजे॥२॥

सफेद तथा पीत वर्ण से युक्त, तीन लोचन से युक्त, पाँच मुखोंवाले, चन्द्रमा के कान्ति से कान्तिमान ब्रह्मा तथा शारदा देवी का ध्यान करता हूँ॥२॥

ध्यानोपरान्त मानसोपचार विधि से पूजन करके न्यास करे।

ॐ ह्रौँ वँ अँ निवृत्तिकलायै नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ आँ प्रतिष्ठाकलायै नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ इँ विद्याकलायै नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ईँ शान्तिकलायै नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ उँ ईन्धिकाकलायै नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ऊँ दीपिकाकलायै नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ऋँ रेचिकाकलायै नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ॠँ मोचिकाकलायै नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ऌँ पराभिधाकलायै नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ॡँ सूक्ष्माकलायै नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ एँ सूक्ष्मामृताकलायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ ज्ञानामृताकलायै नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ आप्यायिनीकलायै नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ औँ व्यापिनीकलायै नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ व्योमरूपीकलायै नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अः अनन्ताकलायै नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ सृष्टिकलायै नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ खँ ऋद्धिकलायै नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ गँ स्मृतिकलायै नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घँ मेधाकलायै नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ङँ कान्तिकलायै नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ चँ लक्ष्मीकलायै नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ छँ द्यूतिकलायै नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जँ स्थिराकलायै नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झँ स्थितिकलायै नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ञँ सिद्धिकलायै नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ टँ जराकलायै नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ठँ पालिनीकलायै नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ डँ क्षान्तिकलायै नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ढँ ईश्वरीकलायै नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ णँ रतिकलायै नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ तँ कामिनिकलायै नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ थँ वरदाकलायै नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ दँ आह्लादिनीकलायै नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ धँ प्रीतिकलायै नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नँ दीर्धकलायै नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ तीक्ष्णाकलायै नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ फँ रौद्रीकलायै नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ बँ भयाकलायै नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भँ निद्राकलायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मँ तन्द्रिकाकलायै नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ त्वगात्मने क्षुधाकलायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ असृगात्मने क्रोधीनीकलायै नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ मांसात्मने क्रियाकलायै नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ मेदात्मने उत्कारीकलायै नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शँ अस्थ्यात्मने समृत्युकारीकलायै नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ षँ मज्जात्मने पीताकलायै नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ शुक्रात्मने श्वेताकलायै नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पादाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ हँ आत्मने अरुणाकलायै नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वामपैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ परमात्मने सिताकलायै नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने अनन्ताकलायै नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

पीठन्यासः

सितासितारुणश्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात् ।
पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्पीठसञ्चयः॥

श्वेतकृष्णअरुणश्यामहरितपीतादि वर्णों के क्रमश: पचास पीठों का ध्यान करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ अँ कामरूपाय नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ वाराणस्यै नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ इँ नेपालाय नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि। दक्षिण नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ईँ पौण्ड्रवर्धनाय नमः वामनेत्रे न्यस्यामि। वाम नेत्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ उँ पुरस्थिकाश्मीराय नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि। दक्षिण कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऊँ कान्यकुब्जाय नमः वामकर्णे न्यस्यामि। वाम कर्ण स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऋँ पूर्णशैलाय नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि। दक्षिण नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॠँ अर्बुदाचलाय नमः वामनासापुटे न्यस्यामि। वाम नासापुट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लृँ आम्रातकेश्वराय नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि। दक्षिण कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लॄँ एकाम्राय नमः वामकपोले न्यस्यामि। वाम कपोल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ एँ त्रिस्रोतसे नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि। ऊर्ध्वोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ कामकोटये नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि। अधरोष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ कैलाशाय नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। ऊर्ध्वदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ औँ भृगुनगराय नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि। अधोदन्तपंक्ति स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ केदाराय नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि। जिह्वाग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अः चन्द्रपुष्करिण्यै नमः कण्ठे न्यस्यामि। कण्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीपुराय नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि। दक्षिण बाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ खँ ओङ्काराय नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि। दक्षिण कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ गँ जालन्धराय नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि। दक्षिण मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ घँ मालवाय नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ङँ कुलान्तकाय नमः दक्ष कराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ चँ देवीकोटाय नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि। वामबाहुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ छँ गोकर्णाय नमः वामकूर्परे न्यस्यामि। वाम कूर्प स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ जँ मारुतेश्वराय नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि। वाम मणिबन्ध स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ झँ अट्टहासाय नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ञँ विरजायै नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम हाथ के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ टँ राजगेहाय नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ठँ महापद्माय नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि। दक्षिण जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ डँ कोल्हापुराय नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि। दक्षिण जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ढँ एलापुराय नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ णँ कालेश्वराय नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। दक्षिण पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ तँ जयन्तिकायै नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ थँ उज्जयिन्यै नमः वामजानुनि न्यस्यामि। वाम जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ दँ चित्रायै नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि। वाम जङ्घा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ धँ क्षीरिकायै नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुलिमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ नँ हस्तिनापुराय नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि। वाम पैर के अङ्गुल्यग्र स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ पँ उड्डीशाय नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ फँ प्रयागाय नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ बँ षष्ठीशाय नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पीठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ भँ मायापुर्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ मँ जलेशाय नमः उदरे न्यस्यामि। उदर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ त्वगात्मने मलयाय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ असृगात्मने श्रीशैलाय नमः दक्षांसे न्यस्यामि। दक्षांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ मांसात्मने मेरवे नमः ककुदि न्यस्यामि। ककुद स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ मेदात्मने गिरिवराय नमः वामांसे न्यस्यामि। वामांस स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ शँ अस्थ्यात्मने महेन्द्राय नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ षँ मज्जात्मने वामनाय नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ सँ शुक्रात्मने हिरण्यपुराय नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से दक्षिण पादाङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ हँ आत्मने महालक्ष्मीपुराय नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। हृदय से वाम पादाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ लँ परमात्मने ओड्याणाय नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि। कटि से पैर के अङ्गुलि तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने छायाच्छत्राय नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि। कटि से मस्तक तक स्पर्श करे।

आसनन्यासः

सद्भक्तकल्पलतिके भुवनैकवन्द्ये,
भूतेशहृत्कमलमग्नकुचाग्रभृङ्गे ।
कारुण्यपूर्णनयने किमुपेक्षसे मां,
सिद्धिं प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम्॥

सद्भक्तों के लिए कल्पलता रूप से समस्त भुवन में वन्द्य, भूतेश के हृदय में सदैव रहनेवाली, करुणा पूर्ण नयनोंवाली हमारी उपेक्षा क्यों कर रही है सिद्धि की कामना रूपी भूख से पीडित हमें सिद्धि की भिक्षा प्रदान करें।

ॐ ह्रीं वँ शवासनाय नमः पादतलयोः न्यस्यामि। आसन(गुह्य) एवं दोनों पाद तल का स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ देव्यात्मकासनाय नमः पादयोः न्यस्यामि। पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ चक्रात्मकासनाय नमः जान्वोः न्यस्यामि। जानु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ मन्त्रात्मकासनाय नमः ऊरुमूले न्यस्यामि। उरुमूल स्पर्श करे।

ॐ ह्रीं वँ सर्वसिद्धासनाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि। मूलाधार स्थान गुह्य प्रदेश स्पर्श करे।

नित्यकरणीयकर्मं परिपूर्णम्

❀

अन्तःपूजनम्

अन्तःपूजन में आचमन करके प्राणायाम करे तथा मूलाधार की कर्णिका में दीप कलिकाकार स्वयम्भू लिङ्गरूपी जीव को साढ़े तीन बार लपेटी हुई कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान कर मानसोपचार पूजन करे, क्रमशः सभी चक्रों में ले जाकर सहस्रार में महाकाल के साथ स्थापन-पूजन कर अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर समर्पित करे, पुनः मूलाधार में लाकर अवस्थित करे।

कुण्डलिनी ध्यानम्

ध्यायेत्कुण्डलिनीं सूक्ष्मां मूलाधारनिवासिनी,
प्रसुप्तभुजगाकारां विद्युत्पटलसन्निभाम्।
तामिष्टदेवतां रूपां सार्द्धत्रिवलयान्वितां,
कोटिसौदामिनीभासां स्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनीम्॥

सोई हुई, विद्युत के समान प्रभावाली, भुजग के समान आकृतिवाली, साढ़े तीन वलयवाली, सौदामिनी कोटि की आभावाली, स्वयं भू लिङ्ग को आविष्ट की हुई, इष्टदेवता रूपिणी, मूलाधार निवासिनी, अति सूक्ष्म कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

कलयतीति कलिका, कलिका इव कालिका महाकाल शिवे कलयतीति विचरतीति, शक्तिरूपे वासयतीति कालिका, महाकालस्य कालिका महाकालकालिका। तडितविद्युताकारा सार्द्धत्रिवलयान्विता परमापराशक्तिः कुण्डलाकृतिरूपा मूलाशक्तिः कुण्डलिनीशक्तिः इति महाकाल कालिका। महाकालकलना शक्तिः कालिका कुण्डलिनि शक्तिः।

सर्वप्रथम गुदा भाग और लिङ्ग मूल के बीच में सीवनी स्थान के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी के पुच्छ भाग में ऊपर कन्द स्थान में चतुर्दल कमलात्मक मूलाधार के चारों पत्रों पर वामावर्त क्रम से **वँ शँ षँ सँ** मातृका वर्णों तथा पद्म के मध्य कर्णिका में **ळँ** बीजात्मक पृथ्वीतत्त्व, उसके ऊपर **दीपकलिकाकृतिस्वरूप** भूलिङ्गात्मक अङ्गुष्ठप्रवरप्रमाणात्मक जीव को सार्द्धत्रिवलयान्वित अतिसूक्ष्म विद्युताकृतिरूप कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान कर **सोऽहं हंसः** मन्त्र से प्रसुप्तकुण्डलिनीशक्ति को जगाकर मानसोपचार पूजन कर उसके मुख में कमल पत्रों पर स्थित समस्तमातृकावर्णों के सहित पृथ्वीतत्त्वात्मक **ळँ** बीज तथा भूलिङ्ग को धारण कराकर मूलाधार के चार अङ्गुल ऊपर लिङ्गमूल स्थान के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी में ही षड्दलात्मक कमल स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर वामावर्त क्रम से ही क्रमशः **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** मातृका वर्णों के साथ पद्म के मध्य कर्णिका में जलतत्त्वात्मक **वँ** बीज

का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर उसके चार अङ्गुल ऊपर नाभि के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी में ही दशदलात्मक मणिपुर पद्म के पत्रों पर वामावर्त क्रम से ही **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** मातृका वर्णों के सहित कमल के मध्य कर्णिका में अग्नितत्त्वात्मक **रँ** बीज का ध्यान करके समस्त मातृकाओं के सहित अग्निबीज को कुण्ढलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर मणिपुर कमल से द्वादशाङ्गुल ऊपर द्वादशदलात्मक अनाहत पद्म के सभी पत्रों पर क्रमशः **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** मातृका वर्णों तथा कमल के मध्य वायुतत्त्वात्मक **यँ** बीज का ध्यान करके मातृका वर्णों के सहित वायुबीज को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर अनाहत चक्र के ऊपर षोडशदलात्मक विशुद्ध चक्र के पत्रों पर वामावर्त क्रम से **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** मातृका वर्णों के सहित चक्र के मध्य कर्णिका में आकाश तत्त्वात्मक **हँ** बीज का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर द्वादशाङ्गुल ऊपर भ्रूमध्य में द्विदलात्मक आज्ञा चक्र के पत्रों पर **हँ** तथा **क्षँ** मातृका वर्णों के सहित मध्य कर्णिका में मनोबुद्धितत्त्वात्मक बीज का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर आज्ञा चक्र से दो अङ्गुल ऊपर से मूर्धा में सहस्रदलपद्म के समस्त पत्रों पर बीसबार **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ** तक के मातृका वर्णों का वामावर्त क्रम से, मध्य कर्णिका में केशरों को कल्पवृक्ष के रूप में तथा उन कल्पवृक्षों के मध्य में चिदहङ्कारात्मक परमात्मा सर्वतत्त्वबीजरूपशिव का ध्यान कर समस्त मातृकादि सहित बीज तथा जीव कुण्डलिनी शक्ति का शिव में विलय करा दे और दोनों के एकभावरूप शिवशक्ति का ध्यान कर मानसषोडशोपचार पूजन करके उनके पादतल से टपकते हुए अमृतद्रव से समस्त शरीरादि का सिंचन करे, पुनः शिवशक्त्यैक्य रूप से शक्ति को अलग करके सहस्रार से आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान से क्रमशः मूलाधार पद्म में लाकर उसके मध्य कर्णिका में स्थापित करके शक्ति के शरीर से ही शुद्धकलिकाकार ज्योति को प्रकट कराकर स्थापित कर उस ज्योति को इष्टदेवता के रूप में ध्यान करे, विधिवत् ध्यान करने के बाद इष्टदेवता का सांकल्पिक रूप से षोडशोपचार विधिवत् मानसपूजन करके अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप करके वटुकभैरव को जप समर्पित करे।

शिवशिवा-ध्यानम्

मेघाङ्गीं विगताम्बरां शवशिवारावां त्रिनेत्रां परां,
कर्णालम्बितबालयुग्मभयदां मुण्डस्रजां मालिनीम्।
वामाधोर्ध्वकराम्बुजे नरशिरः खड्गञ्च सव्येतरे,
दानाभितिविमुक्तकेशनिचयां वन्दे सदाकालिका॥

मेघ जैसी आभावाली, निरावरण, त्रिनेत्र धारण करनेवाली, शिवशिवा जो कानों में लटकते हुए एक जोड़ी बालो (वालशव) को धारण किये हुए, अभय प्रदान करनेवाली, मुण्ड की मालाओं को धारण करनेवाली, उनकें बायें तरफ के ऊपर के हाथ में खड्ग तथा नीचे के हाथ में नर का शिर (कपाल) शोभित है, दाहिने तरफ के ऊपर के हाथ से वर तथा नीचे के हाथ से अभय प्रदान करती हुई, खुली हुई केशोंवाली, शिव के सहित कुण्डलिनी रूपिणी कालिका की सदा वन्दना करता हूँ।

ॐ स्वागतं देवदेवेशि सन्निधौ भव आत्मनि।
गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाषिता॥

हे महादेव की शक्तिरूपिणी देवेशि! आपका स्वागत है, हमारे आत्मा में सन्निधित्व प्रदान करे तथा मानसीपूजा को ग्रहण करके यथार्थ को परिभाषित करे।

कुण्डलिनिस्तुतिः

मूलेन्निद्रभुजङ्गराजसदृशीं यान्तीं सुषुम्नान्तरं,
भित्वाधारसमूहमाशु विलसत्सौदामिनीसन्निभम्।
व्योमाम्मोजगतेन्दुमण्डलगलद्दिव्यामृतौघैः पतिं,
सम्भाव्य स्वगृहागतां पुनरिमां सञ्चिन्तयेत् कुण्डलीम्॥१॥

मूलाधार में निद्रायमान भुजङ्गराज के समान, सुषुम्ना के अन्दर गतिमान, आधारादि चक्र समूहों का भेदन कर, पूर्ण सन्तुष्ट सौदामिनी के समान विलासमान, आकाश तत्त्व में अतिशय प्रकाशमान इन्दुमण्डल से विगलित दिव्य अमृत स्वरूप पति(शिव) को प्राप्त करने के लिए अपने गृह में पुनः आई हुई कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ॥१॥

हंसं नित्यमनन्तमद्वयगुणं स्वाधारतो निर्गता,
शक्तिः कुण्डलिनी समस्तजननी हस्ते गृहीत्वा च तम्।
याता शम्भुनिकेतनं परसुखं तेनानुभूयः स्वयं,
यान्ती स्वाश्रममर्ककोटिरूचिरा ध्येया जगन्मोहिनी॥२॥

नित्य अनन्त अद्वय निर्गुण अपने आधार से निर्गत समस्त संसार की जननी कुण्डलिनी शक्ति हाथ में उसको धारण की हुई, शम्भु के घर में परमण्डलस्थ सुख की स्वयं अनुभूति करते हुए अपने आश्रम में सूर्य के समान रूचिकर जगन्मोहिनी कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ॥२॥

अव्यक्तं परबिम्बमञ्चितरुचिं नीत्वा शिवस्यालयं,
शक्तिः कुण्डलिनी गुणत्रयवपुर्विद्युल्लतासन्निभा।
आनन्दामृतकन्दगं पुरमिदं चन्द्रार्ककोटिप्रभं,
संवीक्ष्य स्वगृहं गता भगवती ध्येयाऽनवद्या गुणैः॥३॥

अव्यक्त, परमण्डल स्थित विम्ब के मञ्च पर रुचिपूर्वक शिव के घर में कुण्डलिनी शक्ति को लाकर, विद्युत् लता के समान, सत्त्वरजतमात्मक तीन गुणों से युक्त, इस परस्थान में आनन्दामृत का पान करती हुई, चन्द्र और सूर्य के प्रभा के समान प्रभावान, निरीक्षण पूर्वक अपने घर में आयी हुई अनन्त गुणोंवाली भगवती कुण्डलिनी शक्ति का शिरः स्थान स्थित सहस्त्रार चक्र में ध्यान करता हूँ।।।३।।

मध्ये वर्त्म समीरणद्वयमिथस्सङ्घट्टसङ्क्षोभजं,
शब्दस्तोममतीत्य तेजसि तड़ित्कोटिप्रभाभास्वराम्।
उद्यन्तीं समुपास्महे नवजवासिन्दूरसान्द्रारुणां,
सान्द्रानन्दसुधामयीं परशिवं प्राप्तां परां देवताम्।।४।।

मध्य वर्त्म में अपने युगल के साथ युद्ध से संक्षोभित करती हुई, अतुलनीय शब्द घोष करती हुई, तेजवान तडित् विद्युत् प्रभा के समान भासमान, नूतन जवापुष्प जैसे सिन्दूर वर्णवाली आनन्द सुधा के समान पराशिव को प्राप्त की हुई परदेवता को ध्यान पूर्वक नमस्कार करता हूँ।।४।।

गमनागमनेषु जाङ्घिकी सा,
तनुयांद्योगफलानि कुण्डली।
मुदिता कुलकामधेनुरेषा,
भजतां वाच्छितकल्पवल्लरीम्।।५।।

संसार के गमनागमन से मुक्ति प्रदान करनेवाली, शरीर योग के फल को प्रदान करनेवाली, प्रसन्न मुद्रा से युक्त, वाच्छित कामनाओं को पूर्ण करनेवाली कामधेनु कुलशक्ति का ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ।।५।।

आधारस्थितशक्तिबिन्दुनिलयां नीवारशूकोपमां,
नित्यानन्दमयीं गलत्परसुधावर्षैः प्रबोधप्रदैः।
सिक्त्वा षट्सरसीरुहाणि विधिवत्कोदण्डमध्योदितां,
ध्यायेद्भास्वरबन्धुजीवरूचिरां संविन्मयीं देवताम्।।६।।

मूलाधार स्थित विन्दु स्वरूपिणी शक्ति नीवार के तने के समान दण्डायमान, नित्य आनन्दमयी परमण्डल से द्रवीभूत अमृत की वर्षा करनेवाली, ज्ञान को प्रदान करनेवाली, षट् चक्रों का सिञ्चन करनेवाली, विधिपूर्वक मध्य कोदण्ड(रीड़ की हड्डी) में उदित, सूर्य के सदृश जीव को रूचि लगनेवाली, संविन्मयी देवता का ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ।।६।।

हृतपङ्केरुहभानुबिम्बनिलयां विद्युल्लतामन्थरां,
बालार्कारुणतेजसा भगवतीं निर्भर्त्सयन्तीं तमः।
नादाख्यां परमर्धचन्द्रकुटिलां संविन्मयीं शास्वतीं,
यान्तीमक्षररूपिणीं विमलधीर्ध्यायेत् विभुं तेजसाम्।।७।।

हृदय कमल में की नाल में सूर्य के बिम्ब के समान, विद्युत् लता के समान, वालसूर्य के समान अरुण कालिक तेज से युक्त, अन्धकार को समाप्त करनेवाली भगवती, नाद शब्द से सम्बोध्य, अर्ध चन्द्र के समान टेड़ी मेड़ी, परम शास्वत संविन्मयी, अक्षर रूपिणी, विमल बुद्धिमयी, विभु, तेजोवती का ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ।।७।।

भाले पूर्णनिशाकरप्रतिभटां नीहारहारत्विषा,
सिञ्चन्तीममृतेन देवममितेनानन्दयन्तीं तनुम्।
वर्णानां जननीं तदीयवपुषा संव्याप्य विश्वं स्थितां,
ध्यायेत्सम्यगनाकुलेन मनसा संविन्मयीमम्बिकाम्।।८।।

भाल पर पूर्ण चन्द्रमा के सदृश देवता के ध्यान में पटु, चन्द्र से द्रवीभूत अमृत से शरीर को आप्लावित कर आनन्दतिरेक से युक्त कर, वर्णों को उत्पन्न करनेवाली की शरीर से सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करती हुई, पूर्ण रूप से अनाकुल संविन्मयी अम्बिका का अपने मानस में ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ।।८।।

मूले भाले हृदि च विलसद्वर्णरूपा सावित्री,
पीनोत्तुङ्गस्तनभरनमन्मध्यदेशा महेशी।
चक्रे चक्रे गलितसुधया सिक्तगात्री प्रकामं,
दद्यादद्य श्रियमविकलां वाङ्मयीदेवता नः।।९।।

मूलाधार, ललाट तथा हृदय में विलास करती हुई वर्णरूपा सावित्री, उठे हुए पीन पयोधर से मध्य स्थान भरित स्तनोंवाली महेशी, समस्त चक्रों से गलित सुधा से सिक्त प्रकाम शरीरवाली, श्रीप्रदान करनेवाली, अविकल वाङ्मयी देवता का हम ध्यान पूर्वक भजन करते हैं, हमें श्री प्रदान करें।।९।।

आधारबन्धप्रमुखक्रियाभिः
समुत्थिता कुण्डलिनी सुधाभिः।
त्रिधामबीजं शिवमर्चयन्ती,
शिवाङ्गना वः शिवमातनोतु।।१०।।

मूलाधार बन्ध की प्रमुख क्रियाओं के द्वारा उठा कर कुण्डलिनी को तीनों बीज धाम (अग्नि मण्डल, सूर्य मण्डल तथा चन्द्रमण्डल) में शिव के अर्चन करने से शिव के अङ्ग में रहनेवाली हमारा कल्याण करें।।१०।।

निजभवननिवासादुच्चलन्ती विलासैः,
पथि पथि कमलानां चारु हासं विधाय।
तरुणतपनकान्तिः कुण्डली देवता सा,
शिवसदनसुधाभिर्दीपयेदात्मतेजः ।।११।।

अपने निवास भवन से विलास पूर्वक उठ कर ऊपर उठती हुई, मार्ग में समस्त कमलों

पर मन्द मन्द हास करती हुई, मध्याह्न कालिक सूर्य के ताप के सदृश कुण्डलिनी देवता का शिव सदन के अमृत से आप्लावित कर, अपनी आत्मा को तेज युक्त कर ध्यान पूर्वक भजन करते हैं॥११॥

सिन्दूरपुञ्जनिमभिन्दुकलावतंसं- ,
आनन्दपूर्णनयनत्रययशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं ,
शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतु॥१२॥

सिन्दूर पुञ्ज के समान आभावान, चन्द्रमा की कलाओं से युक्त, आनन्द पूर्ण तीन नेत्रों से शोभायमान वक्त्र, उठे हुए बड़े बड़े झुके अनङ्ग तन्त्र अपीन से युक्त, शम्भु की पत्नि, का ध्यान पूर्वक भजन करते हैं हमें श्री प्रदान करें॥१२॥

वर्णैरर्णवषट्दिशारविकलाचक्षुर्विभक्तैः क्रमात्,
सान्तैरादिभिरावृतान् क्षहयुतैष्षट्चक्रमध्यानिमान्।
डाकिन्यादिभिराश्रितान् परिचितान् ब्रह्मादिभिर्दैवतैः,
भिन्दाना परदेवता त्रिजगतां चित्तेषु दत्तां मुदम्॥१३॥

वर्णों तथा वषट् आदि से समस्त दिशाओं में क्रम से अविकल चक्षुओं में विभक्त, आदि अकार से अन्त हकार युक्त क्षकार तक षट् चक्रों के मध्य आवृत, डाकिन्यादि के आश्रित चिर परिचित ब्रह्मादि देवता, तीन भागों में विभक्त सम्पूर्ण जगत् तीन भागों में विभक्त होकर व्याप्त परदेवता का प्रसन्न चित्त से ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ॥१३॥

आधाराद् गुणवृत्तशोभिततनुं निर्गत्वरीं सत्त्वरं,
भिन्दन्तीं कमलानि चिन्मयघनानन्दप्रबोधोद्धुराम्।
सङ्क्षुब्धं ध्रुवमण्डलामृतकरप्रस्यन्दमानामृत,
स्त्रोतः कन्दलिताममन्दतडिदाकारां शिवां भावये॥१४॥

मूलाधार से, तीन गुणों से आवृत शरीर से सत्त्व रूप में निर्गत, षट् चक्रों का भेदन करती हुई, चिन्मयानन्द और ज्ञान का अवबोधन करानेवाली, सहस्त्रार स्थित ध्रुवमण्डल से प्रस्यन्दमान अमृत स्त्रोत को सङ्क्षुब्ध करनेवाली, कलित आमन्द तडिताकार शिवा की ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ॥१४॥

मूलाधारे त्रिकोणे तरुणतरणिभाभास्वरे विभ्रमन्तं,
कामं बालार्ककालानलजरठकुरङ्गाङ्ककोटिप्रभाभम्।
विद्युन्मालासहस्त्रद्युतिरुचिरलसद्बन्धुजीवाभिरामं ,
त्रैगुण्याक्रान्तबिन्दुं जगदुदयलयैकान्तहेतुं विचिन्त्य॥१५॥

मूलाधार के त्रिकोण में तरुण तरणि की आभा से भास्वरित विभ्रायमान, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, वालसूर्य, कालानल के सदृश, जठर स्थित सर्प जैसी

आकृतीवाली, सूर्य सदृश प्रभावाली, सहस्र किरणों से युक्त विद्युन्माला, जीव की चिर बन्धु, अभिराम(अन्तरात्मा), तीन गुणों से आक्रान्त विन्दु स्वरूप, जगत् की उत्पत्ति और लय के कारण का ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ।।१५।।

तस्योर्ध्वे विस्फुरन्तीं स्फुटरुचिरतडित्पुञ्जभाभास्वराङ्गी-
मुद्गच्छन्तीं सुषुम्नामनु सरणिशिखामाललाटेन्दुबिम्बम्।
चिन्मात्रां सूक्ष्मरूपां जगदुदयकरीं भावनामात्रगम्यां,
मूलं या सर्वधाम्नां स्फुरति निरुपमा हूँ कृतोदञ्चितोरः॥१६॥

ऊपर की तरफ उठ कर खिली हुई, तडित् विद्युत के समान आभा से युक्त भासमान, सुषुम्ना में मनु रूप से मूलाधार से ललाट में स्थित सहस्रार तक विद्युल्लता के समान बिम्ब रूप से व्याप्त, चिन्ममात्र सूक्ष्मरूप से जगत् का उदय करनेवाली, भावना मात्र से गम्य, मूलाधार ही जिसका स्थान है, बिना किसी उपाधि के हूँकार रूप से ध्वन्यमाना का ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ।।१६।।

नीता सा शनकैरधोमुखसहस्रारारुणाब्जोदरे,
च्योतत्पूर्णशशाङ्कविम्बमधुनः पीयूषधारास्त्रुतिम्।
रक्तां मन्त्रमयीं निपीय च सुधानिःष्यन्दरूपा विशेद्,
भूयोऽप्यात्मनिकेतनं पुनरपि प्रोत्थाय पीत्वा विशेत्॥१७॥

मूलाधार से लाकर अधोमुख अरुण प्रकाशवाले सहस्रार के भीतर, पूर्ण चन्द्र से स्यन्दित मधु रस का, पीयुष धारा के सदृश श्रुत, रक्त वर्णवाली, मन्त्रमयी, प्रवाहित अमृत स्वरूप से स्थापित, आत्मा के भवन में पुन: पुन: उठकर अमृत पान कर, वास करनेवाली, कुण्डलिनी का ध्यान पूर्वक भजन करता हूँ।।१७।।

योऽभ्यस्यत्यनुदिनमेवमात्मनोऽन्तः ,
बीजांशं दुरितजरापमृत्युरोगान्।
जित्वाऽसौ स्वयमिव मूर्तिमाननङ्गः,
सञ्जीवेच्चिरमतिनीलकेशजालः ॥१८॥

जो साधक अभ्यास पूर्वक प्रतिदिन अपने अन्त:करण में अंश मात्र का भी ध्यान करता है वह दुरित, जरा, अपमृत्यु, रोगादि पर विजय प्राप्त कर स्वयं मूर्तिमान कामदेव होकर चिर काल तक जिवित रहता है।।१८।।

तत्तद् अभिष्ट मुद्राओं को प्रदर्शित कर अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर देवी को समर्पित करे।

अक्षमाला स्तुतिः

श्रीगायत्रीं त्रयीं विद्यां प्रणम्य परमेश्वरीम्।
अक्षमालास्तुतिं दिव्यां करोमि सुखदां सताम्॥१॥

सत्वात्मक, रजात्मक, तमात्मक तीनों रूपवाली परमेश्वरी श्रीगायत्री को प्रणाम करता हूँ, अक्षमाला की दिव्यस्तुति करता हूँ जो सदैव समस्त सुख प्रदान करनेवाली है॥१॥

अथाऽव्यक्ताऽऽदिशक्तिर्या महादेवीन्दिरेश्वरीम्।
उमोर्ध्वकेशी ऋग्वेदा 'ऋ'रूपा ऋद्धिदायिनी॥२॥

व्यक्त, अव्यक्त इन्दिरेश्वरी शक्ति स्वरूपिणी महादेवी, उर्ध्वकेशी ऋग्वेद रूपी, ऋद्धि सिद्धि प्रदान करनेवाली, उमा का समस्त ऋद्धि सिद्धि के लिए ध्यान करता हूँ॥२॥

ऌप्तधार्माऽस्ति 'ऌ'नाम्नी त्वेकाक्षरविहारिणी।
ऐन्द्रीह्योङ्काररूपा या चौपासनफलप्रदा॥३॥

ऌधर्म स्वरूपिणी ऌनामवाली, एकाक्षर में रहनेवाली, ओङ्कार रूपिणी, उपासना का फल प्रदान करनेवाली ऐन्द्री का ध्यान करता हूँ॥३॥

अण्डमध्यस्थिता देवीं 'अः'कारमनुरूपिणी।
षोडशीं लोकपूज्यां तां सर्वदा संस्मराम्यहम्॥४॥

ब्रह्माण्ड मण्डल में स्थित रहनेवाली, मनु(मन्त्र)रूपिणी, अःकार, लोकपूज्या षोडशी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥४॥

ततोव्यञ्जनवर्णस्थां कमलो खगवाहनाम्।
गङ्गां च धर्मदां देवीं 'ङ'क्षरां प्रणमाम्यहम्॥५॥

समस्त व्यञ्जन वर्णो में रहनेवाली, खग(आकाश) जिसका वाहन है, धर्म को प्रदान करनेवाली, गङ्गा स्वरूपिणी ङकार रूपी, धर्म प्रदान करनेवाली कमला देवी को प्रणाम करता हूँ॥५॥

चण्डिकां सततं वन्दे देवीं छन्दोऽनुगां पराम्।
जयन्तीं क्षणनिर्घोषां 'ञ'रूप वृषवाहनाम्॥६॥

छन्द स्वरूपिणी, ञकार रूप, वृषभ जिसका वाहन है, प्रत्येक क्षण में सतत घोष करनेवाली जयन्ती पराचण्डिका देवी का सतत वन्दन करता हूँ॥६॥

टङ्कवर्णान्वितां दिव्यां 'ठ-ठ'शब्दनिनादिनीम्।
डमरूभूषणां देवीं ढक्काहस्तां नमाम्यहम्॥७॥

टङ्क वर्ण रूपिणी, ठ-ठ शब्द का घोष करनेवाली, हाथों में ढक्का तथा डमरु धारण करनेवाली, दिव्य देवी को नमस्कार करता हूँ॥७॥

'ण'वर्णरूपिणीं दिव्यां तप्तकाञ्चनभूषणाम्।
स्थावरां सततं वन्दे दण्डकारण्यवासिनीम्॥८॥

तपे हुए सोने के समान दिव्य आभूषणों से सुसज्जित णवर्ण स्वरूपिणी, दण्डकारण्य में वास करनेवाली, स्थावर रूपी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥८॥

धर्मशीलां नदीरूपां परब्रह्मात्मिकां तथा।
फलदां बहुनेत्राञ्च भवानीं प्रणतोऽस्म्यहम्॥९॥

नदी स्वरूपी, धर्मशीला, तीन नेत्रों तथा बहुनेत्रोंवाली, समस्त फल को प्रदान करनेवाली, परब्रह्मात्मिका भवानी देवी को सतत नमन करता हूँ॥९॥

मालिनीं तां महामायां पञ्चविशतिवर्णिकाम्।
नत्वा पुनः स्मराम्यत्र यक्षवर्णात्मिकाद्भुताम्॥१०॥

पञ्चविशति वर्णोंवाली, महामाया मालिनी देवी, अद्भुत् यकार क्षकार वर्णात्मिका, अक्षरस्वरूपिणी अक्षदेवी का सतत ध्यान पूर्वक नमन करता हूँ॥१०॥

यक्षिणीं योगमायां तां रमां लक्ष्मीं सुखप्रदाम्।
वरदां शारदां दिव्यां षण्मुखीं च सरस्वतीम्॥११॥

यक्षिणी, योगमाया स्वरूपिणी रमा, लक्ष्मी, शारदा, षण्मुखी कार्तिकी, सरस्वती स्वरूपिणी वर प्रदान करनेवाली, अक्षमाला स्वरूपिणी देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥११॥

हरिरुद्रप्रियां देवीं क्षमाशीलां नवात्मिकाम्।
पञ्चाशद्वर्णरूपां तां स्मरामि सर्वदा शुभाम्॥१२॥

विष्णु तथा रुद्र की परम प्रिया क्षमाशीला नव अक्षरोंवाली, पञ्चाशतवर्णों के रूपोंवाली, सर्वदा शुभ करनेवाली, अक्षमाला देवी का सतत ध्यान करता हूँ॥१२॥

यस्यस्मरणमात्रेण प्रसन्नां वर्णमात्रिका।
सम्भूयात् सा सदा लोके सर्वमङ्गलकारिणी॥१३॥

जिसके स्मरण मात्र से वर्णमात्रिका प्रसन्न हो जाती है तथा लोक में सदा सभी प्रकार का मङ्गल प्रदान करनेवाली हो जाती है उन अक्षमाला देवी का सतत स्मरण करता हूँ॥१३॥

नेत्रद्वयखयुग्मेऽब्दे श्रीद्विजेन्द्रविनिर्मिता।
ज्येष्ठमासेऽत्र काश्यां वै प्रोद्गता साऽक्षमालिका॥१४॥

दो नेत्रोंवाली, युग्म खकार तथा अब्द स्वरूपिणी, शिव के द्वारा निर्मित अक्षमाला का ज्येष्ठ मास में काशी में जो इस अक्षमाला स्तोत्र का पाठ करता है॥१४॥

इति रत्नमयीं देवीं गायत्रीतुष्टिकारिणीम्।
स्तुतिं पठन्नरो नित्यं ब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात्॥१५॥

और गायत्री को तुष्टि प्रदान करनेवाली, रत्नमयी अक्षमाला देवी के स्तोत्र का जो भक्त पाठ करता है वह ब्रह्मसायुज्य(ब्रह्मत्व) को प्राप्त करता है॥१५॥

अक्षमालाजपविधिः

जप के लिए अक्षमाला का ही प्रयोग किया जाता है, इसी माला का अन्त:पूजनादि,

ध्यानादि क्रम में प्रयोग किया जाता है, इस माला का ज्ञान किसी भी परमात्म साधक के लिए अति अनिवार्य है, बिना अक्षमाला ज्ञान के मानसविधि में जप नहीं हो सकता है, बाह्यजपादि उन उपासकों के लिए है, जो साधक तन्त्रविधि से दीक्षा नहीं लेते हैं, उनकों अक्षमालादि का परिज्ञान नहीं होता है, उन सम्प्रदायों में अक्षमाला का प्रतीक रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करते है, जिसका समयी कृत्यों में प्रयोग ही नहीं किया जा सकता है, अत: यहाँ केवल अक्षमाला का ही प्रयोग होगा।

अकारादारभ्य क्षकारपर्यन्तमक्षमालाम्। अर्थात् अकार से प्रारम्भ करके क्षकार तक मातृकाओं से मन्त्र युक्त कर मन्त्र जपने को ही अक्षमाला से जप कहते हैं। सर्वप्रथम विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित अकार से अ:कार तक के **(अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ:)** समस्त वर्णों का ध्यान करते हुए पुन: अनाहत में ककार से प्रारम्भ करके क्रमश: ठकार **(कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ)** तक फिर मणिपुर में डकार से फकार **(डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ)** तक स्वाधिष्ठान में बकार से लकार **(बँ भँ मँ यँ रँ लँ)** तक फिर मूलाधार में वकार से सकार **(वँ शँ षँ सँ)** तक जपने के पश्चात् मूलाधार के मध्य कर्णिका में **ळं** बीज, स्वाधिष्ठान में **वं** बीज, मणिपुर में **रं** बीज, अनाहत में **यं** बीज, विशुद्ध में **हं** बीज, जप करते हुए पुन: विपरीत क्रम से जप करते हुए आकाशतत्त्वात्मक **हँ** बीज वायुतत्त्वात्मक **यँ** बीज, अग्नितत्त्वात्मक **रँ** बीज, जलतत्त्वात्मक **वँ** बीज तथा भूतत्त्वात्मक **ळँ** बीज से युक्त कर जप के पश्चात् मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, तथा विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित वर्णों के साथ जप करते हुए, अकार तक आये तथा आज्ञा चक्रस्थित उसी दल के मध्यकर्णिका में स्थित हकारात्मक शिवयुक्त क्षकारात्मक इष्ट कुण्डलिनी देवता को जप समर्पण करे यथा आगे निर्देश किया गया है—

विशुद्ध चक्र के पत्रों पर अः प्रत्याहार के वर्ण

विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित अकार से अ:कार तक के **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** समस्त वर्णों में मूलमन्त्र का योजनपूर्वक ध्यान करते हुए जप करे।

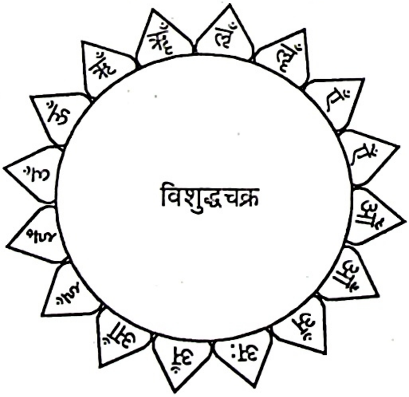

ॐ अँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ आँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ इँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ईँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ उँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ऊँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ऋँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ॠँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ऌँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ॡँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ एँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ऐँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ओँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ औँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ अँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ अः ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

अनाहत चक्र के पत्रों पर कठ प्रत्याहार के वर्ण

अनाहतचक्र में ककार से प्रारम्भ करके क्रमश: ठकार **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** तक के वर्णों के साथ मूलमन्त्र का संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी के स्वरूप ध्यान पूर्वक जप करे।

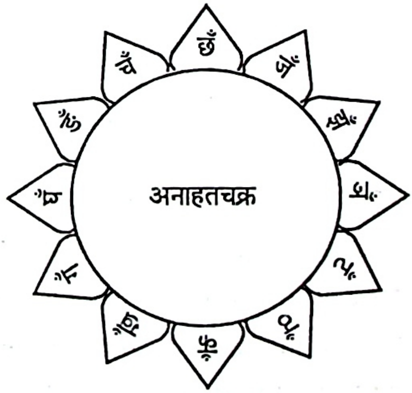

ॐ कँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ खँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ गँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ घँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ङँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ चँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ छँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ जँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ झँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ञँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ टँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ठँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

मणिपूर चक्र के पत्रों पर डफ प्रत्याहार के वर्ण

मणिपुर में डकार से फकार **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** तक के वर्णों के साथ मूलमन्त्र को संयुक्त करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यान पूर्वक जप करे।

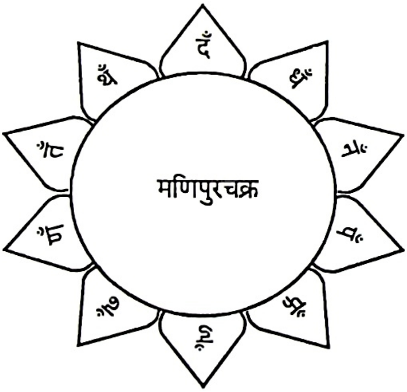

ॐ डँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ढँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ णँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ तँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ थँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

ॐ दँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ धँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ नँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ पँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ फँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर बल प्रत्याहार के वर्ण

स्वाधिष्ठान में बकार से लकार **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** तक के वर्णों के साथ मूलमन्त्र का संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यानपूर्वक जप करे।

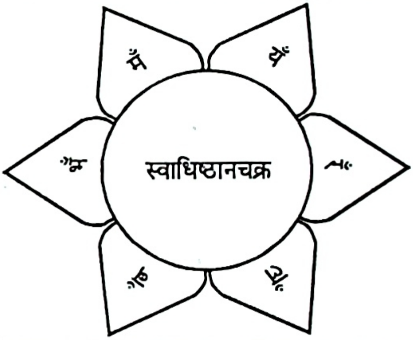

ॐ बँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ भँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ मँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ यँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ रँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ लँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

मूलाधार चक्र के पत्रों पर वस प्रत्याहार के वर्ण

मूलाधार में वकार से लकार **वँ शँ षँ सँ** तक के वर्णों के साथ मूलमन्त्र का संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यानपूर्वक जप करे।

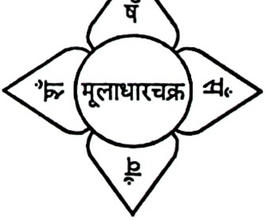

ॐ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ शँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ सँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

मूलाधार की कर्णिका में लँ बीज

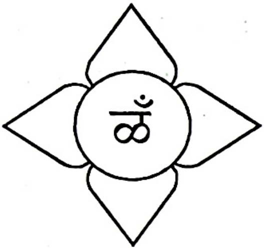

ॐ लँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

स्वाधिष्ठान की कर्णिका में वँ बीज

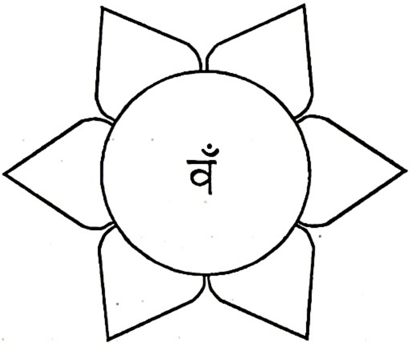

ॐ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

मणिपूर की कर्णिका में रँ बीज

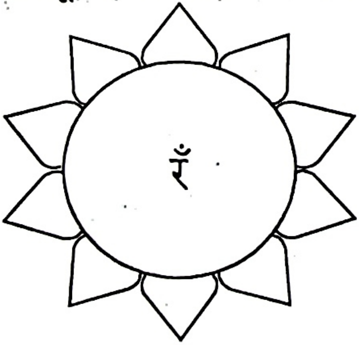

ॐ रँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

अनाहत की कर्णिका में यँ बीज

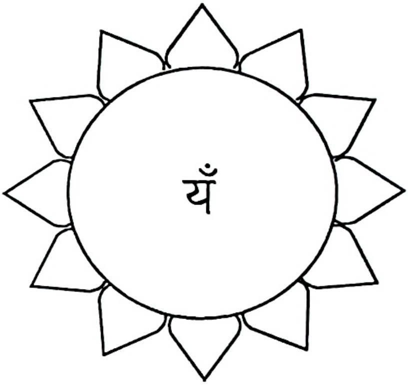

ॐ यँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

विशुद्ध की कर्णिका में हँ बीज

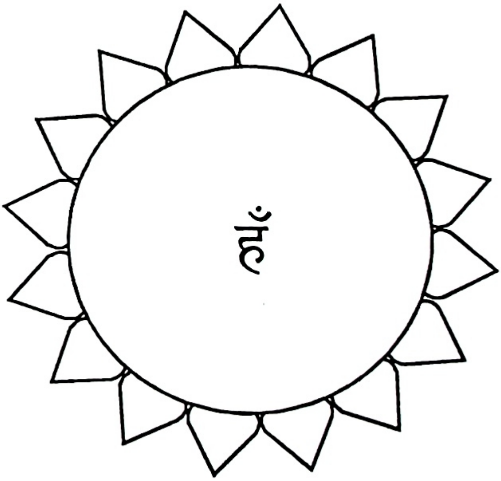

ॐ हँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

आज्ञाचक्र के पत्र पर हकार वर्ण

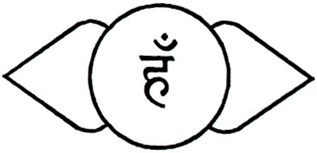

ॐ हँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपद़ुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

आज्ञाचक्र में हकार के साथ जप करके क्षकार सुमेरु की पिक्रमा करके पुन: विपरीत क्रम से जप करे।

पुनः आज्ञाचक्र के पत्र पर हकार वर्ण

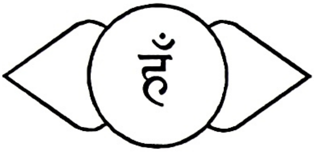

ॐ हँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

विशुद्ध की कर्णिका में हँ बीज

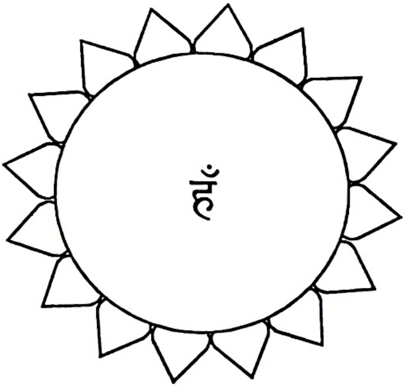

ॐ हँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

अनाहत की कर्णिका में यँ बीज

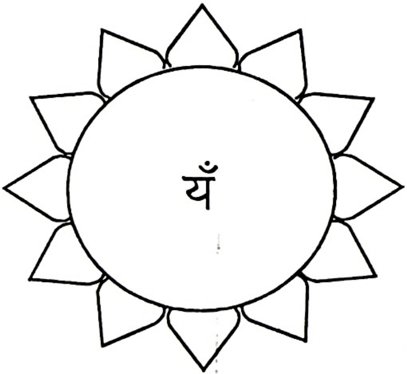

ॐ यँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

मणिपूर की कर्णिका में रँ बीज

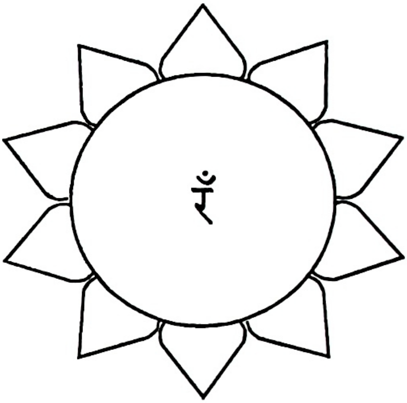

ॐ रँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

स्वाधिष्ठान की कर्णिका में वँ बीज

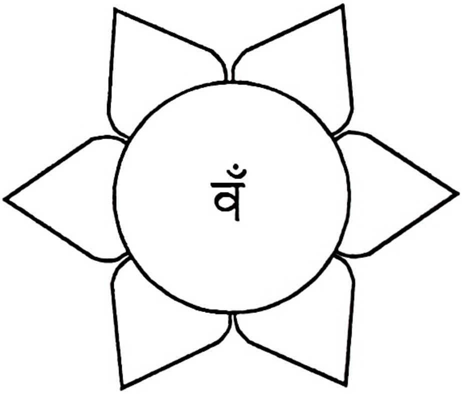

ॐ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

मूलाधार की कर्णिका में लँ बीज

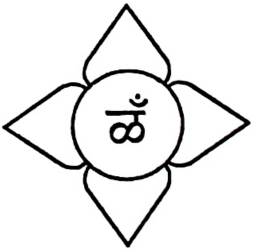

ॐ लँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

पुनः मूलाधार चक्र के पत्रों पर वस प्रत्याहार के वर्ण

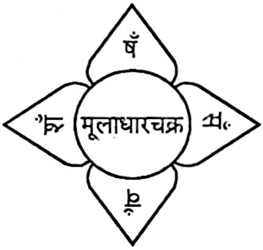

ॐ सँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ शँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

पुनः स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर बल प्रत्याहार के वर्ण

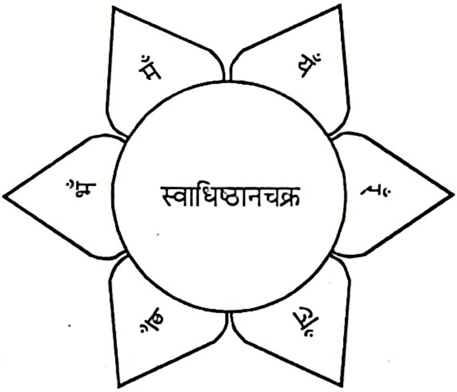

ॐ लँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ रँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ यँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ मँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ भँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ बँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

पुनः मणिपूर चक्र के पत्रों पर डफ प्रत्याहार के वर्ण

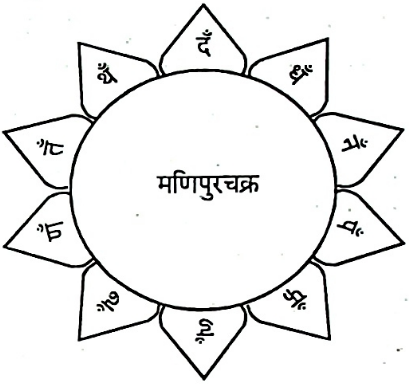

ॐ फँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ पँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ नँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ धँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ दँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ थँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ तँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ णँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ढँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ डँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

पुनः अनाहतं चक्र के पत्रों पर कठप्रत्याहार के वर्ण

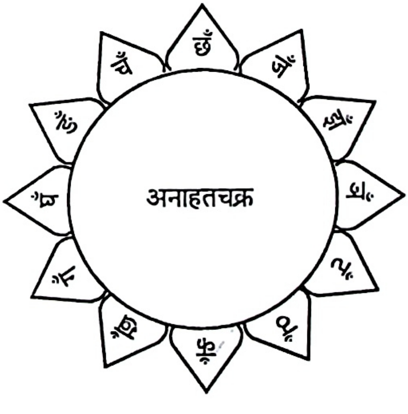

ॐ ऌँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ॠँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ऋँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ऊँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ उँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ ईँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ इँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ आँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।
ॐ अँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

सम्पूर्ण जप आज्ञा चक्रस्थित हकारात्मक शिव को समर्पण करे तथा पिण्ड में जप के पश्चात् इसी प्रकार सहस्रार स्थित पत्रों पर जप कर महादेव को जप समर्पण करे।

ॐ स्वागतं देवदेवेश सन्निधौ भव भैरव।
गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाषिताम्॥

हे ईश्वर! मानसी पूजा ग्रहण कर हमें सान्निध्यत्त्व प्रदान कर यथार्थ का दर्शन करायें।

अन्तःपूजनं परिपूर्णम्

❀

वटुकभैरवान्तर्यागविशेषः

अथ वटुक अन्तर्यागविशेषः—गुरुपात्रामृतेन गुरुपादुकां पूजयेत्। गुरु पात्र के जल से गुरुपादुका का पूजन करने के बाद। **यथा पूर्वं शिरसि त्रिकोणं कृत्वा ततो दक्षहस्ते तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां गन्धपुष्पं गृहीत्वा,** (सर्व प्रथम शिरपर त्रिकोण की कल्पना करके दक्षिण हाथ के तर्जनी और अङ्गुष्ठ से गन्धपुष्प ग्रहण कर) **वामहस्ते अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां शुद्धिखण्डं गृहीत्वा ऊर्ध्वरेखायाम्,** (वायें हाथ के अनामिका और अङ्गुष्ठ से शुद्धि खण्ड ग्रहण करके त्रिकोण की ऊर्ध्व रेखा पर) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दिव्यौघाः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** (मन्त्र से दिव्यौघ गुरु का) **दक्षिणरेखायां ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सिद्धौघाः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** (मन्त्र से दक्षिण रेखा पर सिद्धौघ गुरु का) **वामरेखायां ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मानवौघाः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** (मन्त्र से वाम रेखा पर मानवौघ गुरु का) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हसक्षमलवरयूं हसौँ सहौँ सोऽहं हंसः श्रीअमुकानन्दनाथ(स्वगुरुं) श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः सकृद्वा।** (मन्त्र से मध्य में स्वगुरु का तीन बार तर्पण करे) **एवं गुरुपरमगुरुपरात्परगुरुपरमेष्ठिगुरूंस्तर्पयेत्।** (पूर्व के समान ही गुरु, परमगुरु, परात्परगुरु तथा परमेष्ठिगुरु का तर्पण करने के बाद) **अथ भैरवपात्रामृतेन स्वहृदि देवं तर्पयेत्।** (भैरव पात्र के जल से अपने हृदय में इष्ट देव का तर्पण करे) **यथा।** (जैसे) **ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ श्रीमन्महावटुकभैरवं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं पूजयामि तर्पयामि नम इति। अथ तत्त्वशुद्धिं कुर्याद्यथा भोगपात्रोपरि हस्तं दत्त्वा पठेत्।** (मूलमन्त्र के साथ वटुकभैरव का साङ्ग, सपरिवार, सवाहन, सायुध पूजन तर्पण करने के बाद) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्राणापानव्यानोदानसमानाः मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।** (प्राणादि वायु का शोधन करे) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पृथिव्यप्तेजोवायवाकाशानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।** (पृथिव्यादि तत्त्वों का शोधन करे) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रकृत्यहंकारमनोबुद्धिश्रोत्राणि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।** (प्रकृत्यादि का शोधन करे) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्पर्शरूपरसगन्धाकाशानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।** (स्पर्शादि का शोधन करे) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वायवाकाशसलिलभूम्यात्मने मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।** (वाय्वादि का शोधान करे) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणवाचांसि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।** (त्वचादि का शोधन करे) **ॐ ऐँ ह्रीँ**

श्रीँ वाक्पाणिपादपायूपस्थानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा। (वाण्यादि का शोधन करे) **इति षट् मन्त्रान् पठन् भोगपात्रामृतेन दक्षकरतलं सम्मार्ज्य,** (इन छ: मन्त्रों का पाठ कर भोग पात्र के जल में दाहिने हाथ के करतल का सम्मार्जन कर) **दक्षहस्ते त्रिकोणं लिखित्वा शुद्धिखण्डानि त्रिकोणस्थ दक्षोत्तरसम्मुखमध्येषु निधाय वामहस्ताङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभिरेकं खण्डं गृहीत्वा,** (दक्षिण हाथ में त्रिकोण लिख कर शुद्ध खण्ड को त्रिंकोण के मध्य दक्षिण से उत्तर की तरफ रख कर वायें हाथ से अङ्गुष्ठ और मध्यमा अनामिका से एक खण्ड ग्रहण करके) **मूलान्ते ऐँ ह्रीँ श्रीँ आत्मतत्त्वेन स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा।** (मूल मन्त्र के सहित उल्लिखित मन्त्र का योजन कर आत्मतत्त्व से स्थूल देह का शोधन करे) **अनेनाधःस्थां शुद्धिंस्वीकृत्य,** (इस प्रकार अधः स्थित शुद्धि को स्वीकार करके) **पूर्ववच्छुद्धिखण्डं गृहीत्वा,** (पूर्व के समान शुद्धि खण्ड ग्रहण कर) **मूलान्ते ऐँ ह्रीँ श्रीँ विद्यातत्त्वेन सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा।** (मूल मन्त्र के बाद निर्दिष्ट मन्त्र से विद्यातत्त्व से सूक्ष्म देह का शोधन करे) **अनेन दक्षस्थां शुद्धिं स्वीकृत्य,** (इसी प्रकार दक्षिण स्थित शुद्धि तत्त्व को स्वीकार कर) **तृतीय खण्डं गृहीत्वा,** (तृतीय खण्ड ग्रहण करके) **मूलान्ते ऐँ ह्रीँ श्रीँ शिवतत्त्वेन परमकारणदेहं शोधयामि स्वाहा।** (मूल मन्त्र के साथ निर्दिष्ट मन्त्र से शिवतत्त्व से परम कारण देह का शोधन करे) **अनेनोत्तरस्थां शुद्धिं स्वीकृत्य,** (इस प्रकार उत्तर में शुद्धि स्वीकार कर) **चतुर्थखण्डं गृहीत्वा** (चतुर्थ खण्ड ग्रहण करके) **मूलान्ते ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वतत्त्वेन तत्त्वत्रयाश्रयं महाकारणजीवं शोधयामि स्वाहा।** (मूल मन्त्र के साथ निर्दिष्ट मन्त्र से सर्वतत्त्व से महाकारण जीव का शोधन करे) **अनेन मध्यस्थां स्वीकृत्य,** (इस प्रकार से मध्यस्थ शुद्धि स्वीकार कर) **वस्त्रेण हस्तौ विशोध्य हस्ताभ्यां सर्वाङ्गं सम्मार्जयेत्।** (वस्त्र से हाथों का शोधन कर हाथ से सर्वाङ्ग का मार्जन कर) **ततो भोगपात्रं स्वीकुर्यात्।** (भोग पात्र को स्वीकार कर) **यथा** (जैसे) **मूलान्ते ॐ अर्द्धं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि योहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमेव हि मां जुहोमि स्वाहा।** (मूल मन्त्र के साथ निर्दिष्ट मन्त्र का योजन कर ब्रह्मत्त्व स्वीकार कर) **इत्यनेनात्मपात्रं गृह्णीयात् इतिशुद्धिः।** (इस प्रका आत्म पात्र को ग्रहण कर शुद्धि करे) **अथ श्रीपात्रामृतेनात्मानं पूजोपकरणं चाभ्युक्ष्य सर्वं ब्रह्ममयं भावयेत्।** (श्रीपात्र के जल को ग्रहण कर अपने तथा पूजोपकरण का अभ्युक्षण कर सभी में ब्रह्ममय की भावना कर) **अथ समर्थः अधिकारीचेत्तदा चतुर्वारं पात्रग्रहणं कार्यं,** (समर्थ अधिकारी को चार बार पात्र ग्रहण करना चाहिये) **तत्र मन्त्राः।** (पात्र ग्रहण के लिए मन्त्र) **वामहस्ते पात्रं गृहीत्वा तदुपरि दक्षहस्तमाच्छाद्य पठेत्।** (वाये हाथ में पात्र को ग्रहण कर दाहिने हाथ से आच्छादन कर आगे निर्दिष्ट मन्त्र का पाठ करे) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रकृत्यहंकारमनोबुद्धिश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुसलिलभूम्यात्मकः अँ आँ इँ**

ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अं अः शुद्धाशुद्धचतुर्विंशतितत्त्वसहितं प्रथमकूटमुच्चार्य आधारे अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथात्मके जाग्रद्दशाधिष्ठायिके इच्छाशक्त्यात्मकरुद्रात्मकशक्तिकामेश्वरीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (पूर्व निर्दिष्ट मन्त्र के साथ प्रथम कूट का उच्चारण कर आधारस्थ, अग्निचक्रस्थ, कामगिरि पीठ में मित्रेशानाथात्मक जाग्रतावस्था के अधिष्ठाता इच्छाशक्त्यात्मक रुद्रात्मकशक्ति कामेश्वरी देवी का पूजन तर्पण करे) **गौरीवल्लभसहिताय श्रीगौरीवल्लभसहितात्मने विश्वपुरुषाय विश्वपुरुषात्मने आर्णवमलशोधनार्थं आधारे अग्निमण्डले आत्मतत्त्वं स्थूलदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा।** (गौरी वल्लभ शङ्कर के सहित, श्रीगौरीवल्लभसहितात्मा विश्वपुरुष तथा विश्वपुरुषात्मा आर्णव मल के शोधन के लिए आधारस्थ अग्निमण्डल में आत्मतत्त्व से स्थूल देह का शोधन करे) **जुहोमिति गुरोराज्ञां गृहीत्वा तदा गुरुणा यस्यास्य परमामृतमिति वक्तव्यं प्रथमपात्रे न तु सर्वत्र।** (स्थूल देह का शोधन करके गुरु की आज्ञा ग्रहण करके सर्व प्रथम प्रथम पात्र मे परमामृतं का वाचन करे, सर्वत्र वाचन नहीं करना है) **पुनः मुख्यकुम्भतीर्थे द्वितीयवारं पात्रे पूरयित्वा पठेत्।** (पुन: मुख्य कुम्भ तीर्थ में द्वितीय बार पात्र का पूरण कर पाठ करे) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मकं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ शुद्धाशुद्धसप्ततत्त्वसहितं द्वितीयकूटमुच्चार्य, सूर्यचक्रे जालन्धरगिरिपीठे षष्ठिनाथात्मके स्वप्नदशाधिष्ठायिके ज्ञानशक्त्यात्मकविष्णवात्मकशक्तिश्रीवज्रेश्वरीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** (मूल मन्त्र के साथ निर्दिष्ट मन्त्रोच्चारण कर श्रीवज्रेश्वरी देवी का पूजन तर्पण करे) **श्रीलक्ष्मीनारायणसहिताय श्रीलक्ष्मीनारायणसहितात्मने कार्मिकमलशोधनार्थे हृदये सूर्यमण्डले विद्यातत्त्वे सूक्ष्मदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा।** (मूल मन्त्र के सहित लक्ष्मीनारायण० मन्त्र से सूक्ष्म देह का शोधन करे) **पुनस्तृतीयवारं पात्रमादाय,** (पुन: तृतीय बार पात्र ग्रहण कर) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शिवशक्तिसदाशिवेश्वर शुद्धविद्यात्मक यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ शुद्धाशुद्धपञ्चतत्त्वसहितं तृतीयकूटमुच्चार्य सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायिके क्रियाशक्त्यात्मकब्रह्मात्मकशक्तिश्रीभगमालिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** (मूल मन्त्र के साथ निर्दिष्ट मन्त्र से शिवशक्ति० मन्त्र से श्रीभगमालिनी देवी का पूजन तर्पण करे) **विद्याशङ्करसहितात्मने मायिकमलशोधनार्थे चन्द्रमण्डले शिवतत्त्वेन कारणदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा।** (मूल मन्त्र के साथ विद्याशङ्कर० मन्त्र से कारण देह का शोधन करे) **अथ चतुर्थवारं पात्रमादाय,** (चतुर्थ बार पात्र को ग्रहण कर) **ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषकृत्यहंकारमुखश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुतेज:सलिलभूम्यात्मकः ॐ आदिक्षान्तं क्षाद्यान्तं पठेत्।** (मूल मन्त्र के साथ शिवशक्ति० मन्त्र के बाद आदिक्षान्त वर्णों तथा क्षकारादि से अकारान्त वर्णों को

युक्त कर) **शुद्धाशुद्धिषट्त्रिंशत्तत्त्वसहितमात्मविद्याशौण्डस्तथैव स्थूलसूक्ष्मकारणमहाकारणदेहं शोधयामि स्वाहा।** (महाकारण देह का शोधन करे) **समस्तमूलमुच्चार्य,** (समस्त वर्णमातृका के साथ मूल मन्त्र का उच्चारण कर) **ब्रह्मरन्ध्रचक्रे उड्यापीठं श्रीचर्यानन्दनाथात्मिके सूर्यदशाधिष्ठायिके ब्रह्मात्मकशक्तिश्रीमहाभैरवसहिताय श्रीमद्बटुकभैरवाय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** (वटुक भैरव का पूजन तर्पण करे) **गौरीवल्लभलक्ष्मीनारायणविद्याब्रह्मासहितात्मने विश्वतैजसप्राज्ञपुरुषाय विश्वतैजसपुरुषात्मने आर्णवकार्मिकमायिकमलशोधनार्थे सर्वतत्त्वेन महाकारणदेहं शोधयामि स्वाहा।** (मूल मन्त्र के साथ गौरी० मन्त्र का योजन कर महाकारण देह का शोधन करे) **स्वदेहपीठमन्त्रान्तं सम्पूज्य स्वहृदये पूर्वं देवं ध्यात्वा आसनाद्युपचारैः सावरणं देवमभ्यर्च्य मनसा धूपदीपनैवेद्यादीन् दत्त्वा मानसं वैश्वदेवं कृत्वा प्राणानायम्य ऋष्यादिकषडङ्गन्यासान् कृत्वाष्टोत्तरसहस्रं शतं वा मूलं सम्पूज्य, पुनः प्राणायामादि कृत्वा जपं निवेद्य स्वशिरसि हृदये मूलाधारे पादयोः सर्वाङ्गे च पञ्च पुष्पाञ्जलीन् त्रीन् पुष्पाञ्जलीन् वा दत्त्वा देवतायाश्चरणे आत्मानं समर्प्य बाह्यार्चनं कुर्यादिति।** (अपने देह पीठ पर मन्त्रान्त पूजन कर अपने हृदय में सर्व प्रथम इष्ट देव का ध्यान कर आसनादि उपचारों से आवरण सहित पूजन कर मनसा धूपदीपनैवेद्यदि प्रदान कर मानस वैश्वदेव करके प्राणायाम ऋष्यादिषडङ्गन्यासादि कर अष्टोत्तरशत, अष्टोत्तरसहस्र मूल मन्त्र का जप निवेदन कर अपने शिर, हृदय, मूलाधार, पाद तथा सर्वाङ्ग स्थानों पर तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर देवता का आश्रयण ग्रहण कर आत्मा में इष्ट का स्वरूप मान कर ब्रह्मार्चन करे) **इत्यन्तर्यागः।** (यही वटुकभैरव का विशेष अन्तर्याग है)।

श्रीमद्वटुकभैरवान्तर्यागविशेषं परिपूर्णम्

⁂

पात्रासादनम्

अपने आगे बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्र-चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा के द्वारा निर्माण करके श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्य के लिए पात्राधार के रूप में रख कर आधार पूजन करे, आधार पूजन के बाद सुवर्ण, रजत, ताम्र, नारिकेल या किसी भी धातु का श्रीपात्र (कलश) प्रक्षालित कर आधार पर स्थापित करे, श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्य शंख पात्रों का विधि पूर्वक संस्कार कर, मूलमन्त्र से पूजन करके कर्पूर, गन्धादिवासित जलपूरितकलश गन्ध-पुष्पाक्षतादि से अलंकृत करके मण्डल पर स्थापित कर अधोलिखित प्रार्थना तथा आवाहन कर कलश का विविधोपचार से पूजन कर उसमें समस्त तीर्थों, नद, नदियों और समुद्रों का आवाहन कर पूजन करने के बाद प्रार्थना करे।

वर्धनीकलशाधारचक्रम्

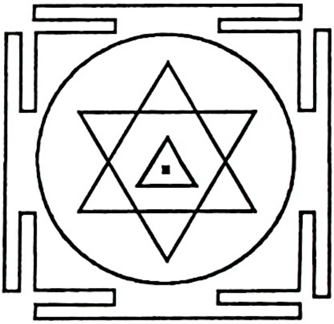

वर्धनीकलशस्थापनम्

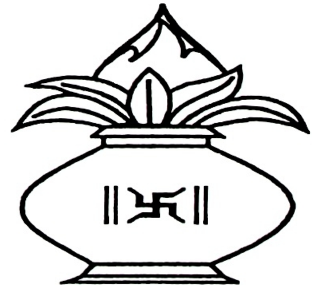

भूमिस्पर्श—ॐ महीद्यौःपृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतान्नोभरीमभिः॥

सप्तधान्य विखेरना—**ॐ ओषधयःसमवदन्तसोमेनसहराज्ञा।। यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि।।**

कलशस्थापन—**ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः।। पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानःसहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः।।**

कलश में जल भरना—**ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत।।**

कलश में सर्वौषधी डाले—**ॐ याओषधीःपूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा।। मनैनुबब्भ्रुणामहꣳशतंधामानिसप्तच।।**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि।। एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेणशतेनच।।**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अश्श्वत्त्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता।। गोभाजऽ इत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्।।**

कलश में कुश डाले—**ॐ पवित्रैस्त्थोव्वैष्ण्णव्व्यौसवितुर्व्वःप्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्रैणसूर्य्यस्यरश्म्मिभिः।। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्।।**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।। यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः।।**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः।। बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः।।**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकविरग्ग्निर्हव्यान्न्यक्रमीत्।। दधद्रत्नानि दाशुषे।।**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्।। सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाव्विधेम्।।**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः।। व्वासोअग्ग्ने व्विश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वव्विभावसो।।**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत।। व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतो।।**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः।। बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः।।**

वरुण ध्यान आवाहन पञ्चोपचार पूजन—**ॐ तत्त्वा॑यामि॒ब्ब्रह्म॑णा॒व्वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒ यज॑मानोह॒विर्भि॑ः॥ अहे॑डमानोव्वरुणे॒हबो॒ध्युरु॑शᳫंस॒मान॒ऽआयु॒ःप्रमो॑षीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। इस जल में वरुण अपने आयुध, शक्ति तथा परिवार के सहित आकर अवस्थित हों।

ॐ अपांपतये वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कला।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित होता है, उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षी (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकायें स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तमहाद्वीप, अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं।३॥

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ हैं, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सहिताः तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ, नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्तदुरितों के क्षयकारक हों तथा समस्त पापों को नष्ट करने वाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग स्वरूप होकर कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरितों को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें तथा हमारे यजनकार्य की पूर्णता प्रदान करें॥८॥

प्रतिष्ठा—हाथ सें स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्वटुकभैरवस्य आधारसहितकलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमपरमण्डलसहितकलानां प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्वटुकभैरवस्य आधारसहितकलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमपरमण्डलसहितकलानां जीव इह स्थितः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्वटुकभैरवस्य आधारसहितकलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमपरमण्डलसहितकलानां सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रप्राणप्राणाइहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ मनो॑जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ विश्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३ँम्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, हमारे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

वर्धनीकलशपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

त्वमेकः शुद्धोऽसि त्वयि निगमबाह्यामलमयं,
प्रपञ्चं पश्यन्ति भ्रमपरवशाः पापनिरताः।
बहिस्तेभ्यः कृत्त्वा स्वपदशरणं मानय विभो!,
गजेन्द्रेण दृष्टं ते शरणद! वान्यं स्वपदम्॥

तुम्हीं एक शुद्ध हो, तुम्हीं वेदो के द्वारा अमल कहे गये हो, तुम्हीं भ्रमवश प्रपञ्च में पापनिरत मानवों को अपने शरण में लेकर मुक्त करते हो, तुम्हीं शरण में आने पर गजेन्द्र को वर प्रदान कर अपने पद को प्रदान किये।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन-ध्यान कर समर्पित करे—

विचित्र-रत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृहणीष्व सुरपूजित!॥

हे देवताओं के द्वारा पूजित विचित्र रत्नों से जटित तथा दिव्य कलाकृतियों से संयुक्त स्वर्णनिर्मित दिव्य रुचिकर सिंहासन ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
त्रिगुणात्मगृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल!॥

सभी तीर्थों से लाये गये गन्धादि से युक्त इस पाद्य को भक्त वत्सल भगवान् त्रिगुणात्मा ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

त्रिगुणात्मन्नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

गन्ध, पुष्प, अक्षत, फलादि से युक्त अर्घ्य हे त्रिगुणात्मा करुणाकर! ग्रहण करें आपको नमस्कार है।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

त्रिदेवञ्च नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

हे देवताओं से अभिवन्दित! त्रिदेव (ब्रह्म-विष्णु-महेश) को नमस्कार है, हे प्रभु! आचमन करने के लिए गङ्गा का जल आपको समर्पित है।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के पापों को हरनेवाला, सभी प्रकार का शुभ करने वाला, मन्दाकिनी का जल आपके सम्मुख कल्पित (समर्पित) है, हे देव! स्नान के लिए आप ग्रहण करें।

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयंजलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वं मलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

सभी प्रकार के मल को पूर्ण नष्ट करने में जो गङ्गाजल समर्थ है, वह जल यहाँ पुनः आचमन करने के लिए आपको समर्पित है।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गौ से समुत्पन्न सभी को परम जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए उत्पन्न, परम पवित्र दूध हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से समुत्पन्न (निर्मित) मीठा-अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही मेरे द्वारा आपके स्नान के लिए लाया गया है, हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है, ग्रहण करें।

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नवनीत (मक्खन) से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी हे देव! आपको समर्पित करता हूँ, स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न, सुन्दर मधुर स्वादवाला, पुष्टि तथा दिव्य तेज प्रदान करनेवाला, शहद स्नान के लिए आपके सम्मुख समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ईख के रस से निर्मित, सभी प्रकार के मल को नष्ट करने वाली, शुभ और पुष्टि को प्रदान करने वाली, इच्छुरसनिर्मित दिव्य शर्करा आपके प्रति स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध-दही-घृत-मधु और शर्करा से निर्मित पञ्चामृत स्नान के लिए मैं लाया हूँ, हे देव! स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा-सिन्धु-कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों का दिव्य जल स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतल और उष्ण वायु के ताप और शैत्य से रक्षा के लिए तथा परमलज्जा के रक्षार्थ, शरीर को अलंकृत करने के लिए वस्त्र समर्पित है, हे देव! यह वस्त्र आपको प्रसन्न करे, आप हमें शान्ति प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण सुरपूजित॥

नव तन्तुओं से निर्मित त्रिगुण (त्रिरावृत्तिवाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मै आपकों समर्पित करता हूँ, हे सुरपुजित! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

उपवस्त्रनिवेदनम्—

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दिव्य सुमनोहर सुगन्धित श्रीखण्ड से युक्त चन्दनलेप आपके विलेपन के लिए है, यह आपकी प्रसन्नता के लिए आपको समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

कुङ्कुम से सुशोभित अक्षत आपको निवेदित करता हूँ, हे सुरश्रेष्ठ परमेश्वर! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मालती आदि के पुष्पों से निर्मित सुगन्धित पुष्पों की माला आपके लिए लाया हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतान्स्तव पूजार्थं गृहाण सुरनायक!॥

हे सुरश्रेष्ठ! मङ्गल प्रदान करनेवाले, अमृतमय, सुन्दर दूब के हरे-हरे अङ्कुरों को मैं आपकी पूजा के लिये लाया हूँ, इन्हें ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितोदेवा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगम्धित द्रव्य नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें और मुझे शान्ति प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला है, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धों में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान के लिए है, हे देव! अपको समर्पित है।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करनेवाला, घृतयुक्त बत्तियों को अग्नि से प्रज्वलित किया है, हे देवेश! प्रसन्नता के लिए ग्रहण करें, भक्तिपूर्वक परमात्मादेव आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके इस घोरतम अज्ञानान्धकार से हमारी रक्षा करें, दीपज्योति को नमस्कार है।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्कराखण्ड खाद्य दधि दूध एवं घृत से युक्त भक्ष्य भोज्य आहाररूपी नैवेद्य ग्रहण करके हमारी भक्ति को अचल करें, और हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा अन्त में परमगति प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर!॥

मलयाचल में उत्पन्न श्वेत चन्दन कस्तूरी इत्यादि गन्धों से युक्त हाथों को शुद्ध करने के लिए उद्वर्तन के रूप में ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

महादिव्य पूगीफल (सुपाड़ी) नागवल्लीदल (पान के पत्ते से) युक्त एलादिचूर्ण (इलाइची इत्यादि) से युक्त ताम्बूल ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादि-सहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

हे देव! हमने यह फल आपके सम्मुख स्थापित किया है, जिसे ग्रहण करके जन्म-जन्मान्तरों तक हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा हमें यज्ञफलवान करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

हिरण्यगर्भ से उत्पन्न हेमबीज (सुवर्ण के सदृश) के समान शोभायमान अनन्तपुण्यफल को प्रदान करके शान्ति प्रदान करनेवाली सुवर्णमय दक्षिणा ग्रहण कर शान्ति प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केला) के गर्भ से उत्पन्न (निर्मित) कर्पूर (जलता हुआ) से आरती करता हूँ, हमें कृपापूर्वक दृष्टि से देख करके वर प्रदानकर्ता बनें।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर!॥

अपने-अपने ऋतुओं में उत्पन्न नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से युक्त पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥१॥

किसी भी प्रकार के जन्म-जन्मान्तर में किये हुए सभी पाप एक-एक कदम देव-प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते हैं॥१॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यसगर्पणम्

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥

हे जलाध्यक्ष! हमारी सभी प्रकार से रक्षा करें रक्षा करें, हे जीवनदायक! हमारे जीवन की रक्षा करें, हे पश्चिमदिशा के स्वामी! प्राणियों को जीवन प्रदान करनेवाले हमारी सदैव रक्षा करें॥१॥

विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतम्।
विशेषार्घ्यं प्रदाप्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

हे वरुणाद्यावाहित देवता! चन्दन, रजनी पुष्प तथा विविध द्रव्यों से संयुक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ, हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये॥२॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

देवताओं और दानवों के बीच महोदधि समुद्र था, उसी में समुद्रमन्थन से कुम्भ उत्पन्न हुआ, जिसे विष्णु स्वयं धारण किये॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

हे वरुण! तुम्हारे जल में सभी तीर्थ स्थित है, सभी देवताओं का वास तुम्हारे में है, तुम्हीं सभी भूतों में प्रतिष्ठित हो तथा सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनायें फलवती होती हैं, हे जलोद्भव कुम्भ! (जल से उत्पन्न शरीर) तुम्हारे कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करे॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दरश्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दर मङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले, हे जलाधिनाथ! आपकों बार बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव।।७।।

पाश को हाथ में धारण करने वाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करनेवालों के नायक, जबतक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक हमें सान्निध्य प्रदान करें।।७।।

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे—

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से जल लेकर पूजन समर्पित करे—

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहित देवताः प्रीयन्तां न मम।।

श्रीपात्र के लिए कलश, अर्घ्यपात्र, विशेषार्घ्यपात्र, आचमनीयादि पात्रों तथा पदार्थें का संस्कार अत्यन्तावश्यक होता है, बिना संस्कार के तन्त्र में कोई भी पूजन नहीं किया जाता, संस्कार करने से ही पदार्थों में शुद्धता आती है, पात्रों के संस्कार को ही पात्रासादन कहते हैं अतः पूजन में पात्रासादन अवश्य करना चाहिए तन्त्र में तो विशेष रूप से अनिवार्य है।

पात्रासादनं परिपूर्णम्

❀

श्रीपात्रादिसंस्कारम्

ॐ फट्। श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्यपात्र प्रच्छालित करे (श्रीपात्र के लिए कलश तथा विशेषार्घ्यपात्र के लिए शङ्ख रखे)।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः श्रीपात्रं स्थापयामि। श्रीपात्र स्थापन के बाद मध्य में मूल मन्त्र से भैरव का पूजन कर पुन: विलोममातृका का दश बार जप करे।

ॐ क्षँ हँ लँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ ऌँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ नमः।

पात्र में दूध, जल, मधु, संविदादि रख कर जल से परिपूर्ण करे।

ॐ यँ नमः। मन्त्र से पात्र तथा पदार्थों के दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ नमः। मन्त्र से पात्र तथा पदार्थें के दोषों का दाहन करे।

ॐ वँ नमः। मन्त्र से पात्र तथा पदार्थें में अमृत सम्प्लावन करे।

ॐ नमः। मार्जन कर आधारपात्र पर स्थापित कर कलश का संस्कार करे।

शुक्रशापविमोचनम्

एवमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥

इस प्रकार से स्थूल तथा सूक्ष्मय ब्रह्म के द्वारा हमारे शरीर में उत्पन्न जो ब्रह्महत्यादि पाप हैं उनका निश्चय ही नाश हो जाये।

सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
आस्यबीजमये देवि शुकशापाद्विमुच्यताम्॥

सूर्य मण्डल से उत्पन्न होकर वरुणालय में रहनेवाले ब्रह्म हमारे मुख में बीज रुप से उत्पन्न मन्त्रस्वरुपी होकर शुकशाप से मोचन करें।

वेदानां प्रणवोबीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु॥

वेदों में ब्रह्मानन्दमय बीज जो प्रणव है उसके द्वारा हे देवी सत्यरूप से ब्रह्महत्या का व्यपोहन करे।

इति मन्त्रं घटे धृत्वा पठेत्त्रिधा। घट को हाथ में रख कर इस मन्त्र का तीन बार जप करे।

ॐ ह्रीँ वँ साँ सीँ सूँ सैँ सौँ सः शुक्रशापविमोचकायै सुधादेव्यै नमः शुक्रशापं विमोचय विमोचय स्वाहा। इति द्वादशधा जपेत्। इस मन्त्र का बारह बार जप करे।

ॐ ह्रीँ वँ ब्राँ ब्रीँ ब्रूँ ब्रैँ ब्रौँ ब्रः ब्रह्मशापविमोचकायै सुधादेव्यै नमः ब्रह्मशापं विमोचय विमोचय स्वाहा। इति दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीँ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः कृष्णशापविमोचिकायै सुधादेव्यै नमः कृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। इति दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ श्रीँ ह्रीँ वँ ऐँ राँ रीँ रूँ रैँ रौँ रः रुद्रशापविमोचकायै सुरादेव्यै नमः रुद्रशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। इति दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

कलशे दशदोषनिवारणम्

ॐ ह्रीँ वँ क्रीँ परमस्वामिनी परमाकाशशून्यवाहिनी चन्द्रसूर्याग्निभक्षिणी त्वं पात्रे उपविश उपविश स्वाहा। इति कलशोपरि दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै च धीमहि तन्नोर्द्धनारिश्वरः प्रचोदयात्। इति दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रत्क्ष्ल्व्क्रैँ पथिकदेवताभ्यो हुँ फट् स्वाहा॥१॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ रँ लँ आँ आस्फलिनी ग्रामचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ ह्राँ सङ्गमस्पर्शचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फ्रैँ घ्य ङँ लँ क्षँ दृष्टिचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥४॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ग्लौँ लाँ क्रोधचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥५॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ सृष्टिचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥६॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ क्रौँ घटचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥७॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ छँ तपनीयबुधचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥८॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ आँ क्रौँ क्लीँ नित्यचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥९॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्त्रुँ क्षँ स्त्रौँ स्त्रौँ खादय खादय सर्वजनदृष्टिस्पर्षदोषाय हुँ फट् स्वाहा॥१०॥ इति मन्त्रेण दशधा कुम्भोपरि अक्षतान्निक्षिपेत्। उपर्युक्त दश मन्त्रों का उच्चारण करते हुए दोनों कलशों पर दश दश बार अक्षत् छोडे।

ॐ हꣳसःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमस-

दुब्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत्॥ इतिदोषनिवारणाय इत्यनेन त्रिवारं द्रव्योपरि पठेत्, गन्धपुष्पाक्षतादि निक्षिपेत् द्रव्य मध्ये आनन्दभैरव आनन्दभैरवीं ध्यायेत्। समस्त दोषों के निवारण के लिए, उक्त मन्त्र का द्रव्य के ऊपर तीन बार पाठ कर, कलश में गन्धपुषादि छोड कर द्रव्य के मध्य आनन्दभैरव तथा आनन्दभैरवी का पूजन करे।

आनन्दभैरवध्यानम्

अखण्डैकवरानन्दकरेपरसुधात्मनि ।
स्मराच्छन्द स्फुरणामत्र निधेह्यमृतरूपिणी॥१॥

पर मण्डलान्तर्गत आत्मामृत सागर में अखण्डानन्द प्रकाश की किरणावलियों के रूप में कामेच्छा स्फुरणामृत रूप से स्थित॥१॥

सूर्यकोटिप्रतिकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्॥२॥

सूर्य के समान प्रकाशमान, चन्द्रमा के समान सुशीतल, अट्ठारह भुजाओं वाले, तीन नेत्रोंवाले पञ्चवक्त्र सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥२॥

अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्॥३॥

अमृत के समुद्र के मध्य में स्थित, ब्रह्मकमल के ऊपर सभी प्रकार के आभूषणों से सुशोभित, वृषभासन पर आरूढ नीलकण्ठ सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥३॥

कपालखट्वाङ्गधरः घण्टाडमरुवादिनम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुशलधारिणम्॥४॥

हाथ में कपाल, खट्वा, पाश, अङ्कुश, गदा, मुशल धारण किये हुए घण्टा तथा डमरु का वादन करनेवाले सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥४॥

खड्ग-खेटक-पट्टीशं मुद्गरच्छूल-कुन्तिलम्।
विचित्र-खेटकं-मुण्डं वरदाऽभय-मालिनम्॥५॥

सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त, हाथ में खड्ग, खेटक, पट्टीश, मुद्गर, शूल, कुन्तल, मुण्ड, वर तथा अभय से शोभायमान आनन्द स्वरूप सदाशिव का ध्यान करते हैं॥५॥

लोहितं देवदेवेशं भावये साधकोत्तमः।
भावयेच्च सुरादेवीं चन्द्रकोट्युतप्रभम्॥६॥

लोहित वर्णवाले देवताओं के ईश्वर, परमदेव सदाशिव तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशमान सुरादेवी (अमृतस्वरूपिणी) के साथ उत्तम साधक स्वहित के लिए ध्यान करते है॥६॥

हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्॥७॥

हिमखण्ड तथा चन्द्रमा के सदृश धवल, पञ्चवक्त्र, तीन नेत्रोंवाले, अट्ठारह भुजाओंवाले, सभी प्रकार का आनन्द प्रदान करनेवाले सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥७॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दत्क्ष्म्लफ्रैँ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवाय वौषट्। इत्यानन्दभैरवं त्रिः सम्पूजयेत्। उक्त मन्त्र से आनन्दभैरव का तीन बार पूजनतर्पण करे।

आनन्दभैरवीध्यानम्

भावयेत्त्वसुरादेवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्॥१॥

हिमकुन्द के समान धवल, पाँच मुखोंवाली, तीन नेत्रोंवाली, चन्द्रमा के समान धवल प्रभावाली, देवताओं की आराध्य देवी का ध्यान करता हूँ॥१॥

अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम्॥२॥

अट्ठारह भुजाओंवाली, सभी प्रकार का कल्याण कर भक्तों को आनन्द प्रदान करनेवाली, हास्ययुक्ता, विशाल नयनोंवाली, देवों के देव महादेव के समान मुखवाली, महादेव के साथ आनन्दभैरवी का ध्यान करता हूँ॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सहक्षमलवरयीँ आनन्दभैरव्यै सुधादेव्यै वौषट्। इत्यानन्दभैरवीं त्रिः सम्पूजयेत्। उक्त मन्त्र से आनन्दभैरवी का तीन बार पूजनतर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवानन्दभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। श्रीपात्रस्थित द्रव्य को बाँयें हाथ के अंगुठे तथा मध्यमाङ्गुलि से बाहर निकाल कर उस द्रव्य पर आनन्दभैरव, आनन्दभैरवी मिथुन का ध्यान पूजन तर्पण करे।

ॐ क्लीँ कुलस्थामृताकारेसिद्धिज्ञानकरे परे।
अमृतत्त्वं निधेह्यत्र वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥१॥

ॐ ऐँ (वाग्रूपिणी, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी ज्ञानशक्ति), **ह्रीँ** (इच्छारूपिणी, इच्छा की अधिष्ठातृ देवी इच्छाशक्ति) **श्रीँ** (श्रीरूपिणी, ऐश्वर्यो की अधिष्ठातृ श्रीशक्ति) **क्लीँ** (कामरूपिणी, कामनाओं की अधिष्ठातृ कामशक्ति) कुलस्थ(कुल=शक्ति में ही रहने वाली) अमृतस्वरूपिणी, सिद्धि तथा ज्ञान प्रदान करनेवाली, परमण्डलाधिष्ठातृक्लीस्वरूपिणी हमारे लिए अमृत का प्रवाह करें॥१॥

सौं तद्रूपैकरसाख्यं च दत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि।
भूत्वा कुलामृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु॥२॥

सौं स्वरूप से प्रसिद्ध, रस रूप से कहीं जानेवाली अमृतरसरूपिणी, ब्रह्म स्वरूपिणी सौं हमें ब्रह्मत्त्व प्रदान कर कुलामृताकार होकर हमारे में अमृतत्त्व को स्फुरित करो॥२॥

ॐ ह्रीँ हंसः तर्पयामि। अमृतेशी का तर्पण करके मूल मन्त्र से सात बार जप करते हुए

कवचमुद्रा से ढककर, अस्त्रमुद्रा से संरक्षित कर मत्स्यमुद्रा से उसके ऊपर ढके तथा योनि एवं धेनु मुद्रा प्रदर्शित करे।

द्रव्यमध्ये शक्तिचक्रं विलिख्य तदभावे त्रिकोणदक्षावर्तेत विलिख्य ऊर्ध्वरेखायाम्। अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः दक्षिणरेखायां कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ उत्तररेखायां थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ उभयो पार्श्वयोः ळँ नमः क्षँ नमः त्रिकोणमध्ये कामकला ईं विलिख्य द्रव्यमध्ये अमृतत्त्वं विचिन्तयेत्। द्रव्य के मध्य में शक्तिचक्रं का लेखन करके उसमें दक्षिणावर्त क्रम से क्रमशः दक्षिण, ऊर्ध्व तथा वाम रेखाओं पर पूजन करे।

शक्तिचक्रम्

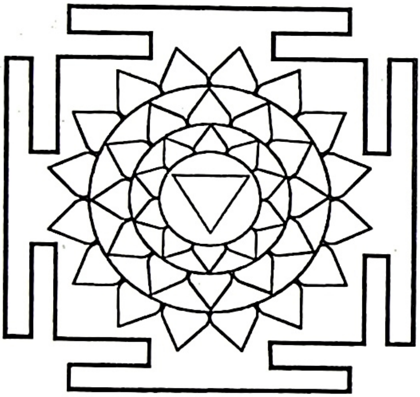

सर्वप्रथम भूपुर में पीठादि पूजन करे।

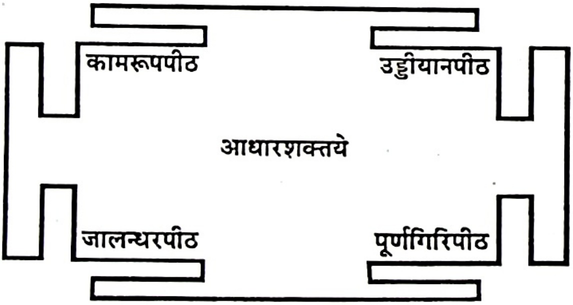

ॐ ह्रीँ वँ ज़ालन्धरपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कामरूपपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ उड्डीयानपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पूर्णगिरिपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आधारशक्तये नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठों का पूजन करने के बाद क्रमशः अग्यर्कसोम तीनों मण्डलों का पूजन करे।

अग्निमण्डलपूजनम्

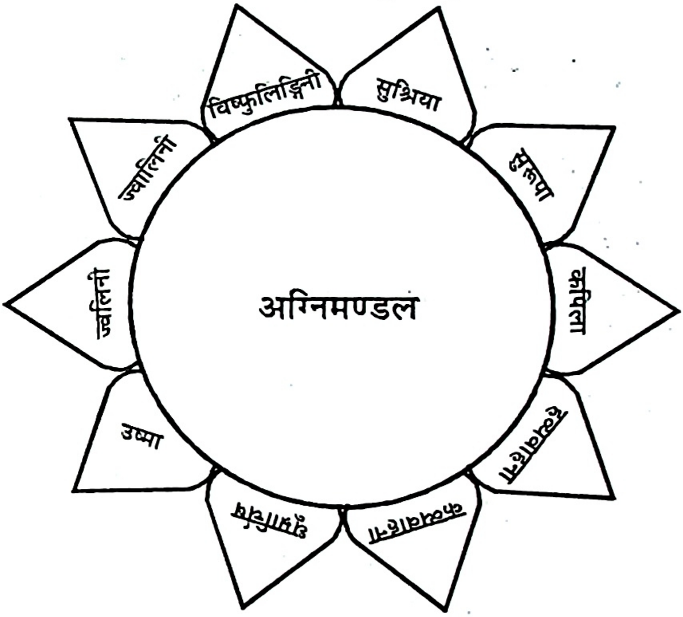
विष्फुलिङ्गिनी
सुश्रिया
सुरूपा
कपिला
हव्यवाहनी
कव्यवाहनी
धूम्रार्चि
उष्मा
ज्वलिनी
ज्वालिनी
अग्निमण्डल

ॐ ह्रीँ वँ वाँ वीँ वूँ ह स क्ष म ल व र यूँ धर्मदशकलात्मने रँ वह्निमण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्निकलानांपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ यँ धूम्रार्चिषे नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ उष्मायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ लँ ज्वलिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वँ ज्वालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ शँ विष्फुलिङ्गिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ षँ सुश्रियै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सँ सुरूपायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ हँ कपिलायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ळँ हव्यवाहनायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ क्षँ कव्यवाहनायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्कमण्डलपूजनम्

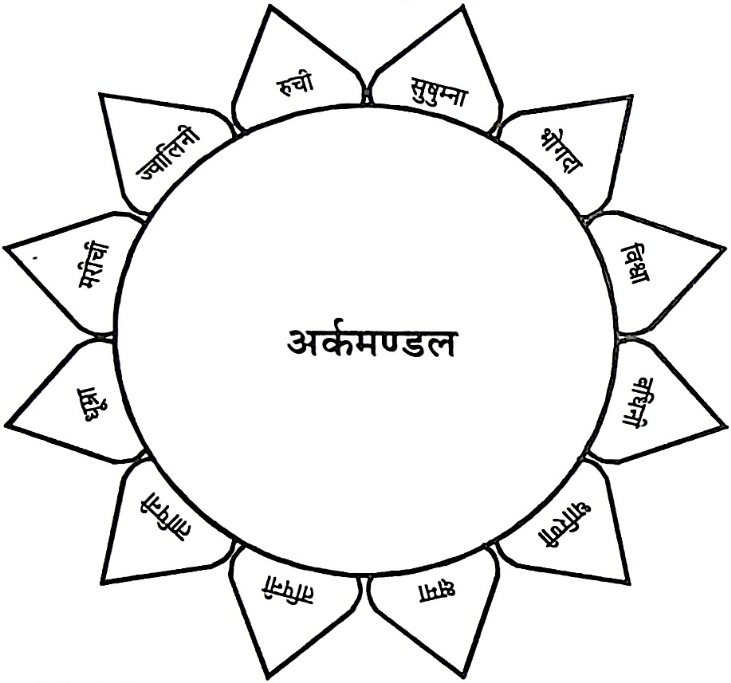

ॐ ह्रीं वँ हाँ ह्रीँ हूँ ह स क्ष म ल व र यूँ वसुप्रदत्तद्वादशकलात्मने मँ अर्कमण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्ककलानांपूजनम्

ॐ ह्रीं वँ कँ भँ तपिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ खँ बँ तापिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ गँ फँ धूम्रायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ घँ पँ मरीच्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ चँ धँ रुच्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ छँ दँ सुषुम्नायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ जँ थँ भोगदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ झँ तँ विश्वायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ञँ णँ बधिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ टँ ढँ धारिण्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ ठँ डँ क्षमायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोममण्डलपूजनम्

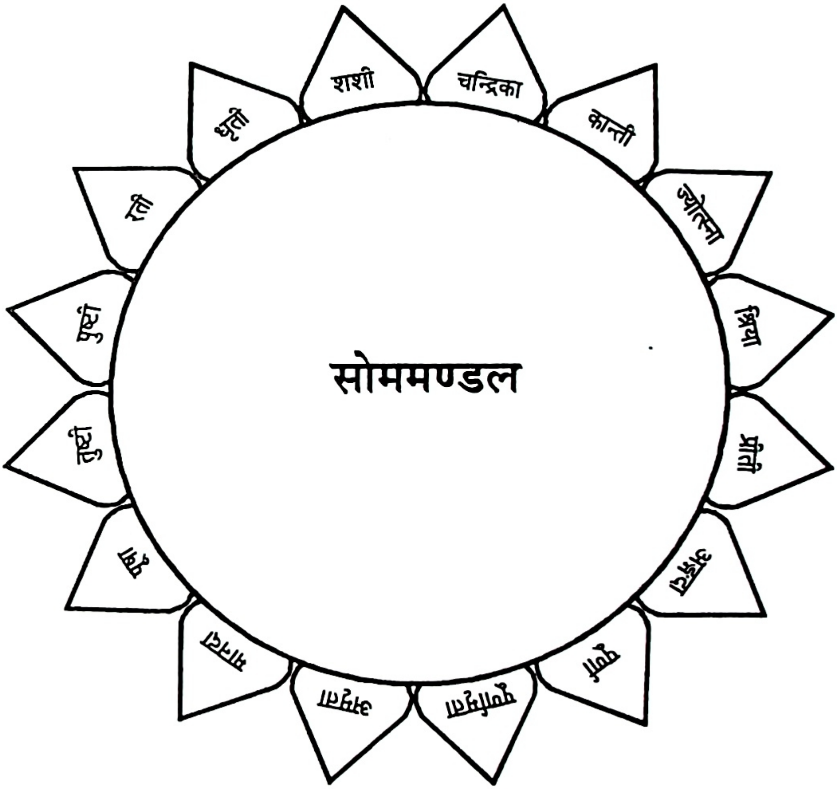
सोममण्डल
शशी
चन्द्रिका
कान्ती
ज्योत्स्ना
श्रिया
प्रीती
अङ्गदा
पूर्णा
पूर्णामृता
अमृता
मानदा
पूषा
तुष्टी
पुष्टी
रती
धृती

ॐ ह्रीँ वँ साँ सीँ सू स ह क्ष म ल व र यूँ कामप्रदामृतादिषोडशकलात्मने वँ सोममण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोमकलानांपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ अँ अमृतायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आँ मानदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ इँ पूषायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ईँ तुष्ट्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ उँ पुष्ट्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ऊँ रत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ऋँ धृत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ॠँ शशिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ऌँ चन्द्रिकायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ॡँ कान्त्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ एँ ज्योत्स्नायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ श्रियै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ प्रीत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ औँ अङ्गदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अँ पूर्णायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अः पूर्णामृतायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पात्र में कर्पूरादि सुगन्धित द्रव्य छोड़ कर त्रिकोण की तीनों रेखाओं पर क्रमशः पूजन करे।

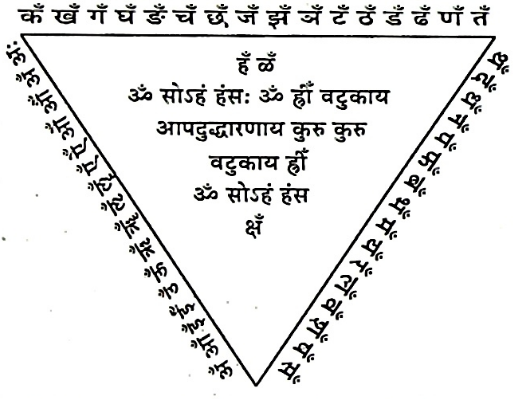
कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ
अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अंँ अः
हँ ळँ
ॐ सोऽहं हंसः ॐ ह्रीँ वटुकाय
आपदुद्धारणाय कुरु कुरु
वटुकाय ह्रीँ
ॐ सोऽहं हंस
क्षँ
थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हँ वँ ळँ क्षँ ॐ सोऽहं हंसः ॐ ह्रीँ वटुकभैरवाय स्वाहा गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्कुश मुद्रा के द्वारा अन्तरिक्ष से गङ्गादि नदियों का आवाहन करे।

अङ्कुशमुद्रालक्षणम्

अनामातर्जनीं अङ्गुष्ठेन बद्धयेतत्तथा।
हस्तं ऋजुं कृत्वोपरि च प्रसारयेत् पुनः॥
मध्यमाञ्च ऋजुं कृत्वा तर्जनीञ्च प्रताडयेत्।
अङ्कुशमुद्राविख्याता विज्ञेया तन्त्रसूरिभिः॥

दक्षिण हाथ के अङ्गुष्ठ से अनामिका तथा तर्जनी को पकड़ करके मध्याङ्गुलि को सीधा ऊपर करके तर्जनी को मोड़ कर मध्यमा के मध्यपर्व में लगा कर ऊपर अन्तरिक्ष की तरफ करने से अङ्कुश मुद्रा बनता है ऐसा तान्त्रिकों ने कहा है॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥१॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरि, सरस्वति, नर्मदा, सिन्धु और कावेरि आदि दिव्यनदियाँ इस जल में आकर समाहित होकर हमें सान्निध्य प्रदान करे॥१॥

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करे स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव! तीर्थं देहि दिवाकर॥२॥

ब्रह्माण्ड के उदर में स्थित तीर्थों में जहाँ तक सूर्य की किरणें स्पर्श करती है वहाँ तक के तीर्थों का सान्निध्य हे दिवाकर! प्रदान करे॥२॥

वौषट्। मन्त्र से पुष्प छोड़े।

वषट्। मन्त्र से गालिनी मुद्रा का प्रदर्शन करे।

गालिनी मुद्रालक्षणम्

कनिष्ठिकाङ्गुष्ठकौ युक्तौ करयोरितरेतरम्।
तर्जनी मध्यमानामा संहता भुग्नवर्जिताः॥

दोनों हाथ के कनिष्ठिका और अङ्गुष्ठ दोनों को आपस में मिला कर तथा उलटा करके तर्जनी और मध्यमा को आपस में मिलाने से गालिनी मुद्रा बनती है।

ॐ वँ। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करें, इष्टदेवता का ध्यान-पूजन कर, सकलीकरण करे तथा शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे।

धेनुमुद्रालक्षणम्

अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता॥

दोनों हाथों की अनामिका एवं कनिष्ठिकाओं को एक दूसरे से मिला कर तर्जनी और मध्यमा को एक दूसरे से मिलाने से धेनुमुद्रा बनती है, इसकी आकृती गाय के थनों जैसी होती है, इसका प्रयोग अमृतीकरण में होता है।

सकलीकरणमुद्रालक्षणम्

देवाङ्गेषु षडङ्गानां न्यासः स्यात्सकलीकृतिः।

देवता के अङ्गों में षड्ङ्ग न्यास करने को ही सकलीकरण मुद्रा कहते है इसका प्रयोग सकलीकरण के किया जाता है।

शङ्खमुद्रालक्षणम्

वाममुष्ट्यन्तरेऽङ्गुष्ठां निवेश्य सरलाङ्गुलीः।
दक्षिणस्य करस्यैव वामाङ्गुष्ठेन संस्पृशेत्॥
शङ्खमुद्रेयमाख्याता मन्त्रविद्भिरुत्तमा।

वायें हाथ के अङ्गुलियों से अङ्गुष्ठ को पकड़ कर दाहिने हाथ की समस्त अङ्गुलियों को सीधा करके वायें हाथ से मिलाने से जो आकृति बनती है तन्त्रज्ञ विद्वान् उसे शङ्खमुद्रा कहते हैं।

भूपुर के चारो दिशाओं में तथा मध्य में रत्नों का पूजन करे।

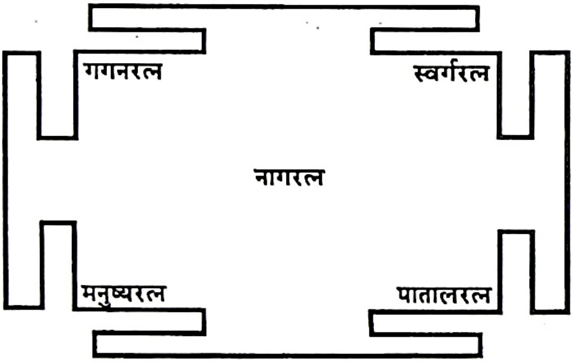

ॐ ह्रीँ वँ ग्लूँ गगनरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ स्लूँ स्वर्गरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ प्लूँ पातालरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ म्लूँ मनुष्यरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ न्लूँ नागरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

रत्नानां पूजनानन्तरम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सौँ जँ जँ अमृतेश्वर्यै स्वाहा शुक्रादिशापात्सुरां मोचय मोचय मोचिकायै नमः। मन्त्र का तीन बार जप करके त्र्यम्बक मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

सुगन्धि पुष्टि का वर्धन करता है अत: उर्वारुक(फुट=ककड़ी नाम का विशेष फल जो पकने पर फट जाता है) के समान हमें मृत्यु से (मोक्ष)मोचन के लिए, उस सुगन्धि से त्र्यम्बक(शिव) का यजन करता हूँ।

ॐ जूं सः मृत्युञ्जय मन्त्रं द्वाविशतिवारं कुम्भोपरि जपित्वा धेनुमुद्रया वमिति बीजमष्टधा प्रजप्य पश्चाद् घटं धृत्त्वा मूलमन्त्रं अष्टधा पठित्वा। मृत्युञ्जय मन्त्र का द्वादश बार कुम्भ के ऊपर जप कर धेनु मुद्रा से वँबीज का आठ बार जप करने के बाद घट को धारण करके पवमान श्लोकों का पाठ करे।

पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः।
पावमानं परं ज्ञानं तेन ते पावमाम्यहम्॥

पर मण्डलस्थ आनन्द ही पवमान है, पर मण्डलस्थ अमृत रस ही पवमान है, पर मण्डल का ज्ञान होना ही पवमान है, उसे प्राप्त कर उसके द्वारा मैं भी पवमान हो जाऊ।

इति अभिमन्त्रयेत्। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके।

अमृतं चिन्तयेत् द्रव्यं अष्टधा चामृतं जपेत्।
अष्टधा मूलमन्त्रं च जपेद्धृत्वा घटं ततः॥

घट को हाथ में ग्रहण कर द्रव्य में अमृत बीज का चिन्तन कर आठ बार अभिमन्त्रित करे पश्चात् मूल मन्त्र का आठ बार जप कर घट को नीचे रखे।

पश्चान्मुद्रां प्रदर्श्य वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुण्ठ्य चक्रेण संरक्ष्य अस्त्रेण छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कुर्यात्। अभिमन्त्रण करने के बाद मुद्राओं का प्रदर्शन कर वँबीज से धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतिकरण कर मत्स्यमुद्रा से आच्छादन कर कवचमुद्रा से अवगुण्ठन कर चक्रमुद्रा से संरक्षण कर अस्त्रमुद्रा से चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन कर बलिप्रदान करे।

कवचमुद्रालक्षणम्

सव्यहस्तकृतामुष्टिः दीर्घाऽधोमुखतर्जनी।
अवगुण्ठनमुद्रेयमभितो भ्रामिता भवेत्॥

दाहिने हाथ से बायें हाथ को दीर्घ कर बायें हाथ के अधोमुख तर्जनी को पकड़ कर मुठ्ठी बना कर घुमाने से कवचमुद्रा बनती है, जिससे अवगुण्ठन होता है।

अस्त्रमुद्रालक्षणम्

दक्षिणहस्तोपरिकृत्वा हस्तञ्च प्रसारयेत्।
अङ्गुष्ठेन कनिष्ठा परस्परं सन्निवेशयेत्॥

अनामातर्जनीमध्या ऋजुंकृत्वा प्रसारयेत्।
देव्यास्त्रमुद्रा विख्याता देवानां मोदकारिणी॥

दक्षिण हाथ को ऊपर की तरफ करके हाथ को फैला कर अङ्गुष्ठ से कनिष्ठिका को आबद्ध कर अनामिका तर्जनी और मध्यामा अङ्गुलियों को ऊपर की तरफ सीधा पसारने से देवी का अस्त्र मुद्रा बनता है जो देवताओं को प्रसन्नता प्रदान करता है जिसका रक्षा करने में प्रयोग होता है।

मत्स्यमुद्रालक्षणम्

वामहस्तोपरि संस्थाप्य दक्षहस्तं प्रसारयेत्।
सञ्चालयेत् वामाङ्गुष्ठं तथैव वामतर्जनी॥

वामहस्त के ऊपर दक्षिणहस्त को प्रसार कर रखे तथा वामहस्त का अङ्गुष्ठ व दक्षिणहस्त की कनिष्ठिका को फैला कर चालन(हिलाने) करने से मत्स्य जैसी आकृति बनती है।

योनिमुद्रालक्षणम्

मिथः कनिष्ठिके बद्धा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्ध्वसंश्लिष्ट दीर्घमध्यमयोरधः॥
अङ्गुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता॥

दोनों कनिष्ठिका को सटा कर उसके ऊपर तर्जनी और मध्यमा को एक दूसरे में आबद्ध करके उसके ऊपर अनामिका को सीधा करके मध्य में रखे तथा उसके ऊपर दोनों अङ्गुष्ठ को मिला कर लगाये इससे योनिमुद्रा बन जायेगी, शक्ति साधना में इस मुद्रा का सर्वत्र प्रयोग होता है।

धेनुमुद्रालक्षणम्

अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता॥

दोनों हाथों की अनामिका एवं कनिष्ठिकाओं को एक दूसरे से मिला कर, तर्जनी और मध्यमा को एक दूसरे से मिलाने से धेनुमुद्रा बनती है, इसकी आकृती गाय के थनों जैसी होती है, इसका प्रयोग अमृतीकरण में होता है।

श्रीपात्रविशेषः

श्रीपात्र के जल में बिन्दुत्रिकोणपञ्चकोणषडदलअष्टकोणअष्टदलषोडशकोणषोडशदलचतुरस्र-भूपुरत्रयात्मकचक्र भोजपत्र पर निर्मित कर पूर्ववत् सम्पूर्ण संस्कार कर कलश में डाल कर विन्दु में मूल मन्त्र से भैरव का पूजन करके आवरण यन्त्र में परिवार के देवताओं का पूजन करे।

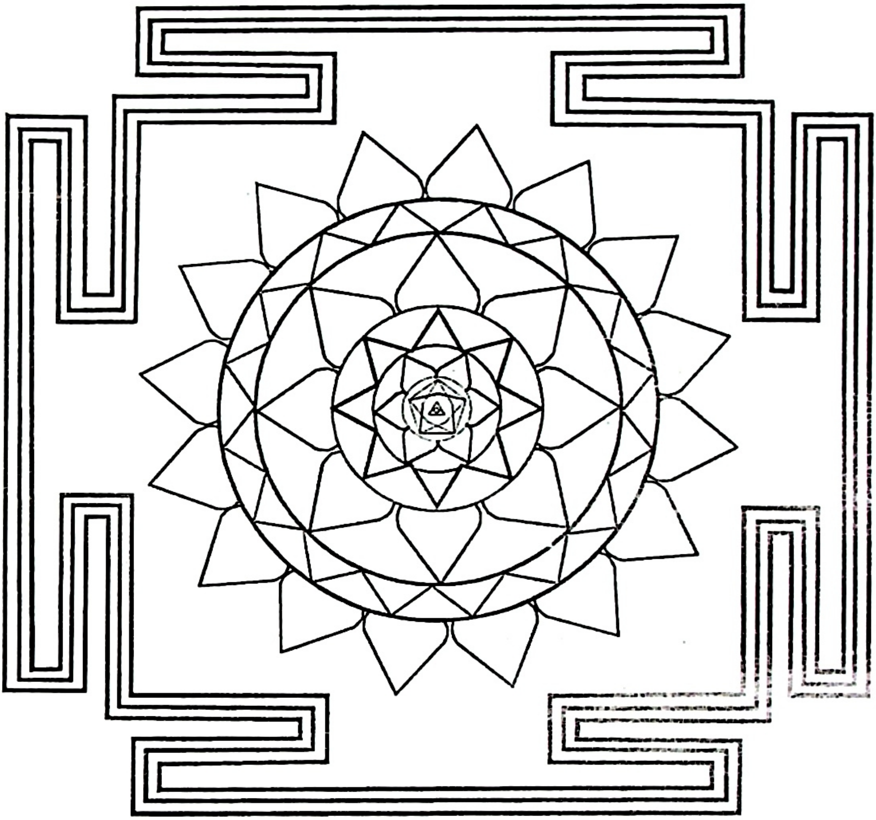

विन्दु में

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

दिव्यौघादिगुरुणां विन्यासम्—भूपुर के ईशान कोण में दिव्यौघगुरुओं का विन्यास करे—

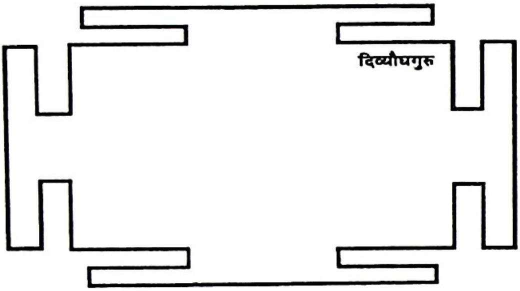

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहादेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीत्रिपुरानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीभैरवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

सिद्धौघादिगुरुणां विन्यासम्—भूपुर के उत्तर दिशा में सिद्धौघ गुरु का विन्यास करे—

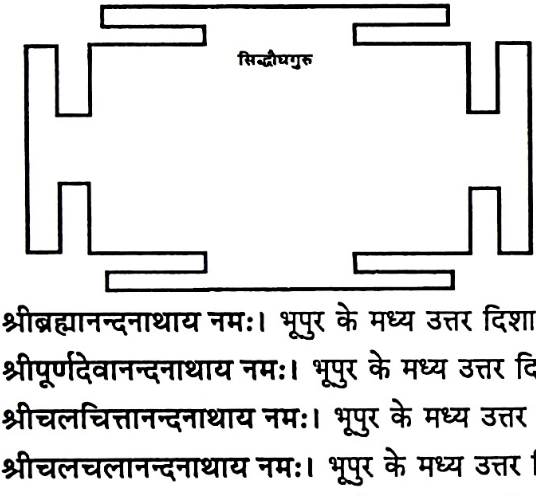

ॐ ह्रीँ वँ श्रीब्रह्मानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीपूर्णदेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचलचित्तानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचलचलानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकुमारानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीक्रोधानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवरदानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीस्मरदीपानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमायाम्बायै नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमायावत्याम्बायै नमः। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

मानवौघादिगुरुणां विन्यासम्—वायव्य कोण में मानवौघगुरुओं का विन्यास करे—

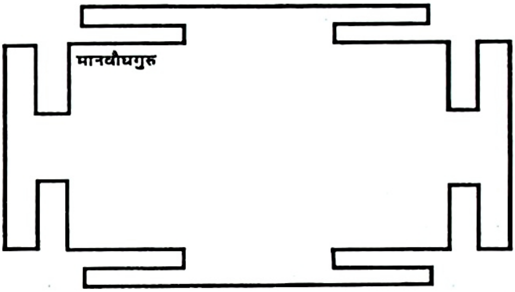

ॐ ह्रीँ वँ श्रीविमलानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीकुशलानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमत्सेनानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसुधाकरानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीप्रह्लादानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसनकानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीवसिष्ठानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीबोधानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमीनानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीगोरक्षानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीभोजदेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीप्रजापत्यानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमूलदेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीरन्तिदेवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीविघ्नेशरानन्दनाथाय नमः। भूपुर के गध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीहुताशनानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसमयानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसन्तोषानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीनिजगुरवानन्दनाथाय नमः। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

त्रिकोणे

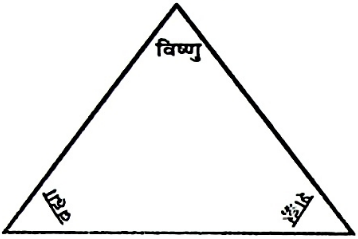

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ विष्णवे नमः विष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ शङ्कराय नमः शङ्करश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

पञ्चकोणे

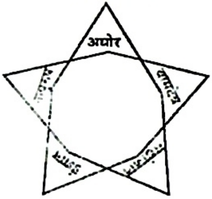

ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय नमः ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ तत्पुरुषाय नमः तत्पुरुषश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अघोराय नमः अघोरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वामदेवाय नमः वामदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सद्योजाताय नमः सद्योजातश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अन्तः पञ्चकोणे

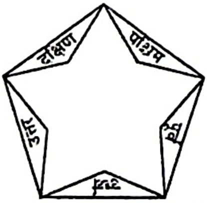

ॐ ह्रीँ वँ ऊर्ध्ववक्त्राय ईशानाय नमः ऊर्ध्ववक्त्रईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ उत्तरवक्त्राय तत्पुरुषाय नमः उत्तरवक्त्रतत्पुरुषश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ दक्षिणवक्त्राय अघोराय नमः दक्षिणवक्त्रअघोरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पश्चिमवक्त्राय वामदेवाय नमः पश्चिमवक्त्रायवामदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ पूर्ववक्त्राय सद्योजाताय नमः पूर्ववक्त्रसद्योजातश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षडदले

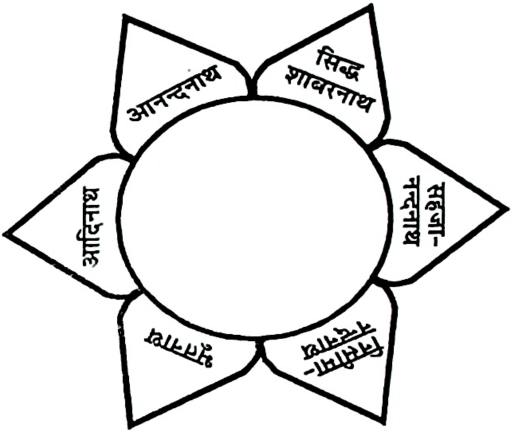
आनन्दनाथ
सिद्ध शावरनाथ
सहजा-नन्दनाथ
निसीमा-नन्दनाथ
भूतनाथ
आदिनाथ

ॐ ह्रीँ वँ भूतनाथाय नमः भूतनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आदिनाथाय नमः आदिनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आनन्दनाथाय नमः आनन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सिद्धशाबरनाथाय नमः सिद्धशाबरनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सहजानन्दनाथाय नमः सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ निःसीमानन्दनाथाय नमः नन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अन्तः षडदले

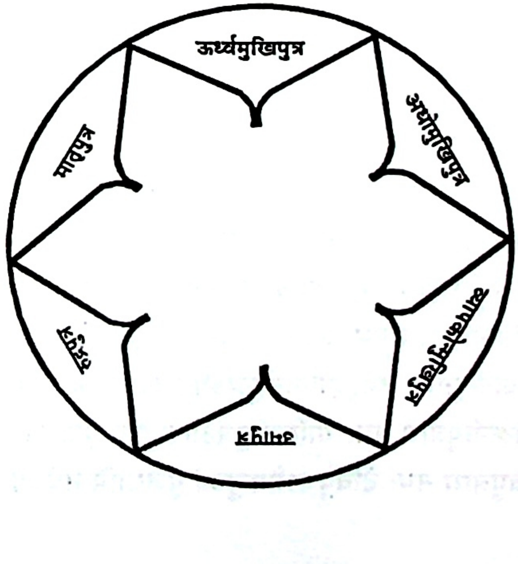
ऊर्ध्वमुखिपुत्र
अधोमुखिपुत्र
व्यापकोन्मुखिपुत्र
उमापुत्र
रुद्रपुत्र
मातपुत्र

ॐ ह्रीँ वँ उमापुत्राय नमः उमापुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ रुद्रपुत्राय नमः रुद्रपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ मातृपुत्राय नमः मातृपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऊर्ध्वमुखिपुत्राय नमः ऊर्ध्वमुखिपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ अधोमुखिपुत्राय नमः अधोमुखिपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ व्यापकोन्मुखिपुत्राय नमः व्यापकोन्मुखिपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अष्टकोणे

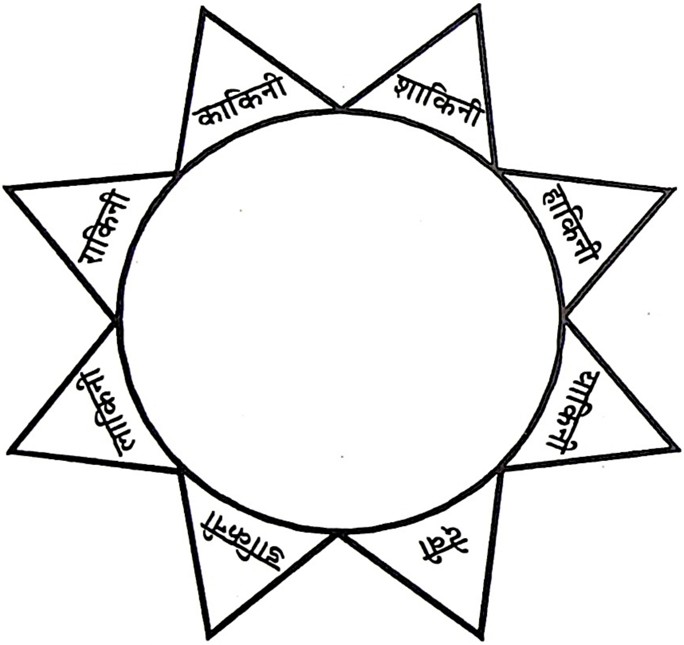

ॐ ह्रीँ वँ डाकिनीपुत्राय नमः डाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ राकिनीपुत्राय नमः राकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ लाकिनीपुत्राय नमः लाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ काकिनीपुत्राय नमः काकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ शाकिनीपुत्राय नमः शकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ हाकिनीपुत्राय नमः हाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ याकिनीपुत्राय नमः याकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ देविपुत्राय नमः देविपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अन्तःअष्टकोणे

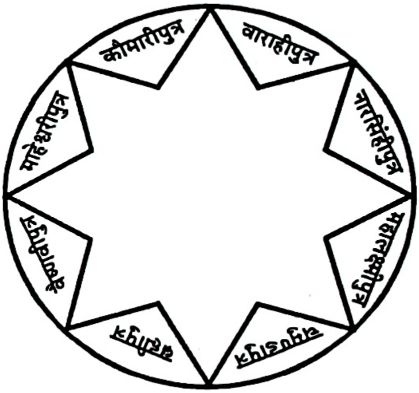
कौमारीपुत्र
वाराहीपुत्र
माहेश्वरीपुत्र
नारसिंहिपुत्र
वैष्णवीपुत्र
ऐन्द्रीपुत्र
ब्रह्मीपुत्र
चामुण्डापुत्र

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मीपुत्राय नमः ब्रह्मीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ वैष्णवीपुत्राय नमः वैष्णवीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ माहेश्वरीपुत्राय नमः महेश्वरीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ कौमारीपुत्राय नमः कौमारीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ वाराहीपुत्राय नमः वाराहीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ नारसिंहिपुत्राय नमः नारसिंहिपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऐन्द्रीपुत्राय नमः ऐन्द्रीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ चामुण्डापुत्राय नमः चामुण्डापुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अष्टदले

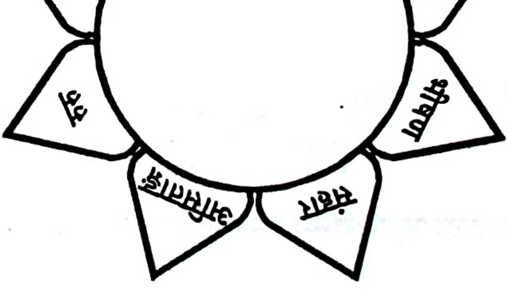
क्रोध
उन्मत्त
चण्ड
कपाल
रुरु
भीषण
असितांग
संहार

ॐ ह्रीँ वँ असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कपालभैरवाय नमः कपालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ संहारभैरवाय नमः संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षोडशकोणे

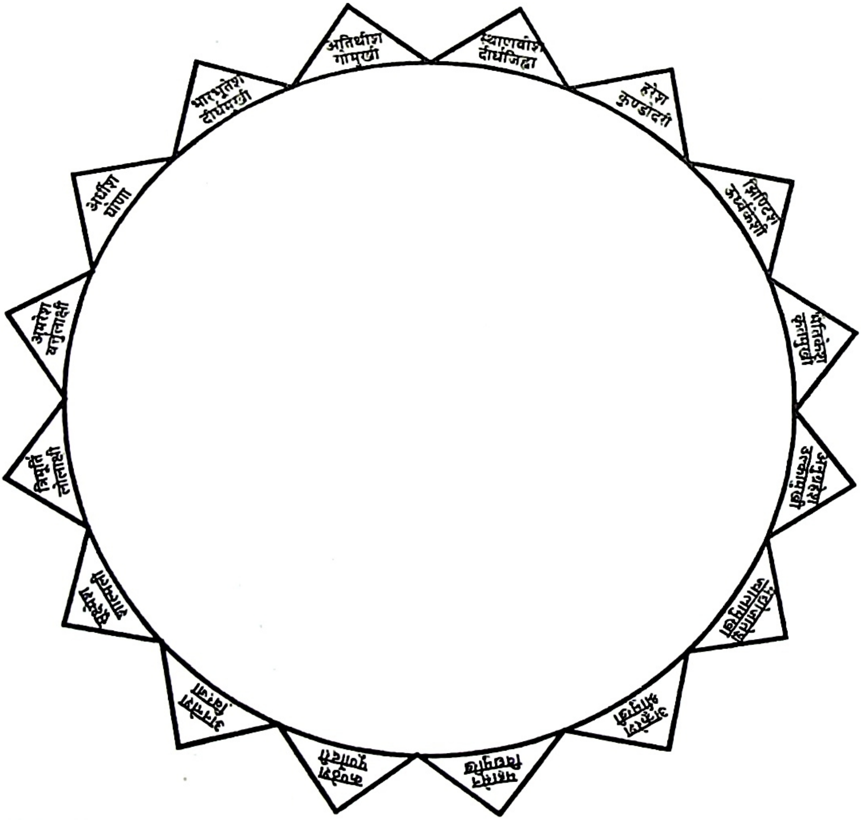
अतिर्थीश गोमुखी
स्थाणवीश दीर्घजिह्वा
हरेश कुण्डोदरी
झिण्टीश ऊर्ध्वकेशी
भौतिकेश कृतमुखी
अनुग्रहेश उल्कामुखी
सद्योजातेश ज्वालामुखी
अक्रूरेश श्रीमुखी
महासेन विद्यमुखि
कण्ठेश पूर्णोदरी
अनन्तेश विरजा
सूक्ष्मेश शाल्मली
त्रिमूर्ति लोलाक्षी
अमरेश वर्तुलाक्षी
अर्घीश घोणा
भारभूतेश दीर्घमुखी

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः श्रीकण्ठेशपूर्णोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीअनन्तेशविरजाभ्यां नमः श्रीअनन्तेशविरजा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीसूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः श्रीसूक्ष्मेशशाल्मली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमः श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीअमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः श्रीअमरेशवर्तुलाक्षी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीअर्धीशघोणाभ्यां नमः श्रीअर्धीशघोणा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीभारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां नमः श्रीभारभूतेशदीर्घमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीअतिथीशगोमुखीभ्यां नमः श्रीअतिथीशगोमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीहरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः श्रीहरेशकुण्डोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीभौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः श्रीभौतिकेशविकृतमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीसद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः श्रीसद्योजातेशज्वालामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखीभ्यां नमः श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीअक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः श्रीअक्रूरेशश्रीमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीमहासेनविद्यामुखीभ्यां नमः श्रीमहासेनविद्यामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अन्तः षोडशकोणे

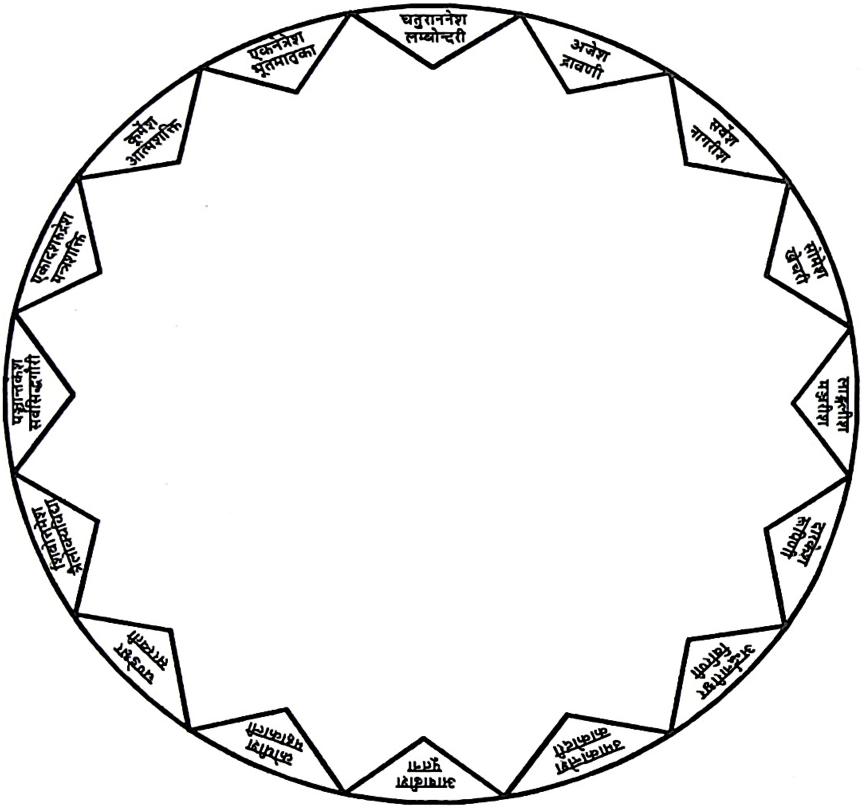
चतुराननेश
लम्बोन्दरी
अजेश
द्रावणी
सर्वेश
नागरीश
सोमेश
खेचरी
लाङ्गलीश
मञ्जरीश
दारुकेश
रूपिणी
अर्द्धनारीश्वर
विरिणी
उमाकान्तेश
काकोदरी
आषाढीश
पूतना
क्रोधीश
महाकाली
चण्डेश
सरस्वती
शिवोत्तमेश
त्रैलोक्यविद्या
पञ्चान्तकेश
सर्वसिद्धगौरी
एकादशरुद्रेश
मन्त्रशक्ति
कूर्मेश
आत्मशक्ति
एकनेत्रेश
भूतमातृका

ॐ ह्रीँ वँ श्रीक्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः श्रीक्रोधीशमहाकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः श्रीचण्डेशसरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः श्रीकूर्मेशात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीएकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः श्रीएकनेत्रेशभूतमातृ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः श्रीचतुराननेशलम्बोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीअजेशद्रावणीभ्यां नमः श्रीअजेशद्रावणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसर्वेशनागरीभ्यां नमः श्रीसर्वेशनागरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसोमेशखेचरीभ्यां नमः श्रीसोमेशखेचरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीलाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः श्रीलाङ्गलीशमञ्जरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीदारकेशरूपिणीभ्यां नमः श्रीदारकेशरूपिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीअर्द्धनारीशवीरिणीभ्यां नमः श्रीअर्द्धनारीशवीरिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीउमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः श्रीउमाकान्तेशकाकोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीआषाढीशपूतनाभ्यां नमः श्रीआषाढीशपूतनाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षोडशपत्रे

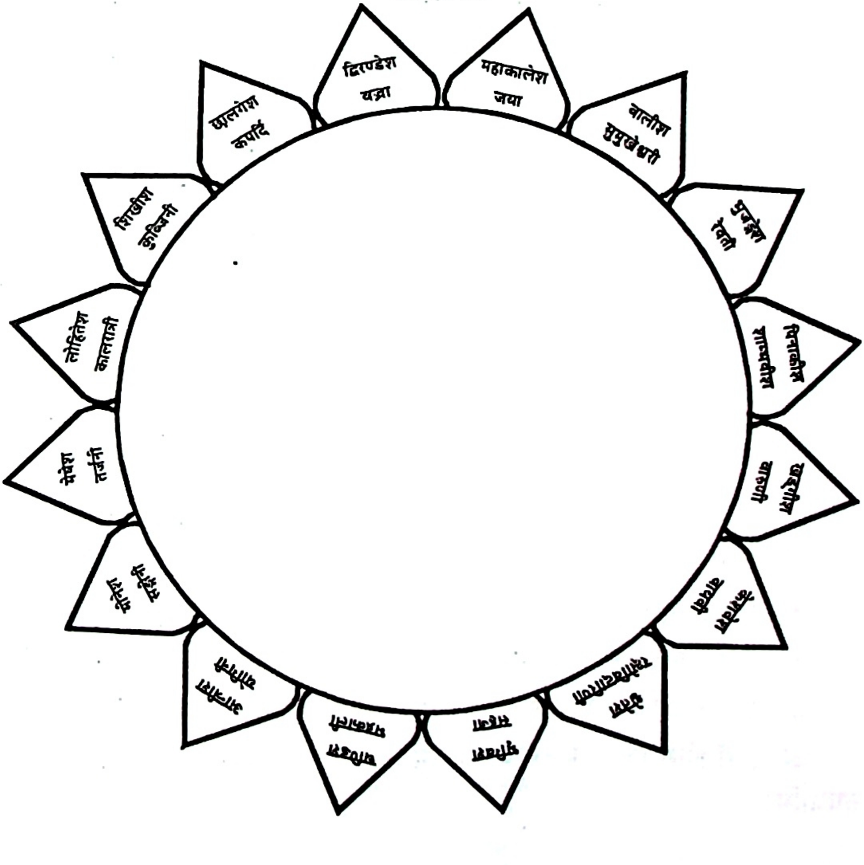
द्विरण्डेश वज्रा
महाकालेश जया
बालीश सुमुखेश्वरी
भुजङ्गेश रेवती
पिनाकीश माधवीश
खड्गीश वारुणी
केशवेश वायवी
श्वेतेश रक्षोविदारिणी
भृग्विश सहजा
चण्डेश भद्रकाली
आन्त्रीश योगिनी
मीनेश शङ्खिनी
मेषेश तर्जनी
लोहितेश कालरात्री
शिखीश कुब्जिनी
छलगेश कपर्दि

ॐ ह्लीँ वँ श्रीचण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः श्रीचण्डीशभद्रकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीआन्त्रीशयोगिनीभ्यां नमः श्रीआन्त्रीशयोगिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीमीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः श्रीमीनेशशङ्खिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीमेषेशतर्जनीभ्यां नमः श्रीमेषेशतर्जनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीलोहितेशकालरात्रीभ्यां नमः श्रीलोहितेशकालरात्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीशिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः श्रीशिखीशकुब्जिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीछागलण्डेशकपर्दिभ्यां नमः श्रीछागलण्डेशकपर्दि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीद्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः श्रीद्विरण्डेशवज्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीमहाकालेशजयाभ्यां नमः श्रीमहाकालेशजया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीबालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः श्रीबालीशसुमुखेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीभुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः श्रीभुजङ्गेशरेवती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीपिनाकीशमाधवीभ्यां नमः श्रीपिनाकीशमाधवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीखड्गीशवारुणीभ्यां नमः श्रीखड्गीशवारुणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीकेशवेशवायवीभ्यां नमः श्रीकेशवेशवायवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां नमः श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीभृग्वीशसहजाभ्यां नमः श्रीभृग्वीशसहजा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीनकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः श्रीनकुलीशलक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीशिवेशव्यापिनीभ्यां नमः श्रीशिवेशव्यापिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीँ वँ श्रीसंवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः श्रीसंवर्तकेशमहामाया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

भूपुरे

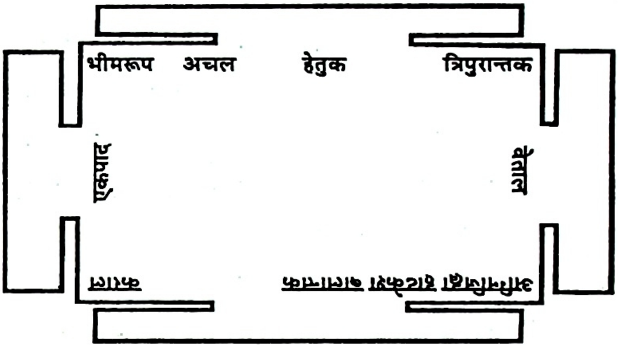
भीमरूप
अचल
हेतुक
त्रिपुरान्तक
एकपाद
वेताल
कराल
कालान्तक
हाटकेश
अग्निजिह्वा

ॐ ह्रीँ वँ हेतुकाय नमः हेतुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वेतालाय नमः वेतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्निजिह्वाय नमः अग्निजिह्वाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कालान्तकाय नमः कालान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ करालाय नमः करालायश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ एकपादाय नमः एकपादश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ भीमरूपाय नमः भीमरूपश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अचलाय नमः अचलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ हाटकेशाय नमः हाटकेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

भूपुरे

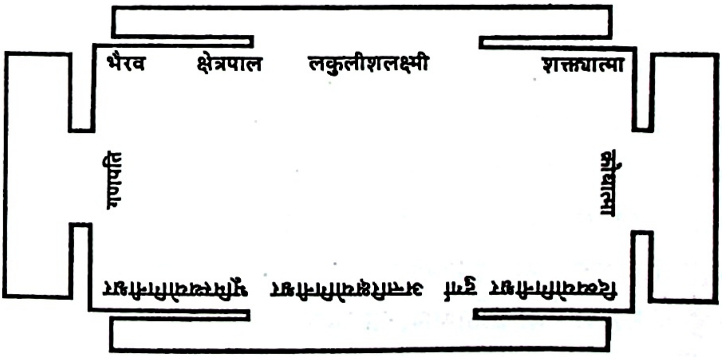
भैरव
क्षेत्रपाल
लकुलीशलक्ष्मी
शक्तयात्मा
गणपति
कोधात्मा
भूमिस्थयोगिनीश्वर
अन्तरिक्षयोगिनीश्वर
दुर्गा
दिव्ययोगिनीश्वर

ॐ ह्रीँ वँ लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः लकुलीशलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ शक्त्यात्मने नमः शक्त्यात्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्रोधात्मने नमः क्रोधात्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ दिव्ययोगिनीश्वरेभ्यो नमः दिव्ययोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अन्तरिक्षयोगिनीश्वरेभ्यो नमः अन्तरिक्षस्थयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ भूमिस्थयोगिनीश्वरेभ्यो नमः भूमिस्थयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ गणपतये नमः गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय नमः भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ दुर्गायै नमः दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

भूपुरे

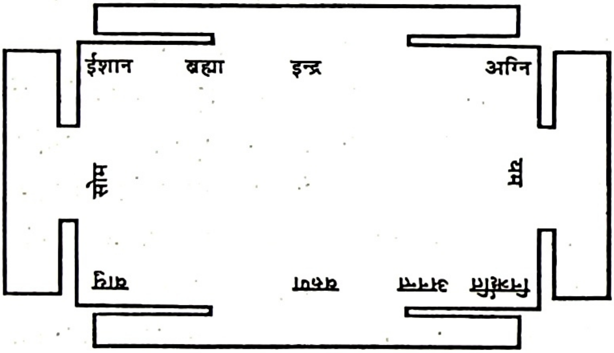

ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये नमः अग्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ यमाय नमः यमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाय नमः वरुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वायवे नमः वायुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सोमाय नमः सोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय नमः ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय नमः अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

तत्रैव

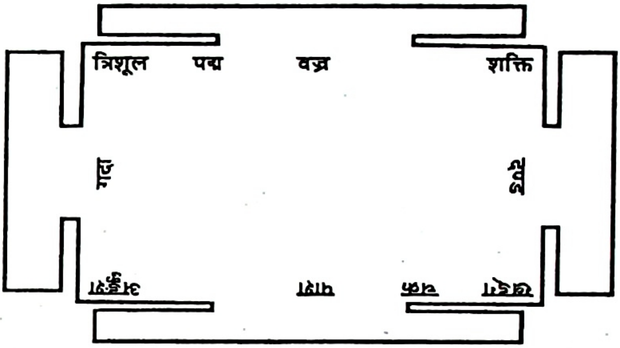

ॐ ह्रीँ वँ वज्राय नमः वज्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ शक्तये नमः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ दण्डाय नमः दण्डश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ खड्गाय नमः खड्गश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ पाशाय नमः पाशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ अङ्कुशाय नमः अङ्कुशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ गदायै नमः गदाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ त्रिशूलाय नमः त्रिशूलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ पद्माय नमः पद्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ चक्राय नमः चक्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

पाद्यपात्रस्थापनम्

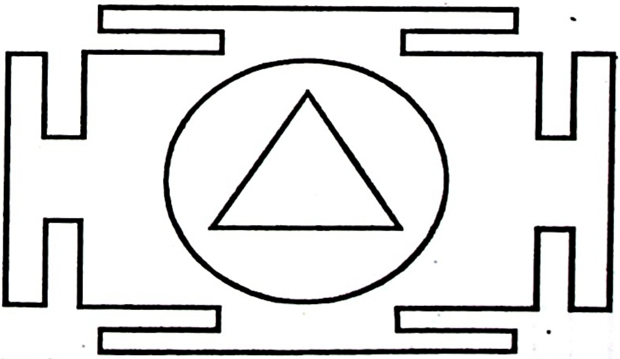

विशेषार्घ्यपात्र के बायें पाद्यपात्र के लिए त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मक आधार रख कर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवपाद्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। जलपूर्ण करे।

ॐ ह्रीँ वँ वषट्। पुष्प छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। गन्ध, उशीर, रोचना, श्यामाक, विष्णुकान्ता, पुष्प, दूर्वा डालकर अस्त्रमन्त्र से आठबार अभिमन्त्रितकर पुनः मूलमन्त्र से अभिमन्त्रितकर धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर पूर्ववत् संस्कार करना चाहिए।

आचमनीयपात्रस्थापनम्

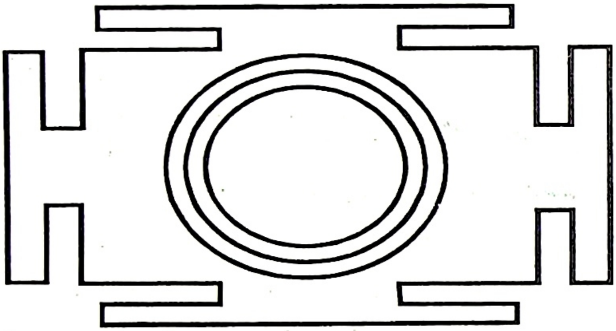

पाद्यपात्र के सन्निकट निर्दिष्टमण्डल वृत्तत्रय तथा भूपुर पर आचमनीय पात्र स्थापित कर पूर्ववत् संस्कार करना चाहिए।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवाचमनीयपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। जलपूर्ण करे।

ॐ ह्रीँ वँ वषट्। पुष्प छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ नमः।

गन्ध, जातीफल, कपूर, कंकोल, लवंग इत्यादि डालकर अस्त्रमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित कर पुनः मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित कर धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर पूर्ववत् संस्कार करना चाहिए।

गुरुपात्रस्थापनम्

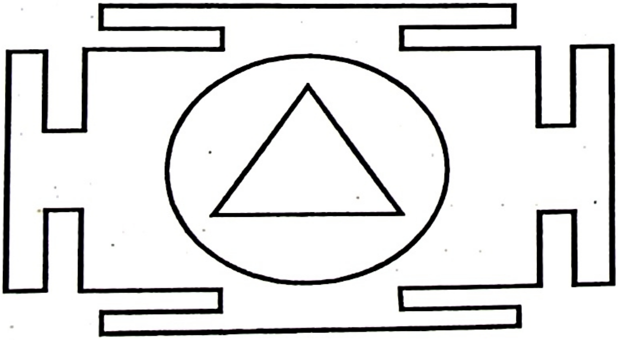

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवगुरुपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। जलपूर्ण करे।

ॐ ह्रीँ वँ वषट्। पुष्प छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। गन्ध, उशीर, रोचना, श्यामाक, विष्णुकान्ता, पुष्प, दूर्वा डालकर अस्त्रमन्त्र से आठबार अभिमन्त्रितकर पुनः मूलमन्त्र से अभिमन्त्रितकर धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर पूर्ववत् संस्कार करना चाहिए।

वीरपात्रस्थापनम्

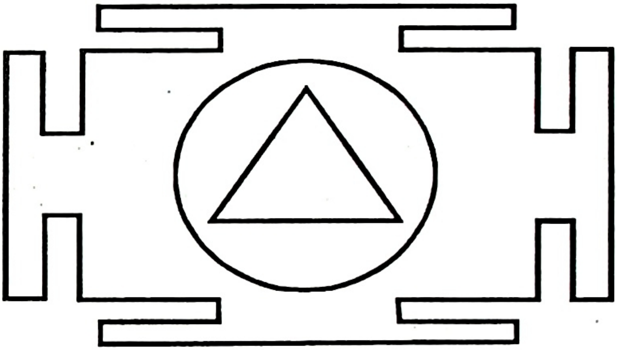

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरववीरपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। जलपूर्ण करे।

ॐ ह्रीँ वँ वषट्। पुष्प छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। गन्ध, उशीर, रोचना, श्यामाक, विष्णुकान्ता, पुष्प, दूर्वा डालकर अस्त्रमन्त्र से आठबार अभिमन्त्रितकर पुनः मूलमन्त्र से अभिमन्त्रितकर धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर पूर्ववत् संस्कार करना चाहिए।

इसी प्रकार मधुपर्क, स्नानीय, आभूषणादि स्थापित कर सभी को श्रीपात्र के जल से मार्जन कर अभिमन्त्रित कर धेनुमुद्रा प्रदर्शित करे। इस प्रकार सभी पदार्थों को संस्कार पूर्वक पवित्र कर लेने के बाद विशेषार्घ्य के जल से अपने सिर पर भैरव तथा भैरवी का तर्पण कर हृदय स्थान पर लेलिहानमुद्रा (अनामिका एवं अङ्गुष्ठ को मिलाकर) तीन बार तर्पण करे।

श्रीपात्रादिसंस्कारं परिपूर्णम्

❀

क्षेत्रकीलनम्

पीपल, गुलर, प्लक्ष, खैर में से किसी भी काष्ठ की वितस्त मात्र कील लेकर सुदर्शनास्त्र की प्रतिष्ठा करके सुदर्शनास्त्र से अष्टोत्तरशत अभिमन्त्रित करे।

ॐ ह्लीँ वँ आँ ह्लीं क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् कीले सुदर्शनास्त्र देवतायाः प्राणा इह प्राणाः। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ आँ ह्लीं क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् कीले सुदर्शनास्त्र देवतायाः जीव इह स्थितः। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्लीँ वँ आँ ह्लीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् कीले सुदर्शनास्त्र देवतायाः सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। लेलिहान मुद्रा से हृदय स्पर्श करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् कीले सुदर्शनास्त्र देवतायाः गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

ॐ ह्लीँ वँ नमः सुदर्शनास्त्राय फट्। १०८ बार अभिमन्त्रित करे।

ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु॥१॥

जो यहाँ भूमि, अन्तरिक्ष और दिव्यलोकों में हमारे मन्त्र सिद्धि में विघ्न करनेवाले भूतप्रेतादि हैं।

मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे॥२॥

सभी भूतप्रेतादि इस स्थान को त्याग कर दूर कहीं चले जायें इस क्षेत्र को मैं कीलित कर रहा हूँ जिससे हमें निर्विघ्न सिद्धि प्राप्त हो॥२॥

ॐ ह्लीँ वँ नमः सुदर्शनास्त्राय फट्। मन्त्रों के पाठपूर्वक दशों दिशाओं में कीलों को गाड़े। प्रत्येक कीलों का यथोपचार पूजन करने के बाद दिक्पाल, क्षेत्रपाल, गणपति, योगिनी, वटुक को बलि प्रदान करे।

क्षेत्रकीलनं परिपूर्णम्

✿

क्षेत्रकीलनाङ्गबलिदानम्

वटुकबलिः

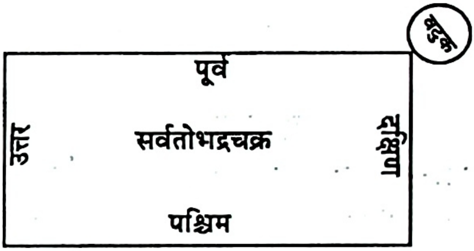

चक्र के ईशानकोण में वटुक के लिए बलि प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। ईशानकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथकपिलजटा भार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशयनाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वर वरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा एष बलिर्वटुकाय नमः।

प्रार्थना

ॐ करकलित-कपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुण-तिमिर-नीलः व्याल-यज्ञोपवीती।
क्रतु-समय-सपर्या-विघ्न-विच्छेद-हेतुः ,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥१॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्थावाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालों वाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।।१।।

भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्यपाप शोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥१॥

भूतसङ्घ के नायक, विशालकीर्ति प्रदान करनेवाले, काशीवासियों के पुण्यपाप के शोधक, नीतिमार्ग के समर्थक, पुरातन, जगत् के पति, काशीपुरी के स्वामी कालभैरव की स्तुति करता हूँ।।२।।

पुष्पाञ्जलिः

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः॥

बलिदान से सभी सिद्धियों को देने वाले भूतवेतालों से सेवित बटुकभैरव प्रसन्न हो और सदैव हमें शान्ति प्रदान करें।

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन वटुकभैरवः प्रीयतां न मम।**

योगिनीबलिः

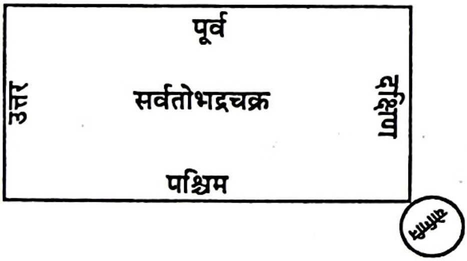

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र को अग्नि कोण में रखे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके सङ्कल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो नमः सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्रसर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वर वरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा एष बलिर्योगिनीभ्यो नमः।

प्रार्थना

ॐ ऊर्ध्वब्रह्माण्डतोया दिविगगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिभिः पातु वीरेन्द्रवन्द्या॥

ऊपर ब्रह्माण्ड में, जल में, पाताल में, द्युलोक में, आकाश में, भूतल पर, निष्कल अवस्था में, स्थल पर, अनल में, सुन्दर शीतल पवन में जहाँ तहाँ रहनेवाली योगिनी वर्ग, क्षेत्र, पीठ, उपपीठ, दिशाओं में रहनेवाली, धूप दीपादि के द्वारा पूजित होकर, प्रसन्न होकर, वीरों के द्वारा पूजित योगिनियाँ प्रसन्न हों और सभी प्रकार का शुभ प्रदान करें।

पुष्पाञ्जलिः

योगिनीयोगमाया च योगिनां सिद्धिदायिनी।
षड्चक्रभेदिनी देवि सर्वविघ्नविनाशिनी॥१॥

योगमायायोगिनी, योगियों को सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करनेवाली, षड्चक्रों का भेदन करनेवाली, सभी विघ्नों का विनाश करनेवाली॥१॥

योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्यमहातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी॥२॥

सभी भैरवों को मोहित करनेवाली योगमाया योगिनी, सभी प्रकार की बलशालिनी महानतम तेजवाली, सभी हमें शुभ प्रदान करें॥२॥

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरा परात्पराः।
द्यु-व्योम-भूमिचारिण्यः सर्वाः प्रीतास्तु मे सदा॥३॥

जो कोई योगिनी रौद्र, सौम्या, घोर, परात्परा, द्युव्योमभूमिचारी समस्त योगिनियाँ सभी प्रसन्न होकर हमें शुभता प्रदान करे॥३॥

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।**

योगिनी बलिदान प्रदान करने के बाद गणेश के लिए बलिदान प्रदान करे।

गणेशबलिः

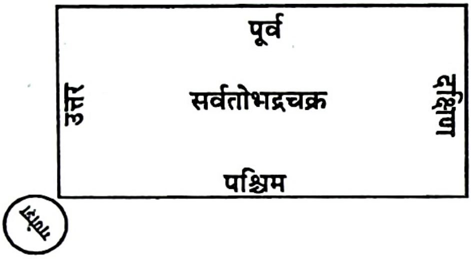

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैर्ऋत्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय नमः भो गणेश! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वर वरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्ययमिति च परं यत् स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दूर-मूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति॥१॥

ओंकार त्रय रूप से परमतुरीय जो ब्रह्मरूप, सत्त्वरजतम तीनों गुणों से अतीत रूपोंवाले, मन से भी तेज, सिन्दूर के रूप (वर्ण) वाले, जिसकी मूर्तिमान, योगियों के द्वारा वन्द्य, सकल गुणों के खान, ब्रह्मरन्ध्र में रहनेवाले, श्रीहरि के साथ गं गं गं गं बीजरूपी गज मुखवाले व्यापक गणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

विदेहरूपं भवबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदन्तम्।
अमेयसांख्येन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्तियुतं भजामः॥२॥

विदेहरूपवाले, भवसागर के बन्धन को समाप्त करनेवाले, सदा अपने (ब्रह्मभाव) में ही स्थित रहनेवाले, आत्म सुख को प्रदान करनेवाले, माया विहीन, सांख्य के द्वारा बोधगम्य, ईश्वर गजानन का भक्ति पूर्वक भजन करता हूँ।।२।।

कल्पद्रुमाधः स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणिशुण्डम्।
विभ्राणमत्यद्भुतचित्तरूपं यः पूजयेत् तस्य समस्तसिद्धिः॥३॥

कल्पवृक्ष के समान, कामधेनु के सदृश, कामनाओं की पूर्ति करने में दक्ष, चित्त में अतिअद्भुत रूप से जो पूजन करता है, उसकी समस्त कामनायें सिद्धि होती हैं।।३।।

पुष्पाञ्जलिः

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः॥१॥

सांख्यरूपमय पूर्ण ब्रह्म गजानन, बिना देह के निष्कल भाव से सर्वत्र संस्थित, हे गणेश! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है।।१।।

अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विघ्नेशाय नमो नमः॥२॥

माया विहीन, परशु धारण करनेवाले, हेरम्ब, मूषक जिसका वाहन है, सम्पूर्ण विश्व के मालिक आपको नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है।।२।।

अनन्तविभवायैव परेशां पररूपिणे।
शिवपुत्राय देवाय गुहाग्रजाय ते नमः॥३॥

अनन्तविभवों से युक्त, परमेश्वर, परस्वरूपवाले, शिव के पुत्र, गुहाग्रज देवता के लिए नमस्कार है।।३।।

पार्व्रतीनन्दनायैव देवानां पालकाय ते।
सर्वेषां पूज्यदेहाय गणेशाय नमो नमः॥४॥

पार्वतीनन्दन, देवताओं के पालक, सभी शरीरधारियों में परमपूज्य श्रीगणेश को नमस्कार है।।४।।

स्वानन्दवासिने तुभ्यं शिवस्य कुलदैवत।
विष्ण्वादीनां विशेषेण कुलदेवाय ते नमः॥५॥

अपने आनन्द में वास करनेवाले, शिव के कुल में उत्पन्न, विष्ण्वादि देवताओं में विशेष, कुलदेवता परमपूज्य श्रीगणेश को नमस्कार है।।५।।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।**

गणेश के बलिदान प्रदान करने के बाद क्षेत्रपाल के लिए बलिदान प्रदान करे।

क्षेत्रपालबलिः

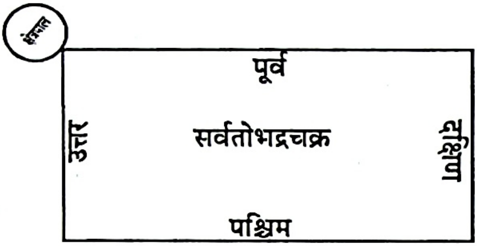

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। वायव्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करके समर्पित करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः भो स्थानक्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वर वरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्त्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारकौस्तुभधरं शीतांशुचण्डोज्ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥१॥

उदयकालीन सूर्य के समान प्रकाशमान, तीन नेत्रवाले,अङ्गों में रक्त सुगन्धित विविध अङ्गराग का अनुलेपन किये हुए, मन्द मन्द मुस्कान विखेरते हुए मुख मण्डलवाले, वर, अभय, कपाल, शूल हाथों में धारण किये हुए, आकाशीय नील ग्रीवावाले, उदार, कौस्तुभ-मणि धारण किये हुए, शिर पर शीतल द्वितीया का चन्द्र धारण किये हुए, बन्धूक पुष्प के रंग के समान वस्त्र धारण किये हुए, समस्त भय का हरण करनेवाले, भैरव देवता का ध्यान करता हूँ॥१॥

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्तिं शुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥२॥

यक्षरूप वदनवाले, दशों दिशाओं में भूमि को कम्पित करनेवाले, संहार के मूर्ति चन्द्रबिम्बवाले सुन्दर शुभमुकुट को धारण करनेवाले, जटा जिसके सिर पर स्थित है, दीर्घ शरीरवाले, विशाल नखमुखवाले, ऊपर की तरफ उठे हुए विकराल रोमोंवाले, समस्त पापों का स्मरण मात्र से नष्ट करनेवाले, क्षेत्रपाल भैरव को सतत प्रणाम करता हूँ॥२॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं, अनुज्ञां दातुमर्हसि॥१॥

तीक्ष्ण दातोंवाले, महाकाय, कल्पान्त में सृष्टि का संहार करनेवाले, भैरव को नमस्कार है, हे भैरव! हमें पूजन की अनुमति प्रदान करें तथा हमारी सर्वत्र सर्वदा रक्षा करें॥१॥

ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥२॥

इस क्षेत्र के निवासी क्षेत्रपाल के सेवकगण हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलिदान से सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥२॥

ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादेव पलायन्ते क्षेत्रेश तव दर्शनात्॥३॥

हे क्षेत्रपाल! त्रिलोक में विचरण करनेवाले ग्रहभूतपिशाचादि आपके दर्शनमात्र से दूर से ही भाग जाते हैं॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वरबलिः

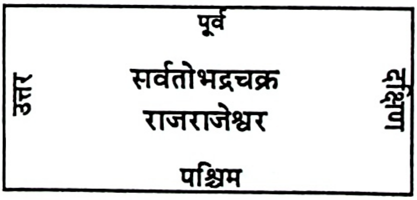

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः ह्सौँ स्हौँ राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥

हे मस्तक की जटाओं में चन्द्रमा को धारण करनेवाले! हे कामदेव का दहन करनेवाले! त्रिशूल धारण करनेवाले! हे स्थाणु! हे पर्वतों के ईश्वर! हे गिरिजा के पति! हे महा ईश्वर! हे समस्त भूतों का कल्याण करनेवाले! भूतगणों के मालिक! समस्त भयों का नाश करनेवाले हमारे नाथ! इस संसार के गहन दुःखों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥१॥

हे पार्वती हृदयबल्लभ चन्द्रमौले भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भवरुद्र पिनाकपाणे संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥

हे पार्वती के हृदय में निवास करनेवाले! हे चन्द्रमौलि! भूतों के अधिपति! प्रमथादि गणों के नाथ! हे गिरीश! हे वामदेव! हे भव! हे रुद्र! हे पिनाक धनुष को हाथ में धारण करनेवाले! इस संसार के गहन दुःखों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥

हे नीलकण्ठ! हे वृषभध्वज! हे पञ्चवक्त्र! हे लोकों के स्वामी! हे प्रलय काल में भी शेष रहनेवाले! हे प्रमथादि गणों के ईश्वर! हे शर्व! हे धूर्जटि! हे पशुपति! हे गिरिजा के पति! इस संसार के गहन दुःखों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

गौरीविलास-भुवनाय महेश्वराय पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥

गौरी के साथ सम्पूर्ण भुवन में विलास करनेवाले, महेश्वर, पाँच मुखोंवाले, शरण में

आनेवाले भक्तों की रक्षा करनेवाले, हे शर्व! समस्त जगत् के अधिपति, मैं अपने दुःख-दारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥१॥

भक्तिप्रियाय भयरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥

भक्ति से प्रसन्न होनेवाले, भय-रोगादि को हटानेवाले, उग्रस्वरूप दुर्गम भवसागर से तरने के लिए, गुणों के द्वारा प्रसिद्धि पानेवाले, ज्योतिमय, मैं अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥२॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥३॥

रघुकुल नाथ श्रीराम को परमप्रिय लगनेवाले तथा वरप्रदान करनेवाले, नाग से प्रेम करनेवाले तथा नरक रूपी महासमुद्र से तारनेवाले, देवताओं के द्वारा सदैव अर्चित, पुण्यों में परमपुण्य स्वरूप महेश्वर का अपने दुःक्षदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए हे शिव! अपको नमस्कार है॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वरः प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वर बलिदान के बाद उत्तर दिशा में काल के लिए बलिदान प्रदान करे।

कालबलिदानम्

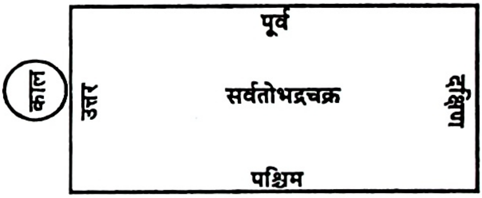

ॐ ह्रीं वँ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से उत्तरदिशा बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ह्रीं वँ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीं वँ कालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीं वँ कालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ ह्रीं वँ कालबलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीं वँ कालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ काल! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वंजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

एह्येहि दण्डायुधधर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र।
विशालवक्षःस्थलउग्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

हे हाथों में दण्डरूपी आयुध धारण करनेवाले धर्मराज! काले-काले अञ्जन के समान विशाल नेत्रोंवाले, विशाल वक्षःस्थलवाले और भयङ्कर रूपवाले आपको नमस्कार है, हमारी पूजा को ग्रहण करे।

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

कालाय कालरूपाय कालाञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं कालदेव नमोऽस्तु ते॥१॥

काल, कालरूप, काले अञ्जन के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में वास करनेवाले, कालरूपी देव आपको नमस्कार है॥१॥

यमो निहन्तापितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः।
प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतान्त एतद्दशभिर्जपन्ति॥२॥

यम, निहन्ता, पितृ, धर्मराज, वैवस्वत, दण्डधारी, काल, प्रेताधिपति नामों को धारण करनेवाले हमारे ऊपर कृपावान् हो तथा हम इस दीनदशा में आपका यजन करते हैं आप हमारे ऊपर कृपा करें॥२॥

धर्मराजमहाबाहो दक्षिणाधिपतये नमः।
रक्तेक्षणमहाबाहो मम पीड़ां निवारय॥३॥

हे महाबाहु धर्मराज! दक्षिण दिशा के अधिपति आपको नमस्कार है, आप इसी क्षण हमें हमारे पीड़ाओं का निवारण किजिए॥३॥

मृत्यवे मृत्युरूपाय दक्षिणदिशिकृतावासम्।
यमराजमहाबाहो मम पीड़ां निवारय॥४॥

हे मृत्युरूप मृत्युदेव! दक्षिण दिशा में वास करनेवाले, हे महाबाहु यमराज हमें हमारे पीड़ाओं से निवारण किजिए॥४॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीकालः प्रीयतां न मम।

काल के लिए बलिदान के बाद दक्षिण दिशा में मृत्यु के लिए बलिदान करे।

मृत्युबलिदानम्

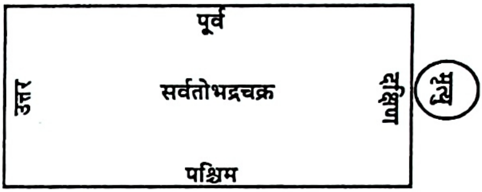

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से दक्षिणदिशा में बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्यु! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समं विग्रह अन्तरूप।
अन्तविरूपे विनियोगकारी मृत्युस्वरूपाय नमो नमस्ते॥

हे अन्तरूप! इस अनन्त संसार रूपी महासमुद्र में फँसें हुए हमारी रक्षा किजिए, हे अन्तरूप! हे विरूप! विनियोग करनेवाले, हे मृत्युस्वरूप! आपको नमस्कार है।

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जिलि प्रदान करे—

मृत्यवे मृत्युरूपाय अन्ताञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं मृत्युदेव नमोऽस्तु ते॥

हे मृत्यु! हे मृत्युरूप! जीवन का अन्त करनेवाले, घोर अन्धकार के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में रहनेवाले मृत्युदेव आपको नमस्कार है।

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीमृत्युः प्रीयतां न मम।

दिग्पालादिबलिदानम्

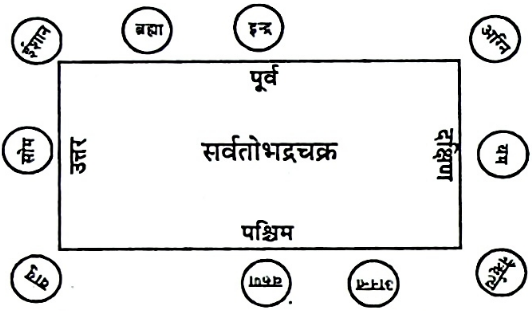

वटुकादि बलिदान के बाद पुरश्चरण गृह अथवा मण्डप के बाहर चारों तरफ दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे, पूर्व में इन्द्र, अग्निकोण में अग्नि, दक्षिण में यम, नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायुकोण में वायु, उत्तर में सोम, ईशानकोण में ईश्वर तथा पूर्व और ईशानकोण के बीच में ब्रह्मा तथा अन्त में नैर्ऋत्यकोण तथा पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलिदान समर्पित करे।

ऐरावतसमारूढो ब्रज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मादिन्द्राय ते नमः॥

ऐरावत हाथी पर समारूढ, वज्र हाथ में धारण किये हुए, महाबली, सौ अश्वमेध यज्ञ करनेवाले देवराज इन्द्र आपको नमस्कार है।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्तं रक्षराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु

खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं ताराराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

प्रार्थना

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः, वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्मा-अनन्त-सहिताः, प्रसीदन्तु सदा मम॥१॥

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायु-सोम-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त सदा हमारे ऊपर प्रसन्न रहे॥१॥

पायसो-बलिदानेन, सन्तुष्टः सर्वदा भवेत्।
तेषां बलिं प्रयच्छामि, भवन्तु प्रीतिः सर्वदा॥२॥

पायस के बलिदान से प्रसन्न होनेवाले, सर्वदा सन्तुष्टि और प्रसन्नता के लिए बलि समर्पित करता हूँ इस बलिदान से सदैव प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करें॥२॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन दशदिग्पालाः प्रियन्तां न मम।**

दशदिग्पालादि बलिदान प्रदान के बाद घर के भवन के बाहर जाकर भूतादि बलिदान

प्रदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान कभी न प्रदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान करने से दोष एवं हानि होता है।

भूतादिबलिः

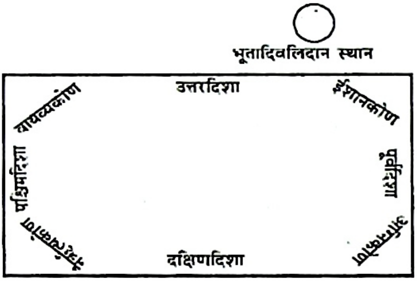

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पीठ के बाहर मण्डल का पूजनकर बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन कर वामाङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वर वरद सर्वजनं में वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

भूता ये च विघ्नकर्तारो दिविभूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थ संस्थाश्च शिवयोगेन भाविता॥१॥

जो भूतपिशाचादि विघ्नकरनेवाले द्युलोक-अन्तरिक्षलोक-भूलोक-पाताल में विचरण करनेवाले, सभी शिवयोग से भावित होकर (कल्याण की भावनावाले होकर)॥१॥

क्रूराद्याः शतसंख्यकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्याव्यवस्थिताः॥२॥

सैकडों क्रूर प्रकृतिवाले, पाखण्डादि में रत रहनेवाले, ध्रुवादि सैकड़ों की संख्यावाले, इन्द्रादि रूप में व्यवस्थित रहनेवाले॥२॥

तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णात्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥३॥

नगर या संग्राम स्थल में पहाड़ों की ऊँचाईयों पर, नदियों के तट पर रहनेवाले, हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥३॥

वापी कूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥४॥

वापी, कूप, तडाग, वृक्षादि, श्मशानादि, चौराहों पर रहनेवाले, नानारूप को धरकर रहनेवाले, बहुतरूपोंवाले हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥४॥

यत्र तत्र विचरन्ति भूतप्रेतादि सर्वदा।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा॥५॥

हमेशा इधर उधर विचरनेवाले भूत-पिशाचादि सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले हों॥५॥

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोऽप्युग्रहरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥६॥

जो रौद्र रूप धारण करके, रौद्र कर्म में लिप्त, रौद्र स्थान में निवास करनेवाले, जो पिशाचिनी मातायें, उग्ररूपोंवाली, सेवकों के अधिपति, सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले हों॥६॥

भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्तरक्षगा।
ते सर्वे प्रीतमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥७॥

भूमि पर विचरण करनेवाले भूचर, आकाश में रहनेवाले नभचर, वे सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मनवाले होकर हमारी रक्षा करें॥७॥

पुष्पाञ्जलिः—प्रार्थना करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले, बलिं गृहित्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे, अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु॥

जो इस भूतल पर भूतपिशाचादि निवास करते हैं, वे विधिवत् प्रदान किये गये बलि को ग्रहण कर सन्तोष प्राप्त करके स्वेच्छया अन्यत्र अपना वास बनायें अर्थात् हमारे पूजन स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान में अपना निवास बनायें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

क्षेत्रकीलनाङ्गवलिदानं परिपूर्णम्

⁂

दिग्रक्षणम्

पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद हाथ पैर धोकर आचमन-प्रणायाम करके सङ्कल्पपूर्वक दिग्रक्षण करे।

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया **प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशे वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमेतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ नामाऽहमस्मिन् वटुकभैरवपुरश्चरणे रक्षोघ्नकर्म करिष्ये।** पीली सरसों से रक्षोघ्न कर्म करें।

ॐ र॒क्षो॒हणं॑व्वलग॒हनं॑व्वैष्ण॒वीमि॒दम॒हंतंव्व॑ल॒गमुत्क्कि॑रामि॒षंमे॒निष्ट्यो॒षम॒मात्यौ॑निच॒खाने॒दम॒हंतंव्व॑ल॒गमुत्क्कि॑रामि॒षंमे॑समा॒नोषमस॑मानोनिच॒खाने॒दम॒हंतंव्व॑ल॒गमुत्क्कि॑रामि॒षंमे॒सब॑न्धु॒र्य्यम॒सब॑न्धुर्निच॒खाने॒दम॒हंतंव्व॑ल॒गमुत्क्कि॑रामि॒षम्मे॑सजा॒तोषमस॑जातोनिच॒खानोत्कृ॒त्यांकि॑रामि॥१॥ पूर्वदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ र॒क्षो॒हणौ॑वोव्वलग॒हन॒ꣳप्रोक्षा॑मिव्वैष्ण॒वान्न्र॑क्षो॒हणौ॑वोव्वलग॒हनोऽव॑नयामिव्वैष्ण॒वान्न्र॑क्षो॒हणौ॑वोव्वलग॒हनोऽव॑स्तृणामिव्वैष्ण॒वान्न्र॑क्षो॒हणौ॑वांव्वलग॒हना॒ऽउप॑दधामिव्वैष्ण॒वीर॑क्षो॒हणौ वां व्वलग॒हनौ॒पर्य्यू॑हामिव्वैष्ण॒वीव्वैष्ण॒वम॑सिव्वैष्ण॒वास्त्थ॥२॥ दक्षिणदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ रक्ष॑सांभा॒गो॒ऽसि॒निर॑स्त॒ꣳरक्ष॒ऽइदम॒हꣳरक्षो॒ऽभितिष्ठा॒मी॒दम॒हꣳरक्षो॒ऽव॑बाधऽइदम॒हꣳरक्षो॒ऽधम॒न्तमौ॑नयामि॥ घृ॒तेन॑द्यावापृथिवी॒प्रोर्णु॑वाथां॒व्वायो॒व्वेस्तो॒काना॑म॒ग्निराज्ज्य॑स्यव्वे॒तुस्वाहा॒स्वाहा॑कृतेऽऊ॒र्ध्वन॑भसम्मारु॒तङ्ग॑च्छ॒तम्॥३॥ पश्चिमदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ र॒क्क्षो॒हाव्वि॒श्श्व॑चर्षणिर॒भियो॑नि॒मयौ॑हते॥ द्रोणे॑स॒धस्थ॒मास॑दत्॥४॥ उत्तरदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

जो भूत-प्रेतादि इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान का परित्याग करके इधर-उधर कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें। अग्निकोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूत-प्रेतादि इस भूमि में स्थित हैं, वो सभी इस स्थान से कहीं पर भी स्वेच्छया अन्यत्र चले जाये, जो भूत-प्रेतादि विघ्न करनेवाले हैं, वे सभी भगवान् शिव की आज्ञा से स्वेच्छया अन्यत्र चले जायें; अन्यथा नष्ट हो जायें। नैर्ऋत्य कोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

इस स्थान के सभी दिशाओं में जो भूत-प्रेतादि पिशाचों का वास है, वे सभी विना विरोध के इस स्थान का परित्याग करके चले जायें, हम पूजा कर्म का प्रारम्भ कर रहे हैं। वायव्यकोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पुरश्चरणं करोम्यहम्॥

जो कोई भूतगण, राक्षसगण इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान को छोडकर स्वेच्छया अन्यत्र कहीं चले जायँ, जिससे हम निर्विघ्न पुरश्चरण करें। ईशान कोण में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। ऊपर ऊर्ध्वदिशा में पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। अधोदिशा भूमि पर नीचें पीली सरसों का प्रक्षेप करें।

चारो तरफ क्रोध मयी दृष्टि डाल कर, चारों तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे तथा तीन बार पैर की एड़ी से भूमि पर प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करें।

साधक को अपने साधना स्थल को सुरक्षित रखने के लिए उसको कीलित करे, स्थान को कीलित करने से स्थान की सुरक्षा सुनिश्चित हो जाता है।

दिग्रक्षणं परिपूर्णम्

❀

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह॥ ब्बृहत्युष्णिहाककुप्प्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा॥ इस मन्त्र से गोमूत्र स्थापित करें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ इस मन्त्र से गोमय मिश्रित करें।

ॐ आप्प्यायस्वसमेतुतेव्विश्श्वतःसोमव्वृष्ण्ण्यम्॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे॥ इस मन्त्र से गोदुग्ध मिश्रित करें।

ॐ दधिक्क्राव्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽ आयूꣳषितारिषत्॥ इस मन्त्र से दही मिश्रित करें।

ॐ तेजोऽसिशुक्क्रमस्यऽमृतमसिधामनामाऽसिप्प्रियंदेवानामनाधृष्ट्टन्देवयजनमसि॥ इस मन्त्र से गोघृत मिश्रित करें।

ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्श्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ इस मन्त्र से कुशोदक मिश्रित करके यज्ञकाष्ठ से आलोडित करें।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणायचक्क्षसे॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥ तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥

पञ्चगव्य निर्माण के बाद अपवित्रः पवित्रोवा० मन्त्र से तीन बार यज्ञभूमि तथा यज्ञसामग्री का मार्जन प्रोक्षण करे फिर अञ्जली बनाकर स्वस्त्यवाचन दो बार करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

अपवित्र हो या पवित्र हो किसी भी अवस्था में जो पुण्डरीकाक्ष को स्मरण करता है वह शुचि(पवित्र) हो जाता है।

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाꣳस्वस्तिनःपूषाव्विश्श्ववेदाꣳ॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिꣳस्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु॥ इस मन्त्र का दो बार पाठ करें।

देवाः आयान्तु॥ आवाहनी मुद्रा से। **यातुधानाः अपयान्तु॥** अपगमन मुद्रा से। **विष्णोर्देवभूम्यमिमं रक्षस्व॥**

आवाहनीमुद्रालक्षणम्

हस्तद्वयं प्रसार्य स्वाभिमुखमञ्जलिकृतम्।
आवाहनं च कर्तव्यं मुद्रा आवाहनी मता॥

दोनों हाथों को पसार कर अञ्जलि बनाकर अपने तरफ करके खींचने को आवाहनी मुद्रा कहते है इसका देवताओं को बुलाने में तन्त्रशास्त्र के विद्वान प्रयोग करते हैं।।

अपगमनमुद्रालक्षणम्

स्वाभिमुखाञ्जलिना यत् बहिर्गमनं कृतं यत्।
अपगमनमुद्राञ्च विख्याता तान्त्रिका वदेत्॥

अपने तरफ अञ्जलि को करके बाहर की तरफ करने को ही तान्त्रिक विद्वान् अपगमन मुद्रा कहते हैं।

साधना के स्थान को सुरक्षा की दृष्टि से कीलित करने के बाद साधना की भूमि को पवित्र करना अति अनिवार्य होता है, पवित्र स्थान में ही देवताओं का वास होता है तथा साधना के अनुकूल वातावरण बनता है। साधाना की भूमि को पवित्र करने के लिए पञ्चगव्य से मन्त्रों को पाठ करते हुए भूमि का तथा समस्त पदार्थों का मार्जन करे तथा मार्जन करने के बाद अपने उपासना की रक्षा के लिए भगवान विष्णु से प्रर्थना करे तथा उनका आवाहन करे और साधना में विघ्न प्रदान करनेवालों को उस स्थान से अपगमन करे, यातुधानों के अपगमन के बाद ही वह स्थान पवित्र रहता है, अन्यथा उपासना के दौरन अपवित्र होने का भय रहता है, अपवित्र स्थान में ही विघ्न कारकों का वास होता है इसलिए पूर्णरूप से पवित्र प्रसन्नतादायी वातावरण बनाने के लिए निश्चय ही पञ्चगव्य का मार्जन करे जिससे स्थानादि की पवित्रता बनी रहती है और पवित्र स्थान में उपासना करने पर साधक का मन भी पवित्र तथा सदैव प्रसन्न रहता है।

पञ्चगव्यकरणं परिपूर्णम्

❀

मांसमीनमद्यमुद्राकुण्डगोलादिशोधनम्

ॐ फट्। मांसमीनादि प्रच्छालित करे।

ॐ यँ नमः। मन्त्र से मीनमांसादि दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ नमः। मन्त्र से मीनमांसादि दोषों का दाहन करे।

ॐ वँ नमः। मन्त्र से अमृत सम्प्लावन करे।

ॐ नमः। जल से मार्जन कर तत्तद् पात्रों पर स्थापित करके संस्कार करे।

ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदनाय धीमहि तन्नो मांसः प्रचोदयात्।

ॐ क्षँ हँ लँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ ऌँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ नमः। तत्त्व मुद्रा के द्वारा विलोममातृका से युक्त मूलमन्त्र के द्वारा कुम्भतीर्थ पूरित करे।

ॐ प्रतद्विष्णुस्तवतेवी॒र्य्ये॒णमृगोनभी॒मःꣳकु॑च॒रोगि॑रि॒ष्ठाःꣳ॥ यस्यो॒रुषु॑त्रि॒षुवि॒क्क्रम॑णे- ष्ष्वधिक्षि॒यन्ति॒भुव॑नानि॒विश्श्वा॑॥ मन्त्र से मांस शोधन करे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ मन्त्र से मीन शोधन करे।

ॐ तद्विष्णोः॑पर॒मम्प॒दꣳसदा॑पश्श्यन्तिसूरयः॑॥ दि॒वी॒व॒चक्षु॒रात॑तम्॥ मन्त्र से मुद्रा शोधन करे।

ॐ तद्विप्रा॑सोविप॒न्न्यवो॑जागृवाꣳसः॒समिन्धते॥ विष्णो॒र्य्यत्त्पर॒मम्प॒दम्॥ मन्त्र से मांसमीनमुद्रादि विशेषार्घ से शोधन कर योगात्मकं विन्दु से निकाल कर अधोलिखित मन्त्र से शोधन करे।

ॐ विष्णुयोनिं कल्पयतु त्वष्टारूपाणि पिशन्तु। आसिञ्चतु प्रजापतिर्धातागर्भं दधातु मे॥ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ प्लूं ज्लूं ग्लूं स्वाहा अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय स्वाहा। विशेषार्घ्य जल निक्षेपित कर वँ से धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतीकरण कर मत्स्यमुद्रा से आच्छादित कर कवचमुद्रा से अवगुण्ठित कर चक्रमुद्रा से संरक्षित कर अस्त्रमुद्रा से तालत्रय से दिग्बन्धित कर प्राणप्रतिष्ठा करे।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्बटुकमहाभैरवस्य

अस्मिन् आधारसहितमीनमांसमद्यमुद्राकुण्डगोलके अग्निसूर्यसोमपराकलानां देवतायाः प्राणा इह प्राणाः।

ॐ ह्रौँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्वटुकमहाभैरवस्य अस्मिन् आधारसहितमीनमांसमद्यमुद्राकुण्डगोलके अग्निसूर्यसोमपराकलानां देवतायाः जीव इह स्थितः।

ॐ ह्रौँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्वटुकमहाभैरवस्य अस्मिन् आधारसहितमीनमांसमद्यमुद्राकुण्डगोलके अग्निसूर्यसोमपराकलानां देवतायाः सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ श्रीमद्वटुकमहाभैरवस्य अस्मिन् आधारसहितमीनमांसमद्यमुद्राकुण्डगोलके अग्निसूर्यसोमपराकलानां देवतायाः गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

प्रर्थना

दृष्ट्वार्घपात्रं देवेशि ब्राह्म्याद्या देवताः सदा।
नृत्यन्ति सर्वयोगिन्यः प्रीताः सिद्धिं ददत्यपि॥

हे देवेशि! अर्ध पात्र को देखकर ब्रह्मादि देवता तथा समस्त योगिनियाँ प्रसन्नता पूर्वक नृत्य करती हैं तथा साधक को सिद्धि प्रदान करती हैं।

ॐ ऐँ क्लीँ सौः। मन्त्र से द्वादश बार अभिमन्त्रित करे।

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भवम् ।
आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह॥१॥

ब्रह्माण्ड के एक भाग से उत्पन्न अमृत रस से पूर्ण महापात्र में रस आपके पानार्थ आमन्त्रित हैं।

अखैण्डकरसानन्दकलेवरसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणा मन्त्रा निधेह्यकुलरूपिणि॥२॥

शरीर में अमृत स्वरूपी अखण्ड आनन्द रस की स्फुरणा के लिए यहाँ कुल रूपिणी आमन्त्रित है।

ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीं कुलस्थामृताकारे सिद्धज्ञानकलेवरे।
अमृतत्त्वंनिधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥३॥

ॐ **ऐं** (वाग्रूपिणी, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी ज्ञानशक्ति), **ह्रौं** (इच्छारूपिणी, इच्छा की अधिष्ठातृ देवी इच्छाशक्ति) **श्रौं** (श्रीरूपिणी, ऐश्वर्यो की अधिष्ठातृ श्रीशक्ति) **क्लीं** (कामरूपिणी, कामनाओं की अधिष्ठातृ कामशक्ति) कुलस्थ(कुल में ही रहने वाली)

अमृतस्वरूपिणी, सिद्धि तथा ज्ञान की कलेवर, परमण्डलाधिष्ठातृक्लीस्वरूपिणी हमारे लिए अमृत का प्रवाह करें।

सौ:तद्रूपेणैकरस्यं कृत्वास्यैतत्स्वरूपिणि।
भूत्वापरामृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु॥४॥

ब्रह्म स्वरूपिणी सौं हमें ब्रह्मत्त्व प्रदान कर कुलामृताकार होकर हमारे में अमृतत्त्व को स्फुरित करो॥४॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दत्क्ष्म्लफ्रैँ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सहक्षमलवरयीँ आनन्दभैरव्यै सुधादेव्यै वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवानन्दभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीँ वँ हंसः तर्पयामि।

अमृतेशी का तर्पण करके मूल मन्त्र से सात बार जप करते हुए कवचमुद्रा से ढककर, अस्त्रमुद्रा से संरक्षित कर मत्स्यमुद्रा से उसके ऊपर ढके तथा योनि एवं धेनु मुद्रा प्रदर्शित करे।

द्रव्यमध्ये शक्तिचक्रं विलिख्य तदभावे त्रिकोणदक्षावर्तेत विलिख्य ऊर्ध्वरेखायाम्। द्रव्य के मध्य में शक्तिचक्रं का लेखन करके उसमें दक्षिणावर्त क्रम से क्रमशः दक्षिण, ऊर्ध्व तथा वाम रेखाओं पर पूजन करे।

उपर्युक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर पूर्ववत् शक्तियन्त्र का ध्यान कर अग्निसूर्यसोममण्डलों का पूजनकर पञ्चरत्नों का पूजनकर पूर्ववत् आनन्दभैरव और आनन्दभैरवी का ध्यान कर तालत्रय के द्वारा दिग्बन्धन करके अवगुण्ठन, अमृतिकरण, हंसादिसंस्थापन कर शंखमुद्रा मत्स्यमुद्रादि कर्म कर मूलमन्त्र से दशबार अभिमन्त्रित कर मांसादि में देवस्वरूप की भावना करे।

शक्तिचक्रम्

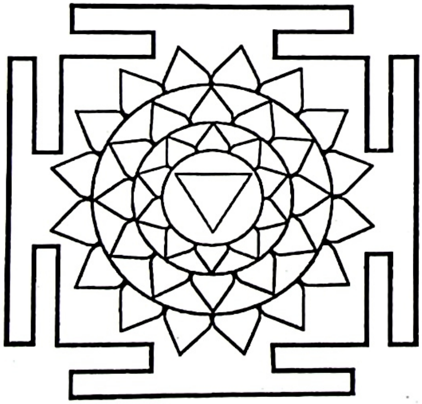

सर्वप्रथम भूपुर में पीठादि पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ जालन्धरपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कामरूपपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ उड्डीयानपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पूर्णगिरिपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आधारशक्तये नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठों का पूजन करने के बाद क्रमशः अग्यर्कसोम तीनों मण्डलों का पूजन करे।

अग्निमण्डलपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ वाँ वीँ वूँ ह स क्ष म ल व र यूँ धर्मदशकलात्मने रँ वह्निमण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्निकलानांपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ यँ धूम्रार्चिषे नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ उष्मायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ लँ ज्वलिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वँ ज्वालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ शँ विष्फुलिङ्गिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ षँ सुश्रियै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सँ सुरूपायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ हँ कपिलायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ळँ हव्यवाहनायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्षँ कव्यवाहनायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्कमण्डलपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ हाँ हीँ हूँ ह स क्ष म ल व र यूँ वसुप्रदत्तद्वादशकलात्मने मँ अर्कमण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्ककलानांपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ कँ भँ तपिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ खँ बँ तापिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ गँ फँ धूम्रायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ घँ पँ मरीच्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ चँ धँ रुच्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ छँ दँ सुषुम्नायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ जँ थँ भोगदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ झँ तँ विश्वायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ञँ णँ बधिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ टँ ढँ धारिण्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ठँ डँ क्षमायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोममण्डलपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ साँ सीँ सू स ह क्ष म ल व र यूँ कामप्रदामृतादिषोडशकलात्मने वँ सोममण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोमकलानांपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ अँ अमृतायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ मानदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ इँ पूषायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ईँ तुष्ट्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ उँ पुष्ट्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऊँ रत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऋँ धृत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ॠँ शशिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऌँ चन्द्रिकायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ॡँ कान्त्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ एँ ज्योत्स्नायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऐँ श्रियै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ओँ प्रीत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ औँ अङ्गदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ अँ पूर्णायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अः पूर्णामृतायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पात्र में कर्पूरादि सुगन्धि छोड़ कर त्रिकोण की तीनों रेखाओं पर क्रमशः पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हँ वँ लँ क्षँ ॐ सोऽहं हंसः ॐ ह्रीँ वटुकभैरवाय स्वाहा गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्कुश मुद्रा के द्वारा अन्तरिक्ष से गङ्गादि नदियों का आवाहन करे।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥१॥
ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करे स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव! तीर्थं देहि दिवाकर॥२॥

वौषट्। मन्त्र से पुष्प छोड़े।

वषट्। मन्त्र से गालिनी मुद्रा का प्रदर्शन करे।

ॐ वँ। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करें, इष्टदेवता का ध्यान-पूजन कर, सकलीकरण करे तथा शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे।

भूपुर के चारो दिशाओं में तथा मध्य में रत्नों का पूजन करे।

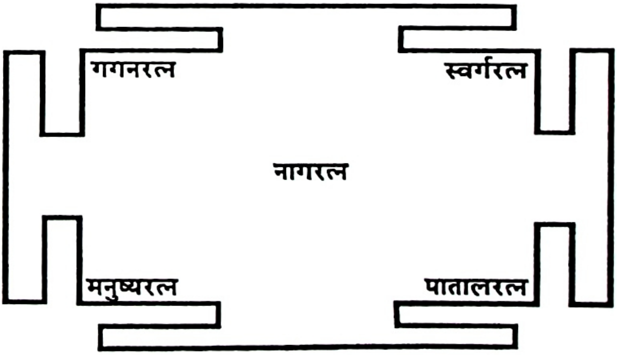

ॐ ह्रीँ वँ ग्लूँ गगनरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ स्लूँ स्वर्गरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ प्लूँ पातालरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ म्लूँ मनुष्यरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ न्लूँ नागरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

रत्नानां पूजनानन्तरम्—

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय साँ जँ जँ अमृतेश्वर्यै स्वाहा शुक्रादिशापात्सुरां मोचय मोचय मोचिकायै नमः।

मन्त्र का तीन बार जप करके त्र्यम्बक मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

सुगन्धि पुष्टि का वर्धन करता है अतः उर्वारुक(फुट=ककड़ी नाम का विशेष फल जो पकने पर फट जाता है) के समान हमें मृत्यु से (मोक्ष)मोचन के लिए, उस सुगन्धि से त्र्यम्बक का यजन करता हूँ।

ॐ जूं सः मृत्युञ्जय मन्त्रं द्वाविशतिवारं कुम्भोपरि जपित्वा धेनुमुद्रया वमिति बीजमष्टधा प्रजप्य पश्चाद् घटं धृत्त्वा मूलमन्त्रं अष्टधा पठित्वा। मृत्युञ्जय मन्त्र का द्वादश बार कुम्भ के ऊपर जप कर धेनु मुद्रा से वँ बीज का आठ बार जप करने के बाद घट को धारण करके पवमान श्लोकों का पाठ करे।

पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः।
पावमानं परं ज्ञानं तेन ते पावमाम्यहम्॥

इति अभिमन्त्रयेत्। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके।

अमृतं चिन्तयेत् द्रव्यं अष्टधा चामृतं जपत्।
अष्टधा मूलमन्त्रं च जपेद्धृत्वा घटं ततः॥

पश्चान्मुद्रां प्रदर्श्य वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुण्ठ्य चक्रेण संरक्ष्य अस्त्रेण छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कुर्यात्। अभिमन्त्रण करने के बाद मुद्राओं का प्रदर्शन कर वँबीज से धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतिकरण कर मत्स्यमुद्रा से आच्छादन कर कवचमुद्रा से अवगुण्ठन कर चक्रमुद्रा से संरक्षण कर अस्त्रमुद्रा से चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन कर बलिप्रदान करे।

मांसमीनमद्यमुद्राकुण्डगोलादिशोधनं परिपूर्णम्

◆

बाह्यपूजनम्

प्रधानकलशस्थापनम्

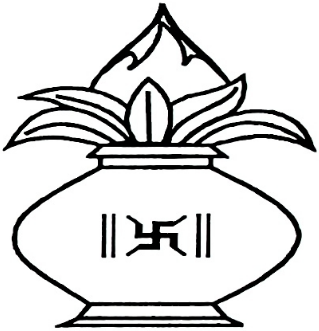

ॐ फट्। प्रधान कलशपात्र प्रच्छालित करे।

ॐ यँ नमः। मन्त्र से पात्रस्थ दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ नमः। मन्त्र से पात्रस्थ दोषों का दाहन करे।

ॐ वँ नमः। मन्त्र से अमृत सम्प्लावन करे।

ॐ नमः। जल से मार्जन कर आधारपात्र पर स्थापित कर कलश संस्कार करे।

ॐ क्षँ हँ लँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ ऌँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ नमः।

शुक्रशापविमोचनम्

एवमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥
वेदानां प्रणवोबीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु॥

इति मन्त्रं घटे धृत्वा पठेत्त्रृधा। घट को हाथ में रख कर इस मन्त्र का तीन बार जप करे।

ॐ ह्रीँ वँ साँ साँ सूँ सैँ सौँ सः शुक्रशापविमोचकायै सुधादेव्यै नमः शुक्रशापं विमोचय विमोचय स्वाहा। इति द्वादशधा जपेत्। इस मन्त्र का बारह बार जप करे।

ॐ ब्राँ ब्रीँ ब्रूँ ब्रैँ ब्रौँ ब्रः ब्रह्मशापविमोचकायै सुधादेव्यै नमः ब्रह्मशापं विमोचय विमोचय स्वाहा। इति दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः कृष्णशापविमोचिकायै सुधादेव्यै नमः कृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा। इति दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ श्रीँ ह्रीँ ऐँ राँ रीँ रूँ रैँ रौँ रः रुद्रशापविमोचकायै सुरादेव्यै नमः रुद्रशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा। इति दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

कलशे दशदोषनिवारणम्

ॐ ह्रीँ वँ क्रौँ परमस्वामिनी परमाकाशशून्यवाहिनी चन्द्रसूर्याग्निभक्षिणी त्वं पात्रे उपविश उपविश स्वाहा। इति कलशोपरि दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै च धीमहि तन्नोर्द्धनारिश्वरः प्रचोदयात्। इति दशधा जपेत्। इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रत्क्ष्ल्व्क्रैँ पथिकदेवताभ्यो हुँ फट् स्वाहा॥१॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ रँ लँ आँ आस्फलिनी ग्रामचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ ह्राँ संगमस्पर्शचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फ्रैँ घ्य ङँ लँ क्षँ दृष्टिचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥४॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ग्लौँ लाँ क्रोधचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥५॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ सृष्टिचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥६॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ क्रौँ घटचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥७॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ छँ तपनीयबुधचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥८॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ आँ क्रौँ क्लीँ नित्यचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा॥९॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्त्रुँ क्षँ स्त्रौँ स्त्राँ खादय खादय सर्वजनदृष्टिस्पर्षदोषाय हुँ फट् स्वाहा॥१०॥ इति मन्त्रेण कुम्भोपरि अक्षतान्निक्षिपेत्। उपर्युक्त दश मन्त्रों का उच्चारण करते हुए दोनों कलशों पर अक्षत् छोडे।

ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं वृहत्॥ इत्यनेन त्रिवारं द्रव्योपरि पठेत्, गन्धपुष्पाक्षतादि निक्षिपेत् इतिदोषनिवारणाय द्रव्य मध्ये आनन्दभैरव आनन्दभैरवीं ध्यायेत्।

मन्त्र का द्रव्य के ऊपर तीन बार पाठ करे। कलश में गन्धपुषादि छोड़ कर दोषों के निवारण के लिए द्रव्य के मध्य आनन्दभैरव तथा आनन्दभैरवी का पूजन करे।

आनन्दभैरवध्यानम्

अखण्डैकवरानन्दकरे परसुधात्मनि।
स्मराच्छन्द स्फुरणामत्र निधेह्यमृतरूपिणी॥१॥
सूर्यकोटिप्रतिकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्॥२॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मो परिस्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्॥३॥
कपालखट्वाङ्गधरः घण्टाडमरुवादिनम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुशलधारिणम्॥४॥
खड्ग-खेटक-पट्टीशं मुद्गरच्छूल-कुन्तिलम्।
विचित्र-खेटकं-मुण्डं वरदाऽभय-मालिनम्॥५॥
लोहितं देवदेवेशं भावये साधकोत्तमः।
भावयेच्च सुरादेवीं चन्द्रकोट्युतप्रभम्॥६॥
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्॥७॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दत्क्ष्म्लफ्रैँ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवाय वौषट्। इत्यानन्दभैरवं त्रिः सम्पूजयेत्। उक्त मन्त्र से आनन्दभैरव का तीन बार पूजनतर्पण करे।

आनन्दभैरवीध्यानम्

भावयेत्त्वसुरादेवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम्।
हेमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्॥१॥
अष्टादशभुर्जर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम्॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सहक्षमलवरयीँ आनन्दभैरव्यै सुधादेव्यै वौषट्। इत्यानन्दभैरवीं त्रिः सम्पूजयेत्। उक्त मन्त्र से आनन्दभैरवी का तीन बार पूजनतर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवानन्दभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। श्रीपात्रस्थित द्रव्य को बाँयें हाथ के अंगुठे तथा मध्यमाङ्गुलि से बाहर निकाल कर उस द्रव्य पर आनन्दभैरव, आनन्दभैरवी मिथुन का ध्यान पूजन तर्पण करे।

ॐ क्लीँ कुलस्थामृताकारेसिद्धिज्ञानकरे परे।
अमृतत्त्वं निधेह्यत्र वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥१॥

सौं तद्रूपैकरसाख्यं च दत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि।
भूत्वा कुलामृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु॥२॥

ॐ ह्रीँ वँ हंसः तर्पयामि।

अमृतेशी का तर्पण करके मूल मन्त्र से सात बार जप करते हुए कवचमुद्रा से ढककर, अस्त्रमुद्रा से संरक्षित कर मत्स्यमुद्रा से उसके ऊपर ढके तथा योनि एवं धेनु मुद्रा प्रदर्शित करे।

द्रव्यमध्ये शक्तिचक्रं विलिख्य तदभावे त्रिकोणदक्षावर्तेत विलिख्य ऊर्ध्वरेखायाम्। द्रव्य के मध्य में शक्तिचक्र का लेखन करके उसमें दक्षिणावर्त क्रम से क्रमशः दक्षिण, ऊर्ध्व तथा वाम रेखाओं पर पूजन करे।

शक्तिचक्रम्

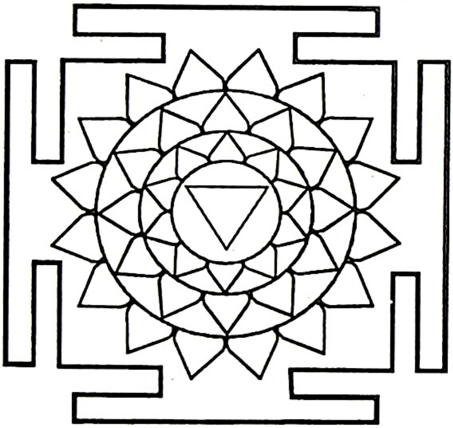

सर्वप्रथम भूपुर में पीठादि पूजन करे।

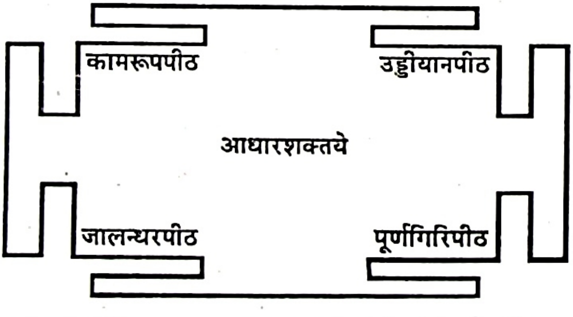

ॐ ह्रीँ वँ जालन्धरपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कामरूपपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ उड्डीयानपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पूर्णगिरिपीठाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आधारशक्तये नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठों का पूजन करने के बाद क्रमशः अग्यर्कसोम तीनों मण्डलों का पूजन करे।

अग्निमण्डलपूजनम्

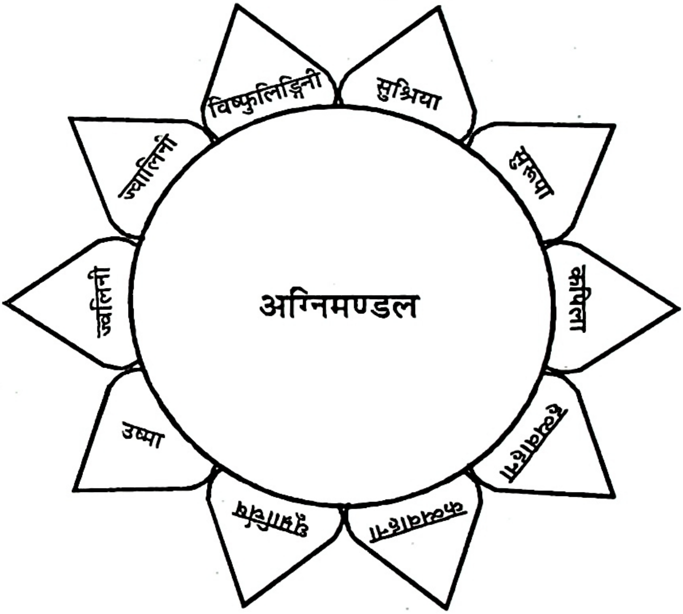
अग्निमण्डल
विष्फुलिङ्गिनी
सुश्रिया
सुरूपा
कपिला
हव्यवाहा
कव्यवाहा
धूम्रार्चि
उष्मा
ज्वलिनी
ज्वालिनी

ॐ ह्रीँ वँ वाँ वीँ वूँ ह स क्ष म ल व र यूँ धर्मदशकलात्मने रँ वह्निमण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्निकलानांपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ यँ धूम्रार्चिषे नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ उष्मायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ लँ ज्वलिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वँ ज्वालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ शँ विष्फुलिङ्गिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ षँ सुश्रियै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सँ सुरूपायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ हँ कपिलायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ळँ हव्यवाहनायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्षँ कव्यवाहनायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्कमण्डलपूजनम्

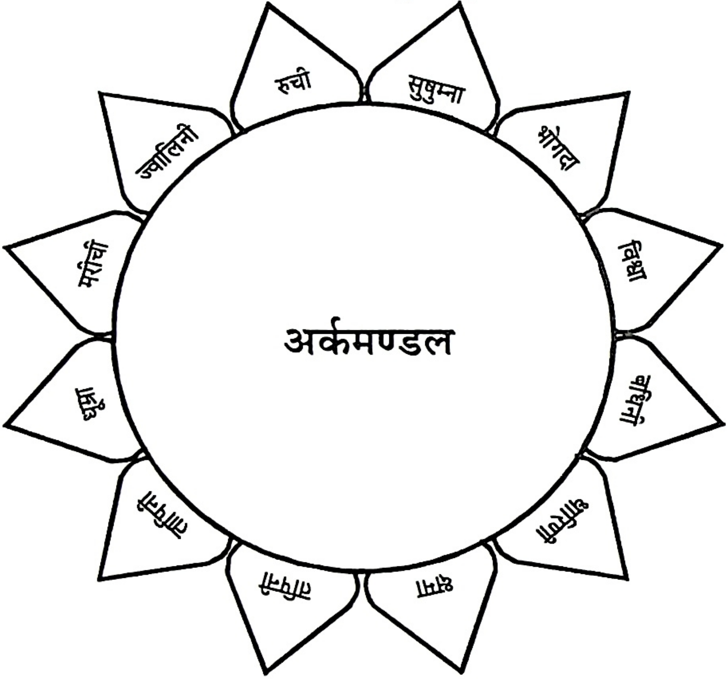

ॐ ह्रीँ वँ हाँ हीँ हूँ ह स क्ष म ल व र यूँ वसुप्रदत्तद्वादशकलात्मने मँ अर्कमण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राधाराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्ककलानांपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ कँ भँ तपिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ खँ बँ तापिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ गँ फँ धूम्रायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ घँ पँ मरीच्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ चँ धँ रुच्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ छँ दँ सुषुम्नायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ जँ थँ भोगदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ झँ तँ विश्वायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ ञँ णँ बधिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ टँ ढँ धारिण्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ ठँ डँ क्षमायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोममण्डलपूजनम्

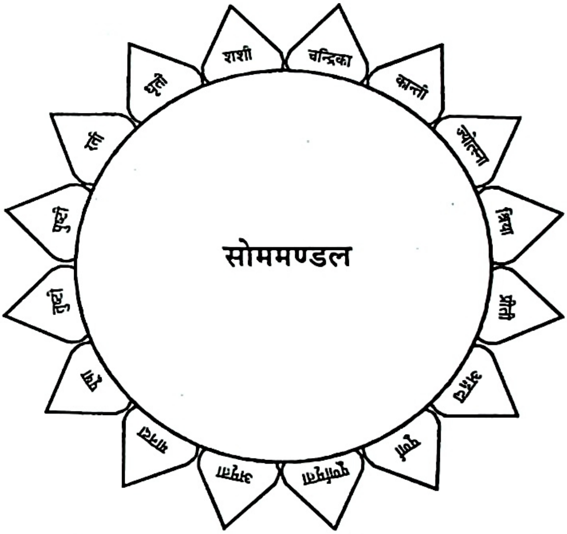
शशी
चन्द्रिका
कान्ती
ज्योत्स्ना
श्रिया
प्रीती
अङ्गदा
पूर्णा
पूर्णामृता
अमृता
मानदा
पूषा
तुष्टी
पुष्टी
रती
धृती
सोममण्डल

ॐ ह्रौँ वँ साँ सीँ सू स ह क्ष म ल व र यूँ कामप्रदामृतादिषोडशकलात्मने वँ सोममण्डलाय वटुकभैरवाऽर्घ्यपात्राय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोमकलानांपूजनम्

ॐ ह्रौँ वँ अँ अमृतायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ आँ मानदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ इँ पूषायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ ईँ तुष्ट्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ उँ पुष्ट्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ ऊँ रत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ ऋँ धृत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ ॠँ शशिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ ऌँ चन्द्रिकायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ॡँ कान्त्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ एँ ज्योत्स्नायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऐँ श्रियै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ ओँ प्रीत्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ औँ अङ्गदायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ अँ पूर्णायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ह्रीँ वँ अः पूर्णामृतायै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पात्र में कर्पूरादि सुगन्धि छोड़ कर त्रिकोण की तीनों रेखाओं पर क्रमशः पूजन करे।

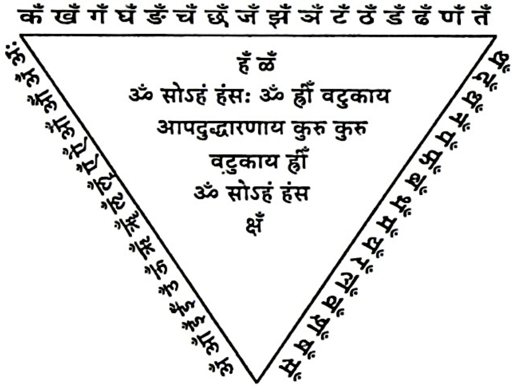
कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ
हँ ळँ
ॐ सोऽहं हंसः ॐ ह्रीँ वटुकाय
आपदुद्धारणाय कुरु कुरु
वटुकाय ह्रीँ
ॐ सोऽहं हंस
क्षँ
अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः
थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ हँ वँ लँ क्षँ ॐ सोऽहं हंसः ॐ ह्रीँ वटुकभैरवाय स्वाहा गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्कुश मुद्रा के द्वारा अन्तरिक्ष से गङ्गादि नदियों का आवाहन करे।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥१॥
ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करे स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव! तीर्थं देहि दिवाकर॥२॥

वौषट्। मन्त्र से पुष्प छोड़े।

वषट्। मन्त्र से गालिनी मुद्रा का प्रदर्शन करे।

ॐ वँ। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करें, इष्टदेवता का ध्यान-पूजन कर, सकलीकरण करे तथा शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे।

भूपुर के चारो दिशाओं में तथा मध्य में रत्नों का पूजन करे।

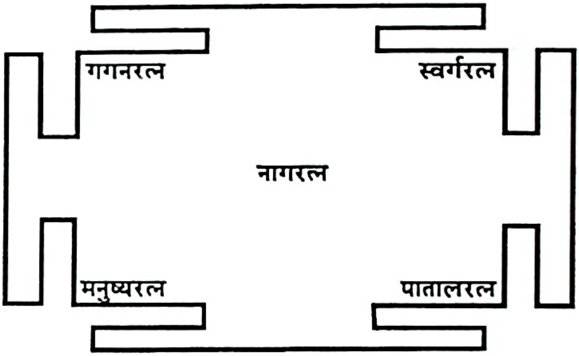

ॐ ह्रौँ वँ ग्लूँ गगनरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ स्लूँ स्वर्गरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ प्लूँ पातालरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ म्लूँ मनुष्यरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ न्लूँ नागरत्नेभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

रत्नानां पूजनानन्तरम्—

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृंतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय साँ जँ जँ अमृतेश्वर्यै स्वाहा शुक्रादिशापात्सुरां मोचय मोचय मोचिकायै नमः।

मन्त्र का तीन बार जप करके त्र्यम्बक मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

सुगन्धि पुष्टि का वर्धन करता है अत: उर्वारुक(फुट=ककड़ी नाम का विशेष फल जो पकने पर फट जाता है) के समान हमें मृत्यु से (मोक्ष)मोचन के लिए, उस सुगन्धि से त्र्यम्बक का यजन करता हूँ।

ॐ जूं सः मृत्युञ्जय मन्त्रं द्वाविशतिवारं कुम्भोपरि जपित्वा धेनुमुद्रया वमिति बीजमष्टधा प्रजप्य पश्चाद् घटं धृत्त्वा मूलमन्त्रं अष्टधा पठित्वा। मृत्युञ्जय मन्त्र का

द्वादश बार कुम्भ के ऊपर जप कर धेनु मुद्रा से वँबीज का आठ बार जप करने के बाद घट को धारण करके पवमान श्लोकों का पाठ करे।

पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः।
पावमानं परं ज्ञानं तेन ते पावमाम्यहम्॥

इति अभिमन्त्रयेत्। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके।

अमृतं चिन्तयेत् द्रव्यं अष्टधा चामृतं जपत्।
अष्टधा मूलमन्त्रं च जपेद्धृत्वा घटं ततः॥

पश्चान्मुद्रां प्रदर्श्य वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुण्ठ्य चक्रेण संरक्ष्य अस्त्रेण छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कुर्यात्। अभिमन्त्रण करने के बाद मुद्राओं का प्रदर्शन कर वँबीज से धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतिकरण कर मत्स्यमुद्रा से आच्छादन कर कवचमुद्रा से अवगुण्ठन कर चक्रमुद्रा से संरक्षण कर अस्त्रमुद्रा से चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन कर बलिप्रदान करे।

भूमिस्पर्श—**ॐ मुहीद्यौ॒ःपृथि॒वीच॑नऽइ॒मंय्य॒ज्ञंमि॑मिक्षताम्॥ पि॒पृ॒तानो॒भरी॑मभिः॥**

सप्तधान्य विखेरना—**ॐ ओष॑धय॒ःसम॑वदन्त॒सोमे॑नस॒हराज्ञा॑॥ यस्मै॑कृ॒णोति॑ ब्राह्म॒णस्तꣳराजन्पारयामसि॥**

कलशस्थापन—**ॐ आजि॑घ्रक॒लशं॑म॒ह्यात्वा॑विश॒न्त्विन्द॑वः॥ पुन॑रू॒र्ज्जानिव॑र्त स्व॒सान॑ःस॒हस्र॑न्धुक्ष्वो॒रुधा॑रा॒पय॑स्वती॒पुन॒र्म्मावि॑शताद्र॒यिः॥**

कलश में जल भरना—**ॐ व्वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒व्वरु॑णस्यस्कम्भ॒सर्ज्जनी॑स्त्थो॒ व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑न्न्यसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमसि॒व्वरु॑णस्यऽऋत॒सद॑नमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्ग॑न्ध॒र्व्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पति॑ः॥ त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॑वि॒द्वान्यक्ष्मा॑दमुच्च्यत॥**

कलश में सर्वौषधी डाले—**ॐ याओष॑धी॒ःपूर्व्वा॑जा॒तादे॒वेब्भ्य॑स्त्रियु॒गंपु॒रा॥ मनै॑नु ब॒भ्रुणा॑म॒हꣳश॒तंधामा॑नि स॒प्त च॑॥**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षःपरुष॒स्प्परि॑॥ ए॒वानो॑ दूर्व्वे॒प्प्रत॑नुस॒हस्रे॑ण श॒तेन॑ च॥**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अ॒श्व॒त्त्थेवो॑नि॒षद॑नंपु॒र्ण्णेवो॑व्वस॒तिष्कृ॒ता॥ गो॒भाज॒ऽ इत्किला॑सथ॒यत्स॒नव॑थ॒पूरु॑षम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ प॒वित्रे॑स्त्थोव्वैष्ण॒व्यौ॑सवि॒तुर्व्व॑ःप्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्म्यच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒सूर्य्य॑स्यर॒श्मिभि॑ः॥ तस्य॑तेप॒वित्र॑पतेप॒वित्र॑पूतस्य॒यत्का॑मःपुनेतच्छ॑केयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्यो॒नापृ॑थिवि॒नोभ॑वानृक्ष॒रानि॒वेश॑नी॥ यच्छा॑न॒ः शर्म्म॑स॒प्प्रथा॑ः॥**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकविरग्ग्निर्हव्यान्यक्क्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्म्मैदेवायहविषाव्विधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः॥ व्वासौअग्ग्ने व्विश्श्वरूपꣳसंव्व्ययस्वव्विभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहाऽ इषमूर्ज्जꣳशतक्क्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वꣳहसः॥**

वरुण ध्यान आवाहन पञ्चोपचार पूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्ब्भिः॥ अहैडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। इस जल में वरुण अपने आयुध, शक्ति तथा परिवार के सहित आकर अवस्थित हों।

ॐ अपांपतये वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कला।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥
सर्वे समुद्राः सहिताः तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

प्रतिष्ठा—हाथ सें स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो॒जू॑तिर्ज्जुषता॒माज्ज्य॑स्य॒बृह॒स्प्पति॑र्य्य॒ज्ञमि॒मन्त्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट्टंय्य॒ज्ञꣳसमि॒मन्द॑धातु॥ वि॒श्श्वे॑दे॒वास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३॑म्प्रति॑ष्ठ॒॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

कलशपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

त्वमेकः शुद्धोऽसि त्वयि निगमबाह्यामलमयं,
प्रपञ्चं पश्यन्ति भ्रमपरवशाः पापनिरताः।
बहिस्तेभ्यः कृत्वा स्वपदशरणं मानय विभो!,
गजेन्द्रेण दृष्टं ते शरणद! वान्यं स्वपदम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन-ध्यान कर समर्पित करे—

विचित्र-रत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
त्रिगुणात्मगृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल!॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

त्रिगुणात्मन्नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

त्रिदेवञ्च नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयंजलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वं मलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा-सिन्धु-कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण सुरपूजित॥

उपवस्त्रनिवेदनम्—

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतान्स्तव पूजार्थं गृहाण सुरनायक!॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितोदेवा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केला) के गर्भ से उत्पन्न (निर्मित) कर्पूर (जलता हुआ) से आरती करता हूँ, हमें कृपापूर्वक दृष्टि से देख करके वर प्रदानकर्ता बनें।

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर!॥

अपने-अपने ऋतुओं में उत्पन्न नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से युक्त पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ ह्रौँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥१॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥
विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतम्।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे—

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से जल लेकर पूजन समर्पित करे—

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहित देवताः प्रीयन्तां न मम॥

प्रधानकलशपूजनं परिपूर्णम्

❀

पीठदेवतास्थापनंपूजनञ्च

ॐ ह्रीँ वँ मण्डूकाय नमः मण्डूकशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कालाग्निरुद्राय नमः कालाग्निरुद्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कच्छपाय नमः कच्छपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ आधारशक्तये नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ प्रकृतये नमः प्रकृतिशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कूर्माय नमः कूर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय नमः अनन्तशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ पृथिव्यै नमः पृथ्वीशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षीरसमुद्राय नमः क्षीरसमुद्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ रत्नद्वीपाय नमः रत्नद्वीपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कल्पवृक्षाय नमः कल्पवृक्षशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ मणिमण्डपाय नमः मणिमण्डपशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः स्वर्णसिंहासनशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ धर्माय नमः धर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ज्ञानाय नमः ज्ञानशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वैराज्ञाय नमः वैराज्ञशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐश्वर्याय नमः ऐश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अधर्माय नमः अधर्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अज्ञानाय नमः अज्ञानशक्त्िश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अवैराज्ञाय नमः अवैराज्ञशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनैश्वर्याय नमः अनैश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः कल्पान्तकारायअनन्तशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ आनन्दकन्दाय नमः आनन्दकन्दशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ संविन्नालाय नमः संविन्नालशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः विकारमयकेशरशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः प्रकृत्यात्मकपत्रशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

ॐ ह्रीँ वँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः पञ्चाशद्वर्णकर्णिकाशक्तिश्रीपादुकां आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। अक्षत प्रक्षेप पूर्वक आवाहन स्थापन करे।

पीठशक्तिनां पूजनम्

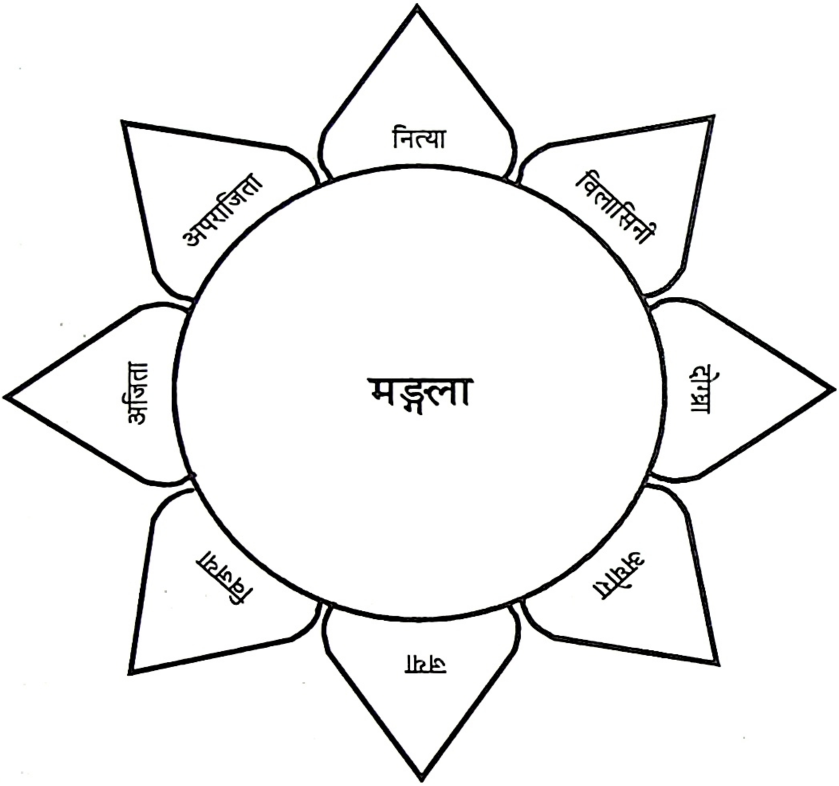

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ आधार शक्तिभ्यो नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ जयाशक्तिभ्यो नमः जयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ विजयाशक्तिभ्यो नमः विजयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ अजिताशक्तिभ्यो नमः अजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ अपराजिताशक्तिभ्यो नमः अपराजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ नित्याशक्तिभ्यो नमः नित्याशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ विलासिनीशक्तिभ्यो नमः विलासिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ दोग्ध्राशक्तिभ्योनमः दोग्ध्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ अघोराशक्तिभ्यो नमः अघोराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ मङ्गलाशक्तिभ्यो नमः मङ्गलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ वटुकभैरवयोगपीठात्मने नमः वटुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।
शूलं कपालं दधतीं कराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥१॥

रक्त के समुद्र में पोत के सदृश अरुण वर्ण के पद्म पर आसीन हाथ में पाश-अंकुश-धनुष-खड्ग-बाण-शूल-कपाल से शोभायमान, रक्तवर्ण तथा तीन नेत्रोंवाली प्राणदेवी को प्रणाम॥१॥

पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥२॥

हाथों में पाशचापसृक्कपालशूल धारण किये हुए रक्त वर्णवाली रक्तवर्ण के कमल के आसन पर बैठी हुई प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥२॥

मानसोपचार पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीँ वँ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीँ वँ यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीँ वँ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीँ वँ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीँ वँ सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः कमलासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठदेवतापूजनं परिपूर्णम्

⁂

श्रीवटुकभैरवपूजनम्

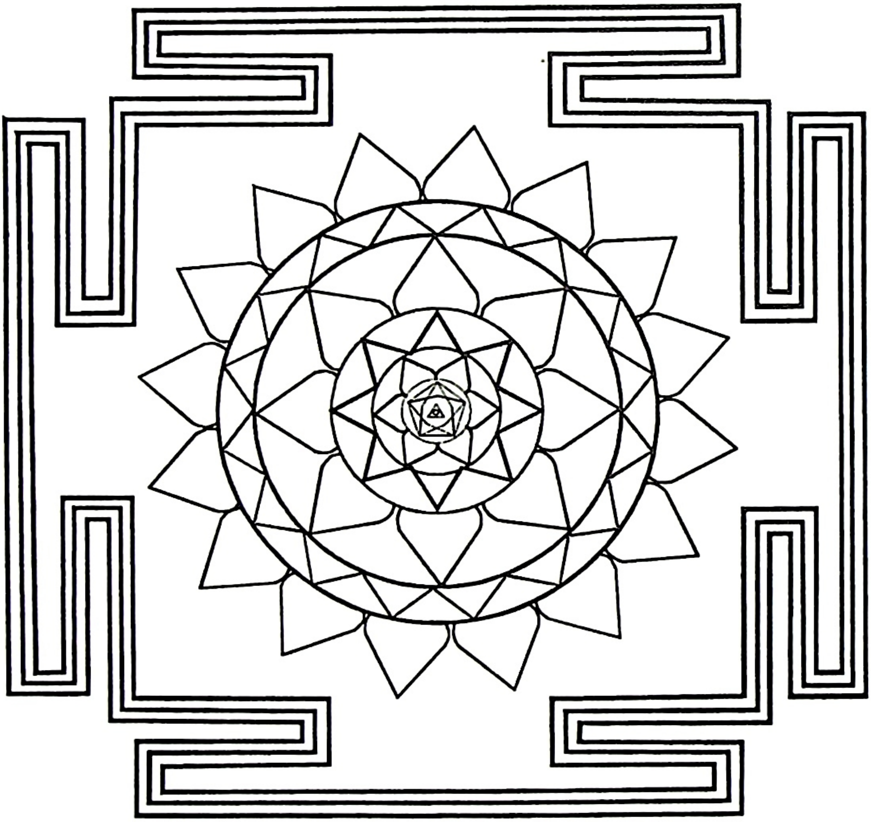

श्रीष्टवटुकभैरवध्यानम्

यन्त्रस्थ विन्दु में वटुकभैरव का ध्यान करे—

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय ध्यायामि ध्यानोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान करके यन्त्र पर पुष्प चढ़ाये।

आवाहनम्

आवाहनीमुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे—

ॐ अत्मसंस्थामजं शुद्धं त्वां देव परमेश्वर!।
आरण्यमिह हव्यांशं मूर्त्त्यामावाहयाम्यहम्॥१॥
देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावदेव इहावह॥२॥

हे परमेश्वर! आत्मा के भीतर रहनेवाले, परमशुद्धा, अज, अभावों में पूर्ति करनेवाले वटुकभैरव के मूतिस्वरूप का आवाहन करते हैं। हे देवेश! भक्ति के द्वारा प्राप्त होनेवाले, अपने परिवार से युक्त होकर जबतक हम आपकी पूजा करते है तबतक यहाँ रहकर सान्निध्य प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इहागच्छ इहागच्छ आवाहयामि आवाहनार्थे पुष्पं निवेदयामि। आवाहनी मुद्रा के द्वारा पुष्प निवेदन करे।

अनिवार्य निर्देश—यन्त्र तथा मूर्ति में आवाहन न करे, अन्यत्र पूजन में आवाहनी मुद्रा के द्वारा आवाहन अवश्य करे।

आवाहनीमुद्रालक्षणम्

अनामामूलसंलग्नां अङ्गुष्ठाग्राञ्जलिरीरिता।
देवाह्वानकारी चैषा मुद्रावाहनसंज्ञिका॥

अनामिका अङ्गुली के मूल में अङ्गुष्ठाग्र भाग का संयोजन करके अञ्जलि का स्वरूप्र बनाकर देवताओं के आवाहन में प्रयोग की जानेवाली आकृति को विद्वान् लोग आवाहनीमुद्रा कहते हैं।

आसनम्

पद्ममुद्रा के द्वारा पुष्प रूपी आसन समर्पित करे—

ॐ सर्वान्तर्यामी परंदेव सर्वबीजमयं शुभम्।
स्वात्मस्थाय परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम्॥

हे देव परमेश्वर! सभी प्राणियों में बीजरूप से निवास करनेवाले, सभी शुभों को प्रदान करनेवाले, सर्वान्तर्यामी, पर स्थान में अपने आत्मारूप परमशुद्ध आसन का चिन्तन पूर्वक समर्पण करता हूँ।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय आसनं समर्पयामि, आसनार्थे पुष्पं निवेदयामि। हाथों से पद्ममुद्रा बनाकर उसमें विविध प्रकार के रंग विरंगें द्वारा पुष्प समर्पित करे।

पद्ममुद्रालक्षणम्

करोतु सम्मुखीकृत्यसंहतावुन्नताङ्गुली।
तलारन्तमिलिताङ्गुष्ठौ कुर्यादेषाब्जमुद्रिका॥

दोनों हाथों को आगे की तरफ करके हथेली तथा अङ्गुलियों को भीतर की तरफ झुके हुए तथा अङ्गुष्ठ को तल में मिला देने से जो आकृति बनती है, उसे तन्त्रागम ज्ञाता विद्वान पद्ममुद्रा कहते है।

स्थापनम्

स्थापनीमुद्रा द्वारा पुष्प समर्पित करे, गुरुप्रदत्त यन्त्र पर प्रतिष्ठा न करे—

ॐ देव त्वं भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥१॥

हे देव परमेश्वर! अपने आवरण (परिवार) सहित भक्ति द्वारा प्रसन्न होने वाली, जब तक हम पूजन करते हैं तब तक यहाँ स्थिर रह कर हमारा पूजन ग्रहण करें॥१॥

तवायं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगां प्रभो।
भक्तिस्नेहसमाकृष्टो दीपवत् स्थापयाम्यहम्॥२॥

आपकी सर्वज्ञ महिमामयी मूर्ति भक्ति और प्रेमपूर्वक आवाहित करके दीपकलिकाकृति के समान स्थापित करता हूँ॥२॥

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय स्थापनं समर्पयामि स्थापनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। स्थापनी मुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे।

स्थापनीमुद्रालक्षणम्

अनामामूलसंलग्नां अङ्गुष्ठाग्राञ्जलिरीरिता।
अधोमुखि कृता सैव स्थापनीति निगद्यते॥

अनामिका अङ्गुलि के मूल में अङ्गुष्ठाग्र का संयोजन करके अञ्जलिस्वरूप बनाकर अधोमुख करने पर देवताओं के स्थापन के लिए स्थापनी नाम की मुद्रा कही जाती है।

प्रतिष्ठा

स्थापनीमुद्रा द्वारा पुष्प समर्पित करे—

ॐ अस्मिन्वराननो देव सुखासीनाक्षरात्मिक।
सुप्रतिष्ठितो स्थापितो त्वं नमामि परमेश्वर॥

हे अक्षरात्मिक! वर प्रदान करनेवाले महादेव! सुखपूर्वक आसन पर प्रतिष्ठित स्थापित हो जायें, हे परमेश्वर! आपको नमस्कार है।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इहागच्छ इहागच्छ इहप्रतिष्ठितो भव, प्रतिष्ठोपचारार्थे पुष्पं निवेदयामि। स्थापनी मुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे।

सन्निधानम्

सन्निधानमुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे—

ॐ अनन्यशक्तिसम्पन्न मूर्तिभक्तिरियं प्रभो।
सान्निध्यं कुरु तेऽस्य त्वं भक्तानुग्रहतत्पर॥

अनन्त शक्तियों की स्वामी, देव परमशक्तिमान, भक्तों पर अनुग्रह करने में तत्पर रहनेवाले इस मूर्ति में प्रविष्ट होकर हमें सान्निध्य प्रदान करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इह सन्निधेहि सन्निधानार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सन्निधान मुद्रा के द्वारा देव के सम्मुख पुष्प समर्पित करे।

सन्निधानमुद्रालक्षणम्

आश्लिष्टमुष्टियुगला प्रोन्नताङ्गुष्ठयुग्मका।
सन्निधाने समुद्दिष्टा मुद्रेयं तन्त्रवेदिभिः॥

दोनों हाथों से अलग अलग मुष्ठिका बनाकर दोनों मुष्ठिकाओं को आपस में अङ्गुलियों के तरफ से मिला कर निर्मित आकृति का देवताओं का सन्निधान के लिए प्रयोग करते हैं।

सन्निरोधनम्

सन्निरोधनमुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ आज्ञाय तव देवेश कृपाम्भोधे गुणाम्बुधः।
आत्मनाचैकदृप्तां त्वां संरुणद्ध महेश्वर॥

हे देवेश! आपके गुणों के ज्ञाता भक्त, आपके कृपा प्रसाद के लिए, आपके आज्ञा से अपनी आत्मा में ऐक्यभाव से ध्यान करते हैं आप हमारे आत्मा को पूर्ण रूप से आच्छादित करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इह सन्निरुध्यस्व सन्निरोधनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सन्निरोधन मुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे।

सन्निरोधनमुद्रालक्षणम्

आश्लिष्ठमुष्ठियुगला प्रोन्नताङ्गुष्ठयुग्मका।
अङ्गुष्ठगर्भिणी सैव सन्निरोधे समीरिता॥

दोनों हाथों से अलग अलग अंगुष्ठ को भीतर की तरफ रख कर मुष्ठिका बनाकर दोनों मुष्ठिकाओं को आपस में अङ्गुलियों के तरफ से मिलाकर निर्मित आकृति का देवताओं के सन्निरोधन के लिए प्रयोग करते हैं विद्वान् इसे सन्निरोधनमुद्रा के नाम से कहते है।

सम्मुखीकरणम्

सम्मुखीकरणमुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ आज्ञाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधकस्य च।
मम ऊनं भवेद् कृत्यं तदाप्याभिमुखी भव॥

साधकों का मन दुर्बोध से ग्रस्त होकर विकल हो जाता हैं उस दुर्मन:स्थिति को समाप्त करने तथा अपने सान्निध्य के लिए हमारे सम्मुख हों।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इह सम्मुखि भव सम्मुख्यार्थे अक्षतान् निवेदयामि। सम्मुखिकरण मुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे।

सम्मुखीकरणमुद्रालक्षणम्

कनिष्ठिकामूलाङ्गुष्ठसंयोज्यासरलाञ्जलिः ।
हृदि बद्धाञ्जलिमुद्रा सन्मुखीकरणे मता॥

कनिष्ठिका के मूल में अङ्गुष्ठ को समावेशित करके समस्त अङ्गुलियों को सीधा करके अञ्जलि की आकृति से देवताओं का सम्मुखीकरण होता है, तन्त्रशास्त्र के विद्वान् इसे सम्मुखिकरणमुद्रा कहते हैं।

अवगुंठनम्

भ्रामितमुद्रा के द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ वटुकभैरवदेवेश! जीवरक्षणमेव च।
अवगुंठनपूजार्थं सुहृदया सदा भव॥

जीवों की रक्षा करनेवाले वटुकभैरव की पूजा के लिए अवगुण्ठन कर रहा हूँ, हमारे ऊपर सदा प्रसन्न हों।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इह अवगुंठयामि अवगुंठनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। भ्रामित मुद्रा के द्वारा अक्षत समर्पित करे।

अवगुंठन(भ्रामित)मुद्रालक्षणम्

सव्यहस्तकृतामुष्ठिः दीर्घाधोमुखतर्जनी।
अवगुण्ठनमुद्रेयममितो भ्रामिता भवेत्॥

दाहिने हाथ को मुष्ठि की आकृति बनाते हुए तर्जनी अङ्गुलि को सीधा करके नीचे की तरफ करके देवताओं के चारो तरफ घुमाने से भ्रामित करण होता है। विद्वज्जन इस आकृति को अवगुंठन या भ्रामितमुद्रा कहते हैं।

सकलीकरणम्

सकलीकरणमुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ दशपीयूषवर्षिण्या पूरयेद्यज्ञविष्ठरम्।
मूर्तौदा यज्ञसम्पूर्तौ स्थिरा भव महेश्वर॥

दशवर्षावच्छिन्न(दशवर्ष की कन्याओं) के द्वारा काते गये सूत से आपके लिए यज्ञविष्ठर निर्माण किया गया है, यज्ञ के सम्पूर्ति के लिए मूर्ति में प्रविष्ठ होकर हे महेश्वर! स्थिर हो जायें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय सकलीकरणार्थे अक्षतान्निवेदयामि। षडङ्गन्यासात्मक सकलीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

ॐ ह्रीँ वँ हृदयाय नमः। अक्षत निवेदन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय शिरसे स्वाहा। अक्षत निवेदन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय शिखायै वषट्। अक्षत निवेदन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु कवचाय हुम्। अक्षत निवेदन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय नेत्रत्रयाय वौषट्। अक्षत निवेदन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अस्त्राय फट्। अक्षत निवेदन करे।

सकलीकरणमुद्रालक्षणम्

देवाङ्गेषु षडङ्गनां न्यासः स्यात्सकलीकृतिः।
लेलिहाना कृतान्यासः देवताप्रीतिदायिनी॥

देवताओं के हृदय, शिर, शिखा, भुजा, नेत्र तथा चारो तरफ लेलिहानमुद्रा से तत्तद स्थानों पर षडङ्ग न्यास करने को विद्वान् लोग सकलीकरण कहते हैं।

अमृतीकरणम्

धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ स्वभक्तवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणार्पितम्।
स्वतेजःपुञ्जरेणाशु वेष्टिता भव सर्वतः॥

अपने भक्त के वाणी, मन, चक्षु, श्रोत्र, जिह्वा, घ्राण में अपने तेजःपुञ्ज से सर्वतः आवेष्टित (व्याप्त)करके स्थिर हों।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय अमृतीकरणं समर्पयामि अमृतीकरणार्थे अक्षतान् निवेदयामि। धेनु मुद्रा के द्वारा अमृतीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

धेनुमुद्रालक्षणम्

अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिताः॥

दोनों हाथों के अनामिका का कनिष्ठिका के साथ तथा मध्यमा का तर्जनी के साथ आपस में संयोजन करने से जो आकृति बनती हैं उसे तन्त्र के ज्ञाता धेनुमुद्रा कहते है।

परमीकरणम्

महामुद्रा के द्वारा परमीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ समुद्भूतं सुसौन्दर्यं सौन्दर्यारुणविग्रहम्।
दिव्यतेजस्सुसम्पन्नदेवाक्षरात्मरूपिणम् ॥

दिव्यतेज से सुसम्पन्न अक्षरात्मिकारूपी, सौन्दर्य से उत्पन्न सौन्दर्यरूपी, हमारे हृदय में परमात्मभाव से अवस्थित हों।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय परमीकरणं समर्पयामि परमीकरणार्थे अक्षतान् निवेदयामि। महा मुद्रा के द्वारा परमीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

परमीकरणमहामुद्रालक्षणम्

अन्योन्यग्रथिताङ्गुष्ठौ प्रसारितकराङ्गुलिः।
महामुद्रेयमुदिता परमीकरणे बुधैः॥

दोनों हाथों के अङ्गुष्ठ को आपस में ग्रथित(मिला) करके शेष सभी अङ्गुलियों को सरल करके प्रसारित करने से जो आकृति निर्मित होती हैं तन्त्रज्ञ विद्वान् इसे महामुद्रा कहते है। इसका प्रयोग परमीकरण में किया जाता है।

स्वागतम्

स्वागतमुद्रा के द्वारा स्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये।
तस्यै ते परमेशान आगतं स्वागतं तथा॥

समस्त देवता अपने कामनाओं की पूर्ति के लिए जिनके दर्शन की सदैव इच्छा करते हैं उन परम ईश्वर वटुकभैरव का आगमनार्थ स्वागत करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय स्वागतं समर्पयामि स्वागतार्थे अक्षतान् निवेदयामि। स्वागत मुद्रा के द्वारा स्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे।

सुस्वागतम्

सुस्वागतमुद्रा के द्वारा सुस्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवनञ्च मे।
आगता भव देवेश सुस्वागतमिदं पुनः॥

भक्तों का जीवन जिसके आगमन से सफल हो जाता है और समस्त कामनायें पूरी हो जाती हैं तथा भक्त अनुगृहीत हो जाते हैं उनके आगमन पर सुस्वागत करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय सुस्वागतं समर्पयामि सुस्वागतार्थे अक्षतान्निवेदयामि। सुस्वागत मुद्रा के द्वारा सुस्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे।

प्राणस्थापनम्

लेलिहानमुद्रा के द्वारा प्राणस्थापन करे—

ॐ सञ्चरन्ति भूताः सर्वे जीवने प्रवहन्ति च।
अरुणाभासुषुम्नाशक्तिः प्राणान् स्थापयाम्यहम्॥

जिनकी कृपा से सभी भौतिक सांसारिक प्राणियों का जीवन चलता रहता हैं उन अरुण आभावाली, सुषुम्ना में प्रवाहित होनेवाली, परम प्रकाशमान तडित विद्युताकारा प्राणशक्ति की स्थापना करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय प्राणान्स्थापयामि प्राणान्स्थापनार्थे अक्षतान् निवेदयामि। लेलिहान मुद्रा के द्वारा प्राणस्थापन करे।

सुवर्णादि प्रतिमा पर अग्न्युत्तारण पूर्वक लेलिहानमुद्रा से प्राणस्थापन करे—

लेलिहानमुद्रालक्षणम्

तर्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखीः।
अनामायां क्षिपे द्धामूर्ध्वंकृत्त्वा कनिष्ठिकाम्॥१॥

तर्जनी-मध्यमा-अनामिका अंगुलियों को बराबर सीधा करके अधोमुख कर अनामिका को अङ्गुष्ठ से संयोजित करने से लेलिहान नामक मुद्रा बनती हैं इसे जीव न्यास में प्रयोग किया जाता है॥१॥

लेलिहानाममुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता।
तस्योर्ध्वमुखं कृत्त्वा च तत्त्वाख्यमुद्रामुच्यते॥२॥

लेलिहानमुद्रा को ऊर्ध्वमुख करने से निर्मित आकृति को तन्त्रशास्त्र के ज्ञाता विद्वान तत्त्वाख्यमुद्रा कहते है॥२॥

अष्टमुद्राप्रदर्शनम्

तत्तद् मुद्राओं से निर्दिष्ट मुद्राओं का प्रदर्शन करे—

ॐ योनिमुद्रामहायोनिः डमरुं खड्गमुण्डं च।
वराऽभयत्रिशूलञ्च दर्शयामि महाशिवे॥

हे महाशिवे! योनिमुद्रा, महायोनिमुद्रा, डमरु, खड्ग, मुण्ड, वर, अभय, त्रिशूल मुद्राओं को तत्तद् मुद्राओं से प्रदर्शित करे।

योनिमुद्रालक्षणम्

मिथः कनिष्ठिके बद्धा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्ध्वसंश्लिष्ट दीर्घमध्यमयोरधः॥
अङ्गुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता॥

दोनों हाथों के अनामिका और तर्जनी अंगुलि को आपस में ग्रथित करके उसके ऊपर मध्यमायुगल अङ्गुलि को स्थापित करे तथा कनिष्ठिका अङ्गुलियुगल को नीचे से संश्लिष्ट करने से योनिमुद्रा बनती है।

योनिमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—**ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय योनिमुद्रां प्रदर्शयामि।**

महायोनिमुद्रालक्षणम्

तर्जन्यनामिके मध्ये कनिष्ठे च क्रमादपि।
करयोर्योजयेच्चैव कनिष्ठामूलभेदतः॥
अङ्गुष्ठाग्रं तु निःक्षिप्य महायोनिः प्रकीर्तिताः।
अधोमुखीमिमां कृत्वा दर्शयेद् बीजपूर्वकम्॥

दोनों हाथों के अनामिका और तर्जनी अङ्गुलि को आपस में ग्रथित करके उसके ऊपर मध्यमायुगल अङ्गुलि को स्थापित करे, उसके ऊपर उसी तरह से कनिष्ठिका अङ्गुलियुगल को स्थापित करने से महायोनिमुद्रा बनती है।

महायोनिमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—**ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय महायोनिमुद्रां प्रदर्शयामि।**

खड्गमुद्रालक्षणम्

कनिष्ठेऽनामिके बद्ध्वा स्वाङ्गुष्ठेनैव दक्षतः।
शिलष्टाङ्गुली तु प्रसृत्ये संदृष्टे खड्गमुद्रिका॥

अङ्गुष्ठ से कनिष्ठिका और अनामिका को आबद्ध करके तर्जनी और मध्यमा को सीधा करने से जो आकृति बनती है, उसे विद्वान लोग खड्गमुद्रा कहते हैं।

खड्गमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—**ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय खड्गमुद्रां प्रदर्शयामि।**

मुण्डमुद्रालक्षणम्

मुण्डोभयहस्तेन विधायोर्ध्वसमुन्नयेत्।
मुद्रामुण्डाभिधाख्याता सर्वविघ्नविनाशिनी॥

दोनों हाथ की मुष्ठिका बनाकर एक दूसरे से सटाकर हाथ को ऊपर की तरफ स्थापित करने पर सभी विघ्नों का विनाश करनेवाली मुण्डमुद्रा बनती है।

मुण्डमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—**ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय मुण्डमुद्रां प्रदर्शयामि।**

डमरुमुद्रालक्षणम्

बद्धमुष्ठिकृतं हस्तं चालयेत्स्वयमेव च।
डमरुमुद्राविख्याता दुष्टानां भयकारिणी॥

दोनों हाथ की मुष्ठिका बनाकर एक के ऊपर दूसरा स्थापित कर चलाने से दुष्टों को भयाक्रान्त करनेवाली डमरुमुद्रा बनती है।

डमरुमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—**ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय डमरुमुद्रां प्रदर्शयामि।**

त्रिशूलमुद्रालक्षणम्

अङ्गुष्ठेकनिष्ठान्तु बद्ध्वाशिलष्टाङ्गुलित्रयम्।
प्रसारयेच्च त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता॥

अंगुष्ठ को कनिष्ठिका से आबद्ध करके शेष सभी अंगुलियों को सीधा रखने पर त्रिशूल संज्ञावाली मुद्रा बनती है।

त्रिशूलमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—**ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय त्रिशूलमुद्रां प्रदर्शयामि।**

वरमुद्रालक्षणम्

ऊर्ध्वं प्रसारितं हस्तं आशीर्वादात्मकं तथा।
मुद्रावरदविख्याता भक्तानां सिद्धिदायिनी॥

दक्षिण हाथ को ऊपर की तरफ सीधा करके आशीर्वादात्मक रूप की आकृति भक्तों को सिद्धि प्रदान करनेवाली, वर नामक मुद्रा बनती है।

वरमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—**ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय वरमुद्रां प्रदर्शयामि।**

अभयमुद्रालक्षणम्

अधोमुखं प्रसारितं दक्षहस्तं प्रदर्शयेत्।
मुद्रामभयविख्याता भक्तानां भयहारिणी॥

दक्षिण हाथ को नीचे की तरफ प्रसारने से भक्तों के भय को नष्ट करनेवाली, अभय नामक मुद्रा बनती है।

अभयमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—**ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय अभयमुद्रां प्रदर्शयामि।**

क्रमशः समस्त मुद्राओं को दिखाकर वटुकभैरव गायत्री का जप करे।

वटुकभैरवगायत्रीमन्त्रम्

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय विद्महे भैरवाय धीमहि तन्नोवटुकः प्रचोदयात्॥ १०८ जप कर देवी को समर्पित करे।

अङ्गपुष्पाञ्जलिम्

ॐ नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि॥

ॠतुओं के अनुसार उत्पन्न तरह तरह के सुगन्धित पुष्पों से संग्रहीत पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वरि! ग्रहण करें।

दोनो पैरों पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—**ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय पादयोः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**

जानुओं पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—**ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय जान्वोः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**

नाभि पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—**ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय नाभ्यां पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**

हृदय पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—**ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय हृदये पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**

मस्तक पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—**ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय मस्तके पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि।**

पाद्यम्

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

आपके पाद का क्षणमात्र के सम्पर्क में आने से परमानन्द हो जाता हैं, उस चरण रज के प्राप्ति के लिए शुद्ध पाद्यपदार्थ समर्पित है।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय पादयोः पाद्यं समर्पयामि। गन्ध उशीर गोरोचन श्यामक विष्णुकान्ता कमल एवं दुर्वायुक्त जल अनामिका और अङ्गुष्ठ को मिलाकर यन्त्रस्थित भगवती के युगल चरणों. में समर्पित करे।

अर्घ्यम्

ॐ निधीनां सर्वदेवानां त्वमनर्घ्यगुणात्मकः।
शवस्वरूपी हे देव! गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

सभी देवताओं में, सभी निधियों में केवल आपही गुणवान् हैं, शव के स्वरूपवाले हे देव! आपको नमस्कार है, इस अर्घ्य को ग्रहण कीजिए।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय अर्घ्यं समर्पयामि। हाथ में अर्घ्य प्रदान करे।

आचमनम्

ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने।
आचमनं कल्पयाम्यद्य भैरवं शुद्धिहेतवे॥

वेदों में उल्लिखित ज्ञान के लिए, देवताओं में देवत्व के लिए तथा भैरव के शुद्धि के लिए हे ईश्वर! आचमन समर्पित है।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय मुखे आचमनीयं समर्पयामि। हीनोन्नत समस्ताङ्गुलियों से आचमन मुद्रा के द्वारा चन्दन, पुष्प, जाती, कर्पूर, कंकोल, लवङ्ग चूर्ण जल में मिलाकर मुख में आचमन निवेदन करे।

मधुपर्कम्

ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने।
मधुपर्कमिदं देव! कल्पयामि प्रसीद मे॥

सभी प्रकार के कालुष्य को समाप्त करने के लिए, पूर्णसुखासन पर आसीन हे देव! आपको मधुपर्क समर्पित है, इसे ग्रहण करके प्रसन्न हों।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय मुखे मधुपर्कं समर्पयामि। ताम्र धातु के अर्घ्यपात्र में मधु, घृत, शर्करा युक्त मधुपर्क देव के सम्मुख तत्त्वाख्यमुद्रा से (ऊर्ध्वमुख अनामिका, मध्यमा तथा अङ्गुष्ठ से) मधुपर्क निवेदन करे।

स्नानीयजलम्

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी दिव्यनदियों का दिव्यजल स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय स्नानीयं जलं समर्पयामि।

स्नानाङ्गाचमनीयजलम्

ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वाऽपि यस्या स्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्य ते पुनराचमनीयकम्॥

जीव शुद्ध हो या अशुद्ध हो, किसी भी अवस्था में, जिसके स्मरण मात्र से ही समस्त जीव शुद्ध हो जाते हैं, उसी शुद्धता के लिए पुन: आचमनीय जल समर्पित है।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय स्नानाङ्गाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पुनरर्घ्यम्

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादुशीतलम्।
अर्घ्यं समर्पयाम्येदं कामार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

कपूर के सुगन्धि से सुगन्धित, दुध के समान स्वादवाला, समस्त कामनाओं की पूर्ति के लिए शीतल अर्घ्य रूप जल समर्पित करता हूँ प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय पुनरिदमर्घ्यं समर्पयामि। जल, कुश, अक्षत, तिल, व्रीहि, यवाज्य, पुष्पमिश्रित अर्घ्य शिर पर सर्वाङ्गुलि से निवेदन करे।

उद्वर्तनम्

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकपितामहाशय।
सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम्॥

सर्व लोकों में परमशुद्धात्मा, हे लोकपिता! उत्तमस्निग्ध पदार्थ स्निग्धता के लिए समर्पित है, इस स्निग्धपदार्थ को ग्रहण करें।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय उद्वर्तनं समर्पयामि। हरिद्रादिद्रव्य तैलचन्दनदध्यादि संयुक्त पुष्पपरागादि निर्मित उद्वर्तन अधोमुखाङ्गुलि से निवेदित करे।

शुद्धस्नानीयजलम्

ॐ परमानन्द बोधाविध निमग्न निजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश्वर॥

परमानन्द स्वरूप आत्ममूर्ति स्वरूपी आपको साङ्गोपाङ्ग स्नान के लिए शुद्ध जल समर्पित है, हे महेश्वर! ग्रहण करें।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय शुद्धस्नानीयमिदं जलं समर्पयामि। स्नानीय मुद्रा से स्नानोदक प्रदान करे।

वस्त्रम्

ॐ मया चित्रपदच्छन्नं निजगुह्योरुतेजसे।
निवारणाय अविज्ञानं वासस्ते कल्पयाम्यहम्॥

हमारा चित्त विभिन्न अज्ञान से आच्छन्न हो गया है, उसका आप अपने तेज से निवारण करके विज्ञान का प्रकाश करने के लिए हे देव! वस्त्र समर्पित करता हूँ।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इदं वासः समर्पयामि। वासमुद्रा से प्रदान करे।

यज्ञोपवीतम्

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण त्रिगुणेश्वर॥

नव तन्तुओं से निर्मित, त्रिगुण (त्रिरावृत्तिवाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मैं आपकों समर्पित करता हूँ, हे महादेव! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इदं यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उत्तरीयम्

ॐ यामाश्रित्य महादेवो जगत्संहारकः सदा।
तस्यै ते परमेशान कल्पयाम्युत्तरीयकम्॥

जिस शक्ति का आश्रय ग्रहण करके महादेव इस जगत् का संहार करते हैं, उसी शक्ति की कामना से हे परमेशान! आपको उत्तरीय प्रदान करता हूँ।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इदं वासः समर्पयामि।

पुष्पसारम्

ॐ जननीचम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः।
सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं परिगृह्यताम्॥

हे देव! चम्पकादि पुष्पों के तैलों से निर्मित सुन्दर सुगन्धित, वस्त्रादि पर लगाने योग्य पुष्पसार आपके प्रीत्यर्थ समर्पित है।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इदं पुष्पसारं समर्पयामि।

आभूषणम्

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गयै नानाशक्त्याश्रिते शिव।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते॥

स्वभाव से ही अनुकूल, सुन्दर अङ्गोंवाली, समस्त शक्तियों की आश्रयभूता, हे शिव! आपके अर्चन के लिए विभिन्न प्रकार के चित्रविचित्र आभूषण समर्पित है।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय इदं आभूषणं समर्पयामि। मातृका वर्णों से मूल मन्त्र को पुटित करके देवता के अङ्गों में न्यास करे।

विन्यासम्

ॐ भावमन्त्रार्थसंयुक्तं वर्णस्वरसमन्वितम्।
मातृकारूपिणि देव! विन्यासं परिकल्पितम्॥१॥

वाक्यार्थ से युक्त स्वर तथा व्यञ्जनवर्णों से निर्मित मन्त्रस्वरूपिणी हे देवि! मातृका विन्यास समर्पित है॥१॥

सर्वलिपिसमायुक्तामभिनवरूपधारिणीम्।
अज्ञानान्धकारनाशाय विन्यासं परिकल्पितम्॥२॥

समस्त लिपियों से समायुक्त होकर अभिनव रूप धारण करनेवाली, हमारे अज्ञान रूपी अन्धकार के नाश के लिए विन्यास कर रहा हूँ॥२॥

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः शिरसे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः मुखे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः कण्ठे विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः हृदये विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः नाभौ विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः जान्वोः विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः जङ्घयोः विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः पादौ विन्यसामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ भैरवाय नमः सर्वाङ्गे विन्यसामि।

चन्दनम्

ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वर!॥

सौभाग्य और परमानन्द से परिपूर्ण दिग्दिगन्तरों में सुगन्धि से व्याप्त, सुन्दर सुगन्ध से युक्त चन्दन समर्पित है, हे परमेश्वर! कृपापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय चन्दनं समर्पयामि। सभी अङ्गुलियों से लेप करे।

अक्षतम्

ॐ अक्षतान्धवलान्देवि सुवर्णरौप्यमयीकृतान्।
गृहाण जगदीशानि प्रसीद परमेश्वर!॥

धवल अक्षतों को सुवर्ण रंग से अलंकृत करके हे संसार की ईश्वर! आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके प्रसन्न होईये।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय स्वाहा अक्षतं समर्पयामि।

पुष्पम्

ॐ तुरीयवनसम्भूतं नानापुष्पमनोहरम्।
अनन्तसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम्॥

हे देव! तुरीय वन से उत्पन्न विभिन्न गुणों से युक्त सुन्दर मनोहर आनन्दस्वरूपी उत्तम पुष्प को ग्रहण कीजिये।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय एतानि ऋतुकालोद्भवपुष्पाणि वौषट्। विभिन्न प्रकार के पुष्पों को समर्पित करे।

पुष्पमालाम्

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादिनी वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

माली के द्वारा निर्मित, सुगन्धित पुष्पों की माला आपके लिए लाया हूँ, हे देव! इसे ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय पुष्पमालां समर्पयामि। दोनों हाथों से पुष्पमाला समर्पित करे।

दूर्वाम्

ॐ दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण जगदीश्वरि॥

अमृततुल्य, मङ्गल प्रदान करनेवाले हरे हरे सुन्दर दूर्वा के नूतन अङ्कुर, आपके पूजा के लिए लाया हूँ, हे देव! प्रसन्नतापूर्वक इसे ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। तत्वाख्य मुद्रा से दूर्वा समर्पित करे।

विल्वपत्रम्

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं त्रितया युतम्।
त्रिजन्मपापसंहारं विल्वपत्रं शिवार्पणम्॥

भगवान् शिव के तीन नेत्रों के समान तीन पत्रोंवाले, तीन जन्मों के पापों को नष्ट करनेवाले, विल्वपत्रों को शिव की प्रसन्नता के लिए हे देव! आपको समर्पित है।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय स्वाहा विल्वपत्राणि समर्पयामि। तत्वाख्य मुद्रा से विल्वपत्र समर्पित करे।

नानापरिमलद्रव्यम्

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितां देवीमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य आपको शान्ति प्रदान करने के लिए समर्पित है॥१॥

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नामक सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें, यह आपको शान्ति प्रदान करे॥२॥

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। तत्वाख्य मुद्रा से अबीर समर्पित करे।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला है, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय सिन्दूरं समर्पयामि। तत्वाख्य मुद्रा से सिन्दूर समर्पित करे।

कुङ्कुमम्

ॐ कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनाऽर्चितो देव! प्रसीद परमेश्वर!॥

दिव्यकान्ति को प्रदान करनेवाला, समस्त कामिनियों को प्रसन्नता प्रदान करनेवाला, दिव्यकुङ्कुम आपको प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! इसे ग्रहण करके प्रसन्न होइये।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय कुङ्कुमं समर्पयामि।

धूपसंस्कारम्

ॐ फट्। धूप पात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। षोडश बार जप कर दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ। वाम हस्ततल को दक्ष हस्तपृष्ठ पर रख कर निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ नमः। मण्डल का अभ्यर्चन करे।

धूपाभिमन्त्रणम्

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय स्वाहा। आठबार जप कर अभिमन्त्रण करे।

घण्टापूजनम्

ॐ पराऽपरालसन्देव! सर्वानन्दप्रदायक।
विघ्नविच्छेदनार्थाय सुघण्टावादनं शुभम्॥

परम आनन्द करनेवाले पर और अपर से उल्लसित देव समस्त विघ्नों के विच्छेदन के लिए शुभ घण्टा का वादन करता हूँ।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय जयध्वनिमातः स्वाहा।

धूपदानम्

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धों में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान के लिए है, हे देव! अपको समर्पित है।

परमानन्द सौरम्य परिपूर्णदिगम्बर।
गृहाण परमं गन्धं कृपया भैरवेश्वर॥

परमानन्द से सुरम्य परिपूर्ण दिगम्बर भैरवेश्वर कृपया इस परम गन्ध को ग्रहण करें, आपके प्रसन्नता के लिए आपकों समर्पित है।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय एष धूपं समर्पयामि। शङ्ख के जल का प्रक्षेप करके बाँयें हाथ से घण्टावादन करते हुए धूपमुद्रा से देवता के नाभिप्रदेश पर धूप का आघ्रापन करे।

दीपदानम्

दीपसंस्कारम्—

ॐ फट्। दीपक का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। वामहस्ततल को दक्षहस्तपृष्ठ पर रख कर निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ नमः। दीपक का अभ्यर्चन करे।

दीपसमर्पणम्

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरज्ज्योतीर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के अन्धकार को समाप्त करनेवाला, सुन्दर प्रकाशवान् महादीप बाहर तथा भीतर व्याप्त दीपज्योति हे देव! आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय दीपं समर्पयामि। प्रज्वलित दीप निवेदन करे।

नैवेद्यसंस्कारम्

विविध प्रकार का नैवेद्य साज्य शर्करापायसादि का परिष्कार करके त्रिकोण, वृत्तयुक्त चतुरस्रमण्डल पर स्थापित कर सर्व दोषों का निषेचन करे।

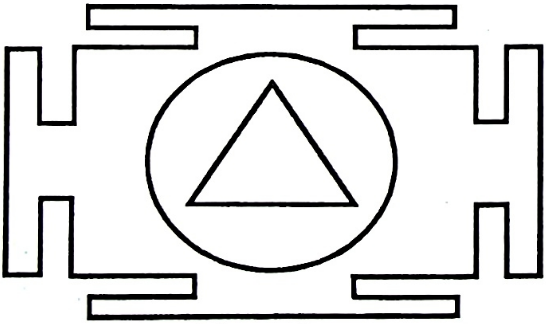

ॐ यँ। षोडश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ नमः। मण्डल का अभ्यर्चन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ। आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय जयध्वनिमातः स्वाहा। धेनुमुद्रा दिखाकर गन्धाक्षतपुष्प से नैवेद्य का पूजन कर तत्वाख्यमुद्रा से देवी को घण्टा बजाते हुए नैवेद्य समर्पित करके भोजन के तत्तत् मुद्राओं का प्रदर्शन करे।

नैवेद्यसमर्पणम्

ॐ सत्पात्रसिद्धं विविधं पक्वान्नानेक भक्षणम्।
निवेदयामि देवेश! कृपया त्वं गृहाण तत्॥

शुद्धसत्पात्र में विधानपूर्वक पकाये हुए हवि का मै निवेदन करता हूँ, हे देवेश! इसे कृपया ग्रहण किजिए।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय साङ्गयै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै नैवेद्यमिदं समर्पयामि। ग्रासमुद्रा से समर्पित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय प्राणाय स्वाहा। प्राणमुद्रा दिखाये।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय अपानाय स्वाहा। अपानमुद्रा दिखाये।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय व्यानाय स्वाहा। व्यानमुद्रा दिखाये।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय उदानाय स्वाहा। उदानमुद्रा दिखाये।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय समानाय स्वाहा। समानमुद्रा दिखाये।

पानीयंजलम्

ॐ समस्तदेवदेवेश सर्वप्राप्तिकरं परम्।
अखण्डानन्दसम्पूर्णा गृहाणं जलमुत्तमम्॥

परमशुद्धि प्रदान करनेवाला, समस्त देविदेवताओं को अखण्ड आनन्द प्रदान करनेवाला शुद्ध जल आपको प्रदान करता हूँ, इसे ग्रहण करें।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय पानीयं जलं समर्पयामि। चुलुक मुद्रा से पानीय जल प्रदान करे।

उद्वर्तनम्

ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं दिव्यं गृहाण महामाहेश्वर॥

मलयपर्वत पर उत्पन्न होनेवाला दिव्यचन्दन कस्तूरी आदि के गन्धों से युक्त दिव्य उद्वर्तन प्रदान करता हूँ हे देव! इसे ग्रहण करें।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं उद्वर्तनकं समर्पयामि।

ताम्बूलसंस्कारम्

पूगीफलादि से युक्त ताम्बूल का परिष्कार करके त्रिकोण वृत्तयुक्त चतुरस्र मण्डल पर स्थापित कर सर्व दोषों का निषेचन करे।

ॐ यँ। षोडश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ नमः। ताम्बूल का अभ्यर्चन करे।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं। आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ताम्बूलसमर्पणम्

ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागवल्लिदलैर्युतम्।
पुंगभागेरितं देव! ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

लवङ्ग, इलायची, कर्पूर, सुपाड़ी, विभिन्न पदार्थो तथा पान के पत्ते से युक्त ताम्बूल वीटिका आपको समर्पित है, हे देव! प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय ताम्बूलं समर्पयामि। तत्त्वख्यमुद्रा द्वारा देवी के सम्मुख ताम्बूल वीटिका समर्पित करे।

ऋतुफलम्

ॐ यद्यत्फलं सुविमलं मधुरं सुपक्वं,
तच्छ्रीफलादि तव तुष्टायार्पितञ्च।

तेन प्रसीद गणनायक जन्मलाभं,
भैरवाऽत्र देव वरदे कुरुतं फलाढ्यम्।।

सुपक्व, मधुर, सुविमल श्रीफलादि जो जो फल आपके तुष्टि के लिए अर्पित है, उनसे आप प्रसन्न होकर जिस तरह से गणनायक को जन्म दी थीं उसी प्रकार से हमें भी वर प्रदान कर फलवान बनायें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय ऋतुकालोद्भव फलं समर्पयामि। अनामिका अंगुष्ठ से देवी को ताम्बूल समर्पित करे।

नीराजनम्

चन्द्रादित्यौ च धरिणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्।।

चन्द्रमा, सूर्य, विद्युत् तथा अग्नि सभी के ज्योतियों को ग्रहण करके आपकी आरती करता हूँ प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय नीराजनं समर्पयामि। हाथों में पुष्प लेकर तत्त्वमुद्रा से नीराजन समर्पित करे।

तत्त्वमुद्रालक्षणम्

तर्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखी।
अनामायां क्षिपे द्धामूर्ध्वंकृत्त्वा कनिष्ठिकाम्।।१।।

तर्जनी-मध्यमा-अनामिका अंगुलियों को बराबर सीधा करके अधोमुख कर अनामिका को अङ्गुष्ठ से संयोजित करने से लेलिहान नामक मुद्रा बनती है, इसे जीवन्यास में प्रयोग किया जाता है।।१।।

लेलिहानाममुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता।
तस्योर्ध्वमुखं कृत्त्वा च तत्त्वाख्यमुद्रामुच्यते।।२।।

लेलिहा नामक इस मुद्रा का जीव न्यास में प्रयोग किया जाता है, लेलिहान मुद्रा को ऊर्ध्व मुख करने से तत्त्वाख्य मुद्रा तन्त्रागम शास्त्र के ज्ञाता विद्वान् लोग कहते हैं इसका देवताओं को पदार्थ समर्पण में प्रयोग होता है।।२।।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाण ईश्वरः सदा।।

मन्दार, पारिजात, पाटली, केतकी, जाती तथा चम्पकादि के पुष्पों को आपके लिए लाया हूँ हे ईश्वर! ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ नानासुगन्धिसंयुक्तं यथाकालोद्भवं तथा।
मया पुष्पाञ्जलिर्दत्तं गृहाण परमेश्वर!॥

ऋतुओं के अनुसार उत्पन्न होनेवाले विभिन्न प्रकार के गन्धों से युक्त पुष्पाञ्जलि समर्पित करता हूँ, हे देव! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण कीजिए।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साङ्गाय सायुधाय सशक्तिकाय सपरिवाराय पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि। अञ्जलीमुद्रा से देव को पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

अञ्जलिमुद्रालक्षणम्

सर्वाङ्गुलिः ऋजुं कृत्वा प्रसार्यञ्च संयोजयेत्।
हस्तद्वयोः संयोज्यञ्च अञ्जलिमुद्रामुच्यते॥

सभी अङ्गुलियों को सीधा करके हथेली को पसार कर दोनों हाथों को आपस में सटाने से जो आकृति बनती है, उसे अञ्जलिमुद्रा कहते हैं।

पूजनसमपर्णम्

अनेन पूजनेन वटुकभैरवः प्रीयन्त्ता न मम।

दाहिने हाथ से लेलिहानमुद्रा बनाकर पूजन करे तथा बाँयें हाथ से तत्त्वमुद्रा बनाकर तर्पण करे।

श्रीवटुकभैरववाह्यपूजनं परिपूर्णम्

❀

आवरणपूजनम्

परिवार्चनादेशः—दोनों हाथ में पुष्प लेकर आवरण पूजन के लिए आदेश मागें।

ॐ संविन्मय परोदेव परामृतरसप्रिय।
अनुज्ञां देहि वटुक! परिवारार्चनाय मे॥

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकभैरवाय नमः वटुकभैरवश्रीपादुकां अनुग्रहार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरणं विन्दौगुरुपंक्तिसहितवटुकभैरवपूजनम्

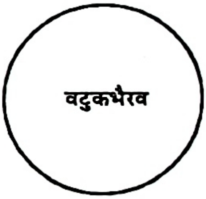

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकभैरवाय नमः वटुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

दिव्यौघादिगुरुणां पूजनम्—भूपुर के ईशान कोण में दिव्यौघगुरुओं का विन्यास करे—

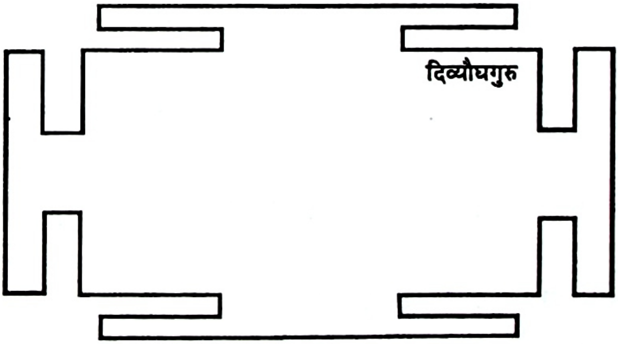

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथाय नमः श्रीमहादेव्यानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहादेवानन्दनाथाय नमः श्रीमहादेवानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीत्रिपुरानन्दनाथाय नमः श्रीत्रिपुरानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीभैरवानन्दनाथाय नमः श्रीभैरवानन्दनाथाश्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य ईशान कोण में।

सिद्धौघादिगुरुणां पूजनम्—भूपुर के उत्तर दिशा में सिद्धौघ गुरु का विन्यास करे—

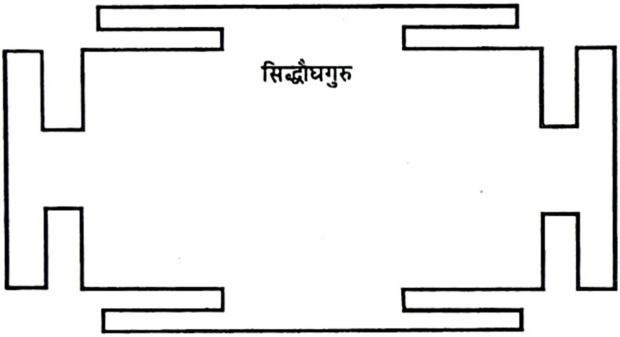

ॐ ह्रौँ वँ श्रीब्रह्मानन्दनाथाय नमः श्रीब्रह्मानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीपूर्णदेवानन्दनाथाय नमः श्रीपूर्णदेवानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीचलचित्तानन्दनाथाय नमः श्रीचलचित्तानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीचलचलानन्दनाथाय नमः श्रीचलचलानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीकुमारानन्दनाथाय नमः श्रीकुमारानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीक्रोधानन्दनाथाय नमः श्रीक्रोधानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीवरदानन्दनाथाय नमः श्रीवरदानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीस्मरदीपानन्दनाथाय नमः श्रीस्मरदीपानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीमायाम्बायै नमः श्रीमायाम्बानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमायावत्याम्बायै नमः श्रीमायावत्याम्बानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य उत्तर दिशा में।

मानवौघादिगुरुणां पूजनम्—वायव्य कोण में मानवौघगुरुओं का विन्यास करे—

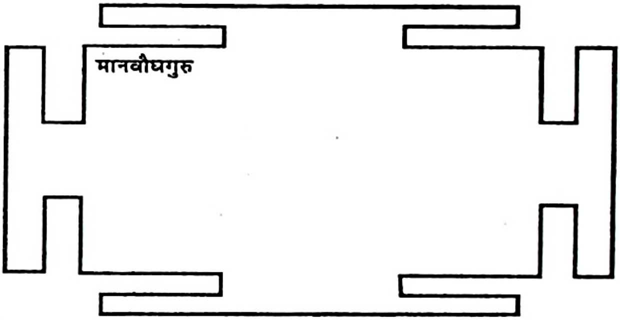

ॐ ह्रीँ वँ श्रीविमलानन्दनाथाय नमः श्रीविमलानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीकुशलानन्दनाथाय नमः श्रीकुशलानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमत्सेनानन्दनाथाय नमः श्रीमत्सेनानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसुधाकरानन्दनाथाय नमः श्रीसुधाकरानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीप्रह्लादानन्दनाथाय नमः श्रीप्रह्लादानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसनकानन्दनाथाय नमः श्रीसनकानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवसिष्ठानन्दनाथाय नमः:श्रीवसिष्ठानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीबोधानन्दनाथाय नमः श्रीबोधानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमीनानन्दनाथाय नमः श्रीमीनानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीगोरक्षानन्दनाथाय नमः श्रीगोरक्षानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीभोजदेवानन्दनाथाय नमः श्रीभोजदेवानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीप्रजापत्यानन्दनाथाय नमः श्रीप्रजापत्यानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमूलदेवानन्दनाथाय नमः श्रीमूलदेवानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीरन्तिदेवानन्दनाथाय नमः श्रीरन्तिदेवानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीविघ्नेशरानन्दनाथाय नमः श्रीविघ्नेश्वरानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीहुताशनानन्दनाथाय नमः श्रीहुताशनानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसमयानन्दनाथाय नमः श्रीसमयानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीसन्तोषानन्दनाथाय नमः श्रीसन्तोषानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीनिजगुरवानन्दनाथाय नमः श्रीनिजगुरवानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि। भूपुर के मध्य वायु कोण में।

गन्धाक्षतपुष्प से—**ॐ ह्रीँ वँ प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ प्रथमावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरवप्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

हे शरणागत वत्सल वटुकभैरव! हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, भक्तिपूर्वक प्रथम-आवरण का अर्चन समर्पित करता हूँ।

स्तम्भन, चतुरस्त्र, मत्स्य, गोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन करने के बाद द्वितीय आवरण का पूजन करे।

द्वितीयावरणं त्रिकोणे त्रिदेवपूजनम्

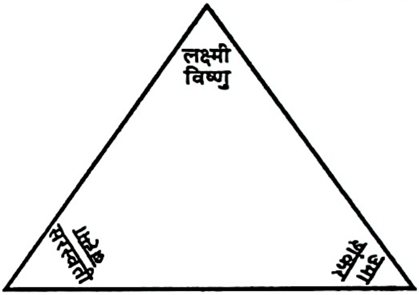

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सरस्वतीसहितब्रह्मणे नमः सरस्वतीसहितब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लक्ष्मीसहितविष्णवे नमः लक्ष्मीसहितविष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ उमासहितशङ्कराय नमः उमासहितशङ्करश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्प से—ॐ ह्रीँ वँ द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—ॐ ह्रीँ वँ द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिता सन्तु।

सामान्यार्घ्य जल से—ॐ ह्रीँ वँ द्वितीयावरणवरणदेवतापूजनेन वटुकभैरवप्रीयतां न मम

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

स्तम्भन, चतुरस्र, मत्स्य, गोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन करने के बाद तृतीय आवरण का पूजन करे।

तृतीयावरणं पञ्चकोणे ऐशान्यादिपूजनम्

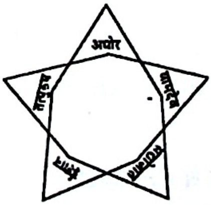

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ईशानाय नमः ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तत्पुरुषाय नमः तत्पुरुषश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अघोराय नमः अघोरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वामदेवाय नमः वामदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सद्योजाताय नमः सद्योजातश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अन्तः पञ्चकोणे पञ्चवक्त्रपूजनम्

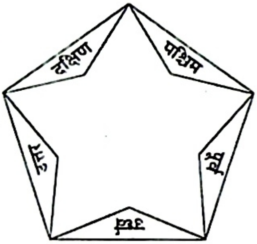

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊर्ध्ववक्त्राय ईशानाय नमः ऊर्ध्ववक्त्रईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ उत्तरवक्त्राय तत्पुरुषाय नमः उत्तरवक्त्रतत्पुरुषश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दक्षिणवक्त्राय अघोराय नमः दक्षिणवक्त्रअघोरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पश्चिमवक्त्राय वामदेवाय नमः पश्चिमवक्त्रायवामदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पूर्ववक्त्राय सद्योजाताय नमः पूर्ववक्त्रसद्योजातश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्प से—**ॐ ह्रीँ वँ तृतीयावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ तृतीयावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरवप्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

स्तम्भन, चतुरस्र, मत्स्य, गोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन करने के बाद चतुर्थ आवरण का पूजन करे।

चतुर्थावरणं षडदले आनन्दनाथादिपूजनम्

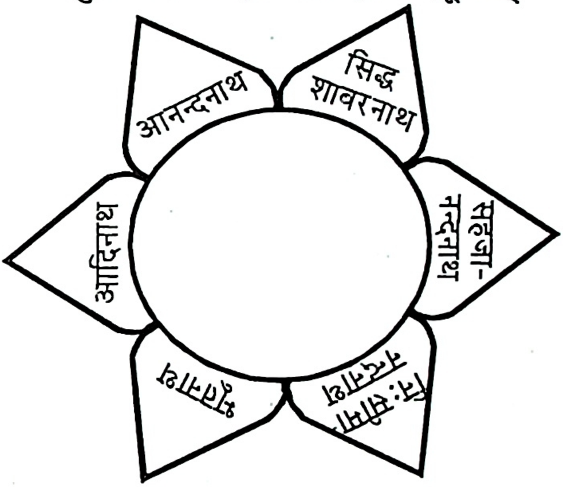

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतनाथाय नमः भूतनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आदिनाथाय नमः आदिनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आनन्दनाथाय नमः आनन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिद्धशाबरनाथाय नमः सिद्धशाबरनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सहजानन्दनाथाय नमः सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निःसीमानन्दनाथाय नमः नन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अन्तः षडदले उमादिपुत्राणां पूजनम्

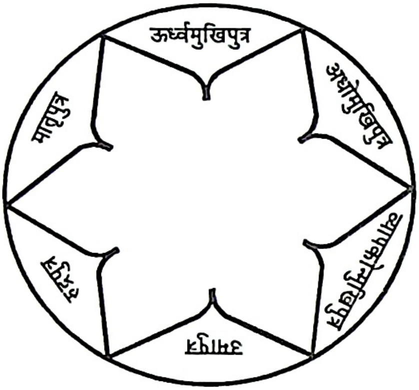

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ उमापुत्राय नमः उमापुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रुद्रपुत्राय नमः रुद्रपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मातृपुत्राय नमः मातृपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊर्ध्वमुखिपुत्राय नमः ऊर्ध्वमुखिपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अधोमुखिपुत्राय नमः अधोमुखिपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ व्यापकोन्मुखिपुत्राय नमः व्यापकोन्मुखिपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्प से—**ॐ ह्रीँ वँ चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ चतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ चतुर्थावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

स्तम्भनचतुरस्रमत्स्यगोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन कर पञ्चम आवरण का पूजन करे।

पञ्चमावरणं अष्टकोणे डाकिन्यापुत्राणां पूजनम्

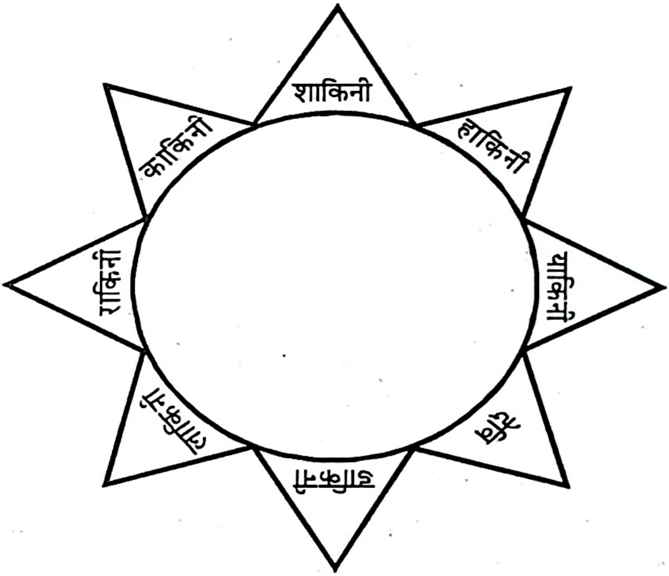

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डाकिनीपुत्राय नमः डाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ राकिनीपुत्राय नमः राकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लाकिनीपुत्राय नमः लाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ काकिनीपुत्राय नमः काकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शाकिनीपुत्राय नमः शकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हाकिनीपुत्राय नमः हाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ याकिनीपुत्राय नमः याकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ देविपुत्राय नमः देविपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अन्तःअष्टकोणे ब्राह्यादिपुत्राणां पूजनम्

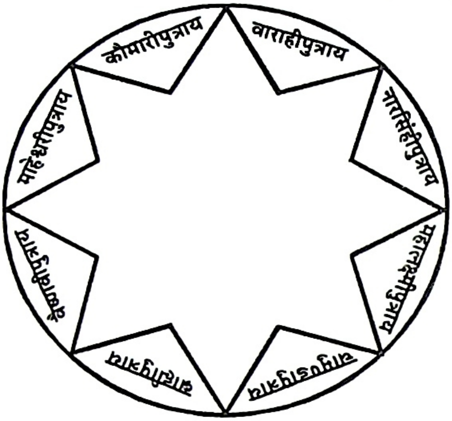

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ब्रह्मीपुत्राय नमः ब्रह्मीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वैष्णवीपुत्राय नमः वैष्णवीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ माहेश्वरीपुत्राय नमः महेश्वरीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कौमारीपुत्राय नमः कौमारीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वाराहीपुत्राय नमः वाराहीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नारसिंहिपुत्राय नमः नारसिंहिपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऐन्द्रीपुत्राय नमः ऐन्द्रीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चामुण्डापुत्राय नमः चामुण्डापुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्प से—**ॐ ह्रीँ वँ पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रौँ वँ पञ्चमावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनिमुद्रा प्रदर्शन कर षष्ठावरण देवताओं का पूजन करे।

षष्ठावरणं द्वितीय अष्टदले भैरवादिपूजनम्

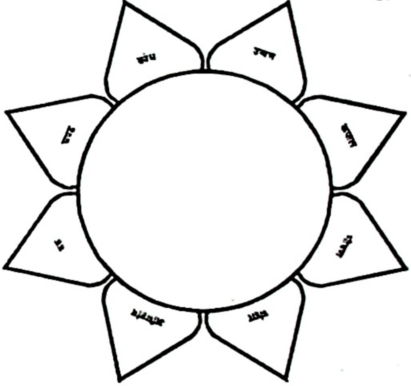

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कपालभैरवाय नमः कपालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ संहारभैरवाय नमः संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्प से—**ॐ ह्रीँ वँ षष्ठमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ षष्ठमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ षष्ठामावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम्॥

स्तम्भन, चतुरस्र, मत्स्य, गोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन करने के बाद सप्तमावरण का पूजन करने के लिए चक्र के षोडश कोणों में वामावर्तक्रम से प्रथम कोण से लेकर षोडशकोण तक पूजन करे।

सप्तमावरणं षोडशकोणे कलानां पूजनम्

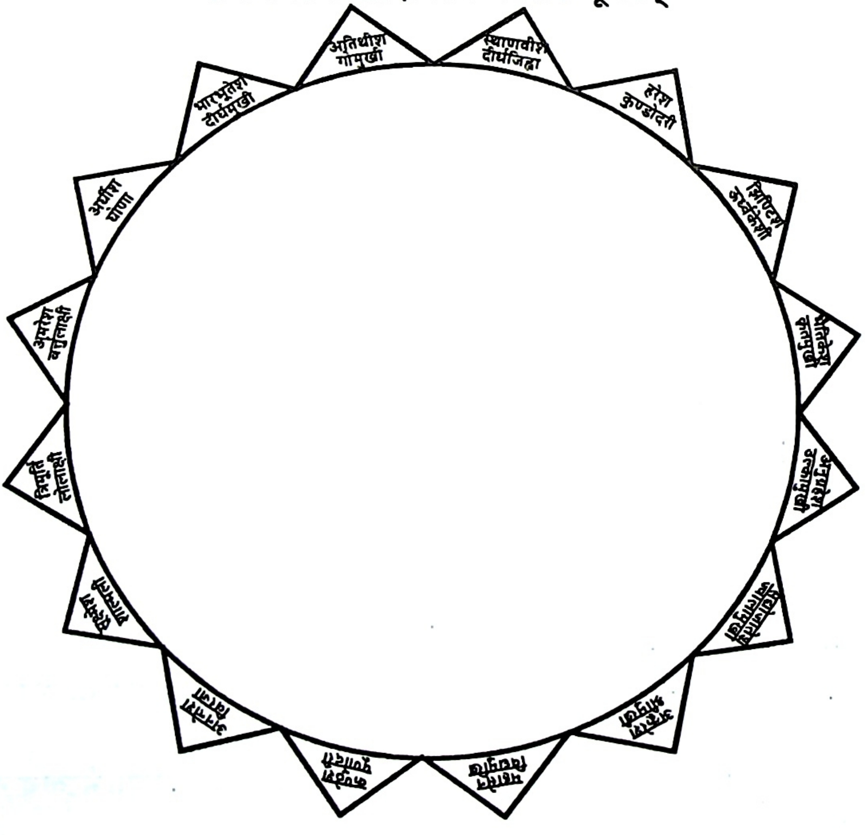
अतिथीश गामुखी
स्थाणवीश दीर्घजिह्वा
हरेश कुण्डोदरी
झिण्टीश ऊर्ध्वकेशी
भौतिकेश विकृतमुखी
सद्योजातेश ज्वालामुखी
अनुग्रहेश उल्कामुखी
अक्रूरेश श्रीमुखी
महासेन विद्यमुखि
कण्ठेश पूर्णोदरी
अनन्तेश विरजा
सूक्ष्मेश शाल्मली
त्रिमूर्ति लोलाक्षी
अमरेश वर्तुलाक्षी
अर्घीश घोणा
भारभूतेश दीर्घमुखी

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः श्रीकण्ठेशपूर्णोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअनन्तेशविरजाभ्यां नमः श्रीअनन्तेशविरजा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः श्रीसूक्ष्मेशशाल्मली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमः श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः श्रीअमरेशवर्तुलाक्षी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअर्धीशघोणाभ्यां नमः श्रीअर्धीशघोणा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां नमः श्रीभारभूतेशदीर्घमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअतिथीशगोमुखीभ्यां नमः श्रीअतिथीशगोमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीहरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः श्रीहरेशकुण्डोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः श्रीभौतिकेशविकृतमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः श्रीसद्योजातेशज्वालामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखीभ्यां नमः श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः श्रीअक्रूरेशश्रीमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमहासेनविद्यामुखीभ्यां नमः श्रीमहासेनविद्यामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

वाह्य षोडश कोणों पर पूजन करने के बाद अन्तः षोडश कोणों पर वामावर्तक्रम से प्रथम से प्रारम्भ कर षोडश कोण तक दाहिने हाथ से लेलिहान मुद्रा के द्वारा पूजन करे तथा वाये हाथ से तत्त्व मुद्रा के द्वारा तर्पण करे।

अन्तः षोडशकोणे कलानां पूजनम्

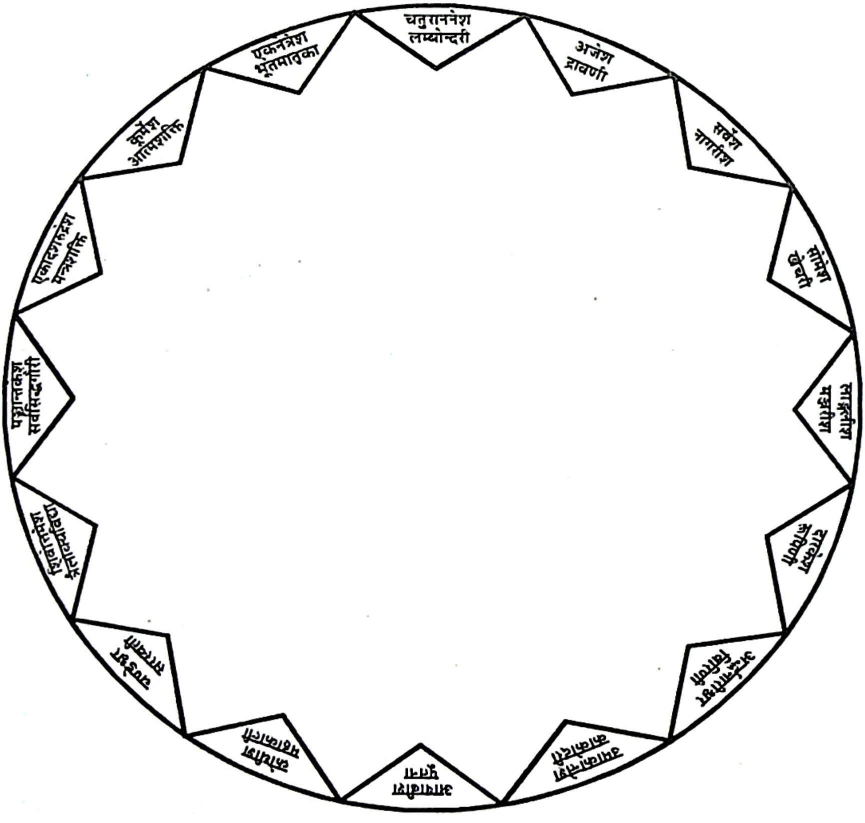
चतुराननेश लम्बोन्दरी
अजेश द्रावणी
सर्वेश नागरीश
सोमेश खेचरी
एकनेत्रेश भूतमातृका
कूर्मेश आत्मशक्ति
एकादशरुद्रेश मन्त्रशक्ति
पञ्चान्तकेश सर्वसिद्धगौरी

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीक्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः श्रीक्रोधीशमहाकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीचण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः श्रीचण्डेशसरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीपञ्चान्तकेश-

सर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीशिवोत्तमेश-त्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीएकादशरुद्रेश-मन्त्रशक्तिभ्यां नमः श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः श्रीकूर्मेशात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीएकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः श्रीएकनेत्रेशभूतमातृ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीचतुराननेश-लम्बोदरीभ्यां नमः श्रीचतुराननेशलम्बोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअजेशद्रावणीभ्यां नमः श्रीअजेशद्रावणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसर्वेशनागरीभ्यां नमः श्रीसर्वेशनागरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसोमेशखेचरीभ्यां नमः श्रीसोमेशखेचरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीलाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः श्रीलाङ्गलीशमञ्जरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीदारकेशरूपिणीभ्यां नमः श्रीदारकेशरूपिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअर्द्धनारीश-वीरिणीभ्यां नमः श्रीअर्द्धनारीशवीरिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीउमाकान्तेश-काकोदरीभ्यां नमः श्रीउमाकान्तेशकाकोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीआषाढीशपूतनाभ्यां नमः श्रीआषाढीशपूतना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

वाह्य षोडश कोणों पर पूजन करने के बाद अन्त: षोडश कोणों पर वामावर्तक्रम से प्रथम से प्रारम्भ कर षोडश कोण तक दाहिने हाथ से लेलिहान मुद्रा के द्वारा पूजन करे तथा वाये हाथ से तत्त्व मुद्रा के द्वारा तर्पण करे।

बहिर्षोडशपत्रे कलानां पूजनम्

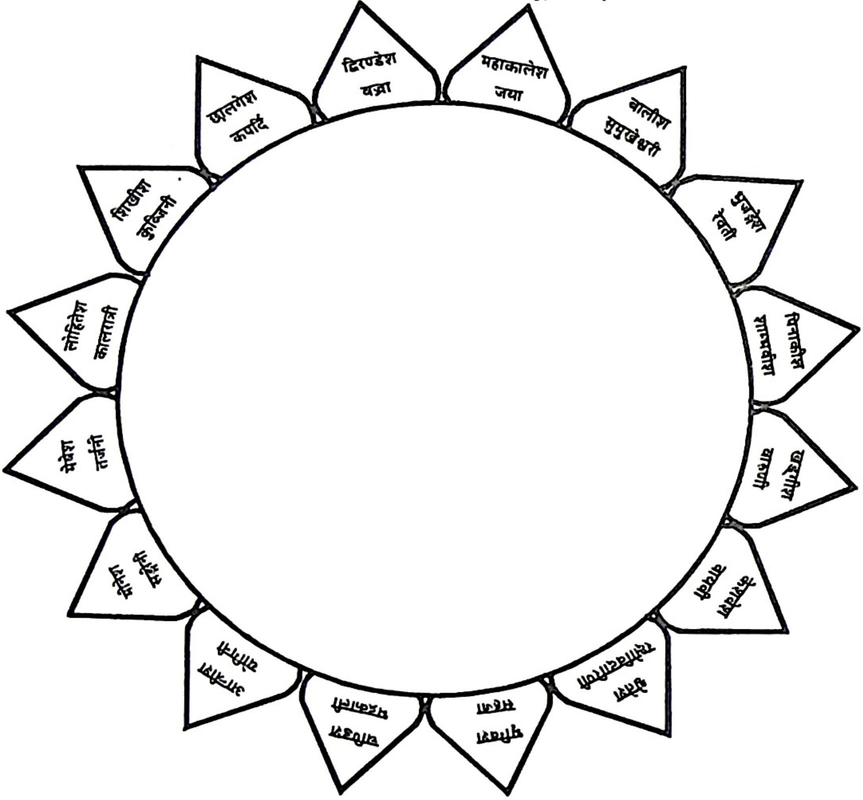
द्विरण्डेश वक्रा
महाकालेश जया
बालीश सुमुखेश्वरी
भुजङ्गेश रेवती
पिनाकीश शाम्भवी
खड्गीश वारुणी
केशवेश वायवी
भ्रेतेश रक्षोविदारिणी
भृग्विश सहजा
चण्डिश भद्रकाली
आन्त्रीश योगिनी
मीनेश शङ्खिनी
मेषेश तर्जनी
लोहितेश कालरात्री
शिखीश कुब्जिनी
छगलेश कपर्दि

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीचण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः श्रीचण्डीशभद्रकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीआन्त्रीशयोगिनीभ्यां नमः श्रीआन्त्रीशयोगिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः श्रीमीनेशशङ्खिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमेषेशतर्जनीभ्यां नमः श्रीमेषेशतर्जनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीलोहितेशकालरात्रीभ्यां नमः श्रीलोहितेशकालरात्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीशिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः श्रीशिखीशकुब्जिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीछागलण्डेशकपर्दिभ्यां नमः श्रीछागलण्डेशकपर्दि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीद्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः श्रीद्विरण्डेशवज्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमहाकालेशजयाभ्यां नमः श्रीमहाकालेशजया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीबालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः श्रीबालीशसुमुखेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः श्रीभुजङ्गेशरेवती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीपिनाकीशमाधवीभ्यां नमः श्रीपिनाकीशमाधवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीखड्गीशवारुणीभ्यां नमः श्रीखड्गीशवारुणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकेशवेशवायवीभ्यां नमः श्रीकेशवेशवायवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां नमः श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभृग्वीशसहजाभ्यां नमः श्रीभृग्वीशसहजा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीनकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः श्रीनकुलीशलक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीशिवेशव्यापिनीभ्यां नमः श्रीशिवेशव्यापिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसंवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः श्रीसंवर्तकेशमहामाया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्पा से—**ॐ ह्रीँ वँ सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ सप्तमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ सप्तमावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

स्तम्भन, चतुरस्र, मत्स्य, गोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन करने के बाद अष्टमावरण का पूजन करे।

अष्टमावरणं प्रथम भूपुरे हेतुकादिपूजनम्

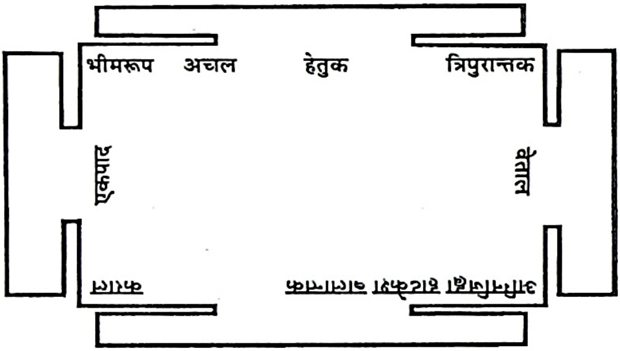

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हेतुकाय नमः हेतुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वेतालाय नमः वेतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अग्निजिह्वाय नमः अग्निजिह्वाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कालान्तकाय नमः कालान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ करालाय नमः करालायश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ एकपादाय नमः एकपादश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीमरूपाय नमः भीमरूपश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अचलाय नमः अचलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हाटकेशाय नमः हाटकेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्प से—**ॐ ह्रीँ वँ अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ अष्टमावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्॥

स्तम्भन, चतुरस्र, मत्स्य, गोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन करने के बाद नवमावरण का पूजन करे।

नवमावरणं द्वितीय भूपुरे लकुलीशादिपूजनम्

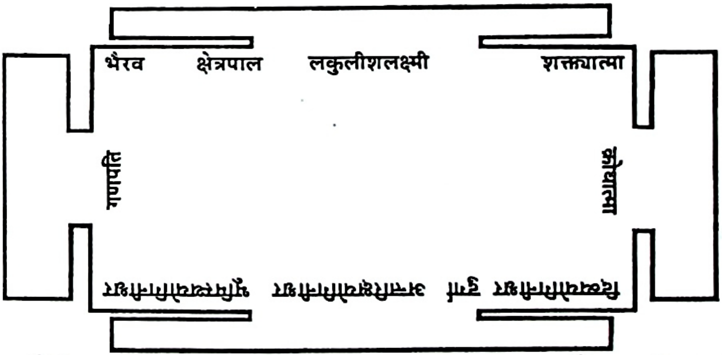

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः लकुलीशलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शक्त्यात्मने नमः शक्त्यात्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्रोधात्मने नमः क्रोधात्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दिव्ययोगिनीश्वरेभ्यो नमः दिव्ययोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ अन्तरिक्षयोगिनीश्वरेभ्यो नमः अन्तरिक्षस्थयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ भूमिस्थयोगिनीश्वरेभ्यो नमः भूमिस्थयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गणपतये नमः गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ भैरवाय नमः भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दुर्गायै नमः दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्प से—**ॐ ह्रौँ वँ नवमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रौँ वँ नवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रौँ वँ नवमावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥

स्तम्भन, चतुरस्र, मत्स्य, गोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन करने के बाद नवमावरण का पूजन करे।

दशमावरणं तृतीय भूपुरे दिग्पालादिपूजनम्

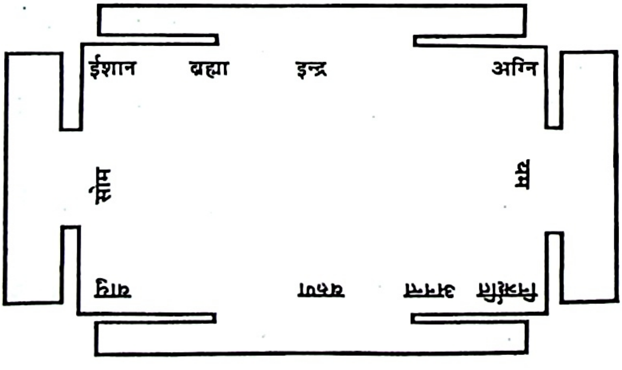

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अग्नये नमः अग्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यमाय नमः यमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वरुणाय नमः वरुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वायवे नमः वायुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सोमाय नमः सोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ईशानाय नमः ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अनन्ताय नमः अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षत पुष्प से—**ॐ ह्रीँ वँ दशमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ दशमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ दशमावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्॥

स्तम्भनचतुरस्रमत्स्यगोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन कर एकादशमावरण पूजन करे।

एकादशावरणं तत्रैव दिग्पालास्त्रपूजनम्

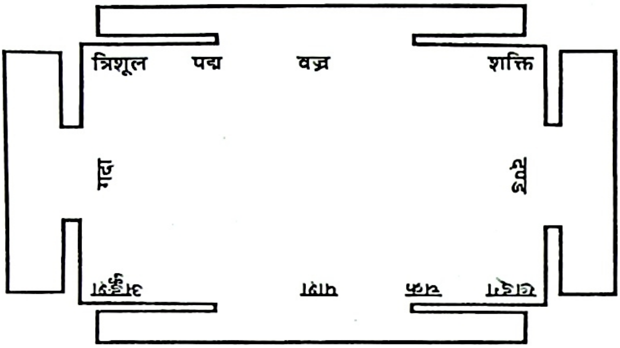

ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वज्राय नमः वज्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शक्तये नमः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दण्डाय नमः दण्डश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खड्गाय नमः खड्गश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाशाय नमः पाशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अङ्कुशाय नमः अङ्कुशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गदायै नमः गदाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिशूलाय नमः त्रिशूलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्माय नमः पद्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चक्राय नमः चक्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गन्धाक्षतपुष्प से—ॐ ह्रीँ वँ एकादशमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ एकादशमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

सामान्यार्घ्य जल से—**ॐ ह्रीँ वँ एकादशमावरणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशमावरणार्चनम्॥

स्तम्भनचतुरस्रमत्स्यगोक्षुर तथा योनिमुद्राओं का प्रदर्शन कर आगे का पूजन करे।

अनेन आवारणदेवतापूजनेन वटुकभैरव प्रीयतां न मम।

आवारणपूजनं परिपूर्णम्

❀

दैनिकबलिदानम्

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोः आज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यश्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटक विराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशि स्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीइष्टदेवतावटुकभैरवपुरश्चरणसिद्धये मांसमीनादिबलिदानं करिष्ये।

ॐ मांसमीनादिबलिमण्डलाय नमः। बलि मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ मांसमीनादिबलिमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। बलि मण्डल पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ मांसमीनादिदेयबलये नमः। मांसमीनादिबलि को मण्डल पर स्थापित करे।

ॐ मांसमीनादिदेयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। मांसमीनादि बलि पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मांसमीनादिदेयबलिं तुभ्यं समर्पयामि। हाथ में जल लेकर बलि समर्पित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकभैरवं तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ चरकीं तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ विदारीं तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ पूतनां तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ पापराक्षसीं तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वाहा मांसमीनादि देयबलिं समर्पयामि।

वटुकादिबलिदानम्—नारिकेल बलिदान के बाद वटुकादि बलिदान करे—

सङ्कल्पः—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीवटुकभैरवपुरश्चरण-सिद्धये चतुर्दिक्षु वटुकादिदेवताभ्यो पायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

वटुकबलिदानम्

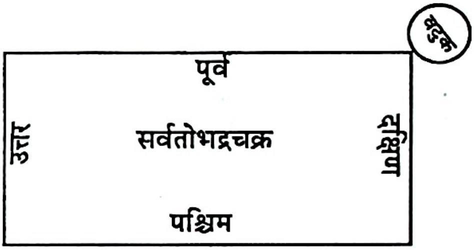

चक्र के ईशानकोण में वटुक के लिए बलि प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। ईशानकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुक्रबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथकपिलजटा भार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व-विघ्नान्नाशयनाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ करकलित-कपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुण-तिमिर-नीलः व्याल-यज्ञोपवीती।
क्रतु-समय-सपर्या-विघ्न-विच्छेद-हेतुः ,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

पुष्पाञ्जलिः

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः॥

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन बटुकः प्रीयतां न मम।**

योगिनीबलिदानम्

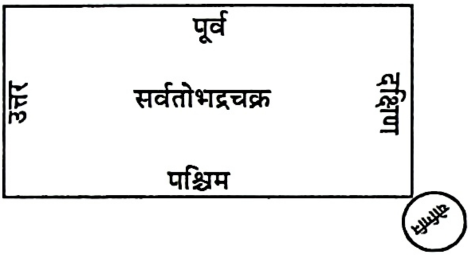

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र को अग्नि कोण में रखे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो नमः सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्र-सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ऊर्ध्वब्रह्माण्डतोया दिविगगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिभिः पातु वीरेन्द्रवन्द्या॥

प्रार्थना करने के बाद पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

पुष्पाञ्जलिः

योगिनीयोगमाया च योगिनां सिद्धिदायिनी।
षड्चक्रभेदिनी देवि सर्वविघ्नविनाशिनी॥१॥
योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्यमहातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी॥२॥
या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरा परात्परा।
द्यु-व्योम-भूमिचारिण्यः सर्वाः प्रीतास्तु मे सदा॥३॥

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।**

गणेशबलिदानम्

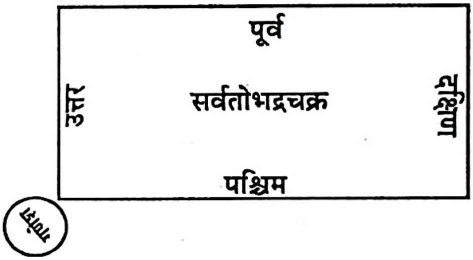

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैर्ऋत्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय नमः भो गणेश! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्यमिति च परं यत् स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दूर-मूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति॥१॥

विदेहरूपं भवबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदंतम्।
अमेयसांख्येन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्तियुतं भजामः॥२॥
कल्पद्रुमाधः स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणिशुण्डम्।
विभ्राणमत्यद्भुतचित्तरूपं यः पूजयेत् तस्य समस्तसिद्धिः॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः॥१॥
अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विघ्नेशाय नमो नमः॥२॥
अनन्तविभवायैव परेशां पररूपिणे।
शिवपुत्राय देवाय गुहाग्रजाय ते नमः॥३॥
पार्वतीनन्दनायैव देवानां पालकाय ते।
सर्वेषां पूज्यदेहाय गणेशाय नमो नमः॥४॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।**

क्षेत्रपालबलिदानम्

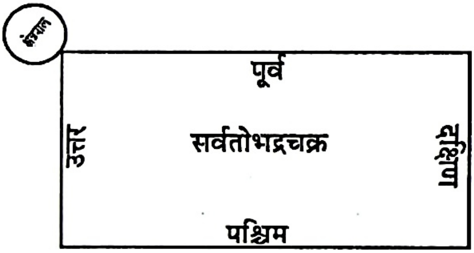

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। वायव्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करके समर्पित करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः भो स्थानक्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारकौस्तुभधरं शीतांशुचण्डोज्ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥१॥
वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्य॥२॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं, अनुज्ञां दातुमर्हसि॥१॥
ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥२॥
ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते क्षेत्रेश तव दर्शनात्॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

राजराजेश्वरबलिदानम्

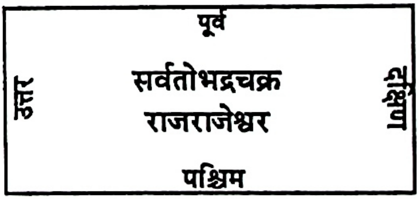

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः ह्सौँ स्हौँ राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥
हे पार्वती हृदयबल्लभ चन्द्रमौले भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भवरुद्र पिनाकपाणे संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥
हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

गौरीविलास-भुवनाय महेश्वराय पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥
भक्तिप्रियाय भयरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥
रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वरः प्रीयतां न मम।

कालबलिदानम्

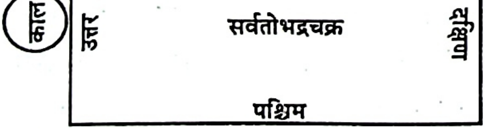

ॐ ह्रीँ वँ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से उत्तरदिशा बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ कालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ कालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। वलिपात्र पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ कालबलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ कालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ काल! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

एह्येहि दण्डायुधधर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र।
विशालवक्षःस्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

कालाय कालरूपाय कालाञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं कालदेव नमोऽस्तु ते॥१॥
यमो निहन्तापितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः।
प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतान्त एतद्दशभिर्जपन्ति॥२॥
धर्मराज महाबाहो दक्षिणाधिपतये नमः।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीड़ां निवारय॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीकालः प्रीयतां न मम।

मृत्युबलिदानम्

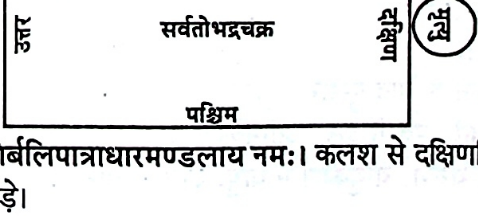

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से दक्षिणदिशा में बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से दक्षिणदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ मृत्यु! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समं विग्रह अन्तरूप।
अन्तविरूपे विनियोगकारी मृत्युस्वरूपाय नमो नमस्ते॥

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जिलि प्रदान करे—

मृत्यवे मृत्युरूपाय अन्ताञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं मृत्युदेव नमोऽस्तु ते॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे।

अनेन बलिदानेन श्रीमृत्युः प्रीयतां न मम।

दिग्पालादिबलिदानम्

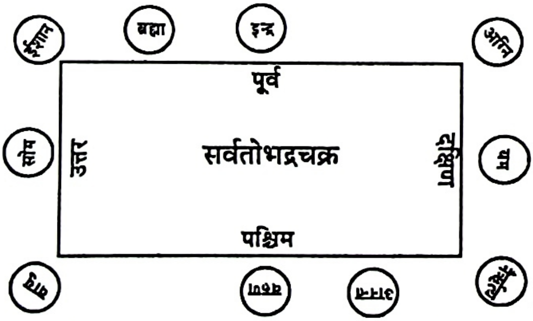

वटुकादि बलिदान के बाद पुरश्चरण गृह अथवा मण्डप के बाहर चारों तरफ दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे, पूर्व में इन्द्र, अग्निकोण में अग्नि, दक्षिण में यम, नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायुकोण में वायु, उत्तर में सोम, ईशानकोण में ईशान तथा

पूर्व और ईशानकोण के बीच में ब्रह्मा तथा अन्त में नैर्ऋत्यकोण तथा पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलिदान समर्पित करे।

ऐरावतसमारूढो बज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मादिन्द्राय ते नमः॥

ॐ ह्रीँ वँ यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। पूर्व में इन्द्र के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। अग्नि कोण में अग्नि के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। दक्षिण में यम के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्तं रक्षराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। नैर्ऋत्य कोण में निर्ऋति के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। पश्चिम में वरुण के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। वायव्य कोण में वायु के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं ताराराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। उत्तर में सोम के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। ईशान कोण में ईश्वर के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। ईशान और पूर्व के बीच में ब्रह्मा के लिए बलिदान प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। नैर्ऋत्य और पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलिदान प्रदान करे।

प्रार्थना

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्मा-अनन्त-सहिताः प्रसीदन्तु ममोपरि॥१॥
पायसो-बलिदानेन सन्तुष्टः सर्वदा भवेत्।
तेषां बलिं प्रयच्छामि भवन्तु प्रीतिः सर्वदा॥२॥
ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन दशदिग्पालाः प्रियन्तां नमम।**

भूतादिबलिदानम्

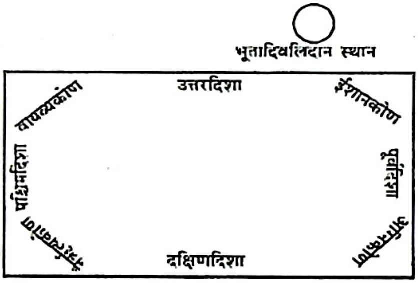

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पीठ के बाहर मण्डल का पूजन कर बलिपात्र रखे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन कर वामाङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलि द्रव्य पूजन कर संकल्प करे।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

भूता ये च विघ्नकर्तारो दिविभूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थ संस्थाश्च शिवयोगेन भाविता॥१॥
क्रूराद्याः शतसंख्यकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्याव्यवस्थिताः॥२॥
तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णत्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥३॥
वापी कूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥४॥
यत्र तत्र विचरन्ति भूतप्रेतादि सर्वदा।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा॥५॥
ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोऽप्युग्रहरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥६॥
भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्तरक्षगा।
ते सर्वे प्रीतमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥७॥

पुष्पाञ्जलिः—प्रार्थना करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले, बलिं गृहित्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे, अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलि प्रदान के बाद हाथ पैर धोकर प्राणायामादि करके आगे का कार्य करे।

बटुकादिबलिदानं परिपूर्णम्

* * *

मूलमन्त्रजपम्

विनियोग:—**अस्य श्रीवटुकभैरवन्यासमहामन्त्रस्य वृहदारण्यकऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीवटुकभैरवोदेवता, ह्रीँबीजं, क्लीँशक्तिः, ॐकीलकं समस्तकामनासंसिद्ध्यर्थे न्यासे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ वृहदाण्यकऋषये नमः शिरसि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवताय नमः हृदये। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँबीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लीँशक्तये नमः पादयोः। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐकीलकाय नमः नाभौ। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वाङ्गे। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ वाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ वीँ तर्जनीभ्यां नमः। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ वूँ मध्यमाभ्यां नमः। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ वैँ अनामिकाभ्यां नमः। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ वौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रूँ वूँ शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रैँ वैँ कवचाय हूम्। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रौँ वौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

मन्त्रवर्णन्यासम्

ॐ ह्रीँ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर पर स्पर्श करे।

ॐ वँ नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट पर स्पर्श करे।

ॐ व नमः मुखे न्यस्यामि। मुख पर स्पर्श करे।

ॐ टु नमः नेत्रत्रयोः न्यस्यामि। नेत्रत्रय पर स्पर्श करे।

ॐ का नमः कर्णयोः न्यस्यामि। दोनों कर्ण पर स्पर्श करे।

ॐ य नमः हृदये न्यस्यामि। हृदये पर स्पर्श करे।

ॐ आ नमः दक्षभुजे न्यस्यामि। दाहिनी भुजा पर स्पर्श करे।

ॐ प नमः वामभुजे न्यस्यामि। वामभुजा पर स्पर्श करे।

ॐ दु नमः दक्षहस्ते न्यस्यामि। दक्षिण हाथ पर स्पर्श करे।

ॐ द्धा नमः वामहस्ते न्यस्यामि। वाये हाथ पर स्पर्श करे।

ॐ र नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व पर स्पर्श करे।

ॐ णा नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व पर स्पर्श करे।

ॐ य नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पृष्ठ पर स्पर्श करे।

ॐ कु नमः उदरे न्यस्यामि। उदर पर स्पर्श करे।

ॐ रु नमः दक्षकट्यां न्यस्यामि। दाहिने कटि पर स्पर्श करे।

ॐ कु नमः वामकट्यां न्यस्यामि। वाये कटि पर स्पर्श करे।

ॐ रु नमः दक्षोरुं न्यस्यामि। दाहिने उरु पर स्पर्श करे।

ॐ व नमः वामोरुं न्यस्यामि। वाये उरु पर स्पर्श करे।

ॐ टु नमः दक्षजङ्घं न्यस्यामि। दाहिने जङ्घा पर स्पर्श करे।

ॐ का नमः वामजङ्घ न्यस्यामि। वाये जङ्घा पर स्पर्श करे।

ॐ य नमः दक्षपादे न्यस्यामि। दाहिने पैर पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ नमः वामपादे न्यस्यामि। वाये पैर पर स्पर्श करे।

ॐ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यांमि। शिर से पाद पर्यन्त सम्पूर्ण शरीर पर स्पर्श करे।

मन्त्रपदन्यासम्

ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर पर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट पर स्पर्श करे।

ॐ वटुकाय नमः वाह्वोः न्यस्यामि। वाहू पर स्पर्श करे।

ॐ आपदुद्धारणाय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय पर स्पर्श करे।

ॐ कुरु नमः उदरे न्यस्यामि। उदर पर स्पर्श करे।

ॐ कुरु नमः पृष्ठे न्यस्यामि। पृष्ठ पर स्पर्श करे।

ॐ वटुकाय नमः कट्याद्यारभ्यशिरस्यन्तं न्यस्यामि। कटि से शिर तक स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ नमः कट्यादिपादान्तं न्यस्यामि। कटि से पाद पर्यन्त स्पर्श करे।

ॐ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पाद पर्यन्त सम्पूर्ण शरीर पर स्पर्श करे।

न्यास करने के बाद हाथ पुष्प लेकर श्रीमहाभैरव का ध्यान करे।

महाभैरवध्यानम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों मे कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्थावाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालोंवाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।

शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥

शुद्ध स्वच्छ स्फटिक के सदृश भासमान, सहस्रों सूर्य के समान तेजवाले, नीले बादल के समान श्याम वर्णवाले, नील अञ्जन के समान कान्तिवाले॥१॥

अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम्॥२॥

आठ भुजाओंवाले, चार भुजाओंवाले और दो भुजाओंवाले, बड़े-बड़े दाँतोंवाले, नूपुर के शब्द से गुञ्जायमान॥२॥

भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥

सर्प की मेखलावाले, अग्नि के समान वर्णवाले, शिर पर शिखावाले, दिगम्बर, कुमारियों के स्वामी, अतुलित बलशाली॥३॥

खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥

खट्वाङ्ग, असि, पाश, शूल, वामदक्षिण दोनों हाथो में धारण किये हुए, डमरू, कपाल और सर्प से युक्त, वरदाता॥४॥

अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

अग्निवर्णस्वरूप, कुत्ते को वाहन के रूप में साथ रखनेवाले, भैरव देवता का सभी कामनाओं की पूर्ति के लिए ध्यान करता हूँ॥

वटुकभैरवसात्त्विकध्यानम्

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥१॥

स्वच्छ स्फटिक के सदृश, कुण्डल से सुशोभित, दिव्यमणियों से बने हुए नूपूर और किंकिणी से सुशोभित, प्रसन्न, शिव की भाँति पुलकित मुखवाले, कमलवत् करों में सदा शूल और तलवार धारण करनेवाले, बालस्वरूप बटुक भैरवजी का ध्यान करता हूँ॥१॥

वटुकभैरवराजसध्यानम्

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥२॥

उदयकालीन सूर्य के समान लाल कान्तिवाले, तीन नेत्रोंवाले, रक्त पुष्पमाला से युक्त, पुलकित मुखवाले, वरदाता, कपाली, निर्भय, हाथ में शूल धारण करनेवाले, नील ग्रीवावाले, आभूषणों से युक्त, खण्ड चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, मधूक पुष्प के समान लाल वस्त्र धारण किये हुए, भय को दूर भगानेवाले बटुक भैरव का ध्यान करता हूँ॥२॥

वटुकभैरवतामसध्यानम्

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥३॥

त्रिलोक के स्वामी, द्वितीया के चन्द्रकला को धारण करनेवाले, मुण्डमाला पहने हुए, महेश्वर, दिगम्बर, पीत केशवाले, हाथ में डमरु, शूल, खड्ग, पाश और अभय धारण करनेवाले, तथा नाग, घण्टा, कपाल हाथ में सुशोभित, विशाल दाँतोंवाले, दिव्य आभूषणों से सुसज्जित, त्रिनेत्र तथा नाना मणियों से जटित किंकिणी और नूपूर धारण किये हुए बटुक भैरव का ध्यान करता हूँ।।३।।

शापविमोचनम्—वटुक मन्त्र शापविमोचन के लिए अधोलिखित मन्त्र का जप करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकं शापं विमोचय विमोचय ह्रीँ क्लीँ। मन्त्र का २१ बार जप करने के बाद माला प्रार्थना करे।

मूलमन्त्रप्राणायामम्—पूरक, कुम्भक, रेचक विधि से प्राणायाम करे—

मन्त्रकुल्लुका

ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे।

मन्त्रसेतु

ॐ । ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रमहासेतु

क्रीँ। कालिका मूलबीज का कण्ठस्थित विशुद्ध चक्र पर दश बार न्यास करे।

मन्त्रनिर्वाणम्

ॐ ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे।

मुखशोधनम्

क्रीँ क्रीँ क्रीँ ॐ क्रीँ क्रीँ क्रीँ। बोल कर दस बार जप करे।

प्राणयोगम्

ह्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ ह्रीँ। श्वास-प्रश्वास के साथ दस बार जप करे।

उद्दीपनम्

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ। हृदय पर दस बार जप करे।

मूलमन्त्रम्

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ। मूल मन्त्र जप करे।

मूलमन्त्रार्थम्

ॐ (तार)—दीर्घऊकार—सदाशिव, ँ—(नाद) लोकनायक पापघातक। **भावार्थ**—सदाशिव हमारे पापों को नष्ट करें।

ह्रीं (भुवनेश्वरीबीज)—**ह**—सर्वव्यापक, **र**—अनन्ततेजोमयी, ं—(अनुस्वार)—स्थूलब्रह्म-स्वरूपिणी, **ई**—(दीर्घ ईकार)—महामाया। **भावार्थ**—अनन्ततेजोमयी सर्वव्यापक स्थूलब्रह्म-स्वरूपिणी महामाया हमारे पापों को नष्ट करें।

वँ (अमृत बीज)—उकार—ईश्वर तत्त्व, अकार—परमात्म तत्त्व, मकार—शक्ति, उकार अकार सन्धि यण करने पर वकार का मकार शक्ति सम्मेलन करने पर वं, परा योजन करने पर वँ पर मण्डलस्थ अमृत तत्त्व।

वटुकाय (देवसंज्ञा)—वटुक(लघु) वेशधारी शिव के अंश।

आपदुद्धारणाय (कामनाहेतु)—आपत्ति से उद्धार के लिए।

कुरु कुरु (क्रियापद)—करें करें।

वटुकाय (सम्बोधन)—देव।

ह्रीँ (सम्पुटन)—शक्ति स्वरूपी ब्रह्म।

ॐ (सम्पुटन)—ब्रह्म।

भावार्थ—अनन्ततेजोमय परमेश्वर वटुक(लघु) रूपधारी महाशिव हमारे समस्त आपत्तियों दु:खों का विनाश कर समस्त भयों से हमारी रक्षा करें।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय नमः आपदुद्धारणं कुरु कुरु वटुकाय वँ ह्रीँ स्वाहा। काम्य प्रयोग में प्रयोक्तव्य अन्य वटुक मन्त्र।

मालाप्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥

सर्व शक्ति स्वरूपिणी माहामाया माला चतुवर्ग की सिद्धि के लिए न्यास करता हूँ हमारे लिए सिद्धि प्रदायी हो जाओं॥१॥

ॐ अविघ्नं कुरु मालेत्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

हे माला! हमारे जप को निर्विघ्न करें, दक्षिण हाथ में ग्रहण करता हूँ, हमारे ऊपर प्रसन्न होकर जप काल में हमें सिद्धि प्रदान करें॥२॥

ॐ ह्रीं अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

माला का यथोपचार पूजन करके दक्षिण हाथ मध्यमा अङ्गुलि के मध्य पर्व पर स्थापित कर, हाथ को हृदय प्रदेश में स्थापित करके, प्रत्येक गुटिका को सरकाते हुए, सुमेरु अलङ्घनपूर्वक, हृत्पद्म में वटुकभैरव का तथा सहस्रार में श्रीगुरु शिव का ध्यान करते हुए, जिह्वा में मन्त्र को दीपशिखावत भावना करते हुए, सहस्रार से अमृतस्राव पूर्वक अमृत पान करते हुए न्यूनतम एक सहस्र अथवा विहित संख्या जप करे। जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थनापूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

हे माले! तुम सभी देवताओं को प्रसन्नता और शुभ प्रदान करनेवाली हो, हे भद्रे हमारा कल्याण करो तथा हमें यश और बल सर्वदा प्रदान करो।

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। सिर से माला को हाथ में लेकर।

माला का पुनः पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करके मूल मन्त्र से पूरक, कुम्भक, रेचनपूर्वक प्राणायाम के बाद ऋष्यादि न्यास करके देवी के वाम कर में जप का समर्पण करे।

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

गुह्य से भी अतिगुह्य गोप्य से भी गोप्य, हे देवि! हमारे जप को ग्रहण कर हमें हमारे कार्यसिद्धिरूपी कृपाप्रसाद प्रदान करें।

मूलमन्त्रजपं परिपूर्णम्

❀

सहस्रनामार्चनम्

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रद मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं श्रीइष्टदेवतावटुकभैरवप्रीत्यर्थं दिव्यसहस्रनामावलिभिः पुष्पादिसमर्पणं करिष्ये।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मानन्दभैरवऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः श्रीवटुकभैरवोदेवता वँबीजं ह्रींशक्तिः ॐकीलकं वटुकभैरवप्रीतये पुष्पादि समर्पणे विनियोगः।

ध्यानम्

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराद्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥१॥
उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥२॥
वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥३॥

अधोलिखित प्रत्येक मन्त्रों से एक एक गन्धाक्षतपुष्प, केवल पुष्प, कृष्णपुष्प, वटक, किसमिस अथवा कोई भी ऋतुफल, रोली, हल्दी इत्यादि किसी पदार्थ से कामनानुसार विहित पदार्थों मे से कोई भी पदार्थ अथवा रुपये का सिक्का इत्यादि से वटुकभैरव के यन्त्र विग्रह पर समर्पित करे। विभिन्न कामनाओं के विभिन्न पदार्थ शास्त्र में वर्णित हैं उनके अनुसार सहस्र पदार्थों से वटुकभैरव का अर्चन करे।

१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकाय नमः।
२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकाधीशाय नमः।
३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटप्रीतये नमः।
४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटेशाय नमः।
५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विपणये नमः।
६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वज्रपाणये नमः।
७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वज्राय नमः।
८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अभयाय नमः।
९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वज्रवल्लभाय नमः।
१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वामाचारप्रियाय नमः।
११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वक्राय नमः।
१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वक्रग्रासाय नमः।
१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विशारदाय नमः।
१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विशापाय नमः।
१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विघ्नहर्तायै नमः।
१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वेतालाढ्यायै नमः।
१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विचक्षणाय नमः।
१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विश्वव्यापये नमः।
१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विश्वनाथाय नमः।
२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विश्वाय नमः।
२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बालपराक्रमाय नमः।
२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विश्ववन्द्याय नमः।
२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विश्वरूपाय नमः।
२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विश्वाधाराय नमः।

२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विकीरणाय नमः।
२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वैद्याय नमः।
२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बालाय नमः।
२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विराटाय नमः।
२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विष्ण्वे नमः।
३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ व्योमकेशाय नमः।
३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वश्यकृतये नमः।
३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बलिभुक्तये नमः।
३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बलिभुक्नाथाय नमः।
३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बहुनेत्राय नमः।
३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वराय नमः।
३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बलये नमः।
३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ व्याधिघातये नमः।
३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ व्याधिकराय नमः।
३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ व्याधात्माय नमः।
४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ व्याधिवेपनाय नमः।
४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कङ्कालधारिणे नमः।
४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कन्दर्पाय नमः।
४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कामये नमः।
४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कान्ताय नमः।
४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलानिधये नमः।
४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कामरूपाय नमः।
४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कामचारिणे नमः।
४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कल्पविते नमः।
४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कामिनीप्रियाय नमः।
५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कोटरेशाय नमः।
५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कोटपतये नमः।
५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कमनीयाय नमः।

५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपालभृतये नमः।
५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कङ्कालाय नमः।
५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्रूरदृक्कालाय नमः।
५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ करालाय नमः।
५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कोकिलस्वनाय नमः।
५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपर्दये नमः।
५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कम्बुकण्ठाय नमः।
६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कम्बुमालिने नमः।
६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलाधराय नमः।
६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कामिनीवशकृतये नमः।
६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कौलाय नमः।
६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुलीनाय नमः।
६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुलरक्षकाय नमः।
६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपालमालिने नमः।
६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुब्जाय नमः।
६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कण्वाय नमः।
६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कण्ठीरवाय नमः।
७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कवये नमः।
७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलाकाष्टातनवे नमः।
७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलत्रशमनाय नमः।
७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कम्बुकुन्धालये नमः।
७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुरठाय नमः।
७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपिलाय नमः।
७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कीर्ये नमः।
७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुमाराय नमः।
७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कोपनाय नमः।
७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कवये नमः।
८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कङ्कालय नमः।

८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपिशाय नमः।

८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ केश्यै नमः।

८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ केशर्यै नमः।

८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ केशरप्रियायै नमः।

८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कौपीनधार्यै नमः।

८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कितवायै नमः।

८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कितवघ्न्यै नमः।

८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलाधरायै नमः।

८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कमलावल्लभायै नमः।

९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुण्ठ्यै नमः।

९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कठोरकिरणायै नमः।

९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षणायै नमः।

९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कौशिककायै नमः।

९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कौशिकधरायै नमः।

९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशभृत्यै नमः।

९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशतल्पगायै नमः।

९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशलायै नमः।

९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कश्मलायै नमः।

९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कर्षायै नमः।

१००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ काश्मिराय नमः।

१०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कररत्नाय नमः।

१०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कररत्नभूताय नमः।

१०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कृतघ्नाय नमः।

१०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कृतज्ञाय नमः।

१०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कृतवीर्याय नमः।

१०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपिध्वजाय नमः।

१०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशीलवाय नमः।

१०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशीलाय नमः।

१०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ केतक्यै नमः।

११०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ केतकीप्रियाय नमः।

१११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कादम्बरीय नमः।

११२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कादम्बाय नमः।

११३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलकण्ठाय नमः।

११४ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपिञ्जलाय नमः।

११५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कैटभाराय नमः।

११६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कंसमर्दनाय नमः।

११७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुरठवदनाय नमः।

११८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशाय नमः।

११९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधराय नमः।

१२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधराधीशाय नमः।

१२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवाय नमः।

१२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवीप्रियाय नमः।

१२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतात्माय नमः।

१२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भुतपाय नमः।

१२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूभृताय नमः।

१२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भृगुजाय नमः।

१२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधरात्मजाय नमः।

१२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भवसूनुभवाय नमः।

१२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीरुर्भ्रामराय नमः।

१३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतसम्भवाय नमः।

१३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीषणाय नमः।

१३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवीनाथाय नमः।

१३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भगवते नमः।

१३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भोगिभूषणाय नमः।

१३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भस्मधारिणे नमः।

१३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भ्रमहराय नमः।

१३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूताध्यक्षाय नमः।
१३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भिक्षुकाय नमः।
१३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भ्रूणहाय नमः।
१४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतहाय नमः।
१४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूताय नमः।
१४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीताय नमः।
१४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अभीताय नमः।
१४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अभयङ्कराय नमः।
१४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खरान्तकृत्याय नमः।
१४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खर्पराशाय नमः।
१४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खड्गपाणये नमः।
१४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खलाप्रियाय नमः।
१४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खण्डभूवे नमः।
१५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खण्डपरशवे नमः।
१५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खड्गाय नमः।
१५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खट्वाङ्गये नमः।
१५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भृतखलाय नमः।
१५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खेचराय नमः।
१५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खेचरीनाथाय नमः।
१५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खपुराय नमः।
१५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खगनायकाय नमः।
१५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खेलाप्रियाय नमः।
१५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खातकीर्तये नमः।
१६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खरनादाय नमः।
१६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खरव्रताय नमः।
१६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खेचरीकृताय नमः।
१६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खेचरभृताय नमः।
१६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खातीताय नमः।

१६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खाण्डवाशनाय नमः।
१६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गान्धर्वगीताय नमः।
१६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गङ्गेशाय नमः।
१६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोपतये नमः।
१६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोपिकापतये नमः।
१७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गर्विष्ठाय नमः।
१७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गर्वहाय नमः।
१७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गेयाय नमः।
१७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गौराय नमः।
१७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गौरीसुताय नमः।
१७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गुरवे नमः।
१७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गीर्वाणगीताय नमः।
१७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गीर्वाणाय नमः।
१७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गाढाय नमः।
१७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गाढान्धकारहाय नमः।
१८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गेयाय नमः।
१८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गरुड़गाय नमः।
१८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोऽवाय नमः।
१८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गुप्ताय नमः।
१८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोप्ताय नमः।
१८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गराशनाय नमः।
१८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गजकृत्तिधराय नमः।
१८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गुञ्जाय नमः।
१८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गुञ्जाहारधराय नमः।
१८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गजाय नमः।
१९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गेयप्रियाय नमः।
१९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गह्वरगो नमः।
१९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गुञ्जस्थाय नमः।

१९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गुञ्जगायकाय नमः।
१९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोवर्द्धनधराय नमः।
१९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोष्ठरक्षकाय नमः।
१९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोकुलप्रियाय नमः।
१९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गम्भीराय नमः।
१९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोधनाय नमः।
१९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोपाय नमः।
२००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गोधाभृद्धिताय नमः।
२०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गिरिजात्मजाय नमः।
२०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गजदीशाय नमः।
२०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जनाध्यक्षाय नमः।
२०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीवनाय नमः।
२०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीवनप्रियाय नमः।
२०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीवानाय नमः।
२०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीवनच्छेदाय नमः।
२०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीवितात्माय नमः।
२०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जनार्दनाय नमः।
२१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जृम्भणाय नमः।
२११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जवये नमः।
२१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीवाय नमः।
२१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जैनाय नमः।
२१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जैनजयङ्कराय नमः।
२१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जपात्रियाय नमः।
२१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जपासक्ताय नमः।
२१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जापकाय नमः।
२१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जापकार्थकृताय नमः।
२१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जम्बूश्यामाय नमः।
२२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जितक्रोधाय नमः।

२२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जिताराताय नमः।
२२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जितासुराय नमः।
२२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जम्बुकाय नमः।
२२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जानकीये नमः।
२२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जानिर्जटिलाय नमः।
२२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जनमेजयाय नमः।
२२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीर्णाय नमः।
२२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीर्णोज्वलन्नेत्राय नमः।
२२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जामदग्न्याय नमः।
२३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जयप्रदाय नमः।
२३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषकेतवे नमः।
२३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषहराय नमः।
२३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झिण्टीषाय नमः।
२३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषभोजिताय नमः।
२३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झङ्कारकारये नमः।
२३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झम्पाय नमः।
२३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषवानये नमः।
२३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषवल्लभाय नमः।
२३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मधुराय नमः।
२४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मदिरामत्ताय नमः।
२४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेघनादाय नमः।
२४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मृगाधिपाय नमः।
२४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मधुमत्ताय नमः।
२४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मद्यगन्धाय नमः।
२४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेदस्वाने नमः।
२४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेघदीधितये नमः।
२४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोदनाय नमः।
२४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेदिनीनाथाय नमः।

२४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मघवाय नमः।
२५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मण्डभूषणाय नमः।
२५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ माधुकरीप्रियाय नमः।
२५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मत्ताय नमः।
२५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेधाविने नमः।
२५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मधुसूदनाय नमः।
२५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मदनाय नमः।
२५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मदनप्रीतये नमः।
२५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मुकुन्दाय नमः।
२५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मादनाय नमः।
२५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मरुतये नमः।
२६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मकाराय नमः।
२६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ माधवाय नमः।
२६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मीनाय नमः।
२६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मीनकेतवे नमः।
२६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ महेश्वराय नमः।
२६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ महेषवे नमः।
२६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मदनाय नमः।
२६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मन्थाय नमः।
२६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मिथुनेशाय नमः।
२६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अमराधिपाय नमः।
२७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मरीचये नमः।
२७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मञ्जुलाय नमः।
२७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोहाय नमः।
२७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोहहाय नमः।
२७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोहमर्दनाय नमः।
२७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोहकाय नमः।
२७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोहनाय नमः।

२७७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मेघप्रियाय नमः।
२७८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मोहविनाशकाय नमः।
२७९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महीपतये नमः।
२८०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महेशानाय नमः।
२८१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महीराजाय नमः।
२८२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मनोहराय नमः।
२८३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महीश्वराय नमः।
२८४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महीपालाय नमः।
२८५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महीनाथाय नमः।
२८६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महीप्रिय नमः।
२८७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महीधराय नमः।
२८८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ महादेवाय नमः।
२८९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मनुराजाय नमः।
२९०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मनुप्रियाय नमः।
२९१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मौनाय नमः।
२९२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मौनधराय नमः।
२९३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मेघाय नमः।
२९४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मन्दिराय नमः।
२९५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मतिवर्द्धनय नमः।
२९६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मतिदाय नमः।
२९७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मन्थाराय नमः।
२९८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मन्त्राय नमः।
२९९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मन्त्रीशाय नमः।
३००.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मन्त्रनायकाय नमः।
३०१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मेधाविने नमः।
३०२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मानदाय नमः।
३०३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मानाय नमः।
३०४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ मानहाय नमः।

३०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मानमर्दनाय नमः।

३०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मीनगाय नमः।

३०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मकराधीशाय नमः।

३०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मधुराय नमः।

३०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिरञ्जताय नमः।

३१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिरम्याय नमः।

३११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिभ्राताय नमः।

३१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिमण्डनाय नमः।

३१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिमण्डिताय नमः।

३१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मन्त्रपाय नमः।

३१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मन्त्रदाय नमः।

३१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मुग्धाय नमः।

३१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोक्षदाय नमः।

३१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोक्षवल्लभाय नमः।

३१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लाय नमः।

३२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लप्रियाय नमः।

३२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मञ्चाय नमः।

३२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लकाय नमः।

३२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेलनाय नमः।

३२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रभो नमः।

३२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लिकाय नमः।

३२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लिकागन्धये नमः।

३२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लिकाकुसुमप्रियाय नमः।

३२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मालतीशाय नमः।

३२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेघनाथाय नमः।

३३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अमोघमूर्तये नमः।

३३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मघेश्वराय नमः।

३३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ याचकाय नमः।
३३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ याज्ञिकाय नमः।
३३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्ञाय नमः।
३३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्ञेशाय नमः।
३३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्ञवर्द्धनाय नमः।
३३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमापतये नमः।
३३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमाधीशाय नमः।
३३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमेशाय नमः।
३४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रामवल्लभाय नमः।
३४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धनेषाय नमः।
३४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ध्रूवाय नमः।
३४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धूर्धीमाय नमः।
३४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अन्धिषणाय नमः।
३४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धूम्रलोचनाय नमः।
३४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दाताय नमः।
३४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दापयिताय नमः।
३४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दुर्गाय नमः।
३४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दान्ताय नमः।
३५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दान्ताशयाय नमः।
३५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दमाय नमः।
३५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ देवाय नमः।
३५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ देवाधिपाय नमः।
३५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दावाय नमः।
३५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दुःखहाय नमः।
३५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दुःखसेविताय नमः।
३५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दरिद्राय नमः।
३५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दारदाय नमः।
३५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दाराय नमः।

३६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ देवतात्माय नमः।
३६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दमये नमः।
३६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दयायै नमः।
३६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दण्डकृतये नमः।
३६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दण्डहाय नमः।
३६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दीप्ताय नमः।
३६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दीप्तकेशाय नमः।
३६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दयान्विताय नमः।
३६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दार्वीकराय नमः।
३६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दरीदीर्घाय नमः।
३७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दीपनाय नमः।
३७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दीपवल्लभाय नमः।
३७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दिगम्बराय नमः।
३७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दीर्घदंष्ट्राय नमः।
३७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दक्षिणाय नमः।
३७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दक्षिणोदराय नमः।
३७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दंष्ट्राय नमः।
३७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दंष्ट्रिप्रियाय नमः।
३७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दैत्याय नमः।
३७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दिव्याय नमः।
३८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दिव्यपराक्रमाय नमः।
३८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दैत्यहाय नमः।
३८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दक्षिणार्हाय नमः।
३८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दीर्घपृष्टाय नमः।
३८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दिवाकराय नमः।
३८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घण्टावादये नमः।
३८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनरवाय नमः।
३८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनाभाय नमः।

३८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घूत्कराय नमः।

३८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनाय नमः।

३९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घण्टापथाय नमः।

३९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घटाय नमः।

३९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घूकाय नमः।

३९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घघ्वकराय नमः।

३९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परिवारिताय नमः।

३९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घणाय नमः।

३९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घर्मांशाय नमः।

३९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अरघहाय नमः।

३९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घातहाय नमः।

३९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घातकारकाय नमः।

४००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घोराय नमः।

४०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनाय नमः।

४०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनोऽघीशाय नमः।

४०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घस्मराय नमः।

४०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घोरघोषवानाय नमः।

४०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छालगण्डेशाय नमः।

४०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छलच्छेत्ताय नमः।

४०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छत्रये नमः।

४०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छातछवये नमः।

४०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छलये नमः।

४१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छागलाक्षाय नमः।

४११.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छदाय नमः।

४१२.ॐ ह्रौँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ छिन्नशाय नमः।

४१३.ॐ ह्रौँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ छुच्छुरिकशाय नमः।

४१४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ छदाङ्कुराय नमः।

४१५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ छन्दशाय नमः।

४१६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ छन्दप्रियशाय नमः।

४१७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ छन्दश्छिद्दुरशाय नमः।

४१८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ छद्महाय नमः।

४१९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्रीताय नमः।

४२०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तपनीयाय नमः।

४२१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रभाय नमः।

४२२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जटस्तरुणाय नमः।

४२३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तरुणीप्रियाय नमः।

४२४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तुन्दिलाय नमः।

४२५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तपनाय नमः।

४२६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तेयाय नमः।

४२७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तोमराय नमः।

४२८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तोमरप्रियाय नमः।

४२९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तुष्काय नमः।

४३०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तुरुष्काय नमः।

४३१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तलभुक्ताय नमः।

४३२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिमूर्तये नमः।

४३३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिपुरान्तकाय नमः।

४३४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिशूलधाराय नमः।

४३५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिशीर्षाय नमः।

४३६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिपुराय नमः।

४३७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिलोकपाय नमः।

४३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिनेत्राय नमः।

४३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिपुरावासाय नमः।

४४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तेजस्वने नमः।

४४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिदिवस्पतये नमः।

४४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिविक्रमाय नमः।

४४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तृणावर्त्ताय नमः।

४४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तृप्तिप्रियाय नमः।

४४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तमाय नमः।

४४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तमोपहाय नमः।

४४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तमिस्त्रेशाय नमः।

४४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिदशस्त्रीयाय नमः।

४४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्वराय नमः।

४५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तपाय नमः।

४५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय नमः।

४५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तिग्माय नमः।

४५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तमोमूर्तये नमः।

४५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तमोमयाय नमः।

४५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तापनाय नमः।

४५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्तोदाय नमः।

४५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रेताय नमः।

४५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तारानाथाय नमः।

४५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिलोचनाय नमः।

४६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नित्याय नमः।

४६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निरञ्जनाय नमः।

४६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नेताय नमः।

४६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीतिज्ञाय नमः।

४६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नयनवल्लभाय नमः।

४६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नन्दनाय नमः।

४६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निपुणाय नमः।

४६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नम्राय नमः।

४६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नम्रोऽनेमाय नमः।

४६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ र्निर्मिमयाय नमः।

४७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नागहाराय नमः।

४७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नागपाशाय नमः।

४७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नित्यकामाय नमः।

४७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नतिप्रियाय नमः।

४७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्ममाय नमः।

४७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमनाय नमः।

४७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नान्याय नमः।

४७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नैगमाय नमः।

४७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नैगमेश्वराय नमः।

४७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नित्यक्लिन्नाय नमः।

४८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नित्यनवाय नमः।

४८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निरुद्धाय नमः।

४८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नन्ददीपकाय नमः।

४८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्मलाय नमः।

४८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्मलाकाराय नमः।

४८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ न्यस्तनिन्दाय नमः।

४८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नदीश्वराय नमः।

४८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नक्षत्रनाथाय नमः।

४८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निगमाय नमः।

४८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्गमाय नमः।

४९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रम्भकाय नमः।

४९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नवाय नमः।

४९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निधीशाय नमः।

४९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निरहङ्काराय नमः।

४९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नानारूपाय नमः।

४९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमेरूकाय नमः।

४९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नास्तिकाराय नमः।

४९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नास्तिकहाय नमः।

४९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निश्चिताय नमः।

४९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निश्चिताशयाय नमः।

५००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निश्चलाय नमः।

५०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अनेकवदनाय नमः।

५०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नाथाय नमः।

५०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नारायणाय नमः।

५०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नखाय नमः।

५०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नरकघ्नाय नमः।

५०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नरकदाय नमः।

५०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलाय नमः।

५०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलालकाय नमः।

५०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अनलाय नमः।

५१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलाम्बराय नमः।

५११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलकण्ठाय नमः।

५१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलजीमूताय नमः।

५१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलजीमूतसन्निभाय नमः।

५१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पण्डिताय नमः।

५१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चवदनाय नमः।

५१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चमाय नमः।

५१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चमप्रियाय नमः।

५१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चयज्ञाय नमः।

५१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चवाताय नमः।

५२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चवित्ताय नमः।

५२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पवित्रप्रियाय नमः।

५२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चश्लेष्माय नमः।

५२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चबाणाय नमः।

५२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चस्थानाय नमः।

५२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परन्तपाय नमः।

५२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परमायवे नमः।

५२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पराय नमः।

५२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्माय नमः।

५२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्मेशाय नमः।

५३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्मवल्लभाय नमः।

५३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्मनाभाय नमः।

५३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्ममुखाय नमः।

५३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्मनाभाय नमः।

५३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्मासनस्थिताय नमः।

५३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्मजाय नमः।

५३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्मनिलयाय नमः।

५३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्मगन्धाय नमः।

५३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परात्पराय नमः।

५३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पर्वताय नमः।

५४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पर्वताधाराय नमः।

५४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पारदाय नमः।

५४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पारदप्रियाय नमः।

५४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दण्डधारिणे नमः।

५४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भस्मलेपाय नमः।

५४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सदाय नमः।

५४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुक्कुरवाहनाय नमः।

५४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परदारपराय नमः।

५४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रौढाय नमः।

५४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पटवे नमः।

५५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डवे नमः।

५५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डुरलोचनाय नमः।

५५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पेटभृतये नमः।

५५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पेटकृतये नमः।

५५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पेटवे नमः।

५५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पन्नगाय नमः।

५५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पन्नगेश्वराय नमः।

५५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डुहाय नमः।

५५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डुराय नमः।

५५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिण्डीयाय नमः।

५६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चभूताय नमः।

५६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रशासनाय नमः।

५६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पतङ्गाय नमः।

५६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पक्षिराजाय नमः।

५६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परलोकप्रदाय नमः।

५६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रभवे नमः।

५६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानदाय नमः।

५६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानपाय नमः।

५६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानये नमः।

५६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानारुणाय नमः।

५७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विलोचनाय नमः।

५७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिशाचघ्नये नमः।

५७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिशाचेशाय नमः।

५७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिशिताशये नमः।

५७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पितामहाय नमः।

५७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिताय नमः।

५७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रतापवानाय नमः।

५७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाशये नमः।

५७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाशिनाथाय नमः।

५७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुप्रियाय नमः।

५८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुभोक्त्ताय नमः।

५८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुपतये नमः।

५८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुप्रेष्ठाय नमः।

५८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशूदराय नमः।

५८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पीनसाराय नमः।

५८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिपासार्त्ताय नमः।

५८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पीडाकृताय नमः।

५८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पीडानाशनाय नमः।

५८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतघ्नाय नमः।

५८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतकुलपाय नमः।

५९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतवाहाय नमः।

५९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रकम्पनाय नमः।

५९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतनाथाय नमः।

५९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतपूज्याय नमः।

५९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पीतवासाय नमः।

५९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रजागराय नमः।

५९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रजापतये नमः।

५९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रजानाथाय नमः।

५९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परिपूर्णाय नमः।

५९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रियाय नमः।

६००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अप्रियाय नमः।

६०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पर्जन्यकृताय नमः।

६०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रशमनाय नमः।

६०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परमाय नमः।

६०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परमास्पदाय नमः।

६०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रसन्नगाय नमः।

६०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रतिच्छन्नाय नमः।

६०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रतिभाकृताय नमः।

६०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पूजिताय नमः।

६०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रमेहघ्नाय नमः।

६१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रमेहीयाय नमः।

६११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेहकृदाय नमः।

६१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अथप्रभाय नमः।

६१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रमाय नमः।

६१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रमादहाय नमः।

६१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रौढाय नमः।

६१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रौढिदाय नमः।

६१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रौढिवल्लभाय नमः।

६१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेमदाय नमः।

६१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रमदाप्रेमाय नमः।

६२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रमदाय नमः।

६२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रमदाप्रियाय नमः।

६२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रकामदाय नमः।

६२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रकामेशाय नमः।

६२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्राणदाय नमः।

६२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्राणवल्लभाय नमः।

६२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्राणाधाराय नमः।

६२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रयागाय नमः।

६२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रयागनिलयप्रदाय नमः।

६२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परिचाराय नमः।

६३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परिवराय नमः।

६३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रशान्ताय नमः।

६३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रतिभानवानाय नमः।

६३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेयाय नमः।

६३४.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अप्रेयाय नमः।

६३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वियोगये नमः।

६३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रमथाय नमः।

६३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रियम्बदाय नमः।

६३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सारमेयानुगाय नमः।

६३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सीधवे नमः।

६४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ असीधवे नमः।

६४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सीधुपवल्लभाय नमः।

६४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सावधानाय नमः।

६४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ साधुपूज्याय नमः।

६४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सारमेयधराय नमः।

६४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समाय नमः।

६४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वापत्तारणाय नमः।

६४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिद्धाय नमः।

६४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिद्धिदाय नमः।

६४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिद्धिसेविताय नमः।

६५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सामन्तभद्राय नमः।

६५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सन्तोषये नमः।

६५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्याय नमः।

६५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्यपराक्रमाय नमः।

६५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सतयसङ्घाय नमः।

६५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्यवक्ताय नमः।

६५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्पदाय नमः।

६५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्यवल्लभाय नमः।

६५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्यभामापतये नमः।

६५९.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुराय नमः।

६६०.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सम्पन्नाय नमः।

६६१.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सम्पदालयाय नमः।

६६२.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सरस्वानाय नमः।

६६३.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सागराय नमः।

६६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सेतवे नमः।

६६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सेतुकृताय नमः।

६६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सेतुपालकाय नमः।

६६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समुद्रसीमासामन्ताय नमः।

६६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्मरारये नमः।

६६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्यसङ्गराय नमः।

६७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्मराय नमः।

६७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्मरप्रियाय नमः।

६७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्मेराय नमः।

६७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्मरदाय नमः।

६७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्मरसुन्दराय नमः।

६७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समिद्धाय नमः।

६७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सम्मदाय नमः।

६७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिन्धवे नमः।

६७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सामगाय नमः।

६७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सामगार्चिताय नमः।

६८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समयाय नमः।

६८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समयाचाराय नमः।

६८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय नमः।

६८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सम्मोहदाय नमः।

६८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ संशयदाय नमः।

६८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ संशयघ्नाय नमः।

६८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समुद्धताय नमः।

६८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सोमाय नमः।

६८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सोमधराय नमः।

६८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सौम्याय नमः।

६९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ असौम्याय नमः।

६९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शान्तजनप्रियाय नमः।

६९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुन्दराय नमः।

६९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुन्दराधाराय नमः।

६९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुरापाय नमः।

६९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुरसाय नमः।

६९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुराय नमः।

६९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुरासक्ताय नमः।

६९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुरामोदाय नमः।

६९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुरापालाय नमः।

७००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुराप्रियाय नमः।

७०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वर्गस्वर्गपतये नमः।

७०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वर्गाय नमः।

७०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वर्गदाय नमः।

७०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वर्गवल्लभाय नमः।

७०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुखये नमः।

७०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुखाकराय नमः।

७०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सौख्यसिन्धवे नमः।

७०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिन्धुनायकाय नमः।

७०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सारस्वताय नमः।

७१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वानुभवाय नमः।

७११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वानुभावाय नमः।

७१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वानोद्धुवाय नमः।

७१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वयंभूवे नमः।

७१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुसुमामोदाय नमः।

७१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वयंभूकुसुमप्रियाय नमः।

७१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समयाय नमः।

७१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वतोभद्राय नमः।

७१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वतत्त्वाय नमः।

७१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सरोवराय नमः।

७२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सरीसृपाधीशाय नमः।

७२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समाराध्याय नमः।

७२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ समामयाय नमः।

७२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सन्तानन्दाय नमः।

७२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्त्वदाताय नमः।

७२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सरोजाक्षाय नमः।

७२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सरोजभूताय नमः।

७२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः।

७२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सारये नमः।

७२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सरोजनयनप्रियाय नमः।

७३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुपर्वनाथाय नमः।

७३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वज्ञाय नमः।

७३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वगाय नमः।

७३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वदीपनाय नमः।

७३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्मशानवासाय नमः।

७३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्तम्भये नमः।

७३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्पयुक्ताय नमः।

७३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सहस्रदृकाय नमः।

७३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सहस्रदाय नमः।

७३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सहस्राङ्घ्राय नमः।

७४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सहस्रकिरणप्रभाय नमः।

७४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शौरये नमः।

७४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शम्भुसुताय नमः।

७४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शम्भुवे नमः।

७४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शिवाय नमः।

७४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शूलाय नमः।

७४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शवासनाय नमः।

७४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकण्ठाय नमः।

७४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शितिकण्ठाय नमः।

७४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीपतये नमः।

७५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीनिकेतनाय नमः।

७५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रेयोनिधये नमः।

७५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शङ्कराय नमः।

७५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वाय नमः।

७५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वात्मजाय नमः।

७५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शमाय नमः।

७५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शतानन्दाय नमः।

७५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शशधराय नमः।

७५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शबराय नमः।

७५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शबरीसुताय नमः।

७६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शोभनाय नमः।

७६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शोभनावासाय नमः।

७६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शोकहाय नमः।

७६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शोकनाशनाय नमः।

७६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शतानन्दाय नमः।

७६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शूलपाणये नमः।

७६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुचये नमः।

७६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शौचपराय नमः।

७६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुभाय नमः।

७६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शिखिसखाय नमः।

७७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रुतिधराय नमः।

७७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रुतिगीताय नमः।

७७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रुतिप्रियाय नमः।

७७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुद्धाशयाय नमः।

७७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुद्धिकराय नमः।

७७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुद्धाय नमः।

७७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुद्धजनाय नमः।

७७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रियाय नमः।

७७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शोणाय नमः।

७७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शोणधराय नमः।

७८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शोणनेत्राय नमः।

७८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शोणाङ्गरागभृताय नमः।

७८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शीताय नमः।

७८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शीताशयाय नमः।

७८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शौण्डाय नमः।

७८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शौण्डिकाय नमः।

७८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शौण्डिकप्रियाय नमः।

७८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शाड्यहाय नमः।

७८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शाड्यदाय नमः।

७८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शाङ्ग्ये नमः।

७९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शरीरये नमः।

७९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शरणदाय नमः।

७९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शिशवे नमः।

७९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय नमः।

७९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शान्तिदाय नमः।

७९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शान्तये नमः।

७९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शकाय नमः।

७९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शाकम्भरीयाय नमः।

७९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शङ्किताय नमः।

७९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शङ्किताननाय नमः।

८००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हराय नमः।

८०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हरये नमः।

८०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हयग्रीवाय नमः।

८०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हयारिकुसुमप्रियाय नमः।

८०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हेरम्बाय नमः।

८०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हयमेधये नमः।

८०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हेषणाय नमः।

८०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हरवल्लभायनमः।

८०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हव्यवाहाय नमः।

८०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हुतवहाय नमः।

८१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हारये नमः।

८११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हारीतपूजिताय नमः।

८१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हिन्स्त्रहाय नमः।

८१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हिन्स्त्रयाय नमः।

८१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हन्तये नमः।

८१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हेलानाय नमः।

८१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हलायुधय नमः।

८१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हिरण्यरेताय नमः।

८१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हरिणाक्षाय नमः।

८१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हरिप्रियाय नमः।

८२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हिमाय नमः।

८२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हिमालयचराय नमः।

८२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हिमधामाय नमः।

८२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विभूषणाय नमः।

८२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हेममालाय नमः।

८२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हेमकान्तये नमः।

८२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हिमाचलकृतालयाय नमः।

८२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हारकाय नमः।

८२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हारशालाय नमः।

८२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ होताय नमः।

८३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ होमाय नमः।

८३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हुतिर्हयाय नमः।

८३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यशप्रदाय नमः।

८३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यशोवृद्धाय नमः।

८३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यशसाय नमः।

८३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निधये नमः।

८३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्वाय नमः।

८३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यजनकामाय नमः।

८३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यजुर्यजनतत्पराय नमः।

८३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यमाय नमः।

८४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यमभयध्वंसये नमः।

८४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यमवन्द्याय नमः।
८४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यमान्तकृताय नमः।
८४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्ञभोक्ताय नमः।
८४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्ञकराय नमः।
८४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यवनाय नमः।
८४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यवनोद्धतय नमः।
८४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यवप्रियाय नमः।
८४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यौवनाढ्याय नमः।
८४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ युवतीवल्लभाय नमः।
८५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यवये नमः।
८५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यामलाधीशाय नमः।
८५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यशोदानन्दवर्धनाय नमः।
८५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ योद्धाय नमः।
८५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ युद्धप्रियाय नमः।
८५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यूपाय नमः।
८५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यौक्तिकाय नमः।
८५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ योगिनीपतये नमः।
८५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ योगीगम्याय नमः।
८५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ योगीश्वराय नमः।
८६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ योक्ताय नमः।
८६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ योगिराजाय नमः।
८६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ योगिसेविताय नमः।
८६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रतिप्रदाय नमः।
८६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रतिकराय नमः।
८६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रतिनाथाय नमः।
८६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रतिप्रदाय नमः।
८६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमणीयाय नमः।
८६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमानाथाय नमः।

८६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रजनीशाय नमः।
८७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमेश्वराय नमः।
८७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रससिद्धिश्वराय नमः।
८७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रम्याय नमः।
८७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रसज्ञाय नमः।
८७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रसपूजिताय नमः।
८७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रञ्जनाय नमः।
८७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रोचनाय नमः।
८७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रागाय नमः।
८७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रोगाय नमः।
८७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रोगकुलान्तकृताय नमः।
८८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रासाय नमः।
८८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रासप्रियाय नमः।
८८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रन्ताय नमः।
८८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रङ्गाय नमः।
८८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रङ्गकृतास्पदाय नमः।
८८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रक्तपाय नमः।
८८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रक्तनयनाय नमः।
८८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नक्तदाय नमः।
८८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रक्तनाशनाय नमः।
८८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रुरुभैरवाय नमः।
८९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रुद्राय नमः।
८९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रौद्रमुखाय नमः।
८९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ राजाय नमः।
८९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ राजीववर्द्धनाय नमः।
८९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रसाय नमः।
८९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रत्ये नमः।
८९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रसाधाराय नमः।

८९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रसालाय नमः।
८९८.ॐ ह्रीँ वँ वंटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रविलोचनाय नमः।
८९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लोकनाथाय नमः।
९००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लोकचक्षवे नमः।
९०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लक्षिताय नमः।
९०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ललितात्मजाय नमः।
९०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लम्बोदराय नमः।
९०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लम्बदंष्ट्राय नमः।
९०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लोलाय नमः।
९०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लोलविलोचनाय नमः।
९०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लोहिताक्षाय नमः।
९०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लोहितपाय नमः।
९०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लालपः नमः।
९१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लालनप्रियाय नमः।
९११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लेलिहानाय नमः।
९१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ललजिह्वाय नमः।
९१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लक्ष्मीनाथाय नमः।
९१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुलायुगाय नमः।
९१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेत्रपालाय नमः।
९१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय नमः।
९१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षत्रियाय नमः।
९१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेत्रपाय नमः।
९१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षमीकराय नमः।
९२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षमाधाराय नमः।
९२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षौमधराय नमः।
९२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेमकाराय नमः।
९२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षयापहाय नमः।
९२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षपापतिधराय नमः।

९२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षुद्राय नमः।
९२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षान्ताय नमः।
९२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षान्तजनप्रियाय नमः।
९२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षितिदाय नमः।
९२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षतिदाय नमः।
९३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षौद्राय नमः।
९३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रियाय नमः।
९३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षीरप्रियाय नमः।
९३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अक्षयाय नमः।
९३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षोभहाय नमः।
९३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षोभदाय नमः।
९३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अक्षोभ्याय नमः।
९३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षिप्रसिद्धप्रदाय नमः।
९३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षुपाय नमः।
९३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेकराय नमः।
९४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षौद्रपिङ्गाय नमः।
९४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षामशत्रवे नमः।
९४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षुधाकराय नमः।
९४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षोभणाय नमः।
९४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षीरदाय नमः।
९४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षीरये नमः।
९४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षवकाय नमः।
९४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षवदोषहाय नमः।
९४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतीशाय नमः।
९४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अजगराय नमः।
९५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अग्निरहाय नमः।
९५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रहये नमः।
९५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्दवे नमः।

९५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्द्रियाय नमः।

९५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विन्दवे नमः।

९५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्द्रेभाय नमः।

९५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्द्रयाय नमः।

९५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ईश्वराय नमः।

९५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डिम्भाय नमः।

९५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊर्जस्वलाय नमः।

९६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वस्तये नमः।

९६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वाहाभुक्ताय नमः।

९६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भुरुरर्जुकाय नमः।

९६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ज्ञानचक्षुषाय नमः।

९६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊर्ध्वरिताय नमः।

९६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दशदिक्पालपालकाय नमः।

९६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शाकिनेयाय नमः।

९६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डाकिनेयाय नमः।

९६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ राकिनेयाय नमः।

९६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ काकिनेयाय नमः।

९७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लाकिनेयाय नमः।

९७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डाकिनियाय नमः।

९७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हाकिनियाय नमः।

९७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चाशद्वर्णतनवे नमः।

९७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ षडाधाराय नमः।

९७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ षडध्वाय नमः।

९७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अष्टाधाराय नमः।

९७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अष्टमूर्तये नमः।

९७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ब्रह्मरंध्राय नमः।

९७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कृतालयाय नमः।

९८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सहस्त्रपत्रभवनाय नमः।

९८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ द्विपत्रपरमास्पदाय नमः।

९८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ षोडशारकृतावासये नमः।

९८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ द्वादशच्छदमण्डनाय नमः।

९८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दशारकृताय नमः।

९८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विश्रामाय नमः।

९८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ षडाराय नमः।

९८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विहितादराय नमः।

९८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चतुर्दलविकासाय नमः।

९८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चतुरस्त्राय नमः।

९९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विनोदनाय नमः।

९९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इडाधाराय नमः।

९९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सुषुम्णेशाय नमः।

९९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिङ्गलाय नमः।

९९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परिवारिताय नमः।

९९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ संसारसाक्षये नमः।

९९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चिद्रूपाय नमः।

९९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परमात्माय नमः।

९९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सदाशिवाय नमः।

९९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चविंशतितत्त्वात्माय नमः।

१०००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विकृताय नमः।

१००१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रकृतये नमः।

१००२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पराऽपराय

नमः।

१००३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अव्यक्ताय नमः।

१००४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अव्ययाय नमः।

१००५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हंसाय नमः।

१००६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नादाय नमः।

१००७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्त्वात्मकाय नमः।

१००८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विभवे नमः।

समर्पणम्—**अनेन सहस्रार्चनेन श्रीवटुकभैरव प्रीयतां न मम।**

वटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रार्चनं परिपूर्णम्

❀

श्रीवटुकभैरवअष्टोत्तरशतनामार्चनम्

महाभैरवमातृकान्यासम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्रीछन्दः, मातृका-सरस्वतीदेवता, हलोबीजानि, स्वराःशक्तयः, विन्दुःकीलकं, श्रीमहाभैरवप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

प्राणायामः—मातृकावर्णों से प्राणायाम करे—

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः। पूरक करे।

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ नमः। कुम्भक करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः। रेचन करे।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ गायत्रीछन्देभ्यो नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ विन्दुः कीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वतीदेवतायै नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

कराङ्गन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ वँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ वँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट् न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ एँ तँ थँ दँ धँ णँ ऐँ कवचाय हुम् न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ अः अस्त्राय फट् न्यस्यामि।

चक्रन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ वँ लँ नमः चतुर्दलकमलात्मकमूलाधारचक्रः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ वँ नमः षड्दलकमलात्मकस्वाधिष्ठानचक्रः लिङ्गमूले न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ नमः दशदलकमलात्मकमणिपूरचक्रः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ यँ नमः द्वादशदलकमलात्मकअनाहतचक्रः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ हँ नमः षोडशदलकमलात्मकविशुद्धचक्रः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ हँ क्षँ नमः द्विदलकमलात्मकआज्ञाचक्रः भ्रूमध्ये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः सहस्रदलकमलात्मकसहस्रारचक्रः कपाले न्यस्यामि।

अन्तर्मातृकान्यासम्

ॐ पञ्चाशत्लिपिभिर्विभक्तसुखदोयन्मध्यवक्षःस्थलां,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनस्तुङ्गस्तनीम् ।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्याञ्च हस्ताम्बुजे,
विभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

पचास लिपियों में विभक्त होकर, सुखपूर्वक वक्षस्थल के मध्य में सकल पूर्ण चन्द्र की कलाओं से युक्त, स्तनभाग उभरे हुए, हाथ में अक्षमाला,मुद्रा और अमृत से भरे हुए कलश को लिए हुए, शास्त्रों की व्याख्यान सहित, विशद प्रभावाली, तीन नेत्रों वाली, वाग्देवता सरस्वती की हम वन्दना करते है।

महाभैरवषड्चक्रमातृकान्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धूम्राभे षोडशदले कण्ठे विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदले प्रवालसन्निभे हृदयोपर्यनाहते न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदले नाभ्येरुपरि मणिपूरे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युत्सन्निभे षड्दले लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ वँ शँ षँ सँ लँ नमः सुवर्णाभे चतुर्दले मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ हँ क्षँ नमः द्विदले चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ नमः हिमसन्निभे अनन्तचन्द्राभे सहस्रदले कपाले सहस्रारचक्रे न्यस्यामि।

सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते।
अकखादि त्रिरेखासु आ ल क्ष त्रयभूषिते॥

ॐ ह्रीँ वँ परबिन्दुभ्यो नमः सहस्रारे।

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा से ब्रह्मरन्ध्र तक विन्दु चिदात्मक ब्रह्मस्वरूपिणी कुण्डलिनी शक्ति को अपनी आत्मा सदाशिव के साथ ध्यान करके उन दोनों के पाद तल से टपकते हुए अमृतरस के द्वारा सभी मातृकाओ का तर्पण करके, तृप्त करने के बाद मानसोपचार पूजन करे।

आधारे लिङ्गनाभे प्रगटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वेपत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासन्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां,
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

मूलाधार के चार पत्रों पर वस प्रत्याहार रूप में, लिङ्गमूल स्थित स्वाधिष्ठान के षड् पत्रों पर बल प्रत्याहार के रूप में, नाभिस्थित मणिपुर के दश पत्रों पर डफ प्रत्याहार के रूप में, हृदयस्थित अनाहत के द्वादश पत्रों पर कठ प्रत्याहार के रूप में, तालु के मूल कण्ठ स्थित विशुद्ध के षोडश पत्रों पर अः प्रत्याहार के रूप में और ललाट के भ्रू मध्यस्थित आज्ञा के दो पत्रों पर ह और क्ष रूप में सभी दलगत पत्रों पर वर्णरूप वाग्देवी को नमस्कार है।

महाभैरवबहिर्मातृकान्यासम्

ॐ ह्रीँ वँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ यँ नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ रँ नमः दक्षांशे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ लँ नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ वँ नमः वामांशे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ शँ नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ षँ नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ सँ नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ हँ नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ळँ नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ क्षँ नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

न्यास करने के बाद हाथ में जल लेकर विनियोग करे।

विनियोगः—**अस्य श्रीवटुकभैरव अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यकऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीभैरवोदेवता, कं बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्लीं कीलकं ममेष्टसिद्धये न्यासे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ वँ बृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहाभैरवाय नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ कँ बीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ वटुकाय शक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ श्री भैरवाय नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

करन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रां वां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि।

हृदयादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा न्यस्यामि।
ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट् न्यस्यामि।
ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुम् न्यस्यामि।
ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि।
ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् न्यस्यामि।

महाभैरवनामावलीन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ह्रीँ वँ अँ भैरवाभूतनाथाभ्यां नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ भूतात्माभूतभावनाभ्यां नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ इँ क्षेत्रज्ञक्षेत्रपालाभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ईँ क्षेत्रदक्षत्रियोविराट्भ्यो नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ उँ श्मशानवासीमांसाशीभ्यां नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऊँ खर्पराशीस्मरान्तकाभ्यां नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऋँ रक्तपपानपाभ्यां नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ॠँ सिद्धसिद्धिदसिद्धसेवितेभ्यो नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऌँ कङ्कालकालशमनाभ्यां नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ॡँ कलाकाष्ठातनुकविभ्यां नमः वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ ह्रौँ वँ एँ त्रिनेत्रोवहुनेत्रपिङ्गललोचनेभ्यो नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ ऐँ नमः शूलपाणिखड्गपाणिभ्यां अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ ओँ कङ्कालीधूम्रलोचनाभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ औँ अभिरुभैरविनाथाभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ अँ भूतपोयोगिनीपतिभ्यां नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ अः धनदोऽधनहारीभ्यां नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ कँ धनवानप्रतिभावानाभ्यां नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ खँ नागहारोनागपाशेभ्यो नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ गँ व्योमकेशकपालभृद्भ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ घँ कालकपालमालीभ्यां नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ ङँ कमनीयकलानिधीभ्यां नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ चँ त्रिलोचनोज्वलनेत्राभ्यां नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ छँ त्रिशिखित्रिलोकपाभ्यां नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ जँ त्रिनेत्रतनयडिम्भशान्तशान्तजनप्रियेभ्यो नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ झँ वटुकोवहुभेषखट्वाङ्गवरधारकेभ्यो नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ ञँ भूताध्यक्षपशुपतिभ्यां नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ टँ भिक्षुकपरिचारकेभ्यो नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ ठँ धूर्तोदिगम्बराभ्यां नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ डँ शौरिर्हरिणाभ्यां नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ ढँ पाण्डुलोचनप्रशान्ताभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ णँ शान्तिदशुद्धाभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ तँ शङ्करप्रियबान्धवअष्टमूर्तिभ्यां नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ थँ निधीशज्ञानचक्षुतपोमयाभ्यां नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ दँ अष्टाधारषडाधाराभ्यां नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ धँ सर्पयुक्तशिखीसखाभ्यां नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ नँ भूधरभूधराधीशाभ्यां नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ पँ भूपतिर्भूधरात्मजाभ्यां नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रौँ वँ फँ कङ्कालधारीमुण्डीभ्यां नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ बँ नागयज्ञोपवीतकज्जृम्भणाभ्यां नमः पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ भँ मोहनस्तम्भाभ्यां नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ मँ मारणक्षोभणाभ्यां नमः उदरे न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ यँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्यदैत्यहाभ्यां नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ रँ मुण्डभूषितबलिभुग्बलिभुंनाथाभ्यां नमः दक्षांशे न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ लँ अबालबालपराक्रमसर्वापत्तारणाभ्यां नमः ककुदि न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ वँ दुर्गदुष्टभूतनिषेविताभ्यां नमः वामांशे न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ शँ कामीकलानिधिकान्तेभ्यो नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ षँ कामिनीवशकृद्वशीभ्यां नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ सँ जगद्रक्षाकराऽनन्ताभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ हँ मायामन्त्रौषधीमयसर्वसिद्धिप्रदेभ्यो नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ लँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्लीँ वँ क्षँ वैद्यप्रभुर्विष्णुभ्यां नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

महाभैरवध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे—

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम्॥२॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

महाभैरवसात्त्विकध्यानम्—

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराद्यैः।

दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥

महाभैरवराजसध्यानम्—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥

महाभैरवतामसध्यानम्—

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥

शापविमोचनम्—वटुक मन्त्र शापविमोचन के लिए अधोलिखित मन्त्र का जप करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकं शापं विमोचय विमोचय ह्रौँ क्लीँ। मन्त्र का २१ बार जप करने के बाद माला प्रार्थना करे।

मालाप्रार्थना—हाथ में माला ग्रहण करके प्रार्थना करे—

महामाले महामाये! सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥
अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

महाभैरवमूलजपमन्त्रः—

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ।

एक माला जप करके माला प्रार्थना कर यथा स्थान माला रखे।

त्वं माले! सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे! यशोवीर्यञ्च देहि मे॥

अनेन श्रीवटुकभैरवमन्त्रजपाख्येन श्रीवटुकभैरवः प्रीयताम्।

जप श्रीभैरव को समर्पित करे तथा समर्पण के बाद स्तोत्र पाठ करे।

महाभैरव-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥१॥
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।

रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः॥२॥
कङ्कलः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो वहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचन॥३॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्कली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरविनाथो भूतपो योगिनीपतिः॥४॥
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्॥५॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलनेत्रः त्रिशिखिः च त्रिलोकपः॥६॥
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनः प्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्ग वरधारकः॥७॥
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः॥८॥
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः शङ्करः प्रिय बान्धवः।
अष्टमूर्तिनिधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः॥९॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥१०॥
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥११॥
शुद्धो नीलांजनः प्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुंनाथो बालो बालपराक्रमः॥१२॥
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥१३॥
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो मायामन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रीँ ॐ॥१४॥

पाठ करने के बाद मूल मन्त्र का एक माला जप करे, पुनः प्रार्थना करके श्रीभैरव को पाठ समर्पित करे।

पाठसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे—

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवाय नमः अष्टोत्तरशतनामपाठं समर्पयामि।

अष्टोत्तरशतार्चनम्

०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवाय नमः।

०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतनाथाय नमः।

०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतात्मने नमः।

०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतभावनाय नमः।

०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेत्रज्ञाय नमः।

०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेत्रपालाय नमः।

०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेत्रदाय नमः।

०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षत्रियाय नमः।

०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विराजे नमः।

१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्मशानवासिने नमः।

११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मंसासिने नमः।

१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खर्पराशिने नमः।

१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्मरान्तकाय नमः।

१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रक्तपाय नमः।

१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानपाय नमः।

१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिद्धाय नमः।

१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिद्धिदाय नमः।

१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिद्धसेविताय नमः।

१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कङ्कालाय नमः।

२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कालशमनाय नमः।

२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कालाकाष्ठातनवे नमः।

२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कवये नमः।

२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिनेत्राय नमः।

२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बहुनेत्राय नमः।

२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिङ्गललोचनाय नमः।

२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शूलपाणये नमः।

२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खड्गपाणये नमः।

२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कंकालिने नमः।

२९.ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धूम्रलोचनाय नमः।

३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अभिरवे नमः।

३१.ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवीनाथाय नमः।

३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतपाय नमः।

३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ योगिनीपतये नमः।

३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धनदाय नमः।

३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अधनहारिणे नमः।

३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धनवते नमः।

३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पतिभानवते नमः।

३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नागहाराय नमः।

३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नागपाशाय नमः।

४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ व्योमकेशाय नमः।

४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपालभृते नमः।

४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कालाय नमः।

४३.ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपालमालिने नमः।

४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कमनीयाय नमः।

४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलानिधये नमः।

४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिलोचनाय नमः।

४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ज्वलन्नेत्राय नमः।

४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिशिखिने नमः।

४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिलोकपाय नमः।

५०.ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिनेत्रतनयाय नमः।

५१.ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डिम्भशान्ताय नमः।

५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शान्तजनप्रियाय नमः।

५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बटुकाय नमः।

५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बहुवेषाय नमः।

५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खट्वाङ्गवरधारकाय नमः।

५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूताध्यक्षाय नमः।

५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुपतये नमः।

५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भिक्षुकाय नमः।

५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परिचारकाय नमः।

६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धूर्ताय नमः।

६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दिगम्बराय नमः।

६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शूराय नमः।

६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हरिणाय नमः।

६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डुलोचनाय नमः।

६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रशान्ताय नमः।

६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शन्तिदाय नमः।

६७.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुद्धाय नमः।

६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शङ्करप्रियबान्धवाय नमः।

६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अष्टमूर्तये नमः।

७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निधीशाय नमः।

७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ज्ञानचक्षुषे नमः।

७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तपोमयाय नमः।

७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अष्टाधाराय नमः।

७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ षडाधाराय नमः।

७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्पयुक्ताय नमः।

७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शिखीसखाय नमः।

७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधराय नमः।

७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधराधीशाय नमः।

७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतपाय नमः।

८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधरात्मजाय नमः।

८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कङ्कालधारिणे नमः।

८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मुण्डिने नमः।

८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतवते नमः।

८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जृम्भणाय नमः।

८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोहनाय नमः।

८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्तम्भिने नमः।

८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मारणाय नमः।

८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षोभणाय नमः।

८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय नमः।

९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दैत्यघ्ने नमः।

९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मुण्डभूषिताय नमः।

९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बलिभुजे नमः।

९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बलिभुङ्नाथाय नमः।

९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ बालाय नमः।

९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अबालपराक्रमाय नमः।

९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वापत्तारणाय नमः।

९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दुर्गाय नमः।

९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दुष्टभूतनिषेविताय नमः।

९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कामिने नमः।

१००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलानिधिकान्ताय नमः।

१०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कामिनीवशकृते नमः।

१०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वशिने नमः।

१०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जगद्रक्षाकराय नमः।

१०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अनन्ताय नमः।

१०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मायामन्त्रौषधीमयाय नमः।

१०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः।

१०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वैद्याय नमः।

१०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रभविष्णवे नमः।

प्रार्थना—हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

शान्तं पद्मासनस्थं शशिमुकुटधरं मुण्डमालं त्रिनेत्रम्,
शूलं खड्गं च वज्रं परशुमुसलके दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं घण्टां कपालं नलिनकरयुतं सांकुशं पाशमन्ये,
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं नौमि बालं शिवाख्यं॥१॥

शान्त भाव में स्थित होकर पद्मासन पर विराजमान, चन्द्रमा को मुकुट में धारण किये हुए, मुण्डमाला पहने हुए, तीन नेत्रवाले, शूल, खड्ग, वज्र, परशु, मुसल दक्षिण हाथ में धारण किये हुए, नाग, घण्टा, कपाल, कमल, पाश और अंकुश वायें हाथ में धारण किये हुए, तरह-तरह के अलङ्कारों से सजे हुए, स्फटिक मणि के समान वर्णवाले बाल शिव को नमस्कार है॥१॥

वारं वारं भुवनजननी प्रोच्यते साधुवादः,
सत्यं सन्यं जगति सकले भैरवो देव एकः।
यां यां सिद्धिं भुवनजठरे कामयेन्मानवो यः,
तां तां सिद्धिं वितरति सदा भैरवः सुप्रसन्नः॥२॥

बार-बार सम्पूर्ण संसार की जननी साधुवाद करती है कि इस संसार में एकमात्र देवता भैरव ही हैं, इस संसार में मनुष्य जिस-जिस कामना से भैरवोपासना करता है उस-उस कामना की पूर्ति भैरव प्रसन्न होकर सदा प्रदान करते हैं॥२॥

भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं,
कामप्रदान् वरकपालत्रिशूलदण्डान्।
भक्तार्तिनाशकरणे दधतं करेषु,
तं कौस्तुभाभरणभूषितदिव्यदेहम्॥३॥

समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाले, वे भक्तों के कष्टों को पूर्ण रूप से नाश करने के लिए हाथ में वर, कपाल, त्रिशूल, दण्ड धारण किये हुए, कौस्तुभ मणि से विभूषित दिव्य शरीर वाले, तरुण तीन नेत्रवाले बटुक को नमस्कार है।।३।।

फणिवर फणिनाथो देव देवाधिनाथः,
क्षितिपतिवरनाथो वीर-वेतालनाथः।
निधिपति निधिनाथो योगिनी योगनाथो,
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।४।।

फणिवर (फणिधर सर्प को धारण करनेवाले), समस्त देवताओं के स्वामी, सम्पूर्ण आकाश में स्थित नक्षत्रादि के स्वामी, वीर वेतालों के स्वामी, सम्पूर्ण निधियों के स्वामी, योगिनियों के स्वामी, योग के परम ज्ञानी, साधकों को सिद्धि प्रदान करनेवाले, स्वामी बटुक भैरव की जय हो।।४।।

अर्चनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनेन श्रीवटुकभैरवशतनामार्चनेन वटुकभैरवः प्रीयन्तां न मम।

श्रीमहाभैरवप्रयोगः परिपूर्णम्

❀

नित्यपठनीयस्तोत्रम्

अथ भैरवतन्त्रे देवीरहस्योक्त श्रीमद्वटुकभैरवकवचम् प्रथमम्

विनियोग:—ॐ अस्य वटुकभैरवकवचस्य आनन्दभैरवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीवटुकभैरवदेवता वँबीजं ह्रीँशक्तिः ॐकीलकं वटुकभैरव प्रीतये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ आनन्दभैरवऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवताय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँबीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँशक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐकीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा न्यस्यामि। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ शिखायै वषट् न्यस्यामि। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रैं वैं कवचाय हूम् न्यस्यामि। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

समष्टिध्यानम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥२॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

समष्टि ध्यान के वाद गुणात्मक ध्यान करे।

गुणात्मकध्यानम्

महाभैरवसात्विकसध्यानम्—

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराद्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥

महाभैरवराजसध्यानम्—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥

महाभैरवतामसध्यानम्—

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥

अथ कवचम्

ॐ सहस्त्रारे महाचक्रे कर्पूरधवले गुरुः।
पातु मां वटुकोदेवो भैरवो सर्वकर्मसु॥१॥
पूर्वस्यामसिताङ्गो मे दिशि रक्षतु सर्वदा।
आग्नेयां च रुरुः पातु दक्षिणे चण्डभैरवः॥२॥
नैर्ऋत्यां क्रोधनः पातु उन्मत्तः पातु पश्चिमे।
वायव्यां मां कपाली च नित्यं पायात्सुरेश्वरः॥३॥
भीषणो भैरवः पातु उत्तरस्यां तु सर्वदा।
संहारभैरवः पायादीशान्यां च महेश्वरः॥४॥
ऊर्ध्वो पातु विधाता च पाताले नन्दको विभुः।
सद्योजतस्तु मां पायात्सर्वतो देवसेवितः॥५॥
वामदेवो वनान्ते च वने घोरस्तथाऽवतु।
जले तत्पुरुषः पातु स्थले ईशान एव च॥६॥
डाकिनी पुत्रकः पातु पुत्रान् मे सर्वतः प्रभुः।
हाकिनीपुत्रकः पातु दारान्स्तु लाकिनीसुतः॥७॥
पातु शाकिनिकापुत्रः सैन्यं वै कालभैरवः।
मालिनीपुत्रकः पातु पशूनश्वान् गजांस्तथा॥८॥
महाकालाऽवतु क्षेत्रं श्रियं मे सर्वतो गिरा।
वाद्यं वाद्यप्रियः पातु भैरवो नित्यसम्पदा॥९॥
एतत्कवचमीशानी तव स्नेहात्प्रकाशितम्।
नामाख्ये नरलोके सारभूतं सुरप्रियम्॥१०॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं कवचं सुरदुर्लभम्।
न देयं परशिष्येभ्यः कृपणेभ्यश्च शङ्करः॥११॥
यो ददाति निषिद्धेभ्यः सर्वभ्रष्टो भवेत्किल।
अनेन कवचेनैव रक्षां कृत्वा विचक्षणः॥१२॥
विचरन्यत्र कुत्रापि न विघ्नैः परिभूयते।
मन्त्रेण रक्षते योगी कवचं रक्षकं यतः॥१३॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दुर्लभं पापचेतसाम्।
भूर्जे रम्भात्वचि वापि लिखित्वा विधिवत्प्रभो॥१४॥
कुङ्कुमेनष्टगन्धेन गोरोचनैश्च केसरैः।
धारयेत्पाठयेत्वापि सम्पठेत्वापि नित्यशः॥१५॥
सम्प्राप्नोति फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।
सततं पठ्यते यत्र तत्र भैरवसन्स्थितिः॥१६॥
न शक्नोमि प्रभावं वै कवचस्यास्य पर्णितुम्।
नमो भैरवदेवाय सर्वभूताय वै नमः॥१७॥
नमस्त्रैलोक्यनाथाय नाथनाथाय वै नमः।
नमे भयविनाशाय भैरवाय नमो नमः॥१८॥

कवचपाठसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

अनेन श्रीवटुकभैरवकवचाख्यपाठाख्येन वटुकभैरवः प्रीयन्तां न मम।

भैरवतन्त्रे देवीरहस्योक्त श्रीमद्वटुकभैरवकवचं परिपूर्णम्

◆

अथ रुद्रयामलोक्त श्रीमद्वटुकभैरवब्रह्मकवचं द्वितीयम्

विनियोगः—**ॐ अस्य वटुकभैरवब्रह्मकवचस्य भैरवऋषिः, अनुष्टुब्छन्दः, श्रीवटुकभैरवदेवता वँबीजं ह्रौंशक्तिः ॐकीलकं वटुकभैरव प्रीतये पाठे विनियोगः।**

श्रीदेव्युवाच

भगवन् सर्ववेत्तात्वं देवानां प्रीतिदायकम्।
भैरवं कवचं ब्रूहि यदि चास्ति कृपा मयि॥१॥
प्राणत्यागं करिष्यामि यदि नो कथयिष्यसि।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव न संशयः॥२॥
इत्थं देव्या वचः श्रुत्वा प्रहस्याति स्वयं प्रभुः।
उवाच वचनं तत्र देवदेवो महेश्वरः॥३॥

ईश्वर उवाच

वटुककवचं दिव्यं शृणु मत्प्राणवल्लभे।
चण्डिकातन्त्रसर्वस्वं वटुकस्य विशेषतः॥४॥
तत्र मन्त्राद्यक्षरं तु वासुदेवस्वरूपकम्।
शङ्खवर्णद्वयो ब्रह्मा वटुकं चन्द्रशेखरः॥५॥
आपदुद्धारणो देवो भैरवः परिकीर्तितः।
प्रवक्ष्यामि समासेन चतुर्वर्गप्रसिद्धये॥६॥

प्रणवं कामदं विद्याल्लज्जाबीजं च सिद्धिदम्।
वटुकायेति विज्ञेयं महापातकनाशनम्॥७॥
आपदुद्धारणायेति त्वापदुद्धारणं नृणाम्।
कुरुद्वयं महेशानि मोहने परिकीर्तितम्॥८॥
द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः क्रमेण जगदीश्वरि।
ॐ अस्य श्रीमद्वटुकभैरव मन्त्रस्य ऋषिः॥९॥
भैरव छन्दोनुष्टुपश्च देवोवटुकभैरवः।
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं भैरवप्रसादसिद्धये॥१०॥
विनियोगं प्रकुर्वीत साधकः सर्वसिद्धये।
ॐ पातु शिरसि नित्यं पातु ह्रीं कण्ठदेशके॥११॥
वटुकाय पातु नाभौः चापदुद्धारणाय च।
कुरु द्वयं लिङ्गमूले त्वाधारं वटुकाय च॥१२॥
सर्वदा पातु ह्रीं बीजं वाह्वोर्युगलमेव च।
षडङ्गसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः॥१३॥
ॐ ह्रीं वटुकाय सततं सर्वाङ्गं मम सर्वदा।
ॐ ह्रीं पादौ महाकालः पातु वीरासनो हृदि॥१४॥
ॐ ह्रीं कालः पातु कण्ठदेशे तु भैरवः।
गणराट् पातु जिह्वायामष्टभिः शक्तिभिः सह॥१५॥
ॐ ह्रीं दण्डपाणिर्गुह्यमूले भैरवीसहितस्तथा।
ॐ ह्रीं विश्वनाथः सदा पातु सर्वाङ्गं मम सर्वदा॥१६॥
ॐ ह्रीं अन्नपूर्णा सदा पातु चांसौ रक्षतु चण्डिका।
असिताङ्गं शिरः पातु ललाटं रुरुभैरवः॥१७॥
चण्डभैरव पातु वक्त्रं कण्ठं श्रीक्रोधभैरवः।
उन्मत्तभैरवः पातु हृदयं मम सर्वदा॥१८॥
नाभिदेशे कपाली च लिङ्गे भीषणभैरवः।
संहारभैरवः पातु मूलाधारं च सर्वदा॥१९॥
वाहुयुग्मं सदा पाततु भैरवो मम केवलम्।
हंसबीजं हृदि पातु सोऽहं रक्षतु पादयोः॥२०॥
प्राणापानौ समानं च उदानं व्यानमेव च।
रक्षन्तु हारमूले च दशदिक्षु समन्ततः॥२१॥
प्रणवः पातु सर्वाङ्गं लज्जाबीजं महाभये।
इति श्रीब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्त्तितम्॥२२॥

चतुर्वर्गप्रदं नित्यं स्वयं देवप्रकाशितम्।
यः पठेच्छ्रृणुयान्नित्यं धारयेत्कवचोत्तमम्॥२३॥
सदानन्दमयो भूत्त्वा लभते परमं पदम्।
य इदं कवचं देवी चिन्तयेन्मन्मुखोदितम्॥२४॥
कोटिजन्मार्जितं पापं विनश्यति च तत्क्षणात्।
जलमध्येऽग्निमध्ये वा दुर्ग्रहे शत्रुसङ्कटे॥२५॥
कवचस्मरणाद्देवि सर्वत्र विजयी भवेत्।
भक्तियुक्तेन मनसा कवचं पूजयेद्यदि॥२६॥
कामतुल्यस्तु नारीणां रिपूणां च यमोपमः।
तस्यपादाम्बुजद्वन्द्वं राज्ञां मुकुटभूषणम्॥२७॥
तस्यभूतिं विलोक्यैव कुबेरोपि तिरस्कृतः।
अस्य विज्ञानमात्रेण मन्त्रसिद्धिर्नसंशयः॥२८॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्वटुकं नरः।
न चाप्नोति फलं तस्य परं नरकमाप्नुयात्॥२९॥
मन्वन्तरत्रयं स्थित्वा तिर्यग्योनिषु जायते।
इहलोके महारोगी दारिद्र्येणाति पीडितः॥३०॥
शत्रूणां वशगो भूत्वा करपात्री भवेज्जडः।
देयं पुत्राय शिष्याय शान्ताय प्रियवादिने॥३१॥
कार्पण्यरहितायालं वटुभक्तिरताय च।
यः परस्मै प्रदाता वै तस्य तस्यातिसत्वरम्॥३२॥
आयुर्विद्यायशोधर्मं बलं नश्यत्यसंशयः।
इति ते कथितं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥३३॥

कवचपाठसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

अनेन श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचाख्यपाठाख्येन वटुकभैरवः प्रीयन्तां न मम।

रुद्रयामलोक्त श्रीमद्वटुकभैरवब्रह्मकवचं परिपूर्णम्

◆

अथ श्रीमद्वटुकभैरवकवचं तृतीयम्

विनियोगः—**ॐ अस्य वटुकभैरवकवचस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुब्छन्दः, श्रीवटुकभैरवदेवता वँबीजं ह्रीँशक्तिः ॐकीलकं वटुकभैरव प्रीतये पाठे विनियोगः।**

न्यासादि करने के बाद कवच पाठ करे।

देव्युवाच

देवदेव जगन्नाथ त्रिनाथ श्रीत्रिलोचनः।
भवत्प्रसादाद्भगवन्भैरवस्य महात्मनः॥१॥
कवचं श्रोतुमिच्छामि त्वत्स्नेहातिशयादहम्।
प्राणिनां रक्षणार्थं च ब्रवीमि सुमुखे गुणान्॥२॥

शिव उवाच

वर्मणो भैरवस्यास्य शिवब्रह्मा ऋषिः स्मृतः।
छन्दोनुष्टुप्तथा देवो भैरवो वटुकात्मजः॥३॥
ऐश्वर्यस्याभिवृद्ध्यर्थमिष्टार्थं च नियुज्यते।
साधकाय हितार्थाय विनियोगं प्रकीर्तितः॥४॥
शूलखड्गडमरूलसतकरं,
सव्यहस्तमपरं करोज्ज्वलम्।
सततं हृदि भजामि भैरवं,
स्वाधिरूढमधिकारसिद्धये ॥५॥
दिग्वाससं कमलपत्रविशालनेत्रं,
भस्माङ्गरागमभयं प्रभुमादिदेवम्।
ध्यायामि तं वटुकनाथमहर्निशं मे,
सर्वार्थसिद्धमतुलां कृपया दिशन्तम्॥६॥
एवं ध्यात्वा तु देवेशं वटुकाख्यं महाबलम्।
उच्चरेत्कवचं पश्चाद्देवताभिष्टसिद्धिदम्॥७॥
शिरो मे भैरवः पातु भालं पुरनिषूदनः।
दृशौ पातु त्रिनेत्रो मे श्रवणं नीलकण्ठकः॥८॥
दिवासा मे पातु कण्ठं नासिकामनन्यभाक्।
ओष्टौ त्रिपुरघाती मे जिह्वां पातु कपालधृक्॥९॥
दन्तान्पातु क्रतुध्वंसी चिबुकं भूतवासकः।
कपाली पातु मे ग्रीवां स्कन्धौ पातु गजान्तकः॥१०॥
भुजौ मे पातु कौमारौ हृदयं क्षेत्रपालकः।
अभरुर्मे स्तनौ पातु वक्षः पातु महेश्वरः॥११॥
कुक्षौ मे पातु संहर्ता नाभिं मे षण्मुखप्रियः।
भूतनाथः कटिं पातु गुह्यं पातु जटाधरः॥१२॥
ऊरू पातु वृषारूढो जानुनी भूतभावनः।
श्मशानवासी मे पातु पातु सर्वाङ्गमीश्वरः॥१३॥

य इदं कवचं देवि पठेत्प्रयतमानसः।
तस्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थमिष्टान्नं च ददाम्यहम्॥१४॥
रोगार्त्तो मुच्यते रोगात्पुत्रार्थी लभते सुतान्।
जपित्वा श्रद्धया कन्या आयुष्मन्तं पतिं लभेत्॥१५॥
विद्याविनयसम्पन्नं सुकुलीनं सुरूपिणम्।
जपित्वा विधवा नारी वैधव्यं नाप्नुयात्क्वचित्॥१६॥
जपित्वा कवचं प्रातर्मुच्यते नात्र संशयः।
नास्ति तस्यापमृत्युश्चाकालमृत्युः कदाचन॥१७॥
इहलोके सुखं भुक्त्वा पुत्रपौत्रैः सुबान्धवैः।
अन्ते कैलाशमाविश्य मम पादतलं व्रजेत्॥१८॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन जपेन्नित्यमतन्द्रितः।
साधकः स्वहितार्थाय भैरवस्य महात्मनः॥१९॥
ये भक्तियुक्ताः कवचं पठन्ति,
ते वै स्वे कुलिनो वसन्ति।
तेजोधिकं विंशतिसङ्ख्ययादिने,
कैलामाप्नोति मम प्रसादात्॥२०॥
एतत्ते कथितं देवि यन्मां त्वं परिपृच्छसि।
त्वत्स्नेहातिशयादुक्तं कवचं भैरवात्मकम्॥२१॥

कवचपाठसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

अनेन श्रीवटुकभैरवकवचाख्यपाठाख्येन वटुकभैरवः प्रीयन्तां न मम।

भैरवरहस्योक्त श्रीमद्वटुकभैरवकवचं परिपूर्णम्

❀

अथ शक्तिरहस्योक्त श्रीमद्वटुकभैरवपञ्जरकवचं चतुर्थम्

विनियोगः—ॐ अस्य वटुकभैरवपञ्जरकवचस्य कालाग्निरुद्रऋषिः, अनुष्टुब्छन्दः, श्रीवटुकभैरवदेवता ह्राँबीजं ह्रीँशक्तिः ह्रूँकीलकं वटुकभैरव प्रीतये पाठे विनियोगः।

देव्युवाच

देव देव महादेव संसारप्रियकारक।
पञ्जरं वटुकास्यास्य कथनीयं मम प्रभो॥१॥

श्रीशिव उवाच

पूर्वं भस्मासुरत्रासाद् भयविह्वलतां स्वयम्।
पठनादेव मे प्राणा रक्षिताः परमेश्वरि॥२॥

सर्वदुष्टविनाशाय सर्वं रोगनिवारणम्।
दुःखशान्तिकरं देवि ह्यल्पमृत्युभयापहम्॥३॥
राज्ञां वश्यकरं चैव त्रैलोक्यविजयप्रदाम्।
सर्वलोकेषु पूज्यश्च लक्ष्मीतस्यगृहे स्थिरा॥४॥
अनुष्ठानं कृतं देवि पूजनं च दिनेदिने।
विनापञ्जरपाठेन तत्सर्वं निष्फलं भवेत्॥५॥
पञ्जरकवचमन्त्रस्य कालाग्निरुद्रोऋषिः।
छन्दोनुष्टुप्तथादेवि देवोवटुकभैरवः॥६॥
ह्लाँबीजं ह्लींदेवि तथा भैरववल्लभाशक्तिः।
कीलकं दण्डपाणिश्च नियोगः कामसिद्धये॥७॥
ॐ ह्लाँ प्राच्यां डमरूहस्तो रक्तवर्णो महाबलः।
प्रत्यक्षमहमीशानवटुकाय नमो नमः॥८॥
ॐ हीँ दण्डधारी दक्षिणे च पश्चिमे खड्गधारिणे।
ॐ ह्लूँ घण्टावादी मुर्तिरुत्तरस्यां दिशिस्तथा॥९॥
ॐह्लैँ अग्निरूपो ह्याग्नेय्यां नैर्ऋत्यां च दिगम्बरः।
ॐ ह्लौँ सर्वभूतस्थो वायव्ये भूतानां हितकारकः॥१०॥
ॐ ह्लश्चाष्टसिद्धिश्च ईशाने सर्वसिद्धिकरः परः।
प्रत्यक्षमहमीशानवटुकाय नमो नमः॥११॥
ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ ह्लैँ ह्लौँ हः स्वाहा ऊर्ध्वं खेचरिणं न्यसेत्।
रुद्ररूपस्तु पाताले वटुकाय नमो नमः॥१२॥
ॐ ह्लीँ वटुकाय मूर्ध्नि ललाटे भीमरूपिणम्।
आपदुद्धारणं नेत्रे मुखे च वटुकं न्यसेत्॥१३॥
कुरु कुरु सर्वसिद्धिर्देहे गेहे व्यवस्थितः।
वटुकाय ह्लीँ सर्वदेहे विश्वस्य सर्वतो दिशि॥१४॥
आपदुद्धारकः पातु ह्यापादतलमस्तकम्।
हसक्षमलवरयूँ पातु पूर्वे दण्डहस्तस्तु दक्षिणे॥१५॥
हसक्षमलवरयूँ नैर्ऋत्ये हसक्षमलवरयूँ पश्चिमेऽवतु।
सर्वभूतस्थो वायव्ये हसक्षमलवरयूँ घण्टावादिन उत्तरे॥१६॥
हंसः सोऽहं तु ईशाने चाष्टसिद्धिकरः परः।
क्षँ क्षेत्रपाल ऊर्ध्वे तु पाताले शिवसन्निभः॥१७॥
एवं दशदिशोरक्षेद्वटुकाय नमो नमः।
इति ते कथितं दिव्यं ह्लीँ श्रीँ क्लीँ ऐँ सदावतु॥१८॥

ॐ फ्रँ हुँ फट् च सर्वत्र त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।
लक्ष्मीं ऐँ श्रीँ लँ पृथिव्यां च आकारोहँ ममावतु॥१९॥
स्त्रौँ प्रौँ ज्रौँ ॐ यँ वायव्यां रँ रँ रँ तेजोरूपिणम्।
ॐ कँ खँ गँ घँ ङँ वटुकं चँ छँ जँ झँ ञँ कपालिनम्॥२०॥
टँ ठँ डँ ढँ णँ क्षेत्रेशं तँ थँ दँ धँ नँ उमाप्रियम्।
पँ फँ बँ भँ मँ मम रक्ष यँ रँ लँ भैरवोत्तमम्॥२१॥
वँ शँ षँ सँ आदिनाथं ळँ क्षँ वै क्षेत्रपालकम्।
एवं पञ्जरमाख्यातं सर्वसिद्धिकरं भवेत्॥२२॥
दुःखदारिद्र्यशमनं रक्षकं सर्वतो दिशः।
आवश्यं सर्वतोवक्ष्यं सर्वबीजैश्च सम्पुटम्॥२३॥
सर्वरोगहरं दिव्यं सर्वत्र सुखमाप्नुयात्।
एवं रहस्यमाख्यातं देवानामपि दुर्लभम्॥२४॥
वज्रपञ्जरनामेदं ये श्रृण्वन्ति वरानने।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं कीर्तिलाभः सुखं जयः॥२५॥
लक्ष्मीं मनोरमा बुद्धिस्तेषां गेहे व्यवस्थिता।
सुशीलाय सुदान्ताय गुरुभक्तिपराय च॥२६॥
तस्य शीघ्रं च दातव्यमन्यथा न कदाचन।
गोपनीयं प्रयत्नेन सर्वगोप्यमयं भवेत्॥२७॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न दातव्य कदाचन।
राज्यं देयं शिरो देयं न देयं भैरवाक्षरम्॥२८॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं पठते नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो शिवेन सह मोदते॥२९॥

कवचपाठसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर समर्पित करे—

अनेन श्रीवटुकभैरवपञ्जरकवचाख्यपाठाख्येन वटुकभैरवः प्रीयन्तां न मम।

शक्तिरहस्योक्त श्रीमद्वटुकभैरवपञ्जरकवचं परिपूर्णम्

❀

रुद्रयामलोक्त श्रीमद्वटुकभैरवहृदयस्तोत्रम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यकऋषिः अनुष्टुब्छन्दः वटुकभैरवदेवता वँबीजं ह्रीँशक्तिः ॐकीलकं वटुकभैरवप्रीतये पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ बृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवताय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँबीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँशक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐकीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा न्यस्यामि। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ शिखायै वषट् न्यस्यामि। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ कवचाय हूम् न्यस्यामि। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये।

मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं त्रिलोचनः।
शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्॥१॥

श्रीपार्वत्युवाच

भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रागमादिषु।
आपदुद्धारकं मन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदं नृणां॥२॥
सर्वेषां चैव भूतानां हितार्थं वाञ्छितं मया।
विशेषतस्तु राज्ञां वै शान्तिपुष्टिप्रदायकम्॥३॥
अङ्गन्यासकरन्यासदेहन्याससमन्वितम् ।
वक्तुमर्हसिदेवेश ममहर्षविवर्द्धनम्॥४॥

ईश्वर उवाच

शृणु देवि महामन्त्रमापदुद्धारहेतुकम्।
सर्वदुःखप्रशमनं सर्वशत्रुविनाशनम्॥५॥
अपस्मारादिरोगाणां ज्वरादीनां विशेषतः।
नाशनं स्मृतिमात्रेण मन्त्रराजमिमं प्रिये॥६॥
ग्रहराजभयानां च नाशनं सुखवर्द्धनम्।
स्नेहाद्वक्ष्यामि ते मन्त्रं सर्वसारमिमं प्रिये॥७॥
सर्वार्थकामदं मन्त्रं राजभोगप्रदं नृणाम्।
आपदुद्धारमन्त्रस्य मूलविद्यां शृणु प्रिये॥८॥
यस्यस्मरणमात्रेण भूतानां नाशनं परम्।
प्रणवमुद्धृत्य पश्चात् देवीप्रणवमुद्धरेत्॥९॥
वटुकायेति वै पश्चादापदुद्धारणाय च।
कुरु द्वयं ततः पश्चाद्वटुकाय पुनर्वदेत्॥१०॥
देवीप्रणवमुद्धृत्य मन्त्रोद्धारमिमं प्रिये।
एकविंशतिवर्णास्तु मन्त्रे सत्यं प्रकाशितः॥११॥
यन्त्रोद्धारमिमं देवि! त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
तद्यन्त्रञ्च प्रवक्ष्यामि यन्त्रेदेवञ्च पूजयेत्॥१२॥
त्रिकोणंपञ्चकोणञ्च षट्कोणं च ततो न्यसेत्।
ततश्चवलये कुर्याच्चतुष्कोणं ततश्चरेत्॥१३॥

मन्त्रं दलं समारभ्य मन्त्राक्षराणि पूरयेत्।
ऊपरितानिसव्येन सर्वाणिपूरयेत् क्रमात्॥१४॥
ऊपरितदले तत्र लक्ष्मीबीजं न्यसेत्सदा।
दिक्पालाँश्च समारोप्य कोणेष्टभैरवान्लिखेत्॥१५॥
एवं यन्त्रं च सम्पूज्य स्वस्थो भूत्वा जपेन्नरः।
मन्त्राक्षराणां सङ्ख्याकैस्तन्तुभिर्ब्रह्मसूत्रजैः॥१६॥
वर्त्तिं दत्त्वा घृतेनैव दीपं तत्र प्रदापयेत्।
दीपदानमन्त्रेण तु साधकः सर्वसिद्धये॥१७॥

ॐ ह्रौँ वँ श्रीँ क्लीँ ह्रौँ श्रीँ वँ सर्वज्ञाय महाबलपराक्रमाय वटुकाय इमं दीपं गृहाण सर्वकार्यार्थसाधकाय दुष्टान्नाशय नाशय त्राशय त्राशय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु हुँ फट् स्वाहा।

त्रिराचम्य च मन्त्रैश्च हस्तं प्रक्षाल्य वै तदा।
हस्ते जलं ततो गृह्य विनियोगं पठेद् स्वयम्॥१८॥
अप्रकाश्यमिमं मन्त्रं सर्वशक्तिसमन्वितम्।
स्मरणादेवमन्त्रस्य भूतप्रेतपिशाचकाः॥१९॥
विद्रवन्त्यति भीता वै कालरुद्रादिव प्रजाः।
पठेद्वापाठयेद्वापि पूजयेद्वापि पुस्तकम्॥२०॥
नाग्निचौरभयं तत्र ग्रहराजभयं तथा।
न च मारीभयं क्वापि सर्वत्र सुखभाग्भवेत्॥२१॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रादिसम्पदः।
भवन्ति सततं तस्य पुस्तकस्यापिपूजनात्॥२२॥

पार्वत्युवाच

य एष भैरवोनामो आपदुद्धारको मतः।
त्वया च कथितो देव भैरवः कल्प-उत्तमः॥२३॥
तस्य नामसहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च।
सारमुद्धृत्य तेषां वै नामष्टशतमुत्तमम्॥२४॥
यानिसङ्कीर्तयन्मर्त्यः सर्वदुःखविवर्जितः।
सर्वान्कामान्नवाप्नोति साधकः सिद्धिमेव च॥२५॥

ईश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः।
आपदुद्धारणस्येह नामाष्टशतमुत्तमम्॥२६॥

सर्वपापहरं पुण्यं सर्वापद्धिनिवारणम्।
सर्वार्थकामदं देवि! साधकानां सुखावहम्॥२७॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वोपद्रवनाशनम्।
आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशष्करम्॥२८॥
नामाष्टशतकस्यास्य छन्दोऽनुष्टुप्प्रकीर्तितम्।
बृहदारण्यको नाम ऋषिर्देवोऽथ भैरवः॥२९॥
अष्टबाहुत्रिनयनं बीजशक्ती समीरिते।
ॐ कीलकं शेषमिष्टसिद्धौ तु विनियोजयेत्॥३०॥
सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः।
आदौकृत्वा षडङ्गं च ह्राँ वाँ बीजादिनिर्मितिम्॥३१॥
अङ्गुष्ठादिकान्तं च यथोक्तं हृदयादिकम्।
न्यासं कुर्याच्च विधिवद्भक्त्या भैरवतुष्टये॥३२॥
सद्योजातादिभिर्मन्त्रैः कनिष्ठिकादिपूर्वकम्।
देहाङ्गन्यासकं चैव पूर्वं कुर्याच्च साधकः॥३३॥
यथाकामनया ध्यात्वा ध्यानं च त्रिविधं यतः।
आद्यन्ते स्तोत्रपाठस्य मूलमन्त्रं जपेन्नरः॥३४॥
अष्टोत्तरशतं धीमान्यथासङ्ख्यामथापि वा।
जपान्तेप्युत्तरन्यासाः कर्तव्याः जपसिद्धये॥३५॥
एवं न्यासविधिं देवि भैरवस्य महात्मनः।
नामाष्टशतकं पश्चाज्जपेदापन्निवारकम्॥३६॥
स्थानेषु येषु नामानि शृणु मत्प्राणवल्लभे।
भैरवं मूर्ध्नि विन्यस्य ललाटे भीमदर्शनम्॥३७॥
अक्ष्णोर्भूताश्रयं न्यस्य कर्णयोर्भूतनायकम्।
नासिकायां त्रिशूलं च जिह्वायां रक्तपं न्यसेत्॥३८॥
कण्ठमध्ये नागहारं नागहारोपवीतकम्।
क्षेत्रज्ञं करयोर्मध्ये क्षेत्रपालं हृदि न्यसेत्॥३९॥
क्षेत्रदं नाभिदेशे तु कट्यां सर्वौघनाशनम्।
त्रिनेत्रमूर्वोविन्यस्य जङ्घयोः रक्तपायिनम्॥४०॥
पादयोर्देवदेवेशं सर्वाङ्गे वटुकं न्यसेत्।
एवं न्यासविधिं कृत्वा स साक्षाद्भैरवो भवेत्॥४१॥
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि अङ्गुलीन्यासमुत्तमम्।
न्यसेद्भैरवमङ्गुष्ठे तर्जन्यां भीमदर्शनम्॥४२॥

भूतश्रेष्ठं मध्यमायामनाम्यां भूतनायकम्।
कनिष्ठिकायां क्षत्रियं क्षेत्रपालं करद्वये॥४३॥
क्षेत्रज्ञं दिग्दिशायां वै भैरवं सर्वतः पुनः।
भैरवं शिरसि न्यस्य ललाटे भीमदर्शनम्॥४४॥
नेत्रयोर्भूतहननं सारमेयानुगं भ्रुवोः।
कर्णयोर्भूतनाथं च प्रेतवाहं कपोलयोः॥४५॥
नासापुटोष्टयोश्चैव भस्माङ्गसर्पभूषणम्।
अनादिनाथपास्ये च शक्तिहस्तं गले न्यसेत्॥४६॥
स्कन्धयोर्दैत्यशमनं वाह्वोरतुलतेजसम्।
पाण्योः कपालिनं न्यस्य हृदये मुण्डमालिनम्॥४७॥
शान्तं वक्षःस्थले न्यस्य स्तनयोः कामचारिणम्।
उदरे च सदा तुष्टं क्षेत्रेशं पार्श्वयोस्तथा॥४८॥
क्षेत्रपालं पृष्ठदेशे क्षेत्रज्ञं नाभिदेशके।
पापौघनाशनं कट्यां वटुकं लिङ्गदेशके॥४९॥
गुदे रक्षाकरं न्यस्य तथोर्वोरक्तपायिनम्।
जानुनोर्घुर्घुरारावं जङ्घयो रक्तपायिनम्॥५०॥
गुल्फयोर्पादुकासिद्धं पादपृष्ठे सुरेश्वरम्।
आपादमस्तकं चैव आपदुद्धारकं तथा॥५१॥

ॐ ह्रीं वँ क्ष्मौँ व्रौँ ह्रीं ॐ स्वाहा आपदुद्धारणभैरवाय नमः। अनेनानेन व्यापकन्यासं कुर्यात्।

पूर्वं डमरूहस्तञ्च दक्षिणे दण्डधारिणम्।
खड्गहस्तं पश्चिमायां घण्टावादनमुत्तरे॥५२॥
आग्नेयामग्निवर्णं च नैर्ऋत्याञ्च दिगम्बरम्।
वायव्यां सर्वभूतस्थमीशान्यां चाष्टसिद्धिदम्॥५३॥
ऊर्ध्वे खेचरिणं न्यस्य पाताले रौद्ररूपिणम्।
एवं विन्यस्य देहेषु कराङ्गेषु ततो न्यसेत्॥५४॥
रुद्रमङ्गुष्ठयोर्न्यस्य तर्जन्योस्तु शिखिसखम्।
शिवं मध्यमयोर्न्यस्यानामिक्योस्तु त्रिशूलिनम्॥५५॥
ब्रह्माणं तु कनिष्ठायां तलयोस्त्रिपुरान्तकम्।
मांसाशिनं कराग्रे तु करपृष्ठे दिगम्बरम्॥५६॥
हृदये भूतनाथाय आदिनाथाय मूर्द्धनि।
आनन्दपदपूर्वाय नाथायाथ शिखासु च॥५७॥

सिद्धशाबरनाथाय कवचे विन्यसेत्तथा।
सहजानन्दनाथाय न्यसेन्नेत्रत्रये तथा॥५८॥
श्रीमदानन्दनाथाय अस्त्रे चैव प्रयोजयेत्।
बीजपूर्वोद्धृतं मन्त्रं न्यासं कुर्याद्विचक्षणः॥५९॥
देवीबीजादृते ब्रूयात्सिद्धिर्भवति नान्यथा।
एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेच्च तदनन्तरम्॥६०॥
ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्वा पठेन्नरः।
देवदेवजगन्नाथं भैरवस्य महात्मनः॥६१॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥६२॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥६३॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥६४॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥६५॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।
सत्त्वरजतमात्मकं ध्यानं वटुकभैरवम्॥६६॥
वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥६७॥
उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥६८॥
वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥६९॥
करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।

क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥७०॥
आनीलकुन्तलमलक्तकरक्तवर्ण ,
मौनीकृतं कृतमानोमुखारविन्दम्।
कल्याणकीर्तिकमनीयकपालपाणिं ,
वन्दे महावटुकनाथमभीष्टसिद्ध्यै॥७१॥
आनम्रसर्वगीर्वाणशिरोभृगाङ्गसङ्गिनम् ।
भैरवस्यपदाम्भोजं भूयोऽस्य नौमि भूतये॥७२॥
ध्यात्वा जपेत्सुसंहृष्टः सर्वान्कामानवाप्नुयात्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं सिद्धार्थे विनियोजयेत्॥७३॥
साधकः सर्वलोकेषु सत्यं सत्यं न संशयः।
लक्षवारं जपेन्मन्त्रं होमं कुर्याद्यथाविधिः॥७४॥

ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः॥ अनुष्टुप्छन्दः॥ श्रीवटुकभैरवो देवता॥ अष्टबाहुमिति बीजम्॥ त्रिनयनमितिशक्तिः॥ प्रणवः कीलकम्॥ ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ऋष्यादिन्यासः॥ बृहदारण्यक ऋषये नमः शिरसि॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥ वटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये॥ अष्टबाहुबीजाय नमः गुह्ये॥ त्रिनयनशक्तये नमः पादयोः॥ ॐ कीलकाय नमः नाभौ॥ वटुकभैरवाय नमः सर्वाङ्गे॥ कराङ्गन्यासः॥ ॐ ह्राँ वाँ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेऽअस्तुसदाशिवोऽम् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ हूँ वूँ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ हैँ वँ वामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमःकालायनमःकलविकरणायनमोबलविकरणायनमोबलायनमोबलप्रमथनायनमःसर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः॥ भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ हः वः पञ्चवक्त्राय महादेवाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ हृदयादिन्यासः॥ ॐ ह्राँ वाँ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेऽअस्तुसदाशिवोऽम् हृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् शिरसे स्वाहा॥ ॐ हूँ वूँ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः शिखायै वषट्॥ ॐ हैँ वँ वामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमःकालायनमःकलविकरणायनमोबलविकरणायनमोबलायनमोबलप्रमथनायनमःसर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः

कवचाय हुम्॥ ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः॥ भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्राय महादेवाय नमः अस्त्राय फट्॥ अथ देहन्यासः॥ ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय नमः मुर्ध्नि॥ ॐ ह्रीँ वँ भीमदर्शनाय नमः ललाटे॥ ॐ ह्रीँ वँ भूताश्रयाय नमः नेत्रयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ भूतनायकाय नमः कर्णयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ त्रिशूलाय नमः नासिकायाम्॥ ॐ ह्रीँ वँ रक्तपाय नमः जिह्वायाम्॥ ॐ ह्रीँ वँ नागहारनागयज्ञोपवीतिने नमः कण्ठमध्ये॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रज्ञाय नमः करयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय नमः हृदये॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रदाय नमः नाभौ॥ ॐ ह्रीँ वँ सर्वौघनाशनाय नमः कट्याम्॥ ॐ ह्रीँ वँ त्रिनेत्राय नमः ऊर्वो॥ ॐ ह्रीँ वँ रक्तपायिने नमः जङ्घयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ देवदेवेशाय नमः सर्वाङ्गे॥ करन्यासः॥ ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नम॥ ॐ ह्रीँ वँ भीमदर्शनाय तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ भूतश्रेष्ठाय मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ भूतनायकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षत्रियाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय नमः सर्वाङ्गे॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रज्ञाय नमः दिग्दिशायाम्॥ अङ्गन्यासः॥ ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय नमः शिरसि॥ ॐ ह्रीँ वँ भीमदर्शनाय नमः ललाटे॥ ॐ ह्रीँ वँ भूतहननाय नमः नेत्रयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ सारमेयानुगाये नमः भ्रुवोः॥ ॐ ह्रीँ वँ भूतनाथाय नमः कर्णयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ प्रेतवाहकाय नमः कपोलयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ भस्माङ्गरागाय नमः नासापुटे॥ ॐ ह्रीँ वँ सर्पभूषणाय नमः ओष्ठयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ आदिनाथाय नमः मुखे॥ ॐ ह्रीँ वँ शक्तिहस्ताय नमः गले॥ ॐ ह्रीँ वँ दैत्यशमनाय नमः स्कन्धयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ अतुलतेजसे नमः बाह्वोः॥ ॐ ह्रीँ वँ कपालिने नमः करयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ मुण्डमालिने नमः हृदये॥ ॐ ह्रीँ वँ शान्ताय नमः वक्षस्थले॥ ॐ ह्रीँ वँ कामचारिणे नमः स्तनयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ सदातुष्टाय नमः उदरे॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रेशाय नमः पार्श्वयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय नमः पृष्टे॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रज्ञाय नमः नाभौ॥ ॐ ह्रीँ वँ पापौघनाशनाय नमः कट्याम्॥ ॐ ह्रीँ वटुकाय नमः लिङ्गे॥ ॐ ह्रीँ वँ रक्षाकराय नमः गुदे॥ ॐ ह्रीँ वँ रक्तलोचनाय नमः ऊर्वो॥ ॐ ह्रीँ वँ घुर्घुराय नमः जानुनोः॥ ॐ ह्रीँ वँ रक्तपायिने नमः जङ्घयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ सिद्धपादुकाय नमः गुल्फयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ सुरेश्वराय नमः पादपृष्ठे॥ ॐ ह्रीँ वँ आपदुद्धारकाय नमः आपादमस्तकपर्यान्तं न्यसेत्॥ दिङ्न्यासः॥ ॐ ह्रीँ वँ डमरुहस्ताय नमः पूर्वे॥ ॐ ह्रीँ वँ दण्डधारिणे नमः दक्षिणे॥ ॐ ह्रीँ वँ खड्गहस्ताय नमः पश्चिमे॥ ॐ ह्रीँ वँ घण्टावादिने नमः उत्तरे॥ ॐ ह्रीँ वँ अग्निवर्णाय नमः आग्नेयाम्॥ ॐ ह्रीँ वँ दिगम्बराय नमः नैर्ऋत्ये॥ ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतस्थाय नमः वायव्याम्॥ ॐ ह्रीँ वँ अष्टसिद्धिदाय नमः ऐशान्याम्॥ ॐ ह्रीँ वँ खेचरिणे नमः ऊर्ध्वाम्॥ ॐ ह्रीँ वँ रौद्र-रूपिणे नमः पाताले॥ करन्यासः॥ ॐ ह्रीँ वँ रुद्राय नमः अङ्गुष्ठाभ्याम्॥ ॐ ह्रीँ वँ शिखिसखाय नमः तर्जनीभ्याम्॥ ॐ ह्रीँ वँ शिवाय नमः मध्यमाभ्याम्॥ ॐ ह्रीँ वँ त्रिशूलिने नमः अनामिकाभ्याम्॥

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे नमः कनिष्ठिकाभ्यां॥ ॐ ह्रीँ वँ त्रिपुरान्तकाय नमः करतलयोः॥ ॐ ह्रीँ वँ मांसासिने नमः कराग्रेषु॥ ॐ ह्रीँ वँ दिगम्बराय नमः करपृष्ठयोः॥ षडङ्गन्यासः॥ ॐ ह्रीँ वँ भूतनाथाय नमः हृदये॥ ॐ ह्रीँ वँ आदिनाथाय नमः मूर्धनि॥ ॐ ह्रीँ वँ आनन्दनाथाय नमः शिरसि॥ ॐ ह्रीँ वँ सिद्धशाबरनाथाय नमः कण्ठे॥ ॐ ह्रीँ वँ सहजानन्दनाथाय नमः नेत्रत्रये॥ ॐ ह्रीँ वँ आनन्दनाथाय नमः अस्त्राय फट्॥ ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्रमन्त्रस्यबृहदारण्यक ऋषिः॥ अनुष्टुब्छन्दः॥ वटुकभैरवदेवता॥ वँबीजं ॥ ह्रीँशक्तिः॥ ॐकीलकं॥ वटुकभैरवप्रसादसिद्ध्यर्थं स्तोत्रादौ अष्टोत्तरशतमूलमन्त्रजपे विनियोगः। मन्त्रन्यासः॥ ॐ ह्रीँ वँ नमः शिरसि॥ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय नमः हृदि॥ ॐ ह्रीँ वँ आपदुद्धारणाय नमः उदरे॥ ॐ ह्रीँ वँ कुरुकुरु कट्याम् ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय नमः सर्वाङ्गे॥ सकलमनोरथप्राप्यर्थमिदं ध्यानम्॥

शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्त्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥७५॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥७६॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥७७॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥७८॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।
एवं ध्यात्वा महादेवं भैरवं वटुकरूपिणम्॥७९॥

ॐ ह्रीं वँ भैरव भयङ्कर हर मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा॥ अनेन छोटिकाभिः दिग्बन्धनम्॥

ॐ ह्रीँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥८०॥
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः॥८१॥
कङ्कालः कालशमनः कलाकष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः॥८२॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभिरुः भैरवीनाथो भूतपो योगिनीपतिः॥८३॥
धनदोऽधनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्॥८४॥

कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः त्रिशिखी च त्रिलोकपः॥८५॥
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
वटुको बहुभेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः॥८६॥
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः॥८७॥
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः॥८८॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥८९॥
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥९०॥
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिङ्भुनाथो बालो बालपराक्रमः॥९१॥
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥९२॥
जगद्रक्षाकरोऽनन्तो माया मन्त्रौषधीमयः।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ह्रौँ ॐ॥९३॥
अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः।
मया ते कथितं देवि! रहस्यं सर्वकामदम्॥९४॥
य इदं पठति स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम्।
न तस्य दुरितं किञ्चित् न च भूतभयं तथा॥९५॥
न च मारीभयं तस्य गृहराजभयं तथा।
न शत्रुभ्यो भयं क्वापि प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्॥९६॥
पातकानां भयं नैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।
मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये॥९७॥
उत्पातिके महाघोरे तथा दुःस्वप्न दर्शने।
बन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः॥९८॥
सर्वं प्रशमनं याति भयं भैरवकीर्तनात्।
एकादशसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते॥९९॥
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि सम्वत्सरमतन्द्रितः।
स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि मानवः॥१००॥

षण्मासं भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम्।
राजशत्रुविनाशाय जपेन्मासाष्टकं पुनः॥१०१॥
रात्रौ वारत्रयं चैव नाशयेत्येव शात्रवान्।
जपेन्मासत्रयं मर्त्यो राजानं वशमानयेत्॥१०२॥
धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी यस्तु मानवः।
जपेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि॥१०३॥
धनं पुत्रं तथा दारान्प्राप्नुयान्नात्र संशयः।
रोगीरोगात्प्रमुच्येत बद्धोमुच्येत बन्धनात्॥१०४॥
भीतोभयात्प्रमुच्येत देवि! सत्यं न संशयः।
निगडैश्चापि बद्धौ यः कारागारे निपातितः॥१०५॥
श्रृखलाबन्धनं प्राप्तं पठेच्चैव दिवानिशम्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥१०६॥
अप्राकाश्यं परं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित्।
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिते॥१०७॥
दद्यात्स्तोत्रमिदं पुष्यं सर्वकामफलप्रदम्।
इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम्॥१०८॥
जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरि।
भैरवस्य प्रहृष्टोऽभूत्सर्वलोकमहेश्वरः॥१०९॥
वदं ददाति भक्तेभ्यो पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः।
सन्तोषं परमं प्राप्य भैरवस्य महात्मनः॥११०॥
वारं वारं भुवनजननी प्रोच्यते साधुवादः,
सत्यं सत्यं जगती सकले भैरवो देव एकः।
यां यां सिद्धिं भुवनजठरे कामयेन्मानवो यः,
तां तां सिद्धिं वितरति सदा भैरवः सुप्रसन्नः॥१११॥
पणिभ्यां परितः प्रपीड्य सुदृढं निश्चोत्य निश्चोत्य च,
ब्रह्माण्डं सकलं प्रचालितरसालोच्चैः फलाभं मुहुः।
पायंपायमपाययत्रिजगति उन्मत्तवत्तै रसैः,
नृत्यस्ताण्डवमम्बरेणशिरसा पायान्महाभैरवः॥११२॥
बिभ्राणः शुभ्रवर्णं द्विगुणनवभुजं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं,
ज्ञानं मुद्रेन्द्रशस्त्रं सविषममुतकं शङ्खभैषज्यचापं।
शुलं खट्वाङ्गबाणन्डमरुमसिगदावह्निमारोग्यमालाम्,
इष्टाभीतिञ्च दोर्भिर्जयतिखलु महाभैरवः सर्वसिद्ध्यै॥११३॥

क्वाकाशः क्व समीरणः क्व दहनः क्वापश्च विश्वम्भरः,
क्व ब्रह्मा क्व जनार्दनः क्व तरणिः क्वेन्दुश्च देवासुराः।
कल्पान्तेभदिशाटनप्रमुदितः श्रीसिद्धयोगीश्वरो,
क्रीडानाटकनायको विजयते देवो महाभैरवः॥११४॥
लिखित्वा परयाभक्त्या भैरवस्तोत्रमुत्तमम्।
अष्टानां ब्राह्मणानां च देयं पुस्तकमादरात्॥११५॥
यान्यन्समीहते कामान्स्तान्स्तान्प्राप्नोत्यसंशयम्।
इह लोके सुखं प्राप्य पुस्तकस्य प्रसादतः॥११६॥
शिवलोकमनुप्राप्य शिवेनसहमोदते।
लिखित्वाभूर्जपत्रेतु त्रिलोहपरिवेष्टितम्॥११७॥
सौम्ये तु वस्तुवसने कर्पटे च सुशोभने।
करे बाहौ गले कट्यां मूर्ध्नि त्रिलोह गोपितम्॥११८॥
यस्तु धारयते स्तोत्रं सर्वत्र जयमाप्नुयात्।
सर्वं सुखं लभते चैव भैरवस्य प्रसादतः॥११९॥

भैरवहृदयं परिपूर्णम्

* * *

कालसङ्कर्षणतन्त्रोक्त श्रीमद्वटुकभैरवस्तोत्रम्

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्रमन्त्रस्य कालाग्निरुद्रऋषिः अनुष्टुब्छन्दः आपदुद्धारकवटुकभैरवदेवता वँबीजं ह्रीँशक्तिः ॐकीलकं वटुकभैरवप्रीतये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ बृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवताय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँबीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँशक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐकीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा न्यस्यामि। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ शिखायै वषट् न्यस्यामि। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ कवचाय हूम् न्यस्यामि। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये

ध्यानम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥२॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।
एवमेव कृतं ध्यानं भैरवः सर्वकामदः॥५॥

ईश्वर उवाच

श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः।
वटुकस्य शतं नाम्नामष्टोत्तरमनुत्तमम्॥१॥
आपदुद्धारकमिदं सर्वशत्रुनिवारणम्।
अपमृत्युहरं दिव्यमाधिव्याधिनिबर्हणम्॥२॥
विश्वेषां वश्यजननं विवादे विजयप्रदम्।
मारीभये चौरभये वाताग्निजले भये॥३॥
सकृत्पठनमात्रेण सर्वोपद्रवनाशनम्।
धनसम्पत्तिजननं पुत्रपौत्रविवर्धनम्॥४॥
नरनारिनृपाणां च वशीकरणमम्बिके।
सर्वशास्त्रेषु सारं यद्वेदादभ्युद्धृतं मया॥५॥
जदहं ते प्रवक्ष्यामि वटुकस्तोत्रमुत्तमम्।
अस्य श्रीवटुकस्तोत्रमन्त्रस्य सुमहीयसः॥६॥

ऋषिः कालाग्निरुद्रश्च छन्दोऽनुष्टुप् प्रकीर्तितम्।
आपदुद्धारको देवो देवतावटुकेश्वरः॥७॥
भैरवीवल्लभः शक्तिर्बीजं ह्रीँकार उच्यते।
कीलकं दण्डपाणिः स्यान्नीलो वर्णः प्रकीर्तितः॥८॥
समस्तशत्रुदमने समस्तापन्निवारणे।
सर्वाभीष्टप्रदाने च विनियोगः प्रकीर्तितः॥९॥
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि सावधाना शृणु प्रिये।
यस्य स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१०॥
नीलजीमूतसंकाशो जटिलो रक्तलोचनः।
दंष्ट्राकरालवदनः सर्पयज्ञोपवीतवान्॥११॥
दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपालस्त्रग्विभूषितः।
हस्तन्यस्तकिरीटीको भस्मभूषितविग्रहः॥१२॥
नागराजकटीसूत्रो वालमूर्तिर्दिगम्बरः।
मञ्जुशिञ्जानमञ्जीरपादकम्पितभूतलः ॥१३॥
भूतप्रेतपिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः।
योगिनीचक्रमध्यस्थो मातृमण्डलवेष्टितः॥१४॥
अट्टहासस्फुरद्वक्त्रो भृकुटीभीषणाननः।
भक्तसंरक्षणार्थाय दिक्षु भ्रमणतत्परः॥१५॥
एवं भूतस्तु वटुको ध्यातव्यो भैरवीश्वर।
एवं ध्यात्वा ततो नाम्नामष्टोत्तरशतं विभो॥१६॥
सावधानेन मनसा भक्तियुक्तेन कीर्तयेत्।
भक्तानाञ्च हितार्थाय देवोवटुकभैरवः॥१७॥
तारो मायातदनु वटुकाय द्वयं क्ष्रौँ तत्,
आपदुद्धारणाय शिरसि ज्ञेयोकुरुद्वन्द्वमुच्चैः।
ह्रीँ बीजं यद्वटुकपुटितं भौवनमग्निजाया,
एषा विद्या वटुकभव ते वाञ्छितं मे ददातु॥१८॥

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वाहा। इति मूलमन्त्रम्॥

अथ स्तोत्रम्

ॐ ह्रीँ वटुको वरदः शूरो भैरवः कालभैरवः।
भैरवीवल्लभो भव्यो दण्डपाणिर्दयानिधिः॥१९॥
वेतालवाहनो रौद्रो रुद्रभ्रुकुटिसम्भवः।
कपाललोचनः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥२०॥

आपदुद्धारणो धीरो हरिणाङ्कशिरोमणिः।
दंष्ट्राकरालो दृष्टौष्ठो धृष्टो दुष्टनिबर्हणः॥२१॥
सर्पाहारः सर्पशिरः सर्पकुण्डलमण्डितः।
कपाली करुणापूर्णः कपालीकशिरोमणिः॥२२॥
श्मशानवासी मांसाशी मधुमत्तोट्टहासवान्।
वाग्मी वामव्रतो वाङ्मी वामदेवप्रियङ्करः॥२३॥
वनेचरो गिरिचरो वसुदो वायुवेगवान्।
योगी योगव्रतधरो योगिनी वल्लभो युवा॥२४॥
वीरभद्रो विश्वनाथो विजेता वीरवन्दितः।
भूताध्यक्षो भूतधरो भूतभीतिनिवारणः॥२५॥
कलङ्कहीनः कङ्काली क्रूरः कुक्कुरवाहनः।
गाढो गहनगम्भीरो गणनाथसहोदरः॥२६॥
देवीपुत्रो दिव्यमूर्तिर्दीप्तिमान्दीप्तलोचनः।
महासेनप्रियकरो मान्यो माधवमातुलः॥२७॥
भद्रकालीपतिर्भद्रो भद्रदो भद्रवाहनः।
पशूपहाररसिकः पाशी पशुपतिः पतिः॥२८॥
चण्डः प्रचण्डचण्डेशश्चण्डी हृदयनन्दनः।
दक्षो दक्षाध्वरहरो दिग्वासा दीर्घलोचनः॥२९॥
निरान्तको निर्विकल्पः कल्पः कल्पान्तभैरवः।
मदताण्डवकन्मत्तो महादेवप्रियो महान्॥३०॥
खट्वाङ्गपाणिः खातीतः खरशूलः खरान्तकृत्।
ब्रह्माण्डभेदनो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणपालकः॥३१॥
दिक्करो भूचरो भूष्णुः खेचरो खेलनप्रियः।
सर्वदुष्टप्रहर्त्ता च सर्वरोगनिषूदनः॥३२॥
सर्वकामप्रदः शर्वः सर्वपापनिकृन्तनः।
इत्थमष्टोत्तरशतं नाम्नां सर्वसमृद्धिदम्॥३३॥
आपदुद्धारजनकं वटुकस्य प्रकीर्तितम्।
य एतच्छृणुयानित्यं लिखेद्वा स्थापयेद्गृहे॥३४॥
धारयेद्वा गलेबाहौ तस्य सर्वाः समृद्धयः।
न तस्य दुरितं किञ्चिन्न चौरनृपज भयम्॥३५॥
न चापमृत्युरोगेभ्यो डाकिनीभ्यो भयं नहि।
न कूष्माण्डग्रहादिभ्यो नापमृत्योन च ज्वरात्॥३६॥

मासमेकं त्रिसन्ध्यं च शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः।
सर्वदारिद्र्यनिर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले॥३७॥
मसद्वयमधीयानः पादुकासिद्धिमान्भवेत्।
अञ्जनं गुटिकाखड्गं धातुवादरसायनम्॥३८॥
सारस्वतं च वेतालवाहनं बिलसाधनम्।
कार्यसिद्धिं महासिद्धिं मन्त्रं चैव समीहितम्॥३९॥
वर्षमात्रमधीयानः प्राप्नुयात्साधकोत्तमः।
एतत्ते कथितं देवि! गुह्याद्गुह्यतरं परम्॥४०॥
कालसङ्कर्षणीतन्त्रे कल्कीकल्मषनाशनम्।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना भैरवस्य महात्मनः॥४१॥

कालसङ्कर्षणतन्त्रोक्त श्रीमद्वटुकभैरवस्तोत्रं परिपूर्णम्

* * *

श्रीवटुकभैरववकारादिसहस्रनामस्तोत्रम् प्रथमम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्यवकाराख्यसहस्रनामस्तोत्रस्य॥ महादेव-ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीवटुकभैरवोदेवता, वँ(अमृत)बीजम्, ह्रीँ शक्तिः, क्लीँकीलकम्, ममाभीष्टासिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ महादेवर्षये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवताय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँबीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँशक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐकीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ ईशानाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरूषाय तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ वामदेवाय अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजाताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्ररौद्रायकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ ईशानाय हृदयाय नमः न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरूषाय शिरसे स्वाहा न्यस्यामि। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय शिखांयै वषट् न्यस्यामि। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ वामदेवाय कवचाय हूम् न्यस्यामि। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजाताय नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्ररौद्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये

ध्यानम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥ १॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥ २॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥ ३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥ ४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

महाभैरवसात्त्विकसध्यानम्—

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥

महाभैरवराजसध्यानम्—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥

महाभैरवतामसध्यानम्—

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।

नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥

सहस्रनामस्तोत्रम्

उक्तञ्च भैरवयामले तन्त्रे परमात्मनः।
श्रीपार्वति तेनपृष्टं वकारादिसहस्रकम्॥१॥
यद्गुह्यं परमाख्यातं त्रिषुलोकेषु दुर्लभम्।
कोटिग्रन्थेषु गोप्यं यत्सूचितं न प्रकाशितम्॥२॥
सर्वसम्पत्प्रदं पुण्यं सर्वापत्क्षयकारकम्।
तदहं श्रोतुमिच्छामि वटुकस्य महात्मनः॥३॥
नाम्नां सहस्र दिव्यानां वकाराख्यं महात्मनाम्।
कृपया वद देवेश यद्यहं तव वल्लभां॥४॥
श्रीमहादेवकथितं श्रीदेविपरमेश्वरीम्।
सूचितं मे त्वयि स्नेहादप्रकाश्यं कुलेश्वरि॥५॥
नाम्नां सहस्रं कोटीनां सारतः सारमुत्तमम्।
न वक्तव्यं त्वचा देवि चित्तस्थं मम पार्वति॥६॥
अप्रकाश्यतमं देवि प्राणीयो ये परे प्रिये।
श्रीब्रह्मभैरवो प्रोक्तं पुराकिल तथा शृणु॥७॥
इत्युक्ता भगवान्देवो बोध्यः स्वात्मानमात्मना।
पुलकाञ्चितसर्वगो न च किञ्चिदुवाचह॥८॥
महादेवि! तेनपृष्टं रहस्यं वटुकस्य च।
देवदेवमहादे! भक्तानुग्रहकारक!॥९॥
नाम्नां सहस्रं दिव्यानां वकाराख्यं शुभप्रदम्।
गोप्यं तु सर्वगोप्यानां वद मे परमेश्वर॥१०॥
अप्रकाश्यं कुलेशान यद्यहं प्राणवल्लभा।
महादेव तया उक्तं पार्वत्या प्राणवल्लभा॥११॥
शृणु देवि महागुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम्।
न कस्यचिन्मया ख्यातमद्यापि प्राणवल्लभे॥१२॥
सुखसम्पत्प्रदं देवि धनधान्यजयप्रदम्।
भूतग्रहपिशाचानां स्मरणादेव नाशनम्॥१३॥
कृत्याद्रोहादिशमनं बालग्रहनिवारणम्।
चतुर्वर्गचतुर्भद्रप्रदमेतन्न संशयः॥११॥
वटुकस्येह नामानि प्रयुतान्यर्बुदानि च।
सारात्सारतरं शेषं सहस्रं शृणु यत्नतः॥१२॥

सुधासिन्धुमणिद्वीपे पारिजातवनावृते।
प्रक्षालयतु भूमध्ये प्रेतभूतस्थमीश्वरम्॥१३॥
विपरीतरतासक्तं कौमारं विलसद्धृदि।
चतुर्बाहुं त्रिनयनमजनाद्रिसमप्रभम्॥१४॥
जटाजूटधरं देवं शशाङ्ककृतशेखरम्।
भुजङ्गमेखलायुक्तं दिग्वाससमानाकुलम्॥१५॥
डमरूं च कपालं च वरं शूलं क्रमात्करैः।
दधतं च कटैर्दैतैः करालवदनं विभुम्॥१६॥
ध्यात्वैवं साधकस्तुष्टो जपेत्सिद्धिमवाप्नुयात्।
ब्रह्मभैरवः उक्तञ्च वकाराख्यं सहस्रकम्॥१७॥
नाम्नासहस्त्रं दिव्यानां वटुकस्य महात्मनः।
वक्ष्यामि तत्त्वतः सम्यक्सारेभ्यः सारमुत्तमम्॥१८॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वोपद्रवनाशनम्।
सर्वपापहरं पुण्यं साधकानां सुखप्रदम्॥१९॥
आयुः पुष्टिकरं दिव्यं पुत्रपौत्रदिवर्धनम्।
वटुकस्तोत्रमुख्यस्य महादेवऋषिः स्मृतः॥२०॥
महावटुकभैरवो देवतापरिकीर्तिताः।
छन्दोविराट् सर्वकार्यसिद्ध्यर्थे साधकस्य तु॥२१॥
वटुकस्य चतुर्थ्यैतं विनियोगः प्रकीर्तितः।
महादेवेन यत्प्रोक्तं पार्वत्यै सर्वमङ्गलम्॥२२॥
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वापद्विनिवारणम्।
सर्ववेदाङ्गमुख्यं च सारात्सारांशमुत्तमम्॥२३॥
देवदेवेनयत्प्रोक्तं हिमाचलसुतां प्रति।
अत्युग्रकृतिभूताङ्गीं कारुण्यात्प्रीतचेतसा॥२४॥
तदेव ते प्रवक्ष्यामि गुरुभक्ताय साम्प्रतम्।
अतियत्नान्मया प्राप्तं दक्षिणाक्रमयोगतः॥२५॥
तदहं संप्रवख्यामि यच्छ्रुतं परमाद्भुतम्।
कुलीनाय च शान्ताय भक्ताय च सुबुद्धये॥२६॥
धनमानप्रदात्रे च देवार्चनरताय च।
देवतामानत्यक्ताय धर्मबुद्धिपराय च॥२७॥
वदान्याय च योग्याय प्रणयायादृतात्मने।
गोत्रप्रदेयमाज्ञप्तमिति देव्या पुरो मम॥२८॥

अतस्तुभ्यं प्रवख्यामि करूणार्द्रे महात्मने।
वटुकस्य च देवस्य मदोन्मत्तस्य शूलिनः॥२९॥
स्तोत्रं सहस्त्रनामाख्यं वकाराख्यं सुसम्युतम्।
यस्य स्मरणमात्रेण श्रवणेन प्रयत्नतः॥३०॥
पठनात्पाठनाद्वापि सर्वसिद्धिमुपालभेत्।
यत्र स्थितमिदं स्तोत्रं तत्र श्रीस्सर्वतो सुखी॥३१॥
तत्र सर्वत्र विजयो भवत्येव न संशयः।
तत्र लोकावशे सर्वे सर्वेषां भैरवस्य तु॥३२॥
उपमन्यो बहुत्वेकं न वाच्यं यस्य कस्यचित्।
गुरुं सन्तोष्य यत्नेन पठितव्यं समाहितैः॥३३॥

ब्रह्मभैरव उवाच॥ ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्यवकाराख्यसहस्त्रनामस्तोत्रस्य॥ महादेव ऋषिः॥ अनुष्टुप् छन्दः॥ श्रीवटुकभैरवो देवता॥ वं बीजम्॥ ह्रीं शक्तिः॥ क्लीं कीलकम्॥ ममाभीष्टासिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः॥

महादेवर्षये नमः शिरसि॥ अनुष्टुपूछन्दसे नमः मुखे॥ श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये॥ वं वीजाय नमः गुह्ये॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥ ह्रीं कीलकाय नमो नाभौ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे॥

करषडङ्गन्यासः॥ ॐ वां ईशानाय नमः अंगु०॥ ॐ वीं तत्पुरूष नमः तर्ज०॥ ॐ बूं अघोराय नमः मध्य०॥ ॐ वैं वामदेवाय नमः अना०॥ ॐ बौं सद्योजाताय नमः कनि०॥ ॐ वः रौद्राय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ एवमेव हृदयादिः॥ ध्यानं तु कामनाविषयेण ध्यात्वा सात्त्विकराजसतामसञ्च॥

सहस्त्रनामम्

ॐ वं वं वं वटुको वीरो वां वां वां वटुकस्तथा।
वीं वीं वीं वटुको वीरो वूं वूं वूं वटुकस्तथा॥३४॥
वैं वैं वैं वटुकः क्रोधो वौं वौं वौं वटुकस्तथा।
वः वः वः वटुको रावो व्रः व्रः व्रः शब्दतत्परः॥३५॥
वं यतित विं बध्वारो वं ह्रीं वं प्रीतिकारकः।
वज्रायुधो वज्रहस्तो वज्रायुधभयावहः॥३६॥
वज्रायुधाङ्गसम्पृष्टो वज्रायुधपदः सदा।
वज्रायुधस्तुतो वज्री बुधरावरः स्मृतः॥३७॥
वज्रायुधः सुखकर्ो वज्रायुधसुखप्रदः।
वज्रायुधो वज्रश्रेष्ठो वज्रायुधगतिः स्मृतः॥३८॥

वज्रायुधः प्राणत्रातो वज्रायुधसुखप्रदः।
वज्रायुधो वज्रश्रेष्ठो वज्रायुधगतिः स्मृतः॥३९॥
वज्रायुधः प्राणत्रातो वज्रायुधपदः स्मृतः।
वज्रहतो वज्रपादो वज्रदंष्ट्राग्रजिह्वकः॥३९॥
वज्रमुखो वज्रकुलो वज्रस्थापिङ्गलः स्मृतः।
वज्रायुधप्रियसखो वज्रायुधो वज्रप्रीतिहो॥४०॥
वज्रायुधप्राणित्रातो वज्रायुधवरप्रदः।
वज्रायुधा शमनो वज्रायुधविधारकः॥४१॥
वज्रायुधप्राणदाता वज्रायुधपरायणः।
वज्रविज्ञानसंभावो वज्रसेव्यो वरप्रदः॥४२॥
वज्रसंव्यप्रियः प्राणो वज्रसेव्य यः सदा।
वज्रप्रियो वज्रमयो वज्रतेजप्रवर्त्तकः॥४३॥
वज्रनिधिर्वज्रप्राणो वज्रसेव्यवरप्रदः।
वज्राधीशो वज्रधरो बन्धुपुष्पाजवोधवः॥४४॥
वन्धुपुष्प प्रतीकाशो वधुद्रुमसमागमः।
वन्धुपुष्पश्च वन्धुम्नः वन्धुपुष्पजयोद्भवः॥४५॥
वन्धुपुष्पप्रपूजश्च वन्धुपुष्पस्वरूपकः।
वन्धुपुष्पप्रतीकाशो वन्धूकारुण्यविग्रहः॥४६॥
वन्धूकारुणनीलो भूः वन्धूकपुष्पवासिनः।
वन्धूककुसुमस्निग्धो वन्धूकसुमनोत्सवः॥४७॥
वन्धूकपुष्पकिरणो वन्धूकपुष्पपालकः।
वन्धूकसुमनोध्येयो वन्धूकसुमनप्रभः॥४८॥
वन्धूकसुमनज्ञाता वन्धूककुसुमाधरः।
वन्धूककुसुमोल्लासो वन्धूकपुष्पवार्षिर्णः॥४९॥
वन्धूककुसुमानन्दो वन्धूकवनवासिनः।
वन्धूककुसुमोत्साहो वन्धूकपुष्परूपकः॥५०॥
वन्धूककुसुमोन्मादो वन्धूकपुष्पधारिणः।
वन्धूककुसुमारोधो वन्धूककुसुमोद्भवः॥५१॥
वन्धूककुसुमप्राणो वन्धूककुसुमार्चितः।
वन्धूकपुष्पवटिको वन्धूकपुष्पतर्पितः॥५२॥
वन्धूकपुष्पमुकुटो वन्धूककुसुमप्रियः।
वन्धृककुसुमाद्भव्यो वन्धूकपुष्पविग्रहः॥५३॥

वन्धूककुसुमप्रख्यो वन्धूककुसुमात्मकः।
वन्धूककुसुमप्राज्ञो वन्धूकपुष्पवर्त्तिकः॥५४॥
वन्धूकपुष्पसर्वस्वो वन्धूकपट्टपूरकः।
वन्धूकपदसर्वस्वो वन्धूकपट्टपूरकः॥५५॥
वकुलपुष्पसम्पूज्यो वकुलपुष्पहोमदः।
वकुलपुष्पमध्यस्थो वकुलफलभोजनः॥५६॥
वकुलकाननन्तस्थो वकुलावालपाशकः।
वकुलाचलराध्यश्च वकुलामुखिपुत्रकः॥५७॥
वकुलकुसुमप्रीतो वकुलकुसुमार्चितः।
वकुलपुष्पनिलयो वकुलपुष्परासिनः॥५८॥
वकुलकुसुमज्ञातो वकुलपुष्पधारकः।
वकुलकुसुमोल्लसो वकुलपुष्पवर्तिनः॥५९॥
वकुलकुसुमानन्दो वकुलवनवासिनः।
वकुलकुसुमोत्साहो वकुलपुष्परूपकः॥६०॥
वकुलकुसुमोन्मादो वकुलपुष्पधारकः।
वकुलकुसुमाराध्यो वकुलकुसुमोद्भवः॥६१॥
वकुलकुसुमप्राणो वकुलकुसुमार्चितः।
वकुलपुष्पखचितो वकुलपुष्पतर्पितः॥५२॥
वकुलपुष्पमुकुटो वकुलकुसुमप्रियः।
वकुलकुसुमोदर्पो वकुलपुष्पविग्रहः॥६३॥
वकुलपुष्पमाली च वकुलकुसुमात्मकः।
वकुलकुसुमप्राज्ञो वकुलपुष्पवर्त्तकः॥६४॥
वकुलपुष्पधारी च वकुलनिन्दकान्तकः।
वकुलप्रदसर्वस्वो वदरीफलभोजनः॥६५॥
वद्रिकाश्रमवासश्च वद्रिकाचलपुण्ड्रकः।
वसुदो वसुधाराध्या वसुदानपरायणः॥६६॥
वहुनेत्रो वहुलास्यो वहुहस्तो वहुपदः।
वह्वाननो वहुकर्णो वहुपापविनाशनः॥६७॥
वल्लभो वल्लभापीतो वल्लभावहुरूपकः।
वहुगुणश्च सर्वोधो वहुगुणपरायणः॥६८॥
वहुगुणश्च सम्प्रीतो वहुगुणप्रकाशकः।
वहुगुणसुसपूज्यो वहुगुणस्वरूपकः॥६९॥

वहुगुणसुसंहृष्टो वहुगुणप्रधारणः।
वकारवर्णसर्वगो वकाररूपधारणः॥७०॥
वकारसहितभूषाढ्यो वकारमुकुटस्थितः।
वकारहृदयाराध्यो वकाराभरणाकृतः॥७१॥
वकारण वधारुष्टो वंबीजतोषितः सदा।
वारुणीजयसन्तुष्टो वारूणीपानसुन्दरः॥७२॥
वारुणीचुम्बनानन्दो वारुणीमण्डले स्थितः।
वारुणीगतगम्यश्च वारुणीप्रेमचन्द्रिकः॥७३॥
वारुणीमुखमध्यस्थो वारुणीगणमण्डितः।
वारुणीमण्डलानन्तो वारुणीकुण्डरूपिणः॥७४॥
वारुणीमनसाराध्यो वारुणीतत्त्वतः प्रियः।
वारुणीमोदरसिको वारुणीमोदवासिनः॥७५॥
वारुणीभोगरसिको वारुणीकुचमण्डनः।
वारुणीयोगमार्गस्थो वारुणीयोगरूपिणः॥७६॥
वारुणीपूजकः प्राणो वारुणीनिन्दकान्तकः।
वारुणीप्राणसन्मान्यो वारुणीदृष्टिगोचरः॥७७॥
वारुणीकेशसम्मार्जो वारुणीनाभिमध्यगः।
वारुणीमोदसम्प्रीतो वारुणीमोदरूपकः॥७८॥
वारुणीहास्यसम्प्रीतो वारुणीध्यानतत्परः।
वारुणीवाक्यरसिको वारुणीकुण्डपूजकः॥७९॥
वारुणीपानन्दो भूर्वारुणीरतितत्परः।
वारुणीताण्डवानन्दनायको वारुणार्णवः॥८०॥
वारुणीकुण्डमध्यस्थो वारुणीकुण्डसुन्दरः।
वारुणीशास्त्रसम्प्रीतो वारुणीम्ध्यसुन्दरः॥८१॥
वारुणीभोगरसिको वारुणीमृतदीर्घिकः।
वारुणीसौख्यदः प्रीतो वारुणीचन्द्रसुन्दरः॥८२॥
विल्वो विल्वकरो विल्वो विल्वपत्रपूजकः।
विल्ववृक्षसमागम्यो विल्वपत्रस्थबिल्वभूः॥८३॥
बिल्वपुष्पप्रियः प्राणो विल्वपुष्पप्रमोदकः।
विल्वपुष्पप्रपूज्योथ विल्वपुष्पस्वरूपकः॥८४॥
विल्वपत्रमहोदश्च विल्वफलप्रभोजनः।
विल्वप्रियोविल्वमयो विल्ववृक्षनिवासिनः॥८५॥

विल्ववृद्धिकरो विल्वप्रियो विल्वनिषेविनः।
विल्वपत्रस्थसर्वाङ्गगो विल्ववृक्षप्रपालकः॥८६॥
विभावसुसमंतेजो विभावसुसमागमः।
विभावसुर्मेदगतिर्विभाव सुखिवामतिः॥८७॥
विभावसुप्रपूज्यश्च विभावसुप्रपूजकः।
विम्बाधरो विम्बरूपो विश्वविद्याविनोदनः॥८८॥
विगम्या वेदकर्त्ता च विधिकर्त्ता विधिप्रभः।
विधिविधाता विन्दो विधिगम्यो विधिवरः॥८९॥
विधिसपत्रमूर्तिश्च विधिशापविमोचकः।
विधिशास्त्रो विधिप्रज्ञो विदुषो गुरुदेवता॥९०॥
विक्रधिक्रमसञ्चारो विधिशास्त्रविचारणः।
विविधिक्रमसञ्चारो विधिदृक्विविधिक्रमः॥९१॥
विधुपुत्रप्रियसखो विधिपुत्रभयवहः।
विधिपुत्रपरित्राता विधिपुत्रवरप्रदः॥९२॥
विधुविज्ञानविभवो विधुशीर्षेषु शोभनः।
विश्वामित्रसुसम्पन्नो विश्वामित्रवरप्रदः॥९३॥
विश्वमित्रमूर्तिधारी विश्वामित्रस्वरूपकः।
विश्वामित्रगुरुश्रेष्ठो विश्वामित्रप्रभञ्जकः॥९४॥
विश्वामित्रयोगप्रियो विश्वामित्रनुतिप्रियः।
विश्वामित्रपरिज्ञातो विश्वमित्रयोगक्षमः॥९५॥
विश्वमित्रार्तिशमनो विश्वामित्रार्तिनाशनः।
विषदो विषदाचारो विषपानेसदारतः॥९६॥
विमलो विमलाङ्गश्च विमलाचारतत्परः।
विश्वेश्वरो विश्वराजा विघ्नसङ्घविनाशनः॥९७॥
विनायको विघ्नराजो विघ्नविच्छेदनाशनः।
विम्बाधरो विश्वरुचिर्विश्वद्याविनोदनः॥९८॥
वीणाधरो वीणानाथो वीणावाद्यपरायणः।
वीरमुख्यो वीरप्रियो वीरस्थायोगणः सदा॥९९॥
वीरमन्त्रो वीरश्रेष्ठो वीरस्त्रीगमनोपरः।
बुद्धिबुद्ध्याकृतिधरो बुद्धिशावी बुधप्रियः॥१००॥
बुद्धिपूर्णो बुद्धिधरो बुद्धिभाबुद्धिदूरगः।
बुद्धिर्बुद्धवपुर्वृद्धिः शरीरो बुद्धिमण्डतः॥१०१॥

बुद्धिप्रभुश्च बुद्धिभूर्बुद्धिकृतचराचरः।
बुद्धिप्रणवसन्तुष्टो बुद्धिहीनपराङ्मुखः॥१०२॥
बुद्धिभृदबुद्धिहृत्कर्ता बुद्धिश्रेष्ठो बुद्धिप्रभुः।
बुधेशो बुधसन्तुष्टो बुधैकसदनं सदा॥१०३॥
बुद्धिमांश्चैव बुद्धिश्च बुद्धिमान्बुद्धिभाजनः।
बुद्धिप्रणीतपादाग्रो बुद्धिगीतबुधौजसः॥१०४॥
बुद्धिमान्बुद्धिसम्पन्नो बुद्ध्या नन्दितमानसः।
बुद्धिमार्गप्रणेता च बुद्धिसञ्चार चातुरः॥१०५॥
बुद्धिगौणो बुद्धयाधारो बुद्धिसम्बुद्धिचेतनः।
बुद्धिरुद्बुद्धिहृन्नित्यं बुद्धायाग्रोबुद्धिपारदः॥१०६॥
बुद्धि वृद्धिप्रचारोऽभूद्बुद्धयाबुद्धिविवेकवित्।
बुद्धयाकरो बुद्धिकरो बुद्धिप्राणविवर्द्धनः॥१०७॥
बुद्धिगूब्धरो बुद्धिर्बुद्धिसञ्चारचेष्टितः।
बुद्धिदक्षिणताहार्दो बुद्धिलक्षणतत्त्ववित्॥१०८॥
बुद्धयाचारी बुद्धिहारी बुद्धिसुखप्रदायकः।
बुद्धिसंस्कृतसञ्चारी बुद्धितत्वविवेकवित्॥१०९॥
बुद्धिगर्वधरो बुद्धिर्बुद्धिगर्वपराभवः।
बुद्धयधीनो बुद्धितमो बुद्धिलक्षणलालसः॥११०॥
बुद्धिगौरवदाता च बुद्धिदाताबुद्धिप्रदः।
बुध्योक्तबुद्धिहर्ता च बुद्धिश्भूबुद्धिवर्द्धनः॥१११॥
बुद्धिरुद्योगकर्ता च बुद्धिदाताबुद्ध्यूक्तकरः।
बुद्ध्याचारो बौद्धरूपो बौद्धावतारधृक् सदा॥११२॥
बू बूं बः बीजस्वरूपो बूं क्षूं हूं मुकुटेश्वरः।
बूं क्लीं हूं चण्ड कर्ता च लः बूं क्लीं हुं फट् स्वाहा॥११३॥
वेदज्ञो वेदकर्ता च वेदपाठविशारदः।
वेदप्रियो वेदमयो वेदविद्याविधारकः॥११४॥
वेदपाठकरो वेदव्याख्यानकरणक्षमः।
वेदाङ्गो वेदरूपश्च वेदमन्त्रस्वरूवान्॥११५॥
वेदवन्द्यो वेदप्राणो वेदपाठो विदाश्रयः।
वेदान्तगीतचरितो वेदगीतप्रवाहकः॥११६॥
वेदधर्मसम्पन्नोथ वेदधर्मनिकृन्तनः।
वैद्यो वैद्यपतिर्वैद्यो वैद्यनायकसुन्दरः॥११७॥

वैद्यराजोथ वैद्येशो वैद्यराजनमस्कृतः।
वैद्यप्रियो वैद्यप्रीतिर्वै छात्राणगमोध्यतः॥११८॥
वैद्यनीतिर्गुणो वैद्यो वैद्यानां प्रतिपालकः।
वैद्यहर्ता वैद्यकरो वैद्यो वैद्यपतिप्रियः॥११९॥
वैद्यराजशिरसिजो वैद्यराजशिषप्रभुः।
वैद्यराजार्चितपदो वैद्यराजनमस्कृतः॥१२०॥
वैद्यराजो वैद्यवेशो वैद्यराजभयावहः।
बों बों बः बीजरूपश्च बौं बौं बौं बीजरूपकः॥१२१॥
वैदेहीवैनको वैद्यो वैद्याचारप्रधारकः।
वैश्याचारो वैश्यश्रेष्ठो वैश्यानां कुलदेवता॥१२२॥
वीरभद्रोथ वीरेशो वीरेशो वीरेद्रो वन्दितपदः।
वीर वन्द्यो वीरप्राणो वीरबाहुर्वीराश्रयः॥१२३॥
वीरदैत्यप्राणहारी वीरदैत्यापहारकः।
वीरार्णवहरो वीरो वीराणां प्राणवल्लभः॥१२४॥
वीरधर्म सदाराध्यो वीरधर्म निकेतनः।
वीरदैत्य प्राणत्राता वीरदैत्यबलप्रदः॥१२५॥
वीरगर्जितसम्पूर्णो वीरब्रह्माण्डगर्जितः।
वीरपुत्रपरित्राता वीरपुत्रवरप्रदः॥१२६॥
वीरपुत्रप्रियसखो वीरपुत्रभयापहः।
वीरपुत्राभिशमनो वीरपुत्राहिनाशकः॥१२७॥
वीरपुत्रप्राणत्राता वीरभक्तिपरायणः।
वीरविज्ञानविभवो वीरबाहुवरप्रदः॥१२८॥
वीरबाहुस्तुतो वीरोबहुशः शापहारकः।
वीरबाहुप्रियो वीरो बहुगौरवर्द्धनः॥१२९॥
वीरबाहुपरित्राता वीरबाहुसुखप्रदः।
विश्वभुग्विश्वश्रेष्ठोथ विश्वक्षेत्रकरस्तथा॥१३०॥
बालार्कवर्णो बालोथ बालार्कतेजसः परः।
बालो बालप्रियो बालो बालक्रीडापरायणः॥१३१॥
वामनो वाग्भवाकारो वाचालो वाक्पतिप्रियः।
वाचमगोचरो वान्तो वीणावेणुधरोपरः॥१३२॥
वाग्भवो वाक्पतिः श्रेष्ठो वाग्देवीप्रियनन्दनः।
वाग्देविहृदयानन्दो वाग्देवीगर्भसम्भवः॥१३३॥

वाक्सिद्धो वाक्पतिप्राणो वाग्ध्रदो वाक्स्वरूपकः।
वाणप्रचारो बाणेशो वाणसारविवेकवित्।।१३४।।
वाणभूर्वाणसम्पन्नो वाणनन्दितमानसः।
वाणसन्धानचतुरो वाणसंशयसुन्दरः।।१३५।।
वाण्यष्ठीवाणधरो वाण्संचिसचेतसः।
वाणरुद्यानभृन्नित्यं वाणो वाणपादकः।।१३६।।
वाणाकारौ वाणकरो वाणप्रियविवर्द्धनः।
वाणगूढधरो वाणवाधसन्धानचेष्टितः।।१३७।।
वाणदो वाणसौहार्दो वाणलाञ्छनतत्त्ववित्।
वाणीसंस्कृतसञ्चारो वाणीतत्वविवेचकः।।१३८।।
वरदो वरदः स्वस्थो वरदोभयदायकः।
वरदद्रणयः पाहुर्वसिष्ठाश्रमसेविनः।।१३९।।
वसिष्ठो वसिष्ठाराद्ध्यो वसिष्ठानन्ददायकः।।
वसिष्ठाभीष्टवरदो वसिष्ठाभयदायकः।।१४०।।
वसिष्ठप्राणवशको वसिष्ठगणधारकः।
वामनो वल्लभो वन्द्यो वनमाला विभूषणः।।१४१।।
वनस्थो वनजो वेद्यो वनराजो वनाश्रयः।
वनचरो वनाधीशो वानरीवनसेवितः।।१४२।।
वानरो वानराधीशो वानरशत्रुनाशनः।
वानप्रस्थाश्रमकृतो वानप्रस्थयोगप्रदः।।१४३।।
ब्रह्मयोनिर्बृहद्योनि विश्वयोनिर्विवेकवान्।
ब्रह्मविद्ब्रह्मभावश्च ब्रह्मर्षिब्रह्मणप्रियः।।१४४।।
ब्रह्मदो ब्रह्मदो ब्रह्मणात्मा च ब्रह्मविद्याप्रकाश कः।
ब्रह्मचारी ब्रह्मवेता ब्रह्मणो ब्राह्मणोत्तमः।।१४५।।
ब्रह्मपुत्रविधेयात्मा ब्रह्मसूत्रार्थनिर्णयः।
ब्रह्मगौरवदाता च ब्रह्माण्डो ब्रह्माण्डेश्वरः।।१४६।।
व्योमगम्यो व्योमेशानां व्योमेशभवसुन्दरः।
व्योमगम्यो व्योमधारो ब्रह्मगीतप्रचारकः।।१४७।।
व्योमब्रह्मोपगीतश्च व्योमज्ञो व्योमपारदः।
व्योमचरो व्योमरूपो व्योमकेशेति शोभनः।।१४८।।
व्यालाधिपो व्यालेशानो व्यालस्थो व्यालगः सदा।
व्यालमुखो व्यालकर्णो व्यालायतनशोभनः।।१४९।।

व्यालशायी व्यालश्रेष्ठो व्याघ्राजिनप्रधारकः।
वृषाकपी वृषेयात्मा वृषारूढो वृषोदरः॥१५०॥
वृषहा वृषभश्रेष्ठो वृषपर्वा वृषोदरः।
वृषभे वृषेशानो वृषगतिबृहच्छिरवः॥१५१॥
ब्रह्मधर्मप्रचारोथ बृहच्छत्रप्रपाठकः।
वृहद्गर्तिवृहत्कर्णो वृहद्दन्तालिशोभनः॥१५२॥
विश्वार्थविश्वकर्मा च विश्वेषां परमो हितः।
विश्वाश्रयो विश्वव्यापी विश्वधुर्विश्वक्रर्तुः॥१५३॥
विश्वकर्ता विश्वभर्ता विश्वेशो विश्वभूषणः।
विभावसुश्च सम्पन्नो विश्वावसुसमागमः॥१५४॥
विश्वावसुपूज्यश्च विश्वावसुस्वरूपकः।
विन्ध्याचलनिवासश्च विन्ध्याचलप्रकारणः॥१५५॥
विद्रुमवर्णो विद्रुमः विद्रुमायासरासरः।
वह्नीन्द्रो बीजराजेशो बों बों बों बौद्धकान्तकः॥१५६॥
वां बीं बू बीजवर्णाद्यो बूं हुं वषट् स्वाहा नमः।
वंकारभैरवोराध्यो वकाराक्षरशोभनः॥१५७॥
वं वं कूकूटसंसेव्यो वं वं कपालिकेशरः।
वं वं ताण्डवचण्डाख्यो वं वं भूतेशभैरवः॥१५८॥
वं ह्रं स्वाहा घोररूपं वं ह्रू क्लं कामदायकः।
वं ह्रीं हां कालांतकश्चैव वं ह्रं लं तानवर्द्धन्॥१५९॥
वं ह्रीं ह्रुं चण्ड निर्नाशो वं ह्रीं ह्रुं वीरभैरवः।
वौषट्रुपोथ विश्वारौ वं ह्रं ह्रुं विश्वरूपकः॥१६०॥
बुं क्लु हुं उठः रूपोथ वुं क्लुं ह्रुं अथ फट् वं नमः।
वुं ह्रुं स्वयं भूःभूषाढ्यो बुं ह्रीं ह्रुं लिङ्गरूपकः॥१६१॥
बुं भैरव बुं योगीशो वुं वुं मानव सुन्दरः।
वुं ह्रुं विज्ञानभैरवो बुं ह्रुं ह्रीममृतानन्द॥१६२॥
वुं ह्रुं ह्रीं सिद्धभैरवः असिताङ्गभैरवः।
वुं ह्रीं ह्रुं रुरुभैरवः बु ह्रीं ह्रुं चण्डभैरवः॥१६३॥
वुं ह्रीं ह्रुं क्रोधभैरवो वुं ह्रुं उन्मत्तभैरवः।
वुं ह्रुं अघोरभैरवः वुं ह्रीं ह्रुं भीतिभैरवः॥१६४॥
वु ह्रुं संहतिभैरवः वुं ह्रुं संहारभैरवः।
वुं ह्रुं अघोरभैरवः वु ह्रुं विमलभैरवः॥१६५॥

वुं ह्रीं हुं ज्ञानदश्चैव वुं ह्रीं हुं महामोदकः।
वुं ह्रीं हुं वह्निभैरवः वुं वुं महारिक्तंभैरवः॥१६६॥
वुं हुं महायोगनरः वुं महामोहनाशनः।
वुं ह्रीं हुं योगकिन्नरः वुं हुं कामविनाशकः॥१६७॥
वुं ह्रीं ह्रां कामविदाढ्यो वुं ह्रीं हुं मन्मथेश्वरः।
वुं हुं धनपेश्वरः वुं हं वैकुण्ठनायकः॥१६८॥
वुं ह्रीं हुं फट्स्वरूपोथ वुं ह्रीं हुं कालफट् तथा।
वुं हुं ह्रीं फट् शीर्षोथ वुं हुं फट्नेत्रत्राय वौषट्॥१६९॥
वुं हुं धूमेशभैरवो वुं हुं नटनागेश्वरः।
वुं हुं फट् भवानीश्वरो वुं हुं फट्घोरभैरवः॥१७०॥
वुं ह्रीं हुं घोसवाणाख्यो वुं ह्रीं हुं वादिभैरवः।
वुं ह्रीं हुं दिग्भैरवोथ वुं ह्रीं हं घण्टाभैरवः॥१७१॥
वुं ह्रीं हुं नमनानंदो वुं ह्रीं हुं नेत्रपदेश्वरः।
वुं हुं त्रिपुरभैरवः वुं हुं त्रैलोक्यभैरवः॥१७२॥
वुं ह्रीं हुं स्तंभनेश्वरो वुं ह्रीं हुं गुणसागरः।
वुं ह्रीं हुं शक्तिदायिन्यो वुं ह्रीं हुं बीजगर्भभृत्॥१७३॥
वुं ह्रीं श्रीकण्ठेश्वरो वुं ह्रीं हुं श्रीकण्ठेश्वरः।
वुं ह्रीं हुं सूत्रभैरवः वुं ह्रीं हुं रक्तभैरवः॥१७४॥
वुं ह्रीं हुं त्रिमूर्तीश्वरो वुं ह्रीं हुं अर्थेशभैरवः।
वुं हुं सद्योजातेश्वरो वुं हुं अनुग्रहेश्वरः॥१७५॥
वुं ह्रीं हुं अक्रूरेश्वरो वुं ह्रीं हुं चंडिकेश्वरः।
बुं हुं पञ्चत्वकेश्वरो बु हुं शिवोत्तमेश्वरः॥१७६॥
वुं ह्रीं हुं दारुकेश्वरो वु हुं सकनेत्रेश्वरः।
बु ह्रीं हुं चतुराननेश्वरो बुं ह्रीं हुं लाङ्गलीश्वरः॥१७७॥
हुं ह्रीं अर्घनारीश्वरो बुं हं उमाकान्तेश्वरः।
बु ह्रीं हुं त्रिमूर्तीश्वरो बुं ह्रीं हुं फट्गणेश्वरः॥१७८॥
बु हुं मयो बहुगुणो बु ह्रीं हुं पाठतत्परः।
ह्रीँ वुं हुं फट् ह्रीं बु हुं फट् ह्रीं वुं हुं फट् ह्रीं बुं हुं फट्॥१७९॥
बुं हुं फट् बु हुं फट् स्वाहा महाभैरवरूपकः।
बुं हुं फट् हुं फट् बुं हुं फट् महात्मा वटुकभैरवः॥१८०॥
वौषट् बुं ॐ जपसंतुष्टोथ वं ॐ जपपरायणः।
बुं हुं फट् सिद्धिविद्या च बु हुं फट् लक्ष्मीश्वरः॥१८१॥

बु हुं फट् वसुधामीनो बु हुं फट् सुराधिपाहनः।
बुं हुं फट् शारदापुत्रो बुं हुं फट् माहेश्वरीपुत्रः॥१८२॥
बुं हुं राक्षसीपुत्रो बुं हुं फट् वरेशीपुत्रकः।
वुं हुं फट् यक्षिणीपुत्रो बु हुं फट् कुलेशीपुत्रः॥१८३॥
बु हुं फट् ज्ञानपुत्रो बुं हुं फट् शाकिनी पुत्रः।
बुं ह्रीं तीक्ष्णदंष्टापुत्रो बु ह्रीं तीख्णजिह्वापुत्रः॥१८४॥
बु नं फट् हाकिनीपुत्रो बु हुं फट् शाकिनी पुत्रः।
बुं हुं फट् लाकिनीपुत्रः बुं हुं फट् काकिनीपुत्रः॥१८५॥
बुं हुं फट् मोहिनीपुत्रो बुं हुं फट् ठागिनीपुत्रः।
बुं हुं फट् स्तंभिनीपुत्रो बु हुं फट् जृंभिणीपुत्रः॥१८६॥
बु हुं फट् उर्वशीपुत्रो बुं हुं फट् मेनकापुत्रः।
बुं हुं फट् रम्भापुत्रो बुं हुं फट् घृताचीपुत्रः॥१८७॥
बु हुं ऊर्ध्वमुखीपुत्रो बुं हुं उर्ध्वकेशीपुत्रः।
बुं हुं फट् तुडिपुत्रोथ बु हुं फट् लोलाक्षीपुत्रः॥१८८॥
बुं हुं ललजिह्वापुत्रो बुं हुं फट् रक्ताक्षापुत्रः।
बुं हुं फट् गंदिनीपुत्रो बुं हुं फट् डंशिनीपुत्रः॥१८९॥
बुं हुं फट् दंडिनीपुत्रो बुं हुं फट् ध्वजिनीपुत्रः।
बुं फट् खड्गिनीपुत्रो बु हुं फट् शङ्खिनी पुत्रः॥१९०॥
बुं हुं फट् कम्पिनीपुत्रो बु हुं फट् हाकिनीपुत्रः।
बुं ह्रीं फट् तारिणीपुत्रो बु हुं फट् पुरायिपुत्रः॥१९१॥
बुं हुं फट् कालीपुत्रो बुं हुं फट् कपालीपुत्रः।
बुं हुं फट् तारिणीपुत्रो बुं हुं फट् त्रिपुरापुत्रः॥१९२॥
बुं फट् षोडशीपुत्रो बुं नं फट् भुवनेशीपुत्रः।
बुं हुं फट् अन्वेशीपुत्रो बु हुं फट् धूमावतीपुत्रः॥१९३॥
बुं हुं फट् बगलापुत्रः बुं हुं फट् मातङ्गीपुत्रः।
बुं हुं फट् अचलापुत्रो बु हुं फट् त्रिकुटापुत्रः॥१९४॥
बुं हुं फट् चञ्चलापुत्रो बुं हुं फट् भूधरापुत्रः।
बु हुं फट् कल्मषापुत्रो बुं हुं फट् कल्पासिपुत्रः॥१९५॥
बुं हुं फट् भोगदापुत्रो बुं हुं फट् भाविकापुत्रः।
बु हुं फट् विजयापुत्रो बु हुं फट् कुरूपापुत्रः॥१९६॥
बु हुं फट् ईश्वरीपुत्रो बु हुं फट्रेवतीपुत्रः।
बुं हुं फट् त्रिनेत्रापुत्रो बुं हुं सुरूपापुत्रः॥१९७॥

ब्रुं ह्रुं फट् स्वरूपापुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् त्रिपुरापुत्रः।
ब्रुं ह्रुं फट् चर्चिकापुत्रो ब्रु ह्रुं फट् अविकापुत्रः॥१९८॥
ब्रुं ह्रुं फट् वैन्दविपुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् कौशिकी पुत्रः।
ब्रुं ह्रुं फट् वाराहीपुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् माहेश्वरीपुत्रः॥१९९॥
ब्रुं ह्रुं फट् भद्रापुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् धृतीपुत्रः।
ब्रुं ह्रुं फट् शान्तिपुत्रोथ ब्रुं ह्रीं ह्रुं फट् शिवापुत्रः॥२००॥
ब्रुं ह्रुं फट् क्षमापुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् सिद्धिपुत्रकः।
ब्रुं ह्रुं फट् तुष्टिपुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् सिद्धिपुत्रकः॥२०१॥
ब्रुं ह्रुं फट् रतिपुत्रोथ ब्रुं ह्रीं ह्रुं फट् श्रीपुत्रकः।
ब्रुं ह्रुं फट् दीप्तापुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् कान्तिपुत्रकः॥२०२॥
ब्रुं ह्रुं ह्रुं फट् लक्ष्मीपुत्रो ब्रुं ह्रुं ह्रुं फट् श्रीपुत्रकः।
ब्रुं ह्रुं ह्रुं फट् रतिपुत्रोथ ब्रुं ह्रुं ह्रुं फट् ब्रह्मपुत्रकः॥२०३॥
ब्रुं ह्रुं फट् कर्दमापुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् आर्यपुत्रकः।
ब्रुं ह्रुं फट् फट् सतीपुत्रोथ ब्रुं ह्रुं फट् अरुन्धतिपुत्रः॥२०४॥
ब्रुं ह्रुं फट् गङ्गापुत्रोथ ब्रुं ह्रुं फट् गोमतीपुत्रः।
ब्रुं ह्रुं ह्रुं फट् रेवापुत्रोथ ब्रुं ह्रुं ह्रुं फट् यमुनापुत्रः॥२०५॥
ब्रुं ह्रुं फट् भद्रापुत्रोथ ब्रुं फट् आत्रेयीपुत्रकः।
ब्रुं ह्रुं फट् कौशिकी पुत्रो ब्रुं ह्रुं फट् भोगवतीसुतः॥२०६॥
ब्रुं ह्रुं बहुदापुत्रश्च ब्रुं ह्रुं कर्मनाशापुत्रकः।
ब्रुं ह्रुं कूष्माण्डीपुत्रश्च ब्रुं ह्रुं ह्रीं राक्षसीपुत्रः॥२०७॥
ब्रुं ह्रुं दानवीपुत्रश्च ब्रु ह्रुं पिशाचिपुत्रस्तथा।
वह्निगर्भो वह्निनेत्रो वह्नितेजगतीति च॥२०८॥
वह्निदृष्टिर्वह्निशान्तो वह्निरूपश्च वह्निभूः।
वायुगर्भो वायुगतिर्वायुवाहनतत्परः॥२०९॥
बाधाकरो बीजरूपो बाधा काशपरायणः।
वायुविक्रमसञ्चारी वायुदुर्गतिविक्रमः॥२१०॥
वह्नि ह्रु फट् विघ्नेश्वरो वह्नि ह्रुं फट् विप्रोत्तमः।
बं बं एकदन्तभैरवो बं बं विघ्नकृद्भैरवः॥२११॥
वं मोदकभैरवोथ वं प्रमोदभैरवस्तथा।
वं दुर्मुखभैरवो देवो वं सुमुखभैरवेशः॥२१२॥
वं प्रमोदभैरवोथ वं शोभनभैरवस्तथा।
वं उन्मत्तभैरवोथ वं मत्तभैरवस्तथा॥२१३॥

वं खरमुखभैरवो वै वं लम्बोदरभैरवः।
वं वं वं भोगभैरवो वं मुण्डभैरवस्तथा॥२१४॥
वक्रतुण्डभैरवो वं वामदेवभैरवः।
वं दुर्गभैरवश्चैव वं मेघनादभैरवः॥२१५॥
वं सेनाभैरवश्चैव वं भक्षप्रियभैरवः।
वं अरुणभैरवोथ वं श्वेतभैरवस्तथा॥२१६॥
वं पाण्डुभैरवश्चैव वं नीतिभैरवस्तथा।
वं शामभैरवश्चैव वं हरिद्राख्यभैरवः॥२१७॥
वं उच्छिष्टभैरवोथ वं कृष्णभैरवस्तथा।
वैकल्यकलितश्चैव वैकल्यविधिदर्शिनः॥२१८॥
वैकुण्ठलोकमङ्गलो वैकुण्ठधामनायकः।
वैकुण्ठधामसन्मान्यो वैकुण्ठधामपरायणः॥२१९॥
वैणमानससञ्चारो वैणमानसमोहनः।
वणसम्भागगमनो वैणकुण्ठनिमज्जनः॥२२०॥
वैणचक्रसमाकीर्णोवैष्णवीजनः परः।
वैणचक्रो वैणवोथ वैणचक्रनिवारणः॥२२१॥
वैणावणे वैणधर्मा वैणकर्मपरायणः।
वैणसन्तानसम्प्रीतो वैणसन्तानदायकः॥२२२॥
वैष्णाकर्षणदो वैष्णतडिवानन्द दायिनः।
वैष्णगणरतो वैष्णो वैष्णमालाविभूषणः॥२२३॥
वैणसंलापसन्तुष्टो वैष्णपश्चान्नभोजनः।
वैष्णवो वैष्णवाचारो वैष्णवाचारतत्परः॥२२४॥
वषट् स्वाहा स्वरूपोथ नामसहस्त्रमुत्तमम्।
सारूप्यनामसाहस्त्रं भैरवस्य प्रकाशितम्॥२२५॥
देवीशत्रुगणाः सर्वे गच्छन्ति यममन्दिरे।
एकरात्रिप्रयोगेण सप्ताहाद्रिपुनाशनम्॥२२६॥
ग्रहणे राशिनः स्थित्वा य एकान्त महात्मनः।
बिल्वस्य मूलेप्रजपेदयुतं श्रद्धयायुतः॥२२७॥
तस्य शंत्रुगणेन्योन्यं जायते कलहो भृशम्।
श्मशाने तु समागत्य दिक्पालबलिमाहरेत्॥२२८॥
तत्कृष्णान्नदिसम्मिश्रं निर्भयः साधकोत्तमः।
भवेयुस्तत्क्षणादेव सिद्धाविद्याश्चतुर्दश॥२२९॥

स पश्येद्देवतां तत्र वरदानकृतोद्यमाम्।
यद्वदेत्प्रथमं देवी तत्र भूमौ समाहितः॥२३०॥
द्वितीयवाक्योपि तथा यत्नवान्प्रयतो भवेत्।
अथ सुश्लक्ष्णया वाचा प्रार्थयेन्मनसः फलम्॥२३१॥
ततोन्यं परमं वक्ष्ये विधिं लोकैकहेतवे।
साद्यकश्चाति रमणां वाञ्छयेदापि यां स्त्रियम्॥२३२॥
स्थित्वा कनकमूलेपि व्याघ्रचर्माणि देशिकः।
रक्ताम्बरपरीधानो रक्तमाल्यानुलेपनः॥२३३॥
पूजयित्वा महेशानं कनकपुष्पेण वार्चितम्।
यन्नाम्ना प्रयतो मन्त्रं प्रजपेच्च विचक्षणः॥२३४॥
क्षणार्द्धे कर्षयेन्नारीमुर्वशीमपि मानवः।
अनेनैव विधानेन द्रव्यस्याकृष्टिरुत्तमा॥२३५॥
कुजेष्टम्यां वटस्येह मूले स्थित्वा विचक्षणः।
रात्रौ निर्भयचित्तस्तु प्रजपेदयुतं तथा॥२३६॥
ध्यात्वा देवं वातरूपं वाचा बन्धनमुत्तमम्।
संजापयाष्टोत्तशतं यस्मै दद्याज्जपेच्छतम्॥२३७॥
स प्राप्नोति पुत्रफलं चिरायुः सहितं मुदा।
वाचास्तम्भनकामस्तु हरिद्राफलमिश्रितः॥२३८॥
एकरात्रौ जपेद्यस्य नाम्ना प्रयतमानसः।
तस्य जिह्वा क्षणात्स्तम्भं मान्यश्चापि बृहस्पतिः॥२३९॥
क्षणात्सतम्भनकामस्तु सर्वत्र लवणान्वितम्।
कृत्वा तु जुहुयाद्धीमान्सर्वदापातु साधकः॥२४०॥
रोगाणां शमने प्रीतिर्होमैक्षुगजीसम्युतम्।
जुहुयाद्यस्य नाम्ना तु तस्य नश्चन्त्युपद्रवाः॥२४१॥
एवं विधानेन सुधीः साधयित्वा विचक्षणः।
स्तोत्रेदं निर्भयं कुर्यात्साधयेत्साधकोत्तमः॥२४२॥
आदौ सुविद्याध्यानं च विनियोगं ततः स्मरेत्।
पश्चात्पाठं प्रकुर्वाणो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥२४३॥
सन्स्थापयोदिष्टमूर्तिः पठेन्नामसहस्रकम्।
पूजाङ्कर्तु महेशानि कलशस्य जलेन च॥२४४॥
नाम्नामतज्जपेद्देवं सर्वानविनाशकृत्।
अर्कपुष्पसहस्राणि कर्णिकाकुसुमानि वा॥२४५॥

प्रतिनाम समर्पयेत्कलशस्य जलेन च।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति नात्रकार्या विचारणा॥२४६॥
एकवारं पठेद्रात्रौ सर्वपापविनाशनम्।
द्विवारं पठनादेव सान्निध्यकरणं तथा॥२४७॥
त्रिवारं च पठेन्नित्यं सर्वग्रहनिवारणम्।
वर्षैकेन महादेवि! शिवरूपो हि निश्चतम्॥२४८॥
देयं शाक्ताय शैवाय स्वभक्ताय विशेषतः।
आत्मतत्त्वं तु विज्ञाय कालीभक्तिपराय च॥२४९॥
अभक्तेभ्यः कुशिष्येभ्यः कृपणाय शठाय च।
नेदं दद्यान्महेशानि ब्रह्महत्यापरोभवेत्॥२५०॥
भैरवानन्दहृदयं भैरवानन्दभैरवम्।
हरिः साक्षाद्भवेद्भक्तः भैरवो नात्र संशयः॥२५१॥
स्तवनं बटुकस्येदं यः पठेत्प्रयतोनरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सत्यमेव न संशयः॥२५२॥
ज्ञानेन तत्परं साक्षाद् ध्यानेन च शिवेन च।
दत्तात्रेयसमो ज्ञाने गङ्गेव मलनाशने॥२५३॥
कामदेव इव स्त्रीणां गन्धर्व इव रूपवान्।
शत्रुनाशे यमः साक्षाद्धने धनपतिर्यथा॥२५४॥
स भवेत्साधकः श्रेष्ठः सत्यं परवचोदितम् ॥
य इदं पठते स्तोत्रं शिवेन सहमोदते॥२५५॥
ज्ञानधर्मार्थभोगी स्यान्मृतेमोक्षपतिर्भवेत्।
सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं महेश्वरि॥२५६॥
स्तवस्यास्य प्रभावेन वटुकस्य कृपा भवेत्।
शिवरूपं गुरुं ध्यात्वा गुरुरूपं शिवं स्मरेत्॥२५७॥
शिवरूपं भवेद्भक्तः भैरवत्त्वं तु प्राप्यते।
एवं भूत्वा पठेद्देवि सर्वसिद्धिमवाप्स्यति॥२५८॥

भैरवयामलतन्त्रोक्त श्रीवकारादिवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्र प्रथमं परिपूर्णम्

❀

श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रम् द्वितीयम्

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रस्य महादेवऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीवटुकभैरवोदेवता, वँ(अमृत)बीजम्, ह्रौँ शक्तिः, क्लीँकीलकम्, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ महादेवर्षये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवताय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँबीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँशक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐकीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ ईशानाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरूषाय तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ वामदेवाय अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजाताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्ररौद्रायकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ ईशानाय हृदयाय नमः न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरूषाय शिरसे स्वाहा न्यस्यामि। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय शिखायै वषट् न्यस्यामि। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रैं वैं वामदेवाय कवचाय हूम् न्यस्यामि। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौं वौं सद्योजाताय नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्ररौद्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये

ध्यानम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसङ्काशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥२॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

महाभैरवसात्त्विकसध्यानम्—

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराद्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥

महाभैरवराजसध्यानम्—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥

महाभैरवतामसध्यानम्—

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।

नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥

सहस्रनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

देवेशि भक्तसुलभे देवनायकवन्दिते।
भक्तानां कार्यसिद्ध्यर्थे निदान ब्रूहि तत्त्वतः॥१॥
विनैव न्यासजालेन पूजनेन विना भवेत्।
विना कायादिक्लेशेन वित्तव्ययं विनेश्वरि॥२॥

देव्युवाच ।।

ॐ ह्रीं वटुकः कामदो नाथोऽनाथप्रियप्रभाकरः।
भैरवो भतिहा दर्पः कन्दर्पो मीनकेतनः॥४॥
रुद्रो वटुकभूतीशो भूतनाथः प्रजापतिः।
दयालुः क्रूर ईशानो जनीशो लोकवल्लभः॥५॥
देवो दैत्येश्वरो वीरो वीरवन्द्यो दिवाकरः।
बलिप्रियः सुरश्रेष्ठः कनिष्ठो नैष्ठिकः शिशुः॥६॥
महाबलो महातेजा विर्त्तेजाद्युतिवर्धनः।
तेजस्वी वीर्यवान्वृद्धो विवृद्धो भूतनायकः॥७॥
बालकः पालकः कामो विकामः कामदहनः।
कालिकारमणः कालीनायः कालिकाप्रियः॥८॥
कालीशः कालिकाकान्तः कालिकानन्दवर्धनः।
कालिकाहृदयज्ञानी कालिकातनयोनयः॥९॥
खगेशः खेचरः खेटो विशिष्टो खेटकाप्रियः।
कुमारः क्रोधनः कालिप्रियः पर्वतरक्षकः॥१०॥
गणेज्यो गणपो गूढो गूढप्रायो गणेश्वरः।
गणनाथो गणश्रेष्ठो गणमुख्यो गणप्रियः॥११॥
गुहश्रेष्ठो गुहावासी गुह्यस्थान निवासिनः।
घोरनादो घनश्यामो घनस्वामी घनान्तकः॥१२॥
चम्पकाश्चिरञ्जीवी चारुवेषश्चराचरः।
चिन्त्योऽचिन्त्यगुणो धीमान्सुचित्तस्थश्चितीश्वरः॥१३॥
छत्रीछत्रपतिश्छत्ता छित्रनासामनःप्रियः।
छिन्नाभश्छिन्नसन्तापश्छद्दीराच्छर्दिनान्तकः ॥१४॥

जेता जिष्णुर्हीशानो जनानन्द जनेश्वरः।
जनको जनसन्तोषो जयजायविनाशनः॥१५॥
जालन्धरो जनाराध्यो जनाध्यक्षो जनप्रियः।
जीवहा जीवदो जन्तुर्जीवनाथो जलेश्वरः॥१६॥
जयदो जित्वरो जिह्यो जयश्रीर्जयवर्धनः।
जयभूमिर्जयकारो जयहेतुर्जयेश्वरः॥१७॥
झङ्कारकृदनन्तात्मा झङ्कारहेतुरात्मभूः।
झञ्योश्चरि हरीभर्त्ता विभर्त्ता भृत्यकेश्वरः॥१८॥
टीत्कारहृदयेयात्मा टङ्केशो ठङ्कनायकः।
ठकारभूः ठरन्ध्रीशो गिरिपृष्ठकुरः पतिः॥१९॥
ढुण्ढिर्ढक्काप्रियः पान्थो ढुढिराजो निरन्तकः।
ताम्रस्तामीश्वरस्तोता तीर्थराजस्ताडित्प्रभुः॥२०॥
त्रि अक्षस्त्र्यक्षकस्तम्भस्तारकस्तम्भटेश्वरः।
स्थूलस्थः स्थावरस्थाता स्थिरबुद्धिः स्थिरेन्द्रियः॥२१॥
स्थिरज्ञानी स्थिरप्रीतिः स्थिरस्थीतिः स्थिराशयः।
दामो दामोदरो दम्भो दाडिमीकुसुमप्रियः॥२२॥
दागिद्यहा दुमी दिव्यो दिव्यदेहो दिनप्रभुः।
दिनकरो दिवानाथो दिवसेशो दिवाकरः॥२३॥
दीर्घश्वरो दलज्येतिर्दलेशो दलसुन्दरः।
दलप्रियो दलाभासो दलपूज्यो दलप्रभुः॥२४॥
दलकान्तिर्दलाकारो दलसेव्यो दलार्चितः।
दीर्घबाहुर्दलश्रेष्ठो दललुब्धो दलाकृतिः॥२५॥
दानवश्यो दयासिन्धुर्दयालु दीपवल्लभः।
धनेशो धनदो धर्मो धनराजो धनप्रभुः॥२६॥
धनप्रदो धनाध्यक्षो धनमान्यो धनञ्जयः।
धीवरो धातुको धाता ध्रुवो धूमलवर्धनः॥२७॥
धनिष्ठो धवलच्छत्री धनकाम्यो धनेश्वरः।
धीरो धीरतरो धेनु धीरेशो धरणीप्रभुः॥२८॥
धराधीशो धरानाथो धरणीनायको धरः।
धराकान्तो धरापालो धरणीजनवल्लभः॥२९॥
धराधरो धरो घृष्टो धृतराष्ट्रो धनीश्वरः।
नारदो नीरदो नेता नीतिपूज्यो नतिप्रियः॥३०॥

नीतिलभ्योन्नतीशानो नीतिलब्धो व्रतीश्वरः।
पार्थिवः पार्थसम्पूज्यः पार्थदः प्रणतः पृथुः॥३१॥
पृथिवीशः पृथासूनुः पृथिवीभृत्य ईश्वरः।
पुराणः पारदः पान्थः पाञ्चालीपावकः प्रभुः॥३२॥
पूर्वसुरपतिः श्रेयान्प्रीतिदः प्रीतिवर्द्धनः।
पार्वतीशः परेशानः पार्वतीहृदय प्रियः॥३३॥
पार्वतीरमणः पूतः पवित्रः पापनाशनः।
पात्री पत्रालिसन्तुष्टः परितुष्टः पुमान्प्रियः॥३४॥
पर्वः पर्वताधीशः पर्वतो नायकात्मजः।
फाल्गुनस्तु फणानाथः फणीशः फणरक्षकः॥३५॥
फणीपतिः फणीशानः फणराजः फणाकृतिः।
बलभद्रो बली बालो बलधीर्बलवर्द्धनः॥३६॥
बलप्राणो बलाधीशो बलिदानप्रियङ्करः।
बलिराजो बलिप्राणो बलिनाथो बलप्रियः॥३७॥
बलीवरश्च बालेशो बलाधीशो बालकप्रियदर्शनः।
भद्रो भद्रप्रभो भीमो भीमसेनो भयङ्करः॥३८॥
भव्यो भव्यप्रियो भूतपतिर्भूतविनायकः।
भूतेशो भूतिदो भर्गो भूतभव्यो भवेश्वरः॥३९॥
भवानीशो भवेशानो भवानीनायकोर्भकः।
मकारो माधवो मीनो मीनकेतुर्महेश्वरः॥४०॥
महेशुमर्दनो मंथो मिथुनेशोऽमराधिपः।
मरीचिर्मेजुलो मोहो मोहहा मोहमर्दनः॥४१॥
मोहको मोहनो मेधाप्रियो मोहविनायकः।
महीपतिर्महीशानो महीराजो मनोहरः॥४२॥
महीश्वरो महीपालो महीनाथो महीप्रियः।
महीधरो महादेवो मनुराजो मनुप्रियः॥४३॥
मौनी मौनधरो मेघो मन्दारो मतिवर्द्धनः।
मतिदो मन्थरो मन्त्रो मन्त्रीशो मन्त्रनायकः॥४४॥
मेधावी मानदो मानी मानहा मानमर्दनः।
मीनगो मकराधीशो मधुरो मणिरञ्जिजतः॥४५॥
मणिरम्यो मणिभ्राता मणिमण्डनमण्डितः।
मन्त्रपो मन्त्रदो मुग्धो मोक्षदो मोक्षवल्लभः॥४६॥

मल्लो मल्लप्रियो मञ्चो मल्लको मेलनप्रभुः।
मल्लिको मल्लिकागन्धी मल्लिकाकुसुमप्रियः॥४७॥
मालतीशो मघानाथोऽमोघमूर्तिर्मघेश्वरः।
मूलाभो मूलहा मूलो मूलदो मूलमत्सरः॥४८॥
माणिक्यरोचिः सम्मुग्धो मणिकूटो माणिप्रियः।
मुकुन्दो मदनो मन्दो मन्द वन्द्यो मनुप्रभुः॥४९॥
मनस्थो मेनकाधीशी मेनकाप्रियदर्शन।
यामो यामो यमी देवो यादवो यदुनायकः॥५०॥
याचको यज्ञ यज्ञज्ञो यज्ञेशो यज्ञवर्धनः।
रमापति रमाधीशो रमेशो रामवल्लभः॥५१॥
रमाप्रिय रमानाथो रमाकान्तो रमेश्वरः।
रेवतीरमणो रामो रमेशो रामनन्दनः॥५२॥
रम्यमूर्ती रतीशनो राकाया नायको रविः।
लक्ष्मीधरो ललज्जिह्वो लक्ष्मीबीजपेरतः॥५३॥
लम्पटो लम्बराजेशो लम्बोदरो लकारभूः।
वामनो वल्लभो वन्द्यो वनमाली वनेचरः॥५४॥
वनस्थो वनगो विन्ध्यो विन्ध्यराजो वनाह्वयः।
वनेचरो वनाधीशो वनमालाविभूषणः॥५५॥
वेणुप्रियो वनाकारो वनाराध्यो वनप्रभुः।
शम्भुः शङ्क सन्तुष्टः शञ्चरारिः शरासनः॥५६॥
शबरीप्रणतः शालः शिलीमुखध्वनिप्रियः।
शकुलः शल्लकः शीतः शीतरश्मिः सितां शुकः॥५७॥
शीलदः शीकरः शीलः शीलशीली शनैश्चरः।
सिद्धः सिद्धिकरः साध्यः सिद्धिभूः सिद्धिभावनः॥५८॥
सिद्धान्तवल्लभः सिन्धुः सिन्धुतीरनिषेवितः।
सिन्धुपतिः सरोधीरः सरसीरुहलोचनः॥५९॥
सरित्पतिः सरित्सन्स्थः सरः सिन्धुः सरोवरः।
सखा वीरपतिः सूतः सचेताः सत्पतिः सितः॥६०॥
सूर्यः सूर्यपतिः सेव्यः सेवाप्रियः सनातनः।
सतीशः सरशीनाथः सतीराजः सतीश्वरः॥६२॥
सतीप्राणः सतीनाथः सतीसेव्यः सतीश्वरः।
सिद्धिराजः सतीतुष्टः सचिवः सव्यवाहनः॥६२॥

सतीनायकः सन्तुष्टः सव्यसाची सुभन्तकः।
सच्चित्तः सर्वसन्तोषी सर्वरामः सुसिद्धिदः॥६३॥
सर्वाराध्यः सचिवाख्यः सतीपतिसुसेवितः।
सागरः सगरसार्थः समुद्रः 'समुद्रप्रियः॥६४॥
समुद्रतीरसन्तुष्टः समुद्रप्रियदर्शनः।
समुद्रीशः सरोनाथः सरसिजविलोचनः॥६६॥
सरसीजलदाकारः सरसीजलदार्चितः।
समुद्रिकः समुद्रात्मा साध्यमानः सुरेश्वरः॥६७॥
सुरसेव्यः सुरेशानः सुरनाथः सुराचिन्तः।
सुराध्यक्षः सुराराध्यः सुरवन्द्यविशारदः॥६८॥
सुरमुख्यः सुरप्रायः सुर सिन्धुनिवासवान्।
सुधाप्रियः सुधाधीशः सुधाराध्यः सुधापतिः॥६९॥
सुधानाथः सुधाभूतः सुधासागरसेवितः।
हाटको हीरको हन्ता हरिकस्य रुचिः प्रभुः॥७०॥
हव्यवाहो हरिद्राभो हरिद्रारसमर्दनः।
हेतिर्हेतुर्हरित्राता हरिनाथो हरिप्रियः॥७१॥
हरिपूज्यो हरिप्राणो हरहृष्टो हरीन्द्रकः।
हरीशो हन्तृको हीरो हरिनामपरायणः॥७२॥
हरिमुग्धो हरिरम्यो हरदासो हरीश्वरः।
हरो हरिपतिर्हारो रोहिणीचित्तहारकः॥७३॥
हरहितो हरप्राणो हरिवाहनशोभनः।
हासो हासप्रियो हूहूर्हुतभुग् हुतवाहनः॥७४॥
हुताशनो हली हक्को हालाहलहलायुधः।
हलाकारो हलीशानो हलिज्ये हलिप्रियोः॥७५॥
हरपुत्रो हरोत्साहो हरसूनुर्हरात्मजः।
हरवन्द्यो हगधीशो हरान्तको हराकृतिः॥७६॥
हरमान्यो हराङ्कस्थो हरवैरिविनाशनः।
हरशत्रुर्हरावर्षोऽहङ्कारो हरिणीप्रियः॥७७॥
हाटकेशो हटेशानो हाटकप्रियदर्शनः।
हाटको हाटकप्राणो हाटभूषणभूषितः॥७८॥
हेतिदो हन्तको हंसो हंसगतिर्हराह्वयः।
हंसीपतिर्हरोन्मत्तो हसीशो हरवल्लभः॥७९॥

हरपुष्पप्रभो हंसीप्रियो हंसविलायकः।
हरबीजरतो हारी हरितो हरिताम्पतिः॥८०॥
हरित्प्रभुर्हरित्पालो हरिरन्तंरनायकः।
हरिद्दिशो हरित्प्राणो हरिप्रियो प्रियो हितः॥८१॥
हेरम्बोक्रुद्धो हेरम्बानन्दोहठी।
हेरम्बप्राणसंहर्ता हेरम्बहृदयप्रियः॥८२॥
क्षमापतिः क्षणः क्षान्तः क्षुरधारः क्षितीश्वरः।
क्षितीशः क्षितितः क्षीणः क्षितिपालः क्षितिप्रभुः॥७३॥
क्षितीशानः क्षितिप्राणः क्षितिनायकसत्प्रियः।
क्षितिराजः क्षणाधीशः क्षणपतिः क्षणेश्वरः॥७४॥
क्षणप्रियः क्षमानाथः क्षणदानायकः प्रियः।
क्षणिकः क्षणदाधीशः क्षणदाप्राणदः क्षमी॥७५॥
शमः क्षोणिपतिः क्षोभः क्षोभकारी शमाप्रियः।
क्षमाशीलः क्षमारूपः क्षमामण्डनमण्डितः॥८६॥
क्षमानाथः क्षमाधारः क्षमाकारी क्षमाकरः।
क्षेमः क्षीणरजाः क्षुद्रः क्षुद्रपानविशारदः॥८७॥
क्षुद्रेशानः क्षणाकारः क्षीरपानकतत्परः।
क्षीरशायी क्षणेशानः क्षोणिभृत्क्षणदोत्सवः॥८८॥
क्षेमंकर क्षमालुब्धः क्षमाशास्त्रविशारदः।
क्षमीश्वरः क्षमाकामः क्षमाहृदयमण्डनः॥८९॥
नीलाद्रिरुचिराधीशो नीलपर्वतसन्निभः।
नीलमणिप्रभारम्यः शशिभूषणभूषितः॥९०॥
शशधरः शरीभूतो मुण्डमालाविभूषितः।
मुण्डस्थो मुण्डन्तुष्टो मुण्डमालाधरोऽनद्यः॥९१॥
दिग्वासा विदिगाकारो दिगम्बर वरप्रदः।
दिगम्बरीश आनन्दो दिगम्बरतनूद्भवः॥९२॥
पिङ्गलैकजटो धृष्टो डमरुवादनप्रियः।
सृणीकरः सृणीशानः खड्गधृक् खड्गपालकः॥९३॥
शूलहस्तो मतङ्गाभो मातङ्गोत्सवसुन्दरः।
अभयङ्कर ऊर्वेगो लङ्कापतिविनाशनः॥९४॥
नगाशयो नगेशानो नागमण्डनमण्डितः।
नगाकारो नगाधीशो नगशायी नगप्रियः॥९५॥

घटोत्सवो घटाकरो घण्टाविद्याविशारदः।
कपालपाणिरम्बेशः कपालासनसादनः॥९६॥
पद्मपाणिकपालश्च त्रिनेत्रो नागवल्लभः।
किङ्किणीजालसन्तुष्टो जलप्रायो जलाकरः॥९७॥
अपमृत्युहरो मायामोहमूलविनाशनः।
आयुधः कमलानाथः कमलाकान्तवल्लभः॥९८॥
राज्यदो राजराजेशी राजीवपट्टशोभनः।
डााकिनीनायकोनित्यो नित्यधर्मपरायणः॥९९॥
डाकिनीहृदयज्ञानी डाकिनीदेहनाशकः।
डाकिनीप्राणदः शुद्धः श्रद्धेयचरितोविभुः॥१००॥
हेमप्रभो हिमशानो हिमानीप्रियदर्शनः।
हेमदो मर्मदो नामी नामधेयो नगात्मजः॥१०१॥
वैकुण्ठो वासुकीप्राणो वासुकीकण्ठभूषणः।
कुण्डलीशो मखध्वंसी मखराजो मखेश्वरः॥१०२॥
मखाकारो मखाधीशो मखलालाविभूषणः।
अम्बिकावल्लभो वाणीपतिर्वाणी विशारदः॥१०३॥
वाणीशो वाचः प्राणश्च वश्वस्थी वचनप्रियः।
बेलधरो दिशामीशो दिङ्नागो हि दिगीश्वरः॥१०४॥
दूर्वाप्रियो दुराराध्यो दारिद्र्यभयगञ्जनः।
तर्कस्तर्कप्रियस्तर्क्यो वितर्क्यस्तर्कवल्लभः॥१०५॥
तर्कसिद्धेति सिद्धात्मा सिद्धदेहो गुहाशयः।
ग्रहगर्भो ग्रहेशनो गंधगंधी विशारदः॥१०६॥
मङ्गलो मङ्गलाकरो मङ्गलवाद्यवादकः।
मङ्गलीशो विमानस्थो विमानो नैकनायकः॥१०७॥
बुधेर्शो विबुधाधीशो बुधवारो बुधाकरः।
बुधनाथो बुधप्रीतो बुधवन्द्यो बुधधिपः॥१०८॥
बुधसिद्धोः बुधप्राणो बुधबुद्धो बुधप्रियः।
सोमप्रभो मनसिद्धो मनोजप्राणनाशनः॥१०९॥
सोमेशो मशकाकारो सोमपाः सोमनायकः।
कामगः कामहा बौद्धः कामनाफलदोधिपः॥११०॥
त्रिदशो दशरात्रो दशननविनाशनः।
लक्ष्मणो लक्ष्यसम्भर्त्ता लक्ष्यसङ्ख्यो मनोप्रियः॥१११॥

विभावसुर्नलेशानो नायको नगजाप्रियः।
नलकांतिर्नलोत्साहो नरदेवो नराकृतिः॥११२॥
नरपतिनरेशानो नारायणनरेश्वरः।
अनिलो मारुतो मांसो मांसैकरससेवितः॥११३॥
मरीचिरमरेशानो मागधो मगधप्रभुः।
सुन्दरीसेवकोद्धारी द्वारदेशनिवासनः॥११४॥
देवकीगर्भसञ्जातो देवकीसेवकः कुहूः।
बृहस्पतिः कविः शुक्रः शारदासाधकप्रियः॥११५॥
शारदासाधक प्राणः शारदासेवकोत्सुकः।
शारदासाधकश्रेष्ठो वीतरागो गजप्रभुः॥११६॥
मांसप्रियो मधुप्रियो मधुप्राणो मधुमांसमहोत्सवः।
मधुपोमधुपश्रेष्ठो मधुपानसदारतिः॥११७॥
मोदकादानसम्प्रीतो मोदकामोदमोदितः।
आमोदामोदितो नन्दो नन्दिकेशो नदेश्वरः॥११८॥
नदीप्रियो नदीनाथो नदीतीररुहस्तपाः।
तपनस्तापनस्ताम्रतापहा तापकारकः॥११९॥
पतङ्गो गोमुखो गौरो गोपालो गोपवर्द्धनः।
गौपतिर्गोपसंहर्ता गोवृन्दैकप्रियोतिगः॥१२०॥
गर्विष्ठो गुणरम्यश्च गुणासिन्धुर्गुरुप्रियः।
गुणपूज्यो गुणोपेतो गुणवाद्यो गुणोत्सुकः॥१२१॥
गुणीशः केवलो गर्भः सुगर्भो गर्भरक्षकः।
गाम्भीर्यधारको धर्ता विधर्ता धर्मपालकः॥१२२॥
जगदीशो जगन्मित्रो जगत्राता जगत्प्रभुः।
जगद्भता जगद्भोक्ता जगज्जाप्यविनाशनः॥१२३॥
जगत्कर्ता जगद्भर्ता जगज्जीवनजीवनः।
मालतीपुष्पसुप्रितो मालतीकुसुमोत्सवः॥१२४॥
मालतीकुसुमाकारो मालतीकुसुमप्रभुः।
रसालमञ्जरीरम्यो रसगन्धानिषेवितः॥१२५॥
रसालमञ्जरीलुब्धो रसाल तरुवल्लभः।
रसालतरुवासी वै रसालफलसुन्दरः॥१२६॥
रसालरससन्तुष्टो रसालरसलालसः।
केतकीपुष्पसन्तुष्टो केतकीगर्भसम्भवः॥१२७॥

केतकीपत्रसङ्काशः केतकीप्राणनाशनः।
गर्तस्थो गर्तगम्भीरो गर्त्तेशो गर्त्तनायकः॥१२८॥
गर्त्तगेशोतिगर्त्तस्थो गर्त्ततीरनिवासकः।
गणसेव्यो गणाध्यक्षो गणराजो गणाह्वयः॥१२९॥
आनन्दभैरवो भीरुर्भैवेशो रुरुर्भगः।
सुब्रह्मभैरवो वामभैरवो भूतभावनः॥१३०॥
भैरवीतनयो देवीपुत्रः पर्वतसम्भवः।
नाम्ना येन सहस्रेण स्तुत्वा वटुकभैरवम्॥१३१॥
लभते ह्यतुलां लक्ष्मीं देवानामपि दुर्लभम्।
उपदेशं गुरोर्लब्ध्वा योगे त्रिमङ्गली भवेत्॥१३२॥
अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां वासरे भूमिसम्भवे।
शुक्रे वा रविसंक्रान्तौ योगोयमुत्तमः प्रभो॥१३३॥
तस्मिन्योगेमहेशानि सर्वसिद्धिमवाप्नुयात्।
लक्षमावर्त्तयेन्मन्त्रं मन्त्रराजं नगेश्वरि॥१३४॥
नित्यकर्मसुसिद्ध्यर्थं तत्फलं लभते ध्रुवम्।
स्तवमेनं पठेन्मन्त्री पाठयित्वा यथाविधिः॥१३५॥
दुर्लभां लभते सिद्धिं सर्वदेवनमस्कृताम्।
न प्रकाश्यं च पुत्रेषु भ्रष्टेषु तु कदाचन॥१३६॥
अन्यथा सिद्धिरोधः स्याद्वातुलो वा भवेत्प्रियः।
स्तवस्यास्य प्रसादेन देवनायकवत्प्रियः॥१३७॥
संग्रमो विजयेज्छद्यः विनश्चयेन कथ्यताम्।
यद्यन्मनसि सङ्कल्प स्तवमेनमुदीरयन्॥१३९॥
तत्तदाप्नोति देवेशं वटुकस्य प्रसादतः।
आपदां हि विनाशाय कारणं शान्त दुर्लभम्॥१४०॥
देवासुररणे घोरं देवानामुपकारकम्।
प्रकाशितं मयानाथ तन्त्रे भैरवदीपके॥१४१॥
अपुत्रो लभेते पुत्रं षष्मासन्निरतो नरः।
पठित्वा पाठयित्वाऽपि स्तवराजमनुत्तमम्॥१४२॥
दरिद्रो लभते लक्ष्मीमीप्सितामपि निश्चलाम्।
कन्यार्थी लभते कन्यां सर्वरूपसमन्वितम्॥१४३॥
प्रदोषे बलिदाने च वशयेदखिलं जगत्।
वटे वा बिल्वमूले वा रम्भायां विपिनेपि वा॥१४४॥

जपेत्सततमालक्षं मन्त्रं राजस्य सिद्धये।
वर्णलक्षजपेद्वापि दिङ्मात्रं हि प्रदर्शितम्॥१४५॥
पूजयेत्तु तिलैर्माषैर्दुग्धैर्मोसैर्झषैस्तथा।
घृतपक्वान्नतो वापि जेमनै रससङ्कुलैः॥१४६॥
पूजयेद्धारयेद्वापि स्तवमेनं सुसाधकः।
पठेद्वा पाठयेद्वापि यथाविधिः सुरप्रिये॥१४७॥
शत्रुतो न भयं तस्य नाग्निचौरास्त्रवज्रकम्।
ज्वरादिसम्भवं वापि सत्यं सत्यं महेश्वरि॥१४८॥
भैरवाराधनाशक्तो यो भवेत्साधकः प्रभो।
सदाशिवः स विज्ञेयो भैरवेणेति भाषितम्॥१४९॥
श्रीमद्भैरवाजसेवनविधौ वैय्यग्रमासेदुषः,
पुंसः पञ्चविधा भवन्ति नवधा ह्यष्टौ तथा सिद्धयः।
क्षोणीपालकिरीट कोटिमणिरुन्मालाभरैर्भूयशो,
मौग्ध्यं पादपयोजयार्विजयते मूर्घ्नि प्रभोश्छत्रताम्॥१५०॥

श्रीभैरवतन्त्रोक्त श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रं द्वितीयं परिपूर्णम्

⁂

अथ तृतीयं श्रीवटुकभैरवसहस्त्रनामस्तोत्रम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवसहस्त्रनामात्कस्तोत्रस्य दुर्वासाऋषि:, अनुष्टुप्छन्द:, भैरवोवटुकनाथोदेवता, वँ**(अमृत)**बीजम्, ह्रीँशक्ति:, क्लीँकीलकम्, ममसर्वकार्यसिद्ध्यर्थे सर्वशत्रुनिवारणार्थे वटुकसहस्त्रनामस्तोत्रपाठमहं करिष्ये।**

विशेषे—**महाकालोस्य ऋषिरिति रुद्रजापे**(इस स्तोत्र में रुद्र जप के समय महाकाल ऋषि का विनियोग में नियोन करे)। **दत्तात्रेय ऋषिरिति ब्रह्मजापे**(इस स्तोत्र में ब्रह्म जप के समय दत्तात्रेय ऋषि का विनियोग में नियोन करे)। **गौतम ऋषिरिति गौतमीमन्त्रे**(इस स्तोत्र में गौतमी जप के समय गौतम ऋषि का विनियोग में नियोन करे)। **रावणोस्य ऋषिरिति भैरवीतन्त्रे**(इस स्तोत्र में भैरवी तन्त्रोक्त जप के समय रावण ऋषि का विनियोग में नियोन करे)। **हनुमान ऋषिरिति राधतन्त्रे**(इस स्तोत्र में राधतन्त्रोक्त जप के समय हनुमान ऋषि का विनियोग में नियोन करे)। **निर्गुणो वटुक: सनकादयो ऋषय इति मोक्षपरत्वे**(इस स्तोत्र में मोक्षार्थ जप के समय सनकादि ऋषि का विनियोग में नियोन करे)। **महाविष्णु-श्रीकृष्णऋषिरिति विष्णुयामले**(इस स्तोत्र में विष्णुयामल के समय महाविष्णुश्रीकृष्ण ऋषि का विनियोग में नियोन करे)। **एवं कार्यपरत्वे यथारुचिपाठे ऋषिस्मरणं कृत्वा स्तोत्रं पठेत्।**(इस तरह जैसी रुचि हो वैसा ही ऋषियों का विनियोग में नियोन करे)।

ऋष्यादिन्यास:

ॐ ह्रीँ व़ँ दुर्वाषाऋषये नम: शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नम: मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवताय नम: हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँबीजाय नम: गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँशक्तये नम: पादयो: न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐकीलकाय नम: नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यास:

ॐ ह्राँ वाँ ईशानाय अङ्गुष्ठाभ्यां नम: न्यस्यामि। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरूषाय तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ वामदेवाय अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजाताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्ररौद्रायकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ ईशानाय हृदयाय नमः न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरूषाय शिरसे स्वाहा न्यस्यामि। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय शिखायै वषट् न्यस्यामि। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ वामदेवाय कवचाय हूम् न्यस्यामि। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजाताय नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्ररौद्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये

ध्यानम्

शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्त्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥२॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

सहस्त्रनामस्तोत्रम्

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जगदाद्य नमो नमः॥१॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमोनमः।
नमः शुद्ध स्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः॥२॥

नमः कङ्कालरूपाय कालरूपी नमोस्तु ते।
नमस्त्र्यम्बकरूपाय महाकालाय ते नमः॥३॥
नमः संसारसाराय शारदाय नमो नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥४॥
नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नम।
क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः॥५॥
नमो नागविनाशाय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातङ्गरूपाय भाररूपी नमोस्तु ते॥६॥
नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने॥७॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमः सङ्कष्टनाशाय शङ्कराय नमो नमः॥८॥
नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः।
नमोऽनन्तस्वरूपाय एकरूप नमोस्तु ते॥९॥
नमो वृद्धिस्वरुपाय वृद्धिकार नमोस्तु ते।
नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः॥१०॥
नमो जलदरूपाय शामरूप नमोस्तु ते।
नमः स्थूलस्वरूपाय शुद्धरूपाय ते नमः॥११॥
नमो नीलस्वरूपाय रङ्गरूपाय ते नमः।
नमो मण्डलरूपाय मण्डलाय नमो नमः॥१२॥
नमो रुद्रस्वरुपाय रुद्रनाथाय ते नमः।
नमो ब्रह्मस्वरुपाय ब्रह्मवक्त्रे नमो नमः॥१३॥
नमस्त्रिशूलधराय धराधारिन्नमोस्तु ते।
नमः संसारबीजाय विरूपाय नमो नमः॥१४॥
नमो विमलरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो जङ्गमरूपाय जलजाय नमो नमः॥१५॥
नमः कालस्वरूपाय कालरुद्राय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१६॥
नमः शत्रुविनाशाय भीषणाय नमो नमः।
नमः शान्ताय दान्ताय भ्रमरुपनमोस्तु ते॥१७॥
न्यायगम्याय शुद्धाय योगिध्येयाय ते नमः।
नमः कमलकान्ताय कालवृद्धाय ते नमः॥१८॥

नमो ज्योतिस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमः कल्पस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१९॥
नमो जयस्वरुपाय जगज्जाड्यनिवारिणे।
महाभूताय भव्याय भूतानां पतये नमः॥२०॥
नमो नन्दाय वृन्दाय वादिने ब्रह्मवादिने।
नमो वादस्वरूपाय न्यायगम्याय ते नमः॥२१॥
नमो भवस्वरूपाय मायानिर्माणरूपिणे।
विश्ववन्द्याय वन्द्याय नमो विश्वम्भराय ते॥२२॥
नमो नेत्रस्वरूपाय नेत्ररूपिन्नमोस्तु ते।
नमो वरुणरूपाय भैरवाय नमो नमः॥२३॥
नमो यमस्वरूपाय वृद्धरूपाय ते नमः।
नमः कुबेररूपाय कालनाथाय ते नमः॥२४॥
नम ईशानरूपाय अग्निरूपाय ते नमः।
नमो वायुस्वरूपाय विश्वरूपाय ते नमः॥२५॥
नमः प्राणस्वरूपाय प्राणाधिपतये नमः।
नमः संहाररूपाय पालकाय नमो नमः॥२६॥
नमश्चन्द्रस्वरूपाय चण्डरूपाय ते नमः।
नमो मन्दरवासाय वासिने सर्वयोगिनाम्॥२७॥
योगिगम्याय योग्याय योगिनां पतये नमः।
नमो जङ्गमवासाय वामदेवाय ते नमः॥२८॥
नमः शत्रुविनाशाय नीलकण्ठाय ते नमः।
नमो भक्तिविनोदाय दुर्भगाय नमो नमः॥२९॥
नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः।
नमो भूतिविभूषाय भूषिताय नमो नमः॥३०॥
नमो रजस्वरूपाय सात्त्विकाय नमो नमः।
नमस्तामसरूपाय तारणाय नमो नमः॥३१॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो गङ्गाविनोदाय जटासन्धारिणे नमः॥३२॥
संग्रामसाररूपाय धावनाथ नमो नमः।
नमः संग्रामरूपाय संग्रामजयदायिने॥३३॥
नमोवृद्धिस्वरूपाय वृद्धिदाय नमो नमः।
नमस्त्रिशूहस्ताय शूलसंहारिणे नमः॥३४॥

नमो द्वन्द्वस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः।
नमः शत्रुविनाशय शत्रुबुद्धिविनाशिने॥३५॥
महाकालाय कालाय कालनाथाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥३६॥
नमः शम्भुस्वरूपाय शम्भुरूपन्निमोऽस्तु ते।
नमः कमलहस्ताय डमरुहस्ताय ते नमः॥३७॥
नमः कुक्कुरवाहाय वहनाय नमो नमः।
नमो विमलनेत्राय त्रिनेत्राय नमो नमः॥३८॥
नमः संसाररूपाय सारमेयाय वाहिने।
संसारज्ञानरूपाय ज्ञाननाथय ते नमः॥३९॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमो न्याय विशालकाय मन्त्ररूपाय ते नमः॥४०॥
नमो यन्त्रस्वरूपाय यन्त्रधारिन्नमोऽस्तु ते।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥४१॥
नमः कलङ्करूपाय कलङ्काय नमो नमः।
नमः संसारपाराय भैरवाय नमो नमः॥४२॥
रुण्डमालाविभूषाय भीषणाय नमो नमः।
नमो दुःखनिवाराय विहाराय नमो नमः॥४३॥
नमो दण्डस्वरूपाय क्षणरूपाय ते नमः।
नमो मुहूर्तरूपाय सर्वरूपाय ते नमः॥४४॥
नमो मोदस्वरूपाय श्रोणरूपाय ते नमः।
नमो नक्षत्ररूपाय क्षेत्ररूपाय ते नमः॥४५॥
नमो विष्णुस्वरूपाय बिन्दुरूपाय ते नमः।
नमो ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारिन्नोमोऽस्तु ते॥४६॥
नमः कन्थानिवासाय पटवासाय ते नमः।
नमो ज्वलनरूपाय ज्वलनाय नमो नमः॥४७॥
नमो वटुकरूपाय धूर्तरूपाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥४८॥
नमो वैद्यस्वरूपाय वैद्यस्वरूपिन्नमोस्तु ते।
नम औषधरूपाय औषधाय नमो नमः॥४९॥
नमो व्याधिनिवाराय व्याधिरूपिन्नमो नमः।
नमो ज्वरनिवाराय ज्वररूपाय ते नमः॥५०॥

नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्राणां पतये नमः।
विरूपाक्षाय देवाय भैरवाय नमो नमः॥५१॥
नमो ग्रहस्वरूपाय ग्रहाणां पतये नमः।
नमः पवित्रधाराय परशुधाराय ते नमः॥५२॥
यज्ञोपवीतिदेवाय देवदेव नमोऽस्तु ते।
नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञानां फलदायिने॥५३॥
नमो रणप्रतापाय तापनाय नमो नमः।
नमो गणेशरूपाय गणरूपाय ते नमः॥५४॥
नमो रश्मिस्वरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः।
नमो मलयरूपाय मलयरूपिन्नमोस्तु ते॥५५॥
नमो विभक्तिरूपाय विमलाय नमो नमः।
नमो मधुररूपाय माधिपूर्णकलापिने॥५६॥
कालेश्वराय कालाय कालनाथय ते नमः।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥५७॥
नमो योनिस्वरूपाय भ्रातृरूपाय ते नमः।
नमो भगिनिरूपाय भैरवाय नमो नमः॥५८॥
नमो वृषस्वरूपाय कर्मरूपाय ते नमः।
नमो वेदान्तवेद्याय वेदसिद्धान्तसारिणे॥५९॥
नमः शाखाप्रकाशाय पुरुषाय नमो नमः।
नमः प्रकृतिरूपाय भैरवाय नमो नमः॥६०॥
नमो विश्वस्वरूपाय शिवरूपाय ते नमः।
नमो ज्योतिस्स्वरूपाय निर्गुणाय नमो नमः॥६१॥
निरञ्जनाय शान्ताय निर्विकाराय ते नमः।
निर्ममाय विमोहाय विश्वनाथाय ते नमः॥६२॥
नमः कण्ठप्रकाशाय शत्रुनाशाय ते नमः।
नमो आशाप्रकाशाय आशापूरकृते नमः॥६३॥
नमो मत्स्यस्वरूपाय योगरूपाय ते नमः।
नमो वराहरूपाय वामनाय नमो नमः॥६४॥
नमो आनन्दरूपाय आनन्दाय नमो नमः।
नमः अनर्घकेशाय ज्वलत्केशाय ते नमः॥६५॥
नमः पापविमोक्षाय मोक्षदाय नमो नमः।
नमः कैलासनाथाय कालनाथाय ते नमः॥६६॥

नमो बिन्दुदबिन्दाय बिन्दुभाय नमो नमः।
नमः प्रणवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥६७॥
नमो मेरुनिवासाय भक्तवासाय ते नमः।
नमो मेरुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥६८।
नमो भद्रस्वरूपाय भद्ररूपाय ते नमः।
नमो योगिस्वरूपाय योगिनां पतये नमः॥६९॥
नमो मैत्रस्वरूपाय मित्ररुपाय ते नमः।
नमो ब्रह्मनिवासाय काशीनाथय ते नमः॥७०॥
नमो ब्रह्माण्डवासाय ब्रह्मवासाय ते नमः।
नमो मातङ्गवासाय सूक्ष्मवासाय ते नमः॥७१॥
नमो मातृनिवासाय भ्रातृवासाय ते नमः।
नमो जगन्निवासाय जलावासाय ते नमः॥७२॥
नमः कौलनिवासाय नेत्रवासाय ते नमः।
नमो भैरववासाय भैरवाय नमो नमः॥७३॥
नमः समुद्रवासाय वह्निवासाय ते नमः।
नमश्चन्द्र निवासाय चन्द्रावासाय ते नमः॥७४॥
नमः कलिङ्गवासाय कलिङ्गाय नमो नमः।
नम उत्कलवासाय महेन्द्रवासाय ते नमः॥७५॥
नमः कर्पूरवासाय सिद्धिवासाय ते नमः।
नमः सुन्दरवासाय भैरवाय नमो नमः॥७६॥
नम आकाशवासाय वासिने सर्वयोगिनाम्।
नमो ब्राह्मणवासाय शूद्रवासाय ते नमः॥७७॥
नमः क्षत्रियवासाय शूद्रवासाय ते नमः।
नमः पक्षिनिवासाय भैरवाय नमो नमः॥७८॥
नमः पातालमूलाय मूलवासाय ते नमः।
नमो रसातलवासाय सर्वपातालवासिने॥७९॥
नमः कङ्कालवासाय कङ्कवासाय ते नमः।
नमो मन्त्रनिवासाय भैरवाय नमो नमः॥८०॥
नमोऽहङ्काररूपाय रजोरूपाय ते नमः।
नमः सत्त्वनिवासाय भैरवाय नमो नमः॥८१॥
नमो नलिनरूपाय नलिनाङ्गप्रकाशिने।
नमः सूर्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥८२॥

नमो दुष्टनिवासाय साधूपायनरूपिणे।
नमो नम्रस्वरूपाय स्तम्भनाय नमो नमः॥८३॥
पञ्चयोनिप्रकाशाय चतुर्योनिप्रकाशिने।
नवयोनिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥८४॥
नमः षोडशरूपाय नमः षोडशधारिणे।
चतुःषष्टिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥८५॥
नमो बिन्दुप्रकाशाय सुप्रकाशायं ते नमः।
नमो गणस्वरूपाय सुखरूप नमोऽस्तु ते॥८६॥
नमो अम्बररूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो नानास्वरूपाय सुखरूप नमोऽस्तु ते॥८७॥
नमो दुर्गस्वरूपाय दुःखहन्त्रे नमोऽस्तु ते।
नमो विशुद्धदेहाय दिव्यदेहाय ते नमः॥८८॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः प्रेतनिवासाय पिशाचाय नमो नमः॥८९॥
नमो निशाप्रकाशाय निशारूप नमोऽस्तु ते।
नमः सोमार्धरामाय धराधीशाय ते नमः॥९०॥
नमः संसारभाराय भारकाय नमो नमः।
नमो देहस्वरूपाय अदेहायः नमो नमः॥९१।
देवदेहाय देवाय भैरवाय नमो नमः।
विश्वेश्वराय विश्वाय विश्वधारिन्नमोऽस्तु ते॥९२॥
स्वप्रकाशप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः।
स्थितिरूपाय स्थित्याय स्थितीनां पतये नमः॥९३॥
सुस्थिराय सुकेशाय केशवाय नमो नमः।
स्थविष्ठाय गरिष्ठाय प्रेष्ठाय परमात्मने॥९४॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः पारदरूपाय पवित्राय नमो नमः॥९५॥
नमो वेदकरूपाय अनिन्दाय नमो नमः।
नमः शब्दस्वरूपाय शब्दातीताय ते नमः॥९६॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो निन्दास्वरूपाय अनिन्दाय नमो नमः॥९७॥
नमो विशदरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः शरण्यशरणं शरण्यानां सुखाय ते॥९८॥

नमः शरण्यरक्षाय भैरवाय नमो नमः।
नमः स्वाहास्वरूपाय स्वधारूपाय ते नमः॥९९॥
नमो वौषट्स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
सदाराय नमस्तुभ्यं त्रिधामात्रास्वरूपिणे॥१००॥
नमोऽक्षराय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः।
अर्धमात्राय पूर्णाय पूर्णरूपाय ते नमः॥१०१॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमोऽष्टचक्ररूपाय ब्रह्मरूपाय ते नमः॥१०२॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः सृणिस्वरूपाय सृष्टिकर्त्रे महात्मने॥१०३॥
नमः पाल्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
सनातनाय नित्याय निर्गुणाय गुणाय ते॥१०४॥
नमः सिद्धाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः।
नमो धारास्यरूपाय खङ्गहस्ताय ते नमः॥१०५॥
नमस्त्रिशूलहस्ताय भैरवाय नमो नमः।
नमः कुण्डलवर्णाय शवमुण्डविभूषिणे॥१०६॥
महाक्रुद्धाय चण्डाय भैरवाय नमो नमः।
नमो वासुकिभूषाय सर्वभूषाय ते नमः॥१०७।
नमः कपालहस्ताय भैरवाय नमो नमः।
पानपात्रप्रमत्ताय मत्तरुपाय ते नमः॥१०८॥
नमो भैरवरुपाय भैरवाय नमो नमः।
मध्वाकारसुपर्णाय माधवाय नमो नमः॥१०९॥
नमो माङ्गल्यरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः कुमाररूपाय स्त्रीशूर्पाय नमो नमः॥११०॥
नमः पुष्पस्वरूपाय पुष्पभूपण ते नमः।
नमः पुष्पप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१११॥
नमो गन्धस्वरूपाय प्रगन्धाय नमो नमः।
नमो दुर्गंधरुपाय सुगन्धाय नमो नमः॥११२॥
विनोदाय नमो पुष्प पुष्पपूजाय ते नमः।
नमो भक्तिनिवासाय भक्तदुःखनिवारिणे॥११३॥
भक्तप्रियाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः।
नमो भक्तस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः॥११४॥

नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो वासाय भद्रायः वीरभद्राय ते नमः॥११५॥
नमः संग्रामसाराय भैरवाय नमो नमः।
नमः खट्वाङ्गहस्ता य कालहस्ताय ते नमः॥११६॥
नमोऽघोराय घोराय घोराघोरस्वरूपिणे।
घोरधर्माय घोराय भैरवाय नमो नमः॥११७॥
घोरत्रिशूल हस्ताय घोरपानाय ते नमः।
घोररूपाय नीलाय भैरवाय नमो नमः॥११८॥
घोरवाहनगम्याय अगम्याय नमो नमः।
घोरब्रह्मस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥११९॥
घोरशब्दाय घोराय घोरदेहाय ते नमः।
घोरद्रव्याय घोराय भैरवाय नमो नमः॥१२०॥
घोरसङ्गाय सिंहाय सिद्धसिंहाय ते नमः।
नमः प्रचण्डसिंहाय सिंहरूपाय ते नमः॥१२१॥
नमः सिंहप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमो विजयरूपाय जगदाद्य नमो नमः॥१२२॥
नमो भार्गवरूपाय गर्भरूपाय ते नमः।
नमो भैरवरुपाय भैरवाय नमो नमः॥१२३॥
नमो मेध्याय शुद्धाय मायाधीशाय ते नमः।
नमो मेघप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१२४॥
दुर्ज्ञेयाय दुस्तराय दुर्लभाय दुरात्मने।
भक्तिलभ्याय भव्याय भाविताय नमो नमः॥१२५॥
नमो गौरवरुपाय गौरवाय नमो नमः।
नमो भैरवरुपाय भैरवाय नमो नमः॥१२६॥
नमो विघ्ननिवाराय विघ्नराशिन्नमोऽस्तु ते।
नमो विघ्नविद्रावणाय भैरवाय नमो नमः॥१२७॥
नमो किंशुकरुपाय रजोरुपाय ते नमः।
नमो नीलस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१२८॥
नमो गणस्वरुपाय गणनाथाय ते नमः।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१२९॥
नमो योगिप्रकाशाय योगिगम्याय ते नमः।
नमो हेरम्बरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१३०॥

नमस्त्रिधास्वरूपाय रूपदाय नमो नमः।
नमः स्वरस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१३१॥
नमः सरस्वतीरूपः बुद्धिरुपाय ते नमः।
नमो वन्द्यस्वरूपाय भरवाय नमो नमः॥१३२॥
नमस्त्रिविक्रमरूपाय त्रिस्वरूपा ते नमः।
नमः शशाङ्करूपाय भैरवाय नमो नमः॥१३३॥
नमो व्यापकरूपाय व्याप्यरूपाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१३४॥
नमो विशदरूपाय विशदरूपिन्नमोऽस्तुते।
नमः सत्त्वस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१३५॥
नमः सूक्तस्वरूपाय शिवदाय नमो नमः।
नमो गङ्गास्वरूपाय यमुनारूपिणे नमः॥१३६॥
नमो गौरीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो दुःखविनाशय दुःखमोक्षणरूपिणे॥१३७॥
महाचलाय वैद्याय भैरवाय नमो नमः।
नमो नन्दस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१३८॥
नमो नन्दिनस्वरूपाय स्थिररूपाय ते नमः।
नमः केलिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१३९॥
नमः क्षेत्रनिवासाय वासिने ब्रह्मवादिने।
नमः शान्ताय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः॥१४०॥
नमो नर्मदरूपाय जलरूपाय ते नमः।
नमो विश्वविनोदाय जयदाय नमो नमः॥१४१॥
नमो महेन्द्ररूपाय महनीयाय ते नमः।
नमः संसृतिरूपाय शरणीयाय ते नमः॥१४२॥
नमस्त्रिबन्धुवासाय बालकाय नमो नमः।
नमः संसारसाराय सरसां पतये नमः॥१४३॥
नमस्तेजस्स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः कारुण्यरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१४४॥
नमो गोकर्णरूपाय ब्रह्मवर्णाय ते नमः।
नमः शङ्करवर्णाय हस्तिकर्णा य ते नमः॥१४५॥
नमो विष्टरकर्णाय यज्ञकर्णाय ते नमः।
नमः शम्बुककर्णाय भैरवाय नमो नमः॥१४६॥

नमो दिव्यसुकर्णाय कालकर्णाय ते नमः।
नमो भयदकर्णाय भैरवाय नमो नमः॥१४७॥
नमः आकाशवर्णाय कालकर्णाय ते नमः।
नमो दिव्यूपकर्णाय भैरवाय नमो नमः॥१४८॥
नमो विशुद्धकर्णाय विमलाय नमो नमः।
नमः सहस्रकर्णाय भैरवाय नमो नमः॥१४९॥
नमो नेत्रप्रकाशाय सुनेत्राय नमो नमः।
नमो वरदनेत्राय जयनेत्राय ते नमः॥१५०॥
नमो विमलनेत्राय योगिनेत्राय ते नमः।
नमः सहस्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः॥१५१॥
नमः कलिन्दरूपाय कलिन्दाय नमो नमः।
नमो ज्योतिःस्वरूपाय ज्योतिषाय नमो नमः॥१५२॥
नमस्तारप्रकाशाय ताररुपिन्नमोऽस्तु ते।
नमो नक्षत्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः॥१५३॥
नमश्चन्द्रप्रकाशाय चन्द्ररूप नमोऽस्तु ते।
नमो रश्मिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१५४॥
नम आनन्दरूपाय जगदानन्दरूपिणे।
नमो द्रविडरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१५५॥
नमः शङ्खनिवासाय शङ्कराय नमो नमः।
नमो मुद्राप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१५६॥
नमो न्यासस्वरूपाय न्यासरूपन्नमोऽस्तु ते।
नमो बिन्दुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१५७॥
नमो विसर्गरूपाय प्रणवरूपाय ते नमः।
नमो मन्त्रप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१५८॥
नमो जम्बूकरूपाय जङ्गमाय नमो नमः।
नमो गरुड़रूपाय भैरवाय नमो नमः॥१५९॥
नमो लम्बुकरूपाय लम्बिकाय नमो नमः।
नमो लक्ष्मीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१६०॥
नमो वीरस्वरूपाय वीरणाय नमो नमः।
नमः प्रचण्डरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१६१॥
नमो डम्बस्वरूपाय डमरुधारिन्नमोऽस्तु ते।
नमः कलङ्कनाशाय कालनाथाय ते नमः॥१६२॥

नमः ऋद्धिप्रकाशाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमः सिद्धस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१६३॥
नमो धर्मप्रकाशाय धर्मनाथाय ते नमः।
धर्माय धर्मराजाय भैरवाय नमो नमः॥१६४॥
नमो धर्माधिपतये धर्मध्येयाय ते नमः।
नमो धर्मार्थसिद्धाय भैरवाय नमो नमः॥१६५॥
नमो विरजरूपाय रूपारूपप्रकाशिने।
नमो राजप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१६६॥
नमः प्रतापसिंहाय प्रतापाय नमो नमः।
नमः कोटिप्रतापाय भैरवाय नमो नमः॥१६७॥
नमः सहस्त्ररूपाय कोटिरूपाय ते नमः।
नम आनन्दरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१६८॥
नमः संहारबन्धाय बन्धकाय नमो नमः।
नमो विमोक्षरूपाय मोक्षदाय नमो नमः॥१६९॥
नमो विष्णुस्वरूपाय व्यापकाय नमो नमः।
नमो माङ्गल्यनाथाय शिवनाथाय ते नमः॥१७०॥
नमो व्यालाय व्याघ्राय व्याघ्ररूपिन्नमोऽस्तु ते।
नमो व्यालाय भूषाय भैरवाय नमो नमः॥१७१॥
नमो विद्याप्रकाशय विद्यानां पतये नमः।
नमो योगिस्वरूपाय क्रूररूपाय ते नमः॥१७२॥
नमः संहाररूपाय शत्रुनाशाय ते नमः।
नमः पालकरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१७३॥
नमः कारुण्यदेवाय देवदेवाय ते नमः।
नमो विश्वविलासाय भैरवाय नमो नमः॥१७४॥
नमो नमः प्रकाशाय काशीवासिन्नमोऽस्तु ते।
नमो भैरवक्षेत्राय क्षेत्रपालाय ते नमः॥१७५॥
नमो भद्रस्वरूपाय भद्रकाय नमो नमः।
नमो भद्राधिपतये भयहन्त्रे नमोस्तु ते॥१७६॥
नमो मायाविनोदाय मायिने मदरूपिणे।
नमो मत्ताय शान्ताय भैरवाय नमो नमः॥१७७॥
नमो मलयवासाय कैलासाय नमो नमः।
नमः कैलासवासाय कालिकातनयाय ते॥१७८॥

नमः संसारसाराय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातृविनोदाय विमलाय नमो नमः॥१७९॥
नमो यमप्रकाशाय नियमाय नमो नमः।
नमः प्राणप्रकाशाय ध्यानाधिपतये नमः॥१८०॥
नमः समाधिरूपाय निर्गुणाय नमो नमः।
नमो मन्त्रप्रकाशाय मन्त्ररूपाय ते नमः॥१८१॥
नमो वृन्दविनोदाय वृन्दकाय नमो नमः।
नमो बृंहितरूपाय भैरवाय नमो नमः॥१८२॥
नमो मान्यस्वरूपाय मानदान नमो नमः।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥१८३॥
नमो नैस्थिरपीठाय सिद्धपीठाय ते नमः।
नमो मण्डलपीठाय उक्तपीठाय ते नमः॥१८४॥
नमो यशोदानाथाय कामनाथाय ते नमः।
नमो विनोदनाथाय सिद्धिनाथाय ते नमः॥१८५॥
नमो अनाथनाथाय ज्ञाननाथाय ते नमः।
नमः शङ्करनाथाय जयनाथाय ते नमः॥१८६॥
नमो मुद्गलनाथाय नीलनाथाय ते नमः।
नमो बालकनाथाय धर्मनाथाय ते नमः॥१८७॥
विश्वनाथाय नाथाय कार्यनाथाय ते नमः।
नमो भैरवानाथाय महानाथाय ते नमः॥१८८॥
नमो ब्रह्मसनाथाय योगनाथाय ते नमः।
नमो विश्वविहाराय विश्वभाराय ते नमः॥१८९॥
नमो रङ्गसनाथाय रङ्गनाथाय ते नमः।
नमो मोक्षसनाथाय भैरवाय नमो नमः॥१९०॥
नमो गोरक्षनाथाय गोरक्षाय नमो नमः।
नमो मन्दारनाथाय नन्दनाथाय ते नमः॥१९१॥
नमो मङ्गलनाथाय चम्पानाथाय ते नमः।
नमः सन्तोषनाथाय भैरवाय नमो नमः॥१९२॥
नमो निर्धननाथाय सुखनाथाय ते नमः।
नमः कारुण्यनाथाय भैरवाय नमो नमः॥१९३॥
नमो द्रविडनाथाय दरिनाथाय ते नमः।
नमः संसारनाथाय जगन्नाथाय ते नमः॥१९४॥

नमो माध्वीकनाथाय मन्त्रनाथाय ते नमः।
नमो न्याससनाथाय ध्याननाथाय ते नमः॥१९५॥
नमो गोकर्णनाथाय महानाथाय ते नमः।
नमः शुभ्रसनाथाय भैरवाय नमो नमः॥१९६॥
नमो विमलनाथाय मण्डलनाथाय ते नमः।
नमः सरोजनाथाय मत्स्यनाथाय ते नमः॥१९७॥
नमो भक्तसनाथाय भक्तिनाथाय ते नमः।
नमो मोहननाथाय वत्सनाथाय ते नमः॥१९८॥
नमो मातृसनाथाय विश्वनाथाय ते नमः।
नमो बिन्दुसनाथाय जयनाथाय ते नमः॥१९९॥
नमो मङ्गलनाथाय धर्मनाथाय ते नमः।
नमो गङ्गासनाथाय भूमिनाथाय ते नमः॥२००॥
नमो धीरसनाथाय बिन्दुनाथाय ते नमः।
नमः कञ्चुकिनाथाय शृङ्गिनाथाय ते नमः॥२०१॥
नमः समुद्रनाथाय पर्वतनाथाय ते नमः।
नमो माङ्गल्यनाथाय कद्रूनाथाय ते नमः॥२०२॥
नमो वेदान्तनाथाय श्रीनाथाय नमो नमः।
नमो ब्रह्माण्डनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२०३॥
नमो गिरिशनाथाय वामनाथय ते नमः।
नमो बीजसनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२०४॥
नमो मन्दिरनाथाय मदनाथाय ते नमः।
नमो भैरवीनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२०५॥
अम्बनाथाय नाथाय जन्तुनाथाय ते नमः।
नमः कालिसनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२०६॥
नमो मुकुन्दनाथाय कुन्दनाथाय ते नमः।
नमः कुण्डलनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२०७॥
नमोऽष्टचक्रनाथाय चक्रनाथाय ते नमः।
नमो विभूतिनाथाय शूलनाथाय ते नमः॥२०८॥
नमो न्यायसनाथाय न्यायनाथाय ते नमः।
नमो दयासनाथाय जङ्गमनाथाय ते नमः॥२०९॥
नमो विशदनाथाय जगन्नाथाय ते नमः।
नमः कामिकनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२१०॥

नमः क्षेत्रसनाथाय जीवनाथाय ते नमः।
नमश्चेत्लङ्काथाय चैलनाथाय ते नमः॥२११॥
नमो मात्रासनाथाय अमात्राय नमो नमः।
नमो द्वन्द्वसनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२१२॥
नमः शूरसनाथाय शूरनाथाय ते नमः।
नमः सौजन्यनाथाय सौजन्याय नमो नमः॥२१३॥
नमो दुष्टनाथाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भयसनाथाय बिम्बनाथाय ते नमः॥२१४॥
नमो मायासनाथाय भैरवाय नमो नमः।
नमो विटङ्कनाथाय टङ्कनाथाय ते नमः॥२१५॥
नमश्चर्मसनाथाय खड्गनाथाय ते नमः।
नमः शक्तिसनाथाय धनुर्नाथाय ते नमः॥२१६॥
नमो वासननाथाय शापनाथाय ते नमः।
नमो यन्त्रसनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२१७॥
नमो गण्डूपनाथाय भैरवाय नमो नमः।
नमो डाकिनीनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२१८॥
नमो डामरनाथाय डङ्कनाथाय ते नमः।
नमो यजुःसनाथाय क्रीडानाथाय ते नमः॥२२०॥
नमः सामसनाथायाथर्वनाथाय ते नमः।
नमः शून्याय नाथाय स्वर्गनाथाय ते नमः॥२२१॥
इदं नामसहस्त्रं मे रुद्रेण परिकीर्तितम्।
यः पठेत्पाठयेद्वापि स एव मम सेवकः॥२२२॥
यं यं चिन्तयते कामं कारकारं प्रियाकृतिः।
यः श्रृणोति दुरापं हि तं तं प्राप्नोति मामकः॥२२३॥
राजद्वारे श्मशाने तु पृथिव्यां जलसन्निधौ।
यः पठेन्मानवो नित्यं स शूरः स्यान्न संशयः॥२२४॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा पठेन्नरः।
स यावद्बुद्धिमाँल्लोके भवत्येव न संशयः॥२२५॥
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स एव गुणसागरः।
यः श्रद्धया रात्रिकाले श्रृणोति पठते च वा॥२२६॥
स एव साधकः प्रोक्तः सर्वदुष्टविनाशकः।
अर्धरात्रौपठेद्यस्तु स एव पुरुषोत्तमः॥२२७॥

त्रिसन्ध्यायां देवगृहे श्मशाने च विशेषतः।
वने च मार्गगमने बले दुर्जनसन्निधौ॥२२८॥
यः पठेत्प्रयतो नित्यं स सुखी स्यान्न संशयः।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्॥२२९॥
शूरार्थी लभते शौर्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात्।
एकविंशतिमन्त्रेण अक्षरेण सहैव मे॥२३०॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वकाममवाप्नुयात्।
रसार्थी रसमात्रेण रसं प्राप्नोति नित्यशः॥२३१॥
अन्नार्थी लभते चान्नं सुखार्थी सुखमाप्नुयात्।
रोगी प्रमुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥२३२॥
शपार्थी लभते शापं सर्वशत्रुविनाशनम्।
स्थावरं जङ्गमं वापि विषं सर्वे प्रणश्यति॥२३३॥
सर्वलोकप्रियः शान्तो मातृपितृप्रियङ्करः।
संग्रामे विजयं तस्य यः पठेद्भक्तिसम्युतः॥२३४॥
सकलं विजयं देवि स्तोत्रमेतत्प्रकीर्तितम्।
इदं स्तोत्रं महत्पुण्यं निन्दकाय न दर्शयेत्॥२३५॥
असाधकाय दुष्टाय मातृपितृविकारिणे।
अधार्मिकायाकुलीनाय नेदं स्तोत्रं प्रकाशयेत्॥२३६॥
साधकाय च भक्ताय योगिने धर्मिकाय च।
गुरुभक्ताय शान्ताय दर्शयेत्साधकोत्तमः॥२३७॥
अन्यथा पापभिन्नः स्यातक्रोधोऽयं भैरवोत्तमे।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपनीयं प्रयत्नतः॥२३८॥
इदं स्तोत्रं च रुद्रेण रामस्यापि मुखेऽर्पितम्।
तन्मुखाद्विश्रुतं लोके दरिद्राय च बान्धवे॥२३९॥
रामेण कथितं भ्रात्रे लक्ष्मणाय महात्मने।
ततो दुर्वाससे प्राप्तं तेनैवोक्तं तु पाण्डवे॥२४०॥
पाण्डवो ह्यब्रवीत्कृष्णं कृष्णेनेह प्रकीर्तितम्।
अस्य स्तोत्रस्य माहात्म्यं रामो जानति तत्त्वतः॥२४१॥
रामोऽपि राज्यं सम्प्राप्ता अस्य स्तोत्रस्य पाठतः।
पाण्डवोऽपि तथा राज्य सम्प्राप्तो भैरवस्य च॥२४२॥
अनेन स्तोत्रपाठेन किमलभ्यं भवेदिति।
सर्वलोकस्य पूज्यस्तु जायते नात्र संययः।२४३॥

रुद्रयामलोक्त श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रं तृतीयम्

* * *

अथ चतुर्थं श्रीवटुकभैरवसहस्त्रानामस्तोत्रम्

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवसयवकाराख्यसहस्त्रनामस्तोत्रस्य महादेव-ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीवटुकभैरवोदेवता, वँ(अमृत)बीजम्, ह्रौँशक्तिः, क्लौँकीलकम्, ममाभीष्टासिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रौँ वँ महादेवर्षये नमः शिरसि न्यस्यामि। शिर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि। मुख स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीवटुकभैरवदेवताय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ वँबीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि। गुह्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ह्रौँशक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि। दोनों पैर स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ॐकीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वाङ्गे न्यस्यामि। शिर से पैर तक सर्वाङ्ग स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ ईशानाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अङ्गुष्ठ स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरूषाय तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों तर्जनी अङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों मध्यमाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ वामदेवाय अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों अनामिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजाताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलि स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्ररौद्रायकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। दोनों हाथ की हथेली तथा हथेली का पृष्ठ स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्राँ वाँ ईशानाय हृदयाय नमः न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ह्रीँ वीँ तत्पुरूषाय शिरसे स्वाहा न्यस्यामि। ललाट स्पर्श करे।

ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय शिखायै वषट् न्यस्यामि। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ह्रैँ वैँ वामदेवाय कवचाय हूम् न्यस्यामि। दोनों बाहु स्पर्श करे।

ॐ ह्रौँ वौँ सद्योजाताय नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि। दोनों नेत्र और भ्रूमध्य स्पर्श करे।

ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्ररौद्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि। चारों तरफ चुटकी बजाते हुए हथेली बजाये

ध्यानम्

शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्॥२॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

शिव उवाच

अथ श्रीवटुकं ध्यायेत्रिधा भिन्नं गुणैः क्रमात्।
शान्तिके सात्त्विकं ध्यानं वश्यादौ राजसं मतम्॥१॥
मारणादौ तामसं तद्देवं ध्यायेन्महेश्वरम्।
एवं ध्यात्वा प्रसन्नात्मा स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः॥२॥

अथ नामानि

वटुको वटुकाधीशो वटप्रीतिर्वटेशयः।
विपाणिर्वज्रपाणिश्च वज्राभो वज्रवल्लभः॥३॥
वामाचारप्रियो वक्रो वक्रग्रासो विशारदः।
विशापो विघ्नहर्ता च वेतालाढ्यो विचक्षणः॥४॥
विश्वव्यापी विश्वनाथो विश्वो बालपराक्रमः।
विश्ववन्द्यो विश्वरूपो विश्वाधारो विकीरणः॥५॥
वैद्यो बालो विराड् विष्णुर्व्योमकेशश्च वश्यकृत्।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बहुनेत्रोऽम्बरो बली॥६॥
व्याधिघाती व्याधिकरो व्याध्यात्मा व्याधिवेपनः।
कङ्कालधारी कन्दर्प कामी कान्तः कलानिधिः॥७॥

कामरुपः कामचारी कल्पवित्कामिनीप्रियः।
कोटरेशः कोटपतिः कमनीयः कपालभृत्॥८॥
कङ्कालः क्रूरदृक्कालः करालः कोकिलस्वनः।
कपर्दी कम्बुकण्ठश्च कम्बुमाली कलाधरः॥९॥
कामिनीवशकृत्कौलः कुलीनः कुलरक्षकः।
कपालमाली कुब्जश्च कण्वः कण्ठीरवः कविः॥१०॥
कलाकष्ठातनुः कालशमनः कण्बुकुन्धली।
कुरङ्गी कपिलः कीरी कुमारः कोपनः कविः॥११॥
कङ्काली कपिशः केशी केशरी केशरीप्रियः।
कौपिनधारी कितवः कितवघ्नः कलाधरः॥१२॥
कमलावल्लभः कुण्ठः कठोरकिरणः क्षणः।
कौशिकः कौशिकघरः कुश्गभृत्कुशतल्पगः॥१३॥
कुशली कश्मलाकर्षी काश्मिरी कररत्नभृत्।
कृतघ्नश्च कृतज्ञश्च कृतवीर्यः कपिध्वजः॥१४॥
कुशीलवः कुशीलश्च केतकी केतकीप्रियः।
कादम्बरीयः कादम्बः कलकण्ठः कपिञ्जलीः॥१५॥
कैटभारिः कंसमर्द्दी कुरङ्गवदनः कुशः।
भूधरो भूधराधीशो भैरवो भैरवीप्रियः॥१६॥
भूतात्मा भूतपा भूभृत् भृगुजो भूधरात्मजः।
भवसूनुभवो भीरुर्भ्रामरो भूतसम्भवः॥१७॥
भीषणो भैरवीनाथो भगवान्भोगिभूषणः।
भस्मधारी भ्रमहरो भूताध्यक्षश्च भिक्षुकः॥१८॥
भ्रूणहा भूतहा भूतो भीतोऽभीतोऽभयङ्करः।
खरान्तकृत्खर्पराशिः खड्गपाणिः खलप्रियः॥१९॥
खण्डभूः खण्डपरशुः खड्गी खट्वाङ्गभृत्खलः।
खेचरः खेचरीनाथः खपुरः खलनायकः॥२०॥
खेलाप्रियः खातकीर्तिः खरनादः खरव्रतः।
खेचरीकृत् खेटकभृत् खातीतः खाण्डवाशनः॥२१॥
गन्धर्वगीतो गङ्गेशो गोपतिर्गोपिकापतिः।
गर्विष्ठो गेयो गौरो गौरीसुतो गुरुः॥२२॥
गीर्वाणगीतो गीर्वाणो गाढो गाढान्धकारहा।
गेयो गरुडगो गोऽवो गुप्तो गोप्ता गराशनः॥२३॥

गजकृत्तिधरो गुञ्जो गुञ्जाहारधरो गजः।
गेयाप्रियो गह्वरगो गुञ्जस्थो गुञ्जानायकः॥२४॥
गोवर्द्धनधरो गोष्ठरक्षको गोकुलप्रियः।
गम्भीरो गोधनो गोपो गोधाभृद्गिरिजातमजः॥२५॥
जगदीशो जनाध्यक्षो जीवनो जीवनप्रियः।
जीवानजवनच्छेदी जीवितात्मा जनार्दनः॥२६॥
जृम्भणश्च जवी जीवो जैनो जैनजयङ्कर।
जपात्रियो जपासक्तो जापको जपकार्थकृत्॥२७॥
जम्बूश्यामो जितक्रोधो जितारातिर्जितासुरः।
जम्बुको जानकीजानिर्जटिलो जनमेजयः॥२८॥
जीर्णो जीर्णोज्ज्वलन्नेत्रो जामदग्न्यो जयप्रदः।
झषकेतुर्झषहरो झिण्टीशो झषभोजितः॥२९॥
झङ्कारकारी झम्पा च झषवान्झषवल्लभः।
मधुरो मदिरामत्तो मेघनादो मृगाधिपः॥३०॥
मधुमत्तो मद्यगन्धो मेदस्वी मेघदीधितिः।
मोदनो मेदिनीनाथो मधवा मण्डभूषणः॥३१॥
मधुकरीप्रियो मत्तो मेधावी मधुसूदनः।
मदनो मदनप्रीतो मुकुन्दो मादनो मरुत्॥३२॥
मकरो माधवो मीनो मीनकेतुर्महेश्वरः।
महेपुर्मदनो मन्थो मिथुनेशोऽमराधिपः॥३३॥
मरीचिर्मेजुलो मोहो मोहहा मोहमर्दनः।
मोहको मोहनो मेघप्रियो मोहविनायकः॥३४॥
महीपतिर्महीशानो महीराजो मनोहरः।
महीश्वरो महीपालो महीनाथो महीप्रियः॥३५॥
महीधरो महादेवी मनुराजो मुनिप्रियः।
मानी मौनधरो मेघो मन्दिरो मतिवर्द्धनः॥३६॥
मतिदो मन्थरो मन्त्रो मन्त्रीशो मन्त्रनायकः।
मेधावी मानदोमानी मानहा मानमर्दनः॥३७॥
मीनगो मकराधीशो मधुरो मणिरञ्जितः।
मणिरम्यो मणिभ्राता मणिमण्डनमण्डितः॥३८।
मन्त्रपो मन्त्रदो मुग्धो मोक्षदो मोक्षवल्लभः।
मल्लो मल्लप्रियो मञ्चो मल्लको मेलनप्रभुः॥३९॥

मल्लिको मल्लिकागन्धी मल्लिकाकुसुमप्रियः।
मालतीशो मघान्नाथोऽमोघमूर्तिर्मघेश्वरः॥४०॥
याचको याज्ञिको यज्ञो यज्ञेशो यज्ञवर्द्धनः।
रमापती रमाधीशो रमेशो रामवल्लभः॥४१॥
धनेशो ध्रुवधूर्धीमान्धिषणो धूम्रलोचनः।
दाता दापयिता दुर्गो दान्तो दान्ताशयो दमः॥४२॥
देवो देवाधिपो दावो दुःखहा दुःखसेवितः।
दरिद्रो दारदो दारो देवतात्मा दमी दयी॥४३॥
दण्डकृद्दण्डहा दीप्तो दीप्तकेशो दयान्वितः।
दार्वीकरो दरी दीर्घो दीपनो दीपवल्लभः॥४४॥
दिगम्बरो दीर्घदंष्ट्रो दक्षिणो दक्षिणोदरः।
दंष्ट्री दंष्ट्रिप्रियो दैत्यो दिव्यो दिव्यपराक्रमः॥४५॥
दैत्यहा दक्षिणार्हश्च दीर्घपृष्ठो दिवाकरः।
घण्टावादी घनरवो घनाभो घूत्करो घनः॥४६॥
घण्टापथी घटो घूको धघ्वकरपरिवारितः।
घणी घर्मोशुरघहा घातहा घातकारकः॥४७॥
घोरो घनाघनोऽर्घीशो घस्मरो घोरघोषवान्।
छलगण्डछलच्छेत्ता छत्रीछातछविश्छली॥४८॥
छलकाक्षो छदो छिन्नश्छुच्छुरीकश्छिदाङ्कुरः।
छन्दश्छन्दप्रियश्छन्दश्छिदुरश्छद्महोछ्रितः ॥४९॥
तपनीयप्रभजटस्तरुणस्तरुणीप्रियः ।
तुन्दिलस्तपनस्थेयस्तोमरस्तोमरप्रियः ॥५०॥
तुष्कतुरुष्कस्तिलभुक् त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः।
त्रिशूलधारी त्रिशीर्षी त्रिपुरश्च त्रिलोकपः॥५१॥
त्रिनेत्रस्त्रिपुरावासस्तेजस्वी त्रिदिवस्पतिः।
त्रिविक्रमस्तृणावर्त्तस्तृप्तस्तृप्तिप्रियस्तमः ॥५२॥
तमोपहस्तिमिस्त्रे शस्त्रिदशस्त्रीश्वरस्तपः।
त्रिनेत्रतनयस्तिग्मस्तमोमूर्तिस्तमोमयः ॥५३॥
तापनस्तोदनस्त्रेतो तारानाथस्त्रिलोचनः।
नित्यो निरञ्जनो नेता नीतिज्ञो नयवल्लभः॥५४॥
नन्दनो निपुणो नम्रोनम्रोऽनेमिर्निमिर्नयः।
नागहारो नागपाशो नित्यकामो नतिप्रियः॥५५॥

निर्ममो नमनो नान्यो नैगमो नैगमेश्वरः।
नित्यक्लिन्नो नित्यनवो निरुद्धो नन्ददीपकः॥५६॥
निर्मलो निर्मलाकारो न्यस्तनिन्दो नदीश्वरः।
नक्षत्रनाथो निगमो निगमारम्भको नवः॥५७॥
निधीशो निरहङ्कारो नानारूपी नमेरुकः।
नास्तिकारी नास्तिकहा निश्चितो निश्चताशयः॥५८॥
निश्चलोऽनेकवदनो नाथो नारायणो नखी।
नरकघ्नो नरकदो नीलो नीलालकाऽनलः॥५९॥
नीलाम्बरो नीलकण्ठो नीलजीमूतसन्निभः।
पण्डितः पञ्चवदनः पञ्चमः पञ्चमप्रियः॥६०॥
पञ्चयज्ञः पञ्चवातः पञ्चवित्तः पविप्रियः।
पञ्चश्लेष्मा पञ्चबाणः पञ्चस्थानः परन्तपः॥६१॥
परमायुः परः पद्मी पद्माशी पद्मवल्लभः।
पद्मनाभः पद्ममुखः पद्मः पद्मासनस्थितः॥६२॥
पद्मजः पद्मनिलयः पद्मगन्धः परात्परः।
पर्वतः पर्वताधारः पारदः पारदप्रियः॥६३॥
पद्मपर्वषुनिलयः पद्माकारसुधान्वितः।
परदारपरः प्रौढः पटुः पाण्डुरलोचनः॥६४॥
पेटभृत्पेटकृत्पेटी पन्नगी पन्नगेश्वरः।
पाण्डुहा पाण्डुरः पिण्डी पञ्चभूतप्रशासनः॥६५॥
पतङ्गः पक्षिराजश्च परलोकप्रदः प्रभुः।
पानदः पानपः पानी पानारुणविलोचनः॥६६॥
पिशाचघ्नः पिशाचेशः पिशिताशी पितामहः।
पिता प्रतापवान्पाशी पाशिनाथः पशुप्रियः॥६७॥
पशुभोक्ता पशुपतिः पशुप्रेष्ठः पशूदरः।
पीनसारिः पिपासार्त्तः पीडाकृत्पीडनाशनः॥६८॥
प्रेतघ्नः प्रेतकुलपः प्रेतवाहः प्रकम्पनः।
प्रेतनाथः प्रेतपूज्यः पीतवासाः प्रजागरः॥६९॥
प्रजापतिः प्रजानाथः परिपूर्णः प्रियोऽप्रियः।
पर्जन्यकृत्प्रशमनः परमः परमास्पदः॥७०॥
प्रसन्नगः प्रतिच्छन्नः प्रतिभाकृत्प्रपूजितः।
प्रमेहघ्नः प्रमेही च प्रमेहकृदथप्रभः॥७१॥

प्रमः प्रमादहा प्रौढः प्रौढिदः प्रौढिवल्लभः।
प्रेमदः प्रमदाप्रेमी प्रमदः प्रमदाप्रियः॥७२॥
प्रकामदः प्रकामेशः प्राणदः प्राणवल्लभः।
प्राणधारः प्रयागश्च प्रयागनिलयप्रदः॥७३॥
परिचारः परिवरः प्रशान्तः प्रतिभानवान्।
प्रेयः प्रेयो वियोगी च प्रमथश्च प्रियम्वदः॥७४॥
सारमेयानुगः सीधुः सीधुः सीधुपवल्लभः।
सावधानः साधुपूज्यः सारमेयधरः समः॥७५॥
सर्वापत्तारणः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः।
सामन्तभद्रः सन्तोषी सत्यः सत्यपराक्रमः॥७६॥
सत्यसङ्घः सत्यवक्ता सत्पदः सत्यवल्लभः।
सत्यभामापतिः शूरः सम्पन्नः सम्पदालयः॥७७॥
सारवान्सागरः सेतुः सेतुकृत्सेतुपालकः।
समुद्रसीमा सामंतः स्मरारिः सत्यसङ्गरः॥७८॥
स्मरः स्मरप्रियः स्मेरः स्मरदः स्मर सुन्दरः।
समिद्धः सम्मदः सिन्धुः सामगः सामगार्चितः॥७९॥
समयः समयाचारः शङ्करप्रियबान्धवः।
सम्मोहदः संशयदः संशयघ्नः समुद्धतः॥८०॥
सोमः सोमधरः सौम्यः सौम्यः शांतजनप्रियः।
सुन्दरः सुन्दराधारसुरापः सुरसः सुरः॥८१॥
सुरासक्तः सुगमोदी सुरापालः सुराप्रियः।
स्वर्गः स्वर्गपतिः स्वर्गी स्वर्गदः स्वर्गवल्लभः॥८२॥
सुखी सुखाकरः सौख्यसिन्धुः सिन्धुरनायकः।
सारस्वतः स्वानुभवः स्वानुभावस्तनो ध्रुवः॥८३॥
स्वयम्भूः कुसुमामोदी स्वयम्भूकुसुमप्रियः।
समसर्वतोभद्रः सर्वसत्त्वः सरोवरः॥८४॥
सारीसरीसृपाधीशः समाराध्यः समामयः।
सन्तानदः सत्त्वदाता सरोजाक्षः सरोजभूः॥८५॥
सर्वासिद्धिप्रदः सारी सरोजनयनप्रियः।
सुपर्वनाथः सर्वज्ञः सर्वगः सर्वदीपनः॥८६॥
श्मशानवासी स्तम्भी च सर्पयुक्तः सहस्त्रदृक्।
सहस्त्रदो सहस्त्राघ्रिः सहस्त्रकिरणप्रभः॥८७॥

शौरिः शम्भुसुतः शम्भुः शिवः शूली शवासनः।
श्रीकण्ठः क्षितिकण्ठश्च श्रीपतिः श्रीनिकेतनः॥८८॥
श्रेयोनिधि शङ्करश्च सर्वः सर्वात्मजः शमः।
शतानन्दः शशधरः शबरः शबरीसुतः॥८९॥
शोभनः शोभनावासः शोकहो शोकनाशनः।
शतानन्दः शूलपाणिः शुचिः शौचपरः शुभः॥९०॥
शिखिसखः श्रुतिधरः श्रुतिगीतः श्रुतिप्रियः।
शुद्धाशयः शुद्धिकरः शुद्धः शुद्धजनप्रियः॥९१॥
शोणः शोणाधरः शोणनेत्रः शोणाङ्गरगिभृत्।
शीतः शीताशयः शौडः शौण्डिकः शौण्डिकप्रियः॥९२॥
शाड्यहा शाड्यदः शार्ङ्गी शरी शरणदः शिशुः।
शुद्धनीलाञ्जनप्रख्यः शान्तिदः शान्त इत्यपि॥९३॥
शकः शाकम्भरीयश्च शङ्कितः शङ्किताननः।
हरो हरिर्हयग्रीवः हयारिकुसुमप्रियः॥९४॥
हेरम्बो हयमेधी च हेषणो हरवल्लभः।
हव्यवाहो हुतवहो हारि हारीतपूजितः॥९५॥
हिंस्त्रहा हिंसत्रयो हन्तिर्हेलानुश्च हलायुधः।
हिरण्यरेता हरिणो हरिणाक्षो हरिप्रियः॥९६॥
हिमो हिमालयचरो हिमधामा विभूषणः।
हेममाली हेमकान्तिर्हेमाचलकृतालयः॥९७॥
हारको हारशाली च होता होमो हुतिर्हयः।
यशप्रदो यशोवृद्धो यशस्वी यशसां निधिः॥९८॥
यज्वा यजनकामश्च यजुर्यजनतत्परः।
यमो यमीयध्वंसी यमवन्द्यो यमान्तकृत्॥९९॥
यज्ञभोक्ता यज्ञकरो यवनो यवनाद्धतः।
यवप्रियो यौवनाढ्यो युवतीवल्लभो यवी॥१००॥
यामलो यामलाधीशो यशोदानन्दवर्धनः।
योद्धा युद्धप्रियो यूपो यौक्तिको योगिनीपतिः॥१०१॥
योगी योगीश्वरो योक्ता योगिराड्योगिसेवितः।
रतिप्रदो रतिकरो रतिनाथो रतिप्रदः॥१०२॥
रमणीयो रमानाथो रजनीशो रमेश्वरः।
रससिद्धीश्वरो रम्यो रसज्ञो रसपूजितः॥१०३॥

रञ्जनो रोचनो रागो रोगो रोगकुलान्तकृत्।
रासो रासप्रियो रन्ता रङ्गो रङ्गकृतास्पदः॥१०४॥
रक्तपो रक्तनयनो रक्तदो रक्तनाशनः।
रुरु रुद्रो रौद्रमुखो राजा राजीववर्द्धनः॥१०५॥
रसो रतिरसाधारो रसालो रविलोचनः।
लोकनाथो लोकचक्षुर्ललितो ललितात्मजः॥१०६॥
लम्बोदरो लम्बदंष्ट्रो लोलो लोलविलोचनः।
लोहिताक्षो लोहितपो लालपो ललनाप्रियः॥१०७॥
लेलिहानो ललज्जिह्वो लक्ष्मीनाथो लीलायुगः।
क्षेत्रपालश्च क्षेत्रज्ञः क्षत्रियः क्षेत्रपः पक्ष्मी॥१०८॥
क्षमाधारः क्षौमधरः क्षेमकारी क्षयापहः।
क्षपापतिधरः क्षुद्रः क्षान्तः क्षान्तजनप्रियः॥१०९॥
क्षितिदः क्षतिदः क्षौद्रः प्रियः क्षीरप्रियोऽक्षयः।
क्षोभहा क्षोभदोऽक्षोभ्यः क्षिप्रसिद्धप्रदो क्षुपः॥११०॥
क्षेमकरः क्षौद्रपिङ्गः क्षामशत्रुः क्षुधाकरः।
क्षोभणः क्षीरदः क्षीरी क्षवकः क्षवदोषहा॥१११॥
आन्त्रयज्ञोपवीतीशोऽजगरोऽग्निरहो रहः।
इन्दुरिन्द्रिदिरो बिन्दुरिद्रेदिरो बिन्दुरिन्द्रेभः इन ईश्वरः॥११२॥
डिम्भऊर्जस्वलः स्वस्तिः स्वाहाभुग्भुरुरर्जुकः।
ज्ञानचक्षुश्चोर्ध्वरिता दशदिक्पालपालकः॥११३॥
शाकिनेयो डाकिनेयो राकिनेयस्तथैव च।
काकिनेयो लाकिनेयो डाकिनेयोऽपि हाकिनिः॥११४॥
पञ्चाशद्वर्णतनुकः पडाधारः षडध्वकः।
अष्टाधारोऽष्टमूर्तिश्च ब्रह्मरन्ध्रकृतालयः॥११५॥
सहस्त्रपत्रभवनो द्विपत्रपरमास्पदः।
षोडशारकृतावासी द्वादशच्छदमण्डनः॥११६॥
दशारकृतविश्रामः षडारविहितादरः।
चतुर्दलविकासी च चतुरस्त्रविनोदनः॥११७॥
इडाधारः सुषुम्णेशः पिङ्गलापरिपालकः।
संसारसाखी चिद्रूपः परमात्मा सदाशिवः॥११८॥
पञ्चविंशतितत्त्वात्मा विकृतः प्रकृतेः परः।
अव्यक्तश्चाव्ययो हंसो नादः सत्त्वात्मको विभुः॥११९॥

एतद्बटुकनाथस्य नाम्नां साग्रं सहस्रकम्।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय मध्याह्ने वा निशामुखे॥१२०॥
मासत्रयाद्ददात्यस्मै श्रीमद्बटुकभैरवः।
मनोऽभिलषितं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥१२१॥
पुरश्चरणमेतस्य नामसंख्यं प्रकीर्तितम्।
तद्दशांशं प्रजुहुयात्संस्कृते हव्यवाहने॥१२२॥
तन्दुलैस्तु त्रिमध्वक्तैस्तिलमिश्रेरतन्द्रितः।
तर्पणं तद्दशांशेन प्रोक्तद्रव्येण कल्पयेत्॥१२३॥
मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम्।
दक्षिणा तु यथाशक्ति कल्पनीया मनीषिभिः॥१२४॥
एवं कृते भवेत्सिद्धिः स्तोत्ररुपोमनुस्त्वयम्।
छागचर्मासनासीनोऽरिष्टबीजाक्षमालया ॥१२५॥
त्रिसुगन्धिसुगन्धास्यो मुदितात्मा तु साधकः।
पर्वताग्रे तथारण्ये पुण्ये चोपवनेऽथवा॥१२६॥
सिन्धुसम्भेदके वापि गोष्ठे वा बिल्वमूलके।
शिवालये गृहे शून्ये दरदारुणितान्तरे॥१२७॥
यथोक्तविधिनाभ्यर्च्य देवं पश्चाज्जपेन्मनुम्।
स्तोत्ररुपमिदं प्रातरारभ्यार्द्धदिनावधि॥१२८॥
ततो हविष्यभोजीस्यात्पौरश्चरणिको नरः।
होमे तु चतुरस्त्रंस्यात्कुण्डसर्वाङ्गसुन्दरम्॥१२९॥
प्रतिनामप्रजुहुयादुक्तद्रव्येण पण्डितः।
ततः प्रयोगान्कारये द्वान्दितार्थसमृद्धिदान्॥१३०॥
करभैरयुतं हुत्वा कवितामाप्नुयाद् व्रती।
कमलैरचलां लक्ष्मीं वटकैरन्नसम्पदाम्॥१३१॥
हरिद्राक्तान्धसा वश्यं जगदेतच्चराचरम्।
निम्बपत्रकटुस्नेहराजि कालवर्णैर्नरः॥१३२॥
हुत्वा मारयनिक्षिप्रं वैरिणो दुर्जनानपि।
सिन्दुरादेस्तु होमेन मोहयेदीप्सिताङ्गनाम्॥१३३॥
वादेषु स्तभंयेद्वाचं शत्रूणां दधिहोमतः।
तत्तद्रोगोक्तभैषज्यैस्तत्तद्रोगप्रणुत्तये ॥१३४॥
डाकिनीग्रहभूतादेः प्रशान्त्यै माषहोमतः।
प्रत्यहं यः पठेदेतन्मनुजः सुसमाहितः॥१३५॥

वत्सरानन्तरं तस्य दर्शनादेव भूभुजः।
वशीभवन्ति सहसा सामात्याः किङ्करा इव॥१३६॥
स्थिरीभवति तद्गेहे चञ्चलापि त्वचञ्चला।
मासत्रयस्य पठनादपस्मारादयो गताः॥१३७॥
नश्यन्त्येव न सन्देहः सत्यं मम वचो यदि।
निर्धनो धनमाप्नोति सुतार्थी लभते सुतान्॥१३८॥
सद्यत्कार्यं समुद्दिश्य पठेद्देतदवाप्नुयात्।
नारीभये वह्निभये भूमिपालभयेऽपि च॥१३९॥
परिपन्थिभये घोरे महासंग्रामसङ्कटे।
अरण्यसङ्कटे चैव पठेत्रिस्त्रिरनन्यधीः॥१४०।
तत्तद्भावात्प्रमुच्येत सत्यं सत्यं सुरेश्वरि।
इदं रहस्यं परमं पवित्रं पापनाशनम्॥१४१॥
अपमृत्योश्च शमनं सर्वाऽमङ्गलनाशनम्।
बन्दीप्रमोचनं पुंसां दुःस्वप्नविनिवारणम्॥१४२॥
शृणु पार्वति यत्नेन विशेषेणास्य यत्फलम्।
अलोहप्रहरणं सूक्ष्मं महाक्लेशनिवारणम्॥१४३॥
स्तोत्रमेतत्परिध्वंसे शस्त्रं हि मम प्रेरितम्।
तथा वशीकरं राज्ञामप्रयोगमचूर्णकम्॥१४४॥
तथापस्मारभूतादेर्नाशनं वाथ नौषधम्।
सत्यं वदामि देवेशि लभते भैरवकृपा॥१४५॥

श्रीमद्वटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रं चतुर्थं परिपूर्णम्

❀

श्रीमद्वटुकभैरवपटलम्

दृष्ट्वा तन्त्राण्यनेकानि रामप्रियेन धीमता।
श्रीमद्वटुकनाथस्य पटलं वक्ष्यतेऽधुना॥१॥

अनेक तन्त्रों का अध्ययन करके बुद्धिमान् रामप्रिय श्रीमान्वटुकनाथ के पटल का उल्लेख कहते हैं॥१॥

कदाचिद्गिरिजा शम्भुं पप्रच्छोपासनाविधिम्।
येनेदं सर्वलोकानां मनेप्सितफलं भवेत्॥२॥

हिमालय की पुत्री गिरिजा अपने स्वामी शम्भु से श्रीमद्वटुकनाथ की उपासना विधि को पूछा, जिससे समस्त लोक में साधकों की कामनाओं की पूर्ति होती है॥२॥

श्रीपार्वत्युवाच

प्राणनाथ जगन्नाथ जगदादिजगन्मय।
शम्भो शङ्कर देवेश वटुकाराधनं वद॥३॥

श्रीपार्वती कहती हैं, हे जगन्नाथ! प्राणनाथ! जगत् के आदि! जगत् मय! देवों के देव शम्भु! शिव! शङ्कर! श्रीमद्वटुकभैरव की आराधना विधि हमसे कहें॥३॥

एकादशसहस्रं तु भजनं हि त्वयोदितम्।
विधिस्तस्य विशेषेण कथित्वं शङ्कराधुना॥४॥

हे शङ्कर! आपने वटुकभैरव के एकादश सहस्र नाम जप बतलायें हैं उसकी विधि विशेष रूप से पुनः कहें॥४॥

शिव उवाच

सम्यक् पृष्टं त्वया देवि लोकदुःखविमोचनम्।
मया वटुकरूपं हि धृतं सर्वसुखावहम्॥५॥

शिव ने कहा, हे पार्वती देवि! आपने अच्छा प्रश्न किया, हमने ही लोक में साधकों को दुःख से विमोचन कराने तथा सभी को सुख प्रदान करने के लिए, वटुकभैरव का रूप धारण किया॥५॥

अन्ये देवास्तु कालेन प्रसन्नाः सम्भवन्ति हि।
वटुकः सेविंतः सद्यः प्रसीदति ध्रुवं शिवे॥६॥

अन्य देवता तो बहुत काल तक उपासना करने पर प्रसन्न होतें हैं, लेकिन वटुकभैरव साधकों द्वारा अल्पकाल की उपासना करने मात्र से ही प्रसन्न हो जातें हैं॥६॥

दुःखे च सेवितः शीघ्रं दुःखं नाशयते क्षणात्।
सुखे च सेवितो नित्यं सुखं वर्द्धयते बहु॥७॥

दु:खों के उपस्थित होने पर साधक द्वारा साधना करने से शीघ्र ही समस्त दु:खों का उसी क्षण नाश हो जाता है, सुख में सेवन करने से नित्य सुख का वर्द्धन होता है॥७॥

तस्मत्सेव्यो नरैश्चायं सर्वकामफलाय वै।
सेवोपायं प्रवक्ष्यामि यथा सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्॥८॥

इस लिए मनुष्य मात्र को अपने समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए वटुकभैरव की सेवा करनी चाहिए, इनके सेवा का उपाय कहते है जिससे साधक को जल्दी ही कार्य की सिद्धि प्राप्त होती है॥८॥

तं तं विधिं च ते वच्मि यं यं कृत्वा नरः शुचिः।
नानाविधं फलं प्राप्य विजयी जायते सदा॥९॥

जिन जिन विधियों को करने से मनुष्य शुचिता को प्राप्त करता है उन उन विधियों को कहता हूँ, जिससे भिन्न भिन्न प्रकार के फल को प्राप्त करता है तथा सदैव विजय प्राप्त करता है॥९॥

ब्राह्मं मुहूर्ते सम्प्राप्य समुत्थाय गुरुं स्मरेत्।
स्वीयं नित्यविधिं कृत्वा वटुकोपासनं चरेत्॥१०॥

प्रात: काल ब्राह्म मुहूर्त में निद्रा त्याग कर गुरु का ध्यान कर अपने नित्य नैमित्तिक कर्म को पूर्ण कर श्रीमद्वटुकभैरव की उपासना करनी चाहिए॥१०॥

शुचौ देशे स्वयं स्थित्वा पद्मासनं विधाय च।
पीठे पलाशजे वाथ शमिजे ता!म्रजे शिवे॥११॥

हे शिवे! शुद्ध स्थान पर स्वयं ताम्र, पलाश अथवा शमी से निर्मित पीठ पर पद्मासन से बैठकर जप करना श्रेष्ठ होता है॥११॥

जाम्बवे वेतसे जाते स्थित्वा वै जपमाचरेत्।
अथ मृगत्वञ्च श्रेष्ठं व्याघ्रचर्म सुशोभनम्॥१२॥

जामुन, वेत आदि से निर्मित वेदी पर मृगचर्म अथवा व्याघ्रचर्म के आसन पर आसीन होकर जप करना श्रेष्ठ होता है॥१२॥

ऊर्णामयं विचित्रं वा स्थापयेत्तु पुरस्तदा।
सप्तधातुमये पीठे ताम्रजे वा पटे शुभे॥१३॥

ताम्रपट अथवा सप्तधातु के पीठ पर विभिन्न वर्णों के ऊन अथवा कपास से निर्मित आसन पर आसीन होकर जप करना शुभ होता है॥१३॥

सन्स्थाप्य तत्र तद्यन्त्रं ध्यात्वा तत्र वटुं प्रिये।
एतद्यन्त्रं प्रवक्ष्यामि यन्त्रे देवं प्रपूजयेत्॥१४॥

पूजन स्थान पर श्रीमद्वटुकभैरव के यन्त्र को स्थापित कर ध्यान करना चाहिए, श्रीमद्वटुकभैरव के यन्त्र को बतलाता हूँ, यन्त्र पर ही देवता का पूजन करना चाहिए॥१४॥

त्रिकोणं च पुरा कृत्वा षट्कोणं च ततो न्यसेत्।
ततश्च वलयं कृत्वा चतुष्कोणं ततश्चरेत्॥१५॥

सर्व प्रथम त्रिकोण का निर्माण कर उसके ऊपर षट्कोण निर्मित कर उसके बाहर वलय का निर्माण कर चतुष्कोण का निर्माण करे॥१५॥

मध्यदलं समारभ्य मन्त्राक्षराणि पूरयेत्।
उपरीतानि सव्येन सर्वाणि पूरयेत्क्रमात्॥१६॥

मध्य दल से आरम्भ कर मन्त्राक्षरो को क्रमशः लिखे तथा स्थापित कर, ऊपर परिक्रमा क्रम से सबका पूजन करे॥१६॥

उपरीतदले तत्र लक्ष्मीबीजं न्यसेत्तदा।
दिक्पालांश्च समारोप्य कोणेऽष्टभैरवं न्यसेत्॥१७॥

ऊपर के दल पर लक्ष्मीबीज(श्रीं) को लिखे तथा स्थापित कर, अष्टदल के कोणों पर परिक्रमा क्रम से अष्टभैरवों को लिख कर दिग्पालों को लिखे तथा स्थापित करे॥१७॥

एवं यन्त्रञ्च सम्पूज्य स्वस्थो भूत्वा जपेन्नरः।
आपदुद्धरमन्त्रस्य मूलविद्यां श्रृणु प्रिये॥१८॥

इस प्रकार से यन्त्र का पूजन कर, स्वस्थ प्रसन्न मन से मनुष्य जप करे, हे देवि! आपदुद्धारक मन्त्र की मूल विद्या के मन्त्रोद्धार को सुनें॥१८॥

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य देवीप्रणवमुद्धेत्।
वटुकायेति वै पश्चादापदुद्धरणाय च॥१९॥

सर्व प्रथम प्रणव का उद्धार करे, पश्चात् देवी का प्रणव (ह्रीँ) उद्धृत करे, पश्चात् वटुकाय पद का उद्धार करने के बाद आपदुद्धारणाय पद उद्धृत करे॥१९॥

कुरू द्वय ततः पश्चाद्वटुकाय पुनर्वदेत्।
देवीप्रणवमुद्धृत्य मंत्रोद्धारमिमं प्रिये॥२०॥

पश्चात् कुरू पद का दोबार उद्धार करने के बाद पुनः वटुकाय पद का उद्धार करने के पश्चात् पुनः देवी का प्रणव (ह्रीँ) उद्धृत करने से हे प्रिये! श्रीमद्वटुकभैरव का मन्त्रोद्धार होगा॥२०॥

एकविंशतिवर्णास्तु मन्त्रे सत्यं प्रकाशिताः।
लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं होमं कुर्याद्यथाविधिः॥२१॥

श्रीमद्वटुकभैरव का इक्कीस अक्षर का मन्त्र सत्य को प्रकाशित करता है इसका मन्त्र का न्यूनतम एकलक्ष जप तथा दशांश हवन शास्त्र निर्दिष्ट विधि से करना चाहिए॥२१॥

मन्त्राक्षराणां संख्याकैस्तन्तुभिर्ब्रह्मसूत्रजैः।
वर्त्तिं कृत्वा घृतेनैव दीपं तत्र प्रदापयेत्॥२२॥

मन्त्र में जितने भी अक्षर है उतनी सङ्ख्या के तन्तुओं से ब्रह्मसूत्र का निर्माण कर उतने ही तन्तुओं की बत्ती बना कर॥२२॥

तैलेन वा प्रकुर्वीत दीपदानविधानतः।
बलि न्यासविधिं कृत्वां ध्यानं कुर्याद्यथोक्तवत्॥२३॥

तेल या घी से विधान पूर्वक दीपदान करे, न्यासादि तथा बलिदानादि करके यथोक्त विधिवत् ध्यान करे॥२३॥

यथाक्रमं तथा ध्यानं कारयेत्साधकोत्तमः।
क्रुरकार्येषु सर्वेषु ध्यानं वै तामस स्मृतम्॥२४॥

उत्तम साधक पूजा में जो क्रम बतलाये गये हैं उसी क्रम से ध्यान करे, क्रूर कार्य में सभी को तामस ध्यान करना चाहिए॥२४॥

वश्ये विद्वेषणे स्तम्भे राजसं ध्यानमीरितम्।
सात्त्विकं शुभकार्येषु ध्यानभेदः समीरितः॥२५॥

वशीकरण, विद्वेषण और स्तम्भन कार्य में राजस ध्यान करना चाहिए तथा शुभ कार्यों में सात्त्विक ध्यान करना चाहिए॥२५॥

बालसूर्यांशुसङ्काशं राजसं ध्यानमुच्यते।
सात्त्विकं श्वेतवर्णं च कृष्णं तामसमुच्यते॥२६॥

वाल सूर्य के समान अरुण वर्ण का राजस ध्यान करना चाहिए, सात्त्विक ध्यान श्वेत वर्ण का करना चाहिए तथा तामस ध्यान कृष्ण वर्ण का करना चाहिए॥२६॥

सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थं राजसं ध्यानमुच्यते।
सात्त्विकं मुक्तिदं प्रोक्तं शोकनाशाय तामसम्॥२७॥

समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए राजस ध्यान करना चाहिए, मुक्ति की कामना से सात्त्विक ध्यान करना चाहिए तथा शोक के नाश के लिए तामस ध्यान उत्तम साधक को करना चाहिए॥२७॥

चौरशत्रुक्षयकरं विषप्रलयनाशनम्।
ग्रहभूतपिशाचानां सर्वाविघ्नविनाशनम्॥२८॥

चोर एवं शत्रूओं का क्षय करने के लिए, विष आदि के प्रकोप की समाप्ति के लिए, ग्रह, भूत पिशाचादि कृत समस्त विघ्नों के विनाश के लिए॥२८॥

एवं ध्यात्वा विशेषेण कृष्णवर्णेप्रशस्यते।
त्रिनेत्रं रक्तवर्णे च वरदाभयहस्तकम्॥२९॥

रक्तवर्ण तीन नेत्रोंवाले, विशेष रूप से कृष्ण वर्ण श्रीमद्वटुकभैरव का तामस ध्यान करना चाहिए॥२९॥

सव्ये त्रिशुलमभयं कपालं वरमेव च।
रक्तवस्त्रपरीधानं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥३०॥

दाहिने हाथ में त्रिशूल तथा अभय मुद्रा तथा वायें हाथ में कपाल और वर मुद्रा धारण किये हुए, रक्त वस्त्र तथा रक्त माला पहने हुए, रक्त गन्ध का अनुलेपन किये हुए ध्यान करना चाहिए॥३०॥

नीलग्रीवञ्च सौम्यञ्च सर्वाभरणभूषितम्।
राजसं सात्त्विकं चैव ध्यात्वा मृत्युञ्जयो भवेत्॥३१॥

नील ग्रीवावाले, सौम्य तथा समस्त आभूषणों से सुसज्जित राजस तथा सात्त्विक ध्यान करके साधक मृत्युञ्जय हो जाता है॥३१॥

तुषारकर्णिकाभासं मायारूपमनन्तकम्।
मूर्धि खण्डेन्दुसकलं त्रिनेत्रं शान्तलोचनम्॥३२॥

तुषार की कर्णिका की आभावाले, माया रूप तथा अनन्त रूपोंवाले, मूर्धा में समस्त कलाओं के सहित चन्द्रमा धारण किये हुए तथा तीन नेत्रोंवाले तथा शान्त भाव से युक्त श्रीमद्वटुकभैरव का ध्यान करना चाहिए॥३२॥

सर्वकारणकर्तारं द्विभुजं रत्नभूषितम्।
कपालं वामहस्ते च सूक्ष्मदण्डं च दक्षिणे॥३३॥

समस्त कारणों के कर्त्ता, दो भुजाओंवाले, रत्नों से विभूषित, वाये हाथ में कपाल धारण किये हुए, दक्षिंण हाथ में सूक्ष्म दण्ड धारण किये हुए श्रीमद्वटुकभैरव का ध्यान करना चाहिए॥३३॥

पादनुपुरसम्युक्तं छिन्नशीर्षविभूषितम्।
सर्पमालासमायुक्तं हस्तोरुस्थूलजानुषु॥३४॥

पैरों में नूपुर पहने हुए, कटे हुए शिर की माला धारण किये हुए, सर्प की माला से विभूषित, स्थूल हाथ और जानुओंवाले श्रीमद्वटुकभैरव का ध्यान करना चाहिए॥३४॥

आन्त्रमालासमायुक्तं सर्वाभरणभूषितम्।
एवं ध्यात्वा जपेद्देवं सर्वमृत्युञ्जयो भवेत्॥३५॥

आतों की माला पहने हुए, समस्त आभूषणों से सुसज्जित स्वरूप का जो साधक ध्यान करता है वह समस्त मृत्यु को जीत लेता है॥३५॥

सर्वकामप्रदातारं सर्वयोगफलप्रदम्।
सर्वज्ञानस्य सप्राप्तिं सात्त्विकं चोत्तमं भवेत्॥३६॥

समस्त कामनाओं को पूरा करनेवाला, समस्त शुभ योगों को फलवान करनेवाला, समास्त ज्ञान को प्राप्त करानेवाला, सात्त्विक ध्यान सर्वोत्तम होता है॥३६॥

श्वेतवर्णे चतुर्बाहुं जटामुकुटधारिणम्।
भुजङ्गपाशहस्त च हस्ते दण्डकमण्डलुम्॥३७॥

श्वेत वर्ण, चार भुजा, जटाओं का मुकुट धारण किये हुए, वायें हाथ में सर्प तथा पाश, दाहिने हाथ में दण्ड तथा कमण्डलु धारण किये हुए ध्यान करना चाहिए॥३७॥

शुक्लयज्ञोवीतञ्च शुक्लकौपीनवाससम्।
शुक्लवस्त्रपरीधानं श्वेतमालानुलेपनम्॥३८॥

शुक्ल वर्ण का यज्ञोपवीत धारण किये हुए, शुक्ल वस्त्र का कौपीन धारण करनेवाले शुक्ल वस्त्र पहने हुए, श्वेत माला को पहने हुए ध्यान करना चाहिए॥३८॥

त्रिनेत्रं नीलकण्ठञ्च मुक्ताभरणभूषितम्।
विद्याकामोमुक्तिकामो ध्यायेच्चैव विशेषतः॥३९॥

तीन नेत्रोंवाले, नीले कण्ठवाले, मुक्तामणि के आभूषणों से सुसज्जित श्रीमद्वटुकभैरव का विद्या तथा मुक्ति की कामना के लिए विशेष रूप से ध्यान करना चाहिए॥३९॥

वर्णेन नीलमेवाभं मुक्तकेशं त्रिनेत्रकम्।
दिगम्बरञ्च रौद्रञ्च शिरोमालाविभूषितम्॥४०॥

नील वर्ण की आभावाले, खुले हुए केशवाले, तीन नेत्रवाले, दिगम्बर(समस्त दिशाओं में व्याप्त), रौद्र(विकराल) मूर्ति, शिर पर मालाओं को धारण किये हुए श्रीमद्वटुकभैरव का ध्यान करना चाहिए॥४०॥

किङ्कणीमालया युक्तं भीमरुपं भयापहम्।
नागं पाशञ्च घण्टाञ्च वरदं वामहस्तके॥४१॥

किङ्किणी और मालाओं से युक्त, विकराल रूपवाले, भक्तों के भय को समाप्त करनेवाले, वायें हाथ में नाग, पाश, घण्टा तथा वरमुद्रा धारण किये हुए ध्यान करना चाहिए॥४१॥

खड्गं त्रिशुलडमरूमभयं दक्षिणे करे।
सुशब्दं भीमनादं च सर्वपुष्पैरलङ्कृतम्॥४२॥

दाहिने हाथ में खड्ग, त्रिशूल, डमरू तथा अभय मुद्रा धारण किये हुए, सुस्पष्ट सुन्दर शब्दों से विशाल नाद करनेवाले, विभिन्न प्रकार के पुष्पों से अलङ्कृत रूप का ध्यान करना चाहिए॥४२॥

सर्वाभरणकर्त्तारं सर्वव्याधिविनाशनम्।
अन्ये वै ध्यानभेदाश्च स्तवराजे प्रकीर्तिताः॥४३॥

समस्त भक्तों का भरण करनेवाले, समस्त व्याधियों का विनाश करनेवाले, श्रीमद्वटुकभैरव का अन्य ध्यान स्तवराज में प्रकाशित है॥४३॥

पूर्वोक्तस्य च मन्त्रस्य बृहदारण्यको ऋषिः।
अनुष्टुपछन्दइत्युक्तं भैरवो देवता शिवे!॥४४॥

पूर्व में कहे गये मन्त्र का बृहदारण्यक ऋषि है, अनुष्टुप्छन्द है, हे शिवे! इस मन्त्र के भैरव देवता हैं॥४४॥

शक्तिबीजञ्च शक्तिश्च आकीलकमुदाहृतम्।
आद्यक्षरयुगं देवि पञ्चह्रस्वान्वितं कुरु॥४५॥

इस महामन्त्र के शक्ति तथा बीज के लिए शक्ति से कीलक तक प्रसन्नता पूर्वक बताता हूँ, हे देवि! आद्य अक्षर के योग से पञ्च ह्रस्व से समन्वित कर॥४५॥

सत्वादिप्रातिलोम्येन नपुंसकविवर्जितम्।
एतद्बीजद्वयाद्यास्तु न्यस्तव्याः पञ्चमूर्त्तयः॥४६॥

पञ्च ह्रस्व का आरम्भ के लोम प्रतिलोम नपुंसक विवर्जित वर्णों को बीज के साथ योजित कर दोनों बीजों से पञ्चमूर्ति का न्यास करना चाहिए॥४६॥

अङ्गुष्ठादिष्वङ्गुलीषु मूर्द्धस्य हृदयेषु च।
सगुह्यचरणेष्वेवमूर्द्धास्ये दक्षकर्णके॥४७॥

अङ्गुष्ठादि अङ्गुलियों, मूर्द्धा, हृदय, गुह्य स्थान, दानों चरणों, ऊपर, मुख और दाहिने कान में न्यास करना चाहिए॥४७॥

वामकर्णे च चूडाधस्तूर्ध्वपूर्वातकोपमः।
पश्चिमेऽपि च वक्त्रेषु मूर्तयस्ता महेश्वरि!॥४८॥

वाये कान, चूडाधः(शिखा स्थान के नीचे) ऊपर, आगे, पीछे, दहिने, बायें पञ्चवक्त्र मूर्ति का न्यास करना चाहिए॥४८॥

ईशानाख्यस्तत्पुरूषोऽघोरो देवि! तृतीयकः।
वामदेवश्चतुर्थः स्यात्सद्योजातस्तु पञ्चमः॥४९॥

हे देवि! ईशान प्रथम, तत्पुरुष द्वितीय, अघोर तृतीय, वामदेव चतुर्थ, सद्योजात पाँचवीं मूर्ति हैं॥४९॥

पुनराद्यर्णयुगलं षड्दीर्घस्वरभेदितम्।
कृत्वा तैस्तु षडङ्गानि जातियुक्तानिकल्पयेत्॥५०॥

पुनः आद्य युगल षड्दीर्घ स्वर से युक्त कर षडङ्गों में न्यास करना चाहिए॥५०॥

देव्युवाच

देवदेव जगन्नाथ शम्भो त्रैलोक्यनायक।
भैरवस्य विधिर्भूयो ममाचक्ष्व महामते॥५१॥

देवि कहती है, हे देव देव जगन्नाथ!, शम्भु!, त्रिलोक के नायक!, महामति! भैरव की आराधना विधि हमें बतायें॥५१॥

येन कार्याणि सिद्ध्यन्ति साधकानां निरन्तरम्।
सुगोप्यमपि देवेश विधिं प्रब्रूहि शङ्कर॥५२॥

जिससे साधकों के कार्य निरन्तर सिद्ध होते हैं वे कार्य यदि गोप्य भी हो तो हे देवेश शङ्कर! उन विधियों को बतायें॥५२॥

यतोऽहं ते प्रिया देव सदावर्ते निरन्तरम्।
ततः कृपां समाधाय विधिं कथय शोभनम्॥५३॥

यदि हम आपकी प्रिया है और सदा आपकी प्रसन्नता के लिए निरन्तर व्रत किया हो तो हे देव! कृपाकर उन शोभायमान विधियों को हमें बतायें॥५३॥

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि वटुकस्य महात्मनः।
विधानं परमं गोप्यं ब्रह्मादीनां सुदुर्लभम्॥५४॥

शिव ने कहा। हे देवि! हम ब्रह्मादि देवताओं के लिए भी दुर्लभ महात्मा श्रीमद्वटुकभैरव के परम गोप्य विधान कहता हूँ॥५४॥

मन्त्रेणैव सुसङ्क्षेपात्कथयिष्यामि वल्लभे।
येन विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं साधयेत्सुधीः॥५५॥

हे वल्लभे! सङ्क्षेप में सुन्दर विधि को कहता हूँ जिसके ज्ञान मात्र से त्रैलोक्य में बुद्धिमान साधक संसार में अपने कामनाओं को पूरा कर लेता है॥५५॥

एकदा देवदेवेशि तपसे मन्दराचलम्।
गतोऽहं परमानन्दान्मूलप्रकृतिमीश्वरीम्॥५६॥

हे देव देवेशि! एक बार हम मन्दराचल पर परमानन्द मूल प्रकृति ईश्वरी की तपस्या में प्रवृत्त था॥५६॥

चक्रे परमसन्तुष्टां तपसा भवितात्मना।
साकाशरूपिणी देवि! प्रोवाच वचनं मुदा॥५७॥

हमरे तप से परम सन्तुष्ट होकर आकाश रूपिणी परमात्म देवी ने हमसे प्रसन्नता पूर्वक कहीं॥५७॥

तुष्टाहं शङ्कर प्रीता वरं वरय दुर्लभम्।

शिव उवाच

वटुकस्य विधानं मे परमं भक्तितो वरम्॥ ५८॥

हे शिव शङ्कर हम अपके तप से प्रसन्न हैं आप दुर्लभ वर को हमसे कहें। तब शिव ने कहा। हे देवि! परम भक्तिमान महात्मा श्रीमद्वटुकभैरव के उपसना का विधान कहें॥५८॥

परमाशय मन्त्रस्य येन सिद्धयति सर्वथा।
मनोरमाणि मन्त्रस्य सर्वकार्याणि साम्प्रतम्॥५९॥

हे देवि! जिनसे सर्वदा समस्त कार्य सिद्ध होतें हैं, उस मनोरम मन्त्र का परम आशय कहें॥५९॥

इति वाक्यञ्च मे श्रुत्वा मूलभूतासनातनी।
उवाच यादृशं देवि विधानं शृणु वल्लभे॥६०॥

हमारे वाक्य को सुन कर महादेवि ने हमसे जैसा विधान कहा उसको हे वल्लभे! वैसा ही विधान कहता हूँ॥६०॥

वटुकाख्यस्य देवस्य भैरवस्य महात्मनः।
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यैर्वन्दितस्य दयानिधेः॥६१॥

हे दयानिधे! ब्रह्म, विष्णु तथा महेश द्वारा वन्दित महात्मा श्रीमद्वटुकभैरव नाम से ख्यातिलब्ध देवता का आख्यान कहते हैं॥६१॥

न्यासा एकादश प्रोक्ता वटुकाराधने शिवे।
यान्विना नैव सिद्धिः स्याद्वर्षाणामयुतैरपि॥६२॥

श्रीमद्वटुकभैरव के आराधना के लिए एकादश न्यास कहे गये हैं जिनकें बिना मन्त्र की सिद्धि नहीं होती जिनके बिना अयुत वर्ष तक साधना करने से भी सिद्धि नहीं होती है॥६२॥

प्रथमः प्रेतबीजेन सिंहबीजेन चापरः।
क्वाणबीजेन सत्यायाः श्रीबीजेन ततः परम्॥६३॥

प्रथम प्रेतबीज न्यास, द्वितीय सिंहबीज न्यास तृतीय क्वाणवीज न्यास चतुर्थ सत्याबीज न्यास तथा पञ्चम श्रीबीज न्यास कहा गया है॥६३॥

प्राणबीजेन वै न्यासान्कुर्यात्तत्र विचक्षणः।
घण्टाबीजेन च न्यासं विधाय ख्यातिबीजतः॥६४॥

षष्ठ प्राणबीज न्यास, सप्तम घण्टाबीज न्यास, अष्टम ख्यातिबीज न्यास का विधान किया गया है॥६४॥

मूलबीजेन पश्चाच्च न्यास कृत्वा महामतिः।
भ्रामरीबीजतो न्यासं विदध्यात्प्रीतिसम्युतः॥६५॥

नवम मूलबीज न्यास, दशम भ्रामरीबीज न्यास का बुद्धिमान साधक को प्रीति पूर्वक न्यास करना चाहिए॥६५॥

एवं न्यासान्दशादौ तु न करोति नरो यदा।
वाञ्छयेऽहं वरारोहे तावन्मन्त्रो न सिद्धयति॥६६॥

हे वरारोहे! इन दश न्यासों को साधक जबतक नहीं करता है तबतक मन्त्र की सिद्धि नहीं होती है॥६६॥

श्रीदेव्युवाच

देवदेव जगन्नाथ शम्भो संसारतारक।
कृपां कृत्वा न्यासविधिं ब्रूहि येन सुखं भवेत्॥६७॥

श्रीदेवि ने कहा, हे देव देव जगन्नाथ संसार को तारनेवाले शम्भु! कृपाकर न्यास की विधि को कहे जिससे सुख की प्राप्ति होती है॥६७॥

कालेनेह यथाल्पेन साधकः सिद्धिमाप्नुयात्।
गोपनीयो न मन्त्रोऽयं बटुकाख्यो जगद्गुरो॥६८॥

देवि ने कहा, काल के संयोग वश यदि महात्मा श्रीमद्वटुकभैरव के गोपनीय मन्त्र की प्राप्ति हो जाये तो हे जगद्गुरु! साधक को सिद्धि कैसे हो आप बतायें॥६८॥

तथा निरूपय विभो बालकोऽपि यथा लभेत्।

शिव उवाच

शृणु देवि जगत्पूज्ये न्यासबीजानि शोभने॥६९॥

हे विभु! बालक भी सरलता से प्राप्त कर ले उस विधि का निरूपण करें। शिव कहते हैं, हे जगत्पूज्य देवि! न्यास के बीजों को सुनें॥६९॥

प्रकटानि यथा शाश्वत्कथयामि हिताय ते।
स्थानेषु येषु बीजानि न्यस्तव्यानि महात्मभिः॥७०॥

भक्तों के हितार्थ न्यास के समस्त बीजों को जैसे का तैसा शाश्वत् रूप से प्रकटरूप से कहता हूँ। हे महात्मनि! उन बीजों को तत्तद् स्थानों पर न्यास करना चाहिए॥७०॥

तथात्र प्रवदिष्यामि शृणु मत्प्राणवल्लभे।
शिवचन्द्राशिवैः शङ्करवरोपेतैः सबिन्दुभिः॥७१॥

हे प्राण वल्लभे! उन बीज न्यासों को कहता हूँ जो शिव, चन्द्र तथा शिवा का विन्दु सहित शङ्कर का युक्त स्वरूप है॥७१॥

प्रेतबीजं समाख्यातं तेनाङ्गानि न्यसेज्जुषद्।
हृच्छिरश्च शिखानेत्रकवचास्त्रेषु सुन्दरि॥७२॥

जो प्रेत बीज कहे गये है उनको तत्तदङ्गों में न्यास कर स्थापित करना चाहिए, हृदय, शिर, शिखा, नेत्र, कवच, तथा अस्त्रादि स्थानों पर न्यास करना चाहिए।।७२।।

शिवो हः।। चन्द्रः सः।। शक्रस्वर आ।। ह स ह् रैं तथा।।

शिव का अर्थ हकार, चन्द्र का अर्थ सकार, शक्रस्वर का अर्थ आकार सबके संयोग करने पर ह्+स+ह्+रैं=ह्सहैं बीज होगा।

शिवश्चन्द्रौ ससंवर्त्तौ वामनेत्राविभूषितौ।
बिन्दुनादयुतौ देवि न्यासं सान्निध्यकारकम्।।७३।।

शिव, चन्द्र, संवर्त्त को वामनेत्र से विभूषित कर विन्दु नाद से युक्त कर हे देवि! न्यास करना देव सानिध्य करानेवाला होता है।।७३।।

सिंहबीजमिदं देवि विन्यसेत्सुरसुन्दरि।
मूर्ध्नि बाह्वोश्च लिङ्गे च नाभौ हस्ताङ्गुलीषु च।।७४।।

हे देवि सुरसुन्दरि! यह सिंहबीज है जिसका मूर्ध्नि, बाहु, लिङ्ग, नाभि, हाथ तथा अङ्गुलियों में न्यास करना चाहिये।।७४।।

संवर्त्तः क्षः।। तेन हसर्क्षम्।।

सवर्त्त का अर्थ क्षकार के साथ हकार, सकार संयुक्त करने पर ह्स्क्षैं बीज बनेगा।

पादाङ्गुलीषु देवेशि! विन्यसेत्परमेश्वरि।
अजेशोऽग्निसमारूढः शक्रस्वरशशीयुतः।।७५।।

हे देवेशि परमेश्वरि! ह्स्क्षैं बीज का पैर तक अङ्गुलियों न्यास करना चाहिए। अजेश का अग्नि से समायोग कर शक्र स्वर को शशी से योग करके जो बीज बनेगा वह क्वाणबीज कहलाता है।।७५।।

क्काणबीजमिदं प्रोक्तं विन्यसेत्परमेश्वरि।
ब्रह्मरन्ध्रे मुखे नेत्रयुग्मे ग्रीवानसोराप।।७६।।

हे देवेशि परमेश्वरि! इसे ही क्वाणबीज कहते है इसका ब्रह्मरन्ध्र से प्रारम्भ कर मुख, नेत्रयुग्म, ग्रीवादि स्थानों पर न्यास करना चाहिए।।७६।।

अजेशः झकारः।। अग्नी रेफः।। शशी बिन्दुः।। तेन झ्रौं।।

अजेश का अर्थ झकार, अग्नि का अर्थ रेफ, शशी का अर्थ विन्दु सबके संयोग करने पर झ्रौं बीज बनेगा।

कपोलयोश्च चिबुके ब्रह्मरन्धे पुनर्न्यसेत्।
कालः शक्रः शिवः सद्यो बिन्दुनादविभूषिता।।७७।।

दोनों कपोल चिबुक, ब्रह्मरन्ध्र में न्यास करना चाहिए। काल, शक्र, शिव, सद्योविन्दु नाद से विभूषित करने से सत्याबीज होता है।।७७।।

सत्याबीजं महेशनि विन्यसेदङ्कके बुधः।
पादयोर्हस्तयोश्चैव वदने करयोस्तथा॥७८॥

हे महेशानि! बुद्धिमान साधक को सत्याबीज का पैर, हाथ और वदनादि पर न्यास करना चाहिए॥७८॥

कालः मः॥ शक्रः लः॥ शिवः हः॥ सद्यः ओ॥ बिन्दुनादविभूषिता तेन मल हों॥

काल का अर्थ मकार, शक्र का अर्थ लकार, शिव का अर्थ हकार, सद्य का अर्थ ओकार सबकों सङ्कलित कर विन्दुनाद से युक्त करने से मलहों बीज होगा।

नेत्रयोः श्रोत्रयोः कुक्ष्योर्मेढ्रे चैव प्रविन्यसेत्।
अस्थ्याग्निवामकर्णेन्दुनादैर्देवि समीरितम्॥७९॥

मलहोंबीज का नेत्र, श्रोत्र, कुक्षी, मेढ्रादि, में न्यास करना चाहिए। हे देवि! अस्थि, अग्नि, वामकर्ण, इन्दु और नाद युक्त करने पर श्रीबीज निर्मित होगा॥७९॥

महाश्रीबीजमीशनि चिबुकादिषु विन्यसेत्।
चिबुके पादयोश्चैव कर्ण योर्त्हृदये तथा॥८०॥

महाश्रीबीज का चिबुकादि स्थानों दोनों पाद, दोनों कर्ण और हृदय पर न्यास करना चाहिए॥८०॥

अस्थि शः॥ अग्नि रः॥ वामकर्ण ऊ॥ इन्दुनादौ पूर्ववत्॥ तेन श्रूं॥

अस्थि का अर्थ शकार, अग्नि का अर्थ रकार, वामकर्ण का अर्थ ऊकार, इन्दु नाद से युक्त करने पर निर्मित प्राणबीज का न्यास करना चाहिए।

वदने च तथा कर्णद्वये नाभौ च पादयोः।
लोहिताग्न्यासनो वामकर्णेदुभिरथद्रिजे॥८१॥

प्राणबीज का वदन, दोनों कान, नाभि तथा दोनों पैर पर न्यास करना चाहिए। लोहित, अग्नि, आस, वामकर्ण इन्दु और नादविन्दु के योजन से प्राणबीज बनाता है॥८१॥

प्राणबीजीमति ख्यातं हृदिषु प्रविन्यसेत्।
ललाटे च मुखे देवि हृदये नाभिमण्डले॥८२॥

इस बीज को प्राणबीज कहते है जिसका ललाट, मुखदि स्थानों हृदय से नाभिमण्डल पर न्यास करना चाहिए॥८२॥

लोहितः यः ॥ अग्नि रः ॥ आसनः ॥ वामकर्णः ऊ ॥ इन्दु तेन यूं ॥

लोहित का अर्थ यकार, अग्नि का अर्थ रकार, आस नकार, वामकर्ण ऊकार का इन्दु नाद से युक्त करने पर बीज निर्मित होगा।

हृदये पादयोर्देवि हृदये सव्यकुक्षिके।
हृदये वामकुक्षौ च हृदये दक्षपत्तले॥८३॥

हृदय से दोनों पैर तक, हृदय से दाहिने कुक्षि तक, हृदय से वामकुक्षि तक हृदय से वाम पृष्ठ भाग तक तथा हृदय से दक्ष पृष्ठ भाग तक न्यास करना चाहिए॥८३॥

हृदये वामपादे च हृदये विन्यसेत्प्रिये।
कर्तुरीयोग्निमारूढो वामकर्णेन्दुनादवान्॥८४॥

हृदय से वाम पाद, हृदय से चतुर्दिक न्यास करना चाहिए। कर्तुरीय, अग्नि, आरूढ, वामकर्ण को इन्दु नाद से युक्त करने पर घण्टाबीज बनेगा॥८४॥

घण्टाबीजं महादेवि विन्यसेत्पमेश्वरि।
घण्टिकायां च नाभौ च घण्टिकायां हृदिं न्यसेत्॥८५॥

हे महादेवि परमेश्वरि! घण्टाबीज का घण्टिका से हृदय तथा हृदय से घण्टिका तक न्यास करना चाहिए॥८५॥

कर्तुरीयः घः॥ अन्यत् प्राग्वत्॥ तेन घ्रुं॥

कर्तुरीय का अर्थ घकार, अन्य पूर्व के समान है जिसके संयोग करने पर घ्रुं बीज बनेगा।

चण्डेशो वायुवह्नाढ्यो वामकर्णेन्दुनादवान्।
ख्यातिबीजमिति प्रोक्तं विन्यसेद्देवि साधकः॥८६॥

चण्डेश तथा वायु, वह्नि, वामकर्ण को इन्दु नाद से युक्त करने पर ख्यातिबीज कहा जाता है, हे देवि! इस बीज का साधक को न्यास करना चाहिये॥८६॥

चण्डेशः खः वायुर्यः वह्नयादि प्राग्वत् तेन रख्व्यूं।
मस्तके पादयोश्चैव ग्रीवायां नाभिमण्डले॥८७॥

चण्डेश का अर्थ खकार, वायु का अर्थ यकार, वह्नि का अर्थ पूर्व के समान रकार को विन्दु नाद से युक्त करने पर रख्व्यूं बीज बनता है जिसका मस्तक, दोनों पाद, ग्रीवा तथा नाभि मण्डल पर न्यास करना चाहिए॥८७॥

गले च हृदि देवेशि जङ्घयोर्नेत्रयोस्तथा।
कर्णयोर्बाहुयुग्मे च स्तनयोश्च न्यसेत् प्रिये॥८८॥

हे देवेशि! गला, हृदय, दोनों जङ्घा, नेत्र, कर्ण, दोनों बाहु, दोनो स्तन पर न्यास करना चाहिए॥८८॥

प्रणवो मूलबीजं हृद्वदने पादयोः प्रिये।
हस्तयोः कर्णयोर्नासायुग्मे चैव प्रविन्यसेत्॥८९॥

प्रणव का मूलबीज के साथ योजन कर हृदय, वदन, दोनों पाद, दोनों हस्त, दोनों कान, दोनों नासिका पर न्यास करना चाहिए॥८९॥

द्विरण्डरेवतीशक्रचन्द्रहंसत्रिमूर्तिभिः ।
सबिन्दुनादैर्देवेशि भ्रामरीबीजमीरितम्॥९०॥

द्विरण्ड, रेवती, शक्र, चन्द्र, हंस, त्रिमूर्ति के वर्णों कों विन्दु नाद से युक्त करने पर जो बीज निर्मित होता है उसे विद्वान लोग भ्रमरीबीज कहते हैं॥९०॥

द्विरण्डः भः॥ रेवती रः॥ शक्रः लः॥ चन्द्रः सः॥ हंसः ह्रः॥ त्रिमूर्तिः ई॥ बिन्दुनादौ॥ प्राग्वत्॥ तेन। भ र ल स हीं॥

द्विरण्ड का अर्थ भकार, रेवती का अर्थ रकार, शक्र का अर्थ लकार, चन्द्र का अर्थ सकार, हंस का अर्थ हकार, त्रिमूर्ति का अर्थ दीर्घ ईकार का संकलन करने पर विन्दु नाद से युक्त कर भरलसहीं बीज बनेगा।

मुखे नेत्रद्वये कर्णद्वये चैव कपोलयोः।
गण्डयोः कण्ठदेशे च स्तनयोर्हृदि पादयोः॥९१॥

भ्रामरीबीज का मुख, दोनों नेत्र, दोनों कर्ण, दोनों कपोल, गण्डस्थल, कण्ठप्रदेश, दोनों स्तन, हृदय और दोनों पाद के स्थानों पर न्यास करना चाहिए॥९१॥

चिबुके मस्तके बाह्वोः स्कन्धयोर्दंतलेखयोः।
ब्रह्मरन्ध्रे तथाऽऽधारे भ्रूमध्ये च न्यसेत्प्रिये॥९२॥

चिबुक, मस्तक, बाहु, दोनों स्कन्ध, ब्रह्मरन्ध्र तथा मूलाधार, भ्रूमध्य के स्थानों पर न्यास करना चाहिए॥९२॥

इति न्यासान्समाधाय पुरश्चरणकारकः।
यथोक्तन्यासकारी च यदिनोवरमाप्नुयात्॥९३॥

इन न्यासों को पुरश्चरण करनेवाले साधक को अवश्य करना चाहिए, यदि उक्त न्यासों को नहीं करता है तो न्यासादि न करनेवाले साधक को वर की प्राप्ति नहीं होती है॥९३॥

तदाकन्यादूषणोत्थं मम पापंप्रजायताम्।
न्यासैरेतत्र्वरारोहे ब्रह्महत्याविनश्यति॥९४॥

हे वरारोहे! कन्यादूषणादि पापों को करनेवाला साधक भी यदि इन समस्त न्यासों को करता है तो ब्रह्महत्यादि पापों को भी विनष्ट कर देता है॥९४॥

का कथाऽन्यस्य पापस्य सत्यं सत्यं वदामि ते।
मम न्यासानथो वक्ष्ये त्रीन्देवस्य महात्मनः॥९५॥

पापों के समाप्ति की क्या कथा, सत्य-सत्य कहता हूँ, हमारे द्वारा कहे गये इन न्यासों को करने से तीन देवताओं के समान महात्मा हो जाता है॥९५॥

यानिवधाय नरो विन्देत्सिद्धिं लोकेषु दुर्लभाम्।
आकूतबीजं विन्यस्येन्मस्तके गण्डयोर्मुखे॥९६॥

जो साधक इन न्यासों को विधान पूर्वक करता है वह लोक में वन्दित होता है तथा दुर्लभ सिद्धि प्राप्त करता है, आकूत बीज का मस्तक, गण्डस्थल तथा मुख पर न्यास करना चाहिए।।९६।।

कालबीजं चक्षुषोश्च कर्णयोरपि विन्यसेत्।
नाभौ लिङ्गे गुदे वापि विद्याबीजं कपोलयोः।।९७।।

कालबीज का चक्षु,कर्णादि स्थानों पर न्यास करना चाहिए, नाभि, लिङ्ग, गुदादि स्थानों पर विद्याबीज का न्यास करना चाहिए।।९७।।

ब्रह्मरन्ध्रे दन्तपंक्तौ विन्यसेत्साधकोत्तमः।

श्रीदेव्युवाच

भगवन्करूणासिन्धो दीनबन्धोजगद्गुरो।।९८।।

बुद्धिमान साधक को दन्तपक्ति इत्यादि स्थानों पर न्यास करना चाहिए। श्री देवि कहीं, हे भगवान्! हे करुणासिन्धु! हे दीनबन्धु! हे जगद्गुरु! कृपा करें।।९८।।

कृपांकुरु समाख्याहि सूत्रैरेव पृथक् पृथक्।
साधकस्तु यथा सिद्धिमचिरेणैव विन्दति।।९९।।

हे दीनबन्धु! साधक को जल्दी सिद्धि किस प्रकार प्राप्त होती है उन सूत्रों को पृथक् पृथक् हमसे व्याख्यान करें।।९९।।

श्रीमहादेव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि न्यासत्रयविधिं पृथक्।।
दीर्घाकालाग्निशक्राणामधः कालानलान्त्यकाः।।१००।।

श्रीमहादेव ने कहा क्षिप्र सिद्धि प्रदान करनेवाले तीन न्यासों की विधि अलग अलग कहता हूँ। दीर्घ, काल, अग्नि, शक्र, काल, अनल, अन्त्यक, वर्णों के समयोजन करने के बाद।।१००।।

वह्न्यस्थिवह्निगगनं चन्द्रो वामाक्षिमण्डितः।
विन्दुनादसमाक्रन्तं बीजमाकूतमुद्धृतम्।।१०१।।

वह्नि, अस्थि, वह्नि, गगन, चन्द्र, वामाक्षि का योजन कर विन्दु नाद से समाक्रान्त करने पर आकूत बीज उधृत होता है।।१०१।।

दीर्घा नः।। कालः मः।। अग्निः रः।। शक्रः लः।। कालो मः।। अग्नि रः।। शक्रः लः।। कालो मः।। अनलो रः।। अन्त्यः क्षः।। अस्थि शः।। वह्निः रः।। गगनं हः।। चन्द्रः सः।। वामाक्षि ईः।। बिन्दुनादौ प्राग्वत्।। तेन।। न म र ल म र क्ष श र हसीं इति जातम्।।

दीर्घा का अर्थ नकार, काल का अर्थ मकार, अग्नि का अर्थ रकार, शक्र का अर्थ लकार, काल का अर्थ मकार, अग्नि का अर्थ रकार, शक्र का अर्थ लकार, काल का अर्थ मकार, अनल का अर्थ रकार, अन्त्य का अर्थ क्षकार, अस्थि का अर्थ शकार।। वह्नि का अर्थ रकार, गगनं का अर्थ हकार, चन्द्र का अर्थ सकार वामाक्षि का अर्थ ईकार, बिन्दुनाद का योजन करने पर नमरलमरक्षशरहसीं आकूतबीज होगा।

शिरसि गण्डयोर्वक्त्रे वेदबीज प्रविन्यसेत्।
ब्रह्मग्नीन्द्रेद्धग्निकालवह्निवामाक्षिभिः प्रिये।।१०२।।

शिर, गण्ड, वक्त्रादि स्थानों पर वेदबीज का न्यास करना चाहिए, ब्रह्म, अग्नि, इन्द्र, अग्नि, काल, वह्नि, वामाक्षि वर्णों का योजन कर।।१०२।।

सबिन्दुनादैर्देवेशि कालबीजमितीरितम्।
नेत्रयोः कर्णयोर्नाभिलिङ्गगुदेषु विन्यसेत्।।१०३।।

नाद विन्दु से योजन करने पर कालबीज बनता है जिसका नेत्र, कर्ण, नाभि, लिङ्ग, गुदादि स्थानों पर न्यास करना चाहिए।।१०३।।

ब्रह्म कः।। अग्नी रः।। इन्दुः सः।। अग्निः रः।। कालः मः।। वह्निः रः।। वामाक्षि ई।। बिन्दुनादौ प्राग्वत्।। तेन।। क र ल स र म रीं इति जातम्।।

ब्रह्मा का अर्थ ककार, अग्नी का अर्थ रकार, इन्दु का अर्थ सकार, अग्नि का अर्थ रकार, काल का अर्थ मकार, वह्नि का अर्थ रकार, वामाक्षि का अर्थ ईकार, बिन्दुनाद के योजन करने पर करलसरमरीं बीज बनेगा।

सम्वर्त्तानलचन्द्राग्निशिवचन्द्रत्रिमूर्तिभिः ।
सबिन्दुनादैर्देवेशि विद्याबीजं समुद्धृतम्।।१०४।।

हे देवेशि! सम्वर्त्त, अनल, चन्द्र, अग्नि, शिव, चन्द्र, त्रिमूर्ति, ईकार को बिन्दु नाद से युक्त करने पर विद्याबीज बनता है।।।१०४।।

सम्वर्त्तः क्षः।। अनलः रः।। चन्द्रः सः।। अग्नि रः।। शिवो हः।। चन्द्रः सः।। त्रिमूर्तिः ई।। बिन्द्वादि प्राग्वत् ।। तेन।। क्ष र स र ह सीं इति जातम्।।

सम्वर्त्त का अर्थ क्षकार, अनल का अर्थ रकार, चन्द्र का अर्थ सकार, अग्नि का अर्थ रकार, शिव का अर्थ हकार, चन्द्र का अर्थ सकार, त्रिमूर्ति का अर्थ ईकार, बिन्दु नाद के योजन करने पर क्षरसरहसीं विद्याबीज बनता है।

कपोलयोर्ब्रह्मरन्ध्रे दन्तपंक्त्योश्च विन्यसेत्।
एतन्न्यासत्रयं प्रोक्तं साधकाभीष्टसिद्धिम्।।१०५।।

दोनों कपोल, ब्रह्मरन्ध्र, दोनों दन्तपक्ति इत्यादि स्थानों पर इस न्यास को करना चाहिए, हमारे द्वारा कहे गये ये तीनों न्यास साधको को अभीष्ट की सिद्धि प्रदान करनेवाले है।।१०५।।

यस्य प्रसादमासाद्य साधकः शीघ्रसिद्धिदः।
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि शृङ्खलान्यासमुत्तमम॥१०६॥

इन न्यासों के प्रसाद से साधक शिघ्र ही सिद्धि प्राप्त करता है, हे देवि! उत्तम शृंखला न्यास बताते हैं।।१०६।।

यस्य प्रसादाच्च शिवे वटुकः सिद्धिदो भवेत्।
मस्तके दक्षनेत्रे च वामनेत्रे तथैव च॥१०७॥

हे शिवे! जिसके प्रसाद से वटुक सिद्धि प्रदान करनेवाले होते हैं, मस्तक, दक्ष नेत्र, वाम नेत्रादि स्थानों पर न्यास करना चाहिए।।१०७।।

दक्षकर्णे वामकर्णे कपोले दक्षिणे तथा।
वामे कपोले दक्षे च गण्डके वामके पुनः॥१०८॥

दक्ष कर्ण, वाम कर्ण, दक्षिण तथा वाम कपोल, दक्षिण तथा वाम गण्ड स्थलों पर न्यास करना चाहिए।।१०८।।

चिबुकेऽथ गले स्कन्धे दक्षिणे वामके तथा।
स्तने दक्षेऽथ वामे च हृदये दक्षकुक्षिके॥१०९॥

चिबुक, गला, दक्षिण तथा वाम स्कन्ध, दक्षिण तथा वाम स्तन, हृदय तथा कुक्षि के स्थानों पर न्यास करना चाहिए।।१०९।।

वामकुक्षौ च नाभौ च वक्षोजङ्के च वामके।
लिङ्गे मेढ्रे दक्षिणे च वामे च वरवर्णिनि॥११०॥

वाम तथा दक्षिण कुक्ष, नाभि, वक्ष स्थल, दोनों जङ्घा, लिङ्ग, दक्षिण तथा वाम मेढ्र पर न्यास करना चाहिए।।११०।।

मेढ्रशब्दो वृषणवाची दक्षवामनिर्देशात् लिङ्गस्योक्तत्वाच्चेति॥

मेढ्र शब्द का अर्थ वृषण होता है, दक्ष तथा वाम का निर्देश लिङ्ग के अनुसार ग्रहण किया जाता है।

मूलाधारे दक्षगुल्फे वामगुल्फे तथैव च।
दक्षपादे च वामे च दक्षपादाङ्गुलीषु च॥१११॥

मूलाधर, दक्षिण गुल्फ, वाम गुल्फ, दक्ष पाद, वाम पाद, दक्षिण पैर की अङ्गुलियों पर न्यास करना चाहिए।।१११।।

वामपादाङ्गुलीष्वेवं ब्रह्मरन्ध्रे तथैव च।
मूलाधारे पुनश्चैव पुनर्वै ब्रह्मरन्धके॥११२॥

वायें पैर की अङ्गुलियों, ब्रह्मरन्ध्र से मूलाधार तक पुनः मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक न्यास करना चाहिए।।११२।।

महापराख्यं बीजं च विन्यसेत्साधकोत्तमः।
चन्द्रसूर्यौ पुनस्तौ च मही ब्रह्मा मही प्रिये॥११३॥

हे प्रिये! महापराख्यबीज का उत्तम साधक को न्यास करना चाहिए, चन्द्र, सूर्य, पृथिवी, ब्रह्मा, पुनः पृथिवी का योजन कर॥११३॥

त्रिमूर्तिरस्थि वह्न्यम्बु वह्न्यम्बुधरणीजलम्।
षष्ठस्वरत्रिमूर्त्तिविन्दुनादभूषितमस्तकम् ॥११४॥

त्रिमूर्ति, अस्थि, वह्नि, अम्बु, पुनः वह्नि, अम्बु, धरणी, जल, षष्ठस्वर, त्रिमूर्ति, को नादविन्दु से विभूषित कर न्यास करना चाहिए॥११४॥

महापराख्यबीजं ते कथितं सुरवन्दिते।
न्यासेनानेन सुश्रोणि साक्षाच्छिवसमो भवेत्॥११५॥

हे सुरवन्दिते! महापराख्यबीज को हमने कहा, इसके न्यास से साधक साक्षात् शिव के समान हो जाता है॥११५॥

चन्द्रसूर्यौ स हौ॥ पुनस्तौ स हौ॥ मही लः॥ ब्रह्म कः॥ मही लः॥ त्रिमूर्तिः ई॥ अस्थि शः॥ वह्निः रः॥ अम्बु वः॥ वह्निः रः॥ अम्बु वः॥ धरणी लः॥ जलं वः॥ षष्ठस्वरः ऊ॥ त्रिमूर्ति ई॥ बिन्दुनादौ प्राग्वत्॥ तेन॥ स ह स ह ल क ल ई शरवरलवऊईँ॥

चन्द्र का अर्थ सकार, सूर्यौ का अर्थ हौ, पुनः दोनों सकार हौ, मही का अर्थ लकार, ब्रह्माका अर्थ ककार, मही का अर्थ लकार, त्रिमूर्ति का अर्थ ईकार, अस्थि का अर्थ शकार, वह्नि का अर्थ रकार, अम्बु का अर्थ वकार, वह्नि का अर्थ रकार, अम्बु का अर्थ वकार, धरणी का अर्थ लकार, जल का अर्थ वकार, षष्ठस्वर का अर्थ ऊकार, त्रिमूर्ति का अर्थ ईकार वर्णों को बिन्दुनाद से युक्त करने पर सहसहलकलईशरवरलवऊईँ महापराख्यबीज बनता है।

वटुकस्याथ वक्ष्यामि मातृकान्यासमुत्तमम्।
कृतेन येन वटुकः साधकस्य करे भवेत्॥११६॥

श्रीमद्वटुकभैरव के उत्तम न्यासों को हमने कहा जिसके करने से वटुकभैरव न्यास कर्ता पर प्रसन्न हो जातें हैं॥११६॥

श्रीबीजैः पञ्चभिर्यच्च मातृणां मण्डलं भवेत्।
प्रोक्तमादौ तथा चान्ते ठान्ते फान्ते लसान्तके॥११७॥

श्रीबीज के साथ पाँच बीज सभी मातृका स्थानों पर न्यास करना चाहिए, पाँच बीजों में पहले चान्त, ठान्त, फान्त और लसान्त हैं ॥११७॥

वटुकस्य परं पूज्यं मातृकान्यासमुत्तमम्।
विज्ञाय साधयेत्प्राज्ञः स सद्यः शिवतां व्रजेत्॥११८॥

परम पूज्य वटुक का मातृका न्यास युक्त समस्त न्यासों को जो बुद्धिमान साधक जानता एवं स्वयं करता है वह सद्य: शिवत्व प्राप्त कर लेता है॥११८॥

विनेमं मातृकान्यासं योऽन्येन न्यासमाचरेत्।
वटुकस्तस्य कुपितः सद्यः शापं प्रयच्छति॥११९॥

बिना इन मातृकादि युक्त न्यासों को जो साधक न्यास करता है उस पर वटुक कुपित होकर शाप देते हैं अत: साधकों को अपने हित के लिए समस्त बीजों को मातृकाओं से युक्त कर उनके स्थानों पर न्यास करना चाहिए॥११९॥

तस्य न्यासः प्रकर्त्तव्यः साधकेन विपश्चिता।
सर्वेषु मातृस्थानेषु वपुःपावनहेतवे॥१२०॥

उत्तम साधक को समस्त न्यासों को मातृका से योजन कर मातृका स्थानों पर शरीर की पवित्रता के लिए करना चाहिए॥१२०॥

मातृकान्यासमेनं हि त्यक्त्वाऽन्यं न्यासमाचरेत्।
वर्षकोटिप्रयत्नेन स सिद्धिं नैव विन्दति॥१२१॥

मातृका से अयोजित जो साधक न्यास करता है वह कोटि वर्ष तक प्रयत्न पूर्वक पुरश्चरण करता है तो भी उसे सिद्धि नहीं मिलती है॥१२१॥

ङ्कारमादौ संयोज्य सर्वे पूर्ववदाचरेत्।
अयमन्तर्मातृकाख्यो न्यासः स्यात्पूर्वसिद्धिः॥१२२॥

ङ्कार का आदि में योजन कर समस्त न्यासों को पूर्ववत् न्यास करना चाहिए, अन्तर्मातृका नामक न्यास पूर्व में ही सिद्धि कारक होता है॥१२२॥

ॐकारमादिमं कृत्वा न्यासोऽयं वरवर्णिनि।
नाम्ना बहिर्मातृकाख्यो न्यासश्चूडामणिर्भवेत्॥१२३॥

ॐकार आदि में करके समस्त न्यासों को करने से, न्यास वर प्रदान करनेवाले होते हैं बहिर्मातृका नाम का न्यास करने से साधक चूणामणि के सदृश हो जाता है॥१२३॥

ध्यानानि पूर्ववद्देवि कथितानि महामते।
अथान्यं न्यासमाख्यास्ये शृणुष्व वरवार्णिनि॥१२४॥

हे महामते! ध्यानों को पूर्ववत् कहे गये विधि के अनुसार करना चाहिए, हे वरवर्णिनी! अन्य न्यासों को कहता हूँ ध्यान पूर्वक सुनें॥१२४॥

सरस्वतीमातृकाख्यं सद्यः सिद्धिप्रदायकम्।
न्यसेन्महामते बीजं मातृकास्थानकेषु च॥१२५॥

सरस्वतीमातृका नामक न्यास सिद्धि प्रदान करनेवाले हैं, हे महामते! समस्त न्यासों को मातृका से योजित कर मातृका स्थानों पर करना चाहिए॥१२५॥

महासरस्वती देवी सद्यः सिद्धिप्रदायिका।
क्रोधीशोऽथ पिनाकीशो दारकेशभुजङ्गकौ॥१२६॥

महासरस्वती देवी का न्यास निश्चय ही सिद्धि प्रदान करनेवाली है, क्रोधीश, पिनाकी, दारकेश और भुजङ्ग से युक्त मातृका वर्णों को योजन करने से महासरस्वती न्यास होता है॥१२६॥

भृग्वीशनकुलीशौ च भुजङ्गो नकुलीशकः।
सम्वर्त्तबकरेत्यस्त्रिमूर्तिविन्दुविभूषिताः ॥१२७॥

भृग्वीश, कुलीश, भुजङ्ग, नकुलीश, सम्वर्त्त, बकार, ककार, त्रिमूर्त्ति संज्ञक वर्णों को विन्दुनाद से विभूषित करने से महासरस्वती न्यास बनाता है॥१२७॥

महासरस्वती बीजं कथितं देवदुर्लभम्॥
इमे न्यासाः समाख्याता बटुकाराधने शिवे॥१२८॥

हे शिवे! महासरस्वती बीजों को हमने कहा जो देवताओं को भी दुर्लभ है, ये समस्त न्यास श्रीमद्वटुकभैरव की आराधना में आवश्यक होता है॥१२८॥

क्रोधीशः कः॥ पिनाकीशः लः॥ दारकेशो डः॥ भुजगंः रः॥ भृग्वीशः सः॥ नकुलीशो हः॥ भुजङ्गः रः॥ नकुलीशो हः॥ सम्वर्त्तः क्षः॥ बकः शः॥ रेवती रः॥ त्रिमूर्तिः ई॥ बिन्दुः॥ तेन॥ क ल ड र स ह र क्ष श र ईँ॥ इति जातम्॥

क्रोधीश का अर्थ ककार, पिनाकीश का अर्थ लकार, दारकेश का अर्थ डकार, भुजङ्ग का अर्थ रकार, भृग्वीश का अर्थ सकार, नकुलीश का अर्थ हकार, भुजङ्ग का अर्थ रकार, नकुलीश का अर्थ हकार, सम्वर्त्त का अर्थ क्षकार, बक का अर्थ शकार, रेवती का अर्थ रकार, त्रिमूर्ति का अर्थ ईकार आदि समस्त वर्णों को बिन्दुनाद से योजन करने पर कलडरसहरक्षशरईँ महासरस्वतीबीज बनता है।

सद्यः सिद्धि करा देवि भाग्यलक्ष्म्या न संशयः।
न्यूनन्यासस्य कर्त्ता यः सद्यो हानिमवाप्नुयात्॥१२९॥

महासरस्वती न्यास निश्चय ही सिद्धि प्रदान करनेवाला होता है, यह न्यास साधक को भाग्यलक्ष्मी प्रदान करता है॥१२९॥

एतस्मादधिकन्यासा न्यस्तव्याजन्मनि तथा।
एवं न्यस्ततनुर्देवि ध्यायेद्वटुकभैरवम्॥१३०॥

हे देवि! हमारे द्वारा कहे गये समस्त न्यासों को विधिपूर्वक बुद्धिमान समस्त साधक करके वटुकभैरव का ध्यान करे॥१३०॥

शुद्ध स्फटिकसङ्काशं द्विनेत्रोत्पलशोभितम्।
कुटिलालकसम्वीतं चारूस्मेरमुखाम्बुजम्॥१३१॥

शुद्ध स्वच्छ स्फटिक के सदृश भासमान, कमल के समान सुन्दर नेत्रवाले, कुटिल पलकोंवाले, मधुर मधुर मुस्कानवाले।।।१३१।।

नानारत्नमयैः कल्पैः किङ्किणीजालानूपुरैः।
दीप्तं शुच्यम्बरावीतं द्विभुजं दक्षिणे करे।।१३२।।

नाना रत्न निर्मित किङ्किणी तथा रत्न जटित नूपुर, चमकदार पवित्र वस्त्र धरण किये हुए द्विभुज भैरव का ध्यान करना चहिए।।१३२।।

त्रिशिखं सव्यहस्ते च दधानं दण्डमद्भुतम्।
वटुवेषधरं शम्भुं सात्त्विकं साधकः स्मरेत्।।१३३।।

तीन शिखाओंवाले, सव्य हस्त में दण्ड और कमण्डलु धारण किये हुए, बालक भेष धारी शम्भु का सात्त्विक रूप में साधक को ध्यान करना चाहिए।।१३३।।

कपालं वामहस्ते तु सूक्ष्म दण्डं कमण्डलुम्।
एवं ध्यात्वा यजेद्देवं शैवे पीठे सुरेश्वरि।।१३४।।

हे सुरेश्वरि! वायें हाथ में कपाल तथा छोटा दण्ड और कमण्डलु धारण किये हुए शम्भु का शैव पीठ पर ध्यान करना चाहिए।।१३५।।

अष्टपत्रे महादेवि! कर्णिकाकेसरोज्ज्वलम्।
पद्मं विरच्य तन्मध्ये कर्णिकायां सुरेश्वरि।।१३५।।

हे महादेवि! अष्ट पत्र का चिन्तन कर उसकी कर्णिका में उज्ज्वल केशरों के मध्य कर्णिका के बीच हे सुरेश्वरि!।।१३६।।

कृत्वा षट्कोणमस्यान्तस्त्रिकोणं परिकल्पयेत्।
तन्मध्ये पद्मकं कुर्याद्व्योमपत्रविराजितम्।।१३६।।

षट्कोण का चिन्तन कर उसके भीतर त्रिकोण की कल्पना कर उसके मध्य विन्दु चिन्तन के बाद उस पद्म के बाहर व्योमपत्र का चिन्तन करे।।१३६।।

कर्णिकाकेसरैर्युक्तं तन्मध्ये वटुकं यजेत्।
मूर्तिं मूलेन सङ्कल्प्य तस्यामावाहयेत्प्रभुम्।।१३७।।

त्रिकोण, षट्कोण तथा अष्टदल के बाहर द्वादश पत्र युक्त चक्र का चिन्तन कर उसके मध्य की कर्णिका में वटुक का ध्यान कर मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर सङ्कल्प पूर्वक वटुक का आवाहन करे।।१३७।।

सद्योजातेन मन्त्रेण मूलाद्येन महेश्वरि।
स्थापयेद्वामदेवेन मूलाद्येन च सुव्रते।।१३८।।

हे महेश्वरि! सद्योजात मन्त्र के पूर्व मूल मन्त्र योजित कर हे सुव्रते! मूल मन्त्र को आदि में योजित कर वामदेव मन्त्र से स्थापना करे।।१३८।।

सन्निधाप्यथ मूलेन केवलेन स्वमुद्रया।
अघोरान्तेन मूलेन सन्निरोधनमाचरेत्॥१३९॥

मूल मन्त्र के साथ अघोर मन्त्र से सन्निधापन मुद्रा के द्वारा सन्निधापन कर सन्निरोधन मुद्रा से सन्निरोधन करे॥१३९॥

मूलेन सम्मुखीकुर्यादवगुठ्याथ मूलतः।
षडङ्गैः शकलीकृत्यामृतीकत्य च मूलतः॥१४०॥

मूल मन्त्र से सम्मुखीकरण मुद्रा के द्वारा सम्मुखीकरण कर, मूल मन्त्र से अवगुण्ठन मुद्रा के द्वारा अवगुण्ठन कर, मूल मन्त्र षडङ्गों में सकलीकरण मुद्रा के द्वारा सकलीकरण करे॥१४०॥

परमीकरणं चैव स्वस्वमुद्राभिरर्चयेत्।
एतत्सर्वं विधातव्यं ततो ध्यानं समाहितः॥१४१॥

मूल मन्त्र से परमीकरण कर, अपने अपने मुद्राओं से अर्चन करे, इन सबका विधान करने के बाद ध्यान करे॥१४१॥

कृत्वा सुस्थापनं तस्य मुद्राः सन्दर्शयेदथ।
लिङ्गाद्या पूर्वमुद्दिष्टा योनिमुद्रा तथान्तिमा॥१४२॥

सुस्थापन मुद्रा के द्वारा मूल मन्त्र से सुस्थापन कर, लिङ्ग तथा योनि मुद्रा प्रदर्शित करे॥१४२॥

तां दर्शयेत्तत्पुरूषमूल्याभ्यां च महेश्वरि।
आसनाद्यैश्च पुष्पान्तैरूपचारैस्ततोऽर्चयेत्॥१४३॥

हे महेश्वरि! मुद्राओं के प्रदर्शन के बाद आसन, पुष्पादि उपचारों से अर्चन करे॥१४३॥

ततो देवाज्ञया सम्यग्यजेदावृत्तिदेवताम्।
न्यासस्थानेषु देवस्य देहेऽङ्गानि समर्चयेत्॥१४४॥

देवता का सम्यग रूप से पूजन करने के बाद, आवरण के देवताओं का अर्चन कर, न्यास के स्थानों पर मूल मन्त्र से देवता के देह में देवता के अङ्गों का अर्चन करे॥१४४॥

देवस्य देहे देवेशि पञ्चमूर्तीर्यजेत्क्रमात्।
अङ्गुलीदेहवक्त्रेषु त्रिविधन्यासमार्गतः॥१४५॥

हे देवेशि! देवता के अङ्गों का पूजन करने के बाद पञ्चमूर्ति का क्रम से अर्चन कर, अङ्गुली, देह, वक्त्रादि स्थानों पर त्रिविध न्यास विधि पूर्वक करे॥१४५॥

कर्णिकायां यजेत्पश्चात्पूर्वदक्षोत्तरेषु च।
पश्चिमे देवमूर्तौ च व्योमपद्मदलेष्वथ॥१४६॥

देवता के अङ्गों में न्यास करने के बाद पूर्व, दक्ष, उत्तर पश्चिम और ऊर्ध्व में देवता की मूर्ति परिकल्पित कर अर्चन करे॥१४६॥

असिताङ्गं रुरुं चण्डं क्रोधमुन्मत्तभैरवम्।
कपालिनं भीषणं च संहारं च समर्ययेत्॥१४७॥

पश्चात् असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपालि, भीषण और संहार भैरव का पूजन करे॥१४७॥

षट्कोणेषु षडङ्गानि यजेद्देवि यथाविधिः।
ततोऽष्टदलपद्मान्तः षट्कोणाद्बहिरद्रिजे॥१४८॥

हे अद्रिजे! षट् कोणों पर षडङ्गों का विधि पूर्वक पूजन कर, षट्कोणों पर पूजन के बाद अष्टदलों पर पूजन के बाद॥१४८॥

पूर्वादीशानपर्यन्तं वक्ष्यमाणान्समर्पयेत्।
डाकिनीपुत्रकान्देवि! राकिनीपुत्रकानपि॥१४९॥

पूर्व से ईशान तक वक्ष्यमाण विधि से डाकिनीराकिन्यादि पुत्रों का विधि पूर्वक अर्चन करे॥१४९॥

शाकिनीपुत्रकान्भूयोहाकिनीपुत्रकान्ततः।
मालिनीपुत्रकान्देवि! देवीपुत्रानतः परम्॥१५०॥

हे देवि! शाकिनी पुत्र से लेकर हाकिनी पुत्रों तक पूजन करने के बाद मालिनी पुत्र से देवि पुत्र तक विधि पूर्वक यजन करे॥१५०॥

उमापुत्रान्रुद्रपुत्रान्मातृपुत्रानपीश्वरि।
वामभागे तु देवस्य यजेद्देवान्क्रमेण वै॥१५१॥

हे ईश्वरि! उमापुत्र, रुद्रपुत्र, मातृकापुत्रों का देवता के वायें भाग में क्रम से पूजन करना चाहिए॥१५१॥

इन्द्रेशाग्निदिशोर्मध्ये ऊर्ध्वमुख्याः सुतान् यजेत्।
अधोमुख्याः सुतान्देवि यजेद्रक्षोजलेशयोः॥१५२॥

हे देवि! इन्द्र, ईशान, अग्नि आदि दिशाओं में मध्य और ऊर्ध्व में मुख्य में पुत्रों का यजन करे, अधो मुखादि स्थानों पर राक्षसादि तथा जलेशादि पुत्रों का यजन करे॥१५२॥

अन्तराले महेशानि पुत्रवर्गास्त्रयोदश।
देशग्रामाधिपौ चैव स्थानाधिपमनुक्रमात्॥१५३॥

हे महेशानि! अन्तराल में त्रयोदश पुत्र वर्गो का पूजन करे, देश ग्रामादि अधिपतियों को भी स्थानाधिप क्रम से पूजन करे॥१५३॥

मेघनादं प्रचण्डाग्रे कालदूतं तथैव च।
इत्युक्तं यथोपदेशमन्त्राः अपीति ज्ञायते॥१५४॥

प्रचण्ड में आगे मेघनाद तथा कालदूत का पूजन करे, समस्त देवताओं का पूजन उनकें बतलायें गये मन्त्रों से करे॥१५४॥

इत्थं सम्पूज्य तद्बाह्ये पद्मपत्रेषु पूजयेत्।
ब्रह्माणीपुत्रकं पूर्वे माहेशीपुत्रमीश्वरि॥१५५॥

हे महेश्वरि! इस प्रकार पूजन कर चक्र के बाहर पद्म पत्रों पर ब्रह्माणी पुत्र, माहेशी पुत्रों का पूजन करे॥१५५॥

वैष्णवीपुत्रकं सौम्ये कौमारिपुत्रमानिले।
इन्द्राणीपुत्रकं देवि! पश्चिमे पूजयेत्ततः॥१५६॥

हे देवि! वैष्णवी पुत्र का सौम्य में, कौमारि पुत्र का अग्नि कोण में, इन्द्राणि पुत्र का पश्चिम में पूजन करे॥१५६॥

देवेशि नैर्ऋते पश्चान्महालक्ष्मीसुतं यजेत्।
वाराहीपुत्रकं देवि दक्षिणे वह्निकोणके॥१५७॥

हे देवेशि! नैर्ऋत्य में महालक्ष्मी पुत्र का तथा हे देवि! अग्निकोण में वाराही पुत्र का पूजन करे॥१५७॥

चामुण्डापुत्रमभ्यर्च्य लोकेशं वटुकं नमेत्।
अष्टपत्राद्बहिर्देवि चतुरस्त्रान्तरे पुनः॥१५८॥

हे देवि! दक्षिण में चामुण्डा पुत्र का पूजन करने के बाद लोकेशादि वटुकों का अभ्यर्चन कर अष्ट पत्रों के बाहर चतुरस्रान्त तक पूजन करे॥१५८॥

अष्टदिक्षु यजेदेतान्हेतुकं त्रिपुरान्तकम्।
वेतालमग्निजिह्वाञ्च कालान्तकमतः परम्॥१५९॥

आठों दिशाओं में हेतुक से त्रिपुरान्तक तक पूजन करने के बाद वेताल, अग्नि जिह्वा तथा कालान्तक का पूजन करे॥१५९॥

करालमेकपादं च भीमरूपं महेश्वरि।
अभ्यर्च्यदशयोमध्ये यजेदचलमद्रिजे॥१६०॥

हे महेश्वरि! कराल, एकपाद तथा भीमरूप का पूजन कर दशों दिशाओं के मध्य में अचलादि का पूजन करे॥१६०॥

हाटकेशं महेशानि पाशीराक्षसयोस्तथा।
चतुरस्त्रादिरेखयां दिग्विदिक्षु सुरेश्वरि॥१६१॥

हे महेशानि! हाटकेशादि के साथ राक्षसपाशी का पूजन हे सुरेश्वरि! चतुरस्त्रादि रेखाओं पर दिशाओं विदिशाओं में पूजन करे॥१६१॥

अन्तरालेषु वाभ्यर्चेच्छ्रीकण्ठादीन्सुरेश्वरि।
ततो द्वितीयरेखायां क्रोधीशादीन्सुरेश्वरि॥१६२॥

हे सुरेश्वरि! अन्तराल में श्रीकण्ठादि का पूजन कर हे सुरेश्वरि! द्वितीय रेखाओं पर क्रोधीशादि का पूजन करे॥१६२॥

आशाद्यन्तानसमभ्यर्च्य तृतीयायां समर्चयेत्।
दण्डीश्वरादिभृग्वंताँल्लकुलीशादिकान् शिवे॥१६३॥

हे शिवे! अन्त में आशादि का पूजन कर तृतीय रेखाओं पर दण्डीशादि से भृङ्गी तक लकुलीशादि का पूजन करे॥१६३॥

देवस्य वामभगे तु पूजयेत्परमेश्वरि।
दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थान्योगीशान् शक्तिसम्युतान्॥१६४॥

हे परमेश्वरि! देवता के वाम भाग में शक्ति युक्त दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थ योगिनियों का पूजन करे॥१६४॥

योगिनीश्च समभ्यर्चेदीशनादिषु सुन्दरि!।
कोणेषु देवदेवोशि दिगीशानायुधैः सह॥१६५॥

हे सुन्दरि! योगिनियों के पूजन के पश्चात् कोणों के सहित दिग् पतियों का आयुधों के साथ पूजन करे॥१६५॥

चतुरस्त्राष्टके देवि! पूजयेदुक्तमार्गतः।
इति सम्पूजयेद्देवं वटुकं भक्तितत्परः॥१६६॥

हे देवि! चतुरस्त्र और आष्टक में रक्तमार्ग तक पूजन कर वटुकभैरव का भक्ति पूर्वक पूजन करे॥१६६॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रापितर्भवति निश्चयात्।
उद्धरेद्वटुकं ङेऽन्तमापदुदद्धारणं तथा॥१६७॥

जो साधक श्रीमद्वटुकभैरव का इस विधि से पूजन करता है उसको धर्मार्थकाममोक्षादि की सिद्धि प्राप्त होती है ङकारान्त आपदुद्धारण वटुकभैरव मन्त्र का उद्धार करना चाहिए॥१६७॥

कुरूद्वयं पुनर्ङेऽन्तं वटुकं तं समुद्धरेत्।
एकविंशत्यक्षरात्मा शक्तिरुद्धो महामनुः॥१६७॥

कुरु पद का दो बार, पुनः ङकारान्त वटुक पद का उद्धार करने से एकविंशति अक्षरों को आत्मा तथा शक्ति से रुद्ध करने पर वटुक का महामनु(मन्त्र) होता है॥१६८॥

अभीष्टफलसन्सिद्ध्यै कीर्तितः सुरपादपः।
बृहदारण्यकऋषिश्छन्दोऽनुष्टबुदाहृम् ॥१६९॥

इससे अभीष्ट फल की सिद्धि प्राप्त होती है इस मन्त्र के बृहदारण्यक ऋषि तथा अनुष्टुप् छन्द है॥१६९॥

आपदुद्धारणो देवो भैरवो देवता बुधैः।
अङ्गुलीदेहवक्त्रेषु मूर्तिर्न्यस्य यथा पुरा॥१७०॥

आपदुद्धारण वटुकभैरव देवता है जिसका अङ्गुलि, देह, वक्त्रादि स्थानों पर मूर्ति का पूर्व में बतलाये गये विधि से न्यासों को करना चाहिए॥१७०॥

संपादिपञ्चह्रस्वाढ्यं शक्तिबीजपुरःसरम्।
मकारपञ्चह्रस्वाढ्यमीशानादिषु योजयेत्॥१७१॥

पाद युक्त पञ्च ह्रस्व को शक्ति तथा वटुकभैरव बीज से युक्त कर पञ्च मकार के साथ पञ्च ह्रस्व युक्त ईशानादि का योजन कर न्यास करे॥१७१॥

षड्दीर्घयुक्तया शक्तया वकारेण च तद्वतः।
अङ्गानि जातियुक्तानि प्रणवाद्यानि कल्पयेत्॥१७२॥

षड्दीर्घ से युक्त शक्ति तथा वकार अमृत बीज से युक्त कर अङ्गो पर प्रणवादि से योजन कर न्यास करे॥१७२॥

तस्य ध्यानं त्रिधा प्रोक्तं सात्त्विकादिविभेदतः।
सात्त्विकं ध्यानमाख्यातमपमृत्युनिवारणम्॥१७३॥

श्रीमद्वटुकभैरव का तीन प्रकार के सात्त्विकादि भेद से ध्यान करे, सात्त्विक नामक ध्यान अपमृत्यु का निवारण करता है॥१७३॥

आयुरारोग्यजननमपवर्गफलप्रदम्।
राजसं ध्यानमाख्यातं धर्मकामार्थसिद्धिम्॥१७४॥

आयु: आरोग्य की वृद्धि तथा अपवर्ग फल की प्राप्ति करानेवाला श्रीमद्वटुकभैरव का राजस ध्यान होता है जो धर्मकामार्थ को प्रदान करता है॥१७४॥

तामसं शत्रुशमनं कृत्याभूतमदापहम्।
वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं हविष्याशी जितेन्द्रियः॥१७५॥

श्रीमद्वटुकभैरव का तामस ध्यान शत्रुओं का शमन तथा परकृत्यादि भूतादि का शमन करनेवाला है, साधक को मन्त्र में जितने वर्ण है उतनी ही (लाख की) सङ्ख्या में हविष्याशी तथा जितेन्द्रिय होकर जप करना चाहिए॥१७५॥

तद्दशांशं च जुहुयात्तिलैर्मधुरसम्युतैः।
धर्माधर्मादिभिः क्लृप्ते पीठे पङ्कजशोभिते॥१७६॥

जप का दशांश, तिलादि मधुर युक्त हवन करे, धमाधर्म से युक्त पङ्कजादि युक्त पीठ पर यजन करना चाहिए॥१७६॥

षट्कोणान्तस्त्रिकोणस्थं व्योमपङ्कजशोभिते।
वटुकं पूजयेद्देवं मूर्तिं मूलेन कल्पयेत्॥१७७॥

षट्कोण के भीतर त्रिकोण के मध्य व्योमपङ्कज से शोमित स्थान में वटुकभैरव की मूलमन्त्र से कल्पना करना चाहिए॥१७७॥

सद्योजातेन मन्त्रेण देवमावाहयेत्ततः।
मूलादिवामदेवेन स्थापयेत्परमेश्वरम्॥१७८॥

मूल मन्त्र के साथ सद्योजातादि मन्त्र का योजन कर वटुकभैरव का अवाहन करना चाहिए, मूल मन्त्र के साथ वामदेव मन्त्र से स्थापन करना चाहिए॥१७८॥

मूलमन्त्रेण कर्तव्यं सान्निध्यं तदनन्तरम्।
अघोरेण सुधीः कुर्यात्सन्निरोधमनन्तरम्॥१७९॥

बुद्धिमान साधक को मूल मन्त्र से सन्निधान कर, मूल मन्त्र से अघोर मन्त्र का योजन कर सन्निरोधन करना चाहिए॥१७९॥

पुरुषाख्येन मनुना योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।
देवाय वन्दनं कुर्यादीशनेने समाहितः॥१८०॥

पुरुष संज्ञक मनुओं से युक्त मन्त्र से योनि मुद्रा का प्रदर्शन कर, मूल मन्त्र के साथ ईशान मन्त्र से देवता का वन्दन करना चाहिए॥१८०॥

एतत्सर्व विधातव्यं तत्तन्मुद्रा प्रदर्शनात्।
ईशानादीन्यजेद्देवान्यासमार्गेण देशिकः॥१८१॥

इन समस्त आचारों का विधान करने के बाद तत्तद् मुद्राओं का प्रदर्शन कर, ईशानादि देवताओं का तत्तद्, न्यास के साथ पूजन करे॥१८१॥

सकलीकरणं कृत्वा येन मूर्तिं यथा पुरा।
व्योमपद्मदलेष्वर्चेदसिताङ्गादिभैरवान् ॥१८२॥

पश्चात् मूर्ति में सकलीकरण करे, पश्चात् व्योम पद्मदलों पर असिताङ्गादि भैरवों का पूजन करे॥१८२॥

असिताङ्गं रुरुं चण्डं क्रोधमुन्मत्तभैरवम्।
कपालिनं भीषणाख्यं संहारं च क्रमादमुन्॥१८३॥

असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपालि, भीषण तथा संहार नामवाले भैरवों का क्रमशः पूजन करे॥१८३॥

षट्कोणेषु षडङ्गानि क्रमेणाभ्यर्चयेत्सुधीः।
पूर्वादीशानपर्यन्तं तद्बहिः पूजयेदिमान्॥१८४॥

बुद्धिमान साधक षट् कोणों में तथा षडङ्गों में क्रम से पूजन कर, पूर्वादि से ईशान पर्यन्त क्रमशः पूजन करे॥१८४॥

डाकिनीपुत्रकान्पूर्वं राकिनीपुत्रकान्ततः।
लाकिनीपुत्रकानर्चेत्काकिनीपुत्रकांस्ततः ॥१८५॥

डाकिनी पुत्र का पहले पूजन कर राकिनी पुत्र का पूजन करे पश्चात् लाकिनी पुत्र का पूजन कर काकिनी पुत्र का पूजन करे॥१८५॥

शाकिनीपुत्रकान्भूयो हाकिनीपुत्रकान्पुरः।
याकिनीपुत्रकानर्चेद्देवीपुत्रांस्तथापरान् ॥१८६॥

शाकिनी पुत्र का पूजन करने के बाद हाकिनी पुत्र का पूजन कर, याकिनी पुत्र का पूजन कर देवी पुत्र का पूजन करे॥१८६॥

अथोमारुद्रमातृणां पुत्रान्दक्षिणतो यजेत्।
ऊर्ध्वमुख्याः सुतानूर्ध्वमधोमुख्याः सुतानधः॥१८९॥

उमा, रुद्र तथा मातृपुत्रों का दक्षिण में पूजन करने के बाद ऊर्ध्व मुख्य पुत्रों का पूजन करने के बाद अधोमुख्यादि पुत्रों का पूजन करे॥१८७॥

इति सम्पूजयेन्मन्त्री पुत्रवर्गोस्त्रयोदश।
तद्बहिः पद्मपत्रेषु लोकेशवटुकान्यजेत्॥१८८॥

वटुक मन्त्र का साधना करनेवाले साधक को त्रयोदश पुत्रवर्गों का पूजन करने के बाद बाहर पद्म पत्रों पर लोकेशादि वटुकों का पूजन करे॥१८८॥

ब्रह्माणीपुत्रकं पूर्वे माहेशीपुत्रमीश्वरे।
वैष्णवीपुत्रकं सौम्ये कौमारीपुत्रमानिले ॥१८९॥

हे माहेशि! ब्रह्माणी पुत्र का पूर्व में पूजन कर माहेशी पुत्र का पूजन करे वैष्णवी पुत्र का सौम्य में पूजन करने के बाद कौमारी पुत्र का पूजन करे॥१८९॥

इन्द्राणीपुत्रकं भूयः पूजयेत्पश्चिमे ततः।
महालक्ष्मीसुतं पश्चाद्रक्षोदिशि समर्चयेत्॥१९०॥

इन्द्राणि पुत्र का पूजन करने के बाद में महालक्ष्मी पुत्र का रक्षादि दिशाओं में पूजन करे॥१९०॥

वाराहीपुत्रकं याम्ये चामुण्डासुतमानिले।
वटुकान्दशदिक्ष्वर्चेद्धेतुकं त्रिपुरान्तकम्॥१९१॥

वाराही पुत्र का पूजन करने के बाद चामुण्डा पुत्र का पूजन कर, हेतुकादि से त्रिपुरान्तक वटुकों का पूजन करे॥१९१॥

वेतालवह्निजीवाख्यं कलान्ताख्यं करालकम्।
एकपादं भीमदंष्ट्रमचलं हाटकेश्वरम्॥१९२॥

वेताल, वह्नि, जीव, नामधारि, कालान्तक, कराल, एकपाद, भीमदंष्ट्र, अचल, हाटकेशादि नामों वाले वटुकों का पूजन करे॥१९२॥

दिशि दिक्ष्वन्तरालेषु श्रीकण्ठादीन्यजेत्पुनः।
क्रोधीश्वरादीन्भृग्वन्तास्तत्तद्बह्ये समर्चयेत्॥१९३॥

भूपुर की दिशाओं, विदिशाओं के मध्य श्रीकण्ठादि का पूजन कर क्रोधीश्वर से भृङ्गी तक उसके बाहर पूजन करे॥१९३॥

ततस्त्रीन्नकुलीशादीन्दक्षिणे पूजयेत्सुधीः।
दिव्यान्तरिक्षेभूमिस्थान्योगीनी शक्तिसंयुतान्॥१९४॥

उसके बाद नकुलीशादि का पूजन कर दिव्य, अन्तरिक्ष और भूमि में रहनेवाले योगिनियों का शक्ति युक्त कर पूजन करे॥१९४॥

योगिनीभिः सहाभ्यर्चे दिशाग्निनिर्ऋतिस्थितान्।
इति सम्पूजयेद्देवं वटुकं प्रोक्तवर्त्मना॥१९५॥

योगिनियों के साथ दिशाओं के अधिपतियों का सम्यग् रूप से पूजन कर श्रीमद्वटुकभैरव का पूजन करे॥१९५॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां पतिर्भवति मानवः।
विघ्नदुर्गो समाराध्य बलिं दत्त्वा विधानतः॥१९६॥

इस प्रकार श्रीमद्वटुकभैरव का पूजन कर, साधक धमार्थकाममोक्षादि प्राप्त कर लेता है, दुर्गम विघ्न उपशमन के लिए वटुक का पूजन कर विधान पूर्वक बलि प्रदान करे॥१९६॥

काम्यादीन्साध्येन्मन्त्री यथोक्तं सिद्धिमाप्नुयात्।
शाल्यन्नं पललं सर्पिर्लाजाचूर्णानि शर्करा॥१९७॥

कामना होने पर इस मन्त्र का साधक वटुक का पूजन कर, बलिदान से अपने कामनाओं को पूर्ण कर लेता है, बलिदान में शल्यन्न, पलल, सर्पि, लाजा तथा शर्करा चूर्ण रखे॥१९७॥

गुडमिक्षुरसापूपैर्मध्वक्तैः परिमिश्रितः।
कृत्वा ग्रासं समाराध्य देवं प्रागुक्तवर्त्मना॥१९८॥

गुड, इक्षुरस, अपूप, मधु निर्मित तथा परिमिश्रित कर न्यूनतम एक ग्रास की मात्र रख कर देवता को पूजन पूर्वक बलि प्रदान करे॥१९८॥

रक्तचन्दनपुष्पाद्यैर्निशिस्तस्मै बलिं हरेत्।
ततः सिध्यन्ति कर्याणि बलिनानेन मन्त्रिणः॥१९९॥

रक्त चन्दन पुष्पादि से पूजन कर बलि प्रदान करे, इस प्रकार बलिदान प्रदान करने से साधक अपने समस्त कामनाओं को पूर्ण कर लेता है॥१९९॥

जुहुयात्सर्पिषा मन्त्री यथोक्तं सिद्धिमाप्नुयात्।
वश्याय जुहुयादिक्षुशकलैर्वशयेज्जनान्॥२००॥

पूजन कर बलिदान प्रदान करने के बाद मन्त्र का साधक, घी से हवन कर, अपने कामनाओं को पूरा कर लेता है, वशीकरणादि में इक्षु खण्ड से हवन कर समस्त जन को वश में कर लेता है॥२००॥

जुहुयात्पुत्रलाभाय प्रफुल्लैः करवीरजैः।
धनधान्यादिसम्पत्त्यै जुहुयात्तिलतन्दुलैः॥२०१॥

खिले हुए करवीर(कनईल) पुष्प के हवन से साधक पुत्रादि का लाभ प्राप्त करता है,

तिलादि में चावलादि मिश्रित कर हवन करने से साधक धनधान्यादि समस्त सम्पत्ति प्राप्त करता है॥२०१॥

विल्वप्रसूनैर्जुहुयान्महतीं विन्दते श्रियम्।
लवणैर्मधुसंसिक्तैर्वशयेद्वनिताजनान् ॥२०२॥

विल्व पत्रों के हवन से साधक महत् श्रिय प्राप्त करता है, लवण युक्त मधु के हवन से साधक वनिता जन को वश में कर लेता है॥२०२॥

वृष्टिकामेन होतव्यं वेतसानां समिद्वरैः।
अन्नेन जुहयान्नित्यं धनधान्यादिसम्पदैः॥२०३॥

वर्षा की कामना से वेत की समीधा में हवन करे, अन्नों से हवन कर साधक धनधान्यादि सम्पत्ति प्राप्त करता है॥२०३॥

वश्याय जुहुयानमन्त्री मधुना दिवसत्रयम्।
रोगोक्तौषधहोमेन रोगा नश्यन्ति तत्क्षणात्॥२०४॥

मधु से तीन दिन तक हवन करके साधक सबको वश में कर लेता है, रोग उपस्थित होने पर औषधि के हवन से रोग को तक्षण ही नष्ट कर देता है॥२०४॥

कृत्याद्रोहे ग्रहद्रोहे भूतापस्मारसम्भवे।
व्याघ्राजिने समासीनो जुहुयादयुतं तिलैः॥२०५॥

कृत्या द्रोह, ग्रहद्रोह तथा भूतादि द्रोह उपस्थित होने पर व्याघ्रचर्म के आसन पर बैठ कर तिलादि से अयुत हवन करे॥२०५॥

भूतादयः पलायन्ते त्यक्ष्यन्ते तां दिशं भयात्।
कृष्णाष्टमीं समारम्य यावत्यां तच्चतुर्दशी॥२०६॥

कृष्ण पक्ष की अष्टमी से आरम्भ कर चतुर्दशी पर्यन्त हवन करने से इस प्रकार हवन से भूतादि त्वरित ही भय वश उस स्थान को छोड़ कर भाग जातें हैं॥२०६॥

तिलैस्तन्दुलसम्मिश्रैर्मधुरत्रयलोलितैः ।
त्रिसहस्त्रं प्रतिदिनं जुहुयात्संस्कृतेऽनले॥२०७॥

बुद्धिमान साधक तिल में चावलादि मिला कर त्रिमधु से युक्त कर तीन हजार आहुती संस्कृत अग्नि में प्रतिदिन हवन करे॥२०७॥

वटुकेशं समम्यर्च्य भक्ष्यभोज्यफलान्वितः।
नित्यं निवेद्य समये मध्यरात्रे बलिंहरेत्॥२०८॥

श्रीमद्वटुकभैरव का पूजन कर भक्ष्यभोज्यफल से युक्त नित्य मध्यरात्री के समय बलिदान प्रदान करे॥२०८॥

एवं जपित्वा प्रयतः सहस्त्राण्येकविंशतिः।
समाप्तिदिवसे रात्रावजं हुत्वा बलिंहरेत्॥२०९॥

बलिदानादि प्रदान कर इक्कीस हजार जप करे तथा जप समाप्ति दिवस पर हवन कर रात्रि में अज का बलिदान प्रदान करे॥२०९॥

ततः कारयिता राजा तोषयेत्साधकं धनैः।
प्रयोगदिवसे नित्यं भक्ष्यभोज्यैः सदक्षिणैः॥२१०॥

राजा यदि वटुकभैरव को बलिदान प्रदान करे तो वटुक भैरव के साधकों को प्रयोग के दिवस भक्ष्यभोज्यादि दक्षिणादि से पूर्ण करे॥२१०॥

विप्रान्सप्त महादेवि तोषयेद्वाञ्छिताप्तये।
समाप्तिदिवसे विप्रान्सप्तसप्त समाहितः॥२११॥

हे महादेवि! अपने समस्त कामना की सिद्धि के लिए अनुष्ठान के समाप्ति के दिवस वटुकभैरव के भक्त विप्रों का पूजन कर सात सात की संख्या में पूजन करे॥२११॥

भोजयेद्वस्त्रवित्ताद्यैस्तोषयेज्जगदीश्वरि ।
विधिनानेन सन्तुष्टो बटुकेशः प्रयच्छति॥२१२॥

हे जगदीश्वरि! भोजन, वस्त्र, वित्तादि से विधान पूर्वक सन्तुष्ट करने से वटुकेश प्रसन्न होतें हैं॥२१२॥

तेजो बलं यशः पुत्रान्कान्तिं लक्ष्मीं मनोरमाम्।
नश्यन्ति शत्रवः सर्वे वर्द्धते मित्रवान्धवाः॥२१३॥

साधक को तेज, बलं, यश, पुत्र, कान्ति, लक्ष्मी तथा मनोरम पत्नि प्राप्त करता है तथा उसके समस्त शत्रुवर्ग नष्ट हो जाते है तथा उसके मित्रवर्ग बढतें हैं॥२१३॥

अवग्रहो न जायेत विषये तस्य भूपतेः।
जुहुयात्केवलैर्लोणैरयुतं स्तम्भनेक्षया॥२१४॥

वटुकभैरव के साधक का कभी अवग्रह नहीं होता है, स्तम्भन की कामना के लिए केवल नमक से हवन करे॥२१४॥

निगडादिविमोक्षाय प्रयोगोऽयमुदाहृतः।
वचाचूर्णपलं कृत्वा गव्येनाज्येन लोलितम्॥२१५॥

निगडादि से मुक्ति के लिए इस प्रयोग को करना चाहिए, वचा चूर्ण को गव्य और आज्य से युक्त कर॥२१५॥

मन्त्रयेनमनुना तेन देवीसाग्रं सहस्त्रकम्।
विभजेच्चूर्ण पञ्चाशद्भागेन परमेश्वरि॥२१६॥

हे देवि! मिश्रण को मूल मन्त्र से सहस्त्र अभिमन्त्रित कर उस चूर्ण का हे परमेश्वरि! पचास भाग करे॥२१६॥

दिनेशो भागेकैकं भक्षयेद्रोघृतानिवत्।
विभज्य भक्षयेद्वन्ध्यामण्डलं पुत्रकांक्षिणी॥२१७॥

दिन के प्रारम्भ में एक एक भाग को गोघृत से भक्षण करे, इस प्रकार प्रतिदिन भक्षण करने से पुत्र की कामनावाली बन्ध्या भी पुत्र प्राप्त करती है॥२१७॥

विनीतपुत्रमाप्नोति मेधारोग्यबलान्वितम्।
दीर्घायुष्यं च वन्ध्यापि किं पुनः कन्यकाप्रसूः॥२१८॥

विनीत भाव से वन्ध्या भी यदि भक्ति करती है तो मेधा, दीर्घ आयुष्य, आरोग्य तथा बल से युक्त पुत्र प्राप्त करती है, कन्यादि की तो कोई शंका ही नहीं॥२१८॥

आदावन्ते प्रयोगस्य वटुकाय बलिं हरेम्।
द्विविधो बलिराख्यातो राजसः सात्त्विको बुधैः॥२१९॥

प्रयोग करने से पहले तथा अन्त में जो भक्त विनीत भाव से बलि प्रदान करते हैं तो वे सब कुछ प्राप्त कर लेते हैं, राजस और सात्त्विक दो प्रकार का बलि होता है॥२१९॥

राजसो मांसरक्ताढ्यपलत्रयसमन्वितः।
मुद्गपायस संयुक्तो मधुरत्रयसंयुतः॥२२०॥

राजस बलि में मांस रक्तादि से समन्वित मधुर त्रय से संयुक्त मुद्ग पायसादि का प्रयोग होता है॥२२०॥

सात्त्विको मांसरहितः शेषमन्यपुरोक्तवान्।
ब्रह्मणो नियतः शुद्धः सात्त्विकं बलि माहरेत॥२२१॥

सात्त्विक बलि मांसादि रहित होता है, शेष सभी पदार्थ पूर्व में कहे गये के अनुसार होता है, ब्राह्मण नित्य शुद्ध होकर सात्त्विक बलि प्रदान करे॥२२१॥

साध्यान्विधिनानेन भस्म सर्वार्थसिद्धिम्॥
उशीरं चन्दनं कुष्ठं घनसारं सकुङ्कुमम्॥२२२॥

विधि विधान से भस्म का विधान कर, उस सर्वार्थसिद्ध भस्म का अनुलेपन करके उशीर, चन्दन, कुष्ठ, घनसार तथा कुङ्कुमादि से अलङ्कृत करे॥२२२॥

श्वेतार्कमूलवाराहिलक्ष्मीक्षीरमहीरूहाम् ।
त्वचो बिल्वतरर्मूलं शोषयित्वा सुचूर्णयेत्॥२२३॥

श्वेत अर्क(मदार वृक्ष) का जड़, वाराही तथा लक्ष्मिवृक्षो के तनाओं के छाल तथा जड़ को लाकर चूर्ण करे॥२२३॥

चूर्ण व्योम्नि गृहीतेन गोपयेन विमिश्रितम्।
कृत्वा पिण्डाभिसंशोध्य संस्कृते हव्यवाहने॥२२४॥

चूर्ण को व्योम मन्त्र से ग्रहण कर गोपन पूर्वक मिश्रित कर पिण्ड बनाकर शोधन कर संस्कार की हुई अग्नि से संस्कृत करे॥२२४॥

मूलेन दग्ध्वा तद्भस्म शुद्धे पात्रे विनिक्षिपेत्।
केतकीमालतीपुष्पैर्वासयेद्भस्मशोभितम् ॥२२५॥

मूल मन्त्र से पिण्ड को भून कर उसके भस्म को शुद्ध पात्र रख कर केतकी, मालती, इत्यादि पुष्पों से ढ़क कर भस्म को शोभित करे॥२२५॥

अयुतं प्रजपेनमन्त्रं स्पृष्ट्वा भस्म सुपूजितम्।
एतदादाय दिनशः प्रातः पुण्ड्रं करोति यः॥२२६॥

भस्म को अयुत वटुकभैरव मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पूजन करके, भक्त दिन के प्रात: काल में भस्म का त्रिपुण्ड्र धारण करे॥२२६॥

ब्राह्मणो वेदविधिना त्रिपुण्ड्रं धारयेत्सुधीः।
शुद्राद्यैर्मूलमत्रेण सर्वे वा मूलमन्त्रतः॥२२७॥

बुद्धिमान ब्राह्मण वैदिक विधि से त्रिपुण्ड्र धारण करे, शूद्रादि अन्य वर्ण के साधक मूल मन्त्र से धारण करे॥२२७॥

तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति कृत्यद्रोहमहाग्रहाः।
रिपुचोरमृगादिभ्यो भयमस्य न जायते॥२२८॥

भस्म का त्रिपुण्ड्र धारण करनेवाले को कोई रोग नहीं होता, कृत्यादि तथा ग्रहों का द्रोह कभी नहीं होता, रिपु, चोर मृगादि का कभी कोई भय नहीं होता॥२२८॥

वर्द्धेते सम्पदः सर्वाः पूज्यते सकलैर्जनैः।
राजा वशे भवेत्तस्य सामत्यः सपरिच्छदः॥२२९॥

भस्म का त्रिपुण्ड्र धारण करनेवाले भक्त की समस्त सम्पत्ति सदैव वृद्धि को प्राप्त होती है, समस्त जन का पूज्य होता है, राजा तथा सामन्त जन सेवकों के साथ उस भक्त के वश में हो जातें हैं॥२२९॥

अभिषेकं प्रकुर्वीत राज्ञो विजयकाङ्क्षिणः।
पूर्वोक्तमण्डपे क्लृप्तेवितानध्वशोभिते॥२३०॥

विजय की कामना से राजा श्रीमद्बटुकभैरव का पूर्व में कहे गये के अनुसार ध्वजा पताकाओं से अलंकृत मण्डप में अभिषेक करे॥२३०॥

सर्वतोभद्रमालिख्य कर्णिकां तस्य पूजयेत्।
अष्टद्रोणप्रमाणेन शालिभिः शोभितैः शुभैः॥२३१॥

सर्वतो भद्र निर्मित कर उसकी कर्णिका में श्रीमद्बटुकभैरव् का आठ दोन सुन्दर शालि अन्न से पूजन करे॥२३१॥

तदर्धास्तण्डुलास्तस्मिन्न्यस्य दूर्वाक्षतान्वितम्।
हेमादिविहितं कुम्भं नवरत्नसमन्वितम्॥२३२॥

अथवा उसका आधा अर्थात् चार दोन सुन्दर शालि के चावल को रख कर उसके उपर दुर्वाक्षतादि से समन्वित कर सुवर्ण रंग का नव रत्नों से अलंकृत कर कुम्भ रखे॥२३२॥

संस्थाप्य विमलैस्तोयैरापूर्यास्मिनिवनिक्षिपेत्।
क्षीरद्रुमप्रवालानि लक्ष्मीदूर्वासहैर्युतः॥२३३॥

कलश की स्थपना कर शुद्ध निर्मल जल से पूरित कर प्रवालादि का प्रक्षेप कर, दुधवाले वृक्षों के पल्लव सहित विल्व वृक्ष दूर्वादि से युक्त करे॥२३३॥

कर्पूरं चन्दनं बिल्वमुशीरं कुङ्कुमं पुनः।
कङ्कोलमगुरूं जातिं मल्लिकाचम्पकोत्पलैः॥२३४॥

कर्पूर, चन्दन, विल्पपत्र, उशीर, कुङ्कुम, कङ्कोल, अगुरू, जाति पुष्प, मल्लिका, चम्पादि पुष्पों तथा पत्रों से अलंकृत करे॥२३४॥

गोमेददाडिमं पश्चात्पट्टसूत्रेण वेष्टयेत्।
तस्मिन्नावाह्य वटुकं राजसं सम्प्रपूजयेत्॥२३५॥

गोमेद, दाडिम से अलङ्कृत करने के पश्चात् वस्त्र से वेष्टन कर, उसमें वटुकभैरव का आवाहन कर, राजस विधि से पूजन करे॥२३५॥

बहिरष्टसु कुम्भेषु भैरवानष्टपूजयेत्।
त्रयोदशेषु कुम्भेषु त्रयोदशगणान्यजेत्॥२३६॥

वटुकभैरव कुम्भ के बाहर आठ कुम्भ स्थापित कर असिताङ्गादि अष्ट भैरवों का पूजन कर, उनके बाहर त्रयोदश कुम्भ स्थापित कर त्रयोदश गणों का पूजन करे॥२३६॥

बाह्यदशसु कुम्भेषु लोकेशानर्चयेत्सुधीः।
तद्बहिर्द्व्यष्टकुम्भेषु श्रीकण्ठादीन्सुरेश्वरान्॥२३७॥

बुद्धिमान साधक को बाहर के दश कुम्भों में लाकेशादि का अर्चन करना चाहिए उसके बाहर सोलह कुम्भों पर श्रीकण्ठादि देवताओं का अर्चन करना चाहिए॥२३७॥

पञ्चत्रिंशद्घटेष्वर्चेत्कादिवर्णेश्वरानक्रमात् ।
इतिगन्धादिभिः सम्यक्पञ्चावरणमर्चयेत्॥२३८॥

इसी प्रकार पैतिस कादि वर्णोंवाले वटुओं का क्रम से अर्चन करना चाहिए, इस प्रकार पूर्ण रूप से पाँचवें आवरण के देवताओं का पूजन कर समर्पण करना चाहिए॥२३८॥

अयुतं प्रजपेत्स्पृष्ट्वा तान्घटान्देशिकोत्तमः।
पायसैः सर्पिषा शुद्धैस्तिलैर्दशशतं पृथक्॥२३९॥

घटों में वटुकादि का पूजन करने के बाद अयुत संख्यात्मक जप करना चाहिए, पायस का घृत के साथ शुद्धतिलादि से युक्त कर पृथक् पृथक् दश दश की सङ्ख्या में बलिदान प्रदान करना चाहिए॥२३९॥

जुहुयात्तान्घटान्स्पृष्ट्वा प्रत्यहं बलिमाहरेत्।
राजसोक्तप्रकारेण रात्रौ देशिकसत्तमः॥२४०॥

हवन कर घटों को स्पर्श कर प्रत्येक को बलि प्रदान करे, उक्त प्रकार से राजस विधि से रात्रि में बलि प्रदान करे॥२४०॥

सुदिने शोभने लग्ने वाचायित्वाद्विजातिभिः।
स्वस्तिमङ्गलवाक्यानि विशुद्धैर्वेदपारगैः॥२४१॥

सुदिन शुभ लग्न में वेद पठित द्विज जाति को बुलाकर स्वस्ति मङ्गल श्लोकों का पाठ करना चाहिए ॥२४१॥

नन्दत्सु पञ्चवाद्येषु प्रणम्य वटुकेश्वरम्।
जितेन्द्रियं शुद्धकार्ये राजानं ब्राह्मणप्रियम्॥२४२॥

शुद्ध कार्य में जितेन्द्रिय तथा ब्राह्मण प्रिय राजाओं को, वटुकभैरव को प्रणाम कर पाँच प्रकार का वाद्यों के साथ उत्सव मनाना चाहिए॥२४२॥

आस्तिकं शुद्ध वचनमभिषिञ्चेत्प्रसन्नधीः।
अभिषिक्तो नरपतिः प्रणिपत्य गुरुं परम्॥२४३॥

आस्तिक प्रसन्न मनबुद्धि से शुद्ध वचन राजा के पद पर अभिषिक्त राजा गुरु को प्रणाम करे॥२४३॥

भूयसीं दक्षिणां दद्यात्प्रसीदति यथागुरुः।
राजाभिषिक्तो भवति साक्षाद्भूमिपुरन्दरः॥२४४॥

अपने गुरु को भूयसी इत्यादि दक्षिणा प्रदान कर प्रसन्न कर साधक राजा पद पर अभिषिक्त होता है तथा साक्षात् भूमि पर इन्द्र के समान होता है॥२४४॥

परान्विजयते भूपान्स्तूयते सकलैर्नरैः।
भक्ष्यैर्भोजयर्धनैर्धान्यैः पूजयन्ति यशस्विनः॥२४५॥

जो साधक भक्ष्यभोज्य धनधान्यादि से पूजन करता है वह यशस्वी तथा दूसरे राजाओं पर विजय प्राप्त करता है तथा मनुष्यों के द्वारा स्तुत होता है॥२४५॥

कृत्वाभिषेकं षण्मास प्रतिमांस महीपतिः।
चतुरम्भोधिवलां शास्तिसर्वेवसुन्धराम्॥२४६॥

छः मास तक जो राजा वटुकभैरव का प्रति माह अभिषेक करता है वह चारों दिशाओं की वसुन्धरा पर शासन करता है॥२४६॥

गजाश्वशान्तिविधये तेषां शालासु साधकः।
कुण्डं कृत्वा विधानेन होमं कृत्वा यथाविधि॥२४७॥

जो साधक शान्ति विधान में मण्डप तथा कुण्ड का निर्माण कर शास्त्र में बताये हुए विधि का अनुशरण पूर्वक हवन करता है वह गज, अश्वादि से उसका शाला भरा रहता है॥२४७॥

पायसाज्यतिलैर्विद्वानयुतत्रितयावधिः ।
ब्राह्मणान्भोजयेन्नित्यं भक्ष्यभोज्यफलादिभिः॥२४८॥

पायस, आज्य, तिल को मिला कर जो विद्वान तीनों समय हवन करता है तथा ब्राह्मणों को भक्ष्यभोज्यफलादि से भोजन कराता है॥२४८॥

प्राक्प्रोक्तविधिना कुम्भानस्थापयित्वात्र देशिकः।
अभ्यर्च्य गन्धपुष्पाद्यैस्तज्जलैः प्रोक्षयेद्गजान्॥२४९॥

पूर्व में कहे गये विधि से कुम्भों की स्थापना कर गन्धपुष्पाक्षतादि युक्त संस्कारित जल से पूजन करता है वह गजों से भरा रहता है॥२४९॥

अश्वशालामनेनैव वर्द्धते सा दिने दिने।
युद्धेषु महती शक्तिर्जायते पूर्वतोऽधिका॥२५०॥

उसकी अश्वशाला दिनों दिन बढ़ती रहती है, युद्ध में उसके पास पहले से अधिकाधिक शक्ति हो जाती है॥२५०॥

सर्वेरोगाः प्रणश्यन्ति कृत्याद्रोहाः परैः कृताः।
अस्मात्परतरारक्षानास्तितेषांमहीतले ॥२५१॥

साधक के समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं, द्रोह वश दूसरों के द्वारा किये गये कृत्यादि कर्म नष्ट हो जातें हैं, इस उपासना से अतिरिक्त कोई रक्षा विधि इस भूमि पर कोई नहीं है॥२५१॥

अभिषिञ्च महीपालं परेषां विजयोद्यताम्।
उक्तेन विधिनामन्त्री यामिन्यां बलिमाहरेत्॥२५२॥

विजय के उद्यत होने के लिए महीपाल वटुकभैरव का बतलाये गये विधि से अभिषिञ्चन कर बलि प्रदान करे॥२५२॥

अन्यूनाङ्गमजं हत्वा राजसं प्रागुदाहृतम्।
बलिप्रदानसमये रिपूणां सर्वसैन्यकम्॥२५३॥

शत्रूओं के सैनिकों के विनाश लिए पूर्ण अङ्गोंवाले अज की बलि प्रदान करे, बलि प्रदान करने के समय वटुकभैरव का अर्चन करे॥२५३॥

निवेशयेद्बलित्वेन वटुकाय विशिष्टधीः।
विदर्भयेच्छत्रुनाम्ना बलिमन्त्रं यथा सुधीः॥२५४॥

विशिष्ट बुद्धिमान साधक वटुकभैरव के लिए बलि प्रदान करने के समय शत्रूओं के नाम का योजन बलिमन्त्र में योजन करे॥२५४॥

शत्रुपक्षस्य रूधिरं पिशितञ्च दिनेदिने।
भक्ष्यन्स्वगणैः सार्द्धेसारमेयसमन्वितः॥२५५॥

वटुकभैरव के लिए बलिदान करने से साधक राजा अपने गणों के साथ शत्रूपक्ष का दिनोदिन रूधिर बहाता है अर्थात् शत्रूओं का विनाश करता है॥२५५॥

बलिमन्त्रोऽयमाख्यातः सर्वेषां विजयप्रदः।
अनेक बलिना हृष्टो वटुकः परसैन्यकम्॥२५६॥

समस्त शत्रूओं पर विजय प्राप्त करानेवाला यह बलिदानमन्त्र तथा वटुकभैरव के लिए किये जानेवाला बलिदान कर्म शत्रूओं के सैनिकों को नष्ट करनेवाला है॥२५६॥

सर्वगणेभ्यो विभजेदामिषं क्रुद्धमानसः।
एवं कृते परबले क्षीयते नात्रसंशयः॥२५७॥

आमिष बलि को सभी गणों के लिए विभाग कर, क्रूद्ध मानस होकर वटुकभैरव के लिए किया गया बलिदान शत्रूओं के बल को सद्यः त्वरित नष्ट कर देता है॥२५७॥

साधकः स्वहितार्थाय कुर्याद्यन्त्रं मनुञ्जपेद्।
विजये श्रियमेतेन राजा प्राप्नोत्ययत्नतः॥२५८॥

साधक अपने हित के लिए वटुकभैरव का यन्त्र बनाकर, मनु(मन्त्र) का जप करे, राजाओं को विशेषतया श्रीप्राप्ति के लिए तथा विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए॥२५८॥

श्रीमायास्मरकूटमन्त्रमुल्लिखेन्मध्ये दलेष्वष्टसु,
द्विः प्रोक्तं वटुकाय शब्दमपरानमंत्रस्य वर्णान्बहिः।
अष्टद्विदलेषु तद्बहिरपितुत्संख्य पत्रेष्वथ,
द्वा त्रिंशद्दलकादिसान्तसहितं यन्त्रं लिखेद्भूपुरे॥२५९॥

श्री, माया ह्रीं, स्मर क्लीं कूटों को अष्टदलों के मध्य में लिखकर दो बार वटुकाय शब्द का उल्लेख कर सोलह पत्रो पर मन्त्र के अन्य वर्णों को बाहर से लिखकर उसके बाहर बत्तीस दलों पर सान्त मालिनी मन्त्रों को लिख, यन्त्र के भूपुर को लिख कर यन्त्र निर्मित करे॥२५९॥

आपदुद्धारणं यन्त्रमपमृत्यभयापहम्।
सर्वसम्पत्प्रदं नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम्॥२६०॥

यह आपदुद्धारण यन्त्र अपमृत्यु और भयों को नष्ट करनेवाला है तथा नित्य सर्व सम्पत्ति और सर्व सौभाग्य प्रदान करता है॥२६०॥

रक्षाकरं ग्रहतारां राज्ञां विजयवर्द्धनम्।
मन्त्रेषु नास्ति मन्त्रोऽन्य इत्याहुर्मन्त्रवेदिनः॥२६१॥

ग्रह ताराओं आदि से रक्षा करनेवाला तथा राजाओं के लिए विजय का वर्द्धन करनेवाला है, मन्त्रज्ञ विद्वान इस मन्त्र से अधिक रक्षक अन्य कोई मन्त्र नहीं है ऐसा कहतें हैं॥२६१॥

देव्युवाच

भगवन्देवदेवेश रहस्यं वटुकस्य मे।
ब्रूहि येन वशीकुर्युः साधकाः भैरवं शिव॥२६२॥

देवि कहती है, हे देव देवेश भगवान् शङ्कर! वटुकभैरव के गुप्त रहस्य को हमें बतायें जिससे शिवावतार वटुकभैरव साधकों के वश में हो जातें हैं॥२६२॥

श्रीशिव उवाच

श्रृणु देवि परं गोप्यं कथयामि सुशोभने।
रहस्यं सिद्धिं साक्षाद्वटुकस्य महात्मनः॥२६३॥

श्रीशिव कहतें हैं, हे देवि! परम गोपनीय वटुकभैरव के रहस्य को कहते हैं जिससे साधकों को साक्षात् महात्मा वटुकभैरव की कृपा प्राप्त होती है॥२६३॥

सर्वे वटुकदेवस्य साधने ये निरूपिताः।
उपाया निष्फला एवं विनैकं वीरसाधनम्॥२६४॥

वटुकभैरव के जितने भी साधन बतलायें गयें है सभी बिना वीरसाधन के निष्फल हो जाती है॥२६४॥

येनान्यसाधनं हित्वा उपायं चान्यमाश्रयेत्।
न स सिद्धिमवाप्नोति नरो वर्षशतेरपि॥२६५॥

जो साधक अपने हित के लिए अन्य साधन अथवा अन्य उपायों का आश्रय ग्रहण कर साधना करतें हैं उन्हें सैकड़ों वर्ष तक साधना का किसी भी उपाय से फल नहीं प्राप्त होता॥२६५॥

माषान्मुद्गानमसूरांश्च चणकानोदनं तथा।
क्षारं तथा पूपमपि शष्कुलीरपि शोभनाः॥२६६॥

माष, मुदग, मसूर, चणक के भात बनाकर क्षार, पूप तथा सुन्दर सुहाली बलिदान के लिए लेकर॥२६६॥

आदाय सूत्रं कार्पासं कन्याकर्तितमेव च।
कुङ्कुमेनापि संरज्य कारयित्वाष्टकिलकान्॥२६७॥

उसमें कन्या के द्वारा काते गये सूत को लेकर कुङ्कुमादि से अलङ्कृत कर आठ कीलों को लेकर॥२६७॥

स्तम्भार्थमेकं कीलं च गृहीत्वा सुरसुन्दरि।
गच्छेच्छमशाननिकटे सुधीः सोत्तरसायकः॥२६८॥

हे सुर सुन्दरि! बुद्धिमान साधक श्मशान के निकट जाकर स्तम्भन के लिए एक एक कील ग्रहण कर तथा उत्तराभिमुख होकर॥२६८॥

पादप्रक्षालनं कृत्वा ततः स्मृत्वा सदेवताम्।
बद्धाञ्जलिमिदं वाक्यं प्रवदेत्साधकोत्तमः॥२६९॥

शुद्ध जल से पैर को धोकर देवता का स्मरण ध्यान करके दोनों हाथ धोकर उत्तम साधक अधोलिखित वाक्यों को कहे॥२६९॥

अत्र श्मशाने याः कश्चिद्देवता निवसन्ति हि।
ताः प्रयच्छन्तु मे सिद्धिं प्रसन्नाः सन्तु पान्तु माम्॥२७०॥

श्मशान में जो कोई देवता निवास करते हैं वे हमारे ऊपर प्रसन्न होकर सिद्धि प्रदान करें॥२७०॥

पूर्वे मां शङ्करः पातु तथाग्नेय्यां च शूलधृक्।
कपाली दक्षिणे पातु नैर्ऋत्ये जटिलोऽवतु॥२७१॥

पूर्व दिशा से शङ्कर हमारी रक्षा करें, आग्नेय दिशा से शूल धारण करनेवाले हमारी रक्षा करें, कपाली हमें दक्षिण दिशा से रक्षा करें, नैर्ऋत्य दिशा से जटाधारण करनेवाले हमारी रक्षा करें॥२७१॥

पश्चिमे पार्वतीनाथो वायव्ये प्रमथाधिपः।
उत्तरे मुण्डमालोऽव्यादीशाने वृषभध्वजः॥२७२॥

पश्चिम दिशा से पार्वतीनाथ हमारी रक्षा करें, वायव्य दिशा से प्रमथादि गणों के स्वामी रक्षा करें, उत्तर दिशा से मुण्डमाला को धारण करनेवाले रक्षा करें, ईशान में वृषभध्वज रक्षा करें॥२७३॥

ऊर्ध्वे पातु तथा शम्भुरधस्ताद्धूलिधूसरः।
अग्रतो भैरवः पातु पृष्ठतः पातु खेचरः॥२७३॥

ऊपर से शम्भु हमारी रक्षा करें, अधोदिशा से धूलिधूसर रक्षा करें, आगे से भैरव हमारी रक्षा करें, पीछे से खेचर हमारी रक्षा करें॥२७४॥

दक्षिणे भूचरः पातु वामे च पिशिताशनः।
केशन्पातु विशालाक्षो मूर्द्धानं च मरुत्प्रियः॥२७४॥

दाहिनें से भूचर हमारी रक्षा करें, वायें से पिशिताशन हमारी रक्षा करें, केशों की विशालाक्ष रक्षा करें, हमारे मूर्द्धा की मरुत्प्रिय रक्षा करें॥२७५॥

मस्तकं पातु भृग्वीशो नेत्रे पातु महामनाः।
कपोलौ पातु वीरेशो गण्डौ गण्डाभिमर्दनः॥२७५॥

हमारे मस्तक की भृग्वीश रक्षा करें, हमारे नेत्र की महामना रक्षा करें, हमारे कपोल की वीरेश रक्षा करें, हमारे गण्डस्थल की गण्डाभिमर्दन रक्षा करें॥२७६॥

उत्तरोष्ठे विरूपाक्षो ह्यधरे योगिनीप्रियः।
अक्षेषु दक्षविध्वंसी चिबुके तु कपालधृक्॥२७६॥

ऊपर के ओठ की विरूपाक्ष रक्षा करें, अधरोष्ठ की योगिनीप्रिय रक्षा करें, हमारे अक्ष की दक्षविध्वंसी रक्षा करें, हमारे चिबुक् की कपाल धारण करनेवाले रक्षा करें॥२७७॥

कण्ठे रक्षतु मां देवो नीलकण्ठो जगद्गुरुः।
दक्षस्कन्धे गिरीन्द्रेशो वामस्कन्धे वसुञ्जयः॥२७७॥

हमारे कण्ठ की जगद्गुरु नीलकण्ठ रक्षा करें, दाहिने कन्धें की गिरीन्द्रेश रक्षा करें, वायें स्कन्ध की वसुञ्जय रक्षा करें॥२७८॥

दक्षिणे च भुजे सर्वमन्त्रनाथः सदावतु।
वामभुजे सर्वभौमो हृदये पातु पाण्डुरः॥२७८॥

हमारे दक्षिण भुजा की समस्त मन्त्रों के नाथ सदा रक्षा करें, हमारे वायें भुजा की सर्वभौम रक्षा करें, हमारे हृदय की पाण्डुर रक्षा करें॥२७९॥

दक्षस्तने पशुपतिर्वामे पातु महेश्वरः।
उदरे सर्वकल्याणकरकोऽवतु मां सदा॥२७९॥

हमारे दक्षस्तन की पशुपति रक्षा करें, हमारे वायें स्तन की महेश्वर रक्षा करें, हमारे उदर की सर्वकल्याण कारक सदा रक्षा करें॥२८०॥

नाभौ कामप्रविध्वंसी जङ्घापातु दयामयः।
जानुनी पातु जामित्रो गुल्फौ गौरीपतिः सदा॥२८०॥

हमारे नाभि की काम का विध्वंस करनेवाले रक्षा करें, हमारे जङ्घा की दयामय रक्षा करें, हमाने जानुओं की जामित्र रक्षा करें, हमारे गुल्फों की गौरिपति सदा रक्षा करें॥२८१॥

पादपृष्ठे सामनिधिस्तथापादाङ्गुलिर्हरः।
पादाधः पातु सततं व्योमकेशो जगत्प्रियः॥२८१॥

हमारे पैर के पीछे के भाग की सामनिधि रक्षा करें तथा पैर के अङ्गुलियों की हर रक्षा करें, पैर के अधों भाग की हमेशा जगत्प्रिय व्योमकेश रक्षा करें॥२८१॥

इति रक्षां समाधाय मन्त्ररक्षां ततश्चरेत्।
एवं रक्षां समाधाय दिक्पालार्चनमाचरेत्॥२८२॥

इस प्रकार बतायें गयें विधि के अनुसार रक्षा का विधान करने के बाद मन्त्र से रक्षा का विधान करें, इस प्रका रक्षा का विधान करने के बाद दिग्पालों का अर्चन करना चाहिए॥२८२॥

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः पूर्वे॥ ॐ ह्रीँ ह्रुँ ह्रौँ आग्नेये॥ ॐ ह्रीँ ह्रूँ दक्षिणे॥ ॐ ग्लूँ न्लूँ नग नग नैर्ऋत्ये॥ ॐ यूँ म्रूँ पूँ सँ सः पश्चिमे॥ ॐ म्राँ म्राँ वायव्ये॥ ॐ भ्राँ भ्राँ भैरव उत्तरे॥ ॐ ब्रँ ब्रँ बूँ फट् ईशाने॥ ॐ ग्लौँ ब्लूँ ऊर्ध्वे ॥ ॐ घ्राँ घ्रँ घः अधोदेशे॥

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः पूर्व से रक्षा करें॥ ॐ ह्रीँ ह्रुँ ह्रौँ आग्नेय से रक्षा करें॥ ॐ ह्रीँ ह्रूँ

दक्षिण से रक्षा करें।। ॐ ग्लूँ न्लूँ नग नग नैर्ऋत्य से रक्षा करें।। ॐ ग्रूँ म्रूँ प्रूँ सँ स: पश्चिम से रक्षा करें।। ॐ म्राँ म्राँ वायव्य से रक्षा करें।। ॐ भ्राँ भ्राँ भैरव उत्तर से रक्षा करें।। ॐ ब्रँ ब्रँ बूँ फट् ईशान से रक्षा करें।। ॐ ग्लौँ ब्लूँ ऊर्ध्व से रक्षा करें।। ॐ घ्राँ घ्रँ घ: अधोदेश से रक्षा करें।।

ॐ ह्लौँ वँ भां भैरव भैरवाय नमः भां भैरव भैरव भयङ्करहर मां रक्ष रक्ष हुं फद् स्वाहा।।

ॐ ह्लौँ वँ भां भैरव (भासमान भैरव) भैरवाय (भैरव के लिए) नम: (नमस्कार है) भां भैरव (तेजोवान) भैरव भयङ्कर हर (भयङ्कर हर भैरव) मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा। अपने अस्त्र से हमारी रक्षा करें।

ततो वाक्यं पुनर्ब्रूयातसाधकः प्रीतिसंयुतः।
इति प्रार्थयित्वा तथा भैरवं सुखवर्धनः॥२८३॥

साधक प्रेम से युक्त होकर इस मन्त्र को बार बार उच्चरित कर भैरव से अपने सुख के बर्धन के लिए प्रार्थना करें।।२८३।।

एकस्मिन्भाजने कृत्वा पालाशस्य महात्मनः।
सिद्धमाषान् व्रजेत्प्राच्यां दिशि पूजार्थमादरात्॥२८४॥

पलास के एक दोनें में महात्मा वटुकभैरव के लिए पके हुए माषों को रख कर पूजा के लिए पूर्व दिशा में रखे।।२८४।।

तत्र स्थित्वा तु पुटकं करे धृत्वा विचक्षणः।
सम्भ्रमेण सुधीः प्रोक्तं दद्यादिन्द्राय वै बलिम्॥२८५॥

पूर्व दिशा में रखे पलास पुटक को हाथ में ग्रहण कर घूम कर पूर्व में आकर इन्द्र को बलि प्रदान करे।।२८५।।

ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लुँ समुच्चार्य भो इन्द्र सुरनायक।
प्रसन्नो भव में शीघ्रं देहि सिद्धिं सनातनीम्॥२८६॥

ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लुँ का उच्चारण कर हे सुरनायक इन्द्र प्रसन्न होकर हमें शीघ्र सनातनी सिद्धि प्रदान करें।।२८६।।

इमं बलिं गृह्णगृह्ण हुँ फड्डुच्चार्य साधकः।
बलिं दत्त्वा महाभागे सिद्ध्यर्थे प्राणवल्लभे॥२८७॥

हे प्राणवल्लभे! साधक को सिद्धि के लिए इमं बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् का उच्चारण कर बलि प्रदान करना चाहिए।।२८७।।

ततो रँ राँ समुच्चार्य रुँ रूँ रीमपि च प्रिये।
अग्रे ह्लूँ ह्लूँ मया दत्तं बलिं हुँ फट् समुच्चरेत्॥२८८॥

उसके बाद रँ राँ रुँ रूँ ऋँ ॠँ अग्ने हूँ हूँ बलिं मया दत्तं हुँ फट् का उच्चारण करना चाहिए।।२८८।।

मुद्रान्पात्रे समाधाय प्रदद्याद्बलिमादरात्।
ततो दक्षिणदेशांशे समागत्य विचक्षणः॥२८९॥

हे विचक्षण! पात्र में मुद्रों को रख कर आदर पूर्वक बलि प्रदान करना चाहिए, उसके बाद दक्षिण देश में आकर।।२८९।।

ॐ प्रां प्रीं समुच्चार्थ तथा प्रां प्रीमिति त्रिधा।
प्रेतनाथपदस्यति बलिं गृह्णेति चोच्चरेत्॥२९०॥

ॐ प्राँ प्रीँ का तीन बार उच्चारण करके प्रेत नाथ आप बलि ग्रहण करें पद का उच्चारण कर प्रार्थना करे।।२९०।।

हुं फडन्तोऽयमाख्यातो यममन्त्री वरानने।
अनेन दक्षिणे देशे पात्रं मसूरपूरितम्॥२९१॥

साधक हुं फट् का उच्चारण कर दक्षिण देश में मसूर से भरे हुए पात्र को ग्रहण कर बलि प्रदान करे।।२९१।।

स्थापयित्वा नमस्कृत्य नैर्ऋत्यांशे ततो व्रजते्।
बलिंचणकपात्रस्य दद्यात्साधकसत्तमः॥२९२॥

नैर्ऋत्य में प्रदान करने के लिए भरे हुए चणक पात्र स्थापित कर उत्तम साधक बलि प्रदान करे।।२९२।।

ॐ फ्रैँ फ्रैँ फ्रैँ समुच्चार्य ततो हूँ हूँ तथैव च।
ख्रैँ ख्रैँ ख्रैँ च ततो ब्रूयात्तो ह्रौँ ह्रौँ समुच्चरेत्॥२९३॥

ॐ फ्रैँ फ्रैँ फ्रैँ के उच्चारण करने के बाद हूँ हूँ का उच्चारण कर ख्रैं ख्रैं ख्रैं के उच्चारण के साथ ह्रौं ह्रौं का उच्चारण करे।।२९३।।

रक्षेनाथपदं ब्रूयाद् गृह्ण हुं फट् समन्वितः।
अनेन मनुना दद्याद्रक्षोनाथबलिं बुधः॥२९४॥

पूर्व कथित बीजों के उच्चारण के बाद रक्षेनाथ पद का उच्चारण कर गृह्ण गृह्ण हुं फट् को उच्चारित करे, इन मनुओं से रक्षनाथ निर्ऋति को बुद्धिमान साधक बलि प्रदान करे।।२९४।।

ततः पश्चिमदेशस्थो भूत्वा देशिकसत्तमः।
जलनाथाय सुबलिंदद्यात्स्वस्यार्थसिद्धये॥२९५॥

निर्ऋति को बलि प्रदान करने के बाद पश्चिम दिशा में आकर जलनाथ को सुसाधक को अपने कार्य की सिद्धि के लिए बलि प्रदान करना चाहिए।।२९५।।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं समुच्चार्य ततो वरुणमुच्चरेत्।
बलिमेनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥२९६॥

ॐ ब्राँ ब्रीँ ब्रूँ बीज का उच्चारणर करने के बाद वरुण पद का उच्चारण कर बलिमेनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर पदों का उच्चारण करे॥२९६॥

अनेन मन्त्रवर्येण वरुणायौदनस्य च।
बलिं दद्यानमहाभाग स्वार्थसिद्धय आदिशेत्॥२९७॥

पूर्व कथित मन्त्र से वरुण को ओदन की बलि प्रदान करना चाहिए साधक के कार्य की सिद्धि के लिए आदेश दिया गया है॥२९७॥

वायुदेशं समासाद्य ततो वायोर्बलिं हरेत्।
पायसं पात्रमादाय परमादर संयुतः॥२९८॥

वरुण को बलि प्रदान करने के बाद पायस पात्र को परम आदर से ग्रहण कर वायु कोण देश में आकर वायु के लिए बलि प्रदान करे॥२९८॥

ॐ वां वीं वूं समुच्चार्य ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं तथैव च।
हुँ फडन्तो मनुरयं वायोः सिद्धिप्रदायकः॥२९९॥

ॐ वाँ वीँ वूँ बीज के साथ ब्राँ ब्रीँ बूँ बीजों का योजन कर हुं फट् पद को समायोजित करे, यह वायु का मनु(मन्त्र) सर्व सिद्धि प्रदायक है॥२९९॥

अनेन मनुना प्राज्ञो वायवे बलिमाहरेत्।
ॐ क्रूँ क्रूँ क्रूँ समुच्चार्य ॐ क्राँ क्राँ क्राँ समुच्चरेत् ॥३००॥

पूर्व कथित बीजों से बुद्धिमान साधक वायु के लिए बलि प्रदान करे, वायु को बलि प्रदान करने के बाद उत्तर दिशा में ॐ क्रूँ क्रूँ क्रूँ बीजों के साथ ॐ क्राँ क्राँ क्राँ बीज का उच्चरण कर बलि प्रदान करे॥३००॥

हुँ फडन्तेन मनुना बलिं दद्याद्विचक्षणः।
ऐशान्यां दिशि ह्याश्रित्य साधकप्रवरस्ततः॥३०१॥

हे विचक्षणे! उत्तर दिशा के लिए कथित बीजों में हुँ फट् पद को योजित कर निर्मित मनु से बलि प्रदान करे॥३०१॥

ईशानाय बलिं दधात्सर्वकामार्थसिद्धये।
ॐ श्राँ श्रीँ श्रूँ समुच्चार्य ॐ श्राँ श्राँ श्रामथोच्चरेत् ॥३०२॥

ॐ श्राँ श्रीँ श्रूँ के बाद ॐ श्राँ श्राँ श्राँ बीज का उच्चारण कर ईशान के लिए समस्त कामना की सिद्धि के लिए बलि प्रदान करे॥३०२॥

हुँ फडन्तः समाख्यातो मन्त्रोऽयं लोकदुर्लभः।
अनेन मनुना दद्याच्छष्कुलीः पात्रसंस्थिताः॥३०३॥

ईशान के लिए कथित बीजों में हुँ फट् का योजन करे, यह मन्त्र लोक में दुर्लभ है, इस मनु से शष्कुली से भरे हुए पात्र को ग्रहण कर ईशान को बलि प्रदान करे।।३०३।।

बल्यर्थे सर्वकामार्थसिद्धो साधकोत्तमः।
एवमष्टबलीन्दद्यात्सर्वकामार्थसिद्धिः ।।३०४।।

उत्तम साधक अपने समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए दश दिग्पालों को उनके तत्तद मन्त्रों से बलि प्रदान करे, इस प्रकार से बलि प्रदान करने से साधक की सामस्त कामना सिद्ध हो जाती है।।३०४।।

स्तम्भाधोभागमाश्रित्य कार्यमग्रे समाचरेत्।
पुष्पाक्ष तान्समादाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं समुच्चरेत्।।३०५।।

स्तम्भ के अधो भाग में आश्रित होकर आगे का कार्य सम्पादित करे, हाथ में गन्ध-पुष्पाक्षत लेकर ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं बीज उच्चारित करे।।३०५।।

स्तम्भमन्त्रोऽयमाख्यातः सर्वकामर्थसिद्धये।
अनेन मनुना प्राज्ञ स्तम्भं सम्पूज्य निर्भयः।।३०६।।

स्तम्भ नाम से कहा जानेवाला मन्त्र समस्त कामनाओं की सिद्धि प्रदान करनेवाला है स्तम्भ मन्त्र से प्राज्ञ पुरुष स्तम्भों का पूजन कर साधक निर्भय हो जाता है।।३०६।।

ततः पठेन्मन्त्रमिमं कवचं कार्यसिद्धये।
यस्य प्रसादमासाद्य साधको निर्भयो भवेत्।।३०७।।

पूजनादि के बाद कवच की सिद्धि के लिए इन मन्त्रों का पाठ करे, जिसके प्रसाद से साधक निर्भय हो जाता है।।३०७।।

ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ ह्लः समुच्चार्य क्षाँ क्षीँ क्ष्रूँ क्षः समुच्चरेत्।
ख्राँ ख्रीं ख्रूँ ख्रः समुच्चार्य घ्राँ घ्रीँ घ्रूँ घ्रः ततो वदेत्।।३०८।।

ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ ह्लः बीजों का उच्चारण करने के बाद क्षाँ क्षीँ क्ष्रुँ क्षः बीजों को उच्चारित कर, ख्राँ ख्रीँ ख्रूँ ख्रः को उच्चारित कर घ्राँ घ्रीँ घ्रूँ घ्रः बीजों का उच्चारण करे।।३०८।।

म्राँ म्रीँ म्रूँ म्रः समुच्चार्य म्रँ म्रैँ म्रोँ म्रौँ ततो वदेत्।
ह्लौँ ह्लौँ ह्लौँ ह्लौँ समुच्चार्य क्लौँ क्लौँ क्लौँ क्लौँ पुनर्वदेत्।।३०९।।

पश्चात् म्राँ म्रीँ म्रूँ म्रः बीज का उच्चारण कर म्रँ म्रैं म्रों म्रौँ बीजों का उच्चारण कर, ह्लौं ह्लौं ह्लौं ह्लौं बीज उच्चारित कर क्लौं क्लौं क्लौं क्लौं बीज को उच्चारित करे।।३०९।।

श्रौँ श्रौँ श्रौँ साधकः प्रोच्य ज्रौँ ज्रौँ ज्रौँ ज्रौँ समुच्चरेत्।
हुँ हुँ हुँ हुँ समुच्चार्य हुँ हुँ हुँ हुँ फट् अथोच्चरेत्।।३१०।।

पश्चात् श्रौं श्रौं श्रौं बीज उच्चारित कर ज्रौं ज्रौं ज्रौं ज्रौं बीज उच्चारित कर, हुँ हुँ हुँ हुँ बीज के बाद पुनः हुँ हुँ हुँ हुँ बीज उच्चारित करे।।३१०।।

सर्वतो रक्षरक्षेति रक्षरक्षेति भैरव।
नाथ नाथ पदं प्रोच्य फडन्तोऽयं महामनुः॥३११॥

पश्चात् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ उच्चारण कर हुँ फट् पद का उदच्चारण करे यह महामनु सर्व रक्षा करक है॥३११॥

सर्वरक्षाकरः प्रोक्तः: साधकाभीष्टदायकः।
एवं विधाय मतिमान् तनौ रक्षां विशालधीः॥३१२॥

यह मनु सर्व रक्षा कर कहा जाता है तथा साधकों का अभिष्ट फलदायक है, बुद्धिमान साधक को इन मनुओं से अपने शरीर की रक्षा करनी चाहिए॥३१२॥

वीरशान्तिमथो कुर्यात्सर्वकार्यस्य सिद्धये।
या या सिद्ध्यन्ति कार्याणि साधकानां महेश्वरि॥३१३॥

हे महेश्वरि! समस्त कामना की सिद्धि के लिए साधकों को विहित विधि से वीर शान्ति करनी चाहिए, इस प्रकार साधक जिस जिस कामना से साधन करता है उन उन कामनाओं को पूरा कर लेता है॥३१३॥

यावत्कुर्यान्न वीराणां शान्तिं साधकसत्तमः।
तावन्नजायते सिद्धिः साधकस्य कथञ्चन॥३१४॥

जबतक साधक वीर शान्ति नहीं करता है तबतक साधक को सिद्धि नहीं प्राप्त होती है इस लिए साधकों को अपने कामनाओं की सिद्धि के लिए वीर साधन करना चाहिए॥३१४॥

श्मशानदेशे ये वीराः शिरस्यादाय शासनम्।
मनः स्थितानि कृन्तन्ति साधकानां मनोरथान्॥३१५॥

श्मशान स्थान में वीर साधन के लिए मन लाकर उनको अनुशासित करे, इस प्रकार से साधक अपने मनोरथों को पूरा कर लेता है॥३१५॥

अपूजिताः पूजितास्ते सर्वकामफलप्रदाः।
वीरशान्तिमथो वक्ष्ये साधकानां हिताय वै॥३१६॥

अपूजित हो या पूजित हो फिर भी वीर शान्ति साधकों को अपने हित के लिए निश्चय करनी चाहिए॥३१६॥

यस्याः प्रसादमासाद्य साधकः सुखमेधते।
पद्ममष्टदलं कृत्वा तद्बाह्ये षोडशं तथा॥३१७॥

वीर शान्ति के प्रसाद से साधक सुख प्राप्त करता है, साधक को पूजन करने के लिए अष्ट दल बनाकर उसके बाहर षोडश दल पद्म बनायें॥३१७॥

तद्बाह्येऽष्टदलं चापि भूपुरं च ततो लिखेत्।
एवं मण्डमालिख्य साधको निर्भयः स्थितः॥३१८॥

उस अष्टदल के बाहर भूपुर लिख कर मण्डल बनाकर साधक निर्भय हो बैठकर साधना करे।।३१८।।

मूलमन्त्रेण नैवेद्यं भैरवाय समर्पयेत्।
आद्यपद्यस्य मध्ये तु ततश्चैवाष्टभैरवान्।।३१९।।

मूल मन्त्र से भैरव को नैवेद्य समर्पित करे, नैवेद्यादि से पूर्व पाद्यादि प्रदान कर, मध्य अष्ट दल में अष्टभैरवों के पूजन को निवेदित करे।।३१९।।

षोडशाब्दे महापद्मे ततः साधकसत्तमः।
सम्पूज्य प्रयतो दद्यान्नैवेद्यं पायसस्य च।।३२०।।

षोडशदल पद्म में साधक पूजन कर पायस का नैवेद्य प्रदान करे।।३२०।।

मित्राणि षोडशप्राज्ञे भैरवस्य महात्मनः।
कुलीशं सुकुलीशं च जामित्रं रामठारिभौ।।३२१।।

बुद्धिमान साधक महात्मा भैरव के षोडश मित्रों का षोडश पद्मों में पूजन करे, कुलीश, सकुलीश, जामित्र, राम, अरिभादि का पूजन कर।।३२१।।

प्रचण्डं चण्डकोशं च चण्डात्मानं च चामरम्।
चारित्रं च चमत्कारं चञ्चलं चारुभूषणम्।।३२२।।

प्रचण्ड, चण्डकोश, चण्डात्मा, चामर, चारित्र, चमत्कार, चञ्चल तथा चारुभूषण नामधारियों का पूजन कर।।३२२।।

चामीकरं चारुवह कितवं चेति षोडश।
नत्यन्तनामाभिः पूज्याः षोडशानन्दपूरिताः।।३२३।।

चामीकर, चारुवह, कितवादि षोडश आनन्द भैरवों का इनके चतुर्थ्यन्त नामों से आनन्द पूर्वक पूजन करे।।३२३।।

ततोऽष्टपत्रे सम्पूज्य ब्राह्मयाद्या मातृसत्तमाः।
स्वस्वदिक्षु महेन्द्रादीन्पूजयेत्साधकोत्तमः।।३२४।।

उसके बाद अष्टपत्रों पर ब्राह्मी इत्यादि अष्टमातृकाओं का पूजन कर इन्द्रादि दिग्पालों का उनके दिशाओं विदिशाओं में उत्तम साधक पूजन करे।।३२४।।

ततोऽक्षतान् समादाय विकिरश्चक्रमण्डले।
वीरशान्तिं पठेत्सम्यक्साधकः प्रीतमानसः।।३२५।।

पश्चात् अक्षत लेकर मण्डल के चारों ओंर प्रक्षेप कर साधक पूर्णरूप से प्रसन्न मन होकर वीरशान्ति का पाठ करे।।३२५।।

चण्डप्रचण्डोर्ध्वकेशभीषणाभीषणाभिधाः ।
व्योमकेशो व्योमवाहुर्व्योमव्यापक एव च।।३२६।।

चण्ड, प्रचण्ड, ऊर्ध्वकेश, भीषण, अभीषण, व्योमकेश, व्योमवाहु, व्योमव्यापक नामधारि वीरों का आवाहन करे॥३२६॥

एतान्वीरानसमाहूय ह्यायाहीति समुच्चरन्।
मण्डले साधकश्रेष्ठो नैवेद्यादिभिरर्चयेत्॥३२७॥

आवाहयामि पद का उच्चारण पूर्वक आठों वीरों का साधक श्रेष्ठ मण्डल में नैवेद्यादि के द्वारा अर्चन करे॥३२७॥

एवमर्चा समाधाय साधको निर्भयः स्थितः॥
पूर्वप्राक्तान्सुधीः कृत्वा न्यासानत्यन्तसिद्धिदान्॥३२८॥

इस प्रकार अर्चन कर साधक निर्भय होकर स्थिरता पूर्वक बैठकर पूर्व में बतलाये हुए सिद्धि प्रदान करनेवाले न्यासों को करे॥३२८॥

पश्चिमाभिमुखो भूत्वा मालामादाय पाणिना॥
उच्चैस्तरां जपं कुर्यादागताय महात्मने॥३२९॥

पश्चिम मुख होकर माला हाथ में ग्रहण कर उच्च उद्घोष पूर्वक महात्मा वटुकभैरव के आगमन के लिए जप करे॥३२९ ॥

भैरवाय समीपे तु वामहस्तेन पायसम्।
भोजयेच्च जपं कुर्यान्निर्भयः प्रींतमानसः॥३३०॥

भैरव के समीप में वाये हाथ से भोग के लिए पायस रखकर प्रसन्नमन से निर्भय होकर जप करे॥३३०॥

तृप्तो देवो यदा ब्रूयाद्वरं वरय वाञ्छितम्।
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ वाञ्छितं वरमुच्चरेत्॥३३१॥

तृप्त होकर यदि देवता साधक से वाञ्छित वर मांगने के लिए कहें तो दण्डवत् भूमि में प्रणाम कर, वाञ्छित वर भैरव से कहे॥३३१॥

गृहेचागत्यप्रयत उत्सवं च समाचरेत्।
अनेनमनुनादेवि सिद्धये जगतीतले॥३३२॥

वर प्राप्त होने के बाद घर आकर प्रसन्नता पूर्वक उत्सव मनायें, हे देवि! इस प्रकार मन्त्र से सिद्ध साधक संसार में निर्भय हो जाता है॥३३२॥

असाध्यं नास्ति लोकेषु सत्यं सत्यं मयोदितम्।
वचाचूर्णे पलस्यार्धे तन्मानं घृतसंयुतम्॥३३३॥

उस साधक के लिए संसार में कोई भी चीज असाध्य नहीं रह जाता है, यह हम बार बार सत्य कह रहें हैं, इस प्रकार सिद्ध किये गये मन्त्र से साधक अन्य प्रयोग के लिए एक पल वचा के चूर्ण में आधा पल घृत मिलाये॥३३३॥

पद्मपात्रे विनिक्षिप्य त्रिशतद् प्रजपेद् बुधः।
प्राशये नयतोभूत्वा पुनर्लक्षत्रयं जपेत्॥३३४॥

कमल के पञ्च पर लेकर तीन सौ बार बुद्धिमान साधक जप करे, इस प्रकार अभिमन्त्रित वचा का प्राशन कर पुनः तीन लाख मूल मन्त्र जप करे॥३३४॥

तस्यैवं कुर्वतः प्रज्ञा निःसीमा भवति ध्रुवम्।
गद्यपद्यमयी वाणीरुतस्याप्यवधारणम्॥३३५॥

इस प्रकार से प्रयोग करने पर साधक के प्रज्ञा की कोई सीमा नहीं होती है यह निश्चय है, वह गद्य पद्य मयी वाणी में सम्भाषण करने लग जाता है॥३३५॥

अत्र वचाचूर्णभक्षणं तु यावद्भिर्दिनैस्त्रिलक्षजपोभवति तावद्भागान्कृत्वा प्रत्येकमेकं भागं प्राशयेदिति साम्प्रदायिकाः॥ विवादप्रयोगे विशेषो रूद्रयामले।

यहाँ प्रकार वचा चूर्ण का भक्षण जितने भी दिन तीन लाख सङ्ख्या जप चलेगा तबतक प्रत्येक में एक एक भाग अभिमन्त्रित कर प्राशन करे। विवादादि में विशेष प्रयोक्तव्य है।

शुक्लपक्षे द्वितीयायां शुक्रवारे समाहितः।
पूर्ववत्पूजयेद्देवं सिद्धान्नं च निवेदयेत्॥३३६॥

शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथी को जब शुक्रवार रहे तो पूर्ववत् देव पूजन कर देवता को सिद्धान्न निवेदन करे॥३३६॥

पलार्द्धे च वचाचूर्णे तन्मानघृतसंयुतम्।
पद्मपत्रे विनिक्षिप्य त्रिसहस्त्रं जपेद् बुधः॥३३७॥

बुद्धिमान साधक पश्चात् आधा पल वचा का चूर्ण और उतना ही घृत मिला कर कमल के पत्ते पर रख कर तीन सहस्र जपे॥३३७॥

त्रिसहस्त्रजपो विशेषः, अन्यत्सर्वे समानम्। यहाँ तीन सहस्र जप विशेष है अन्यत्र सभी जगह समान है।

विवादक्षेत्रमध्ये तु देवं ध्यात्वा च तत्क्षणात्।
अभिमन्त्र्य मृदं प्राश्य सन्ध्योपास्य स्वयं प्रभुम्॥३३८॥

विवाद क्षेत्र के मध्य देवता का ध्यान कर तत्क्षण सन्ध्योपासना से निवृत्त होकर मृदा या वच तीन सहस्र अभिमन्त्रित कर प्राशन करे॥३३८॥

ससप्ताहान्त्रिकाले तु तत्तपश्चैव सिद्ध्यति।
मृत्युञ्जयमहं वक्ष्ये यथावच्छ्रृणु सुन्दरि॥३३९॥

पूरे सप्ताह भर त्रिकाल जप कर अभिमन्त्रित करे, हे सुन्दरि! साधक मृत्यु को जीत लेता है॥३३९॥

उत्तरायणकाले तु दक्षिणायन एव च।
कालज्ञानमिदं ज्ञात्वा तत्त्वज्ञानं जपेत्पुमान्॥३४०॥

उत्तरायण काल हो या दक्षिणायन काल हो साधक यदि त्रिकाल जप करता है तो उसे काल ज्ञान हो जाता है और वह तत्त्वज्ञानी हो जाता है।।३४०।।

कृष्णाष्टम्यां चतुर्थ्यो वाप्यङ्गारकदिने ततः।
सात्त्विकं बालरूपं च द्विभुजं चिन्तयेद् बुधः।।३४१।।

कृष्णपक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्थी तिथी को यदि मङ्गल वार हो तो वटुक भैरव का द्विभुज सात्त्विक बालक रूप का बुद्धिमान साधक ध्यान करे।।३४१।।

अर्चयित्वा यथान्यायं सिद्धान्नं च निवेदयेत्।
यद्रूपं कथितं पूर्वमादिमध्यान्तवर्जितम्।।३४२।।

विधि पूर्वक अर्चन करके सिद्धान्न को निवेदित कर वटुकभैरव का आदिमध्यान्त वर्जित रूप का ध्यान करे।।३४२।।

तुषारकर्णिकाभासं ध्यात्वा देवं समाहितः।
सूकरीमुद्रया युक्तं खेचरीबहुमेलम्।।३४३।।

तुषार के कर्णिका के समान भासमान देवता का सूकरी मुद्रा से या खेचरी मुद्रा से युक्त ध्यान करना चाहिए।।३४३।।

ध्यानयोगेन मन्त्रञ्च मनापि जपेद् बुधः।
इत्येवं तु जपेल्लक्षं तदा मृत्युञ्जयो भवेत्।।३४४।।

मन में देवता का ध्यान करते हुए मन्त्र का बुद्धिमान साधक एक लाख जप कर मृत्यु को जीत लेता है अर्थात् मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है।।३४४।।

मृत्युनङ्गालिकांक्षीबेत्सात्त्विकं श्वेतरूपकम्।
हृदये स्वासनं ध्यात्वा तन्मध्ये देवमा स्थितम्।।३४५।।

मृत्यु की उपस्थिति में साधक को श्वेत स्वरूपवाला अपने हृदय के आसन पर देवता का सात्त्विक ध्यान करे।।३४५।।

न तस्य कालनी कान्तिमूर्तिमण्डलमाप्नुयात्।
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां भूमिपुत्रस्य वासरे।।३४६।।

तो साधक को काल कभी नहीं स्पर्श करता उसका शरीर कान्तिमान हो जाता है उसका मुख मण्डल तेजोवान हो जाता है, कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को भौम वार होने पर साधक देव की स्थापना करे।।३४६।।

आराध्य विधिवद्देवं तस्याग्रे स्थापयेद् बुधः।
रोचनाहेमजे पात्रे सम्पूज्य विधिनाथताम्।।३४७।।

बुद्धिमान साधक आराध्य देव की विधिवत् स्थापना कर पीतवर्ण से अलङ्कृत पात्र में विधिपूर्वक वटुकनाथ का पूजन करे।।३४७।।

गन्धपुष्पादिना स्पृष्ट्वा तां जपेदयुतत्रयम्।
तद्वतवर्त्ति प्रज्वाल्य कपिलाघृतसेविताम्॥३४८॥

बताये गये विधि के अनुसार कपिला घृत से दीप स्थापित कर उसमें देव का गन्धादि से विधिपूर्वक पूजन कर स्पर्श पूर्वक तीन आयुत अर्थात् तीस हजार जप करे॥३४८॥

सौवर्णे नृकपाले वा पात्रे संगृह्य चाञ्जनम्।
सम्पूज्यञ्च पुनर्जप्त्वा तत्पात्रं मन्त्रसंग्रहम्॥ ३४९॥

सुवर्ण के पात्र अथवा नर कपाल के पात्र में दीपक स्थापित कर अञ्जन बनाकर पुनः पूजन करने के पश्चात् मूल मन्त्र का जप कर कज्जल संग्रह करे॥३४९॥

ध्यात्वा वादवदंशोरेतदा चाञ्जनमाचरेत्।
वश्या भवन्ति ते सर्वे यान्यान्पश्यति साधकः॥३५०॥

वादादि उपस्थित होने पर, निर्मित कज्जल को देव ध्यांन पूर्वक आखों में लगाकर साधक जिसको जिसको देखता है सभी उसके वश में हो जाते हैं॥३५०॥

वन्ध्याचिकित्सां कुर्वाणो वालार्काभं समर्चयेत्।
हरिद्रार्धपलं चैव वचाचूर्णे च तत्समम्॥३५१॥

वन्ध्या की चिकित्सा करने के समाय वाल सूर्य के समान आभावाले देवता का ध्यान और पूजन कर आधा पल हरिद्रा को आधा पल वचा के चूर्ण मिश्रित करे॥३५१॥

पेषयित्वा तु गोमूत्रे गोलकं घृतसंयुतम्।
पद्मपत्रे विनिक्षिप्य स्थापयेद्देवसन्निधौ॥३५२॥

हरिद्रा और वचाचूर्ण के मिश्रण को गोमूत्र में सान कर गोली बनाकर कमल पत्र पर रखकर देवता के सम्मुख रखे॥३५२॥

प्राणिपत्य नमस्कृत्य जपेदच्चैः सहस्त्रकम्।
एवमेव प्रकारेण प्राशयेत्तु महौषधम्॥३५३॥

देवता का प्रणिपात पूर्वक नमस्कार कर मूल मन्त्र का उच्चारण पूर्वक सहस्त्र जप पूर्वक अभिमन्त्रित कर एक एक गोली प्रतिदिन प्रशन करे॥३५३॥

श्रीमन्तमायुष्मन्तं च बलवन्तं सुदर्शनम्।
विद्यावन्तं पुत्रवन्तं सद्यः पुत्रमवाप्नुयात्॥३५४॥

इस प्रकार अभिमन्त्रित गोलीयों के प्राशन से श्रीमान्, आयुवान, बलवान सुन्दर दिखनेवाला विद्यावान् पुत्र निश्चय ही प्राप्त करती है॥३५४॥

वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं ततः सिद्धिर्भविष्यति।
हविष्य भक्षणं कुर्याद् भूमिशायी जितेन्द्रियः॥३५५॥

मन्त्र के वर्णों की सङ्ख्या के अनुसार साधक हविष्यान्न का भक्षण कर भूमि पर शयन करते हुए विधि पूर्वक जप करने से निश्चय ही सिद्धि प्राप्त करता है॥३५५॥

दशांशं हवनं कुर्यात्तिलाज्यमधुभिर्द्विजः।
कोटिजपकृतेमर्त्यो श्रियमाप्नोत्यनुत्तमाम्॥३५६॥

जप पूरा होने पर जप का दशांश तिल, घी तथा मधु से हवन करे, मृत्यु लोक में कोटि जप से साधक उत्तम श्री प्राप्त करता है॥३५६॥

वश्यार्थमयुतं जप्त्वां रक्तपुष्पैर्दशांशतः।
होमं कुर्यात्करवीरैः श्वेतौर्विद्यामवाप्नुयात्॥३५७॥

वशीकरण में अयुत सङ्ख्या जप कर, रक्त पुष्प से दशांश हवन करने से श्री तथा करवीर पुष्पों के हवन से साधक विद्या की प्राप्ति करता है॥३५७॥

लक्ष्म्याप्त्यै कमलैर्होमो दीर्घायुर्दूर्वया हुते॥
गुडेन रोगनाशः स्यादपमृत्यु निवारणम्॥३५८॥

कमल के होम से साधक धनवान हो जाता है, दूर्वा का हवन करने से दीर्घायुः होता है, गुण के हवन से रोग नष्ट होता है तथा अपमृत्यु का निवारण होता है॥३५८॥

वस्त्रेण वस्त्रप्राप्तिः स्याद्धान्याप्तिर्धान्यहोमतः।
पुत्रजीविफलैर्होमे सर्वासिद्धिमवाप्नुयात्॥३५९॥

वस्त्र से अर्चन कर हवन करने से वस्त्र की प्राप्ति होती है, धान्य से हवन करने पर धान्य की प्राप्ति होती है, पुत्रजीवक फल के हवन से पुत्र दीर्घजीवी होता है तथा समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती है॥३५९॥

अश्वत्थसमिधा होमे पुत्राप्तिः सर्वसिद्धयः।
लवणघृतहोमेन शत्रून्मादकरं भवेत्॥३६०॥

अश्वत्थ की समीधा में हवन करने से पुत्र प्राप्ति तथा सर्वसिद्धि प्राप्त होती है, लवण में घी मिश्रित कर हवन करने से शत्रु उन्माद रोग से ग्रस्त हो जाता है॥३६०॥

काको लूकमांसहोमाच्छत्रून्मारयते ध्रुवम्।
सप्तरात्रेण देवेशि श्मशाने च त्रिलक्षकम्॥३६१॥

कौवे तथा उलूक के मांस के होम से शत्रूओं का निश्चय मरण होता है, हे देवेशि! श्मशान में सात दिन तक जप कर तीन लाख हवन करे॥३६१॥

सर्वसिद्धिः प्राप्नुयाद्देवि! वटुकस्य प्रसादतः।
ध्यानं सात्त्विकं कुर्यात् विधिवत् प्राज्ञसाधकः॥३६२॥

बुद्धिमान साधक वटुकभैरव का सात्त्विक ध्यान कर, श्मशान के जप हवन कर महात्मा वटुकभैरव की कृपा से समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है॥३६२॥

रसायनञ्च गुटिकां चेटकां सिद्धिमाप्नुयात्।
विभीतकवृक्षतले यदिलक्षं जपेन्नरः॥३६३॥

चेटका सिद्धि के लिए रसायन की गुटिका बनाकर विभीतक वृक्ष के नीचे यदि साधक एक लाख मूल मन्त्र जप करता है तो गुटिका चेटक सिद्ध हो जाती है॥३६३॥

वेतालभूतप्रेताश्च वश्या भवन्ति निश्चयात्।
जुहुयाद्दारूणैर्भोजैरजोदोषैर्मुधुराप्लुतैः ॥३६४॥

गुटिका सिद्धि से वेताल, भूत, प्रेतादि निश्चय ही साधक के वशीभूत हो जाते है, इसके लिए साधक आरूण तथा रक्त भोज पत्र को मधुरत्रय से आप्लुत कर हवन करे॥३६४॥

लक्षसङ्ख्या तदर्धं वा प्रत्यहं भोजयेद् द्विजान्।
वनितां युवतीं रम्यां प्रीणयेद्देवताधिया॥३६५॥

एक लाख अथवा उसका आधा पचास हजार जप कर, हवनादि के बाद ब्राह्मणों, सुहागिनीयों तथा सुन्दर युवतीयों को भोजन कराकर देवता की स्तुति इत्यादि करे॥३६५॥

होमान्ते धनधान्याद्यैस्तोषयेद्गुरुमात्मनः।
एवं कृते जगद्वश्यो रमाया भवनं भवेत्॥३६६॥

इस प्रकार से जप हवन पूजनादि करने के बाद धनधान्यादि से मन्त्रदाता गुरुं का पूजन कर उनको सन्तुष्ट करे, इस प्रकार मन्त्र दाता गुरु को सन्तुष्ट कर उनके अनुग्रह से साधक संसार को वश में कर लेता है तथा उसका घर धनधान्यादि से भरा रहता है॥३६६॥

रक्तोत्पलैस्त्रिमध्वक्तैररुणैर्वा हरिद्रजैः।
पुष्पैः पयोऽन्नैः सघृतैर्होमाद्विश्वं वशं नयेत्॥३६७॥

रक्त कमल के पत्रों, त्रिमधु अथवा हरिद्रा के पुष्पों का पायस(खीर) का घी के साथ हवन करने से साधक विश्व को वश में कर अपने आगे झुका लेता है अर्थात् विश्व पर अधिकार प्राप्त कर लेता है॥३६७॥

वाक्सिद्धिं लभते मन्त्री पालाशकुसुमैर्हुते।
कर्पूरागुरूसंयुक्तं गुग्गुलं जुहुयात्सुधीः॥३६८॥

पलास वृक्ष के पुष्पों के हवन से साधक वाक् सिद्धि प्राप्त कर लेता है, कपूर, अगुरू को गुग्गुल के साथ मिश्रित कर हवन करा॥३६८॥

ज्ञानं दिव्यमवाप्नोति तेनैव स भवेत्कविः।
क्षीराक्तैरमृताखण्डैर्होमः सर्वापमृत्युजित्॥३६९॥

साधक दिव्य ज्ञान प्राप्त कर कवि हो जाता है, हरे हरे दूध से युक्त अमृता(गुरुच) खण्ड के होम से अपमृत्यु जीत लेता है॥३६९॥

दूर्वाभिरायुषे होमः क्षीराक्ताभिर्दिनत्रयम्।
गिरिकर्णिभवैः पुष्पैर्नवधूकर्णिकारजैः॥३७०॥

हरे हरे दूधवाले दूर्वाओं के तीन दिन तक होम करने से बन्ध्या स्त्री भी रजस्वला होकर पुत्रवान हो जाती है तथा नव वधू की तो कोई बात ही नहीं॥३७०॥

मालतीकुसुमैर्हुत्वा तत्पुत्रांश्च वशंनयेत्।
कारण्डकुसुमैर्वैयावृषलान् पाटलोद्भवैः ॥३७१॥

मालती पुष्प के हवन से साधक के पुत्र पौत्रादि वश में रहते हैं, कारण्डव पुष्प के हवन से साधक का घर पशुओं से भरा रहता है।।३७१।।

आत्मानमविलेपान्तस्थितसाध्याह्वयानिवत् ।
मन्त्रमुच्चार्य जुहुयान्मन्त्री मधुरलोडितैः॥३७२॥

मन्त्रोच्चार पूर्वक त्रिमधु का हवन करके, त्रिमधु अभिमन्त्रित कर अपने शरीर पर अनुलेपन कर, साधक अपने साध्य को आकर्षित कर लेता है।।३७२।।

सर्षपैः पटुसंमिश्रैर्वशयेत्पार्थिवानक्षणात्।
अनेनैव विधानेन सपत्नीं तत्सुतानपि॥३७३॥

सरसों को घी से मिश्रित कर हवन करने से पृथिवी पर रहनेवालों को साधक तक्षण वश में कर लेता है, इसी प्रकार सपत्नी और उनके पुत्रों को भी वश में करता है।।३७३।।

जातिबिल्वफलैः पुष्पैर्मधुरत्रयसंयुतैः।
नरनारीनरपतीन्होमतो वश्येद् ध्रुवम्॥३७४॥

जाति और बिल्व फल मिश्रित कर, इनके पुष्पों के साथ मधुरत्रय से संयुक्त कर हवन करने से साधक नरनारी और राजाओं को वश में कर लेता है।।३७४।।

मालतीकुसुमोद्भूतैः पुष्पैश्चन्दनलोडितैः।
जुहुयात्कवितां मन्त्री लभते वत्सरान्तरे॥३७५॥

मालती पुष्प से उत्पन्न पुष्प तथा केशरों को चन्दन में मिला कर हवन करने से साधक कवित्व प्राप्त कर लेता है तथा एक वत्सर तक हवन करने से मन्त्री हो जाता है।।३७५।।

मधुरत्रय संयुक्तैः फलैर्बिल्वसमुद्भवैः।
जुहुयाद्वशयेल्लोकान् श्रियं प्राप्नोति वाञ्छिताम्॥३७६॥

विल्व फल को मधुर त्रय से संयुक्त कर हवन करने से लोक को वश में कर लेता है तथा वाञ्छित श्री प्राप्त करता है।।३७६।।

पाटलैः कुसुमैः कुन्दैरूत्पलैर्नागचम्पकैः।।
नद्यावर्तौर्विकसितैः कृतमालैर्जुहोतियः॥३७७॥

पाटली, कुन्द, नाग, चम्पक, नद्यावर्त्तों से निर्मित मालिका से जो साधक वर्षान्त हवन करता है।।३७७।।

जायते वत्सराद्दूर्वाक्छ्रिया विजितपार्थिवः।
साज्यमन्त्रं प्रजुहुयाद्भवेदन्नसमृद्धिमान्॥३७८॥

वह इच्छानुसार संसार के प्राणियों पर विजय प्राप्त कर लेता है, घी के साथ दूर्वा का वर्ष पर्यन्त हवन करनेवाला साधक अन्नधनधान्यादि से समृद्ध हो जाता है।।३७८।।

कस्तुरीकुङ्कमोपेतं कर्पूरं जुहुयाद्वशी।
कन्दर्पादधिकं सद्यः सौन्दर्यमाधिगच्छति॥३७९॥

कस्तुरी और कुङ्कुम को मिला कर कपूर के साथ हवन करने पर साधक कामदेव से भी अधिक सुन्दरता को प्राप्त करता है॥३७९॥

लाजान्प्रजुहुयान्मन्त्री दधिक्षीरघृतप्लुतान्।
विजित्य रोगानखिलाञ्जीवेच्च शरदां शताम्॥३८०॥

लाजा (धान के लावा) को दधि, क्षीर तथा घृत से मिश्रित कर हवन करने से साधक समस्त रोगों पर विजय प्राप्त कर सौ वर्ष तक जीता है॥३८०॥

पादद्वयं मलयजं पादं कुसुमकेसरम्।
पादं गोरोचनायाश्चश्रीणि पिष्ट्वा हिमाम्भसा॥३८१॥

दो भाग मलय चन्दन तथा आधा भाग पुष्प केसर में आधे भाग गोरोचन का मिश्रण कर हिमाम्भस के साथ पीस कर साधक मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करे॥३८१॥

विदद्ध्यात्तिलकं भाले यान्पश्चादीन्विलोकयेत्।
यान्स्पृशेत्स्पृतो यो वै वश्याः स्युस्तस्य तेऽचिरात्॥३८२॥

अभिमन्त्रित चन्दनादि का साधक ललाट पर तिलक करे तो पश्चादि जिसको भी देखता है या जिस किसी को स्पर्श करता है उसे दीर्घ काल तक वश में कर लेता है॥३८२॥

कर्पूरकपिकाष्टयोर्चतुर्भागोजटामासी ।
तावतीरोचनामता वश्याःस्युःसकलाजनाः॥३८३॥

कपूर और कपिकाष्ट को बराबर भाग में लेकर उसमें चतुर्थ भाग जटामासी और गोरोचन मिश्रितकर लेप बनाकर लगाये तो दीर्घकाल तक किसी को भी वश में कर लेता है॥३८३॥

एवमेव विनिर्माय सहस्राभिमन्त्रयेत्।
वश्याःस्यु अचिरात्काले वटुकस्य प्रसादतः॥३८४॥

इस प्रकार से चन्दनादि का लेप निर्मित कर मूल मन्त्र एक सहस्र अभिमन्त्रित कर ललाट पर तिलक लगाने से साधक वटुकभैरव के प्रसाद से जगत् के समस्त प्राणियों को चिर काल तक वश में कर लेता है॥३८४॥

कुङ्कमं सप्तभागं स्याद्द्विभागं चन्दनं मतम्।
अगुरूं नवभागं स्यादेवं भागक्रमेण च॥३८५॥

सात भाग कुङ्कुम तथा दो भाग मलयागिरि चन्दन में अगुरू नव भाग क्रम से मिश्रित करे॥३८५॥

हिमाद्रिः कन्यकापिष्टमेतत्सर्वे सुसाधितम्।
यो भाले तिलकं धत्ते कुर्याद्भूमिपतीन्नरान्॥३८६॥

पश्चात् हिम पुष्प के साथ कन्या द्वारा पीसवा कर वटुकभैरव का ध्यान पूर्वक जप कर मूल मन्त्र से एक सहस्र अभिमन्त्रित कर ललाट पर तिलक का लेपन करने से साधक नरों तथा भूमि पतियों को वश में कर लेता है।।३८६।।

वासितामदगर्वाढ्यान्मदोनमत्तान्मतङ्गजान् ।
सिंहान्व्याघ्रान्महासर्पान्भूतवेतालराक्षसान् ।।३८७।।

सुवासित तथा मद से गर्वित उन्मत्त मतङ्ग, हाथियों, सिंहों, व्याघ्रों, विशलसर्पों, भूतों, वेतालों तथा राक्षसों को वश में कर लेता है।।३८७।।

अथ स्तवराजपुरश्चरणप्रयोगानाह शिवागमसारे। (यह प्रयोग शिवागमसागर में वटुकभैरव पुरश्चरण में भी निर्दिष्ट है)

दर्शनादेव वशयेत्तिलकं धारयेन्नरः।
हविष्यान्नं च माषान्नं यवान्नं तन्दुलानि वा।।३८८।।

इस प्रकार से तिलक का निर्माण कर साधक जिसको भी देखता है उसे वश में कर लेता है, हविष्यान्न, माषान्न, यवान्न अथवा तन्दुलान्नों का सेवन करता हुआ।।३८८।।

सकृज्जग्ध्वा वाग्यश्च भूमिशायी जितेद्रियः।
एकादशसहस्त्रं वै पुरश्चरमाचरेत्।।३८९।।

भूमिशायी, जितेन्द्रिय तथा अपशब्दों के सम्भाषण को पूर्णरूप से त्याग करता हुआ वटुकभैरव के ध्यान में निमग्न होकर ग्यारह हजार जप कर पुरश्चरण करे।।३८९।।

स्तोत्रादौ मूलमन्त्रं च ह्यष्टोत्तरशतं जपेत्।।
स्तोत्रान्ते च शतावृत्तिं कृत्वा स्तोत्रं पठेत्पुनः।।३९०।।

वटुकभैरव अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र के पूर्व मूल मन्त्र को अष्टोत्तरशत जप कर पुंनः पाठ के बाद मूल मन्त्र का अष्टोत्तरशत जप करे इस प्रकार शतावृत्ति पाठ करे।।३९०।।

एवं सम्पुटितं कृत्वा देवं नत्वापठेत्स्तवम्।
दशांशं हवनं कुर्यात्तद्दशांशेन तर्पणम्।।३९१।।

इस प्रकार मूल मन्त्र से सम्पूटित कर वटुकभैरव को नमन कर दशांश हवन कर तद्दशांश तर्पण करे।।३९१।।

मार्जनं तद्दशांशेन दशांशं विप्रभोजनम्।
एवं कृते मनुष्यो वै प्राप्नुयान्मनसेप्सिताम्।।३९२।।

इस प्रकार हवन तर्पण कर तर्पण का दशांश मार्जन कर तर्पण का दशांश ब्राह्मण भोजन कराये, इस प्रकार से जो साधक वटुकभैरव का ध्यानार्चन करता है वह अपने अभिप्सित कामना को पूर्ण कर लेता है।।३९२।।

मतान्तरं प्रवक्ष्यामि तं कृत्वा सुमन्त्रकः।।
जप्त्वा च विधिपूर्वे हि यथाशक्ति पुनः सुधीः।।३९३।।

अन्य प्रयोग बताते हैं जिसका प्रयोग बुद्धिमान साधक को करना चाहिए, मूल मन्त्र को यथा शक्ति विधि पूर्वक जप करे॥३९३॥

स्तोत्रपाठं पुनः कृत्वा पूर्वोक्तन्नियमांश्चरेत्।
स्तोत्राभ्यां सम्पुटं कृत्वा होमादि पूर्ववत्सुधीः॥३९४॥

मूल मन्त्र जप करने के बाद स्तोत्र का पाठ कर, पूर्वोक्त नियमों के अनुपालन पूर्वक, स्तोत्र को मूल मन्त्र से सम्पुटित कर, पुनः पाठ करने के बाद, पूर्ववत् बुद्धिमान साधक हवनादि करे॥३९४॥

मया मतद्वयं प्रोक्तं सर्वेषां सुखहेतवे॥
प्रयोगांश्च प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया॥३९५॥

हमने लोक में समस्त प्राणियों को सभी प्रकार का सुख प्राप्त हो इस कामना से दो प्रयोग बतलाये हैं॥३९५॥

आपदुद्धारकं ये वै पठन्ति प्रत्यहं प्रिये॥
तेषां न दुर्लभं किञ्चिदसाध्यं यत्सुरैरपि॥३९६॥

आपदुद्धारक नामक स्तोत्र का जो साधक प्रति पाठ करता है उसको इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं होता॥३९६॥

दशावर्त्ते च मन्त्रस्य पुरा कृत्वा पठेत्स्तवम्॥
यन्त्रादिपूर्ववत्कृत्वा त्रिकालं यः पठेदिह॥३९७॥

यन्त्रादि का पूर्ववत् बताये विधि से पूजन कर मन्त्र तथा स्तोत्र का दश आवृत्ति पाठ साधक त्रिकाल करे॥३९७॥

रात्रौ वारत्रयं यो वै तस्य वश्यं जगद्भवेत्।
प्रातश्चैकादशावृत्ति रात्रौ वा पुनरेव हि॥३९८॥

जो साधक रात्री को तीन बार पाठ करता है उसके वश में संसार हो जाता है, प्रातः एकादश आवृत्ति तथा रात्री में भी एकादश आवृत्ति पुनः पाठ करे॥३९८॥

पूर्ववच्च विधिं कृत्वा पठनीयः स्तवः शुभः।
महानिशि त्रिरावृत्तिं यः करोति सदा शुचिः॥३९९॥

इस प्रकार पूर्व कथित विधि से पूजनादि कर मूल मन्त्र से सम्पुटित कर शुभकारी स्तोत्र का पाठ करे इसी प्रकार अर्धरात्री को भी सदैव शुद्ध होकर करे॥३९९॥

राजानो वशमायान्ति सभाशोभाकरो भवेत्।
शनौ च प्रातरूत्थाय दशावृत्तिं चरेदिह॥४००॥

इस प्रकार पाठ करनेवाले साधक के राजा भी वश में हो जाते हैं तथा सभा में शोभायमान हो जाता है, इसी प्रकार शनिवार को प्रातः उठ कर विधि पूर्वक पूजनादि कर दश आवृत्ति पाठ करे॥४००॥

होमादिकं च सम्पाद्य षण्मासादतुलां श्रियम्।
शनौ चैवाश्वत्थमूले पूजयित्वा शिवं प्रिये॥४०१॥

शनिवार को पिपल के वृक्ष के नीचे वटुकभैरव का पूजन कर पूर्व विधि से होमादि का सम्पादन कर छ: माह में साधक अतुल श्री को प्राप्त करता है॥४०१॥

शतावृत्तिं पठित्वा तु जगद्वल्लभतामियात्।
रवौ च नाभिमात्रे हि जले स्थित्वा पठेदिह॥४०२॥

रवि वार को नाभि तक जल में स्थिर होकर शतावृत्ति पाठ करनेवाला साधक जगत् का प्रिय हो जाता है तथा संसार की वल्लभता प्राप्त करता है॥४०२॥

एकादश तथावृत्तिं पठित्वा प्राप्नुयाच्छ्रियम्।
पठेच्च रोगशान्त्यर्थे नक्षत्रे पुष्यसंज्ञके॥४०३॥

एकादश आवृत्ति पाठ करनेवाला साधक श्री प्राप्त करता है, रोग शान्ति के लिए पुष्य संज्ञक नक्षत्र में पाठ करना चाहिए॥४०३॥

अष्टावृत्तिं पठेद्यो वै आरोग्यं लभते ध्रुवम्।
रवौ च ब्रह्मणान्पूज्य पाठयेच्छतवारकम्॥४०४॥

रवि वार को ब्राह्मणों का पूजन कर आठ आवृत्ति पाठ करनेवाला, साधक निश्चय ही आरोग्यता को प्राप्त करता है॥४०४॥

वारेवारे च षण्मासं पठित्वा सुतमाप्नुयात्।
सप्तजन्मभवा वन्ध्या जीवित्पुत्राभवेदिह॥४०५॥

प्रत्येक रवि वार को छ: महीने तक पाठ करनेवाला साधक निश्चय ही पुत्र प्राप्त करता है, सात जन्मों से वन्ध्यात्व प्राप्त करनेवाली स्त्री भी दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त करती है॥४०५॥

कन्याकामो भवेद्यो वै त्रिकालं रविवासरे।
षण्मासादप्सरातुल्यां लभते ह्युत्तमा सुताम्॥४०६॥

कन्या की कामनावाला साधक रवि वार को प्रात:, मध्याह्न तथा सायं तीनों काल पाठ करनेवाला छ: मास में अपने अभिष्ट को प्राप्त करता है तथा अप्सरातुल्य कन्या को प्राप्त करता है॥४०६॥

वैद्यानां चैवदु:साध्यो रोगो भवति तस्य च।
सस्वरोगस्य शान्त्यर्थ पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्॥४०७॥

वैद्यों के द्वारा दु:साध्य रोग की शान्ति के लिए उत्तम स्तोत्र का मूल मन्त्र से सम्पुटित कर पाठ करने से असाध्य रोगों की निश्चय ही शान्ति होती है॥४०७॥

निष्फलश्च क्रतुर्यस्य भवतीह सदाप्रिये।
सहस्त्रावर्तनं कृत्वा सफलश्च क्रतुर्भवेत्॥४०८॥

हे प्रिये! जिनके कार्य निष्फल हो जाते हैं उनको आपदुद्धारण स्तोत्र को मूल मन्त्र से सम्पुटित कर सहस्र पाठ करने से समस्त कार्य सफल हो जाते है।।४०८।।

ग्रहणे च पठेद्यो वै विधिना चन्द्रसूर्ययोः।
मनोद्दिष्टां तदा सिद्धिं प्राप्नुयान्नात्र संशयः।।४०९।।

सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण काल में जो आपदुद्धारण स्तोत्र का मूल मन्त्र सम्पुटित कर पाठ करता है उसकी समस्त मनोकामना पूर्ण हो जाती हैं इसमे कोई संशय नहीं है।।४०९।।

तीर्थे चैव शुभे क्षेत्रे शिवस्य सन्निधौ प्रिये।
पठित्वा स्तोत्रं मन्त्रं च सद्यः सिद्धिः लभेदिह।।४१०।।

हे प्रिये! तीर्थ स्थान अथवा शुभ क्षेत्र में शिव का सानिध्य प्राप्त कर आपदुद्धारण वटुकभैरव स्तोत्र का पाठ करता है तो निश्चय ही समस्त सिद्धि प्राप्त करता है।।४१०।।

त्रिरावृत्तिं दशावृत्तिं विंशति वा शतावधिम्।
सहस्त्रसंख्यया वाथ चैकादशसहस्त्रकम्।।४११।।

अपदुद्धारण स्तोत्र की तीन आवृत्ति, दश आवृत्ति, शतावृत्ति, सहस्रावृत्ति अथवा एकादशसहस्रावृत्ति पाठ का पुरश्चरण बतलाया गया है।।४११।।

पुरश्चरणकं प्रोक्तं भैरवस्य महात्मनः।
पुरश्चरणकं कृत्वा पठते नित्यमेव च।।४१२।।

महात्मा वटुकभैरव का पुरश्चरण निर्देशित किया गया है। भाग्यवान साधक को निर्दिष्ट पुरश्चरण करने के बाद नित्य आपदुद्धारण स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।।४१२।।

सद्यः सिद्धिं यथोक्तां हि प्राप्नुयान्नात्र संशयः।
मानुष जन्म चासाद्य दुःखभाजो भवन्ति ये।।४१३।।

मनुष्य जन्म पाकर जो दुःखभागी है वे लोग यदि पुरश्चरण करने के बाद नित्य स्तोत्र पाठ करते हैं तो निश्चय ही सिद्धि प्राप्त करते हैं इसमें कोई संशय नहीं है।।४१३।।

ते भजन्तु सदा देवं भैरवं सुखदायकम्।
तद्दुःखं नैव विद्येत भैरवो नाशयेदिह।।४१४।।

जो साधक सदा सुखदायक देवता वटुकभैरव का नित्य भजन करते हैं उन्हें कभी कोई दुःख नहीं व्याप्त करता उसके दुःखों का वटुकभैरव निश्चय ही नाश कर देते हैं।।४१४।।

तस्माद्दुःखविनाशय भैरवः सेव्यतेजनैः।
सर्वदुःखविनाशाय भैरवं रूपमीरितम्।।४१५।।

इस लिए दुःखों के विनाश के लिए साधक जन भैरव का नित्य सेवन करते हैं तथा समस्त दुःखों के विनाश के लिए एक मात्र साधन वटुकभैरव ही हैं।।४१५।।

भैरवः सेवितो येन तेनैव सेवितो ह्यहम्।
अहं भैरवरूपेण लोकानां सुखदः सदा।।४१६।।

जो साधक नित्य वटुकभैरव की सेवा करते है उनकी रक्षा हम करते है, मै ही वटुक भैरव रूप से संसार के जनों को सदा सुख प्रदान करता हूँ।।४१६।।

मया वै भैरवस्यैव विधिराराधनस्य च।
विविधाराधनं कामान्प्राप्नुवन्ति तथा प्रिये।।४१७।।

हे प्रिये! हमारे तथा भैरव की आराधना की विधि जो लोग जानते है वे अपनी समस्त कामनाओं को निश्चय ही पूरा कर लेते हैं।।४१७।।

तत्ततथा मया देवि प्रोक्तं त्वञ्च प्रियासि मे।
स्थापनीयं त्वया लोके सर्वेषां सुखहेतवे।।४१८।।

हे देवि! आप हमारी प्रिया हो इसलिए तुम्हारे सम्मुख लोक में सभी को सुख प्रदान करने के लिए हमने वटुकभैरव अर्चनाविधि का वर्णन किया।।४१८।।

तिलानाञ्च तथा होमो गुग्गुलस्य तथा पुनः।
मधुकानां च पुष्पैश्च ब्रह्मवृक्षभवैस्तथा।।४१९।।

तिलक तथा होम बार बार गुग्गुल से करना चाहिए और मधुक पुष्प तथा ब्रह्मवृक्ष के पुष्पों से पूजन हवन करना चाहिए।।४१९।।

बिल्वदलैस्तथा देवि गुडूचीखण्डकैस्तथा।
करवीरस्य कुसुमैर्बन्धुजीवैस्तथा पुनः।।४२०।।

हे देवि! बिल्व वृक्ष के पत्रों तथा गुडूची के खण्डों तथा करवीर के पुष्पों और बन्धुजीवक(पुत्रजीवक) वृक्षों के पुष्प फल तथा समीधाओं से पूजन तथा हवन करना चाहिए।।४२०।।

औदुम्बरसमिद्भिश्च पलाशस्य तथा प्रिये।
अनेकैश्च फलैर्देवि कदलीबीजपूरकैः।।४२१।।

औदुम्बर तथा पलाश की समीधाओं का हवन में प्रयोग करे, कदली तथा बीज पूरक वृक्ष के फलों को वटुकभैरव की आराधना में प्रयोग करे।।४२१।।

माधुर्यैर्विविधैस्तस्य प्रीत्या होमं प्रकल्पयेत्।
घृतेनसितयाप्रीतिर्जायते भैरवस्य च।।४२२।।

भोग में विविध प्रकार के मधुर पक्वान्नों का उपयोग करे तथा हवन में प्रिय लगनेवाले मधुर वृक्षों का घी के साथ प्रयोग, वटुकभैरव को प्रसन्न करता है।।४२२।।

कुण्डानिविविधानीह प्रोक्तानिकामभेदतः।
ब्रह्मभोज्यं प्रकर्त्तव्यं तस्य प्रित्या प्रिये सदा।।४२३।।

हवन के लिए विविध प्रकार के कामना भेद से कुण्डादि निर्माण बतलाये गये हैं। वटुकभैरव के प्रीति के लिए ब्राह्मण भोजन करना चाहिए।।४२३।।

त्रिकोणं चैव षट्कोणं चतुष्कोणमथापि वा।
हस्तमात्रं द्विहस्तं वा द्वात्रिंशदुङ्गुलं तथा॥४२४॥

कामना के अनुसार त्रिकोण, षट्कोण तथा चतुष्कोण स्वरूपवाला एक हाथ, दो हाथ अथवा तीन हाथ अर्थात् बत्तीस अङ्गुल के प्रमाणवाला कुण्ड बनायें॥४२४॥

दशाङ्गुलं च नित्यं चेदेकादशाङ्गुलावधिः।
महाहोमे महत्प्रोक्तं लघुहोमे लघुस्मृतम्॥४२५॥

नित्य हवन के लिए दश अङ्गुल का अथवा एकादश अङ्गुल के प्रमाणवाला कुण्ड बनाये महाहोम में महाकुण्ड निर्माण करे तथा लघुहोम में लघुकुण्ड निर्माण करे॥४२५॥

एतत्ते सर्वमाख्यातं तव प्रीत्यै मया शुभे।
दाम्भिकाय न वक्तव्यं वदभ्रष्टाय वा तथा॥४२६॥

इस प्रकार वटुकभैरव की आराधना विषयक समस्त कार्य कहा, इन विधियों को दम्भियों तथा भ्रष्टों के सम्मुख कभी नहीं कहना चाहिए॥४२६॥

सन्ध्याहीनाय नो वाच्यमभक्ष्याभक्षाय च।
दुर्वृत्तिसेवकायादि न वक्तव्यकथञ्चन॥४२७॥

सन्ध्या हीन तथा अभक्ष्य भक्षक के सम्मुख कभी वटुकभैरव आराधना विधि नहीं बतानी चाहिए, दुर्वृत्तियों के सेवन करनेवालों से कभी भी नहीं कहना चाहिए॥४२७॥

पापिष्ठाय तथा देवि विश्वासहिताय च॥
न वक्तव्यं त्वया देवि सत्यं सत्यं वदामि ते।४२८॥

पापियों तथा विश्व का अहित करनेवाले के सामने कभी नहीं कहना चाहिए, मैं सत्य निश्चय ही सत्य कहता हूँ॥४२८॥

इति श्रुत्वा तथा देवि सदृष्टा च पुनः पुनः।
नमस्कृत्य तदा शम्भुं स्थापयामास वै भुवि॥४२९॥

इस प्रकार भगवान् शङ्कर के उपदेश से सन्तुष्ट हो कर उनको बार बार नमस्कार करते हुए शम्भु के सामने बैठ कर पुनः श्रीशङ्कर से श्रीदेवि! ने वटुकभैरव के उपासना में प्रयुक्त विशेष न्यासों को पूछा॥४२९॥

अथ न्यासविशेषो ही उक्तं भैरवेकल्पे।
ईशानं मूर्ध्नि विन्यस्य मुखे तत्पुरूषं न्यसेत्॥४३०॥

वटुकभैरव की उपासना में उपयोगी विशेष न्यासों को कहते है। मूर्धा में ईशान का न्यास करने के बाद मुख में तत्पुरुष का न्यास करे॥४३०॥

अघोरं हृदये न्यस्य वामदेव च गुह्यके।
सद्योजातं पदे न्यस्य पञ्चब्रह्मापि विन्यसेत्॥४३१॥

अघोर का हृदय पर न्यास कर, वामदेव का गुह्य स्थान में न्यास करे, सद्योजात का पैर में न्यास करने के बाद पञ्चब्रह्म का न्यास करे॥४३१॥

आवाहयेत्तदादेवं सद्योमन्त्रेण मूलतः।
मूलमन्त्रेण सम्युक्तं चासनं वामदेवतः॥४३२॥

न्यासादि करने के बाद देवता का मूल मन्त्र तथा सद्योजात मन्त्र से आवाहन कर मूल मन्त्र के साथ वामदेव मन्त्र योजितकर असन प्रदान करे॥४३२॥

सान्निध्यं मूलमन्त्रेण चाघोरेण च पाद्यकम्।
तत्पुरूषेण योगार्त्ती ईशाने देवमुद्रयोः॥४३३॥

मूल मन्त्र से सन्निधान करे और अघोर मन्त्र से पाद्य प्रदान करे, वटुकभैरव आराधना करनेवाले को तत्पुरुष मन्त्र से योग तथा ईशान मन्त्र से देवमुद्राओं को प्रदर्शित करे॥४३३॥

एव तु मन्त्रयोगेन मुद्राषट्कं प्रदर्शयेत्।
नष्टद्रव्यस्य प्राप्त्यर्थे कुमारं बटुकं जपेत्॥४३४॥

मूल मन्त्र के योग से छः मुद्राओं को प्रदर्शित कर नष्टद्रव्यों की प्राप्ति के लिए कुमार वटुकभैरव के मूल मन्त्र का जप करे॥४३४॥

पूर्ववत्पूजयित्वातु सिद्धान्नञ्च निवेदयेत्।
सहस्त्रं तु जपं कृत्वा विशेषाद्देवसन्निधौ॥४३५॥

पूर्व में बतायें विधि के अनुसार पूजन कर विविध प्रकार के पके हुए अन्नों को भोग के लिए निवेदित कर देवता के विशष सन्निधान के लिए एक सहस्त्र जप करे॥४३५॥

आराध्य प्रणिपातेन नष्टद्रव्यं च लभ्यते।
शत्रुसेनाविनाशाय राजा दद्याद्बलिं प्रिये॥४३६॥

इस प्रकार आराधना करके साष्टाङ्ग दण्डवत् करने से नष्टद्रव्य को साधक प्राप्त करता है, शत्रुओं की सेनाओं के विनाश के लिए राजाओं को विधिपूर्वक बताये गये बलि को प्रदान करे॥४३६॥

पूर्वोक्तं राजसं देवि बलिं निष्पाद्य मन्त्रवित्।
सम्पूज्य पूर्ववद्देवं मध्यरात्रे महेश्वरि॥४३७॥

पूर्व में बताये विधि के अनुसार राजस बलि देवता को प्रदान करना चाहिए, पहले के बताये विधि के अनुसार मध्यरात्री में पूजन कर बलि प्रदान करे॥४३७॥

अन्यूनाङ्गमजं देवि सर्वलक्षणसम्युतम्।
आनीय मूलमन्त्रेण स्नापयित्या शुभैर्जलैः॥४३८॥

समस्त शुभ लक्षणों से युक्त अन्यूनाङ्ग बकरे को लाकर मूल मन्त्र से शुद्ध जल से स्नान करा कर॥४३८॥

गन्धमाल्यैरलङ्कृत्य देवस्याग्रे निधाप्यतम्।
मूलमन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य संरक्ष्योस्त्रेण तं प्रिये॥४३९॥

गन्ध तथा माल्यादि से अलङ्कृत कर देवता के सम्मुख स्थापित कर मूल मन्त्र से सम्प्रोक्षण करके मूल ही मन्त्र से संरक्षण करे॥४३९॥

कवचेनावगुण्ठ्याथ मुद्रया धेनुसंज्ञया।
अमृतीकृत्य सर्वा ते देवताय रूपिणं बलिम्॥४४०॥

कवच मुद्रा से अवगुण्ठन कर धेनु मुद्रा से अमृती करण कर समस्त बलियों को देवता के लिए मान कर॥४४०॥

धूपयेत्पशवेत्यक्त्वा नम इत्यर्चयेत्रिधा।
गन्धादिकैस्ततो देवि कर्णे तस्य प्रनिक्षिपेत्॥४४१॥

बलि के पशुओं को ढ़क कर नमः पद से बलि का अर्चन करने के बाद गन्धादि से अर्चित कर, हे देवि! बलि के कान में बलिगायत्री मन्त्र के वाक्यों को सुनाये॥४४१॥

पशुपाशाय इत्युक्त्वा विद्महे तदनन्तरम्।
विप्रकर्णाय देवेशि धीमहीति ततः परम्॥४४२॥

हे देवेशि! पशुपाशाय बोल कर पुनः विद्महे पद उच्चारित कर विप्रकर्णाय धीमहि उच्चारित करे॥४४२॥

तन्नो जीवः समुच्चार्य वदेद्देवि प्रचोदयात्।
इत्येतां पशुगायत्रीं तर्पयित्वा महेश्वरि॥४४३॥

हे माहेश्वरि! पुनः तन्नो जीवः पद के उच्चारण के बाद प्रचोदयात् पद का उच्चारण करे, इस प्रकार पशुगायत्री मन्त्र से पशुओं को तर्पित करे॥४४३॥

निधाय पुरतः खड्गं ॐ ह्रीं काली विधीयते।
काली वज्रेश्वरि लौहान्ते दण्डायै नम इति॥४४४॥

सामने खड्ग स्थापित कर उसपर ॐ हीं काली काली वज्रेश्वरि लौह दण्डायै नमः लिखे॥४४४॥

त्रिधा च पूजयेद्देवि! मुष्टौ तस्य ततोऽर्चयेत्।
वागीश्वरीं च ब्रह्माणीं लक्ष्मीनारायणौ ततः॥४४५॥

खड्ग का तीन बार पूजन कर मुष्ठिका पर पूजन करे, वागीश्वरी, ब्रह्माणी तथा लक्ष्मीनारायण का पूजन करे॥४४५॥

मध्ये ग्रहेशं देवेशि! उमामहेश्वरौ यजेत्।
इत्यर्चितं समादाय खड्गं हस्ते महेश्वरि॥४४६॥

हे देवेशि! मध्य में ग्रहेश का पूजन कर उमामहेश्वर का पूजन करे इस प्रकार अर्चन कर खड्ग को हाथ में ग्रहण करे॥४४६॥

आदाय मन्त्रयेनमन्त्रीमन्त्रेणानेन सुव्रते।।
वज्रायासुरनाशाय देवकार्यार्थतत्पर।।४४७।।

हे सुव्रते! मन्त्र की उपासना करनेवाला साधक खड्ग को इन मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर वाक्योच्चार पूर्वक प्रार्थना करे।।४४७।।

पशुच्छेद्य स्वयं शीघ्रं खड्गनाथ नमोऽस्तु ते।
तत उच्चार्य विधिवत्तिथ्युल्लेखाव सानकम्।।४४८।।

जिस प्रकार असुरों के नाश रूपी देवताओं के शीघ्र कार्य सिद्धि के लिए वज्र सदैव तत्पर रहते हैं उसी प्रकार हे खड्ग नाथ! आपको नमस्कार है इस पशु का स्वयं शीघ्र छेदन करें।।४४८।।

गोत्रं नाम च संकीर्त्य कामनां समुदीर्य च।
श्रीभैरव इमं छागबलिं तुभ्यमहं वदेत्।।४४९।।

गोत्रादि के सहित नामोच्चार तथा कामना का उल्लेख पूर्वक श्रीभैरव इमं छाग बलिं तुभ्यं अहं बोले।।४४९।।

प्रददेतत्समुच्चार्य कुशपुष्पाक्षतानितम्।
जलं पशोस्तु निक्षिप्य शिरसि श्रीशिवे ततः।।४५०।।

हे श्रीशिवे! पश्चात् सम्प्रददे पद का उच्चारण कुश, पुष्प, अक्षतादि जल को पशु के शिर के ऊपर छोड़ कर प्रार्थना करे।।४५०।।

यज्ञार्थे पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशुघातनम्।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः।।४५१।।

यज्ञ के लिए स्रष्टा ने पशुओं की सृष्टि की है तथा यज्ञ में ही पशुओं का बध करना चाहिए इस लिए इस यज्ञ में हे पशु! तुम्हारा घात करता हूँ।।४५१।।

इमं सम्बोधयेत्तस्य शिरेः स्पृष्ट्वा युतं पशुम्।
अस्त्रमन्त्रं समुच्चार्य छिन्धि युग्मं ततो वदेत्।।४५२।।

इस प्रकार से सम्बोधन कर उस पशु के शिर को पकड़ कर अस्त्र मन्त्र के साथ दो बार छिन्धि छिन्धि पद का उच्चारण करे।।४५२।।

स्वाहेत्युच्चार्य तं खड्गं तस्य स्कन्धे नियोजयेत्।
स्वात्मानं भैरवं ध्यायन्नामैकेन महेश्वरि।।४५३।।

पश्चात् स्वाहा पद का उच्चारण कर पशु के कन्धे पर खड्ग को रख कर अपनी आत्मा में एकात्मभाव से भैरव स्वरूप ध्यान करे।।४५३।।

प्रहारेण समुच्छेद्य बलिमन्त्र मिमं पठेत्।
शत्रुपक्षस्य रूधिरं पिशितं च दिने दिने।।४५४।।

बलि मन्त्र का पाठ करते हुए एक प्रहार से पशु का शिरश्छेद कर प्रार्थना करे, शत्रु पक्ष के रूधिर का दिनोदिन पान करें।।४५४।।

भक्षयस्व गणैः सार्धे सारमेयसमन्वितः।
शत्रुनामाक्षरैर्मन्त्रविदर्च्य मनुवित्तमः।।४५५।।

अपने गणों के साथ सार के सहित भक्षण करें, मन्त्र को जाननेवाले शत्रु के नामाक्षरों का उच्चारण करे।।४५५।।

सैन्यं शत्रोर्बलित्वेन कल्पयित्वा महेश्वरि।
पशुना सह तत्सैन्यं सम्यक्तस्मै निवेदयेत्।।४५६।।

हे महेश्वरि! बलि के लिए शत्रुओं के सैनिकों की कल्पना विधाता ने किया है इस लिए पशु के साथ शत्रुओं के सैनिकों का निवेदन करे।।४५६।।

अनेन बलिदानेन सन्तुष्टो भैरवः स्वयम्।
शत्रुसैन्यं विभज्याथ स्वगणेभ्यः प्रचच्छति।।४५७।।

इस प्रकार से बलिदान से सन्तुष्ट भैरव स्वयं साधक के शत्रुओं को अपने गणों के साथ विदीर्ण करते हैं।।४५७।।

कुद्धसभां जयेत् शीघ्रं नात्र कार्या विचारणा।
गजानां च तुरङ्गाणां विशेषाच्छान्तये ततः।।४५८।।

क्रूद्ध सभा को शीध्र ही जीत लेता है इसमें विचार नहीं करना चाहिए, हाथियों तथा तुरङ्गों की विशेष शान्ति करना चाहिए।।४५८।।

तदा विप्रानभक्ष्यभोज्यैस्तोषयेच्च सदक्षिणैः।
पूर्वोक्तेन प्रकारेण कलशान्स्थापयेत्ततः।।४५९।।

पश्चात् दक्षिणा के सहित ब्राह्मणों को भक्ष्य, भोज्य पदार्थों से सन्तुष्ट करे, पूर्व में कहे गये विधियों से कलश की स्थापना करे।।४५९।।

तत्र गन्धादिभिः सम्यक् वटुकेशं समर्चयेत्।
अभिषिञ्चेज्जलैस्तैस्तान् गजानश्वांश्च मन्त्रवित्।।४६०।।

उस कलश पर ही वटुकेश का समर्चन कर मन्त्र का अनुष्ठाता साधक कलश के जल से हाथियों और अश्वों के ऊपर अभिषिञ्चन करे।।४६०।।

वर्द्धते प्रत्यहं चैते गजाश्चापि तुरङ्गमाः।
तेषां च समरे शक्तिर्महती जायते ततः।।४६१।।

इस प्रकार अभिसिञ्चन करने से हाथियों और अश्वों का बर्द्धन होता है तथा युद्ध में उनकी शक्ति बहुत बढ़ जाती है।।४६१।।

गजाश्वानामजेयाश्च भवेरन् द्विषतां यदा।
अस्मादन्या महारक्षा नास्ति भूमण्डलेऽखिले।।४६२।।

हाथी तथा अश्व सभी अजेय हो जाते हैं इस वटुकभैरव प्रयोग से अतिरिक्त कोई भूमण्डल में रक्षा विधान नहीं है॥४६२॥

अथ यन्त्रं प्रवक्ष्यामि बटुकस्य सुरार्चिते।
विलिख्याष्टदलं पद्मं कर्णिकायां समालिखेत्॥४६३॥

हे सुरार्चिते! धारणार्थ(भक्तों के धारण के लिए) महात्मा वटुकभैरव के यन्त्रोद्धार को बताता हूँ, अष्टदल पद्म कर्णिका के सहित लिखे॥४६३॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्षौमिति तत्पत्रेषु परमेश्वरि।
वटुकायेत्यक्षराणि द्विरावृत्या लिखेद्विधे॥४६४॥

हे परमेश्वरि! उन पत्रों में ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्षौं वटुकाय पद की दो आवृत्ति विधि पूर्वक लिखे॥४६४॥

बहिः षोडश पत्राढ्यं पद्मं कृत्वा सुशोभनम्।
तत्पत्रेषु लिखेद्देवि शिष्टानवर्णोस्तु षोडश॥४६५॥

हे देवि! उसके बाहर षोडश पत्रात्मक सुन्दर पद्म लिखे उन पत्रों पर षोडश शिष्टों के वर्णों को लिखे॥४६५॥

मन्त्रश्च तद्बहिश्चापि पद्मं षोडशपत्रकम्।
तत्र तेषु लिखेद्देवि स्वरान् षोडश सुव्रते॥४६६॥

हे देवि! मन्त्र को उनके बाहर लिख कर पुनः बाहर षोडश पत्रात्मक पद्म लिखे उन पत्रों पर षोडश स्वरों को लिखे॥४६६॥

द्वात्रिंशत्पत्रसम्युक्तं पद्मे कृत्वाथ तद्बहिः।
कादिक्षान्ताँल्लिखेत्तस्य पत्रेषु परमेश्वरि॥४६७॥

हे परमेश्वरि! उसके बाहर बत्तीस पत्रात्मक पद्म बनाये उन बत्तीस पत्रों पर ककार से शुरु कर क्षकारान्त वर्णों को लिखे॥४६७॥

वेष्टयेच्चतुरस्रेण यन्त्रमेतद्वरानने।
जयदं सुखदं वश्यं मृत्युदारिद्र्यनाशनम्॥४६८॥

हे वरानने! इस यन्त्र में बत्तीस पत्रात्मक पद्मों के बाहर चतुरस्र भूपुर बनायें इस प्रकार बनाया गया यन्त्र साधक को जय प्रदान करनेवाला, सुख देनेवाला, समस्त संसार के लोगों को वश में करनेवाला तथा मृत्यु और दरिद्रता को नष्ट करनेवाला है॥४६८॥

श्रीप्रदं दुरितव्याधि दुष्टग्रहनिकृन्तनम्।
भूतापस्मारकृत्यादेर्नृणां रक्षाकरं परम्॥४६९॥

इस प्रकार से निर्मित यन्त्र श्री प्रदान करनेवाला, समस्त दुरितों और व्याधियों को नष्ट करनेवाला तथा दुष्ट ग्रहों को शान्त करनेवाला होता है, यह यन्त्र भूतप्रेतादि और परकृत्याओं से मनुष्यों को नष्ट कर रक्षा करता है॥४६९॥

अस्मात्परतरा रक्षा नास्ति नास्ति न संशयः।
तस्मात्लोकोपकरणाय मया उक्तं महेश्वरि॥४७०॥

इस यन्त्र से अतिरिक्त दुसरा कोई रक्षा करनेवाला नहीं है इसमें कोई संशय नहीं हैं। हे महेश्वरि! इस लिए लोक में मनुष्यों के उपकार के लिए इस यन्त्र को कहा है॥४७०॥

व्योमाब्जं वसुपत्रकेसरधरं शक्त्या वरं षड्दलं,
पद्मं चाष्टदलं ततः सुविमलं भागेह दीप्तौ बलिम्।
वेदद्वारविशालसुन्दरतरं पुष्पादिगन्धोत्कटं,
श्रीमद्भैरवसर्वमोहनकरं यन्त्रं त्वदीयं भजे॥४७१॥

व्योमाब्ज पत्रोंवाला, अष्टदल के सहित, षड्दलों में शक्ति का योजन कर पुनः सुन्दर विमल अष्टदल का निर्माण कर चार द्वारवाला सुन्दर भूपुर बनाकर पुष्पादि गन्धों से निर्मित करे इस प्रकार से निर्मित श्रीमद्भैरव का सर्वमोहनकर नामक यन्त्र तुमसे कहा है॥४७१॥

शवं सिद्धमनुर्मन्त्री नित्यनैमित्तिकेरतः।
विघ्नं दुर्गासमभ्यर्च्य बलिं दत्त्वा विधानतः॥४७२॥

शव साधन करनेवाला साधक नित्य नैमित्तिक कार्य में सल्लिप्त होकर गणेश और दुर्गा का पूजन कर विधान पूर्वक बलि प्रदान करे॥४७२॥

काम्यानिसाधयेन्मन्त्री यथोक्तां सिद्धिमाप्नुयात्।
अन्नं शालिसमुद्भूतं मांसं पक्वं सशर्करम्॥४७३॥

साधक अपने कामनाओं को पूरा करने के लिए पूर्व कहे गये विधियों के अनुसार पूजन कर बलि प्रदान करने से अपने कार्य की सिद्धि प्राप्त करता है, बलिदान में पके हुए शाल्यन्न को शर्करा के साथ तथा मांसादि बलि में रखे॥४७३॥

लाजाचूर्णगुडापूपमाक्षिकेक्षुरसान्वितम्।
घृतप्लुतं सर्वमेतदेकीकृत्य महेश्वरि॥४७४॥

हे महेश्वरि! लाजा, गुड का चूर्ण, पूआ, अक्षिक, इक्षुरस में घी मिलाकर सबकों एक पात्र में रखे॥४७४॥

कृत्वा ग्रासं समाराध्य बटुकेशं महेश्वरि।
प्रागुक्तेन विधानेन रक्तचन्दन संयुतैः॥४७५॥

हे महेश्वरि! समस्त बलिपदार्थों को मिला कर ग्रास बनाकर रक्त चन्दन से युक्त कर पूर्व में बताये विधि के अनुसार वटुकभैरव को प्रदान करे॥४७५॥

रक्तपुष्पाक्षतैर्देवि धूपैर्दीपैर्मनोहरैः।
तस्याग्रे मण्डलं कृत्वा चतुरस्त्रं सुरेश्वरि॥४७६॥

हे देवि! मनोहर लाल फूल तथा लाल अक्षतों के साथ धूपदीपादि उपचारों से पूजन कर हे महेश्वरि! चतुरस्त्र मण्डल बनायें॥४७६॥

त्रिकोण गर्भितं तत्र पात्रे हेममये शुभे।
राजते वाथ कांस्ये वा निधाय कवलं शुभम्॥४७७॥

त्रिकोण गर्भित तांबे या कास्य धातु निर्मित हेममय शुभ पात्र में बलि पदार्थ के ग्रास को रखे॥४७७॥

अर्चयित्वाथ तत्पिण्डं गन्धाद्यैर्मूलमन्त्रितैः।
बलिद्रव्याय इत्युक्त्वा नम इत्यर्चयेत्ततः॥४७८॥

मूल मन्त्र के द्वारा गन्धादि उपचारों से उन बलि ग्रास पिण्डों का पूजन कर बलि द्रव्य का नमः से पूजन करे॥४७८॥

ततो जलं समादाय चुलुकेन महेश्वरि।
मूलमन्त्रं समुच्चार्य सम्बोध्य वटुकं प्रिये॥४७९॥

हे महेश्वरि! उसके बाद चुलुक मुद्रा से हाथ में जल लेकर मूल मन्त्र का उच्चारण पूर्वक वटुकभैरव को सम्बोधिंत करे॥४७९॥

इमं बलिं गृह्ण युग्मं स्वाहान्तं समुदीर्य च।
जलं समर्पयेत्तत्र चिन्तयेद्वटुकं प्रिये॥४८०॥

हे प्रिये! इमं बलिं गृह्ण पद में स्वाहा पद का योजन कर उच्चारण पूर्वक जल समर्पित कर, वटुकभैरव का ध्यान करे॥४८०॥

स्वहस्ते बलिमादाय भुञ्जानं वरदं प्रभुम्।
राजसोऽयं बलिर्देवि कथितः सर्वसिद्धिदः॥४८१॥

अपने हाथ में बलि लेकर प्रार्थना करे भुञ्जानं वरदं प्रभुं इत्यादि वाक्यों से प्रार्थना करे, इस बलि को राजस बलि कहते है यह साधकों को सर्व सिद्धि प्रदान करनेवाला है॥४८१॥

राजसः सात्त्विकश्चेति सात्त्विकं श्रृणुवल्लभे।
पूर्वोक्तैः सकलैर्द्रव्यैर्मांसहीनैः सुरेश्वरि॥४८२॥

हे सुरेश्वरि! राजस बलि के बाद अब सात्त्विक बलि बताते हैं, पूर्वोक्त सभी पदार्थों को मांस विहीन रखे॥४८२॥

मुद्गसूपसमायुक्तैः पायसेन समन्वितैः।
मधुरत्रयसम्युक्तैः एवं प्राग्वद्विचक्षणैः॥४८३॥

मुद्ग का सूप से युक्त पायसादि से समन्वित मधुर त्रय से युक्त पूर्व में कहे गये के अनुसार पदार्थं सात्त्विक बलिपदार्थं कहे गये है॥४८३॥

आदावन्ते प्रयोगस्य वटुकाय बलिं हरेत्।
राजसो मांसरक्ताढ्यः पलत्रयसमन्वितः॥४८४॥

प्रयोग के शुरु में और अन्त में वटुकभैरव को सात्त्विक बलि प्रदान प्रदान करे, एक अथवा तीन पल मांस से युक्त कर देने से राजस बलि कहलाता है॥४८४॥

मेषकुक्कुटयोर्मांसं शाल्यन्नं घृतसम्प्लुतम्।
लाजाचूर्णमपूपं च गुडमिक्षुसमन्वितम्।।४८५।।

मेष और कुक्कुट का मांस शाल्यन्न को घृत से सम्प्लुत कर लाजाचूर्ण तथा अपूप और गुड तथा इक्षुरस से समन्वित करे।।४८५।।

मरीचैर्जीरकैश्चैव गुडखण्डस्तथैव च।
शालितन्दुलभक्तञ्च गोक्षीरेण समन्वितम्।।४८६।।

मरीच, जीरा में गुड का टुकड़ा मिला कर शाली चावल के भात में गाय के दूध को मिला कर बलि प्रदान करे।।४८६।।

पलत्रयं माषचूर्णं दधि क्षीरं घृतं तथा।
गुडौदकेन सम्युक्तं मिश्रीकृत्य विचक्षणः।।४८७।।

तीन पल माष का चूर्ण दही तथा दूध के साथ घी मिला कर गुड़ के रस के साथ मिला कर बलि प्रदान करे।।४८७।।

उद्धरेद्वटुकंपठेत् आपदुद्धारणं तथा।
कुरुद्वयं पुनरोक्तं तु वटुकं च तदुद्धेत्।।४८८।।

आपदुद्धारणाय वटुकाय पदों के साथ कुरु पद का दोबार उच्चारण कर पुनः वटुक पद उच्चारित करने से वटुकभैरव का आपदुद्धारण मन्त्र उद्धृत होता है।।४८८।।

ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारकाय कुरुकुरु वटुकाय ह्रीम्।
एकविंशत्यक्षरात्मा शक्तिरूद्धे महामनुः।।४८९।।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारकाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ एक विंशति अक्षरवाले मनु को शक्ति से रुद्ध करने पर वटुकभैरव का महामनु बनता है।।४८९।।

प्रातःकृत्यादि प्राणायामान्तं विधायपीठन्यासं कुर्यात्।
यथा धर्माद्यनैश्वरुर्यान्तं विन्यस्य ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्।।४९०।।

प्रातः कृत्यादि प्राणामादि करके पीठ न्यास का विधान करे जैसे धर्मादि अनैश्वर्यादि का न्यास करने के बाद ऋष्यादि न्यास करे।।४९०।।

यथा।। शिरसि बृहदारण्यकऋषये नमः। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः। हृदि वटुकभैरवदेतायै नमः। ततो मूर्ति न्यासः। ह्रीं द्रों रों ईशानाय नमोऽङ्गुष्ठयोः। ह्रीं द्रें रें तत्पुरूषाय नमस्तर्जन्योः। ह्रीं द्रुं रुं अघोराय नमो मध्य मयोः। ह्रीं द्रिं रिं वामदेवाय नमोऽनामिकयोः। ह्रीं द्रं रं सद्योजाताय नमः कनिष्ठयोः। पुनस्तदङ्गुलीभिः शिरो वदनहृद्गुह्यपादेषु तत्तद्वीजादिकास्तत्तत्मूर्तीर्न्यसेत्। तथा ऊर्ध्वं प्राग्दक्षिणोदीच्यपश्चिमेषु मखेषु च तान्न्यसेत्। जैसे बृहदारण्यकऋषये नमः मन्त्र से शिर पर। गायत्रीछन्दसे नमः मन्त्र से मुख पर। वटुकभैरवदेतायै नमः मन्त्र से हृदय पर न्यास करे। इसे मूर्ति न्यास कहते हैं।

ह्लीं द्रों रों ईशानाय नमः मन्त्र से अङ्गुष्ठ पर। ह्लीं द्रें रें तत्पुरूषाय नमः मन्त्र से तर्जनी पर। ह्लीं द्रुं रुं अघोराय नमः मन्त्र से मध्यमा पर। ह्लीं द्रिं रिं वामदेवाय नमः मन्त्र से अनामिका पर। ह्लीं द्रं रं सद्योजाताय नमः मन्त्र से कनिष्ठिका पर। पुनः उन अङ्गुलियों से शिर, वदन, हृदय, गुह्य, पैरों उन उन बीज तथा मन्त्रों से मूर्ति तथा अङ्गुलि न्यास करे तथा ऊर्ध्व में प्रदक्षिणा क्रम से पूर्वादि दिशाओं में न्यास करे।

अङ्गुलीदेहवक्त्रेषु मूर्तीर्न्यसेद्यथा पुरा।
सव्यादिपञ्चह्रस्वाढ्यं शक्तिबीजपुरस्सरम्॥४९१॥

इस प्रकार अङ्गुलि, देह, वक्त्रादि स्थानों पर मूर्ति आदि पूर्व कथित न्यास कर सव्यादि पञ्च ह्रस्वों से शक्ति बीज युक्त कर न्यास करे॥४९१॥

वकारं पञ्चह्रस्वाढ्यमीशानादिषु योजयेत्।
अङ्गानिजातियुक्तानि प्रणवाद्यानि कल्पयेत्॥४९२॥

वकार अमृत बीज को पञ्च ह्रस्वों से समायुक्त कर ईशानादि का योजन कर अङ्गों पर जाति युक्त प्रणवादि योजन पूर्वक न्यास करे॥४९२॥

ततः कराङ्गन्यासौयथा। ॐ ह्लां बां अंगुष्ठभ्यां नमः। ॐ ह्लां वां हृदयाय नम इत्यादि च षड्दीर्घयुक्तम्। षड्दीर्घभाजया शक्तया बकारेण च तद्वता। अब कराङ्गन्यास कहते हैं। ॐ ह्लां बां अंगुष्ठभ्यां नमः मन्त्र से अङ्गुष्ठ पर न्यास करे। ॐ ह्लां वां हृदयाय नम इत्यादि में षड्दीर्घ युक्त कर सभी अङ्गों पर न्यास करे।

ततो ध्यानं त्रिधा प्रोक्तं बीजद्वये कुर्यात्साात्त्विकादिप्रभेदतः। अब सात्त्विका भेद से तीन प्रकार का ध्यान कहता हूँ।

सात्त्विकं यथा। सात्त्विक ध्यान जैसे।

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराद्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्।॥४९३॥

स्वच्छ स्फटिक के सदृश, कुण्डल से सुशोभित, दिव्यमणियों से बने हुए नूपूर और किंकिणी से सुशोभित, प्रसन्न, शिव की भाँति पुलकित मुखवाले, कमलवत् करों में सदा शूल और तलवार धारण करनेवाले, बालस्वरूप बटुक भैरवजी का ध्यान करता हूँ॥४९३॥

राजसं यथा। राजस ध्यान जैसे।

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदाभावये।॥४९४॥

उदयकालीन सूर्य के समान लाल कान्तिवाले, तीन नेत्रोंवाले, रक्त पुष्पमाला से युक्त, पुलकित मुखवाले, वरदाता, कपाली, निर्भय, हाथ में शूल धारण करनेवाले, नील ग्रीवा-वाले, आभूषणों से युक्त, खण्ड चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, मधूक पुष्प के समान लाल वस्त्र धारण किये हुए, भय को दूर भगानेवाले बटुक भैरव का ध्यान करता हूँ।।४९४।।

तामसं यथा। तामस ध्यान जैसे।

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्।।।४९५।।

त्रिलोक के स्वामी, द्वितीया के चन्द्रकला को धारण करनेवाले, मुण्डमाला पहने हुए, महेश्वर, दिगम्बर, पीत केशवाले, हाथ में डमरु, शूल, खड्ग, पाश और अभय धारण करनेवाले तथा नाग, घण्टा, कपाल हाथ में सुशोभित, विशाल दाँतोंवाले, दिव्य आभूषणों से सुसज्जित, त्रिनेत्र तथा नाना मणियों से जटित किंकिणी और नूपूर धारण किये हुए बटुक भैरव का घ्यान करता हूँ।।४९५।।

सात्त्विकं ध्यानमाख्यातमपमृत्युविनाशनम्।
आयुरारोग्यजननमपवर्गफलप्रदम् ।।४९६।।

महात्मा वटुकभैरव का सात्त्विक ध्यान अपमृत्यु का विनाशक तथा आयुरारोग्य का जनक तथा अपवर्ग के फल को प्रदान करनेवाला है।।४९६।।

राजसं ध्यानमाख्यातं सर्व कामार्थसिद्धिदम्।
तामसं शत्रुशमनं कृत्याभूतगदापहम्।।४९७।।

राजस ध्यान साधकों के समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाला है तथा तामस ध्यान शत्रुओं का शमन तथा कृत्यादि भूतप्रेतादि को नष्ट करनेवाला है।।४९७।।

ध्यात्वैवं मानसैः पूजा कृत्वा शङ्ख स्थापनम्।
धर्माधर्मादिभिः क्लृप्तपीठे पङ्कजशोभिते।।४९८।।

इस प्रकार मानस पूजन कर शङ्ख स्थापन करने के बाद धर्माधर्म से युक्त पीठ का शव पङ्कज पर वटुकभैरव का पूजन करना चाहिए।।४९८।।

द्वात्रिंशत्पत्रे षोडशपत्रद्वये पत्राष्टश्च।
षट्कोणान्तस्त्रिकोणस्थे व्योमपङ्कजशोभिते।।४९९।।

बत्तीस दल पद्म के भीतर दो षोडश पत्र के अन्दर अष्टपत्रात्मक पद्म के भीतर षट्कोण के अन्दर त्रिकोण से युक्त व्योम पङ्कज से शोभित पीठ पर पूजन करे।।४९९।।

ततो मूलेन मूर्ति सङ्कल्प्य पूर्ववद्ध्यात्वाऽवाहनादिकं कुर्यात्। तत्र क्रमः। मूलादि

सद्योजातमन्त्रेणावाहनम्। मूलादिवामदेवेन स्थापनम्। मूलेन सन्निरोधनम्। तत्पुरुषेण-योनिमुद्राप्रदर्शनम्। ईशानेन चन्दनमिति विशेषः। ततः कर्णिकायां चतुर्दिक्षुकोणेषु ईशानादीन्पूजयेत्। ततो व्योमपङ्कजदलेषु असिताङ्गादीन् भैरवान्पूजयेत्। ततः षट्कोणेषु पूर्वादितः ह्रां बां हृदयाय नम इत्यादिना षडङ्गनि पूजयेत्। ततः पूर्वादिक्रमेण डाकिनी-शाकिनीलाकिनीकाकिनीहाकिनीमालिनीदेवीपुत्रानष्टदिक्षुयजेत्।। उमापुत्रान्रुद्रपुत्रान्मातृ-पुत्रान्दक्षिणतो यजेत्।। ऊर्ध्वमूर्ध्वमुखीपुत्रानधः अधोमुखीपुत्रान् तद्बहिरष्टपत्रेषु लोकेशान् वटुरुपान्पूजयेत्।। तद्बहिः पूर्वे ब्राह्मीपुत्राय नमः। ईशाने ॐ माहेश्वरीपुत्राय नमः। उत्तरे ॐ वैष्णवीपुत्राय नमः। अनिले ॐ कौमारीपुत्राय नमः। पश्चिमे ॐ इन्द्राणीपुत्राय नमः। निर्ऋते ॐ महालक्ष्मीपुत्राय नमः। याम्ये ॐ वाराहीपुत्राय नमः। वायव्ये ॐ चामुण्डापुत्राय नमः मन्त्रेण पूजयेत्। पश्चात् मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर पूर्व के समान ही वाहनादि के साथ देव का आवाहनादि उपचार समर्पित करे। उसका क्रम इस प्रकार है, जैसे मूल मन्त्र के साथ सद्योजात मन्त्र का योजन कर, आवाहन करे पुन: मूल मन्त्र के साथ ही वामदेव मन्त्र से स्थापन करे, पश्चात् मूल मन्त्र से सन्निरोधन करे, पश्चात् मूल मन्त्र के साथ तत्पुरुष मन्त्र का योजन कर, योनि मुद्रा का प्रदर्शन कर, ईशान मन्त्र को मूल मन्त्र से योजित कर, चन्दनादि समर्पित करे, पश्चात् कर्णिका के चारो कोणों तथा चारों दिशाओं पर ईशानादि का पूजन करे, पश्चात् व्योमपङ्कज पद्मदलों में असिताङ्गादि भैरवों का पूजन करे, पश्चात् षट्कोणों में पूर्वादि क्रम से ह्रां बां हृदाय नम: इत्यादि मन्त्रों से षडङ्गों का पूजन कर, पूर्वादि क्रम से डाकिनी, शाकिनी, लाकिनी, काकिनी, हाकिनी, मालिनी, देवीपुत्रों का अठों दिशाओं में पूजन कर, उमापुत्र, रुद्रपुत्र, मातृपुत्रों का दक्षिण से पूजन करे, ऊर्ध्व में ऊर्ध्वमुखी पुत्र, नीचें अधोमुखी पुत्रों का पूजन कर, बाहर अष्ट पत्रों पर लोकेशादि वटुरुपों का पूजन करे, उसके बाहर पूर्व में ब्राह्मीपुत्राय नम: मन्त्र से, ईशान में ॐ माहेश्वरीपुत्राय नम: मन्त्र से उत्तर में ॐ वैष्णवीपुत्राय नम: मन्त्र से अग्नि कोण में ॐ कौमारीपुत्राय नम: मन्त्र से पश्चिम में ॐ इन्द्राणीपुत्राय नम: मन्त्र से नैर्ऋत्य में ॐ महालक्ष्मीपुत्राय नम: मन्त्र से उत्तर में ॐ वाराहीपुत्राय नम: मन्त से तथा वायव्य में ॐ चामुण्डापुत्राय नम: मन्त्र से पूजन करे।

ब्रह्माणीपुत्रकं पूर्वे माहेशीपुत्रमीश्वरे।
वैष्णवीपुत्रकं सौम्ये कौमारीपुत्रमानले।।५००।।

ब्रह्माणी पुत्र का पूर्व में, माहेशी पुत्र का ईशान में, वैष्णवी पुत्र का उत्तर में तथा कौमारी पुत्र का अग्नि कोण में पूजन करे।।५००।।

इन्द्राणीपुत्रकं भूयः पश्चिमे पूजयेत्ततः।
महालक्ष्मीसुतं पश्चाद्रक्षोदिशि समर्चयेत्।।५०१।।

इन्द्राणी पुत्र को पश्चिम में पूजन करने के बाद महालक्ष्मी पुत्र का नैर्ऋत्य दिशा में पूजन करे।।५०१।।

वाराहीपुत्रकं याम्ये चामुडापुत्रमानिले। तद्वहिर्दशदिक्षु हेतुकत्रिपुरान्तकवेतालवह्निजिह्वाकालान्तककरालकैकपादभीमरूपाचलहाटकेश्वरान्पूजयेत्। ततोयोगिनीसहितदिव्योगीशाय नमः। एवं योगिनीसहितान्तरिक्षयोगिनीशाय नमः। एवं योगिनीसहितभूमिस्थयोगिनीशाय नमः इति ईशानाग्निनैर्ऋतेषु पूजयेत्। अस्य पुरश्चरणमेकविंशतिलक्षजपम्। तथा च। वाराही पुत्र का उत्तर में पूजन करे, चामुडा पुत्र का अग्नि कोण में पूजन करे, उसके बाहर आठों दिशाओं में हेतुक, त्रिपुरान्तक, वेताल, वह्निजिह्वा, कालान्तक, कराल, एकपाद, भीमरूप,अचल, हाटकेश्वरों का पूजन करने के बाद योगिनीसहितदिव्योगीशाय नमः, योगिनीसहितान्तरिक्षयोगिनीशाय नमः तथा योगिनीसहितभूमिस्थयोगिनीशाय नमः इन मन्त्रों से ईशान, अग्नि, नैर्ऋत्य कोणों में पूजन करे। इस मन्त्र का इक्कीस लाख जप है।

वर्णलक्षं जपेत्मन्त्रं हविष्याशी जितेन्द्रियः।
तद्दशांशं प्रजुहुयात्तिलैर्मधुरसम्युतैः॥५०२॥

हविष्याशी होकर मन्त्र में जितने वर्ण है उतने लाख सङ्ख्या में जप कर उसका दशांश हवन तिल में मधुरत्रय मिला कर करे॥५०२॥

पूर्ववद्दुर्गामाराध्य बलिं दद्यात् महेश्वरि।
शाल्यन्नं पलसंसर्पिषलाजाचूर्णानिशर्करा॥५०३॥

हे महेश्वरि! पूर्व में बतायें गये विधि से दुर्गादि को बलि प्रदान करे, बलिदान के लिए शाल्यन्न को घी से सम्युक्त कर लाजा चूर्ण और शर्करा मिला कर रखे॥५०३॥

गुडैरिक्षुरसापूपैर्मध्वक्तैः परिमिश्रितैः।
कृत्वा कवलमाराध्य देवं प्रागुक्तवर्त्मना॥५०४॥

गुड, इक्षु रस, अपूपादि को मधु से मिश्रित कर ग्रास बनाकर आराध्य देव को बलि प्रदान करे॥५०४॥

रक्तचन्दनपुष्पाद्यैर्निशि तस्मै बलिं हरेत्।
अन्यूनाङ्गमजं हत्वा राजसं प्रागुदीरितम्॥५०५॥

रक्त चन्दन और रक्त पुष्पों से बलि का पूजन कर बलि प्रदान करे, पूर्व में अन्यूनाङ्ग (पूर्ण अङ्गों से परिपक्व) बकरा की बलि राजस बलि कही जाती है॥५०५॥

बलिप्रदानसमये रिपूणां सर्वसैन्यकम्।
निवेदद्बलित्वेन वटुकाय विशिष्टधीः॥५०६॥

बलि प्रदान के समय शत्रुओं तथा उनकी समस्त सेनाओं के नामोच्चार पूर्वक सङ्कल्प पूर्वक विशेष विद्वान् साधक बलि प्रदान करे॥५०६॥

विदर्भयेच्छत्रुनाम्ना बलिमन्त्रं तदासुधीः।
शत्रुपक्षस्य पिशितं रुधिरं च दिने दिने॥५०७॥

बुद्धिमान साधक शत्रु पक्ष के विनाश के लिए बलि मन्त्र से प्रर्थना करे, कि हे देव! शत्रु पक्ष के रुधिर को दिनो दिन ग्रहण करें॥५०७॥

भक्षयस्वगणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितम्।
बलिमन्त्रोऽयमाख्यातः सर्वेषां विजयप्रदः॥५०८॥

हे भैरव! अपने गणों के साथ शत्रूओं का भक्षण करें, इस प्रकार से बलिमन्त्र के उच्चारण पूर्वक दिया गया बलि हमेंशा विजय प्रदान करनेवाला होता है॥५०८॥

अनेन बलिमाहृष्टो वटुके रिपुसैनिकम्।
सर्वे गणेभ्यो विभजेदामिषं क्रुद्धमानसः॥५०९॥

इस प्रकार से दिये गये बलि से वटुकभैरव अपने भक्त के शत्रुओं को उनके सैनिकों के साथ क्रुद्ध होकर ग्रहण करते हैं॥५०९॥

एवं कृते परबलं क्षीयते नात्र संशवः।
पुरश्चरणं मयाप्रोक्तं वटुकस्य महात्मनः॥५१०॥

इस प्रकार से अनुष्ठान कर साधक शत्रूओं के बल को नष्ट कर देता है इसमें कोई संशय नहीं है। महात्मा वटुकभैरव के पुरश्चरण तथा प्रयोगविधि, विधिपूर्वक विस्तार से हमने बताया॥५१०॥

श्रीमद्वटुकभैरवपटलाख्यं परिपूर्णम्

❁

श्रीमद्वटुकभैरवपद्धतिस्तोत्रम्

नमः कर्पूरगौराय कैलासाचलवासिने।
गौरीकण्ठग्रहानन्दनिष्पन्दायान्धकद्विषे ॥१॥
उत्पत्तिस्थितिसंहारकर्तारः जगदीश्वरः।
देवाधिदेवो वटुकभैरवोऽवतु मां सदा॥२॥
भैरवाराधनविधिं प्रवक्ष्यामि समासतः।
साधकानां हितार्थाय मुमुक्षुणां विशेषतः॥३॥
षट्कर्मणां च संसिद्ध्यै वक्ष्ये भैरवपद्धतिम्।
तवस्नेहे मयाउक्तं देवदेव सदाशिवः॥४॥

तत्र श्रीमान्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे मूहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय मन्त्रस्नानं कृत्वा देवतागृहं प्रविश्य सम्मार्जनोपलेपादिकं कृत्वा मङ्गलारार्तिकं कृत्वा निर्माल्यमपसार्य पूर्वदिनावशिष्टपात्रादिनाऽभ्यर्च्य देवाय दन्तधावनाचमने दत्त्वा नमस्कृत्य शुद्धासने उपविश्य, श्रीगुरुस्मरणम्। तद्यथा स्वशिरसि सहस्त्रदलपङ्कजे कोटीन्दुप्रकाशपङ्कजपीठे स्वगुरुं ध्यायेत्।

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्।
योगीन्द्रमीड्यंभवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि॥५॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य।

प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरान्ततः।
यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम्॥६॥

इत्यनेन मन्त्रेण सर्वं गुरवे निवेद्य तदाज्ञां गृहीत्वा तत्पादगलितामृतधारया क्षालितं निर्मलमात्मानं विचिन्त्य श्रीवटुकमूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा स्वहृत्कमले देव ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य सन्स्मरेत्।

श्रीमद्वटुकप्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि वटुकं सुकुमारमूर्तिम्,
श्रीस्फटिकाभसदृशं कुटिलालकाढ्यम्।
वक्रं दधानमणिमादिगुणैर्हि युक्तं,
हस्तद्वयं मणिमयैर्पदभूषणैश्च॥७॥

प्रातर्नमामि वटुकं तरुणं त्रिनेत्रं,
कामास्पदं परकपालत्रिशूलदण्डान्।
भक्तार्तिनाशकरणे दधतं करेषु,
तं कौस्तुभाभरणभूषितदिव्यदेहम्॥८॥
प्रातःकाले सदाहं भगणपतिधरं भालदेशे महेशं,
नागपाशकपालडमरुमथसृणिं खड्गघण्टाभयानि।
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं त्रिनयन सहितं मुण्डमालं करेषु,
यो धत्ते भीमदंष्ट्रं मम विजयकरं भैरवं तं नमामि॥९॥
देव देव कृपासिन्धो सर्वनाशिन्महाव्ययः।
संसारासक्तचित्तं मां मोक्षमार्गे निवेशय॥१०॥
एतच्छ्लोकचतुष्कं वै भैरवस्य तु यः पठेत्।
सर्वबाधाविनिर्मुक्तो जायते निर्भयः पुमान्॥११॥
ध्यात्वागुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य।
अजपाजपसङ्कल्पः एवं कुरु संक्षेपतः॥१२॥
आधारे लिङ्गनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे,
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासन्तेवालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां,
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरुपं नमामि॥१३॥
षट् शतं तु गणेशस्य षट्सहस्त्रं प्रजापतेः।
षट्सहस्त्रं गदापाणेः षट्सहस्त्रं पिनाकिनः॥१४॥
आत्मनस्तत्सहस्त्रं च सहस्त्रं परमात्मानः।
सहस्त्रं श्रीगुरुभ्यश्च एतानि विनियोजयेत्॥१५॥
हंसोगणेशो विधिरेवहंसो हंसोहरिर्हंसमयश्च शम्भुः।
हंसोऽपिजीवोपरमात्महंसो हंसोगुरुर्हंसमयश्च शम्भुः॥१६॥

पूर्वेद्युरहोरात्रोच्चारितं षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्त्रमुच्छ्वासनिश्वासात्मकमजपा गायत्रीमन्त्रंजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्म श्रीगुरुभ्यो यथासङ्ख्यं समर्पयामि इत्युक्त्वा अद्य सूर्योदयमारभ्यश्वः सूर्योदयपर्यन्तमजपागायत्रीजपं करिष्ये। ॐ हंसो हंसस्य विद्महे हंसोहंसस्य धीमहि हंसो हंसः प्रचोदयात्॥ इति हंस गायत्रीं जपित्वा॥

त्रैलोक्यचैतन्यमयित्रिशक्तेश्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव।
प्रातसमुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्त्तयामि॥१७॥
इति संप्रार्थ्य देवानां विश्वमाता त्रिशक्तीश्च।
हस्तेगन्धादिं गृहीत्वा भूमिं संप्रार्थयेत् पुनः॥१८॥

समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्निनमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमश्व मे॥१९॥

इति भूमिं संप्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजेत्। इति प्रातः कृत्यम्। ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कुर्यात्। अथ दन्तधावनम्—आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशाङ्गुलं दन्तकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत्।

आयुर्बलं यशोवर्चः प्राजापशुधनानि च।
श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते॥२०॥

इति प्रार्थ्य—ॐ ह्रीँ तडित्स्वाहा। इति मन्त्रेण काष्ठं छित्त्वा। ॐ क्लीँ कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः। इत्यनेन दन्तान् संशोध्य ऐँ मन्त्रेण जिह्वां उल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्त्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निःक्षिपेत्। मूलेन मुखं प्राक्षाल्याचामेदिति दन्तधावनम्। अथ स्नानम्। दन्तधावनानन्तरं स्नानार्थं नद्यादौ गच्छेत्, तत्र मलस्नानमादौ कृत्त्वा वैदिकस्नानं च कृत्वा पश्चात्तान्त्रिकं कुर्यात्। तत्र सङ्कल्पम्—अद्येत्यादिना श्रीबटुकभैरवप्रीत्यर्थं मंन्त्रस्नानमहं करिष्ये। जले त्रिकोणं प्रकल्प्य क्रौँ इत्यङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देवं तीर्थं देहि दिवाकर॥२१॥

इति मन्त्रेण तीर्थान्यावाह्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य सप्तच्छिद्राणि निरुध्य गुरुं ध्यायन् मूलमुच्चरन् त्रिरुन्मज्य मूलेनाङ्कुशमुद्राया स्वमूर्ध्नि त्रिधाऽभिषिच्य त्रिः वाह्वोः, त्रिः हृदिः, पुनराचम्य मुलान्ते श्रीमन्महाबटुकभैरवस्तृप्यतामिति दशधा सन्तर्प्य सूर्यमन्त्रेण सूर्याञ्जलित्रयं दत्त्वा, ततः ॐ ब्रह्माणं तर्पयामि। ॐ विष्णुं तर्पयामि। ॐ रुद्रं तर्पयामि। इति त्रिस्तर्पयेत्। पुनः प्राणायाममृष्यादिकं कृत्त्वा ध्यात्वा संहारमुद्रया देवं स्वहृदये उद्वास्य तीर्थानि सूर्यमण्डले उद्वास्य तीर्थं नमस्कृत्य, तीरमागत्य तीरे अञ्जलित्रयं निक्षिपेत्। तद्यथा—

असुरा भूतवेतालाः कूष्माण्डा ब्रह्मराक्षसाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा॥२२॥

ततो जलादुत्तीर्य युग्मे धौते वाससी मूलेन संप्रोक्ष्य योनिमुद्रां प्रदर्श्य तत् परिधाय, तीर्थे वा गृहे आगत्य स्वशाखोक्तां प्रातः सन्ध्यां विधिपूर्वकं कृत्वा तस्या विसर्जनं कृत्वा, तान्त्रिकीं सन्ध्यां प्रारभेत। तत्रैवं क्रमः–तीर्थे यदि सन्ध्या द्वयं कृतं चेद्गृहे आगत्य द्वारपूजा कृत्वा भूशुद्ध्यादिकं कुर्यात्। यदि तीर्थे सन्ध्या न कृता चेत्तदा पूजार्थं शुद्धजलं गृहीत्वा स्तोत्रकवचादिकं पठन् पूजागारद्वारसमीपमागत्य द्वारपूजां कृत्वा सन्ध्याद्वयं कुर्यात्। यथावद्भस्मना त्रिपुण्ड्राणि कृत्वा सन्ध्यां विधा तान्त्रिकीं

कुर्यात्। अथ तान्त्रिकी सन्ध्या—यथा—श्रीवटुकभैरवाराधनयोग्यताजननार्थं तान्त्रिकसन्ध्यामहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य, ॐ ह्राँ आत्मतत्त्वाय स्वाहा, ॐ ह्रीँ विद्यातत्त्वाय स्वाहा, ह्रूँ शिवतत्त्वाय स्वाहा, इति त्रिराचामेत्। एते मन्त्राः स्वधान्ता इति केचित्। ततः खानि सम्पृश्य मूलेन प्राणानायम्य ऋष्यादिकराङ्गन्यासौ कृत्वा मूलेन सम्वीक्ष्य अस्त्राय फट् इति सम्प्रोक्ष्य अनेनैव दर्भेण सन्ताड्य कवचाय हुम्, इत्यभ्युक्ष्य तज्जलेन कुम्भमुद्रया मूर्घ्नि सिञ्चेत्। ततो वामपाणौ दक्षेण तीर्थजलमादाय ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः। ॐ ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ वूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैँ वैँ कवचाय हुम्। ॐ ह्रौँ वौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः वः अस्त्राय फट्। ॐ ह्राँ वाँ व्योमव्यापिने नमः। ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः॥ भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः॥१॥ वामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमः-कालायनमःकलविकरणायनमोबलविकरणायनमोबलायनमोबलप्रमथनायनमः सर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः॥२॥ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः॥३॥ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि॥ तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्॥४॥ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेऽअस्तुसदाशिवोऽम्॥५॥ ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ मूलमन्त्रश्च, एतैर्मन्त्रैर्मार्जयित्वा वामहस्तस्थजलं दक्षिणेनादाय पुरः कल्पित वज्रशिलायामस्त्रमन्त्रेण क्रोधादास्फालयेत्। ततः पूर्ववदाचम्य कराङ्गन्यासौ कृत्वा अर्घपात्रे जलं कृत्वा तदादाय मूलमूच्चार्य शिवरूपाय सूर्यायेदमर्घं स्वाहा इति त्रिरर्घ्यं दत्त्वा मूलेनोपस्थाय गायत्रीं मूलमन्त्रं च जपेत्। ॐ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि॥ तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्॥ इति गायत्रीमष्टोत्तरशतं विंशतिमष्टोत्तरं वा मूलञ्च सञ्जप्य जपं निवेद्य नमस्कुर्यात्॥ इति सन्ध्या॥ सन्ध्येयं सर्व शैवमन्त्रेषु पञ्चाक्षरादिषु ज्ञेया॥ ततः पुनः पूर्व वदाचम्य कराङ्गन्यासौ कृत्वा तीर्थे देवतापीठं विचिन्त्य हृदयाद्देवं तत्रावाह्य जलमयैः पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य अञ्जलिना मूलमुच्चार्य श्रीभैरवं तर्पयामि, इत्येवमष्टोत्तरशमष्टाविंशति दशवारं वा तर्पयेत्। आवरणदेवताभ्यः षडङ्गदेवता एकैकमञ्जलिना नाममन्त्रेण प्रणवाद्येन च सन्तर्प्य पुनर्जलमयैरुपचारैः प्रधानदेवं सम्पूज्य स्वात्मनि विसृजेत्। इति तर्पणम्॥ इदञ्च स्मार्ततर्पणानन्तरं कर्तव्यम्। ततो गृहमागत्य पादौ प्रक्षाल्य पीठे प्राङ्मुखं उपविश्य शिखां बद्ध्वा पूर्ववदाचम्य प्राणानायम्य कराङ्गन्यासो कृत्वा मूलमुच्चार्य हाँ हीँ हूँ षडदीर्धैः इति समस्त देहे व्यापयेत्। ततस्ताम्रादिपात्रं साधारं पुरतः सन्स्थाप्य ह्राँ ह्रीँ ह्रः षडदीर्धैः इति मन्त्रेण शुद्धजलेन पूर्वं चन्दनमालोड्य अक्षतान्निक्षिप्य अनेनैव मन्त्रेणाभिमन्त्र्य पुष्पादिना सूर्यं सम्पूज्य हस्ताभ्यां तत्पात्रमामस्तकमूर्द्धन्यजानुस्पृष्ट महीतलः सूर्यमुद्वीक्ष्यमाणः ह्राँ हीँ ह्रः षडदीर्धैः श्रीसूर्यायेदमर्घं स्वाहा इति शुद्धभूमौ क्षिपेत्। ततः पूजागृहद्वारमागत्य तत्र पूर्ववत्सामान्यार्घं सन्स्थाप्य तेन

जलेनोद्धृतेन अस्त्राय फडिति द्वारं सम्प्रोक्ष्य, ॐ द्वारश्रियैः नमः। ऊर्ध्वोदुम्बर मध्ये गँ गणपतये नमः। ऊर्ध्वोदुम्बरदक्षिणकोणे सँ सरस्वत्यै नमः। वामे नँ नन्दिने नमः। दक्षशाखयां गँ गङ्गायै नमः। वामशाखयां यँ यमुनायै नमः। इति सम्पूज्य गृहमध्ये निर्ऋतौ वास्तुपुरुषाय नमः। ब्रह्मणे नमः। गणपतये नमः। वायवे अक्षतानादाय उत्तिष्ठन्तु अपसर्पन्त्विति भूतान्युत्साद्य पूजाद्रव्याणि मूलमुच्चरन् दिव्यदृष्ट्या विलोकयेत्। ततः पृथ्वित्वयेति आसनमन्त्रेण उदङ्मुखो यथाभ्यासमासने समुपविश्य मूलेन देवं ध्यायेत्। प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा प्रत्यवायपरिहाराकामोऽहममुकशर्मा यथोकल्पितैरुपचारैः श्रीवटुकभैरवं पूजयिष्ये, इत्युच्चार्य जलं भूमौ क्षिपेत्। ततोऽस्त्रमन्त्रेण तालत्रयं दिग्बन्धमग्निप्राकारं च विधाय वामांसे गुँ गुरुभ्यो नमः। दक्षांसे गँ गणपतये नमः। मूलमुच्चार्य स्वपुरतः श्रीवटुकभैरवाय नमः। इति प्रणम्य क्षेत्रपालाय नमः। ततो मूलेन प्राणानायम्य भैरवपूजाधिकारसिद्धये भूतशुद्धिमहं करिष्ये इति सङ्कल्प्य यथा विधिना भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठामन्तर्मातृकाबहिर्मातृकान्यासान् विन्दु विसर्गसहितान् तथा सृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासांश्च कृत्वा, ततः काममातृका-कलामातृकाश्रीबीजादिमातृकान्यासान्ते मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात्। मूलमन्त्रे पक्षद्वयम्। ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इत्येवं द्वाविंशत्यक्षरो मनुः। रुद्रयामले शारदाकारेण तु प्रणवादि शक्त्यन्त एकविंशत्यक्षरो मन्त्र उक्त इति। अस्य श्रीवटुकभैरवमन्त्रस्य बृहदारण्यकऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीवटुकभैरवो-देवता। हीँ बीजम्। ह्रीँ शक्तिः। आँ कीलकम्। श्रीवटुकभैरवप्रीतये विनियोगः। बृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि। अनुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीवटुकभैरवोदेवताय नमो हृदि। ह्रीँ बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः। आँ कीलकाय नमः नाभौ स्तनान्तरे वेति केचित्। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे विनियोगः। अथ पञ्चब्रह्मन्यासः। ह्रौँ वौँ ईशानाय नमः अङ्गुष्ठयोः। ह्रैँ वैँ तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः। ह्रूँ वूँ अघोराय नमः मध्यमयोः। ह्रीँ वीँ वामदेवाय नमः अनामिकयोः। ह्राँ वाँ सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकयोः। पुनः ह्रौँ वौँ ईशानाय ऊर्ध्ववक्त्राय नमः शिरसि। ह्रैँ वैँ तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः मुखे। ह्रूँ वूँ अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः दक्षिणकर्णे। ह्रीँ वीँ वामदेवाय उत्तरवक्त्राय नमः वामकर्णे। ह्राँ वाँ सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः चूडाधः। इति विन्यस्य। पुनः ह्रौँ वौँ ईशानाय नमः शिरसि। ह्रैँ वैँ तत्पुरुषाय मुखे। ह्रूँ वूँ अघोराय नमः हृदये। ह्रीँ वीँ वामदेवाय नमः गुह्ये। ह्राँ वाँ सद्योजाताय नमः पादयोः। एता एव मूर्तीर्विन्यसेत्। अथ हृदयादि न्यासाः। ह्राँ वाँ हृदयाय नमः। ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा। ह्रूँ वूँ शिखायै वषट्। ह्रैँ वैँ कवचाय हुम्। ह्रौँ वौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः वः अस्त्राय फट्। ततोस्त्रमन्त्रेणतालत्रयं छोटिकाभिः दश दिग्बन्धनम्। अथैकादशन्यासाः। तत्रादौ प्रेतबीजन्यासः। ॐ ह्सौँ हौँ हृदयाय नमः। ॐ ह्सैँ हौँ

शिरसे स्वाहा। ॐ ह्सूँ हौँ शिखयै वषट्। ॐ ह्सीँ हौँ कवचाय हुम्। ॐ ह्साँ हौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्सः हौँ अस्त्राय फट्। इति प्रेतबीजन्यासाः। अथ सिंह-बीजन्यासः। ॐ हसर्क्षं नमः शिरसि। ॐ हसर्क्षं नमः बाह्वोः। ॐ हसर्क्षं नमः लिङ्गे। ॐ हसर्क्षं नमः नाभौ। ॐ हसर्क्षं नमः हस्ताङ्गुलिषु। ॐ हसर्क्षं नमः पादाङ्गुलिषु। ॐ हसर्क्षं नमः। अथ काणबीजन्यासः। ॐ झ्रौँ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ झ्रौँ नमः मुखे। ॐ झ्रौँ नमः नेत्रद्वये। ॐ झ्रौँ नमः ग्रीवायाम्। ॐ झ्रौँ नमः नासापुटयोः। ॐ झ्रौँ नमः कर्णयोः। ॐ झ्रौँ नमः कपोलयोः। ॐ झ्रौँ नमः चिबुके। ॐ झ्रौँ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। अथ सत्याबीजम्यासः। ॐ मलहौँ नमः पादयोः। ॐ मलहौँ नमः हेस्तयोः। ॐ मलहौँ नमः करयोः। ॐ मलहौँ नमः नेत्रयोः। ॐ मलहौँ नमः कर्णयोः। ॐ मलहौँ नमः मुखे। ॐ मलहौँ नमः कुक्षिद्वये। ॐ मलहौँ नमः लिङ्गे। अथ श्रीबीजन्यासः। ॐ श्रूँ नमः चिबुके। ॐ श्रूँ नमः नेत्रयोः। ॐ श्रूँ नमः कर्णयोः। ॐ श्रूँ नमः मुखे। ॐ श्रूँ नमः हृदये। ॐ श्रूँ नमः उदरे। ॐ श्रूँ नमः नाभौ। ॐ श्रूँ नमः ऊर्वोः। ॐ श्रूँ नमः पादयोः। अथ प्राणबीजन्यासः। ॐ क्रूँ नमः हृदये। ॐ क्रूँ नमः मुखे। ॐ क्रूँ नमः नेत्रयोः। ॐ क्रूँ नमः नाशापुटयोः। ॐ क्रूँ नमः कपोलयोः। ॐ क्रूँ नमः ललाटे। ॐ क्रूँ नमः उदरे। ॐ क्रूँ नमः नाभौ। ॐ क्रूँ नमः सव्यकुक्षे। ॐ क्रूँ नमः वामकुक्षे। ॐ क्रूँ नमः दक्षोरौ। ॐ क्रूँ नमः वामोरौ। ॐ क्रूँ नमः दक्षजङ्घायां। ॐ क्रूँ नमः वामजङ्घायां। ॐ क्रूँ नमः दक्षपादे। ॐ क्रूँ नमः वामषादे। अथ घन्टाबीजन्यासः। ॐ घ्रँ नमः मुखे। ॐ घ्रँ नमः गलघन्टिकायां। ॐ घ्रँ नमः हृदये। ॐ घ्रँ नमः उदरे। ॐ घ्रँ नमः नाभौ। अथ ख्यातिबीजन्यासः। ॐ ख्न्यूँ नमः ललाटे। ॐ ख्न्यूँ नमः नेत्रयोः। ॐ ख्न्यूँ नमः कर्णयोः। ॐ ख्न्यूँ नमः नाशापुटयोः। ॐ ख्न्यूँ नमः मुखे। ॐ ख्न्यूँ नमः ग्रीवायां। ॐ ख्न्यूँ नमः कण्ठे। ॐ ख्न्यूँ नमः हृदये। ॐ ख्न्यूँ नमः बाह्वोः। ॐ ख्न्यूँ नमः स्तनयोः। ॐ ख्न्यूँ नमः उदरे। ॐ ख्न्यूँ नमः नाभौ। ॐ ख्न्यूँ नमः कट्योः। ॐ ख्न्यूँ नमः ऊर्वोः। ॐ ख्न्यूँ नमः जङ्घयोः। अथ मूलबीजन्यासः। ॐ ॐ नमः मुखे। ॐ ॐ नमः नेत्रयोः। ॐ ॐ नमः कर्णयोः। ॐ ॐ नमः नाशापुटयोः। ॐ ॐ नमः हस्तयोः। ॐ ॐ नमः पादयोः। अथ भ्रामरीबीजन्यासः। ॐ भरलसहीँ नमः ध्रुवमण्डले। ॐ भरलसहीँ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ भरलसहीँ नमः ललाटे। ॐ भरलसहीँ नमः भ्रूमध्ये। ॐ भरलसहीँ नमः नेत्रयोः। ॐ भरलसहीँ नमः कर्णयोः। ॐ भरलसहीँ नमः कपोलयोः। ॐ भरलसहीँ नमः गण्डयोः। ॐ भरलसहीँ नमः मुखे। ॐ भरलसहीँ नमः दन्तपंक्तौ। ॐ भरलसहीँ नमः कण्ठे। ॐ भरलसहीँ नमः स्तनयोः। ॐ भरलसहीँ नमः बाह्वोः। ॐ भरलसहीँ नमः स्कन्धयोः। ॐ भरलसहीँ नमः हृदये। ॐ भरलसहीँ नमः चिबुके। ॐ भरलसहीँ नमः पादयोः। अथ आकूतिबीजन्यासः। ॐ

नमरलमरक्षरशरह्सीँ नमः शिरसि। ॐ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः गण्डयोः। ॐ नमरलमरक्षरशरहसीँ नमः वक्त्रे। अथ कालबीजन्यासः। ॐ करलसरमरीँ नमः नेत्रयोः। ॐ करलसरमरीँ नमः कर्णयोः। ॐ करलसरमरीँ नमः नाभौ। ॐ करलसरमरीँ नमः लिङ्गे। ॐ करलसरमरीँ नमः गुदे। अथ बीद्याबीजन्यासः। ॐ क्षरसरहसीँ नमः कपोलयोः। ॐ क्षरसरहसीँ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ क्षरसरहसीँ नमः दन्तपंक्तयोः। अथ शृंखलामहापराख्यबीजन्यासः। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः मस्तके। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षनेत्रे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामनेत्रे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षकर्णे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामकर्णे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षकपोले। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामकपोले। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षगण्डे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामगण्डे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः चिबुके। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः गले। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षस्कन्धे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामस्कन्धे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षस्तने। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामस्तने। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः हृदये। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वक्षसि। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षकुक्षौ। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामकुक्षौ। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः नाभौ। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः लिङ्गे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षमेढ्रे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वाममेढ्रे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः मूलाधारे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षजङ्घे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामजङ्घे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षगुल्फे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामगुल्फे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षपादे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामपादे। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः दक्षपादाङ्गुलिषु। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः वामपादाङ्गुलिषु। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः ब्रह्मरन्ध्रात् मूलाधारान्ते। सहसहलकलइशरवरवलवऊई नमः मूलाधारात् ब्रह्मरन्ध्रन्ते। अथ श्रीवटुकान्तर्मातृकान्यासः। ॐ अँ नमः आँ नमः इँ नमः ईँ नमः उँ नमः ऊँ नमः ऋँ नमः ॠँ नमः लृँ नमः ॡँ नमः एँ नमः ऐँ नमः ओँ नमः औँ नमः अँ नमः अः नमः कण्ठस्थाने। ॐ कँ नमः खँ नमः गँ नमः घँ नमः ङँ नमः चँ नमः छँ नमः जँ नमः झँ नमः ञँ नमः टँ नमः ठँ नमः हृदये। ॐ डँ नमः ढँ नमः णँ नमः तँ नमः थँ नमः दँ नमः धँ नमः नँ नमः पँ नमः फँ नमः नाभौ। ॐ बँ नमः भँ नमः मँ नमः यँ नमः रँ नमः लँ नमः लिङ्गे। ॐ वँ नमः शँ नमः षँ नमः सँ नमः ळँ नमः मूलाधारे। ॐ हँ नमः क्षँ नमः आज्ञायां। अथ बहिर्मातृकान्यासः। ॐ अँ नमः

शिरसि। ॐ आँ नमः मुखे। ॐ इँ नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ ईँ नमः वामनेत्रे। ॐ उँ नमः दक्षिणकर्णे। ॐ ऊँ नमः वामकर्णे। ॐ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ ॠँ नमः वामनासापुटे। ॐ लृँ नमः दक्षिणकपोले। ॐ लॄ नमः वामकपोले। ॐ एँ नमः उर्ध्वोष्ठे। ॐ ऐँ नमः अधरोष्ठे। ॐ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ। ॐ अँ नमः जिह्वाग्रे। ॐ अः नमः कण्ठे। ॐ कँ नमः दक्षबाहुमूले। ॐ खँ नमः दक्षिणकूर्परे। ॐ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे। ॐ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले। ॐ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे। ॐ चँ नमः वामबाहुमूले। ॐ छँ नमः वामकूर्परे। ॐ जँ नमः वाममणिबन्धे। ॐ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले। ॐ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे। ॐ टँ नमः दक्षोरुं। ॐ ठँ नमः दक्षिणजानुनि। ॐ डँ नमः दक्षिणगुल्फे। ॐ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले। ॐ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ तँ नमः वामोरुं। ॐ थँ नमः वामजानुनि। ॐ दँ नमः वामगुल्फे। ॐ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले। ॐ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे। ॐ फँ नमः वामपार्श्वे। ॐ बँ नमः पृष्ठे। ॐ भँ नमः नाभौ। ॐ मँ नमः उदरे। ॐ यँ त्वगात्मने नमः हृदये। ॐ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे। ॐ लँ मांसात्मने नमः ककुदि। ॐ वँ मेदात्मने नमः वामांसे। ॐ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं। ॐ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं। ॐ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं। ॐ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं। ॐ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं। ॐ क्षँ प्राणात्मनेज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं। अथ सरस्वतीबीजमातृकान्यासः। ॐ कलडरसहरहक्षशरई अँ नमः शिरसि। ॐ कलडरसहरहक्षशरई आँ नमः मुखे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई इँ नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई ईँ नमः वामनेत्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई उँ नमः दक्षिणकर्णे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई ऊँ नमः वामकर्णे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई ॠँ नमः वामनासापुटे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई लृँ नमः दक्षिणकपोले। ॐ कलडरसहरहक्षशरई लॄँ नमः वामकपोले। ॐ कलडरसहरहक्षशरई एँ नमः उर्ध्वोष्ठे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई ऐँ नमः अधरोष्ठे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ कलडरसहरहक्षशरई औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ। ॐ कलडरसहरहक्षशरई अँ नमः जिह्वाग्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई अः नमः कण्ठे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई कँ नमः दक्षबाहुमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरई खँ नमः दक्षिणकूर्परे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरई ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई चँ नमः वामबाहुमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरई छँ नमः वामकूर्परे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई जँ नमः वाममणिबन्धे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले।

ॐ कलडरसहरहक्षशरईं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं टँ नमः दक्षोरुं। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं ठँ नमः दक्षिणजानुनि। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं डँ नमः दक्षिणगुल्फे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं तँ नमः वामोरुं। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं थँ नमः वामजानुनि। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं दँ नमः वामगुल्फे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं पँ नमः दक्षिणपार्श्वे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं फँ नमः वामपार्श्वे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं बँ नमः पृष्ठे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं भँ नमः नाभौ। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं मँ नमः उदरे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं यँ त्वगात्मने नमः हृदये। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं लँ मांसात्मने नमः ककुदि। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं वँ मेदात्मने नमः वामांसे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं क्षँ प्राणात्मनेज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं। अथ पीठन्यासः। ॐ मण्डूकाय नमः मूलाधारे। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः स्वधिष्ठाने। ॐ कच्छपाय नमः ॐ आधारशक्तये नमः ॐ प्रकृतये नमः ॐ कूर्माय नमः नाभौ। ॐ अनन्ताय नमः ॐ पृथिव्यै नमः ॐ क्षीरसमुद्राय नमः ॐ रत्नद्वीपाय नमः ॐ कल्पवृक्षाय नमः ॐ मणिमण्डपाय नमः ॐ कल्पवृक्षाय नमः ॐ स्वर्णसिंहासनाय नमः हृदि। ॐ धर्माय नमः दक्षिणस्कन्धे। ॐ ज्ञानाय नमः वामस्कन्धे। ॐ वैराज्ञाय नमः दक्षोरौ। ॐ ऐश्वर्याय नमः वामोरौ। ॐ सर्वतत्त्वपद्माय नमः ॐ आनन्दकन्दाय नमः ॐ संविन्नालाय नमः ॐ विकारमयकेशरेभ्यो नमः ॐ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः ॐ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः हृदये। ॐ अग्निमण्डलाय नमः ॐ सूर्यमण्डलाय नमः ॐ चन्द्रमण्डलाय नमः ॐ सत्वाय नमः ॐ रजसे नमः ॐ तमसे नमः ॐ आत्मने नमः ॐ अन्तरात्मने नमः ॐ परमात्मने नमः ॐ ज्ञानात्मने नमः ॐ मायातत्त्वाय नमः ॐ कलातत्त्वाय नमः ॐ विद्यातत्त्वाय नमः ॐ परतत्त्वाय नमः हृदये। अथ हृद्येव पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रौद्र्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कलविकरणायै नमः। ॐ बलविकरणायै नमः। ॐ बलप्रमथिन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। ॐ मनोन्मन्यै नमः। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायअनन्ताययोगपीठात्मने नमः। इति सर्वशैवमन्त्रेषु साधारणोऽयं पीठन्यासः। अथ वक्ष्यमाणं देवयन्त्रं पूजनं

विनैव केवलं पीठमध्ये सन्थाप्य पश्चात्पात्रासादनं कुर्यात्। ततस्तत्पूजनमिति।

अथ पात्रासादनयुक्तं कुलार्णवे॥

स्वर्णरूप्यशिलाकूर्मकपालालाबुमृण्मयम्।
नारिकेलं च शङ्खश्च मुक्ताशुक्तिसमुद्भवम्॥२३॥
पुण्यवृक्षसमुद्भूतंपात्रं सल्लोलितं शुभम्।
सल्लोलं वर्तुलाकृति भगाकाराण्यप्युक्तानि॥२४॥
साध्यसाधकयोर्मध्ये षट्त्रिंशदङ्गुलं भवेत्।
द्वादशाङ्गुलमूर्ध्वं च अधोभागे तथाङ्गुलम्॥२५॥
द्वादशाङ्गुलमध्यं तु तत्र संस्थापयेत् बुधः।
स्वार्थं च द्वादशं त्यक्त्वा देवार्थं द्वादशं त्यजेत्॥२६॥
द्वादशाङ्गुलमध्यस्थं तत्र चार्घ्यं निधापयेत्।
आदौ कुम्भे तथा शङ्खं श्रीपात्रं शक्तिपात्रकम्॥२७॥
गुरुपात्रं वीरपात्रं बलिपात्रं तथैव च।
एवमेव स्थापयेत्पात्रं वटुकभैरवम्॥२८॥

अथ कलशङ्खादिनां स्थापनम्। तत्र साम्बुकलशस्थापनम्। पूर्वस्थापितसामान्यार्घपात्रस्य वामभागे साम्बुकलशं स्थापयेत् वा स्वदक्षिणभागे स्थापयेत्। तत्रादौ यक्षकर्दममिश्रितजलेन भूमिं विलिप्य त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्त्रं यन्त्रं श्वासानुसारेण ऊर्ध्वकरे मत्स्यमुद्रया करपुटाभ्यां मण्डलं कृत्वा सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य शङ्खमुद्रया मण्डलं स्पर्शयेत्। ततस्त्रिकोणान्तर्मायां विलिख्य त्रिकोणेषु कूटत्रयेण सम्पूज्य मूलस्य खण्डत्रयं कुर्यात्। यथा अग्निकोणे प्रथमकूटं सम्पूज्य, दक्षिणकोणे द्वितीयकूटं सम्पूज्य, ईशान्ये शिरःशक्तिं सम्पूज्य, वायव्ये शिखाशक्तिं सम्पूज्य, नैर्ऋत्ये कवचशक्तिं सम्पूज्य, त्रिकोणमध्ये नेत्रशक्तिं सम्पूज्य, द्वारे अस्त्रशक्तिं सम्पूज्य, तद्बहिर्बर्त्तुले आकारादिक्षकारान्तां मातृकां सम्पूज्य, तद्बहिश्चतुरस्त्रे पूर्वद्वारे उड्यानपीठाय नमः। दक्षिणद्वारे जालन्धरपीठाय नमः। पश्चिमद्वारे पूर्णगिरिपीठाय नमः। उत्तरद्वारे कामगिरिपीठाय नमः। इति मण्डलं सम्पूज्य। ॐ ह्रीँ आधारशक्तिभ्यो नमः इति सम्पूज्य मूलेन नम इति आधारं प्रक्षाल्य मण्डलोपरि सन्स्थापयेत्। अथ वह्निकलापूजनम्। ततः प्रथमकूटमुच्चार्य धर्मप्रददशकलाव्याप्तात्मने वह्निमण्डलाय नमः फट् इति कलशं प्रक्षाल्य, अधारोपरि हस्तद्वयेन कलशं सन्स्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्यादिनां भूषयित्वा वह्निकलां यजेत्। यथा ॐ यँ धूम्रार्चिषे नमः। ॐ रँ ऊष्मायै नमः। ॐ लँ ज्वलिन्यै नमः। ॐ वँ ज्वालिन्यै नमः। ॐ शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। ॐ षँ सुश्रियै नमः। ॐ सँ स्वरूपायै नमः। ॐ हँ कपिलायै नमः। ॐ ळँ हव्यवाहनायै नमः। ॐ क्षँ कव्यवाहनायै नमः। अथ सूर्यकलापूजनम्। द्वितीयकूटमुच्चार्य अर्थप्रदद्वादशकला-

व्याप्तात्मने सूर्यमण्डलाय नमः। शुद्धजलमापूर्य सूर्यस्य द्वादशकलाः पूजयेत्। यथा ॐ कँ भँ तपिन्यै नमः। ॐ खँ बँ तापिन्यै नमः। ॐ गँ फँ धूम्रायै नमः। ॐ घँ पँ मरीच्यै नमः। ॐ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः। ॐ चँ धँ रुच्यै नमः। ॐ छँ दँ सुषुम्णायै नमः। ॐ जँ थँ भोगदायै नमः। ॐ झँ तँ विश्वायै नमः। ॐ ञँ णँ बोधिन्यै नमः। ॐ टँ ढँ धारिण्यै नमः। ॐ ठँ डँ क्षमायै नमः। अथ सोमकलापूजनम्। तृतीयकूटमुच्चार्य कामप्रदषोडशकलाव्याप्तात्मने सोममण्डलाय नमः। जलमापूर्य सोमस्य षोडशकलाः पूजयेत्। यथा ॐ अँ अमृतायै नमः। ॐ आँ मानदायै नमः। ॐ इँ पूषायै नमः। ॐ ईँ तुष्ट्यै नमः। ॐ उँ पुष्ट्यै नमः। ॐ ऊँ रत्यै नमः। ॐ ऋँ धृत्यै नमः। ॐ ॠँ शशिन्यै नमः। ॐ लृँ चण्डिकायै नमः। ॐ लॄँ कान्त्यै नमः। ॐ एँ ज्योत्स्नायै नमः। ॐ ऐँ श्रियै नमः। ॐ ओँ प्रीत्यै नमः। ॐ औँ अङ्गदायै नमः। ॐ अँ पूर्णायै नमः। ॐ अः पूर्णामृतायै नमः। ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य कवचेनावगुंठ्य चक्रेण संरक्ष्य धेनुमुद्रया-मृतीकृत्य तीर्थमावाह्य ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि ध्यायेत्। इमं मे गङ्गे०। गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूजयेत्। अथ ध्यानम्। सर्वानन्दमयेति श्लोकेन। इति साम्बुकलशस्थापन विधिः। अथ सुधाकुम्भस्थापनविधिः। स्ववामभागे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रमण्डलं कृत्वा शङ्खमुद्रया मण्डलं स्पर्शयेत्। त्रिकोणेषु कूटत्रयं पूजयेत्। तद्यथा अग्निकोणे प्रथमकूटं सम्पूजयेत्। दक्षिणकोणे द्वितीयकूटं सम्पूजयेत्। वामकोणे तृतीयकूटं सम्पूजयेत्। तद्बहिः षट्कोणे कुटत्रयं द्विरावृत्या वामावर्तेन सम्पूजयेत्। दक्षिणमार्गिणः दक्षिणावर्ते-नेत्ययं विशेषः। वत्तुले अकारादिक्षकारान्तां मातृकां सम्पूज्य। अँ नमः, आँ नमः इत्यादि। तद्बहिश्चतुरस्रे षडङ्गानि सम्पूजयेत्। यथा अग्निकोणे हृदयशक्तिं सम्पूजयेत्। ईशान्ये शिरःशक्तिं सम्पूजयेत्। वायव्ये शिखाशक्तिं सम्पूजयेत्। नैर्ऋत्ये कवचशक्तिं सम्पूजयेत्। त्रिकोणमध्ये नेत्रशक्तिं सम्पूजयेत्। द्वारे अस्त्रशक्तिं सम्पूजयेत्। पूर्वद्वारे उड्यानपीठाय नमः, दक्षिणद्वारे जालन्धरपीठाय नमः, पश्चिमद्वारे पूर्णगिरिपीठाय नमः, उत्तरद्वारे कामपीठाय नमः सम्पूजयेत्। इति चतुःपीठानि। एवं मण्डलं सम्पूज्य। ॐ ह्रीँ आधारशक्त्यै नमः। इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य। नम इत्याधारं प्रक्षाल्य मण्डलोपरि सन्स्थाप्य प्रथमकूटमुच्चार्य ॐ धर्मप्रददशकलाव्याप्तात्मने वह्निमण्डलाय नमः। अथ वह्निकलां यजेत्। यथा ॐ यँ धूम्रार्चिषे नमः। ॐ रँ ऊष्मायै नमः। ॐ लँ ज्वलिन्यै नमः। ॐ वँ ज्वालिन्यै नमः। ॐ शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। ॐ षँ सुश्रियै नमः। ॐ सँ स्वरूपायै नमः। ॐ हँ कपिलायै नमः। ॐ ळँ हव्यवाहनायै नमः। ॐ क्षँ कव्यवाहनायै नमः। इति सम्पूज्य, अस्त्राय फट् इति पात्रं प्रक्षाल्य रक्तवस्त्रमाल्यादिना भूषयित्वा रत्नखचितं तत्पात्रं त्रिपादकाधारोपरि देवीबुद्ध्या सन्स्थाप्य द्वितीयकूटमुच्चार्य ॐ अर्थप्रदद्वादशकलाव्याप्तात्मने सूर्यमण्डलाय नमः

इत्यनेन कलशे स्पृष्ट्वा सूर्यकलां यजेत्तद्यथा ॐ कँ भँ तपिन्यै नमः। ॐ खँ बँ तापिन्यै नमः। ॐ गँ फँ धूम्रायै नमः। ॐ घँ पँ मरीच्यै नमः। ॐ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः। ॐ चँ धँ रुच्यै नमः। ॐ छँ दँ सुषुम्णायै नमः। ॐ जँ थँ भोगदायै नमः। ॐ झँ तँ विश्वायै नमः। ॐ ञँ णँ बोधिन्यै नमः। ॐ टँ ढँ धारिण्यै नमः। ॐ ठँ डँ क्षमायै नमः। इति सम्पूज्य तृतीयकूटमुच्चार्य कामप्रदषोडशकलाव्याप्तात्मने सोम-मण्डलाय नमः। अथ सोमस्य षोडशकलाः पूजयेत्तद्यथा ॐ अँ अमृतायै नमः। ॐ आँ मानदायै नमः। ॐ इँ पूषायै नमः। ॐ ईँ तुष्ट्यै नमः। ॐ उँ पुष्ट्यै नमः। ॐ ऊँ रत्यै नमः। ॐ ऋँ धृत्यै नमः। ॐ ॠँ शशिन्यै नमः। ॐ लृँ चण्डिकायै नमः। ॐ ॡँ कान्त्यै नमः। ॐ एँ ज्योत्स्नायै नमः। ॐ ऐँ श्रियै नमः। ॐ ओँ प्रीत्यै नमः। ॐ औँ अङ्गदायै नमः। ॐ अँ पूर्णायै नमः। ॐ अः पूर्णामृतायै नमः। ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नम इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य। सुवासिततीर्थं वस्त्र-गालितमन्यपात्रे उद्धृत्य सुधागायत्रीं दशधाजपेत्। ॐ सुधादेवी विद्महे कामेश्वर्य्यै धीमही तन्नो रक्ताक्षिः प्रचोदयात्। मूलमन्त्रं दशधा जपेत्। अथ सुधाया शापविमोचनम्।

एवमेव परं ब्रह्मस्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥२९॥
सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
आस्यबीजमये देवि शुकशापाद्विमुच्यताम्॥३०॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि! ब्रह्महत्या व्यपोहतु॥३१॥

इति मन्त्रं घटं धृत्वा पठेत्त्रिधा। ॐ साँ सीँ सूँ सैँ सौँ सः शुकशापविमोचिकायै सुरादेव्यै नमः। इति द्वादधा जपेत्। ब्राँ ब्रीँ ब्रूँ ब्रैँ ब्रौँ ब्रः ब्रह्मशापविमोचिकायै सुरा-देव्यै नमः। इति दशधा जपेत्। ॐ ह्रीँ श्रीँ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः सुधाकृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा। इति दशधा जपेत्। ॐ राँ रीँ रुँ रैँ रौँ रः रुद्रशापविमोचिकायै सुरादेव्यै नमः। इति शुक्रब्रह्मकृष्णरुद्रशापविमुक्तिः। अथ कलशे दशदोषनिवारणं कुयात्। ॐ ह्रीँ क्रीँ परमस्वामिनी परमाकाशून्यवाहिनी चन्द्रसुर्याग्निभक्षिणी त्वं पात्रं उपविश उपविश स्वाहा। घटोपरि दशधा जपेत्। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै च धीमहि तन्नोऽर्द्धनारीश्वरः प्रचोदयात्। इति दशधा जपेत्। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हत्क्ष्ल्व्क्रैँ पथिकदेवताभ्यो हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ रँ लँ आँ आस्फलिनी ग्रामचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ ह्राँ संगमस्पर्शचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फ्रैँ घय ङँ लँ क्षँ दृष्टिचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ग्लौँ लाँ क्रोधचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ सृष्टिचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ क्रौँ घटचाण्डालिनी हुँ फट्

स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ छँ तपनीयबुधचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ आँ क्रौँ क्लीँ नित्यचाण्डालिनी हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्त्रुँ क्षँ स्त्रौँ स्त्रौँ खादय खादय सर्वजनदृष्टिस्पर्षदोषाय हुँ फट् स्वाहा। इति मन्त्रेण दशधा कुम्भोपरि अक्षतान्निक्षिपेत्। ॐ हुंसःशुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोताव्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्॥ नृषद्वरसदृद्व्योंसमसदब्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत्॥ इत्यनेन त्रिवारं द्रव्योपरि पठेत्, गन्धपुष्पाक्षतादि निक्षिपेत् इतिदोषनिवारणाय द्रव्य मध्ये आनन्दभैरव आनन्दभैरवीं ध्यायेत्। तद्यथा।

सूर्यकोटिप्रतिकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्॥३२॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मो परिस्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्॥३३॥
कपालखट्वाङ्गधर घण्टाडमरुवादिनम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुशलधारिणम्॥३४॥
खड्ग-खेटक-पट्टीशं मुद्गरच्छूल-कुन्तिलम्।
विचित्र-खेटकं-मुण्डं वरदाऽभय-मालिनम्॥३५॥
लोहितं देवदेवेशं भावये साधकोत्तमः।
भावयेच्च सुरादेवीं चन्द्रकोट्युतप्रभम्॥३६॥
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्॥३७॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दत्क्ष्म्लफ्रैँ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवाय वौषट्। इत्यानन्दभैरवं त्रिः सम्पूजयेत्।

भावयेत्त्चसुरादेवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्॥३८॥
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम्॥३९॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सहक्षमलवरयीँ आनन्दभैरव्यै सुधादेव्यै वौषट्। इत्यानन्दभैरवीं त्रिः सम्पूजयेत्। इति भैरवभैरवीपूजनम्। अथ द्रव्यमध्ये शक्तिचक्रं विलिख्य, तदभावे त्रिकोणदक्षावर्तेन विलिख्य ऊर्ध्वरेखायाम्। अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः दक्षिणरेखायां कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ उत्तररेखायां थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ उभयो पार्श्वयोः ळँ नमः क्षँ नमः त्रिकोणमध्ये कामकला ईं विलिख्य द्रव्यमध्ये अमृतत्त्वं विचिन्तयेत्। तत्र मन्त्रं। अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय साँ जँ जँ अमृतेश्वर्यै स्वाहा

शुक्रादिशापात्सुरां मोचय मोचय मोचिकायै नमः। ततो ह्रीँ जूँ सः मृत्युञ्जयमन्त्रं द्वाविंशतिवारं कुम्भोपरि जपित्वा धेनुमुद्रया वमिति बीजमष्टधा प्रजप्य पश्चाद्घटं धृत्वा मूलमन्त्रं अष्टधा पठित्वा।

पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः।
पावमानं परं ज्ञानं तेन ते पावमाम्यहम्॥३८॥

इति अभिमन्त्रयेत्। अथ द्रव्यशुद्धिः। तदुक्तं श्यामारहस्ये।

अमृतं चिन्तयेत् द्रव्यं अष्टधा चामृतं जपेत्।
अष्टधा मूलमन्त्रं च जपेद्धृत्वा घटं ततः॥३९॥

पश्चान्मुद्रां प्रदर्श्य वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुण्ठ्य चक्रेणसंरक्ष्य अस्त्रेण छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कुर्यात्। अथ कलश ध्यानम्।

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥४०॥
त्वत्तोये सर्वदेवाः स्युः सर्वे वेदाः समाश्रिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥४१॥
शिवस्त्वं च शिवाऽसि त्वं विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥४२॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४३॥
त्वदालोकनमात्रेण भुक्तिमुक्तिफलमहत्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥४४॥

इति ध्यात्वा घटसूक्तं पठेत्।

समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीरोदे सागरोत्तमे।
तत्रोत्पन्नां सुरां ध्यायेत्कन्यकारूपधारिणीम्॥४५॥
अष्टादशभुजां देवीं रक्तान्तायतलोचनाम्।
आपीनवर्णा स्वर्गाभां बहुरूपां परां सुराम्॥४६॥
सा सर्वैः संस्तुता सर्वदेवानामभयङ्करी।
या सुरा सा रमा देवी यो गन्धः स जनार्दनः॥४७॥
यो वर्णः स भवेद् ब्रह्मा यो मदः स महेश्वरः।
स्वादे तु सन्स्थितः सोमः शब्दसन्स्थो हुताशनः॥४८॥
इच्छायां मन्मथो देवः पाताले तु च भैरवः।
घटो ब्रह्मा रसो विष्णुर्विन्दवोरुद्र एव च॥४९॥
हुङ्कार ईश्वर प्रोक्तो व्योमादेस्तु सदाशिवः।

घटमूले स्थितो ब्रह्मा घटमध्ये तु माधवः॥५०॥
घटकण्ठे नीलकण्ठो घटाग्रे सर्वदेवताः।
लघ्वी हि वारुणी देवी महामांसचरुप्रिया॥५१॥
सर्वविद्या तु या देवी सुरादेवि नमोऽस्तु ते।
अनेन घटसूक्तेन द्रव्यशुद्धिः प्रजायते॥५२॥

अथ कलशे प्राणप्रतिष्ठा। ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहं श्रीमद्वटुकभैरवस्य आधारसहितकलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहं श्रीमद्वटुकभैरवस्य आधारसहितकलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोहं श्रीमद्वटुकभैरवस्य आधारसहितकलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुर्जिह्वाश्रोत्रप्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहेति प्राणप्रतिष्ठा। गन्धादिभिः कलशं सम्पूजयेत्। तत्र कलशे चतुर्दिक्षु पञ्चरत्नानि पूजयेत्। पूर्वे ग्लूं गगनरत्नाय नमः। दक्षिणे स्थूं स्वर्गरत्नाय नमः। पश्चिमे प्लूं पातालरत्नाय नमः। उत्तरे म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः। मध्ये न्लूं नागरत्नाय नमः। एवं पञ्चरत्नानि सम्पूज्य पञ्चमुद्राभिर्नमस्कुर्यात्। अथ कलशबलिः। ततो कुम्भसमीपे रक्तचन्दनसिन्दूरकुङ्कुमान्येकत्रमेलयित्वा तेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्त्रमण्डलं कृत्वा तत्र सर्वपथिकदेवेभ्यो नमः। इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य तदुपरि द्रव्यशुद्धिमीनमुद्रान्वितं बलिं निधाय तत्त्वमुद्रया बलिमुत्सृज्य। ह्रीँ श्रीँ सर्वपथिकदेवेभ्यो नम इति मन्त्रेण बलि निधाय तं बलिं वामपाणिना कलशोपरि त्रिधा भ्रामयित्वा मूलमुच्चरन् पूजाबाह्ये निक्षिपेत्। इति बलिः। इति सुधाकुम्भस्थापनविधिः। अथ शुद्धिस्थापनविधिः। कुम्भस्य वामतः शुद्धिं सन्स्थाप्य, अग्निमण्डलाय नमः धर्मप्रददशकलात्मने शुद्धिपात्राधाराय नमः। इत्याधारे अग्निकलाभिः सम्पूज्य। सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने शुद्धिपात्राय नमः इति सूर्यकलाभिः सम्पूज्य। सोममण्डलाय नमः कामप्रदषोडशकलाव्याप्तात्मने । इति सोमकलाभिः सम्पूज्य। धेनुमुद्रां प्रदर्श्य।

उद्बुध्यस्व पशोत्वं हि न पशुस्त्वं शिवोऽसि भोः।
शिवोत्कृत्यामिदं पिण्डमतस्त्वं शिवतां व्रजेत्॥५३॥

पाशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि तन्नोः छागः प्रचोदयात् इति त्रिवारं जपेत्। इति शुद्धिसंस्कारः। अथ शङ्खस्थापनम्। तमेव सामान्यार्घ्यमिति वदेति। अथ स्थापनम्। स्वपुरतः सुधाकुम्भसमीपे त्रिकोणवृत्तचतुरस्त्रं मण्डलं कृत्वा पूर्ववत् मण्डलं सम्पूज्य। ॐ ह्रीँ आधारशक्त्यै नमः इति सम्पूज्य ततो मण्डलोपरि आधारत्रिपदीं सन्स्थाप्य, ततः प्रथमकूटमुच्चार्य, ॐ धर्मप्रददशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः इति सम्पूज्य, पूर्वोक्तवद्वह्निकलां यजेत्। ततः शङ्खं प्रक्षाल्य, सुवासितगन्धपुष्पादियुक्त-

शङ्खमाधारे सन्स्थाप्य द्वितीयकूटमुच्चार्य, ॐ अर्थप्रदद्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः पूर्वोक्तवत्सूर्यकलां यजेत्। ततो गङ्गे च यमुनेचैवेति अङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्तीर्थान्यावाह्य मूलमुच्चरञ्छुद्धजलमापूर्य चन्द्रकलां यजेत्। तृतीयकूटमुच्चार्य ॐ कामप्रदषोडशकलाव्याप्तात्मने सोममण्डलाय नमः। इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य। मूलं दशधा जपेत्। इति शङ्खस्थापनम्। अथ विशेषार्घ्यास्थापनम्। आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये भूमिजानुकः साधकः यक्षकर्दमेन त्रिकोणषडस्त्रवृत्तचतुरस्त्रं मण्डलं कुर्यात्।

यक्षकर्दममाह धन्वन्तरिः।

कर्पूरागरुकस्तूरीं कुङ्कमं चन्दनं तथा।
महासुगन्धिमित्युक्तं नामतो यक्षकर्दमः॥५४॥

अथ साम्बुकलशोक्तवन्मण्डलं सम्पूज्य ॐ आधारशक्त्यै नमः। इति सम्पूज्य त्रिपदि आधारं प्रक्षाल्य मण्डलोपरि सन्स्थाप्य, सामान्यार्घ्यजलेनाभ्युक्ष्य प्रथमकूटमुचार्य ॐ धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमन्महावटुकभैरवाय अग्निमण्डलाय नमः इति सम्पूज्य, पूर्वोक्तवद्वह्निकलां यजेत्। फट् मन्त्रेण अर्घ्यपात्रं प्रक्षल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन सन्स्थाप्य द्वितीयकूटमुच्चार्य, ॐ अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमन्महावटुकभैरवाय सूर्यमण्डलाय नमः। ततः पूर्वोक्तवत्सूर्यकलां यजेत्। ततः कुम्भाद्बिन्दुमुद्धृत्य पात्रे वामहस्तेन तत्त्वमुद्रया शुद्धिं गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन तीर्थमुच्चरन् मूलमन्त्रं विलोममातृकाश्च पठन् कारणामृतेन त्रिभागं प्रदर्श्य जलेन भागमेकं पूरयेत्। विलोममातृका यथा।ॐ क्षँ हँ लँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ ऌँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ नमः। अनेन पात्रं प्रपूर्य, पुष्पेण ह्रीँ श्रीँ बीजेनालोड्य, पुष्पं निरस्य, निक्षिप्य, ततस्तृतीयकूटमुच्चार्य ॐ कामप्रदषोडशकलाव्याप्तात्मने श्रीमन्महावटुकभैरवाय सोममण्डलाय नमः। ततश्चन्द्रकलां यजेत्। इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य। ततोऽर्घ्यमध्ये कुशेन त्रिकोणषट्कोणवृत्तं चतुरस्त्रं कृत्वा, त्रिकोण ऊर्ध्वरेखायां अँ नमः इत्यादि अः नमः इत्यन्तं सम्पूज्य, दक्षिणरेखायां कँ नमः इत्यादि तँ नमः इत्यन्तं सम्पूज्य, उत्तररेखायां थँ नमः इत्यादि हँ नमः इत्यान्तं सम्पूज्य, उभयोः पार्श्वयोः ळँ नमः, क्षँ नमः मध्ये ईँ नमः त्रिकोणेपु त्रिकूटानि सम्पूज्य, षट्कोणेषु ॐ हृदयशक्तिं, शिरःशक्तिं, कवचशक्तिं, नेत्रशक्तिं, अस्त्रशक्तिं, नमः। वर्त्तुले अकारादिक्षकारान्तां मातृकां सम्पूज्य चतुरस्त्रे ॐ पूर्णशैलाय नमः। ॐ उड्यानाय नमः। ॐ जालन्धराय नमः। ॐ कामकलायै नमः। इति सम्पूज्य गङ्गे च यमुने चेति क्रोमित्यंकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्तीर्थन्यावाह्य मुद्रां प्रदर्श्य वमिति धेनुमुद्रयाऽमृतिकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुंठ्य चक्रेणाच्छाद्य छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा आनन्दभैरवमानन्दभैरवीमावाह्य पूजयेत्। तन्मन्त्रौ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हसक्षमलवरयूँ आनन्दभैरवाय वौषट्। इत्यानन्दभैरवं त्रिः सम्पूजयेत्। ॐ ॐ ऐँ ह्रीँ

श्रीँ सहक्षमलवरयीँ आनन्दभैरव्यै सुधादेव्यै वौषट्। इत्यानन्दभैरवीं त्रिः सम्पूज्य। पूर्ववत् ध्यात्वा विशेषार्घस्य चतुर्दिक्षु पञ्चरत्नानि पूजयेत्। पूर्वे ग्लूं गगनरत्लेभ्यो नमः। दक्षिणे स्थूं स्वर्गरत्लेभ्यो नमः। पश्चिमे प्लूं पातालरत्लेभ्यो नमः। उत्तरे म्लूं मर्त्यरत्लेभ्यो नमः। मध्ये न्लूं नागरत्लभ्यो नमः। एवं पञ्चरत्नानि सम्पूज्य पञ्चमुद्राभिर्नमस्कुर्यात्। अथ द्रव्यशुद्धिः। ततो मीनमांसमद्यकुण्डगोलादिकं शोधयेत्। अथ मांसशोधनम्। ॐ फडिति सम्प्रोक्षणम्। ॐ यँ इति शोषणम्। ॐ रँ इति दाहनम्। ॐ वँ इति अमृतप्लावनम्। ॐ नम इति पूजनम्। धेनुमुद्रयामृतीकृत्य पशुगायत्री दशधा जपेत्। तद्यथा। ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदनाय धीमहि तन्नो मांसः प्रचोदयात्। वामहस्ते द्वितीयां गृहीत्वा तत्त्वमुद्रया विलोममातृकया मूलमन्त्रेण च कुम्भतीर्थमापूरयेत्। ॐ क्षाँ नम इत्यादिभिः अँ नम इत्यन्तं विलोममातृकाः न्यस्य। तद्यथा। ॐ क्षँ हँ लँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ ऌँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ नमः। ॐ प्रतद्विष्ष्णुस्त्तवतेव्वी॒र्य्ये॒णमृगोनभी॒मःकु॒च॒रोगि॒रि॒ष्ठाः॥ यस्यो॒रुषु॒त्त्रि॒षु॒व्वि॒क्क्रमणेष्व॒धिक्षि॒यन्ति॒भुव॑नानि॒व्विश्श्वा॑॥ अनेन मन्त्रेण शोधयेत्। अथ मीन शोधनं। त्र्यम्बकं मन्त्रेण मीनं संशोध्य। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐ तद्विष्ष्णोः॑पर॒मम्प॒दꣳसदा॑पश्श्यन्तिसूरयः॥ दि॒वी॒वचक्षु॒रात॑तम्॥ मन्त्रेण मुद्राशोधनम्। ॐ तद्विप्प्रासोव्विप॒न्न्यवो॑जागृवाꣳसः॒समिन्धते॥ व्विष्ष्णो॒र्य्यत्त्पर॒मम्प॒दम्॥ मीनमांसमद्यमुद्राविशेषार्घ्ये किञ्चिन्निक्षिपेत्। योगात्मकविन्दुं निष्कास्य अनेन मन्त्रेण शोधयेत्। ॐ विष्णुयोनिं कल्पयतु त्वष्टारूपाणि पिशन्तु। आसिञ्चतु प्रजापतिर्धातागर्भं दधातु मे॥ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ प्लूं ज्लूं ग्लूं स्वाहा अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय स्वाहा। इति कुण्डगोलादि शुद्धिः। विशेषार्घ्ये विन्दुं निक्षिपेत् तत्र वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुंठ्य चक्रेण संरक्ष्य अस्त्रेण तालत्रयं दिग्बन्धनं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। तद्यथा। ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्वटुकमहाभैरवस्य अस्मिन् आधारसहितविशेषार्घ्ये अग्निसूर्यसोमकलानां देवतायाः प्राणा इह प्राणाः। ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्वटुकमहाभैरवस्य अस्मिन् आधारसहितविशेषार्घ्ये अग्निसूर्यसोमकलानां देवतायाः जीव इह स्थितः। ॐ ह्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्वटुकमहाभैरवस्य अस्मिन् आधारसहितविशेषार्घ्ये अग्निसूर्यसोमकलानां देवतायाः सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ श्रीमद्वटुकमहाभैरवस्य अस्मिन् आधारसहितविशेषार्घ्ये अग्निसूर्यसोमकलानां देवतायाः गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि। इति प्राणप्रतिष्ठा।

दृष्ट्वार्घपात्रं देवेशि ब्राह्म्याद्या देवताः सदा।
नृत्यन्ति सर्वयोगिन्यः प्रीताः सिद्धिं ददत्यपि॥५५॥

तदुक्तं नव रत्नेश्वरे। विशेषार्घोपरि मूलं सप्तधा जपेदिति शुद्धिः ॐ ऐँ क्लीँ सौः।

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भवम् ।
आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह॥१॥
अखैण्डकरसानन्दकलेवरसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणा मन्त्रा निधेह्यकुलरूपिणि॥२॥
क्लीँ कुलस्थामृताकारे सिद्धज्ञानकलेवरे।
अमृतत्त्वंनिधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि॥३॥
सौः तद्रूपेणैकरस्यं कृत्वास्यैतत्स्वरूपिणि।
भूत्वापरामृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु॥४॥

अनेन मन्त्रेण अर्घ्यमामन्त्र्य पूर्ववत् पञ्चरत्नानि सम्पूज्य पूर्ववत् आनन्दभैरवानन्दभैरवीं ध्यात्वा पूजयेत्। तालत्रयं दिग्बन्धनं कृत्वावगुंठनमुद्रयावगुंठ्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य योनिमुद्रां प्रदर्श्य हंसो नम इति सम्पूज्य शङ्ख मुद्रां प्रदर्श्य मत्यमुद्रयापात्रमाछाद्य मूलं दशधा प्रजप्य देवस्वरूपं पात्रं भावयेत्। इति विशेषार्घ्यस्थापनविधिः। ततो विशेषार्घ्याद्वामतः सामान्यर्घ्वत्। श्रीपात्रं, गुरुपात्रं, भैरवपात्रं, शक्तिपात्रं, योगिनीपात्रं, भोगपात्रं, वीरपात्रं, आत्मपात्रं, बलिपात्रं एतानि नवपात्राणि सन्स्थाप्य दक्षिणभागे पाद्यमर्घ्यमाचमनीयमधुपर्कादि चत्वारि पात्राणि सामान्यर्घ्यवत् सन्स्थाप्य पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा पात्रं स्थापनीयम्। अशक्तश्चेद्गुरुवीरआत्मबलिभोगेति पञ्चपात्राणि स्थापयेत्। तत्राप्यशक्तश्चेत्तदा सामान्यार्घविशेषार्घप्रोक्षणीपात्राणि सन्स्थापयेत्। तदुक्तं हि।

चन्द्रपीठे वामेशङ्खं मध्येचार्घ्यं प्रतिष्ठाप्य।
दक्षिणे प्रोक्षणीपात्रमर्घ्यत्रयविकल्पयेत्॥५५॥

ततः प्रोक्षुण्यदकेन पुष्पाणि प्रोक्षयेद्यथा। ॐ पुष्पकेतुराजर्हते शताय सम्यक् संवधाय। ॐ पुष्पे शुद्धिं विधाय ह्रीँ हुँ फट्। इति मन्त्रेण बाणमुद्रया समदृष्टिः। पुष्पस्यावलोकनेन गन्धादिसर्वसम्भारशुद्धिं विधाय।

प्रोक्षयेत्तेन चात्मानं पूजोपकरणानि च।
सर्वत्र प्रोक्षणं कुर्यात्तेनशुद्धिर्भवेत्किल॥५६॥

इति पात्रासादनम्। अथ घृततैलस्थापनविधिः। तत्र देवस्य दक्षभागे घृतदीपं वामे तैलदीपं संस्थापयेत्। सुदर्शनमन्त्रेण घृतदीपं पूजयेत्। यथा। ॐ राँ रीँ रूँ रैँ रौँ रः ॐ सहस्त्रार हुं फट् स्वाहेति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूजयेत्। अथ तैलदीपं पाशुपतास्त्रमन्त्रेण पूजयेत्। यथा। ॐ श्लीँ पशो हुं फट् स्वाहेति मन्त्रेण गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य, हस्त-

द्वयेनदीपशिखां स्पृष्ट्वा मन्त्रं पठेत्। ॐ घोरायघोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वप्राणोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा इति पठित्वा पश्चात्ततेजसात्मानं समर्प्य वाक्कायचित्तशोधनं कुर्यात्। ॐ हुं फट् स्वाहा इति मुखे। ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्त्वात्मरक्षां विधाय। ॐ इति मन्त्रेण चन्दनपुष्पपाणि कराभ्यां मर्द्दयित्वा तानि वामहस्ते समादायाघ्राय।

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसतिहिंसकाः।
मृत्यु-रोग-भय-क्रोधाः पतन्तु रिपुमस्तके॥५७॥

इति मन्त्रेण ऐशान्यां दिशिदूरतः क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेदिति दीपपूजनस्थापनम्। अथ तिरस्करणीपूजनम्। ततः स्वपुरोभागे सर्वविघ्ननिवाणार्थं तिरस्करणीं ध्यायेत्। यथा।

नीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयाति नीलांशुकाभरणमाल्यविलेपनम्।
निद्रापुटेन भुवनानि तिरोदधाना खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान्॥५८॥

एवं ध्यात्वा गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य अग्ने किञ्चिद्विन्दुधारया सन्तर्प्य मन्त्रद्वयं पठेत्। यथा। ॐ ह्रीँ क्लीँ ऐँ ग्लौँ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुश्श्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा। इति नमस्कुर्यात्। अथ पञ्चबलिदानविधिः। यन्त्रस्य पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरेषु त्रिकोणं वृत्तं च चतुरस्रं मण्डलं कृत्त्वा, ॐ ह्रीँ मण्डलाय नमः। इति मण्डलं सम्पूज्य, पूर्वे ॐ वां वटुकाय नम इति पाद्यादिभिः पूजयेत्। पक्वान्नपूर्णसलिलमीनमांसकारणचतुष्टयं दीपयुक्तं वा बलिपात्रेषुपूरयित्वा मीनमुद्रया किञ्चित्तीर्थं पात्रेदत्त्वा वामाङ्गुष्ठमनामाभ्यां पूर्वे उत्सृजेदनेन। ॐ ह्रीँ एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथकपिलजटा भार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशयनाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा। एष बलिर्वटुकाय नमः। तद्दक्षिणे पूर्ववन्मण्डलं सम्पूज्य योगिनीभ्यो नम इति योगिनीभ्यर्च्य, पूर्ववत्पात्रे द्रव्यं पूरयित्वा योनिमुद्रया तीर्थं पूरयित्वा दक्षाङ्गुष्ठमनामाभ्यां पूर्ववद्बलिंदद्यादनेन।

ॐ ऊर्ध्वव्रह्माण्डतोया दिविगगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीतादेव्यासदानःशुभविधिबलिभिः पातुवीरेन्द्रवन्द्या॥५९॥

ॐ ह्रीँ सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो नमः सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्रसर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा। एष बलिः योगिनीभ्यो नमः। पश्चिमे पूर्ववन्मण्डलं कृत्त्वा मण्डलं सम्पूज्य क्षं क्षेत्रपालाय नम

इति क्षेत्रपालमभ्यर्च्य पात्रे द्रव्यं पूरयित्वा अङ्कुशमुद्रया तीर्थं दत्त्वा दक्षाङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभ्यां पूर्ववद्बलिं दद्यादनेन। ॐ ह्रीं क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः भो स्थानक्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा। एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः। उत्तरे पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा मण्डलं सम्पूज्य, गं गणेशाय नम इति गणेशमभ्यर्च्य पात्रेद्रव्यं पूर्ववत्पूरयित्वा, दक्षाङ्गुष्ठतर्जन्यनामिकाभ्यां पूर्ववद्बलिं दद्यादनेन। ॐ ह्रीँ गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय नमः भो गणेश! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा। एष बलिर्गणपतये नमः। एवमेव राजराजेश्वरकालमृत्युञ्ज बलिं दद्यात्। अथ गणपतिसमीपे तथैव पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा ॐ ह्रीँ व्यापकमण्डलाय नम इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य साधारणबलिं सन्स्थाप्य, मूलेनाभिमन्त्र्य तत्र धूपदीपादिभिः सर्वभूतानि सम्पूज्य तत्त्वमुद्रया बलिं दद्यादनेन। ॐ ह्रीँ सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा। एष बलिः सर्वभूतेभ्यो नमः। इति पञ्चभूतबलिदानविधिः। अथ अन्तर्यागः। गुरुपात्रामृतेन गुरुपादुकां पूजयेत्। यथापूर्वं शिरसि त्रिकोणं कृत्वा ततो दक्षहस्ते तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां गन्धपुष्पं गृहीत्वा, वामहस्ते अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां शुद्धिखण्डं गृहीत्वा ऊर्ध्वरेखायाम्, ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दिव्यौघाः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। दक्षिणरेखायां ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सिद्धौघाः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वामरेखायां ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मानवौघाः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हसक्षमलवरयूं हसौँ हंसः श्रीअमुकानन्दनाथ(स्वगुरुं) श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः सकृद्वा। एवं गुरुपरमगुरुपरात्परगुरुपरमेष्ठिगुरून्स्तर्पयेत्। अथ भैरवपात्रामृतेन स्वहृदि देवं तर्पयेत्। यथा। ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ श्रीमन्महावटुकभैरवं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं पूजयामि तर्पयामि नम इति। अथ तत्त्वशुद्धिं कुर्याद्यथा भोगपात्रोपरि हस्तं दत्त्वा पठेत्। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्राणापानव्यानोदानसमानाः मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पृथिव्यप्तेजोवायवाकाशानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रकृत्यहंकारमनोबुद्धिश्रोत्राणि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्पर्शरूपरसगन्धाकाशानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वायवाकाशसलिलभूम्यात्मने मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणवाचांसि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं

स्वाहा। ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वाक्पाणिपादपायूपस्थानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा। इति षट् मन्त्रान् पठन् भोगपात्रामृतेन दक्षकरतलं सम्मार्ज्य, दक्षहस्ते त्रिकोणं लिखित्वा शुद्धिखण्डानि त्रिकोणस्थ दक्षोत्तरसम्मुखमध्येषु निधाय वामहस्ताङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभिरेकं खण्डं गृहीत्वा, मूलान्ते ह्रीँ श्रीँ आत्मतत्त्वेन स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा। अनेनाधःस्थां शुद्धिंस्वीकृत्य, पूर्ववच्छुद्धिखण्डं गृहीत्वा, मूलान्ते ह्रीँ श्रीँ विद्यातत्त्वेन सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा। अनेन दक्षस्थां शुद्धिं स्वीकृत्य, तृतीय खण्डं गृहीत्वा, मूलान्ते ह्रीँ श्रीँ शिवतत्त्वेन परमकारणदेहं शोधयामि स्वाहा। अनेनोत्तरस्थां शुद्धिं स्वीकृत्य, चतुर्थखण्डं गृहीत्वा मूलान्ते ह्रीँ श्रीँ सर्वतत्त्वेन तत्त्वत्रयाश्रयं महाकारणजीवं शोधयामि स्वाहा। अनेन मध्यस्थां स्वीकृत्य, वस्त्रेण हस्तौ विशोध्य हस्ताभ्यां सर्वाङ्गं सम्मार्जयेत्। ततो भोगपात्रं स्वीकुर्यात्। यथा मूलान्ते ॐ अर्द्धं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि योहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमेव हि मां जुहोमि स्वाहा। इत्यनेनात्मपात्रं गृह्णीयात् इतिशुद्धिः। अथ श्रीपात्रामृतेनात्मानं पूजोपकरणं चाभ्युक्ष्य सर्वं ब्रह्ममयं भावयेत्। अथ समर्थः अधिकारीचेत्तदा चतुर्वारं पात्रग्रहणं कार्यं, तत्र मन्त्राः। वामहस्ते पात्रं गृहीत्वा तदुपरि दक्षहस्तमाच्छाद्य पठेत्। ॐ ह्रीँ श्रीँ प्रकृत्यहंकारमनोबुद्धिश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणावाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुसलिलभूम्यात्मकः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अं अः शुद्धाशुद्धचतुर्विंशतितत्त्वसहितं प्रथमकूटमुच्चार्य आधारे अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथात्मके जाग्रद्दशाधिष्ठायिके इच्छाशक्त्यात्मकरुद्रात्मकशक्तिकामेश्वरीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। गौरीवल्लभसहिताय श्रीगौरीवल्लभसहितात्मने विश्वपुरुषाय विश्वपुरुषात्मने आर्णवमलशोधनार्थं आधारे अग्निमण्डले आत्मतत्त्वं स्थूलदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा। जुहोमिति गुरोराज्ञां गृहीत्वा तदा गुरुणा यस्यास्य परमामृतमिति वक्तव्यं प्रथमपात्रे न तु सर्वत्र। पुनः मुख्यकुम्भतीर्थे द्वितीयवारं पात्रे पूरयित्वा पठेत्। ॐ ह्रीँ श्रीँ मायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मकं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ, जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ शुद्धाशुद्धसप्ततत्त्वसहितं द्वितीयकूटमुच्चार्य, सूर्यचक्रे जालन्धरगिरिपीठे षष्ठिनाथात्मके स्वप्नदशाधिष्ठायिके ज्ञानशक्त्यात्मकविष्ण्वात्मकशक्तिश्रीवज्रेश्वरीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। श्रीलक्ष्मीनारायणसहिताय श्रीलक्ष्मीनारायणसहितात्मने कार्मिकमलशोधनार्थे हृदये सूर्यमण्डले विद्यातत्त्वे सूक्ष्मदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा। पुनस्तृतीयवारं पात्रमादाय, ॐ ह्रीँ श्रीँ शिवशक्तिसदाशिवेश्वर शुद्धविद्यात्मक यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ शुद्धाशुद्धपञ्चतत्त्वसहितं तृतीयकूटमुच्चार्य सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायिके क्रियाशक्त्यात्मकब्रह्मात्मकशक्तिश्रीभगमालिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। विद्याशङ्कर-

सहितात्मने मायिकमलशोधनार्थे चन्द्रमण्डले शिवतत्त्वेन कारणदेहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा। अथ चतुर्थवारं पात्रमादाय, ॐ ह्रीँ श्रीँ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यमायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषकृत्यहंकारमुखश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुतेज:सलिलभूम्यात्मक: ॐ आदिक्षान्त्तं क्षादि आन्त्तं पठेत्। शुद्धाशुद्धिषट्त्रिंशत्तत्त्वसहितमात्मविद्याशौण्डस्तथैव स्थूलसूक्ष्मकारणमहाकारणदेहं शोधयामि स्वाहा। समस्तमूलमुच्चार्य, ब्रह्मरन्ध्रचक्रे उड्यानपीठं श्रीचर्यानन्दनाथात्मिके सूर्यदशाधिष्ठायिके ब्रह्मात्मकशक्तिश्रीमहाभैरवसहिताय श्रीमद्बटुकभैरवाय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:। गौरीवल्लभलक्ष्मीनारायणविद्याशङ्करसहितात्मने विश्वतैजसप्राज्ञपुरुषाय विश्वतैजसपुरुषात्मने आर्णवकार्मिकमायिकमलशोधनार्थे सर्वतत्त्वेन महाकारणदेहं शोधयामि स्वाहा। स्वदेहपीठमन्त्रान्त्तं सम्पूज्य स्वहृदये पूर्वं देवं ध्यात्वा आसनाद्युपचारै: सावरणं देवमभ्यर्च्य मनसा धूपदीपनैवेद्यादीन् दत्त्वा मानसं वैश्वदेवं कृत्वा प्राणानायम्य ऋष्यादिकषडङ्गन्यासान् कृत्वाष्टोत्तरसहस्त्रं शतं वा मूलं सम्पूज्य, पुन: प्राणायामादि कृत्वा जपं निवेद्य स्वशिरसि हृदये मूलाधारे पादयो: सर्वाङ्गि च पञ्चपुष्पाञ्जलीन् त्रीन् पुष्पाञ्जलीन् वा दत्त्वा देवतायाश्चरणे आत्मानं समर्प्य बाह्यार्चनं कुर्यादिति। इत्यन्तर्याग:। अथ बहिर्याग:। अथ यन्त्रादि स्थापनम्।

जपस्थानार्चनं स्थानं मालापुस्तकदर्शनम्।
स्वभक्तेषु महेशानि! दर्शनं नैवकारयेत्॥६०॥
लिङ्गस्थां पूजयेद्देवीं पुस्तकस्थां तथैव च।
मण्डलस्थां महामायां यन्त्रस्थां प्रतिमासु च॥६१॥
जलस्थां वा शिलायां वा पूजयेत्परमेश्वरीम्।
वचनात्तद्यथोक्तं च योगिनीतन्त्रेनिर्णय:॥६२॥
शक्तिगन्धाष्टकेन तथा यन्त्रं विलिखेत् स्वयं।
साधक: स्वहितार्थाय श्रीभैरवमहात्मना॥६३॥
स्वयम्भूकुशुमं कुण्डगोलोत्थं रोचनागुरु।
काश्मीरमृगनाभिं च साह्यं च मलयोद्भवम्॥६४॥
एष गन्ध: समाख्यात: सर्वदा चण्डिकाप्रिय:।
सौवर्णेराजतेताम्रे पट्टेभूर्जेऽथवा भुवि॥६५॥
यन्त्रेणचेत्पूजा सर्वे देवताश्च प्रसीदति।
स्वपुरपीठे यन्त्रं विलिख्य देवं स्थापयेत्॥६६॥
भूप्रदेशे मनोरम्ये पुष्पसमोसुधूपिते।
गोमयेनाथ संलिप्ते पुष्पप्राकारशोभिते॥६७॥
मण्डपं विधिवत्तत्र आसनं तु समर्पयेत्।
लिखेद्यन्त्रं प्रयत्नेन लेखन्या हेमतारयो:॥६८॥

यन्त्रोद्धारमिमं देवि त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
तद्यन्त्रं च प्रवक्ष्यामि यन्त्रे देवं च पूजयेत्॥६९॥
मध्ये चाष्टदलं पद्मकर्णिकाकेसरोज्ज्वलाम्।
त्रिकोणं च ततः कृत्वा षट्कोणं च ततो न्यसेत्॥७०॥
वर्तुलं चाष्टपत्रं च चतुरस्त्रं त्रयात्मकम्।
एवं यन्त्रं च सम्पूज्य स्वस्थो भूत्वा जपेन्नरः॥७१॥
यन्त्रोद्धारमिमं देवि भैरवस्य महात्मनः।
पीठावरणदिकञ्च कुर्याद्दिवादि प्रीतये॥७२॥

ॐ ह्रीँ मण्डूकाय नमः आधारे। ॐ ह्रीँ कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने। ॐ ह्रीँ कच्छपाय नमः नाभौ। ॐ ह्रीँ आधारशक्तये नमः। ॐ ह्रीँ क्षीरसमुद्राय०, ॐ ह्रीँ रत्नद्वीपाय०, ॐ ह्रीँ कल्पवृक्षाय०, ॐ ह्रीँ मणिमण्डपाय०, ॐ ह्रीँ स्वर्णसिंहासनाय नमः हृदये, ॐ ह्रीँ धर्माय नमः दक्षांसे। ॐ ह्रीँ ज्ञानाय नमः वामांसे। ॐ ह्रीँ वैराग्राय नमः वामोरौ। ॐ ह्रीँ ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ। ॐ ह्रीँ अधर्माय नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ह्रीँ अज्ञानाय नमः वामपार्श्वे। ॐ ह्रीँ अवैराग्राय नमः नाभौ। ॐ ह्रीँ अनैश्वर्याय नमः उदरे। ॐ ह्रीँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः। ॐ ह्रीँ पद्माय नमः। ॐ ह्रीँ आनन्दकन्दाय०, ॐ ह्रीँ संविन्नालाय०, ॐ ह्रीँ सरोजाय०, ॐ ह्रीँ विकारमयकेशरेभ्यो०, ॐ ह्रीँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो०, ॐ ह्रीँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः। ॐ अग्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः। ॐ अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। ॐ चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। ॐ सत्वाय०, ॐ रजसे०, ॐ तमसे०, ॐ आत्मने०, ॐ अन्तरात्मने, ॐ परमात्मने०, ॐ ज्ञानात्मने०, ॐ मायातत्त्वाय०, ॐ कलातत्त्वाय०, ॐ विद्यातत्त्वाय०, ॐ परतत्त्वाय नमः। इति नवपीठशक्तीविन्यसेत्पूजयेच्च। ॐ तत्पुरुपाय०, ईशानाय०, अघोराय०, वामदेवाय०, सद्योजाताय०, वामायै०, ज्येष्ठायै०, श्रेष्ठायै०, रौद्रायै०, कालायै०, कलविकरणायै०, बलविकरणायै०, वलप्रमथनायै०, मनोन्मनायै नमः हृदये। अथावरणदेवतान्विन्यसेत् पूजयेच्च। तत्र हृदयदेवतायै०, शिरसि०, कवच०, नेत्र०, अस्त्र०। इति प्रथमावरणदेवताविन्यसेत्पूजयेच्च। अथ ललाटे। ॐ डाकिनीपुत्रेभ्यो०, शकिनी०, लाकिनी०, काकिनी०, साकिनी०, हाकिनी०, मालिनीपुत्रेभ्यो नमः। देवीपुत्रेभ्यो०, मातृ०, रुद्र०, उर्ध्वमुख०, अधोमुखपुत्रेभ्यो नमः। इति द्वितीयावरणदेवतान्विन्यसेत्पूजयेच्च। अथ कण्ठे। ब्रह्माणीपुत्रवटुकाय०, माहेश्वरीपुत्रवटुकाय०, कौमारीपुत्रवटुकाय०, वैष्णवीपुत्रवटुकाय०, इन्द्राणिपुत्रवटुकाय०, महालक्ष्मीपुत्रवटुकाय०, वाराहीपुत्रवटुकाय०, चामुण्डापुत्रवटुकाय नमः। इति तृतीयावरणन्विन्यसेत्पूजयेच्च। अथ हृदये। हेतुकाय०, त्रिपुरान्तकाय०, वेतालाय०, अग्निजिह्वाय०, कालान्तकाय०,

करालाय०, एयालाय०, त्रीमाय०, अचलाय०, हाटकेशाय नमः। इति चतुर्थावरणदेवतान्विन्यसेत्पूजयेच्च। अथ नाभौ। श्रीकण्ठाय०, अनन्तेशाय०, सूक्ष्मेशाय०, अमीशाय०, भारभूतीशाय०, अतिथीशाय०, स्थाण्वीशाय०, हरेशाय०, झिण्टिशाय०, भौतिकेशाय०, सद्योजातेशाय०, अनुग्रहेशाय०, क्रोधीशाय०, चण्डीशाय०, पञ्चान्तकेशाय०, शिवोत्तमेशाय०, एकरुद्रेशाय०, कूर्मेशाय०, एकनेत्रेशाय०, चतुराननेशाय०, अजेशाय०, सर्वेशाय०, सोमेशाय०, लाङ्गलीशाय०, दारुकेशाय०, अर्धनारीशाय०, उमाकान्तेशाय०, आषाढीशाय नमः। इति षष्ठावरणदेवतान्विन्यसेत्पूजयेच्च। अथ मूलाधारे। दण्डीशाय०, अत्रीशाय०, मीनेशाय०, मेघेशाय०, लोलोहितेशाय०, शिखिशाय०, छाल-गण्डेशाय०, द्विरण्डेशाय०, महाकालीशाय०, बालीशाय०, भुजङ्गेशाय०, पिनाकीशाय०, खड्गीशाय०, बकीशाय०, श्वेतेशाय०, भृग्वीशाय नमः। देवस्य वामभागे। नकुलीशाय०, शिवेशाय०, संवर्त्तकेशाय०, दिव्ययोगिन्यै०, अन्तरिक्षयोगिन्यै नमः, भूमिष्ठयोगिन्यै०, संवर्त्तयोगिन्यै नमः। इति सप्तमावरणदेवतान्विन्यसेत्पूजयेच्च। अथ पादयोः। ॐ वज्रसहितेन्द्राय०, शक्तिसहितायाग्नये०, दण्डसहितयमाय०, खड्गसहितनिर्ऋतये०, पाशसहितवरुणाय०, अङ्कुशसहितवायवे०, गदासहितसोमाय०, त्रिशूलसहितईशानाय०, कमलसहितब्रह्मणे०, चक्रसहितानन्ताय०, इत्यष्टमावरण-देवतान्विन्यसेत्पूजयेच्च। अथ पीठपूजा। ॐ आधारधारासनाय नमः। ॐ मण्डूकाय नमः। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधाम्बुधये०, ॐ रत्नद्वीपाय०, ॐ मणिमण्डपाय०, ॐ कल्पवृक्षाय०, ॐ रत्नवेदिकायै०, ॐ धर्माय०, ॐ ज्ञानाय०, ॐ वैराग्याय०, ॐ ऐश्वर्याय०, ॐ आनन्दकन्दाय०, ॐ संविन्नालाय०, ॐ सर्वतत्त्वाय०, ॐ पद्माय०, ॐ विकारमयकेशरेभ्यो०, ॐ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो०, ॐ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः। ॐ अग्निमण्डलाय०, ॐ अर्कमण्डलाय०, ॐ चन्द्रमण्डलाय०, ॐ सत्वाय०, ॐ रजसे०, ॐ तमसे०, ॐ आत्मने०, ॐ परमात्मने०, ॐ ज्ञानात्मने०, ॐ मायातत्त्वाय०, ॐ विद्यातत्त्वाय०, ॐ परतत्त्वाय०, वामायै०, ज्येष्ठायै०, रौद्रायै०, कालायै०, कलविकरणायै०, बलविकरणायै०, बलप्रमथनायै०, सर्वभूतदमन्यै०, मध्ये मनोन्मनायै नमः। ॐ नमोभगवतेसकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्तयोगपीठात्मने नमः। एष गन्धपुष्पाभ्यां पीठं सम्पूजयेत्। अथ स्वहृदयस्थं देवं यन्त्रे स्थापयेत्तद्यथा। यन्त्रस्थासनोपरि मूलेन मूर्तिं विचिन्त्य, आत्मानं कामकलारूपं विभाव्य, कूर्ममुद्रया पुष्पं गृहीत्वा वामनासापुटेन वायुबीजेन मूलाधारात्कुण्डलिननीं ब्रह्मरन्ध्रान्तं नीत्वा हृदये समानीय मूले मूर्त्तिं कल्पयेत्। कुण्डलिनीं मूर्त्तिसंयोगं विभाव्यतत्मूर्तिं दक्षनासया पुष्पमारोप्य तत्पुष्पं चक्रे निधापयेत्। तदुक्तं कुमारीकल्पे। ततो हृदयपद्मान्ते स्फुरन्तीं विद्युदाकृतिम्।

सुषुम्नावर्त्मना नीत्वा शिवस्थाने महेश्वरी।
ततो वै हृदयासन्ने पुष्पान्तरे समुन्नयेत्॥७३॥

यन्त्रमध्ये आवाहयेदनेन।

देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावदेव इहावह॥७४॥

ॐ सद्योजातमिति आवाहनादिमुद्रां प्रदर्श्यावाहयेत्। इहागच्छ इहागच्छ इति आवाहनी भवेति आवाह्य वामदेवायेति मन्त्रेण मूलेन स्थापनीमुद्रया स्थापना भवेति संस्थाप्य, सन्निधापनमुद्रया इह सन्निधेहीति सन्निधानीभवेति सन्निधाप्य, सन्निरोधनमुद्रया इह सन्निरुद्ध सन्निरुद्ध इति सन्निरोधिनी भवेति सन्निरोध्य, सम्मुखीकरणमुद्रया सम्मुखीभव सम्मुखीभव इति सम्मुखीकृत्य, षडङ्गेन सकलीकृत्य हुमित्यवङ्गुण्ठ्य छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा, वमिति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य महामुद्रया परमीकृत्य लेलिहामुद्रया जीवन्यासं विधाय खड्गमुण्डवराभययोनिमुद्रां प्रदर्शयेत्। स्वागतं कुशलमिदमासनमास्यताम्। इत्यभिलाप्य, यन्त्रे प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सोऽहं हंसः वटुकभैरवाय सपीठयन्त्रसहिताय सपरिवाराय प्राणा इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सोऽहं हंसः वटुकभैरवाय सपीठयन्त्रसहिताय सपरिवाराय जीव इह स्थितः। पुनः ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सोऽहं हंसः वटुकभैरवाय सपीठयन्त्रसहिताय सपरिवाराय सर्वेन्द्रियाणि-वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणापाणिपादपायुपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। यः प्रणतो निमिषतो महित्वे विधम्। इति मन्त्रं त्रिवारं पठेत्। मनोजूतिर्जुषतां० सुप्रतिष्ठितां प्रतिष्ठा। इति प्राणप्रतिष्ठा। अथ ध्यानम्।

शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्त्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥७५॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम्॥७६॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥७७॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥७८॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।
ध्यात्वा जपेत्सुसंहृष्टः सर्वान्कामानवाप्नुयात्॥७९॥

वटुकभैरवसात्त्विकध्यानम्

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,

दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी नूपुराद्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥८०॥

वटुकभैरवराजसध्यानम्

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥८१॥

वटुकभैरवतामसध्यानम्

ध्यायेनीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरंमुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्॥८२॥

यथा कामनया ध्यात्वा। ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः एवं सर्वत्र आवाहनं समर्पयामि। मूलेनासनं स०, मूलेन सामान्यार्घोदकेन पादयोः पाद्यं स०, मू० विशेषार्घ स०, मू० एष मधुपर्को नम इति मुखे दत्त्वा, ततो मू० आचमनं स०, मू० आचमनं स०, मू० शङ्खोदकेन स्नानं स०, पयः पृथिव्यामिति मू० पयः स्नानं स०, दधिक्रा० मू० दधिस्नानं स०, घृतं०, घृतस्नानं स०, मधुव्वाता० मू० मधुस्नानं स०, अपांरस० मू० शर्करास्नानं स०, शुद्धवालः मू० साम्बुकलशाच्छुद्धोदकस्नानं स०, मू० गङ्गादितीर्थोदकेन स्नानं स०, ततः सक्षेपतः गन्धपुष्पधूपनैवेद्यादि दत्त्वा, निर्माल्यं विसृज्य अच्छिन्नधारया पुरुषसूक्तेन रुद्रसूक्तेन वा अभिषेकं कुर्यात्। मू० युवासु० वस्त्रं स०, मू० आभूषणं स०, यज्ञोपवीतं स०, गन्धद्वारां० मू० गन्धं स०, अक्षन्नमी० मू० अक्षतान् स०, यत्पुरुषेति मू० पुष्पं स०, एवं पुष्पान्ते पूजयित्वा तत आवरणपूजां कृत्वा, धूपदीपादिपूजां कुर्यात्। अथावरणपूजा। पुष्पाञ्जलिसमादाय।

सञ्चिन्मय परोदेव परामृतरसप्रिय।
अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे॥८३॥

इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं भैरवोपरिदत्त्वा आज्ञां गृहीत्वा भैरवमेव परिवाररूपेण परिणतं ध्यात्वा, परिवारदेवतां ध्यायेत्। अत्र सर्वत्र पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य पूजयेत्। ततो दक्षहस्ते तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा वामहस्ते अनामिकाङ्गुष्ठभ्यां शुद्धमीनखण्डं गृहीत्वा मध्ये त्रिकोणे देवस्याग्रे ॐ ह्रः

वः ईशानाय अङ्गुष्ठाभ्यां अङ्गुष्ठश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वौँ तत्पुरुषाय तर्जनी० तर्जनीश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रैँ वैँ अघोराय मध्यमा० मध्यमाश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रूँ वूँ वामदेवाय अनामिका० अनामिकाश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रीँ वीँ सद्योजाताय कनिष्ठिका० कनिष्ठाश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्राँ वाँ पञ्चवक्त्राय महादेवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां करतलकरपृष्ठश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रौँ वौँ ईशानाय ऊर्ध्ववक्त्रमुखाय नमः ईशानश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रैँ वैँ तत्पुरुषाय उत्तरवक्त्रमुखाय नमः तत्पुरुषश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रूँ वूँ अघोराय दक्षिणवक्त्रमुखाय नमः अघोरश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रीँ वीँ वामदेवपूर्ववक्त्रमुखाय नमः वामदेवश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्राँ वाँ सद्योजाताय पश्चिमवक्त्रमुखाय नमः सद्योजातश्रीपादुकां पू० त०। एवं षडङ्गम्। ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रूँ वूँ शिखायै वषट् शिखाश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रैँ वैँ कवचाय हुं कवचश्रीपादुकां पू० त०।ॐ ह्रौँ वौँ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रः वः पाताले पातालश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रौँ वौँ ऊर्ध्वे ऊर्ध्वश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रैँ वैँ पूर्वे पूर्वश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रूँ वूँ दक्षिणे दक्षिणश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ वीँ पश्चिमे पश्चिमश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्राँ वाँ उत्तरे उत्तरश्रीपादुकां पू० त०, ॐ हीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ वटुकाय श्रीवटुकश्रीपादुकां पू० त०, ॐ पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥८४॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा विशेषार्घ्याद्विन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु। ततः स्तम्भन, मत्स्य, गोक्षुर, योनिमुद्रेति पञ्चमुद्राः प्रदर्श्य नमस्कुर्यात्। इति प्रथमावरणम्। अथ द्वितीयाव्वरणम्। कर्णिकाद्वहिः अष्टदले पूर्वादिक्रमेण। ॐ ह्रीँ असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरवश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ कपालभैरवाय नमः कपालभैरवश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ संहारभैरवाय नमः संहारभैरवश्रीपादुकां पू० त०। त्रिकोणेषु सत्त्वरजस्तमांसि प्रादक्षिण्येन केचित्पूजयन्ति। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति द्वितीयावरणम्। अथ तृतीयावरणम्। त्रिकोणद्वहिः षट्कोणे। ॐ ह्रीँ भूतनाथाय नमः भूतनाथश्रीपादुकां

पू० त०, ॐ ह्रीँ आदिनाथाय नमः आदिनाथश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ आनन्दनाथाय नमः आनन्दनाथश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ सिद्धसाबरनाथाय नमः सिद्धसाबरनाथश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ सहतानन्दनाथाय नमः सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पू० त०, ॐ ह्रीँ निःसीमानन्दनाथाय नमः निःसीमानन्दनाथश्रीपादुकां पू० त०, अथवा षट्कोणे आग्नेयादिक्रमेण। ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रूँ वूँ शिखायै वषट् शिखाश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रैँ वैँ कवचाय हुं कवचश्रीपादुकां पू० त०।ॐ ह्रौँ वौँ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रश्रीपादुकां पू० त०। ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपादुकां पू० त०। प्रकारान्तरं शारदोक्तमिति। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति तृतीयावरणम्। अथ चतुर्थावरणम्। वर्त्तुले पूर्वादिक्रमेण। ॐ ह्रीँ डाकिनीपुत्रेभ्यो नमः डाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ राकिनीपुत्रेभ्यो नमः राकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः लाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः लाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ काकिनीपुत्रेभ्यो नमः काकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः शकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः हाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ याकिनीपुत्रेभ्यो नमः याकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ देवीपुत्रेभ्यो नमः देवीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इत्यष्टदिक्षु सम्पूज्य ततो देवस्य दक्षभागे। ॐ ह्रीँ उमापुत्रेभ्यो नमः उमापुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ रुद्रपुत्रेभ्यो नमः रुद्रपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ मातृपुत्रेभ्यो नमः मातृपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ततः पूर्वेशानयोर्मध्ये। ॐ ह्रीँ ऊर्ध्वमुखीपुत्रेभ्यो नमः ऊर्ध्वमुखीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये। ॐ ह्रीँ अधोमुखीपुत्रेभ्यो नमः अधोमुखीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति चतुर्थावरणम्। अथ पञ्चमावरणम्। वर्त्तुलाद्बहिः अष्टदलाग्रे पूर्वादि अग्न्यन्तं क्रमेण। पूर्वे ॐ ह्रीँ ब्रह्माणिपुत्रेभ्योवटुकाय नमः ब्रह्माणिपुत्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशान्ये ॐ ह्रीँ माहेश्वरीपुत्रेभ्योवटुकाय नमः माहेश्वरीपुत्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। उत्तरे ॐ ह्रीँ वैष्णवीपुत्रेभ्योवटुकाय नमः वैष्णवीपुत्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। वायव्ये ॐ ह्रीँ कौमारीपुत्रेभ्योवटुकाय नमः कौमारीपुत्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमे ॐ ह्रीँ इन्द्राणिपुत्रेभ्योवटुकाय नमः इन्द्राणिपुत्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

नैर्ऋत्ये ॐ ह्रीँ महालक्ष्मीपुत्रेभ्योवटुकाय नमः महालक्ष्मीपुत्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणे ॐ ह्रीँ वाराहीपुत्रेभ्योवटुकाय नमः वाराहीपुत्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। आग्नेये ॐ ह्रीँ चामुण्डापुत्रेभ्योवटुकाय नमः चामुण्डापुत्रवटुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति पञ्चमावरणम्। अथ षष्ठावरणम्। अष्टदलाद्बहिः चतुरस्राभ्यन्तरे पूर्वादिप्रादक्षिण्येन दशदिक्षु हेतुकादीन् दशवटुकान् यजेत्। तथा हि ॐ ह्रीँ हेतुकाय नमः हेतुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वेतालाय नमः वेतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ अग्निजिह्वाय नमः अग्निजिह्वाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ कालान्तकाय नमः कालान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ करालाय नमः करालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ एकपादाय नमः एकपादश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ भीमरूपायय नमः भीमरूपश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ ह्रीँ अचलाय नमः अचलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। नैर्ऋत्यवारुणयोर्मध्ये ॐ ह्रीँ हाटकेशाय नमः हाटकेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति षष्ठावरणम्। अथ सप्तमावरणम्। तत्र त्रिरेखात्मकभूपुरस्य प्रथमरेखायां दिग्विदिगन्तरालेषु षोडशस्थानेषु श्रीकण्ठादिमहासेनान्तान्यजेत्। तत्र दिक्षु पूर्वे ॐ ह्रीँ श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणे ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तेशविरजाभ्यां नमः श्रीअनन्तेशविरजाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमे ॐ ह्रीँ श्रीसूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः श्रीसूक्ष्मेशशाल्मलीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। उत्तरे ॐ ह्रीँ श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमः श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। आग्नेयां ॐ ह्रीँ श्रीअमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः श्रीअमरेशवर्तुलाक्षीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। निर्ऋते ॐ ह्रीँ श्रीअर्धीशघोणाभ्यां नमः श्रीअर्धीशघोणाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। वायव्ये ॐ ह्रीँ श्रीभारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां नमः श्रीभारभूतेशदीर्घमुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशान्ये ॐ ह्रीँ श्रीअतिथीशगोमुखीभ्यां नमः श्रीअतिथीशगोमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पूर्वाग्निमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीहरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः श्रीहरेशकुण्डोदरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमवायुमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। उत्तरेशानमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीभौतिकेशविकृतमुखीभ्यां

नमः श्रीभौतिकेशविकृतमुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। अग्निदक्षिणमध्ये ॐ ह्रौँ श्रीसद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः श्रीसद्योजातेशज्वालामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। निर्ऋतवरुणयोर्मध्ये ॐ ह्रौँ श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखीभ्यां नमः श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। वायुसोममध्ये ॐ ह्रौँ श्रीअक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः श्रीअक्रूरेशश्रीमुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशानपूर्वयोर्मध्ये ॐ ह्रौँ श्रीमहासेनविद्यामुखीभ्यां नमः श्रीमहासेनविद्यामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति सप्तमावरणम्। अथ अष्टमावरणम्। भूपुरस्य द्वितीयरेखायां दिग्विदिगन्तरालेषु षोडशस्थानेषु क्रोधीश्वराद्यषोडशान्तान्पूजयेत्। तत्र पूर्वे ॐ ह्रौँ श्रीक्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः श्रीक्रोधीशमहाकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणे ॐ ह्रौँ श्रीचण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः श्रीचण्डेशसरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमे ॐ ह्रौँ श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। उत्तरे ॐ ह्रौँ श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। आग्नेयां ॐ ह्रौँ श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। नैर्ऋत्ये ॐ ह्रौँ श्रीकूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः श्रीकूर्मेशात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। वायव्ये ॐ ह्रौँ श्रीएकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः श्रीएकनेत्रेशभूतमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशान्ये ॐ ह्रौँ श्रीचतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः श्रीचतुराननेशलम्बोदरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पूर्वाग्निमध्ये ॐ ह्रौँ श्रीअजेशद्रावणीभ्यां नमः श्रीअजेशद्रावणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये ॐ ह्रौँ श्रीसर्वेशनागरीभ्यां नमः श्रीसर्वेशनागरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमवायुमध्ये ॐ ह्रौँ श्रीसोमेशखेचरीभ्यां नमः श्रीसोमेशखेचरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। उत्तरेशानमध्ये ॐ ह्रौँ श्रीलाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः श्रीलाङ्गलीशमञ्जरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। अग्नियाम्यमध्ये ॐ ह्रौँ श्रीदारकेशरूपिणीभ्यां नमः श्रीदारकेशरूपिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। नैर्ऋत्यपश्चिममध्ये ॐ ह्रौँ श्रीअर्द्धनारीशवीरिणीभ्यां नमः श्रीअर्द्धनारीशवीरिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। वायुसोममध्ये ॐ ह्रौँ श्रीउमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः श्रीउमाकान्तेशकाकोदरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशानपूर्वमध्ये ॐ ह्रौँ श्रीआषाढीशपूतनाभ्यां नमः श्रीआषाढीशपूतनाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति अष्टमावरणम्। अथ नवमावरणम्। भूपुरस्य तृतीयरेखायां दिग्विदिगन्तरालेषु षोडशस्थानेषु दण्डीश्वरादि-

भृग्वीशान्तान्पूजयेत्। पूर्वे ॐ ह्रीँ श्रीचण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः श्रीचण्डीशभद्रकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणे ॐ ह्रीँ श्रीआन्त्रीशयोगिनीभ्यां नमः श्रीआन्त्रीशयोगिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमे ॐ ह्रीँ श्रीमीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः श्रीमीनेशशङ्खिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। उत्तरे ॐ ह्रीँ श्रीमेषेशतर्जनीभ्यां नमः श्रीमेषेशतर्जनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। आग्नेयां ॐ ह्रीँ श्रीलोहितेशकालरात्रीभ्यां नमः श्रीलोहितेशकालरात्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। नैर्ऋत्ये ॐ ह्रीँ श्रीशिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः श्रीशिखीशकुब्जिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। वायव्ये ॐ ह्रीँ श्रीछागलण्डेशकपर्दिभ्यां नमः श्रीछागलण्डेशकपर्दि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशान्ये ॐ ह्रीँ श्रीद्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः श्रीद्विरण्डेशवज्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पूर्वाग्निमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीमहाकालेशजयाभ्यां नमः श्रीमहाकालेशजया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीबालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः श्रीबालीशसुमुखेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमवायव्यमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीभुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः श्रीभुजङ्गेशरेवती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। उत्तरेशानयोर्मध्ये ॐ ह्रीँ श्रीपिनाकीशमाधवीभ्यां नमः श्रीपिनाकीशमाधवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। आग्नेश्यदक्षिणमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीखड्गीशवारुणीभ्यां नमः श्रीखड्गीशवारुणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। नैर्ऋत्यपश्चिममध्ये ॐ ह्रीँ श्रीकेशवेशवायवीभ्यां नमः श्रीकेशवेशवायवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। वायुसोममध्ये ॐ ह्रीँ श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां नमः श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशानपूर्वमध्ये ॐ ह्रीँ श्रीभृग्वीशसहजाभ्यां नमः श्रीभृग्वीशसहजा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ततो भूपुराद्बहिः दक्षिणभागे नकुलिशादित्रयं पूजयेत्। ॐ ह्रीँ प्राणात्माभ्यांश्रीनकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः श्रीनकुलीशलक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ शक्त्यात्मभ्यांश्रीशिवेशव्यापिनीभ्यां नमः श्रीशिवेशव्यापिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ क्रोधात्मभ्यांश्रीसंवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः श्रीसंवर्तकेशमहामायाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशानभागे ॐ ह्रीँ दिव्ययोगिनीश्वरेभ्यो नमः दिव्ययोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। आग्नेयकोणे ॐ ह्रीँ अन्तरिक्षयोगिनीश्वरेभ्यो नमः अन्तरिक्षस्थयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। नैर्ऋत्यकोणे ॐ ह्रीँ भूमिस्थयोगिनीश्वरेभ्यो नमः भूमिस्थयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पूर्वे ॐ ह्रीँ गणपतये नमः गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणे ॐ ह्रीँ भैरवाय नमः भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमे ॐ ह्रीँ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। उत्तरे ॐ ह्रीँ दुर्गायै नमः दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति

नवमावरणम्। अथ दशमावरणम्। भूपुराद्बहिः पूर्वादिदशदिक्षु इन्द्रादीन् पूजयेत्। ॐ ह्रौँ इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ अग्नये नमः अग्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ यमाय नमः यमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वरुणाय नमः वरुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वायवे नमः वायुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ सोमाय नमः सोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ ईशानाय नमः ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ अनन्ताय नमः अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति दशमावरणम्। अथ एकादशावरणम्। पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदिक्पालसमीपे स्वस्वायुधान् पूजयेत्। तद्यथा ॐ ह्रौँ वज्राय नमः वज्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ शक्तये नमः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ दण्डाय नमः दण्डश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ खड्गाय नमः खड्गश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ पाशाय नमः पाशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ अङ्कुशाय नमः अङ्कुशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ गदायै नमः गदाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ त्रिशूलाय नमः त्रिशूलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ पद्माय नमः पद्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ चक्राय नमः चक्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पुनः मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा। अभिष्ट सिद्धिं० इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पूर्ववन्मुद्राः प्रदर्शयेदिति एकादशावरणम्। इत्यावरणपूजा। अथ गन्धादिपूजनम्। मूलयुक्तं सर्वत्र।

परमानन्दसौभाग्य परिपूर्णदिगम्बरम्।
गृहाण परमं गन्धं कृपया भैरवेश्वर॥८५॥

श्रीभैरवाय गन्धं समर्पयामि कनिष्ठिकाङ्गुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य।

तुरीयवनसम्भूतं नानापुष्पमनोहरम्।
अनन्तसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम्॥८६॥

श्रीभैरवाय पुष्पं समर्पयामि अधोमुखतर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन पुष्पमुद्रां प्रदर्श्य। मू० फडिति धूपपात्रं सम्प्रोक्ष्य नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य पुरतो निधाय रमिति बीजेन उपर्य्यग्निं सन्स्थाप्य तदुपरि दशाङ्गं दत्त्वा धूपं स०। तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य वामभागे घन्टां निधाय अस्त्रेण प्रोक्ष्य धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य गन्धादिभिः सम्पूज्य। ॐ जयध्वनिमातेति घण्टामन्त्रेणाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य वामेन तां वादयेत्। मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैर्धूपं धृत्वा गायत्रीं मूलमन्त्रं च पठन् देवस्य वामभागे धूपपात्रं

स्थापयेत्। ततो दीपपात्रं स्थापयेत्। ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य तत्र कर्पूरवर्तिं निक्षिप्य ह्रीमिति प्रज्वाल्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मूलमन्त्रवेदोक्तमन्त्रेण दीपं स०। शङ्खजलमुत्सृत्य-मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य पूर्ववद्घण्टां वादयन्नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं प्रदर्शयन्। देवस्य दक्षिणभागे निधापयेत्। ततो नैवेद्यम्। देवस्याग्रे जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णरौप्यादिनिर्मितं भोजनपात्रंसन्स्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारम् अन्नं सन्स्थाप्य। ॐ ह्रीँ नम इति मन्त्रेणार्घ्यजलेन सम्प्रोक्ष्य मूलेन सम्वीक्ष्य अधोमुख-दक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय यमिति वायुबीजं षोडशधा सञ्जप्य वायुना तद्वतदोषान्संशोष्य दक्षिणकरतले अग्निबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा प्रदर्श्य रमिति षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्पन्नाग्निनां तद्दोषं दग्ध्वा वामकरतले अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य वमिति षोडशवारं जपित्वा तत्दुत्थामृतधारयाप्लावितं विभाव्य हुमित्यवकुण्ठ्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधा अभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा मूलान्ते।

तत्पात्रे सद्धविः सौख्यं विविधनेकभक्षणम्।
निवेदयामि देवेश सानुगाय जुषाण तत्॥८७॥

साङ्गाय सपरिवाराय श्रीमद्वटुकभैरवाय नैवेद्यं समर्पयामि इति जलमुत्सृत्य। ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहेति देवस्य दक्षहस्ते जलं दत्त्वा देवेन तज्जलंप्राशितमितिभावयन् वामहस्तेन ग्रासमुद्रां प्रदर्शयन्दक्षिणहस्तेन प्राणादि पञ्चमुद्राः प्रदर्शयेत् यथा अङ्गुष्ठ-कनिष्ठानामाभिः ॐ प्राणाय स्वाहा। अङ्गुष्ठतर्जनीमध्यमाभिः ॐ अपानाय स्वाहा। अङ्गुष्ठमध्यमानामाभिः ॐ व्यानाय स्वाहा। अङ्गुष्ठतर्जनीमध्यमानामाभिः ॐ उदानाय स्वाहा। सर्वाङ्गुलिभिः ॐ समानाय स्वाहा। एवं पञ्चमुद्राः प्रदर्श्य देवं भुक्तवन्तं विभाव्य।

नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम्।
परमानन्दपूर्णत्वं गृहाण जलमुत्तमम्॥८८॥

सुवर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादि सुवासितं जलं निवेद्य अस्त्रमन्त्रेण जवानिकारूपेण भोजनस्थानं सवेष्टयेत्।

ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सोपविष्टः,
समन्तात्सिञ्जद्वालव्यजननिकरैर्वीज्यमानः सखीभिः।
नर्मक्रीडाप्रहसनपरो हासयन्पक्तिभोक्तॄन्,
भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान्भैरवेशः॥८९॥

इति देवं ध्यात्वा, मूलमन्त्रं यथाशक्ति जपित्वावश्यपूजाङ्गत्वेन नित्यहोमं कुर्यात्। अथ नित्यहोमः। स्वदक्षिणभागे स्वदक्षिणहस्तप्रमाणं चतुरङ्गुलमुन्नतं चतुरस्रं स्थण्डिलं

कृत्वा मूलेन वीक्ष्य फडिति सम्प्रोक्ष्य तेनैव हुमिति दर्भैः सन्ताड्य कवचेन मुष्टिनासिञ्च्य मूलेन होमद्रव्यं परिषिच्य मूलेनाग्निं समानीय क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यामेकमङ्गारं परित्यज्य मूलेनाग्निं स्थन्स्थाप्य तत्र भैरवं ध्यात्वा गन्धाद्यैः सम्पूज्य आज्येन व्याहृतिहोमं कृत्वा मूलेन पञ्चविंशतिसङ्ख्या आज्येन तिलेनान्नेन वा होमं कुर्यात् यथा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुर्वः स्वः स्वाहा। ॐ ह्राँ हृदयाय नमः स्वाहा। ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखयै वषट् स्वाहा। ॐ कवचाय हुं स्वाहा। ॐ ह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् स्वाहा। एवं हुत्वा गन्धाद्यैः सम्पूज्य देवतापीठे मूर्त्तौ संयोज्य वह्निं विसृजेत्।

भो वह्ने महाशक्ते सर्वकामप्रसादक!।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्॥९०॥

ततो योनिमुद्रया प्रणमेदिति नित्यहोमविधिः। अथ बलिदानम्। देवस्याग्नेय्यां चतुरस्रं वृत्तं त्रिकोणं मण्डलं कृत्वा तत्र सिद्धान्नं सव्यञ्जनोदकसहितं पात्रं गृहीत्वा तत्र सर्वभूतानि ध्यात्वा गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य।

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
योगिभ्योप्युग्ररूपाश्च गणानामधिपाश्च ये॥९१॥
भूचराखेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः।
सर्वे ते प्रीतमनसो भूत्वा गृह्णन्त्विमं बलिम्॥९२॥

इति वामकराङ्गुलिभिरर्घ्यं जलेनात्सृज्य पुष्पाञ्जलिमादाय।

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले,
बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे,
क्षमन्तु तान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः॥९३॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा प्रणम्य विसर्जनमुद्रया विसृज्य स्वात्मानं शुद्धजलेन सम्प्रोक्षयेदिति बलिदानम्। ततस्तृप्तं देवं विभाव्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य स्वर्णादिपात्रस्थजलेनोत्तरापोशनम् दद्यादनेन। ॐ अमृतोपिधानमसि स्वाहेति दक्षहस्ते जलं दत्त्वा, ततो नैवेद्यपात्रं नैर्ऋत्यां स्थाप्य गतसारं नैवेद्यं किञ्चिदुदृत्य, ॐ चण्डेश्वर्य्यै नमः इति देवस्योच्छिष्टभागं ईशान्यां दिशि दद्यात्। ततोऽस्त्रमन्त्रेण तत्स्थानं प्रोक्ष्य प्रोक्षणादिभिः संशोध्य, हस्तमुखप्रक्षालनार्थं जलं करोद्धर्त्तनार्थं सुगन्धि चूर्णं कृत्त्वा, गण्डूषां कारयित्वा कर्पूरैकदलैर्दन्तधावनं परिकल्प्य पुनर्गण्डूषार्थं जलं दत्त्वा देवस्य चरणक्षालनं कृत्त्वा मूलेन शुद्धाचमनं दद्यात्। ततस्ताम्बूलम्।

पूगीफलं महदिव्यं नागवल्लिदलान्वितम्।
कर्पूरादिसमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥९४॥

मू० ताम्बूलं स०। मू० दक्षिणां स०। मू० छत्रचामरादीन् स०। तत आरार्त्तिकं कुर्यात्। शालिगोधूमपिष्टेन सगुडजीरकेण च त्रिकोणाकारं मण्डूकरूपं वा नवदीपान्कृत्वा घृतेन पाचयित्वा स्वर्णादिपात्रे चन्दनेनष्टदलं त्रिकोणं मण्डलं कृत्वा मूलेन सम्प्रोक्ष्य अष्टदले अष्टदीपान् त्रिकोणे मध्ये एकं दीपमेवं नव दीपान् सन्स्थाप्य घृतेनापूर्य कर्पूरादिवर्ति निक्षिप्य मायाबीजेन प्रज्वाल्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मूलेनारार्त्तिकं सम्पूज्य मूलेन देवोपरि नेत्रादिपादपर्यन्तं नववारं त्रिवारं वा भ्रामयेद् घण्टां वादयेत्। तत्र मन्त्राः।

अन्तस्तेजोबहिस्तेज एकीकृत्य निरन्तरम्।
त्रिधादेवोपरिभ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत्॥९५॥
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतिस्त्वमार्त्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥९६॥

अग्निर्देवता० मू० नीराजनं स०। यज्ञेनयज्ञ० मू० पुष्पाञ्जलिं स०। मन्त्रपुष्पाञ्जलिकरणान्तरं सुवासिन्यादिपूजनम्। तथा च जपस्तोत्रपाठादि कृत्वा पश्चात्क्षमापनादिकान्तं कार्यमित्येवमपि पक्षः। अथ क्षमापनम्।

ज्ञानतोऽज्ञानतोऽवाथ यन्मया क्रियते शिव।
मम कृत्यामिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे॥९७॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥९८॥
अपराधोभवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
कोऽपरः सहता लोके केवलं स्वामिनं विना॥९९॥
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवालम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणः शिव॥१००॥

इति बद्धाञ्जलिपूर्वकं क्षमाप्य, अर्घ्योदकेन चुलुकमादाय, ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकरतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यांमुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मांसं मदीयं च सकलं श्रीमद्वटुकभैरवदेवतायै समर्पयामि नमः। ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु इति मन्त्रेण आत्मानं समर्प्य, ततः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्।

यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण अनुकम्पया॥१०१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर॥१०२॥
कर्मणामनसावाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम।
अन्तश्चरेण भूतानि इष्टस्त्वं परमेश्वर॥१०३॥

प्रातर्योनिसहस्त्रेषु सहस्त्रेषु व्रजाम्यहम्।
तेषु चेष्टाचलाभक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि॥१०४॥
देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत्।
देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि॥१०५॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
क्षन्तुमर्हसि देवेश कस्य न स्खलितं मनः॥१०६॥
क्षमस्व देवदेवेश गम्यते भुवनेश्वर।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे॥१०७॥

इति संप्रार्थ्य योनिमुद्रया प्रणमेत्। ततः शङ्खमुद्धृत्य देवोपरि भ्रामयित्वा।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम॥१०८॥

इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किञ्चिज्जलं दत्त्वा, प्राग्दर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शङ्खं यथा स्थाने निवेश्य तज्जलं किञ्चिद्व तद्धस्ते दत्त्वा, तस्मिन्पूजावशिष्टं किञ्चिद्गन्ध-माल्याग्रमूलमुच्चार्य तेन जलेनात्मानं प्रोक्ष्य अन्यानपि सामयिकान् तेनैव प्रोक्षयेत्। इति सपीठयन्त्रोपरि वा मूर्त्तौ भैरवपूजा। ततः स्ववामभागे सुवासिनीपूजां कुमारिकापूजां वटुकपूजां कुर्यात्। स्वदक्षिणभागे चतुष्टयगुरुपादुकां पूर्ववत्पूजयेत्। ततो जपमालामानीय कुचित्पात्रे वामहस्तेन आच्छाद्य मूलेनार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य।

माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मात्त्वं सिद्धिदा भव॥१०९॥

इत्यनेन गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य।

अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा।
जपकाले तु सिद्ध्यर्थं प्रसीद ममसिद्धये॥११०॥

इति मन्त्रेण दक्षिणहस्तेनादाय शिरसि गुरुं कण्ठे मन्त्रं पीतवर्णं हृदि स्वेष्टदेवता ध्यायन्हृदयसमीपे मालामानीयदक्षिणहस्तमध्यमाङ्गुलिमध्यपर्वणि सन्स्थाप्य, ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो यथाशक्ति मूलमन्त्रं जपेत्। जपान्ते।

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे॥१११॥

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। इत्यनेन मन्त्रेण मालां स्वशिरसि सन्थाप्य प्राणायामत्रयं ऋष्यादिकरषडङ्गं विधाय देवस्य वामहस्ते शक्तिं दक्षिणहस्ते देवं अर्घ्योदकेन गुह्येति-मन्त्रेण जपं समर्प्य देवाय पुष्पाञ्जलिं निक्षिप्य ततो ह्रीँ सिद्ध्यै नम इति पञ्चाक्षरेण पुनर्मालां सम्पूज्य यथास्थाने स्थापयेत्। ततः कवचस्तोत्रसहस्त्रनामादिकं पठित्वा यथाविधि पश्चात्पात्रासादनं कुर्यात्। अथ देवविसर्जनं स्वहृदयमध्ये स्थापनम्। एवं

स्तोत्रपाठकरणानन्तरं परिवारगणाः। देवस्य देहे विलीना इति विभाव्य परं देवरूपमात्मानं ध्यात्वा मूलविद्यान्ते श्रीमद्बटुकभैरवक्षमस्वेति तालत्रयेण देवं प्रतिबोध्य तेजोमयं विभाव्य।

गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर।
यद्धि ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम्॥११२॥

इत्युच्चार्य तेजोरूपं तं संहारमुद्रया निर्माल्य पुष्पेण तत्तेजः समुद्धृत्य आघ्राय पूरकयोगेन शिरसि सहस्रदलकमलं प्रापयेत्तत्र तेजोरूपं ध्यात्वा, सुषुम्नावर्त्मना ॐ हृदयाय नमः। इति हृदयकमलमानीय तत्र यथोक्तं रूपं ध्यात्वा।

तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि॥११३॥

इति हृदयकमले स्थापयित्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पुनस्तेजोरूपं कुण्डलिनीरूपेण मूलादि ब्रह्मरान्ध्रन्तं ध्यात्वा मूलाधारे स्थापयेत्। एतदीशान्यां जलेन वृत्तं चतुरस्त्रं मण्डलं कृत्वा तत्र निर्माल्यवाहिनीं देवीं निर्माल्येन सम्पूज्य प्रणमेत्। ततः।

देवनाथगुरो स्वामिन्देशिकस्यात्मनायकं।
त्राहिमांत्वंकृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु॥११४॥

इति गुरुं सम्प्रार्थ्य, कराभ्यां विशेषार्घ्यमादाय आमस्तकमुद्धृत्य शिरसिस्थिताय श्रीगुरवे सभर्प्य, तत्पात्रं दक्षिणकरतले निधाय वामाङ्गुष्ठानामिकाभ्यां शिरसि गुरुपादुकाभ्यां त्रिः सन्तर्प्य तत्पात्रं यथास्थाने निवेशयेत्। तत्र विशेषार्घ्यजलं किञ्चित्पात्रान्तरेणादाय ॐ ह्रीँ मूलं आत्मतत्वं शोधयामिस्वाहा। ॐ ह्रीँ मूलं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ह्रीँ मूलं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहेति जलं स्वपात्रे कृत्वा तत्र विशेषार्घ्यजलं किञ्चिद्दत्त्वा तत्पात्रं कराभ्यामादाय मूलमुच्चार्य गुरुपादुकास्मरणपूर्वकं प्रकाशामर्षहस्ताभ्यां व्योन्मनीस्त्रुचा, धर्माधर्मकलास्नेहं पूर्णवह्निं जुहोम्यहम्। इत्युच्चार्य तज्जलं प्राश्नीयात्। ततः स्ववामकान्यथाशास्त्रं यथागुरूपदेशं सम्भाव्य तेषु परितुष्टेषु बलिविसर्जनं कुर्यात्। यथा। पूर्वस्थापितबलिपात्रस्थमन्नमेकपात्रे कृत्वा पूजागृहाद्बहिः पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा तत्र दद्यात्। तथा।

गदाति शूलं डमरुं पात्रहस्तं त्रिलोचनम्।
कृष्णाभं भैरवं ध्यायेत्सर्वविघ्ननिवारणम्॥११५॥

एवं ध्यात्वा दद्यात्। उच्छिष्टभैरव एह्येहि बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहेति तदन्नं तत्र विसृज्य, तत्पात्रं प्रक्षाल्य विशेषार्घ्यविन्दुं भैरवोपरि दत्त्वा, तेनोदकेन स्वसामयिकानभिषिच्य शुद्धजलेनापूर्य ततः शान्तिस्तोत्रं पठेत्। यथा।

नश्यन्तु प्रेतकुष्माण्डा नश्यन्तु दुषका नाराः।
साधकानां शिवाः सन्तु स्वाम्नायपरिपालनाः॥११६॥

जयन्तु मातरः सर्वा जयन्तु योगिनीगणाः।
जयन्तु सिद्धडाकिन्यो जयन्तु गुरुशक्तयः॥११७॥
नद्यन्ततु अणिमाद्यास्तु नश्यन्तु भैरवादयः।
नन्दन्तु भैरवाः सर्वे सिद्धविद्याधरादयः॥११८॥
ये चाम्नायविशुद्धाश्च मन्त्रिणः शुद्धबुद्धयः।
सर्वदानन्दयानन्दं नन्दन्तु कुलपालकाः॥११९॥
इन्द्राद्यास्तर्पितासन्तु तृप्यन्तु वास्तुदेवता।
चन्द्रसूर्यादयोदेवाः तृप्यन्तुगुरुभक्तितः॥१२०॥
नक्षत्राणिग्रहायोगाः करणाद्यास्तथापरे।
ते सर्वे सुखिनो यान्तु मासाश्च तिथयस्तथा॥१२१॥
तृप्यन्तु पितरः सर्वे ऋतवो वत्सरादयः।
खेचरा भूचराश्चैव तृप्यन्तु मम भक्तितः॥१२२॥
अन्तरिक्षचराघोरा ये चान्ये देवयोनयः।
सर्वे तु सुखिनं यान्तु सर्वा नद्यश्च पक्षिणः॥१२३॥
पर्वतास्तत्र यस्यैव पर्वताः कन्दरागुहाः।
ऋषयो ब्राह्मणाः सर्वे शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा॥१२४॥
तीर्थानि पशवो गावो ये चान्ये पुण्यभूमयः।
वृद्धाः पतिव्रतानार्यः शिवं कुर्वन्तु मे सदा॥१२५॥
शिवं सर्वत्र मे चास्तु पुत्रदारधनादिषु।
राजानः सुखिनः सन्तु क्षेममार्गे तु सर्वदा॥१२६॥
शुभा मे दिवसायान्तु शिवस्तिष्ठन्तु मे हृदि।
द्वेष्टारः साधकानां च सदैवाम्नायदूषकाः॥१२७॥
डाकिनीनां मुखे यान्तु तृप्ताः अतृप्तास्तु ते सुताः।
शत्रवोनाशमायान्तु मम निन्दाकराः सदा॥१२८॥
ये निन्दकास्ते विपदं प्रयान्तु,
ये साधकास्ते प्रभवन्तु सिद्धाः।
ये सर्ववीराः करुणावलोकाः,
पुनः परेशो मम सन्निधत्ते॥१२९॥

इति रुद्रयामलोक्तं शान्तिपाठे पठित्वा ततो मूलविद्यया प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासांश्च कृत्वा, श्रीगुरुं प्रणम्य मूलेन निर्माल्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथा सुखं विहरेत्।

श्रीमद्वटुकभैरवपद्धतिस्तोत्रं परिपूर्णम्

कालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमान पावनांघ्रिपङ्कजम्।
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्॥१॥
भानुकोटिभास्करं भवाब्धितारकं परं नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥२॥
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं श्यामकायमादिदेवमक्षयं निरामयम्।
भीमविक्रमप्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥३॥
भुक्ति मुक्ति दायकं प्रशस्तचारुविग्रहं नितान्तभक्तवत्सलं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्कुणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥४॥
धर्मसेतुपालकं कुधर्ममार्गनाशनं कर्मपाशमोचकं सुधर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णकिशपाशशोभिततुण्डमण्डलं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥५॥
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्।
मृत्युदर्पनाशकं करालदंष्ट्रभीषणं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥६॥
अट्टहासभानुपद्मजाण्डकाशसन्तर्ति दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥७॥
भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।
नीतिमाग्रकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥८॥
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरे ज्ञानमुक्तिसाधनं सुपुष्टिपुण्यवर्द्धनम्।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥९॥

कालभैरवाष्टकं परिपूर्णम्

अथापराधक्षमापनम्

गुरोः सेवां त्यक्त्वा गुरुवचनशक्तोऽपि न भवे,
भवत्पूजाध्यानज्जपहवनयागाद्विरहितः ।
त्वदर्च्चानिर्माणे क्वचिदपि न यत्नं च कृतवान्,
जगज्जालग्रस्तो झटिति कुरु हार्दं मयि विभो॥१॥

गुरु की सेवा को त्याग कर कभी गुरु के वचन का अनुसरण नहीं किया, आपके पूजा, आराधन, ध्यान, जप तथा हवनादि से दूर रहा, आपकी अर्चना के लिए कभी कोई प्रयत्न नहीं किया, संसार के जाल में फंसा हुआ हूँ, जल्दी से हमारे हृदय में वास करें॥१॥

प्रभोदुर्गासूनो तवशरणतां सोधिगतवान्,
कृपालोदुःखार्तः कमपि भवदयंप्रकथये।
सुहृत्सम्पत्तेहं सरलविरलः साधकजनः,
त्वदन्यः कस्त्राता भवदहनदाहं शमयति॥२॥

हे प्रभु! गणेश के सहित माता दुर्गा तथा अपके शरण में आया हूँ, हे कृपालु! दुःख से पिड़ित आपके सम्मुख प्रार्थना करता हूँ, साधक जनों के लिएं सरल, और अविरल सुहृद सम्पत्ति आपका शरण है, आपसे अतिरिक्त भवसागर के दाह को कौन शमन करेगा॥२॥

वदाँन्यो मान्यस्त्वं विविधजनपालो भवसि वै,
दयालुर्दीनार्तान्भवजलधिपरं गमयसि।
अतस्त्वत्तो याचे नतिनियमतोऽकिञ्चनधनः,
सदाभूयाद्भावः पदनलिनयोस्ते तिमिरहा॥३॥

आप सभी में वन्दनीय, माननीय तथा सभी जन के पालक, दयालु, आर्त जनों को भवसागर से पार करानेवाले है, अतः आपसे याचना करना किसी प्रकार से अनियमन नहीं है, आप सदैव इस अज्ञानान्धकार से सदा रक्षा करनेवाले हो॥३॥

अजापूर्वो विप्रोमिलपदपरोयोतिपतितो,
महामूर्खो दुष्टांवृजिननिरतः पामरनृपः।
असत्पानासक्तो यवनयुवतीव्रातरमणः,
प्रभावात्त्वन्नाम्नः परमपदवीं सोप्यधिगतः॥४॥

पूर्व काल में अजामिल जैसा पतित, दुष्ट जनों की स्त्रीयों में निरत महामूर्ख पामर राजा,

नित्य असत्य सम्भाषण से युक्त यवन की युवतीयों सें रमण में आसक्त, इस प्रकार के लोग आपके नाम जप के प्रभाव से परम पदवी को प्राप्त कर लिए।।४।।

दयां दीर्घादीने वटुक कुरु विश्वम्भर मयि,
न चान्यस्सन्त्राता परमशिव मां पालय विभो।
महाँश्चर्य्यं प्राप्तस्तव सरलदृष्ट्याविरहितः,
कृपापूर्णैर्नेत्रैः कमलदलनिभैर्मा खचयतात्।।५।।

हे विश्वम्भर! वटुकभैरव! दीर्घ काल से दीन मुझपर कृपा करें, आपके सिवा कोई त्राण करनेवाला नहीं है, हे परमशिव! हमारी रक्षा किजिए, महान आश्चर्य को प्राप्त हो गया हूँ आप अविरहित सरल दृष्टि को प्राप्त कर अपने कृपा पूर्ण नेत्र कमलों से कृपा वर्षा करें।।५।।

सहस्ये किं हंसो नहि तपति दीनं जनचयं,
घनान्ते किं चन्द्रोऽसमकरनिपातो भुवितले।
कृपादृष्टेस्तेऽहं भयहर विभो किं विरहितो,
जले वा हर्म्ये वा घनरसमुयातो नविषमः।।६।।

हंस दीन जनों पर ताप नहीं करते, बादल से आच्छादित हो जाने पर चन्द्र भूमि पर प्रकाश नहीं करता लेकिन बादल के हट जाने पर चन्द्रमा प्रकाश कर देता है, उसी प्रकार आपकी कृपा दृष्टि प्राप्त कर समस्त भय समाप्त हो जाते है, जल में बादल की और जल की उपस्थिति में कोई विषमता नहीं है।।६।।

त्रिमूर्तिस्त्वं गीतो हरिहरविधातात्मकगुणो,
निराकारः शुद्धः परतरपरः सोप्यविषयः।
दयारूपं शान्तं मुनिगणनुतं भक्तदयितं,
कदा पश्यामि त्वां कुटिलकचशोभित्रिनयम्।।७।।

गुणों के आधार पर आप ही ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र स्वरूपी तीन मूर्ति स्वरूप हैं, आप निराकार है, शुद्ध है, आपसे परतर कोई विषय नहीं है, आप मुनि गणों से स्तुत, भक्तों पर दया करनेवाले दयारूप तथा शान्त हैं, आपके त्रिनेत्र स्वरूप को कब देख सकते हैं।।७।।

तपो योगं साङ्ख्यं यमनियमचेतः प्रयजनं,
न कौलार्च्चाचक्रं हरिहरविधीनां प्रियतमम्।
न जाने ते भक्तिं परममुनिमार्गं मधुविधिं,
तथाप्येषां वाणी परिरटति नित्यं तव यशः।।८।।

तप, साङ्ख्य, यम नियम के द्वारा योग, कौल का चक्रार्चन, ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र को परमप्रिय, परममुनियों के मधुस्त्राव विधि को तथा आपकी भक्ति को नहीं जानता, फिर भी वाणी से आपके यश का नित्य गुण गान करता रहता हूँ।।८।।

न मे काङ्क्षाधर्मे न वसुनिचये राज्यनिवहे,
न मे स्त्रीणां भोगे सुखिसुतकुटुम्बेषु न च मे।
यदा यद्यद्भाव्यं भवतु भगवन् पूर्व सुकृतान्,
ममैतत्तुप्रार्थ्यं तव विमलभक्तिः प्रभवतात्॥९॥

हमारी धर्म में कोई आकांक्षा नहीं है, न धन की कामना है, न राज्य की ही कामना है, न स्त्रीयों के भोग सुख की ही कामना है, न पुत्र तथा कुटुम्ब के सुख की कामना है, यदि हमारे पूर्व में किये कोई सुकृत हो तो आपकी विमल भक्ति की प्रार्थना है॥९॥

कियाँस्तेऽस्मरद्धारः पतितपतिताँस्तारयसि भो,
मदन्यः कः पापी यजनविमुखः पाठरहितः।
दृढो मे विश्वासस्तव नियतिरुद्धारविषया,
सदा स्याद्विश्रम्भः कुचिदपि मृषा मा च भवतात्॥१०॥

आपने कामदेव का उद्धार किया, आप पतितों के पति हैं, उनको आप तारते हैं, हमसे अधिक अन्य कौन पापी है जो आपके पूजन, पाठ से विमुख है, फिर भी नियती से उद्धार के विषय में हमारा दृढ विश्वास है कि आप हमारे ऊपर कृपा अवश्य करेगें॥१०॥

भवद्भावाभिन्नो व्यसननिरतः को मदपरो,
मदान्धः पापात्मा वटुक शिव मे नामरहितः।
उदारात्मन्बन्धो नहि तवकतुल्यः कलुषहा,
पुनस्सञ्चिन्त्यैवं कुरु हृदि यथा चेच्छासि तथा॥११॥

आपके भाव से भिन्न, सांसारिक व्यसन में निरत, हमारे सिवा कौन है, मै मदान्ध, पापात्मा वटुक तथा शिव नाम से रहित हूँ, आपसे अधिक कोई उदार नहीं है, कालुष्य को समाप्त करनेवाला आपसे अधिक कौन है, हृदय में वास करें अथवा यथेच्छ करें॥११॥

जपान्ते स्नानान्ते ह्युषसि च निशीथे पठति यो,
महासौख्यं देवो वितरति नु तस्मै प्रमुदितः।
अहोरात्रं पार्श्वे परिवसति भक्तानुगमनो,
वयोन्ते संहृष्टः परिनयति भक्तान् स्वभुवनम्॥१२॥

प्रात: स्नानादि नित्यकर्म, अर्चन तथा जप के बाद और निशा काल में जो पाठ करता है वह महासुख प्राप्त करता है तथा देवता के सदृश प्रसन्न होकर संसार में विचरण करता है, भक्ति पूर्वक अहोरात्र आपके पास वास करता है तथा सम्पूर्ण जीवन समस्त भक्तों में श्रेष्ट होता है॥१२॥

अपराधक्षमापनं परिपूर्णम्

❀

होमार्थतान्त्रिकाग्निस्थापनम्

सर्वप्रथम मूल मन्त्र से आचमन करके, कराङ्गन्यास के पश्चात् स्थण्डिल अथवा कुण्ड में अग्निस्थापनादि कृत्य करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ। निरीक्षण करे।

ॐ ह्रीँ वँ हुँ अस्त्राय फट्। सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ वँ हुँ। तीन कुशाओं से सन्ताडित करे(बहार दे)।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ। स्रुवमूल अथवा कुशमूल से प्रागग्रोत्तरोत्तर क्रम से प्रादेश मात्र की तीन रेखा खींचे।

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ। प्रोक्षण करने के पश्चात् प्रत्येक रेखा पर गन्धाक्षत पुष्प चढ़ाये।

ॐ ह्रीँ वँ मुकुन्दाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पुरन्धराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वैवश्वताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

कुण्ड अथवा स्थण्डिल के मध्य में त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुर्द्वारात्मक भूपुर का निर्माण करे, कुशा बिछा कर तीन बार व्याहृतित्रय का उच्चारण कर अग्नि अरणी के द्वारा उत्पन्न अथवा कन्या या सुवासिनी द्वारा प्रदत्त या सूर्यकिरणों से उत्पन्न अग्नि लाकर संस्कार करे।

स्थण्डिलयन्त्रम्

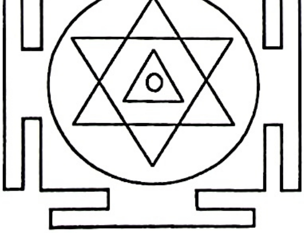

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ ॐ। त्रिकोण के मध्य में लिखे।

ॐ ह्रीँ वँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ जयादि पीठशक्तिभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कामेश्वरी-कामेश्वर-योगपीठात्मने नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये योगपीठात्मने नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

कामेश्वरी ऋतुस्नातां समस्ताभरणन्विताम्।
कामेश्वरेण संयुक्तां नमाम्यखिलसिद्धये॥

समस्त आभूषणों से सुसज्जित ऋतुकाल के बाद स्नान की हुई कामेश्वरी देवी का कामेश्वर के साथ अपने समस्त सिद्धियों के लिए नमन करता हूँ।

कामोन्मत्त शिव तथा ऋतुमती देवी को ध्यान कर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमः।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरव्यै नमः।

शिव-शक्ति पूजन के बाद दोनों के संयोग से गर्भस्थ वह्नि का ध्यान पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ फट्। अग्नि को लाकर कुण्ड के बाहर रखे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ। ज्वलित अग्नि से किञ्चित् क्रव्यादंश भाग वायव्य कोण में निकाल दे, शेष अग्नि में देवांश की परिकल्पना करे।

ॐ ह्रीँ वँ फट्। सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। अभ्यर्चन करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ। द्वादश बार जप कर दोषों का संशोषण करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ। षोडश बार जप कर दोषों का सन्दहन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ। मत्स्य मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ। भ्रूमध्य विन्दुस्थ अग्नि से प्रज्वलित अग्नि का एक्य करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ वह्नि चैतन्यं परिकल्पयामि। वह्नि चैतन्य भावन करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ वह्नि चैतन्यं ते नमः। चैतन्यता संयोजित कर मूल मन्त्र से दशधा अभिमन्त्रित करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ। अवगुण्ठन कर योनि एवं धेनु मुद्रा का प्रदर्शन कर अग्नि ग्रहण कर

कुण्ड की तीन परिक्रमा करके ध्यान करते हुए कुण्ड में अग्नि स्थापित करे।

ध्यानम्

शय्यागतां ऋतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम्।
देवेन भज्यमानान्तां संस्मरेद्योनिमण्डले॥

ध्यान करके जानु से धरातल पर स्पर्श कर मूल मन्त्रोच्चारपूर्वक आत्मा में शिव बीज का ध्यानपूर्वक देवी योनि में छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ क्रीँ कामेश्वरीकामेश्वराभ्यां नमः। आज्याचमनीय प्रदान कर वह्निरूपी देवता का देवी गर्भ धारण ध्यान कर गर्भ रक्षार्थ काष्ठ छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वाज्ञा आज्ञापय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ ह्रीँ ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रूँ फट् स्वाहा। ज्वालिनी मुद्रा से वह्नि प्रज्वलित करके अग्नि की प्रार्थना करे।

अग्नेर्प्रार्थना

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥

ॐ ह्रीँ वँ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा। अग्नि को पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

पूजन करके प्रादेशमात्र समिधा का अग्नि में तूष्णी(मौन)हवन करे पश्चात् तान्त्रिक विधि से **गणेशादि वन्दन, दिग्बन्धन, भूतशुद्धि, प्राणायाम, मातृकान्यास, मूलन्यास** करके स्वदेह में वह्निजिह्वा न्यास करे।

अग्निजिह्वान्यासः

सात्त्विक न्यासः

ॐ ह्रीँ वँ स्प्रूँ हिरण्यायै नमः लिङ्गे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ष्प्रूँ गगनायै नमः पायौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ श्प्रूँ रक्तायै नमः मूर्ध्निः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ व्प्रूँ कृष्णायै नमः वक्त्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ल्प्रूँ सुप्रभायै नमः घ्राणे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ र्प्रूँ बहुरूपायै नमः नेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ य्प्रूँ अतिरिक्तायै नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

राजस न्यासः

ॐ ह्रीँ वँ स्प्रूँ पद्मरागायै नमः लिङ्गे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ष्प्रूँ सुवर्णायै नमः पायौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ श्प्रूँ भद्रलोहितायै नमः मूर्ध्निः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ व्प्रूँ लोहितायै नमः वक्त्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ल्प्रूँ श्वेतायै नमः घ्राणे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ र्प्रूँ धूमिन्यै नमः नेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ य्प्रूँ करालिकायै नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

तामस न्यासः

ॐ ह्रीँ वँ स्प्रूँ विश्वमूर्त्यै नमः लिङ्गे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ष्प्रूँ स्फुलिङ्गिन्यै नमः पायौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ श्प्रूँ धूम्रवर्णायै नमः मूर्ध्निः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ व्प्रूँ मनोजवायै नमः वक्त्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ल्प्रूँ लोहितायै नमः घ्राणे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ र्प्रूँ करालायै नमः नेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ य्प्रूँ कालिकायै नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

अग्न्यधिष्ठाता न्यासः

ॐ ह्रीँ वँ स्प्रूँ अमर्त्याय नमः लिङ्गे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ष्प्रूँ पित्रे नमः पायौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ श्प्रूँ गन्धर्वाय नमः मूर्ध्निः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ व्प्रूँ यक्षाय नमः वक्त्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ल्प्रूँ नागाय नमः घ्राणे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ र्प्रूँ पिशाचाय नमः नेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ य्प्रूँ राक्षसाय नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

विनियोगः—**ॐ अग्निमन्त्रस्य भृगुऋषिः, गायत्रीछन्दः, अग्निर्देवता, रँ बीजं, स्वाहा शक्तिः, अग्नियजने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ भृगुऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ गायत्री छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्निर्देवतायै नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ रँ बीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

षडङ्गन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ धूम्रव्यापिने कवचाय हूम् न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ धनुर्धराय अस्त्राय फट् न्यस्यामि।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ सहस्रार्चिषे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ स्वस्तिपूर्णाय तर्जनीभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ उत्तिष्ठपुरुषाय मध्यमाभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ धूम्रव्यापिने अनामिकाभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ सप्तजिह्वाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ धनुर्धराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः न्यस्यामि।

मूर्तिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये जातवेदसे नमः मूर्ध्नि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये हव्यवाहनाय नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये अश्वोदरजाय नमः दक्षकट्याम् न्यसामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये वैश्वानराय नमः लिङ्गे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये कौमारतेजसे नमः वामकट्याम् न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये विश्वमुखाय नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये देवमुखाय नमः वामांसे न्यस्यामि।

पीठन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ पीतायै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ श्वेतायै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अरुणायै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ कृष्णायै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ धूम्रायै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ तीव्रायै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ स्फुलिङ्गिन्यै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ रुचिरायै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ज्वालिन्यै नमः न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ रँ वह्नेर्योगपीठात्मने नमः न्यस्यामि।

इष्टशक्तिन्यासः

इष्टशक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैः दोर्धैर्दोर्भिर्धारयन्तं जपाभम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः॥

उच्च वेदि पर स्वस्तिकाकार इष्टशक्ति के रूप में दोर्धी दोर्भि ध्यान जप में हिम कल्प के कमल पर आसीन जटाजूट धारी बद्धमौली वह्नि का ध्यान करता हूँ।

देवता स्वरूपी अपनी आत्मा इष्ट को अग्निरूपी मानकर मानसोपचार पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ आत्ममूर्तये वह्नये नमः।

गन्धादि से पूजन करके सामान्यार्घ्य जल से मेखला परिसिंचन करके परिस्तरण करे, एक मेखलावाले कुण्ड में मेखला के नीचे, दो तथा तीन मेखला वाले कुण्ड में द्वितीय मेखला पर परिस्तरण करे, परिस्तरण में कुशाओं को कुण्ड के दक्षिण और उत्तर में पूर्वाग्र तथा पूर्व तथा पश्चिम में उत्तराग्र रखे पश्चात् पूर्व को छोड़ कर दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर में एक हाथ का पलाश खण्ड रक्त वस्त्र वेष्टित करके रख कर उसपर दक्षिण में ब्रह्मा, पश्चिम में विष्णु तथा उत्तर में रुद्र की स्थापना कर उनका गन्धाक्षतपुष्प समर्पित कर पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पुनः द्वितीय क्रम में पूर्ववत् वामा ज्येष्ठा रौद्री की स्थापना करके मध्य योनि में अम्बिका की स्थापना करे।

ॐ ह्रीँ वँ वामायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ज्येष्ठायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रौद्र्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अम्बिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ वह्नये नमः परिकल्पितासनं समर्पयामि।

अग्नि को कुण्ड के मध्य में आसन प्रदान करके चतुर्द्वारात्मक, वृत्तत्रय, अष्टदल, षड्कोणात्मक भावना(ध्यान)कर आधारशक्त्यादि वह्निमण्डलान्त पीठ पूजा करे।

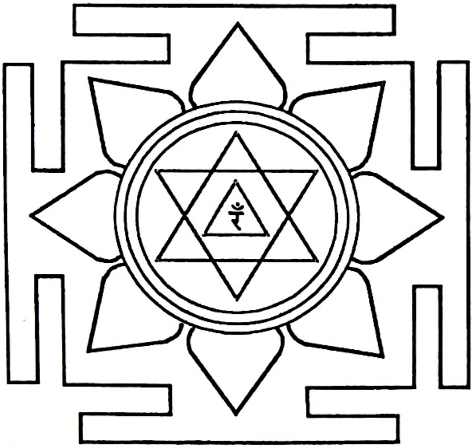

ॐ ह्रीँ वँ पीतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्वेतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अरुणायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कृष्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ धूम्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ तीव्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ स्फुलिङ्गिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ रुचिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मध्ये

ॐ ह्रौँ वँ रँ वह्नेर्योगपीठात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठदेवताविन्यासः

ॐ ह्रौँ वँ मण्डूकाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ कालाग्निरुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ कच्छपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ आधारशक्तये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ प्रकृतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ कूर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ अनन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रौँ वँ पृथिव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ क्षीरसमुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ रत्नद्वीपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ कल्पवृक्षाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ मणिमण्डपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ धर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ ज्ञानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ वैराग्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ ऐश्वर्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ अधर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ अज्ञानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ अवैराग्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ अनैश्वर्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीं वँ पद्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आनन्दकन्दाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ संविन्नालाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पूजन करके कलाओं सहित वह्न्यर्कसोममण्डलों का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ दशकलात्माने रँ अग्निमण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ यँ धूम्रार्चिषे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ ऊष्मायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ लँ ज्वलिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वँ ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ षँ सुश्रियै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सँ सुरूपायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ हँ कपिलायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ळँ हव्यवाहनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्षँ कव्यवाहनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ द्वादशकलात्मने मँ सूर्यमण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कँ भँ तपिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ खँ बँ तापिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ गँ फँ धूम्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ घँ पँ मरीच्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ चँ धँ रुच्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ छँ दँ सुषुम्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ जँ थँ भोगदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ झँ तँ विश्वायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ञँ णँ बोधिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ टँ ढँ धारिण्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ठँ डँ क्षमायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ षोडशकलात्मने वँ सोममण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अमृतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आँ मानदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ इँ पूषायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ईँ तुष्ट्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ उँ पुष्ट्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ऊँ रत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ऋँ शशिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ॠँ धृत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ लृँ चन्द्रिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ लॄँ कान्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ एँ ज्योत्स्नायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ऐँ श्रियै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ओँ प्रीत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ औँ अङ्गदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अँ पूर्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अः पूर्णामृतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सत्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रजसे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ तमसे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आत्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अन्तरात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ परमात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ज्ञानात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ मायातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ कलातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ विद्यातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ परतत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठशक्तिनांपूजनम्

पीठों के बाद पीठशक्तियों का पूजन करे—

ॐ ह्रीँ वँ जयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ विजयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अजितायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अपराजितायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ नित्यायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ विलासिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ दोग्घ्र्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अघोरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ मङ्गलायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्,
शूलं कपालं दधतं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवि।
पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्,
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥

मानसोपचार पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ वह्नियोगपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवाय स्वाहा वह्नेर्मूर्तिं परिकल्पयामि आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्निमूर्ति कल्पित कर अधोलिखित मन्त्र से आवाहन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा भगवान अग्नि इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ह्रीँ वँ रँ अग्नि आवाहिता भव, संस्थापितो भव। आवाहनी तथा संस्थापनी मुद्रा का प्रदर्शन करे।

अग्नेर्प्राणप्रतिष्ठा

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः रँ वह्नेः प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः रँ वह्नेः जीव इह स्थितः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः रँ वह्नेः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा इदं पाद्यार्घ्याचमनीयं स्नानीयं पुनराचमनीयं जलगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यफल-ताम्बूलदक्षिणाद्युपचारं समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

पूजन के बाद तीन बार मूलमन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

अग्न्यावरणार्चनम्

प्रथमावरणपूजनम्—पूर्वोक्त यन्त्र के मध्य में पूजन करे—

ॐ ह्रीँ वँ स्प्रूँ हिरण्यायै नमः लिङ्गे पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ष्प्रूँ गगनायै नमः पायौ पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ श्प्रूँ रक्तायै नमः मूर्ध्निः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ व्प्रूँ कृष्णायै नमः वक्त्रे पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ल्प्रूँ सुप्रभायै नमः घ्राणे पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ र्प्रूँ बहुरूपायै नमः नेत्रे पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ य्प्रूँ अतिरिक्तायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

द्वितीयावरणपूजनम्—षट्कोणों में पूजन करे—

ॐ ह्रीँ वँ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ धूम्रव्यापिने कवचाय हूम् पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ धनुर्धराय अस्त्राय फट् पूजयामि।

तृतीयावरणपूजनम्—अष्टपत्रों में पूजन करे—

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये जातवेदसे नमः मूर्ध्नि पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः दक्षांसे पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये हव्यवाहनाय नमः दक्षपार्श्वे पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये अश्वोदरजाय नमः दक्षकट्याम् पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये वैश्वानराय नमः लिङ्गे पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये कौमारतेजसे नमः वामकट्यां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये विश्वमुखाय नमः वामपार्श्वे पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये देवमुखाय नमः वामांसे पूजयामि।

चतुर्थावरणपूजा—भूपुर में पूजन करे—

ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ यमाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ निर्ऋतये नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वरुणाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वायवे नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ सोमाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय नमः पूजयामि।

पञ्चमावरणपूजनम्—

ॐ ह्रीँ वँ वज्राय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ शक्त्यै नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ दण्डाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ खड्गाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पाशाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ अङ्कुशाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ गदाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ त्रिशूलाय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ पद्माय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ चक्राय नमः पूजयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नये श्रीपादुकां पूजयामि।

अग्निस्थापनं परिपूर्णम्

◆

कुशकण्डिकापात्रासादनञ्च

अपने बाँयें भाग में पूर्व की तरफ मुख करके कुशाओं को बिछा कर उसके ऊपर अस्त्र मन्त्र से प्रच्छालित स्रुक-स्रुवा, प्रणीता-प्रोक्षणी, स्फ्रे, आज्यपात्र, चरुपात्रादि को अधोमुख करके रखे, सभी पात्रों को पवित्र करके पुन: प्रच्छालन करके नम: मन्त्र से सामान्यार्घ्य जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ हुँ फट्। सभी पात्रों को प्रच्छालित करे।

ॐ नमः। सामान्यार्घ्य जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ। शुद्ध जल प्रोक्षणी पात्र में रखे।

ॐ ह्रीँ। प्रोक्षणी पात्र के जल में क्रम से विम्बत्रय का अभ्यर्चन करे।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥

शङ्खमुद्रा द्वारा अन्तरिक्ष में सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करे।

ॐ हुँ फट्। अङ्कुश मुद्रा से संरक्षण करे।

ॐ हुँ फट्। कवच मुद्रा से अवगुण्ठन करे।

ॐ ह्रीँ। गन्धपुष्पाक्षतपवित्रादि छोड़े।

ॐ हुँ। हाथ से ढक कर अभिमन्त्रित करे।

ॐ ह्रीँ वँ। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ह्रीँ वँ। प्रणीता पात्र को सामान्यार्घ्योदक से परिपूर्ण करे।

ॐ ह्रीँ वँ। प्रणीता पात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र का सिंचन करे।

ॐ ह्रीँ वँ। प्रणीता पात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र को परिपूर्ण करे।

ॐ ह्रीँ वँ। प्रोक्षणी पात्र के जल से यागद्रव्यों का प्रोक्षण करे।

ब्रह्मा-वरणम्

अपने दक्षिण भाग में कुशासन पर ब्रह्मा को आसन दे कर उपविष्ट करे।

ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्माऽहं श्रीमद्बटुकभैरवपुरश्चरण-यज्ञकर्माङ्गभूतेऽस्मिन् होमकर्मणि अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्माणं भवन्तं अहं वृणे।

ब्रह्मा प्रतिवचन कहे—**वृतोस्मि।**

वासोलङ्कारादि से ब्रह्मा का पूजन करके स्त्रुक् स्त्रुव का संस्कार करे।

ऊर्ध्वमुख स्त्रुक् स्त्रुव को ग्रहण करके अधोमुख कर अग्नि में प्रतपन कर बाँयें हाथ में दोनों को धारण कर दाहिने हाथ से कुश लेकर उस कुश के अग्र भाग से स्त्रुक् स्त्रुव के अग्र भाग का मध्य से मध्य का तथा मूल से मूल भाग का शोधन करके प्रोक्षणी के जल से सम्प्रोक्षण कर वह्नि में पुनः प्रतपन करके कुशाओं को अग्नि में प्रक्षेप कर स्वदक्षिण भाग में कुशाओं के ऊपर स्त्रुक् स्त्रुव को रख कर आज्य संस्कार करे।

ॐ हुँ फट्। आज्य पात्र से दोषों का निसेचन करे।

ॐ ह्रीं वँ। प्रोक्षणी के जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। सन्ताडन करे।

ॐ हुँ। अभ्युक्षण करके संस्कारचतुष्टय करके कुण्ड से अग्न्याङ्गार लेकर वायुकोण में स्थापित कर ऊपर आज्य स्थापित करे।

ॐ नमः। आज्य में तपाये।

ॐ हुँ। घृताक्त कुशत्रय अथवा समिधात्रय लेकर अग्नि में छोडे।

ॐ अस्त्राय फट्।

मुष्टिमात्र प्रज्वलित कुशाओं को लेकर अग्नि की प्रदक्षिणा करके प्रदर्शित कर अग्नि में छोड़े।

पुनः अङ्गार के ऊपर रखे आज्य पात्र को अपने सामने रखे, उस अङ्गार को अग्नि में प्रक्षेपित कर मार्जन करके जल से हाथ धोकर प्रादेश मात्र की पवित्री पृथक् पृथक् दोनों हाथ में लेकर अस्त्राय फट् मन्त्र से वह्नि के सम्मुख लाकर उत्प्लावन कर पवित्री को स्थानान्तर में रखे पुनः उसी प्रकार से कुशद्वय लेकर नमः मन्त्र के द्वारा आत्मसम्मुख घृत का सम्प्लावन करके कुशद्वय तथा पूर्वस्थापित पवित्रद्वय को अग्नि में छोड़े।

ॐ अस्त्राय फट्। वह्नि के सम्मुख लाये।

ॐ नमः। आत्मसम्मुख घृत का सम्प्लावन कर पश्चात् प्रादेश मात्र सदग्रन्थि कुशद्वय आज्य पात्र में छोड़ कर आज्य के दक्षिण भाग में शुक्लपक्ष वाम भाग में कृष्ण पक्ष का चिन्तन कर, वाम में इडा नाडी तथा दक्षिण में पिङ्गला नाडी की भावना कर दोनों के मध्यभाग में सुषुम्ना का चिन्तन कर हवन करे।

ॐ नमः। मन्त्र से दाहिने भाग से आज्य ग्रहण कर।

ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम। अग्नि के दक्षिण लोचन में हवन कर सम्पात भाग दक्षिण में छोड़े।

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम। अग्नि के वाम लोचन में हवन कर सम्पात भाग वाम में छोड़े।

ॐ नमः। मध्य भाग से आज्य ग्रहण करे।

ॐ अग्निषोमाभ्यां स्वाहा इदं अग्निषोमाभ्यां न मम। अग्नि के ललाट लोचन में हवन कर सम्पात भाग वहीं पूर्ववत् मध्य भाग में छोड़े। हवन ध्यानपूर्वक करे।

ॐ अग्नये स्विष्टिकृते स्वाहा इदं अग्नये स्विष्टिकृते न मम। अग्नि के मुख में हवन कर सम्पात भाग वहीं पूर्ववत् मध्य भाग में छोड़ कर पञ्चाहुति प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ भूः स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ भुवः स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ स्वः स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा। आहुतित्रय प्रदान कर अग्नि का षोडश संस्कार करे।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा।

संस्कार में सर्वत्र आज्य से आठ आहुति प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः पुंसवनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः सीमान्तोन्नयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः जातकर्म सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः नालच्छेदनं सम्पादयामि स्वाहा।

मन्त्र से आज्य सम्लुत पञ्च समिधा का हवन करे।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः सूतकं शोधयामि स्वाहा।

ॐ अग्नेः त्वं वटुकभैरवनामासि स्वाहा।

नामकरण में अपने इष्टदेवता के नाम से नामकरण करे।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः नामकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः निष्क्रमणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः अन्नप्राशनं सम्पादयामि स्वाहा।

साकल्य की आहुति प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेः चूडाकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्ने: उपनयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्ने: महानाग्न्यव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्ने: महाव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्ने: उपनिषद्व्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्नेर्गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्ने: गोदानव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्ने: समावर्तनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अग्ने: विवाहं सम्पादयामि स्वाहा।

मूलाग्र घृतसम्लुत समिधा लेकर कामेश्वर-कामेश्वरी को तीन आहुति प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ कामेश्वर-कामेश्वरीभ्यां स्वाहा।

कामेश्वर(आनन्दभैरव)-कामेश्वरी(आनन्दभैरवी) के लिए हवन करने के बाद पञ्चोपचार से पूजिन कर स्वहृदयपद्म कर्णिकामध्य से उद्वासित करे, पश्चात् सप्तजिह्वादि आवरण देवताओं के लिए आहुति प्रदान करे।

सप्तजिह्वाहुतिः

ॐ ह्रीँ वँ स्प्रूँ हिरण्यायै स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ ष्प्रूँ गगनायै स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ श्प्रूँ रक्तायै स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ व्प्रूँ कृष्णायै स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ ल्प्रूँ सुप्रभायै स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ र्प्रूँ बहुरूपायै स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ य्प्रूँ अतिरिक्तायै स्वाहा।

षडङ्गाहुतिः

ॐ ह्रीँ वँ सहस्रार्चिषे स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ स्वस्तिपूर्णाय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ उत्तिष्ठपुरुषाय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ धूम्रव्यापिने स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ सप्तजिह्वाय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ धनुर्धराय स्वाहा।

अग्निमूर्त्याहुतिः

ॐ ह्रीँ वँ अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये सप्तजिह्वाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये हव्यवाहनाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये अश्वोदरजाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये वैश्वानराय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये कौमारतेजसे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये विश्वमुखाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये देवमुखाय स्वाहा।

दिक्पालाहुतिः	दिक्पालास्त्राहुतिः
ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राय स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ वज्राय नमः।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ शक्त्यै नमः।
ॐ ह्रीँ वँ यमाय स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ दण्डाय नमः।
ॐ ह्रीँ वँ निर्ऋतये स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ खड्गाय नमः।
ॐ ह्रीँ वँ वरुणाय स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ पाशाय नमः।
ॐ ह्रीँ वँ वायवे स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ अङ्कुशाय नमः।
ॐ ह्रीँ वँ सोमाय स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ गदायै नमः।
ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ त्रिशूलाय नमः।
ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ पद्माय नमः।
ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय स्वाहा।	ॐ ह्रीँ वँ चक्राय नमः।

स्रुचि में चार स्रुवा आज्य लेकर स्रुचि के ऊपर स्रुवा रख शृङ्गाग्र पर पुष्प रख कर खड़े होकर वौषडन्त अग्नि मन्त्र से आहुति प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नये वौषट्।

गणपति मन्त्र का दश विभाग करके दश आहुति प्रदान करे।

१—ॐ स्वाहा।

२—ॐ श्रीँ स्वाहा।

३—ॐ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा।

४—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ स्वाहा।

५—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ स्वाहा।

६—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ स्वाहा।

७—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये स्वाहा।

८—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद स्वाहा।

९—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद सर्वजनं मे स्वाहा।

१०—ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

पूरे मन्त्र से चार आहुति प्रदान करके अग्नि में देवी के पीठदेवताओं तथा शक्तियों का गन्धार्चन करके आहुति प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ वँ मण्डूकादि सर्वमङ्गलायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ वह्नेर्योगपीठात्मने स्वाहा।

पीठदेवतायहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ मण्डूकाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कालाग्निरुद्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कच्छपाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ आधारशक्तये स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ प्रकृतये स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कूर्माय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ पृथिव्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ क्षीरसमुद्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ रत्नद्वीपाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कल्पवृक्षाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ मणिमण्डपाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ स्वर्णसिंहासनाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ धर्माय नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ज्ञानाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वैराग्याय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ऐश्वर्याय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अधर्माय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अज्ञानाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अवैराग्याय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अनैश्वर्याय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कल्पान्तकारायानन्ताय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ पद्माय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ आनन्दकन्दाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ संविन्नालाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ विकारमयकेशरेभ्यो स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै स्वाहा।

पूजन करके कलाओं सहित वह्न्यर्कसोममण्डलों का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ दशकलात्माने रँ अग्निमण्डलाय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ यँ धूम्रार्चिषे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ रँ ऊष्मायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ लँ ज्वलिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वँ ज्वालिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ शँ विस्फुलिङ्गिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ षँ सुश्रियै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ सँ सुरूपायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ हँ कपिलायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ळँ हव्यवाहनायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ क्षँ कव्यवाहनायै स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ द्वादशकलात्मने मँ सूर्यमण्डलाय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ कँ भँ तपिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ खँ बँ तापिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ गँ फँ धूम्रायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ घँ पँ मरीच्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ङँ नँ ज्वालिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ चँ धँ रुच्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ छँ दँ सुषुम्णायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ जँ थँ भोगदायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ झँ तँ विश्वायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ञँ णँ बोधिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ टँ ढँ धारिण्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ठँ डँ क्षमायै स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ षोडशकलात्मने वँ सोममण्डलाय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अँ अमृतायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ आँ मानदायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ इँ पूषायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ईँ तुष्ट्यै नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ उँ पुष्ट्यै नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ऊँ रत्यै नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ऋँ शशिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ॠँ धृत्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ऌँ चन्द्रिकायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ॡँ कान्त्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ एँ ज्योत्स्नायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ऐँ श्रियै नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ओँ प्रीत्यै नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ औँ अङ्गदायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अँ पूर्णायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अः पूर्णामृतायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ सत्वाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ रजसे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ तमसे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ आत्मने स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अन्तरात्मने स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ परमात्मने स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ज्ञानात्मने स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ मायातत्त्वाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कलातत्त्वाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ विद्यातत्त्वाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ परतत्त्वाय स्वाहा।

पीठों के बाद पीठशक्तियों के लिए हवन करे—

पीठशक्तयेहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ जयायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ विजयायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अजितायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अपराजितायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ नित्यायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ विलासिन्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ दोग्घ्र्यै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अघोरायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ मङ्गलायै स्वाहा।

श्रीष्टदेवताय हवनम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

प्रथमावरणं गुरुणांहवनम्

दिव्यौघादिगुरुणां हवनम्—दिव्यौघगुरुओं के लिए हवन करे—

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहादेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीत्रिपुरानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीभैरवानन्दनाथाय स्वाहा।

सिद्धौघादिगुरुणां हवनम्—सिद्धौघादि गुरुओं के लिए हवन करे—

ॐ ह्रीँ वँ श्रीब्रह्मानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीपूर्णदेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीचलचित्तानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीचलचलानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीकुमारानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीक्रोधानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीवरदानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीस्मरदीपानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमायाम्बायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमायावत्याम्बायै स्वाहा।

मानवौघादिगुरूणां हवनम्—मानवौघादि गुरुओं के लिए हवन करे—

ॐ ह्रीँ वँ श्रीविमलानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीकुशलानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमत्सेनानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसुधाकरानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीप्रह्लादानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसनकानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीवसिष्ठानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीबोधानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमीनानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीगोरक्षानन्दनाथाय स्वाहा।त्र
ॐ ह्रीँ वँ श्रीभोजदेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीप्रजापत्यानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमूलदेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीरन्तिदेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीविघ्नेशरानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीहुताशनानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसमयानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसन्तोषानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीनिजगुरवानन्दनाथाय स्वाहा।

द्वितीयावरणं त्रिदेवायहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वतीसहिताय ब्रह्मणे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ लक्ष्मीसहिताय विष्णवे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ उमासहिताय शङ्कराय स्वाहा।

तृतीयावरणं ऐशान्यादिहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ तत्पुरुषाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अघोराय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ वामदेवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ सद्योजाताय स्वाहा।

पञ्चवक्त्रहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ ऊर्ध्ववक्त्राय ईशानाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ उत्तरवक्त्राय तत्पुरुषाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ दक्षिणवक्त्राय अघोराय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ पश्चिमवक्त्राय वामदेवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ पूर्ववक्त्राय सद्योजाताय स्वाहा।

चतुर्थावरणं आनन्दनाथादिहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ भूतनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ आदिनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ आनन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ सिद्धशाबरनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ सहजानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ निःसीमानन्दनाथाय स्वाहा।

उमादिपुत्राणांहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ उमापुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ रुद्रपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ मातृपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ऊर्ध्वमुखिपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अधोमुखिपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ व्यापकोन्मुखिपुत्राय स्वाहा।

पञ्चमावरणं डाकिन्यापुत्राणांहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ डाकिनीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ राकिनीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ लाकिनीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ काकिनीपुत्राय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ शाकिनीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ हाकिनीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ याकिनीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ देविपुत्राय स्वाहा।

ब्राह्म्यादिपुत्राणांहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वैष्णवीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ माहेश्वरीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कौमारीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वाराहीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ नारसिंहिपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ऐन्द्रीपुत्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ चामुण्डापुत्राय स्वाहा।

षष्ठावरणं भैरवादिहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ असिताङ्गभैरवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ रुरुभैरवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ चण्डभैरवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ क्रोधभैरवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ उन्मत्तभैरवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कपालभैरवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ भीषणभैरवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ संहारभैरवाय स्वाहा।

सप्तमावरणं कलानांहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ वँ श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वँ श्रीअनन्तेशविरजाभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वँ श्रीसूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वँ श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां स्वाहा।

ॐ ह्रौँ वँ वँ श्रीअमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीअर्धीशघोणाभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीभारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीअतिथीशगोमुखीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीहरेशकुण्डोदरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीभौतिकेशविकृतमुखीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीसद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीअक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीमहासेनविद्यामुखीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीक्रोधीशमहाकालीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीचण्डेशसरस्वतीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्याभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीकूर्मेशात्मशक्तिभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीएकनेत्रेशभूतमातृभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीचतुराननेशलम्बोदरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीअजेशद्रावणीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीसर्वेशनागरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीसोमेशखेचरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीलाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीदारकेशरूपिणीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीअर्द्धनारीशवीरिणीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीउमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रौँ वँ श्रीआषाढीशपूतनाभ्यां स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीचण्डीशभद्रकालीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीआन्त्रीशयोगिनीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमीनेशशङ्खिनीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमेषेशतर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीलोहितेशकालरात्रीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीशिखीशकुब्जिनीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीछ्गालगण्डेशकपर्दिभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीद्विरण्डेशवज्राभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीमहाकालेशजयाभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीबालीशसुमुखेश्वरीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीभुजङ्गेशरेवतीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीपिनाकीशमाधवीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीखड्गीशवारुणीभ्यां स्वाहा ।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीकेशवेशवायवीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीभृग्वीशसहजाभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीनकुलीशलक्ष्मीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीशिवेशव्यापिनीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ श्रीसंवर्तकेशमहामायाभ्यां स्वाहा।

अष्टमावरणं हेतुकादिहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ हेतुकाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वेतालाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्निजिह्वाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ कालान्तकाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ करालाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ एकपादाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ भीमरूपाय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ अचलाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ हाटकेशाय स्वाहा।

नवमावरणं लकुलीशादिहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ लकुलीशलक्ष्मीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ शक्त्यात्मने स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ क्रोधात्मने स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ दिव्ययोगिनीश्वरेभ्यो स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अन्तरिक्षयोगिनीश्वरेभ्यो स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ भूमिस्थयोगिनीश्वरेभ्यो स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ गणपतये स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ दुर्गायै स्वाहा।

दशमावरणं दिग्पालादिहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अग्नये स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ यमाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ निर्ऋतये स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वरुणाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ वायवे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ सोमाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मणे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय स्वाहा।

एकादशावरणं दिग्पालास्त्रहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ वज्राय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ शक्तये स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ दण्डाय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ खड्गाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ पाशाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ अङ्कुशाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ गदायै स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ त्रिशूलाय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ पद्माय स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ चक्राय स्वाहा।

मूलमन्त्रहवनम्

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकभैरवाय स्वाहा। मूलमन्त्र से पुरश्चरण में जपे हुए मन्त्रसङ्ख्या का दशांश सङ्ख्या वटुकभैरव के सहस्रनामों से योजित कर हवन करे यथा—

१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकाय स्वाहा।
२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकाधीशाय स्वाहा।
३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटप्रीतये स्वाहा।
४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटेशाय स्वाहा।
५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विपणये स्वाहा।
६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वज्रपाणये स्वाहा।
७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वज्राय स्वाहा।
८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अभयाय स्वाहा।
९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वज्रवल्लभाय स्वाहा।
१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वामाचारप्रियाय स्वाहा।
११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वक्राय स्वाहा।
१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वक्रग्रासाय स्वाहा।
१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विशारदाय स्वाहा।
१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विशापाय स्वाहा।
१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विघ्नहर्तायै स्वाहा।
१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वेतालाढ्यायै स्वाहा।
१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विचक्षणाय स्वाहा।

१८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विश्वव्याप्तये स्वाहा।
१९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विश्वनाथाय स्वाहा।
२०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विश्वाय स्वाहा।
२१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ बालपराक्रमाय स्वाहा।
२२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विश्ववन्द्याय स्वाहा।
२३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विश्वरूपाय स्वाहा।
२४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विश्वाधाराय स्वाहा।
२५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विकीरणाय स्वाहा।
२६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ वैद्याय स्वाहा।
२७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ बालाय स्वाहा।
२८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विराटाय स्वाहा।
२९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ विष्णवे स्वाहा।
३०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ व्योमकेशाय स्वाहा।
३१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ वश्यकृतये स्वाहा।
३२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ बलिभुक्तये स्वाहा।
३३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ बलिभुक्नाथाय स्वाहा।
३४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ बहुनेत्राय स्वाहा।
३५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ वराय स्वाहा।
३६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ बलये स्वाहा।
३७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ व्याधिघातये स्वाहा।
३८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ व्याधिकराय स्वाहा।
३९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ व्याधात्माय स्वाहा।
४०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ व्याधिवेपनाय स्वाहा।
४१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
४२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ कन्दर्पाय स्वाहा।
४३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ कामये स्वाहा।
४४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ कान्ताय स्वाहा।
४५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ कलानिधये स्वाहा।

४६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कामरूपाय स्वाहा।
४७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कामचारिणे स्वाहा।
४८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कल्पविते स्वाहा।
४९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कामिनीप्रियाय स्वाहा।
५०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कोटरेशाय स्वाहा।
५१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कोटरपतये स्वाहा।
५२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कमनीयाय स्वाहा।
५३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कपालभृतये स्वाहा।
५४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कङ्कालाय स्वाहा।
५५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्रूरदृक्कालाय स्वाहा।
५६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ करालाय स्वाहा।
५७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कोकिलस्वनाय स्वाहा।
५८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कपर्दये स्वाहा।
५९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कम्बुकण्ठाय स्वाहा।
६०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कम्बुमालिने स्वाहा।
६१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कलाधराय स्वाहा।
६२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कामिनीवशकृतये स्वाहा।
६३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कौलाय स्वाहा।
६४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुलीनाय स्वाहा।
६५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुलरक्षकाय स्वाहा।
६६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कपालमालिने स्वाहा।
६७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुब्जाय स्वाहा।
६८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कण्वाय स्वाहा।
६९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कण्ठीरवाय स्वाहा।
७०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कवये स्वाहा।
७१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कलाकाष्टातनवे स्वाहा।
७२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कल्त्रशमनाय स्वाहा।
७३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कम्बुकुन्धालये स्वाहा।

७४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुरङ्गाय स्वाहा।
७५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कपिलाय स्वाहा।
७६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कीर्यै स्वाहा।
७७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुमाराय स्वाहा।
७८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कोपनाय स्वाहा।
७९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कवये स्वाहा।
८०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कङ्काल्यै स्वाहा।
८१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कपिशाय स्वाहा।
८२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ केश्यै स्वाहा।
८३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ केशर्यै स्वाहा।
८४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ केशरप्रियायै स्वाहा।
८५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कौपीनधायै स्वाहा।
८६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कितवायै स्वाहा।
८७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कितवघ्न्यै स्वाहा।
८८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कलाधरायै स्वाहा।
८९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कमलावल्लभायै स्वाहा।
९०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुण्ठ्यै स्वाहा।
९१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कठोरकिरणायै स्वाहा।
९२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षणायै स्वाहा।
९३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ वं कौशिकायै स्वाहा।
९४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कौशिकधरायै स्वाहा।
९५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुशभृत्यै स्वाहा।
९६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुशतल्पगायै स्वाहा।
९७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुशलायै स्वाहा।
९८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कश्मलायै स्वाहा।
९९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कर्षायै स्वाहा।
१००.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ काश्मिराय स्वाहा।
१०१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कररत्नाय स्वाहा।

१०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कररत्नभूताय स्वाहा।

१०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कृतघ्नाय स्वाहा।

१०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कृतज्ञाय स्वाहा।

१०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कृतवीर्याय स्वाहा।

१०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपिध्वजाय स्वाहा।

१०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशीलवाय स्वाहा।

१०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशीलाय स्वाहा।

१०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ केतक्यै स्वाहा।

११०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ केतकीप्रियाय स्वाहा।

१११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कादम्बराय स्वाहा।

११२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कदम्बाय स्वाहा।

११३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कलकण्ठाय स्वाहा।

११४ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपिञ्जलाय स्वाहा।

११५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कैटभाराय स्वाहा।

११६.व्ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कंसमर्दनाय स्वाहा।

११७.ॐ ह्रीँ वँ वटुक़ाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुरठवदनाय स्वाहा।

११८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कुशाय स्वाहा।

११९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधराय स्वाहा।

१२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधराधीशाय स्वाहा।

१२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवाय स्वाहा।

१२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवीप्रियाय स्वाहा।

१२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतात्माय स्वाहा।

१२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतपाय स्वाहा।

१२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूभृताय स्वाहा।

१२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भृगुजाय स्वाहा।

१२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूधरात्मजाय स्वाहा।

१२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भवसूनुभवाय स्वाहा।

१२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीरुर्भ्रामराय स्वाहा।

१३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतसम्भवाय स्वाहा।
१३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीषणाय स्वाहा।
१३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवीनाथाय स्वाहा।
१३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भगवते स्वाहा।
१३४.ॐ ह्रीँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भोगिभूषणाय स्वाहा।
१३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भस्मधारिणे स्वाहा।
१३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भ्रमहराय स्वाहा।
१३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
१३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भिक्षुकाय स्वाहा।
१३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भ्रूणहाय स्वाहा।
१४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतहाय स्वाहा।
१४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूताय स्वाहा।
१४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीताय स्वाहा।
१४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अभीताय स्वाहा।
१४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अभयङ्कराय स्वाहा।
१४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खरान्तकृत्याय स्वाहा।
१४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खर्पराशाय स्वाहा।
१४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खड्गपाणये स्वाहा।
१४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खलाप्रियाय स्वाहा।
१४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खण्डभूवे स्वाहा।
१५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खण्डपरशवे स्वाहा।
१५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खड्गाय स्वाहा।
१५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खट्वाङ्गाय स्वाहा।
१५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भृतखलाय स्वाहा।
१५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खेचराय स्वाहा।
१५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खेचरीनाथाय स्वाहा।
१५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खपुराय स्वाहा।
१५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खगनायकाय स्वाहा।

१५८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ खेलाप्रियाय स्वाहा।
१५९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ खातकीर्तये स्वाहा।
१६०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ खरनादाय स्वाहा।
१६१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ खरव्रताय स्वाहा।
१६२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ खेचरीकृताय स्वाहा।
१६३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ खेचरभृताय स्वाहा।
१६४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ खातीताय स्वाहा।
१६५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ खाण्डवाशनाय स्वाहा।
१६६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गान्धर्वगीताय स्वाहा।
१६७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गङ्गेशाय स्वाहा।
१६८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोपतये स्वाहा।
१६९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोपिकांपतये स्वाहा।
१७०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गर्विष्ठाय स्वाहा।
१७१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गर्वहाय स्वाहा।
१७२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गेयाय स्वाहा।
१७३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गौराय स्वाहा।
१७४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गौरीसुताय स्वाहा।
१७५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गुरवे स्वाहा।
१७६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गीर्वाणगीताय स्वाहा।
१७७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गीर्वाणाय स्वाहा।
१७८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गाढाय स्वाहा।
१७९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गाढान्धकारहाय स्वाहा।
१८०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गेयाय स्वाहा।
१८१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गरुडगाय स्वाहा।
१८२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोऽवाय स्वाहा।
१८३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गुप्ताय स्वाहा।
१८४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोप्ताय स्वाहा।
१८५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गराशनाय स्वाहा।

१८६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गजकृत्तिधराय स्वाहा।
१८७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गुञ्जाय स्वाहा।
१८८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गुञ्जाहारधराय स्वाहा।
१८९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गजाय स्वाहा।
१९०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गेयप्रियाय स्वाहा।
१९१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गह्वरगो स्वाहा।
१९२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गुञ्जस्थाय स्वाहा।
१९३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गुञ्जगायकाय स्वाहा।
१९४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोवर्द्धनधराय स्वाहा।
१९५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोष्ठरक्षकाय स्वाहा।
१९६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोकुलप्रियाय स्वाहा।
१९७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गम्भीराय स्वाहा।
१९८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोधनाय स्वाहा।
१९९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोपाय स्वाहा।
२००.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गोधाभृद्गाय स्वाहा।
२०१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गिरिजात्मज स्वाहा।
२०२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ गजदीशाय स्वाहा।
२०३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जनाध्यक्षाय स्वाहा।
२०४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जीवनदाय स्वाहा।
२०५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जीवनप्रियाय स्वाहा।
२०६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जीवानाय स्वाहा।
२०७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जीवनच्छेदाय स्वाहा।
२०८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जीवितात्माय स्वाहा।
२०९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जनार्दनाय स्वाहा।
२१०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जृम्भणाय स्वाहा।
२११.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जवये स्वाहा।
२१२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जीवाय स्वाहा।
२१३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ जैनाय स्वाहा।

२१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जैनजयङ्कराय स्वाहा।
२१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जपात्रियाय स्वाहा।
२१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जपासक्ताय स्वाहा।
२१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जापकाय स्वाहा।
२१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जापकार्थकृताय स्वाहा।
२१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जम्बूश्यामाय स्वाहा।
२२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जितक्रोधाय स्वाहा।
२२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जितारताय स्वाहा।
२२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जितासुराय स्वाहा।
२२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जम्बुकाय स्वाहा।
२२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जानकीये स्वाहा।
२२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जानिर्जटिलाय स्वाहा।
२२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जनमेजयाय स्वाहा।
२२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीर्णाय स्वाहा।
२२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जीर्णोज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
२२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जामदग्न्याय स्वाहा।
२३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जयप्रदाय स्वाहा।
२३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषकेतवे स्वाहा।
२३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषहराय स्वाहा।
२३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झिण्टीषाय स्वाहा।
२३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषभोजिताय स्वाहा।
२३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झङ्झरकारये स्वाहा।
२३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झम्पाय स्वाहा।
२३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषवानये स्वाहा।
२३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ झषवल्लभाय स्वाहा।
२३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मधुराय स्वाहा।
२४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मदिरामत्ताय स्वाहा।
२४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेघनादाय स्वाहा।

२४२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मृगाधिपाय स्वाहा।
२४३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मधुमत्ताय स्वाहा।
२४४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मद्यगन्धाय स्वाहा।
२४५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मेदस्वने स्वाहा।
२४६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मेघदीप्तये स्वाहा।
२४७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मोदनाय स्वाहा।
२४८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मेदिनीनाथाय स्वाहा।
२४९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मघवाय स्वाहा।
२५०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मण्डभूषणाय स्वाहा।
२५१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ माधुकरीप्रियाय स्वाहा।
२५२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मत्ताय स्वाहा।
२५३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मेधाविने स्वाहा।
२५४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मधुसूदनाय स्वाहा।
२५५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मदनाय स्वाहा।
२५६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मदनप्रीतये स्वाहा।
२५७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मुकुन्दाय स्वाहा।
२५८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मादनाय स्वाहा।
२५९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मरुतये स्वाहा।
२६०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मकाराय स्वाहा।
२६१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ माधवाय स्वाहा।
२६२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मीनाय स्वाहा।
२६३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मीनकेतवे स्वाहा।
२६४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महेश्वराय स्वाहा।
२६५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महेषवे स्वाहा।
२६६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मदनाय स्वाहा।
२६७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मन्थाय स्वाहा।
२६८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मिथुनेशाय स्वाहा।
२६९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ अमराधिपाय स्वाहा।

२७०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मरीचये स्वाहा।

२७१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मञ्जुलाय स्वाहा।

२७२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मोहाय स्वाहा।

२७३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मोहहाय स्वाहा।

२७४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मोहमर्दनाय स्वाहा।

२७५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मोहकाय स्वाहा।

२७६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मोहनाय स्वाहा।

२७७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मेघप्रियाय स्वाहा।

२७८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मोहविनाशकाय स्वाहा।

२७९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महीपतये स्वाहा।

२८०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महेशानाय स्वाहा।

२८१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महीराजाय स्वाहा।

२८२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मनोहराय स्वाहा।

२८३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महीश्वराय स्वाहा।

२८४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महीपालाय स्वाहा।

२८५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महीनाथाय स्वाहा।

२८६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महीप्रियाय स्वाहा।

२८७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महीधराय स्वाहा।

२८८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ महादेवाय स्वाहा।

२८९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मनुराजाय स्वाहा।

२९०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मनुप्रियाय स्वाहा।

२९१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मौनाय स्वाहा।

२९२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मौनधराय स्वाहा।

२९३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मेघाय स्वाहा।

२९४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मन्दिराय स्वाहा।

२९५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मतिवर्द्धनाय स्वाहा।

२९६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मतिदाय स्वाहा।

२९७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मन्थाराय स्वाहा।

२९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मन्त्राय स्वाहा।
२९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मन्त्रीशाय स्वाहा।
३००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मन्त्रनायकाय स्वाहा।
३०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेधाविने स्वाहा।
३०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मानदाय स्वाहा।
३०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मानाय स्वाहा।
३०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मानहाय स्वाहा।
३०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मानमर्दनाय स्वाहा।
३०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मीनगाय स्वाहा।
३०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मकराधीशाय स्वाहा।
३०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मधुराय स्वाहा।
३०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिरञ्जिताय स्वाहा।
३१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिरम्याय स्वाहा।
३११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिभ्राताय स्वाहा।
३१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिमण्डनाय स्वाहा।
३१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मणिमण्डिताय स्वाहा।
३१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मन्त्रपाय स्वाहा।
३१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मन्त्रदाय स्वाहा।
३१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मुग्धाय स्वाहा।
३१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोक्षदाय स्वाहा।
३१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मोक्षवल्लभाय स्वाहा।
३१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लाय स्वाहा।
३२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लप्रियाय स्वाहा।
३२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मञ्चाय स्वाहा।
३२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लकाय स्वाहा।
३२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मेलनाय स्वाहा।
३२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रभवे स्वाहा।
३२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लिकाय स्वाहा।

३२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लिकागन्धये स्वाहा।
३२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मल्लिकाकुसुमप्रियाय स्वाहा।
३२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मालतीशाय स्वाहा।
३२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मघानाथाय स्वाहा।
३३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अमोघमूर्तये स्वाहा।
३३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मघेश्वराय स्वाहा।
३३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ याचकाय स्वाहा।
३३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ याज्ञिकाय स्वाहा।
३३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्ञाय स्वाहा।
३३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्ञेशाय स्वाहा।
३३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यज्ञवर्द्धनाय स्वाहा।
३३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमापतये स्वाहा।
३३८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमाधीशाय स्वाहा।
३३९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रमेशाय स्वाहा।
३४०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रामवल्लभाय स्वाहा।
३४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धनेषाय स्वाहा।
३४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धूवाय स्वाहा।
३४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धूर्धीमाय स्वाहा।
३४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अन्धिषणाय स्वाहा।
३४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
३४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दाताय स्वाहा।
३४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दापयिताय स्वाहा।
३४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दुर्गाय स्वाहा।
३४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दान्ताय स्वाहा।
३५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दान्ताशयाय स्वाहा।
३५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दमाय स्वाहा।
३५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ देवाय स्वाहा।
३५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ देवाधिपाय स्वाहा।

३५४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दावाय स्वाहा।

३५५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दुःखहाय स्वाहा।

३५६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दुःखसेविताय स्वाहा।

३५७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दरिद्राय स्वाहा।

३५८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दारदाय स्वाहा।

३५९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दाराय स्वाहा।

३६०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ देवतात्माय स्वाहा।

३६१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दमये स्वाहा।

३६२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दयायै स्वाहा।

३६३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दण्डकृतये स्वाहा।

३६४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दण्डहाय स्वाहा।

३६५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दीप्ताय स्वाहा।

३६६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दीप्तकेशाय स्वाहा।

३६७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दयान्विताय स्वाहा।

३६८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दार्वीकराय स्वाहा।

३६९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दरीदीर्घाय स्वाहा।

३७०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दीपनाय स्वाहा।

३७१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दीपवल्लभाय स्वाहा।

३७२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दिगम्बराय स्वाहा।

३७३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दीर्घदंष्ट्राय स्वाहा।

३७४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दक्षिणाय स्वाहा।

३७५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दक्षिणोदराय स्वाहा।

३७६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दंष्ट्राय स्वाहा।

३७७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दंष्ट्रिप्रियाय स्वाहा।

३७८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दैत्याय स्वाहा।

३७९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दिव्याय स्वाहा।

३८०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दिव्यपराक्रमाय स्वाहा।

३८१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दैत्यहाय स्वाहा।

३८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दक्षिणार्हाय स्वाहा।
३८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दीर्घपृष्ठाय स्वाहा।
३८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दिवाकराय स्वाहा।
३८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घण्टावादये स्वाहा।
३८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनरवाय स्वाहा।
३८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनाभाय स्वाहा।
३८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घूत्कराय स्वाहा।
३८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनाय स्वाहा।
३९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घण्टापथाय स्वाहा।
३९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घटाय स्वाहा।
३९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घूकाय स्वाहा।
३९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घघ्वकराय स्वाहा।
३९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परिवारिताय स्वाहा।
३९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घणाय स्वाहा।
३९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घर्मांशाय स्वाहा।
३९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अघहराय स्वाहा।
३९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घातहाय स्वाहा।
३९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घातकारकाय स्वाहा।
४००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घोराय स्वाहा।
४०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनाय स्वाहा।
४०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घनोऽघीशाय स्वाहा।
४०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घस्मराय स्वाहा।
४०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ घोरघोषवानाय स्वाहा।
४०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छालगण्डेशाय स्वाहा।
४०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छलच्छेत्ताय स्वाहा।
४०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छत्रये स्वाहा।
४०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छातछवये स्वाहा।
४०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छलये स्वाहा।

४१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छागलाक्षाय स्वाहा।
४११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छदाय स्वाहा।
४१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छिन्नशाय स्वाहा।
४१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छुच्छुरिकशाय स्वाहा।
४१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छदाङ्कुराय स्वाहा।
४१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छन्दशाय स्वाहा।
४१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छन्दप्रियशाय स्वाहा।
४१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छन्दश्छिद्रुरशाय स्वाहा।
४१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ छद्महाय स्वाहा।
४१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीताय स्वाहा।
४२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तपनीयाय स्वाहा।
४२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रभाय स्वाहा।
४२२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ जटस्तरुणाय स्वाहा।
४२३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तरुणीप्रियाय स्वाहा।
४२४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तुन्दिलाय स्वाहा।
४२५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तपनाय स्वाहा।
४२६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तेयाय स्वाहा।
४२७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तोमराय स्वाहा।
४२८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तोमरप्रियाय स्वाहा।
४२९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तुष्काय स्वाहा।
४३०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तुरुष्काय स्वाहा।
४३१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तलभुक्ताय स्वाहा।
४३२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिमूर्तये स्वाहा।
४३३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा।
४३४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिशूलधाराय स्वाहा।
४३५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिशीर्षाय स्वाहा।
४३६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिपुराय स्वाहा।
४३७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिलोकपाय स्वाहा।

४३८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिनेत्राय स्वाहा।
४३९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिपुरावासाय स्वाहा।
४४०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तेजस्विने स्वाहा।
४४१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिदिवस्पतये स्वाहा।
४४२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिविक्रमाय स्वाहा।
४४३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तृणावर्त्ताय स्वाहा।
४४४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तृप्तिप्रियाय स्वाहा।
४४५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तमाय स्वाहा।
४४६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तमोपहाय स्वाहा।
४४७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तमिस्त्रेशाय स्वाहा।
४४८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिदशस्त्रीयाय स्वाहा।
४४९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्वराय स्वाहा।
४५०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तपाय स्वाहा।
४५१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
४५२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तिग्माय स्वाहा।
४५३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तमोमूर्तये स्वाहा।
४५४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तमोमयाय स्वाहा।
४५५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तापनाय स्वाहा।
४५६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ स्तोदाय स्वाहा।
४५७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रेताय स्वाहा।
४५८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ तारानाथाय स्वाहा।
४५९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४६०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ नित्याय स्वाहा।
४६१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ निरञ्जनाय स्वाहा।
४६२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ नेताय स्वाहा।
४६३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ नीतिज्ञाय स्वाहा।
४६४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ नयनवल्लभाय स्वाहा।
४६५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ नन्दनाय स्वाहा।

४६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निपुणाय स्वाहा।
४६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नम्राय स्वाहा।
४६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नम्रोऽनेमाय स्वाहा।
४६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ र्निमिमयाय स्वाहा।
४७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नागहाराय स्वाहा।
४७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नागपाशाय स्वाहा।
४७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नित्यकामाय स्वाहा।
४७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नातिप्रियाय स्वाहा।
४७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्ममाय स्वाहा।
४७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमनाय स्वाहा।
४७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नान्याय स्वाहा।
४७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नैगमाय स्वाहा।
४७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नैगमेश्वराय स्वाहा।
४७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नित्यक्लिन्नाय स्वाहा।
४८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नित्यनवाय स्वाहा।
४८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निरुद्धाय स्वाहा।
४८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नन्ददीपकाय स्वाहा।
४८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्मलाय स्वाहा।
४८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्मलाकाराय स्वाहा।
४८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ न्यस्तनिन्दाय स्वाहा।
४८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नदीश्वराय स्वाहा।
४८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नक्षत्रनाथाय स्वाहा।
४८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निगमाय स्वाहा।
४८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्गमाय स्वाहा।
४९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रम्भकाय स्वाहा।
४९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नवाय स्वाहा।
४९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निधीशाय स्वाहा।
४९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निरहङ्काराय स्वाहा।

४९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नानारूपाय स्वाहा।
४९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नमेरूकाय स्वाहा।
४९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नास्तिकाराय स्वाहा।
४९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नास्तिकहाय स्वाहा।
४९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निश्चिताय स्वाहा।
४९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निश्चिताशयाय स्वाहा।
५००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निश्चलाय स्वाहा।
५०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अनेकवदनाय स्वाहा।
५०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नाथाय स्वाहा।
५०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नारायणाय स्वाहा।
५०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नखाय स्वाहा।
५०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नरकघ्नाय स्वाहा।
५०६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नरकदाय स्वाहा।
५०७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलाय स्वाहा।
५०८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलालकाय स्वाहा।
५०९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अनलाय स्वाहा।
५१०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलाम्बराय स्वाहा।
५११.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलकण्ठाय स्वाहा।
५१२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलजीमूताय स्वाहा।
५१३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नीलजीमूतसन्निभाय स्वाहा।
५१४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पण्डिताय स्वाहा।
५१५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चवदनाय स्वाहा।
५१६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चमाय स्वाहा।
५१७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चमप्रियाय स्वाहा।
५१८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चयज्ञाय स्वाहा।
५१९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चवाताय स्वाहा।
५२०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चवित्ताय स्वाहा।
५२१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पविप्रियाय स्वाहा।

५२२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पञ्चश्लेष्माय स्वाहा।
५२३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पञ्चबाणाय स्वाहा।
५२४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पञ्चस्थानाय स्वाहा।
५२५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ परन्तपाय स्वाहा।
५२६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ परमायवे स्वाहा।
५२७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पराय स्वाहा।
५२८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्माय स्वाहा।
५२९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्मेशाय स्वाहा।
५३०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्मवल्लभाय स्वाहा।
५३१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्मनाभाय स्वाहा।
५३२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्ममुखाय स्वाहा।
५३३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्मपतये स्वाहा।
५३४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्मासनस्थिताय स्वाहा।
५३५.ॐ ह्रौँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्मजाय स्वाहा।
५३६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्मनिलयाय स्वाहा।
५३७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पद्मगन्धाय स्वाहा।
५३८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ परात्पराय स्वाहा।
५३९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पर्वताय स्वाहा।
५४०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पर्वताधाराय स्वाहा।
५४१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पारदाय स्वाहा।
५४२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पारदप्रियाय स्वाहा।
५४३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ दण्डधारिणे स्वाहा।
५४४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ भस्मलेपाय स्वाहा।
५४५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सदाय स्वाहा।
५४६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुक्कुरवाहनाय स्वाहा।
५४७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ परदारपराय स्वाहा।
५४८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रौढाय स्वाहा।
५४९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पटवे स्वाहा।

५५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डवे स्वाहा।

५५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डुरलोचनाय स्वाहा।

५५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पेटभृतये स्वाहा।

५५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पेटकृतये स्वाहा।

५५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पेटवे स्वाहा।

५५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पन्नगाय स्वाहा।

५५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पन्नगेश्वराय स्वाहा।

५५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डुहाय स्वाहा।

५५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाण्डुराय स्वाहा।

५५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिण्डीयाय स्वाहा।

५६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चभूताय स्वाहा।

५६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रशासनाय स्वाहा।

५६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पतङ्गाय स्वाहा।

५६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पक्षिराजाय स्वाहा।

५६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परलोकप्रदाय स्वाहा।

५६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रभवे स्वाहा।

५६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानदाय स्वाहा।

५६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानपाय स्वाहा।

५६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानये स्वाहा।

५६९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पानारुणाय स्वाहा।

५७०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विलोचनाय स्वाहा।

५७१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिशाचघ्नये स्वाहा।

५७२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिशाचेशाय स्वाहा।

५७३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिशिताशये स्वाहा।

५७४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पितामहाय स्वाहा।

५७५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिताय स्वाहा।

५७६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रतापवानाय स्वाहा।

५७७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाशये स्वाहा।

५७८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाशिनाथाय स्वाहा।
५७९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुप्रियाय स्वाहा।
५८०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुभोक्ताय स्वाहा।
५८१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुपतये स्वाहा।
५८२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशुप्रेष्ठाय स्वाहा।
५८३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पशूदराय स्वाहा।
५८४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पीनसाराय स्वाहा।
५८५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पिपासार्त्ताय स्वाहा।
५८६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पीडाकृताय स्वाहा।
५८७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पीडानाशनाय स्वाहा।
५८८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतघ्नाय स्वाहा।
५८९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतकुलपाय स्वाहा।
५९०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतवाहाय स्वाहा।
५९१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रकम्पनाय स्वाहा।
५९२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतनाथाय स्वाहा।
५९३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रेतपूज्याय स्वाहा।
५९४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पीतवासाय स्वाहा।
५९५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रजागराय स्वाहा।
५९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रजापतये स्वाहा।
५९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रजानाथाय स्वाहा।
५९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परिपूर्णाय स्वाहा।
५९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रियाय स्वाहा।
६००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अप्रियाय स्वाहा।
६०१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पर्जन्यकृताय स्वाहा।
६०२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रशमनाय स्वाहा।
६०३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परमाय स्वाहा।
६०४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परमास्पदाय स्वाहा।
६०५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रसन्नगाय स्वाहा।

६०६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रतिच्छन्नाय स्वाहा।

६०७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रतिभाकृताय स्वाहा।

६०८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ पूजिताय स्वाहा।

६०९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रमेहघ्नाय स्वाहा।

६१०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रमेहीयाय स्वाहा।

६११.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ मेहकृदाय स्वाहा।

६१२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रभाय स्वाहा।

६१३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रमाय स्वाहा।

६१४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रमादहाय स्वाहा।

६१५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रौढाय स्वाहा।

६१६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रौढिदाय स्वाहा।

६१७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रौढिवल्लभाय स्वाहा।

६१८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रेमदाय स्वाहा।

६१९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रमदाप्रेमाय स्वाहा।

६२०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रमदाय स्वाहा।

६२१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रमदाप्रियाय स्वाहा।

६२२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रकामदाय स्वाहा।

६२३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रकामेशाय स्वाहा।

६२४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्राणदाय स्वाहा।

६२५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्राणवल्लभाय स्वाहा।

६२६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्राणाधाराय स्वाहा।

६२७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रयागाय स्वाहा।

६२८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रयागनिलयप्रदाय स्वाहा।

६२९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ परिचाराय स्वाहा।

६३०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ परिवाराय स्वाहा।

६३१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रशान्ताय स्वाहा।

६३२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रतिभानवानाय स्वाहा।

६३३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रेयाय स्वाहा।

६३४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ अप्रेयाय स्वाहा।

६३५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ विनियोगाय स्वाहा।

६३६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रमथाय स्वाहा।

६३७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रियम्बदाय स्वाहा।

६३८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सारमेयानुगाय स्वाहा।

६३९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सीधवे स्वाहा।

६४०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ असीधवे स्वाहा।

६४१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सीधुपवल्लभाय स्वाहा।

६४२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सावधानाय स्वाहा।

६४३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ साधुपूज्याय स्वाहा।

६४४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सारमेयधराय स्वाहा।

६४५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ समाय स्वाहा।

६४६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।

६४७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सिद्धाय स्वाहा।

६४८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सिद्धिदाय स्वाहा।

६४९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सिद्धिसेविताय स्वाहा।

६५०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सामन्तभद्राय स्वाहा।

६५१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सन्तोषये स्वाहा।

६५२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्याय स्वाहा।

६५३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्यपराक्रमाय स्वाहा।

६५४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्यसङ्घाय स्वाहा।

६५५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्यवक्ताय स्वाहा।

६५६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्पदाय स्वाहा।

६५७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्यवल्लभाय स्वाहा।

६५८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्यभामापतये स्वाहा।

६५९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शुराय स्वाहा।

६६०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सम्पन्नाय स्वाहा।

६६१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सम्पदालयाय स्वाहा।

६६२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सरस्वानाय स्वाहा।
६६३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सागराय स्वाहा।
६६४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सेतवे स्वाहा।
६६५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सेतुकृताय स्वाहा।
६६६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सेतुपालकाय स्वाहा।
६६७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ समुद्रसीमासामन्ताय स्वाहा।
६६८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ स्मरारये स्वाहा।
६६९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्यसङ्गाय स्वाहा।
६७०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ स्मराय स्वाहा।
६७१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ स्मरप्रियाय स्वाहा।
६७२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ स्मेराय स्वाहा।
६७३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ स्मरदाय स्वाहा।
६७४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ स्मरसुन्दराय स्वाहा।
६७५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ समिद्धाय स्वाहा।
६७६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सम्मदाय स्वाहा।
६७७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सिन्धवे स्वाहा।
६७८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सामगाय स्वाहा।
६७९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सामगार्चिताय स्वाहा।
६८०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ समयाय स्वाहा।
६८१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ समयाचाराय स्वाहा।
६८२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शङ्करप्रियवान्धवाय स्वाहा।
६८३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सम्मोहदाय स्वाहा।
६८४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ संशयदाय स्वाहा।
६८५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ संशयघ्नाय स्वाहा।
६८६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ समुद्धताय स्वाहा।
६८७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सोमाय स्वाहा।
६८८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सोमधराय स्वाहा।
६८९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सौम्याय स्वाहा।

६९०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ असौम्याय स्वाहा।
६९१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
६९२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुन्दराय स्वाहा।
६९३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुन्दराधाराय स्वाहा।
६९४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुरापाय स्वाहा।
६९५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुरसाय स्वाहा।
६९६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुराय स्वाहा।
६९७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुरासक्ताय स्वाहा।
६९८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुरामोदाय स्वाहा।
६९९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुरापालाय स्वाहा।
७००.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुराप्रियाय स्वाहा।
७०१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वर्गस्वर्गपतये स्वाहा।
७०२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वर्गाय स्वाहा।
७०३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वर्गदाय स्वाहा।
७०४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वर्गवल्लभाय स्वाहा।
७०५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुखये स्वाहा।
७०६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सुखाकराय स्वाहा।
७०७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सौख्यसिन्धवे स्वाहा।
७०८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सिन्धुनायकाय स्वाहा।
७०९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सारस्वताय स्वाहा।
७१०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वानुभूताय स्वाहा।
७११.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वानुभावाय स्वाहा।
७१२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वनोध्रुवाय स्वाहा।
७१३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वयंभूवे स्वाहा।
७१४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ कुसुमामोदाय स्वाहा।
७१५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ स्वयंभूकुसुमप्रियाय स्वाहा।
७१६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ समयाय स्वाहा।
७१७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ सर्वतोभद्राय स्वाहा।

७१८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वतत्त्वाय स्वाहा।

७१९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सरोवराय स्वाहा।

७२०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सरीसृपाधीशाय स्वाहा।

७२१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ समाराध्याय स्वाहा।

७२२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ समामयाय स्वाहा।

७२३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सन्तानन्दाय स्वाहा।

७२४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सत्त्वदाताय स्वाहा।

७२५.ॐ ह्रौँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सरोजाक्षाय स्वाहा।

७२६.ॐ ह्रौँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सरोजभूताय स्वाहा।

७२७.ॐ ह्रौँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।

७२८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सारये स्वाहा।

७२९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सरोजनयनप्रियाय स्वाहा।

७३०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सुपर्वनाथाय स्वाहा।

७३१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वज्ञाय स्वाहा।

७३२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वगाय स्वाहा।

७३३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वदीपनाय स्वाहा।

७३४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्मशानवासाय स्वाहा।

७३५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ स्तम्भयै स्वाहा।

७३६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्पयुक्ताय स्वाहा।

७३७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सहस्त्रादृकाय स्वाहा।

७३८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सहस्त्रदाय स्वाहा।

७३९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सहस्त्राङ्घ्राय स्वाहा।

७४०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सहस्त्रकिरणप्रभाय स्वाहा।

७४१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शौरये स्वाहा।

७४२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शम्भुसुताय स्वाहा।

७४३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शम्भुवे स्वाहा।

७४४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शिवाय स्वाहा।

७४५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शूलाय स्वाहा।

७४६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शवासनाय स्वाहा।

७४७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्रीकण्ठाय स्वाहा।

७४८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शितिकण्ठाय स्वाहा।

७४९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्रीपतये स्वाहा।

७५०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्रीनिकेतनाय स्वाहा।

७५१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्रेयोनिधये स्वाहा।

७५२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शङ्कराय स्वाहा।

७५३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वाय स्वाहा।

७५४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ सर्वात्मजाय स्वाहा।

७५५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शमाय स्वाहा।

७५६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शतानन्दाय स्वाहा।

७५७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शशधराय स्वाहा।

७५८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शबराय स्वाहा।

७५९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शबरीसुताय स्वाहा।

७६०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शोभनाय स्वाहा।

७६१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शोभनावासाय स्वाहा।

७६२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शोकहाय स्वाहा।

७६३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शोकनाशनाय स्वाहा।

७६४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शतानन्दाय स्वाहा।

७६५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शूलपाणये स्वाहा।

७६६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शुचये स्वाहा।

७६७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शौचपराय स्वाहा।

७६८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शुभाय स्वाहा।

७६९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शिखिसखाय स्वाहा।

७७०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्रुतिधराय स्वाहा।

७७१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्रुतिगीताय स्वाहा।

७७२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ श्रुतिप्रियाय स्वाहा।

७७३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शुद्धाशयाय स्वाहा।

७७४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शुद्धिकराय स्वाहा।
७७५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शुद्धाय स्वाहा।
७७६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शुद्धजनाय स्वाहा।
७७७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रियाय स्वाहा।
७७८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शोणाय स्वाहा।
७७९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शोणधराय स्वाहा।
७८०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शोणनेत्राय स्वाहा।
७८१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शोणाङ्गरागभृताय स्वाहा।
७८२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शीताय स्वाहा।
७८३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शीताशयाय स्वाहा।
७८४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शौण्डाय स्वाहा।
७८५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शौण्डिकाय स्वाहा।
७८६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शौण्डिकप्रियाय स्वाहा।
७८७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शाड्यहाय स्वाहा।
७८८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शाड्यदाय स्वाहा।
७८९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शार्ङ्गये स्वाहा।
७९०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शरीरये स्वाहा।
७९१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शरणदाय स्वाहा।
७९२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शिशवे स्वाहा।
७९३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
७९४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शान्तिदाय स्वाहा।
७९५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शान्तये स्वाहा।
७९६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शाकाय स्वाहा।
७९७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शाकम्भरीयाय स्वाहा।
७९८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शङ्कितात्र स्वाहा।
७९९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ शङ्कितानताय स्वाहा।
८००.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हराय स्वाहा।
८०१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हरये स्वाहा।

८०२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हयग्रीवाय स्वाहा।

८०३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हयारिकुसुमप्रियाय स्वाहा।

८०४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हेरम्बाय स्वाहा।

८०५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हयमेधये स्वाहा।

८०६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हेषणाय स्वाहा।

८०७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हरवल्लभाय स्वाहा।

८०८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हव्यवाहाय स्वाहा।

८०९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हुतवहाय स्वाहा।

८१०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हारये स्वाहा।

८११.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हारीतपूजिताय स्वाहा।

८१२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हिन्स्त्रहाय स्वाहा।

८१३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हिन्स्त्रयाय स्वाहा।

८१४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हन्तये स्वाहा।

८१५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हेलानाय स्वाहा।

८१६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हलायुधाय स्वाहा।

८१७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हिरण्यरेताय स्वाहा।

८१८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हरिणाक्षाय स्वाहा।

८१९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हरिप्रियाय स्वाहा।

८२०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हिमाय स्वाहा।

८२१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हिमालयचराय स्वाहा।

८२२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हिमधामाय स्वाहा।

८२३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ विभूषणाय स्वाहा।

८२४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हेममालाय स्वाहा।

८२५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हेमकान्तये स्वाहा।

८२६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हिमाचलकृतालयाय स्वाहा।

८२७.ॐ ह्रौँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हारकाय स्वाहा।

८२८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ हारशालाय स्वाहा।

८२९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ होताय स्वाहा।

८३०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ होमाय स्वाहा।

८३१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ हुतिर्हयाय स्वाहा।

८३२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यशप्रदाय स्वाहा।

८३३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यशोवृद्धाय स्वाहा।

८३४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यशसाय स्वाहा।

८३५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ निधये स्वाहा।

८३६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यज्वाय स्वाहा।

८३७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यजनकामाय स्वाहा।

८३८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यजुर्यजनतत्पराय स्वाहा।

८३९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यमाय स्वाहा।

८४०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यमभयध्वंसये स्वाहा।

८४१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यमवन्द्याय स्वाहा।

८४२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यमान्तकृताय स्वाहा।

८४३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यज्ञभोक्ताय स्वाहा।

८४४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यज्ञकराय स्वाहा।

८४५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यवनाय स्वाहा।

८४६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यवनोद्धताय स्वाहा।

८४७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यवप्रियाय स्वाहा।

८४८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यौवनाढ्याय स्वाहा।

८४९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ युवतीवल्लभाय स्वाहा।

८५०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यवये स्वाहा।

८५१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यामलाधीशाय स्वाहा।

८५२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यशोदानन्दवर्धनाय स्वाहा।

८५३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ योद्धाय स्वाहा।

८५४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ युद्धप्रियाय स्वाहा।

८५५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यूपाय स्वाहा।

८५६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ यौक्तिकाय स्वाहा।

८५७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ योगिनीपतये स्वाहा।
८५८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ योगीगम्याय स्वाहा।
८५९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ योगीश्वराय स्वाहा।
८६०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ योक्त्राय स्वाहा।
८६१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ योगिराजाय स्वाहा।
८६२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ योगिसेविताय स्वाहा।
८६३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रतिप्रदाय स्वाहा।
८६४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रतिकराय स्वाहा।
८६५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रतिनाथाय स्वाहा।
८६६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रतिप्रदाय स्वाहा।
८६७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रमणीयाय स्वाहा।
८६८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रमानाथाय स्वाहा।
८६९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रजनीशाय स्वाहा।
८७०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रमेश्वराय स्वाहा।
८७१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रससिद्धिश्वराय स्वाहा।
८७२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रम्याय स्वाहा।
८७३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रसज्ञाय स्वाहा।
८७४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रसपूजिताय स्वाहा।
८७५.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रञ्जनाय स्वाहा।
८७६.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रोचनाय स्वाहा।
८७७.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रागाय स्वाहा।
८७८.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रोगाय स्वाहा।
८७९.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रोगकुलान्तकृताय स्वाहा।
८८०.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रासाय स्वाहा।
८८१.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रासप्रियाय स्वाहा।
८८२.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रत्नाय स्वाहा।
८८३.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रङ्गाय स्वाहा।
८८४.ॐ ह्लौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लौँ रङ्गकृतास्पदाय स्वाहा।

८८५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रक्तपाय स्वाहा।
८८६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रक्तनयनाय स्वाहा।
८८७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ नक्तदाय स्वाहा।
८८८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रक्तनाशनाय स्वाहा।
८८९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रुरुभैरवाय स्वाहा।
८९०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रुद्राय स्वाहा।
८९१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रौद्रमुखाय स्वाहा।
८९२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ राजाय स्वाहा।
८९३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ राजीववर्द्धनाय स्वाहा।
८९४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रसाय स्वाहा।
८९५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रत्यै स्वाहा।
८९६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रसाधाराय स्वाहा।
८९७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रसालाय स्वाहा।
८९८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ रविलोचनाय स्वाहा।
८९९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लोकनाथाय स्वाहा।
९००.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लोकचक्ष्वे स्वाहा।
९०१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लक्षिताय स्वाहा।
९०२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ ललितात्मजाय स्वाहा।
९०३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लम्बोदराय स्वाहा।
९०४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लम्बदंष्ट्राय स्वाहा।
९०५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लोलाय स्वाहा।
९०६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लोलविलोचनाय स्वाहा।
९०७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लोहिताक्षाय स्वाहा।
९०८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लोहितपाय स्वाहा।
९०९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लालपाय स्वाहा।
९१०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लालनप्रियाय स्वाहा।
९११.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लेलिहानाय स्वाहा।
९१२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ ललजिह्वाय स्वाहा।

९१३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ लक्ष्मीनाथाय स्वाहा।
९१४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ कुलायुगाय स्वाहा।
९१५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
९१६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
९१७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षत्रियाय स्वाहा।
९१८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षेत्रपाय स्वाहा।
९१९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षमीकराय स्वाहा।
९२०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षमाधाराय स्वाहा।
९२१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षौमधराय स्वाहा।
९२२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षेमकाराय स्वाहा।
९२३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षयापहाय स्वाहा।
९२४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षपापतिधराय स्वाहा।
९२५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षुद्राय स्वाहा।
९२६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षान्ताय स्वाहा।
९२७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षान्तजनप्रियाय स्वाहा।
९२८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षितिदाय स्वाहा।
९२९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षतिदाय स्वाहा।
९३०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षौद्राय स्वाहा।
९३१.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ प्रियाय स्वाहा।
९३२.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षीरप्रियाय स्वाहा।
९३३.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ अक्षयाय स्वाहा।
९३४.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षोभहाय स्वाहा।
९३५.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षोभदाय स्वाहा।
९३६.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ अक्षोभ्याय स्वाहा।
९३७.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षिप्रसिद्धाप्रदाय स्वाहा।
९३८.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षुपाय स्वाहा।
९३९.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षेकराय स्वाहा।
९४०.ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ क्षौद्रपिङ्गाय स्वाहा।

९४१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षामशत्रवे स्वाहा।
९४२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षुधाकराय स्वाहा।
९४३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षोभणाय स्वाहा।
९४४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षीरदाय स्वाहा।
९४५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षीरग्ये स्वाहा।
९४६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षवकाय स्वाहा।
९४७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षवदोषहाय स्वाहा।
९४८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आन्त्रयज्ञोपवीतीशाय स्वाहा।
९४९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अजगराय स्वाहा।
९५०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अग्निहराय स्वाहा।
९५१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रहये स्वाहा।
९५२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्दवे स्वाहा।
९५३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्द्रियाय स्वाहा।
९५४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विन्दवे स्वाहा।
९५५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्द्रेभाय स्वाहा।
९५६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्द्रयाय स्वाहा।
९५७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ईश्वराय स्वाहा।
९५८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डिम्भाय स्वाहा।
९५९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊर्जस्वलाय स्वाहा।
९६०.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वस्तये स्वाहा।
९६१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ स्वाहाभुक्ताय स्वाहा।
९६२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भुरुरर्जुकाय स्वाहा।
९६३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ज्ञानचक्षुषाय स्वाहा।
९६४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊर्ध्वरिताय स्वाहा।
९६५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दशदिक्पालपालकाय स्वाहा।
९६६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शाकिनेयाय स्वाहा।
९६७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डाकिनेयाय स्वाहा।
९६८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ राकिनेयाय स्वाहा।

९६९.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ काकिनेयाय स्वाहा।

९७०.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ लाकिनेयाय स्वाहा।

९७१.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ साकिनेयाय स्वाहा।

९७२.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ हाकिनेयाय स्वाहा।

९७३.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ पञ्चाशद्वर्णतनवे स्वाहा।

९७४.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ षडाधाराय स्वाहा।

९७५.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ षडध्वाय स्वाहा।

९७६.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ अष्टाधाराय स्वाहा।

९७७.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ अष्टमूर्तये स्वाहा।

९७८.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ ब्रह्मरंध्राय स्वाहा।

९७९.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ कृतालयाय स्वाहा।

९८०.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ सहस्त्रपत्रभवनाय स्वाहा।

९८१.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ द्विपत्रपरमास्पदाय स्वाहा।

९८२.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ षोडशारकृतावासये स्वाहा।

९८३.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ द्वादशच्छदमण्डनाय स्वाहा।

९८४.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ दशारकृताय स्वाहा।

९८५.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ विश्रामाय स्वाहा।

९८६.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ षडाराय स्वाहा।

९८७.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ विहितादराय स्वाहा।

९८८.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ चतुर्दलविकासाय स्वाहा।

९८९.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ चतुरस्त्राय स्वाहा।

९९०.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ विनोदनाय स्वाहा।

९९१.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ इडाधाराय स्वाहा।

९९२.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ सुषुम्णेशाय स्वाहा।

९९३.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ पिङ्गलाय स्वाहा।

९९४.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ परिवारिताय स्वाहा।

९९५.ॐ ह्लीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्लीँ संसारसाक्षये स्वाहा।

९९६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चिद्रूपाय स्वाहा।
९९७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ परमात्माय स्वाहा।
९९८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सदाशिवाय स्वाहा।
९९९.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पञ्चविंशतितत्त्वात्माय स्वाहा।
१०००.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विकृताय स्वाहा।
१००१.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ प्रकृतये स्वाहा।
१००२.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पराऽपराय स्वाहा।
१००३.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अव्यक्ताय स्वाहा।
१००४.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अव्ययाय स्वाहा।
१००५.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हंसाय स्वाहा।
१००६.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नादाय स्वाहा।
१००७.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सत्त्वात्मकाय स्वाहा।
१००८.ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ विभवे स्वाहा।

मूल मन्त्र से नवाहुति प्रदान कर आज्य त्याग करके किसी पात्र में दूध तथा जल मिला कर तर्पण कर आत्मा में इष्ट बुद्धि से मार्जन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकभैरवं तर्पयामि। हवन सङ्ख्या का दशांश जैसे दस माला हवन का एक माला तर्पण करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकभैरवं अभिषिञ्चामि। तर्पण का दशांश जैसे एक माला तर्पण का दस मन्त्र से मार्ज करे।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।

ॐ स्वः स्वाहा इदं सोमाय न मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम।

व्याहृति त्रय से आहुति प्रदान कर मूर्ति में देवी का नियोजन करके संहार मुद्रा से अग्नि को विसर्जित करे, देवी की आचमनादि से पूजन कर चामरादि डुला कर स्तुतिपाठादि करके प्रदक्षिणा कर दण्डवत् प्रणम करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणां पदे पदे॥

कर्म को अधोलिखित मन्त्र से आत्मसमर्पण करे।

ॐ ह्रीँ वँ इतः पूर्वं पापबुद्धिं देवधर्माधिकारतो जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु मनसावाचाहस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा मां मदीयं च सकलं देवताय ते समर्पये ॐ तत्सत्।

कर्म ब्रह्मार्पण करके प्राणायामादि करके पुष्पाक्षतादि से उत्तरपूजन कर क्षमापन करे।

क्षमाप्रार्थना

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नो भव सर्वदा॥१॥

हे परमेश्वर! अज्ञानवश, विस्मृतिवश और भ्रान्तिवश जो कोई कार्य इस पुरश्चरण में कम या ज्यादा हो गया अथावा विपरीत हो गया उसे हमें क्षमा कर दें॥१॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं सुरेश्वर।
सम्पूजिता मया देव तस्मात्त्वं वरदा भव॥२॥

हे देवताओं के ईश्वर! मन्त्र, क्रिया तथा भक्ति से हीन जो भी पूजन किया है, वह हमारी पूजा अपकी कृपा से पूर्ण हो जाये॥२॥

आवाहनं च पूजां च त्वन्माहात्म्यं जपं तथा।
विसर्जनं न जानामि भैरवं त्वं क्षमस्व मे॥३॥

हे परमेश्वर! आपके आवाहन, पूजा, जप, माहात्म्यश्रवणकीर्तन, तथा विसर्जन नहीं जानता, पूजा भी नही जानता हूँ, अत: हे भैरव हमें क्षमा करें॥३॥

यदक्षरं पदभ्रष्टं स्वरव्यञ्जनवर्जितम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीदपरमेश्वर॥४॥

हे परमेश्वर! आपके पूजन में स्तुति पाठादि में यो कोई अक्षर तथा पद उच्चारण करने में भ्रष्ट हो गये हो तथा स्वरव्यञ्ज्ञन में त्रुटि हो गयें हों हे भैरव! उन सबकों क्षमा कर दें॥४॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति प्रसीद परमेश्वर॥५॥

हे परमेश्वर! आपके ध्यान, पूजा, तप, यज्ञादि क्रियाओं में तथा सहस्रनामादि स्तुतिपाठ में जो कोई न्यूनता हो गयी हो हे देव! वह आपकी कृपा से पूर्णता को प्राप्त हो जाये तथा आप हमारे ऊपर प्रसन्न हो जायें॥५॥

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां सर्वं प्रसीद परमेश्वर॥६॥

हे समस्त कामनाओं को पूरा करनेवाले! हे सम्पूर्ण जगत् के पिता! हे सच्चिदानन्द विग्रह स्वरूप! आप हमारी समस्त पूजा अर्चनाओं को ग्रहण करके प्रसन्न हो जायें॥६॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥७॥

हे परमेश्वर! मैं आवाहन तथा विसर्जन नहीं जानता, पूजा भी नहीं जानता हूँ, अत: हमें क्षमा करें।।७।।

जपच्छिद्रं तपःच्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिन्द्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥८॥

हे परमेश्वर! हमारे द्वारा किये गये जप, तप तथा शान्ति कर्म के जो कोई दोष रह गया हों वे सभी दोष ब्राह्मणों की कृपा से समाप्त हो जाये और हमारा कार्य पूर्ण हो जाये।।८।।

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर॥९॥

हे परमेश्वर! आपके प्रति अहर्निश दिनरात सहस्रों अपराध कियें है, आप अपना दास समझ करके हमें क्षमा कर दें।।९।।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥१०॥

हे परमेश्वर! ज्ञान में, अज्ञान में, जो कुछ भी हमने आपके प्रति कम तथा अधिक कार्य किया हो, उस सभी को क्षमा करके हमारे ऊपर प्रसन्न हो जायें।।१०।।

कर्मणामनसावाचा पुनश्चर्या मयाकृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीदपरमेश्वर॥११॥

कर्म से, मन से, वचन से हमने सपर्या में जो कुछ किया उससे सन्तुष्ट होकर हमारे ऊपर प्रसन्न हो जायें।।११।।

योनिमुद्रा से प्रणाम कर साष्टाङ्ग दण्डवत् करे।

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वर।
पूजाराधनकालेऽपि पुनरागमनाय च॥

हे परमेश्वर! आप हमारी पूजा को ग्रहण कर अपने धाम को पधारें तथा पुन: हमारे द्वारा किये गये पूजा अर्चना के समय उपस्थित हो जायें।

मूल मन्त्र से आधान कर संहार मुद्रा से देव को अग्नि में से अपने हृदय में स्थापित करके चण्डेश्वर को उच्छिष्ट भाग समर्पण करे।

ॐ ह्रीँ चण्डेश्वराय नमः उच्छिष्टभागं तुभ्यं सम्प्रददे। ईशान कोण में चण्डेश्वर का पूजन कर उच्छिष्ट नैवेद्यादि को चण्डेश्वर के लिए प्रदान कर प्रार्थना करे।

प्रार्थना

चण्डेश्वर महादेव! निर्माल्यैश्चन्दनादिभिः।
लेह्यचोष्यान्नपानादिनिर्माल्यस्रग्विलेपनैः ॥

मया यद्यत्कृतं देवं भैरवस्य महात्मनः।
निर्माल्यभोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया॥

हे महादेव के गण चण्डेश्वर! हमने महादेव महात्मा वटुकभैरव की आराधना में प्रयुक्त लेह्य, चोष्यान्नपानादि तथा अनुलेपनार्थ चन्दनादि जो कुछ निर्माल्य है सभी निर्माल्य भोजी आपकों श्रीशिव की आज्ञा से अर्पित करता हूँ ग्रहण करके प्रसन्न हो जायें।

प्रार्थना के बाद कुमारियों तथा सुवासिनियों का पूजन कर, उनको भोजन कराने के बाद, ब्राह्मणों को भोजन कराकर, दक्षिणादि से सन्तुष्ट करने के पश्चात् सपरिवार स्वयं भोजन करे।

हवनप्रकरणं परिपूर्णम्

◆

कुमारी सुवासिनी-पूजनम्

पूजागृह में सुवासिनी को लाकर प्रदक्षिणा करके, उद्वर्तनादि से स्नपन कराकर वस्त्रादि से अलङ्कृत करके पीठ पर समावेशित कर, अपने षडङ्गादि न्यास कर पूजनीया कुमारी का न्यास करे।

ॐ ह्रीँ वँ क्लाँ कुमारीकारिके हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीँ वँ क्लीँ कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रीँ वँ क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट्।
ॐ ह्रीँ वँ क्लैँ कुलकुमारिके कवचाय हुम्।
ॐ ह्रीँ वँ क्लौँ कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रीँ वँ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।

षडङ्ग न्यास के बाद कुमारी के तत्तत् अङ्गों पर मातृका न्यास करे।

ॐ ह्रीँ वँ अँ नमः कुलकुमारिके शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ आँ नमः कुलकुमारिके मुखे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ इँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ईँ नमः कुलकुमारिके वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ उँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऊँ नमः कुलकुमारिके वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऋँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ॠँ नमः कुलकुमारिके वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऌँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ॡँ नमः कुलकुमारिके वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ एँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ऐँ नमः कुलकुमारिके अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ओँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ औँ नमः कुलकुमारिके अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ अँ नमः कुलकुमारिके जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ अः नमः कुलकुमारिके कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ कँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ खँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ गँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ घँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ङँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ चँ नमः कुलकुमारिके वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ छँ नमः कुलकुमारिके वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ जँ नमः कुलकुमारिके वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ झँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ञँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ टँ नमः कुलकुमारिके दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ठँ नमः कुलकुमारिके दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ डँ नमः कुलकुमारिके दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ ढँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ णँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ तँ नमः कुलकुमारिके वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ थँ नमः कुलकुमारिके वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ दँ नमः कुलकुमारिके वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ धँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ नँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ पँ नमः कुलकुमारिके दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ फँ नमः कुलकुमारिके वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ बँ नमः कुलकुमारिके पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ भँ नमः कुलकुमारिके नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ मँ नमः कुलकुमारिके उदरे न्यस्यामि।
ॐ ह्रीँ वँ यँ नमः कुलकुमारिके हृदये न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ नमः कुलकुमारिके दक्षांसे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ लँ नमः कुलकुमारिके ककुदि न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ वँ नमः कुलकुमारिके वामांसे न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ शँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ षँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ सँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ हँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ लँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्षँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

ध्यानम्

शङ्खेन्दुधवलां दिव्यां द्विभुजां वरदाभयाम्।
चन्द्रमध्यमहामोजभावहावविराजिताम् ॥

शङ्ख के समान धवल तथा इन्दू के समान कान्तिमति, दो भुजाओंवाली तथा दोनों भुजाओं में वर तथा अभय मुद्राओं को धारण करनेवाली, चन्द्र मण्डल के मध्य महा तेजस्विनी भावात्मक रूप से विराजमान आपको नमन करता हूँ।

ध्यान करके पूजन करे—

ॐ ह्रीँ वँ इदं पाद्यं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ इदमर्घ्यं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ इदमाचमनीयं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ इदमनुलेपनं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ एते अक्षताः कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ एतानि पुष्पाणि कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ एष धूपं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ एष दीपः कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ इदं नैवेद्यं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ इदं ताम्बूलं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ इदं फलं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ एषा दक्षिणा कुलकुमारिकायै नमः।

पूजन के बाद प्रार्थना करे—

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोस्तु ते॥१॥

जगत्पूज्य, सम्पूर्ण जगत् में वन्द्य, सर्वशक्तिस्वरूपिणी, जगन्माता कौमारि पूजन ग्रहण करें, आपको नमस्कार है॥१॥

त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥२॥

त्रिपुरा देवी, सत्त्वरजतम तीन गुणोंवाली, सबको धारण करनेवाली, ज्ञानमार्गस्वरूपवाली, तीनों लोकों में वन्दित, त्रिमूर्ति रूपिणी देवी का मैं पूजन करता हूँ॥२॥

कलात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥३॥

षोडश कलावाली, काल को भी भयभीत करनेवाली, करुणामयी, शिव के हृदय में रहनेवाली शिवा, करुणामयी जननी, हमेशा वर्तमान रहनेवाली कल्याणी देवी की मैं पूजा करता हूँ॥३॥

अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ।
शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥४॥

अणिमादि सिद्धियों को प्रदान करनेवाली, गुणों की खान, अकारादि स्वर रूपवाली, शक्ति की ही एक भेद रूप लक्ष्मी तथा रोहिणी देवी की मैं पूजा करता हूँ॥४॥

कलाधारां कलारूपां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्॥५॥

षोडश कलाओं को धारण करनेवाली, कलाओं के रूपवाली, कालचक्र स्वरूपिणी, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, सदैव करुणा की वर्षा करनेवाली, कामिनी देवी की मैं पूजा करता हूँ॥५॥

चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनासिनीम्।
प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥६॥

चण्डधारा, चण्डमायारूपिणी, चण्डमुण्ड का विनाश करनवाली, देवताओं की ईश्वरी चण्डिका देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ॥६॥

सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाङ्करीं प्रणमाम्यहम्॥७॥

सुख और आनन्द को देनेवाली, शान्त रूप में स्थित, समस्त देवताओं के द्वारा पूज्य, सभी भूतों में व्याप्त रहनेवाली, शाङ्करी देवी की पूजा करता हूँ॥७॥

दुर्गमे दुःस्तरे चैव दुःखत्रयविनासिनीम्।
पूजयामि सदाभक्त्या दुर्गां दुर्गेनमाम्यहम्॥८॥

दुर्गम, दुस्तर, दुःख त्रय (आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक) का विनाश करने वाली, दुर्गादेवी की मैं भक्ति पूर्वक पूजन करता हूँ, दुर्गा देवी को नमस्कार है॥८॥

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्॥९॥

सोने के रंग की आभा के सदृश सुन्दर, सुखसौभाग्य को देनेवाली, सुभद्र की जननी सुभद्रा देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ॥९॥

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ हंसः कुलकुमारिकाश्रीपादुकां पूजयामि। प्रार्थना के बाद तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर पीठ नायिकाओं का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ सन्ध्यायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वत्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ त्रिमूर्त्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ कालिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ सुभगायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ उमायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ कुब्जिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ कालसङ्कर्षिण्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ अपराजितायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ भैरव्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ महालक्ष्म्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ पीठनायिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रज्ञायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ चर्चिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ

ॐ ह्रीँ वँ

मूलमन्त्र से वटुकभैरव को पुष्पाञ्जलि प्रदान कर प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम कर कुमारीस्तोत्र पाठ करे।

कुमारीपूजनं परिपूर्णम्

◆

कुमारीस्तोत्रम्

जयकाली महाभीमे भीमरावे भयापहे।
संसारदावाग्निशिखे वृजिनार्णवतारिणि॥१॥
ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रभूतेशप्रभृत्यमरवन्दिते ।
सर्गपालनसंहारकारिण्याहितकारिणि ॥२॥
गुह्यकालि परानन्दरसपूरितविग्रहे।
परब्रह्मरसास्वादकैवल्यानन्ददायिनि ॥३॥
सुरतितेऽपि सगुणे महाकल्पान्तनर्तकि।
कुमारीरूपमास्थाय विज्ञे प्रज्ञास्वरूपिणि॥४॥
आगतोसि ममागारं शरद्यर्चासमाप्यते।
सांवत्सरिककल्याणसूचनाय तथैव च॥५॥
धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि सफलं जीविनं मम।
यस्मात् त्वमीदृशं कृत्वा कौमारं रूपमुत्तमम्॥६॥
गुह्यकाली समायाताब्दिकपूजाजिघृक्षया।
त्वेमेवेतेन रूपेण देवेभ्यः प्रार्थिता पुरा॥७॥
दत्तवत्यसि साम्राज्यं वरानपि समीहितान्।
मह्यमप्यद्य देवेशि वरं पुरा दत्तवत्यसि॥८॥
विष्णवे च त्वमेवादास्तथा पालनशक्तिताम्।
महारुद्राय संहारकर्तृत्वमददः शिवे॥९॥
देवेभ्यश्चापि दैत्यानां नाशने दक्षतामपि।
अन्तर्यामिन्यमीशानि त्रिलोकीवासिनामपि॥१०॥
अन्तार्यामि किं तेऽहं सर्वकर्मैकसाक्षिणी।
शत्रुनाशं राज्यलाभं शरीरारोग्यमेव च॥११॥
त्वत्पादाम्बुजयोर्भक्तिं याचेऽहं चतुरो वरान्।
नमस्ते भगवत्यम्ब नमस्ते भक्तवत्सले॥१२॥
नमस्ते जगदाधाररूपिणि त्राहि मां सदा।
मातर्नवेद्मि रूपं ते न शरीरं न वा गुणम्॥१३॥
भक्त्या हृत्स्थितया पूजां तव जानाम्यनन्यधीः।
त्वं माता त्वं पिता बन्धुस्त्वमेव जगदीश्वरि॥१४॥
त्वं गतिः शरणं त्वं च स्वर्गस्त्वं मोक्ष एव च।
विहाय त्वां जगन्मातार्नान्या जानामि देवताम्॥१५॥
नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमो नमः।
एभिः श्लोकैः स्तुतिं कुर्यात् कुमारीणां वरानने॥१६॥

पूजनविधिः

दद्यादाचमनीयं हि भोजनान्ते गतत्वरः।
ततः प्रदद्यात् ताम्बूलं मृगचन्द्राधिवासितम्॥१७॥
सह वाद्यादिभिस्तावदनुव्रज्य विसर्जयेत्।
कुमारीभोजनचेष्टाभ्यां शुभाशुभफलभवेत्॥१८॥

कुमारीस्तोत्रं परिपूर्णम्

शुभाशुभफलम्

शुभाशुभफलं वच्मि साम्प्रतं तव पार्वति।
तत्राप्यादौ शुभं वक्ष्ये विपरीतं ततोऽस्य च॥१९॥
तदुच्छिष्टं ततो दद्याज्जम्बुकेभ्योऽथ भूतले।
निखनेदप्सु वा देवि समालोड्य विसर्जयेत्॥२०॥
आदौ भक्ते करे दत्ते सुभिक्षं विषये भवेत्।
पायसे यजमानस्य पशुवृद्धिः प्रजायते॥२१॥
घृते स्यादायुराधिक्यं पूपं ऐश्वर्यंवर्द्धते।
तथा मोदकशष्कुल्योः सन्ततिर्भूयसी भवेत्॥२२॥
मत्स्यजातिष्वर्थलाभः कृशरे यानसम्पदः।
मांसे तु पुत्रलाभः स्यात् तेमने कामिनी भवेत्॥२३॥
फलं मांसविशेषस्य भिन्नं भिन्नं ब्रुवे हि तत्।
अर्थलाभस्तु वाराहे खाड्गे तु विजयो भवेत्॥२४॥
माहिषेण तु मांसेन राज्याप्राप्तिर्भवेद् ध्रुवम्।
आरोग्यं हारिणेनाशु कार्ष्णसारेण वाग्मिता॥२५॥
शाशे मेधावितां गच्छेदाजेऽप्यजरतामपि।
आवये पलले देवि सर्वकल्याणमाप्नुयात्॥२६॥
कामाङ्गे मेदिनीलाभो बह्वन्नत्वं च राङ्कवे।
वार्ध्रीनसे शत्रुनाशो हांसे मनुजवश्यता॥२७॥
कीर्तिस्तु महती दध्नि दुग्धे सम्पदनुत्तमा।
पिष्टके तनयावाप्तिः शाके च रिपुसङ्क्षयः॥२८॥
हालायांपुण्यवृद्धिः स्यात् चोष्ये संसस्तुवाग्मिता।
धनागमः फणिते तु कूर्चिकायां बलोन्नतिः॥२९॥
तुम्बीवृन्ताककूष्माण्डकारवेल्लपटोलकैः ।
घोषशूरणदीर्घाङ्घ्रिमूलकैस्तेमने कृते॥३०॥

विद्यालाभो भवेद्देवि तर्के वाक्पटुतापि च।
गोधूमचूर्णघटितवस्तुनि प्रतिभावने॥३१॥
देव्यां दृष्टौ भवेन्मोक्षो मण्डपेऽप्युन्नतिर्भवेत्।
चामरछत्रयोस्तालवृन्तपर्यङ्कयोरपि ॥३२॥
घण्टादर्पणयोश्चापि दृग्दाने भूपतिर्महान्।
आकल्पालङ्करणयोः स्पर्शचालनदृष्टिषु॥३३॥
नानाविधानि सौख्यानि भवन्ति महितुः प्रिये।
एवंविधानि भूयांसि चेष्टितान्यशनानि च॥३४॥
शुभदेशीनि जायन्ते विपरीतान्यतः शृणु।
मुख्यभूता कुमारी चेद्धसति द्वित्रिवारकम्॥३५॥
दुर्भिक्षं जायतेऽवश्यं प्रजाः स्युः पीडिता अपि।
राजा विनाशमायाति कुमार्या रोदने कृते॥३६॥
उच्चारे तु महामारी पुरीषे पुरदाहनम्।
अभोजने शत्रुभयमापदो बहुभोजने॥३७॥
अप्भाषणे त्वामयाः स्युर्विपदा बहुभाषणे।
उपसर्गा बहुविधाश्चेष्टया करपादयोः॥३८॥
अतिलज्जा विनाशाय तथा निर्लज्जता शुचे।
नानोत्पातास्तु मौने स्युः स्वापे राज्ञो विनाशनम्॥३९॥
सर्वनाशस्तु भीतायां क्रुद्धायां मृत्युरेव च।
आवेशे तत्क्षणाद् राजा म्रियते नात्र संशयः॥४०॥
शङ्कितायां शत्रुशङ्का श्रान्तायामीतितो भयम्।
चिन्तायां तु विज्ञेयं तद्राष्ट्रस्यैव पातनम्॥४१॥
मोहे चित्तविनाशः स्याज्जाड्ये पूजा तु निष्फला।
चाञ्चल्ये चञ्चला लक्ष्मीः पूजकस्यैव जायते॥४२॥
विषादवत्यथ यदि कुमारी तत्र जायते।
सरोजं सप्रजं राष्ट्रं तदा सीदति पार्वति॥४३॥
रोगेण म्रियते राजा यदि रुग्णा प्रजायते।
दुर्भिक्षमरकातङ्कामत्यश्रूणि विमुञ्चति॥४४॥
सर्वनाशो भवेत्तर्हि धुनोति यदि मस्तकम्।
त्रस्ताययां रिपुतस्त्रासस्तस्य राज्ञः प्रदिश्यते॥४५॥
कम्पे सति स्याद् विमुखी कालिका परमेश्वरी।
नीचैः शिरश्चेत् कुरुते असन्तुष्टा तदेश्वरी॥४६॥

हीनायुः स्यात्तदा पृथ्वीपतिश्चेद् गद्गदस्वना।
पूजकस्य भवेद्दैन्यं व्याकुला यदि जायते॥४७॥
मोहेन व्याकुलायां तु सर्वं नगरमाकुलम्।
व्रीडितायां भवेद्रोगः स्वेदे दारधनक्षयः॥४८॥
अधोवायुं त्यजति चेत् कुमारी दैवयोगतः।
पीडितं परचक्रेण तदा भवति पत्तनम्॥४९॥
गीतं गायति चेत्तत्र कुमारी रहिता क्रिया।
सप्रजाराष्ट्रतनयदारस्य नृपतेर्मृतिः॥५०॥
सहागताभिः कदाचिन्मुख्या विवदते यदि।
तदा समायात्यकस्मात् पदचक्रं सुदारुणम्॥५१॥
यया कयाचित् सार्द्धं वा येन केनचिदेव वा।
कुमारी भाषते वीतभयमन्दाक्षसाध्वसा॥५२॥
प्रजायन्ते तदा तस्य विषयेषु षडीतयः।
व्यत्यासं यदि भक्ष्यस्य कुर्वते करचालनैः॥५३॥
व्यस्तं समस्तं भवति मनसो वाञ्छितं प्रिये।
उपानीयकृतं यत्तद् द्रव्यं देव्यै तु मण्डपे॥५४॥
तच्चेत् कराभ्यां स्पृशति कान्दिशीको भवेन्नृपः।
निर्वापयति चेद् दीपं कुमारी मुखमारुतैः॥५५॥
बुद्धिभ्रंशो भवेत्तर्हि ज्ञानदीश्च नश्यति।
दैवयोगाद्धि नृत्यन्ति कुमार्यश्चेत् सुराकुलाः॥५६॥
सरोजकः सविषयः श्मशानमिव जायते।
वासांस्युत्सृज्य नग्नाः स्युर्यदि तत्र कुमारिकाः॥५७॥
शत्रुभिर्म्रियते तर्हि राजा समरमूर्धनि।
यदि फूत्कृत्य कूर्द्दन्ते करो धृत्वा भ्रमन्ति च॥५८॥
भूतावेशः क्षितीशस्य जायते नात्र संशयः।
उच्चरिष्यामि हर्म्ये वा वदन्तीत्थं कुमारिकाः॥५९॥
भोजनावसरे तर्हि महामारीभयं भवेत्।
वामे वा दक्षिणे वापि चलत्तारकया दृशा॥६०॥
रक्तोग्रया घूर्णयते शिरः स्वस्य कुमारिका।
कुरुते वाट्टहासं सा येन त्रस्यन्ति मानवाः॥६१॥
भूतावेशो भवेत्तर्हि प्रेता नृत्यन्ति वा पुरे।
दन्तैर्दन्तान् पीडयित्वा कुर्यात् कटकटारवम्॥६२॥

प्रयाति सदनं मृत्यो सदारसुतबान्धवः।
दृशावनिमिषे कृत्वा सन्दश्योष्ठं वदेन च॥६३॥
सन्तर्जयति शीर्षं च कम्पयन्ती कुमारिका।
तदेव फलमुद्दिष्टं यः स्यात् कटकटारवे॥६४॥
आत्यन्तिकं भजेन्मौनं करेणान्नं स्पृशेन्न च।
शिरोऽत्यर्द्धं च नमयेदङ्गुष्ठेन लिखेद् भुवम्॥६५॥
विदध्यात् भूतले रेखां करजैनिष्प्रयोजनम्।
सहताभ्यां कराभ्यां च कण्डूयेदथवा शिरः॥६६॥
तृणान्यकारणं छिन्द्यादङ्गुलीस्फोटमाचरेत्।
पाणिभ्यां मुद्रयेन्नेत्रे द्वौ कर्णौ पिदधाति वा॥६७॥
कुर्वीत वा बाहुरिकां पाष्णिघृष्टि वा।
महान्तं ग्रासमादन्ते मुखं व्यादाय तिष्ठति॥६८॥
अन्नोपरि क्षुतं यत्ते जृम्भणं मुहुर्मुहुः।
गृहीत्वा पाणिना वान्नं चतुर्दिक्षु क्षिप्त्यपि॥६९॥
उत्थाय वा प्रचलति त्यक्त्वान्नं पूजनं तथा।
आयाति वमनं वास्याः स्यातां रोमाञ्चवेपथू॥७०॥
निर्गच्छतोऽथवा गात्रात् पूर्णस्ते हेतुमन्तरा।
आकस्मादेव कुरुते काकुं चेत् कारणं विना॥७१॥
अश्लीलं वल्गति तथा स्ववर्ग्यार्थे प्ररोदिति।
अमुक्तालङ्कृतीर्मुञ्चेद् गृहं यास्यामि वा वदेत्॥७२॥
यस्य कस्यापि कुर्याद् भर्त्सनं तत्स्थले स्थिता।
उपालभेत वा काञ्चित् सहैवास्या उपेयुषीम्॥७३॥
भिनत्ति वाऽनिदानं सा स्वहस्तवलयानि वा।
कृते मृतस्य कस्यापि बन्धोः शोचति तत्रगा॥७४॥
यत्किञ्चिद्वा प्रलपति निर्निमित्तं कुमारिका।
सर्वमेतदङ्गुल्यं विज्ञेयं त्रिदशार्चिते॥७५॥
दुर्भिक्षं धननाशश्च रोगो मारी भयं तथा।
पदे पदेऽत्र विपदः शोको व्याधी रिपून्नतिः॥७६॥
परचक्रागमोऽकस्मादग्निदाहः पुरे गृहे।
मृत्युस्त्रासश्च दारिद्र्यं विच्छेदो बन्धुभिः सह॥७७॥
भूतप्रेतपिशाचाभिर्निवेशोऽपि गृहे गृहे।
अष्टभिश्चमहारोगैः प्रजानां निधनं भवेत्॥७८॥

इतस्ततः प्रधावन्ति लोकाः भयनिपीडिताः।
किं बहुक्तेन देवेशि कल्प आकालिको भवेत्॥७९॥
इतरेषामणीयस्तु भयं राज्ञां महद्भवेद्।
कुमारीचेष्टितद्वारा ज्ञायते हि शुभाशुभम्॥८०॥
वार्षिकं च फलं राज्ञो जयो वाथ पराजयः।
मृत्युर्दुःखं धनं सौख्यं शत्रुभीतिर्बलोन्नतिः॥८१॥
राज्यवृद्धिः प्रजापीडा व्यङ्ग्यतानीकसङ्क्षयः।
कुमारीपूजनात् सर्वं जायते भोजनादपि॥८२॥
परीक्ष्यं यत्नतस्तस्माद् राज्ञा स्वस्य शुभाशुभम्।
अर्चातोऽपि विशेषेण भोजनेन सुरेश्वरि॥८३॥
जाते शुभे समीचीनं वृत्ते तदितरत्र हि।
काम्यार्चा बहुसम्भारैर्दोषं तज्जं निवारयेत्॥८४॥
निवृत्य स्वगृहं याता यदि रुग्णा कुमारिका।
तस्मिन्नेवाहनि भवेत् तथापि न शुभं फलम्॥८५॥
इत्यादि फलबाहुल्यं शुभस्याप्यशुभस्य च।
मया विविच्य कथितं ध्रियस्व हृदि यत्नतः॥८६॥
ततो निशीथसमये विधिवत् पूजनं पुनः।
पीठमूर्त्योः प्रकुर्वीत धूपदीपानुलेपनैः॥८७॥
नैवेद्यैरुपहारैश्च गीतवाद्यादिभिस्तथा।

शुभाशुभफलं परिपूर्णम्

⁂

छागादिबलिदानम्

ॐ ह्रीँ वँ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा। युग्म बलि को सिन्दूरादि से अलङ्कृत करके अर्घ्योदक जल से तीन बार सम्प्रोक्षण कर स्नान कराये।

ॐ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती।
कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धु भैरव सागर॥१॥

हे वाराहि! हे यमुना! हे गङ्गा! हे सरस्वति! हे कावेरि! हे चन्द्रभागा! हे सिन्धु! हे सागर! तथा हे भैरव!॥१॥

पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च।
पराय परमेष्ठिने नमः हूँकारमूर्तये॥२॥

हेमकूट स्थित क्रोध मूर्ति परा-परमेष्ठी को पशुपाश-विनाश के लिए हे हूँकार मूर्ति! मैं नमस्कार करता हूँ॥२॥

गन्धोदक से तीन बार प्रोक्षण करके हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर मन्त्र पाठ कर पुष्पाञ्जलि समर्पित करे—

ॐ छागत्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थिताः।
प्रणमामि सदाभक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम्॥१॥

छाग बलिरूप से कूष्माण्ड तुम महाभाग्य से उपस्थित हुए हो, कूष्माण्डरूपी बलि को मैं सदा भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ॥१॥

चण्डिका प्रीतिकामस्य दातुरापद्विनासिने।
चण्डिका बलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः॥२॥

समस्त आपत्तियों विपत्तियों के विनाश तथा चण्डिका को प्रीति प्रदान करने के लिए, चण्डिका के बलि! तुम्हें नमस्कार है॥२॥

यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधो वधः॥३॥

यज्ञ के लिए स्वयम्भू ने पशुओं की निर्मित किया है, अतः यज्ञ में वध योग्य तुम्हारा घात करता हूँ॥३॥

पार्श्वपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ जयन्त्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ मङ्गलायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ काल्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ भद्रकाल्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ मनस्तोकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ विजयायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ अपराजितायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ अनन्तायै नमः।

अङ्गपूजनम्

ॐ ह्रीँ वँ रुधिरवदनायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ चण्डिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ अग्न्यर्कसोमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीँ वँ बृहस्पतये नमः।

ॐ ह्रीँ वँ सरस्वत्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ उग्रदन्तिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ महादन्तिकायै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ पृथिव्यै नमः।

ॐ ह्रीँ वँ धर्माय नमः।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ श्रीँ वरुणमण्डलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूपचण्डिकायै इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा। प्रोक्षण करे।

सङ्कल्पः—**ॐ अद्यामुकमास्यामुकपक्षेऽमुकतिथिवासरे अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा छागसमसंख्याकं दशवर्षावच्छिन्नश्रीमद्बटुकभैरवप्रीतिकामोऽहं ऐतान् वह्निदैवतान् श्रीमद्बटुकभैरवाय तुभ्यं घातयिष्ये।**

ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्य नयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥

अतिशय उग्र, कालरात्रि स्वरूप तथा उग्र नयनोंवाली, रक्त माला धारण किये हुए, रक्त का अनुलेपन किये हुए, कृष्ण वर्णवाले, पिनाक धनुष धारण किये हुए॥१॥

रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिकम्।
पिबमानं च रुधिरं भुञ्जानं कव्यसंहतिम्॥

रक्त वस्त्र धारण किये हुए, हाथ में पाश धारण किये हुए, कुटुम्बियों के सहित, हे खड्ग! पीने योग्य रुधिर तथा भोज्य कव्य समर्पित है॥२॥

ॐ ह्रीँ वँ कालि कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः। तीन बार संप्रोक्षण करे।

ॐ ह्रौँ वँ ह्रौँ। सिन्दूर से मन्त्र को खड्ग के ऊपर लिखे तथा बलि के कर्ण में बलि गायत्री सुनायें।

बलिगायत्री

ॐ ह्रौँ वँ ह्रौँ बलिरूपाय विद्महे देविप्रियाय धीमहि तन्न पशुः प्रचोदयात्।

खड्ग-प्रार्थना

ॐ असिर्विनासनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तुते॥१॥

तीक्ष्ण धार, दुरासद, विनाशक, दक्ष, असि, धर्मपाल, श्रीगर्भ तथा विजय नाम धारी खड्ग को नमस्कार है॥१॥

इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा।
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः॥२॥

ब्रह्मा ने तुम्हारे इन आठ नामों को स्वयं रचा है, तुम्हारा कृत्तिका नक्षत्र तथा गुरु महेश्वर है॥२॥

रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः।
पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा॥३॥

रोहिणी, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि देवता तुम्हारे द्वारा सदा हमारी रक्षा करें॥३॥

नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः।
भावशुद्धोऽमर्शणश्च अर्जितास्तथैव च॥४॥

नील-जीमूत के समान, काले दाँतोंवाले, कृशोदर, भाव की शुद्धि, तथा अमर्षण के लिए तुम्हें अर्जित किया है॥४॥

इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः।
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥५॥

इसी से महिषासुर का वध किया गया था, शुद्ध तीक्ष्ण धारवाले खड्ग! तुम्हें नमस्कार है॥५॥

चण्डिका के जिह्वा की बुद्धि से एक बार में ही घात करे—

ॐ पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

घात के बाद सम्पूर्ण रुधिर मुण्डादि देवी के आगे सम भाग करके दीपक जलाये—

ॐ ह्रीँ वँ क्रौँ क्रौँ नमो नमः।

प्रत्येक मुण्ड में दीप प्रज्वलित करके रुधिरादि से तर्पण करे—

ॐ ह्रीँ वँ चामुण्डां तर्पयामि नमः पूर्वे।

ॐ ह्रीँ वँ योगिनीं तर्पयामि नमः दक्षिणे।

ॐ ह्रीँ वँ डांकिनीं तर्पयामि नमः उत्तरे।

ॐ ह्रीँ वँ विदारिकां तर्पयामि नमः आग्नेय्याम्।

ॐ ह्रीँ वँ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ ह्रीँ वँ पूतनां तर्पयामि नमः वायव्ये।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकभैरवं तर्पयामि नमः ईशाने।

ॐ ह्रीँ वँ अद्य दश वर्षावच्छिन्न वटुकभैरव प्रीतिकामिमं छाग रुधिरं समुण्डं विष्णु दैवतं वटुकभैरवाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। हाथ में जल लेकर समर्पित करे।

नीराजनविधिः

ॐ ह्रीँ वँ फट्। जल से दीपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ वँ नमः। गन्धाक्षत से दीपपात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ ह्रीँ वँ यँ। अङ्गुलियों पर द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ ह्रीँ वँ रँ। अङ्गुलियों पर षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ। वामहस्त तल को दक्षहस्त पृष्ट पर रख कर निवेशन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वँ। षोडश बार जप कर धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ह्रीँ वँ जय ध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा का पूजन करे।

दीपज्योतिपूजनम्—

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पाति नो भीतिर्भद्रकाली नमोऽस्तु ते॥

भद्रकालि! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होनेवाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल समस्त भयों से हमारी रक्षा करे।

ॐ ह्रीँ वँ दीपज्योतिस्वरूपाय श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

जले ज्वाला स्थले ज्वाला ज्वाला पर्वतमस्तके।
त्रैलोक्यव्यापिनी ज्वाला ज्वाला देवि नमोऽस्तु ते॥

जल में, स्थल में, पर्वत के ऊपर, तीनों लोकों में व्याप्त ज्वाला (ज्योति) स्वरूपिणी महाकालिका ज्वाला देवी को नमस्कार है।

मूल मन्त्र से पूजन कर एक बार नाभि प्रदेश तक, दो बार स्तन मण्डल तक, चार बार मुख मण्डल तक पुनः सात बार पूरे शरीर तक आरति घुमाये।

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥१॥

कर्पूर के समान गौर, करुणा के अवतार, भवानी के सहित शिव हमारे हृदय में वास करे उनकों नमस्कार है॥१॥

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वर॥२॥

कर्पूर से युक्त बत्ती को जलाकर दिव्य आरती करता हूँ, हे जगदीश्वर! इसे ग्रहण करें॥२॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥३॥

केले के वृक्ष से उत्पन्न कर्पूर से आरती करता हूँ, हे महादेव! कृपापूर्वक दृष्टि से देख कर वर प्रदान कर्त्ता बने॥३॥

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय आरार्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

महाभैरवध्यानम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलाञ्जनसमप्रभम्॥१॥
अष्टबाहुत्रिनयनं चतुर्बाहुद्विबाहुकम्।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम्॥२॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्।
दिगम्बरं कुमारीशं बटुकाख्यं महाबलम्॥३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलदक्षिणभागतः।
डमरुञ्च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥४॥
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

ॐ ह्रीं वँ श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनि मुद्रा प्रदर्शित करके छत्र-चामर डुला कर पुनः पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

बुद्धिः शरासने क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च।
मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता॥१॥
ध्वनयो गीतिरूपेण शब्दवाद्यप्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो॥२॥
सुषुम्ना ध्वजरूपेण प्राणाद्या वा शरात्मना।
अहङ्कारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तोरथात्मना॥३॥
इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः॥४॥
सर्वमन्यं तवाक्लृप्तं तवोपकरणात्मना।

श्लोकोच्चार पूर्वक पुष्पाञ्जलि प्रदान कर स्तुति पाठ करे।

नि उपसर्ग अस् धातु **(असु क्षेपणे दिवादि गण परस्मैपदी)** लट् उत्तम पुरुष एक वचन में न्यस्यामि बनेगा जिसका अर्थ स्थापित करना या जोड़ना होता है।

छागादिवलिदानं परिपूर्णम्

⁂

श्रीमद्बटुकभैरवयन्त्रस्थापनम्

यन्त्रोद्धारमिमं देवि त्रैलोक्ये चाति दुर्लभम्।
तद्यन्त्रं च प्रवक्ष्यामि यन्त्रे देवं च पूजयेत्॥
वर्तुलं चाष्टपत्रं च चतुरस्त्र त्रयात्मकम्।
पञ्चकोणंषड्दलं पत्रंषोडशात्मकम्॥
अन्तर्बहिरष्टकोणं कलाकोणं तथैव हि।
इदमेव यन्त्रार्चनं भैरवं प्रीतिदायकम्॥

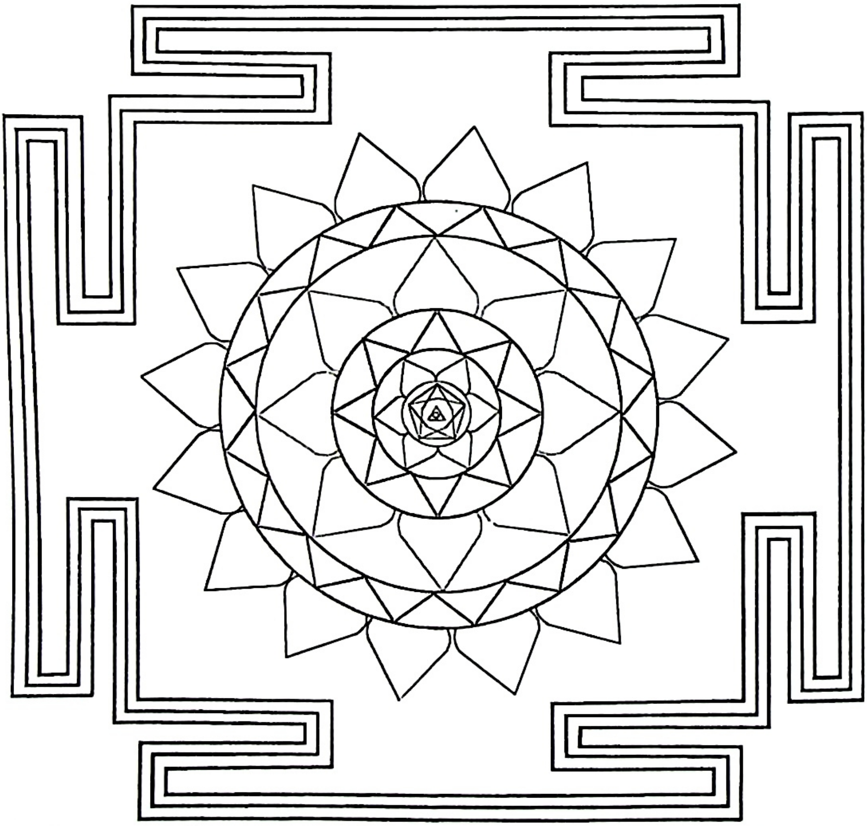

ताम्रपात्र पर जो एक वितस्त वर्गाकार परिपूर्ण मोटा हो उस पर अष्टगन्ध सिन्दूर कुङ्कुम रक्तचन्दन से प्रस्तुत यन्त्र उत्कीर्ण करना चाहिये, ताम्रपात्र के अभाव में भोजपत्र पर गन्धादि

निर्मित यन्त्र को जलादि स्नान भावनात्मक करे, धातु अथवा रत्नादि के यन्त्र पर स्नानादि उपचार यथावत् करे। सर्वप्रथम अधोलिखित मन्त्र से तीन भूपुर लिख कर उसके भीतर एक वृत्त के ऊपर षोडश दल लिखे, उसके अन्दर पुनः षोडश कोण इस प्रकार लिखे कि अन्दर की तरफ और बाहर की तरफ षोडश कोण बन जाय, उस षोडश कोण के भीतर अष्ट दल लिखे, उस अष्टदल के भीतर पुनः अष्ट कोण इस प्रकार से लिखे कि अन्दर बाहर दोनों तरफ अष्ट कोण बनजाये, उस अष्ट कोण के भीतर अन्दर बाहरवाला षड् दल तथा पुनः पञ्च कोण लिखे, पञ्चकोण के भीतर एक त्रिकोण, उसमें एक बिन्दु लिखकर पञ्चगव्य से प्रच्छालित कर शुद्ध करने के बाद प्रतिष्ठा करे।

ॐ ह्रीँ वँ श्रीमद्बटुकभैरवाय आसुरेखे वज्ररेखे हुँ फट् स्वाहा। मन्त्र से कठोर पात्र ताँबां, चाँदि अथवा सुवर्ण के ऊपर यन्त्र लेखन करे।

यन्त्रप्रतिष्ठा

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः विन्दुत्रिकोणअन्तवहिर्पञ्चकोणअन्तर्वहिषड्दलअन्तर्वहिरष्टकोणअष्टदलअन्तर्वहिषोडशकोणषोडशदल-भूपुरत्रयात्मकेयन्त्रे सजीवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

यन्त्रेश्रीमद्बटुकभैरवप्राणप्रतिष्ठा

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः विन्दुत्रिकोणअन्तवहिर्पञ्चकोणअन्तर्वहिषड्दलअन्तर्वहिरष्टकोणअष्टदलअन्तर्वहिषोडशकोणषोडशदल-भूपुरत्रयात्मकयन्त्रे श्रीमद्बटुकभैरवस्य प्राणा इह प्राणाः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः विन्दुत्रिकोणअन्तवहिर्पञ्चकोणअन्तर्वहिषड्दलअन्तर्वहिरष्टकोणअष्टदलअन्तर्वहिषोडशकोणषोडशदल-भूपुरत्रयात्मकयन्त्रे श्रीमद्बटुकभैरवस्य जीव इह स्थितः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः विन्दुत्रिकोणअन्तवहिर्पञ्चकोणअन्तर्वहिषड्दलअन्तर्वहिरष्टकोणअष्टदलअन्तर्वहिषोडशकोणपोडशदल-भूपुरत्रयात्मकयन्त्रे श्रीमद्बटुकभैरवस्य सजीवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

प्रतिष्ठा के बाद यन्त्र गायत्री का अष्टोत्तरशत जप करे।

ॐ ह्रीँ वँ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धिमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्॥

अष्टोत्तरशत जप कर मूल मन्त्र से दश बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करके मूल मन्त्र से अष्टोत्तरशत आहुति प्रदान कर बचे हुए घृत को यन्त्र गायत्री से यन्त्र में ऊपर प्रक्षेप करके आवरण देवताओं का आवाहन स्थापन करे।

अपने दक्षिण बिन्दु में देवी के आवाहनार्थ गन्धाक्षत समर्पित करे।

प्रथमावरणं विन्दौगुरुपंक्तिसहितवटुकभैरवआवाहनम्

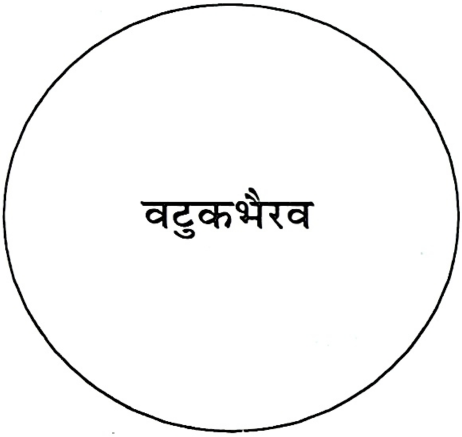

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमद्वटुकभैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

दिव्यौघादिगुरुणां आवाहनम्—भूपुर के ईशान कोण में दिव्यौघगुरुओं का आवाहन करे—

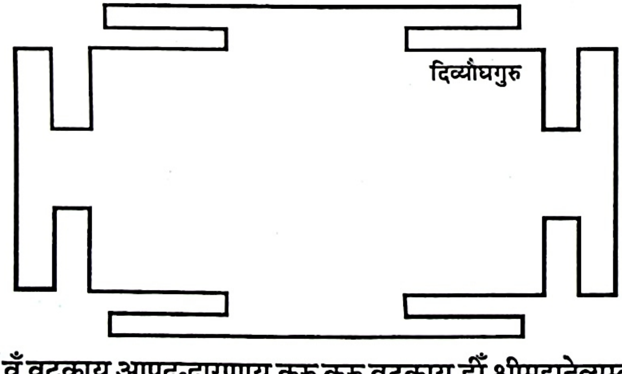

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथाय नमः श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमहादेवानन्दनाथाय नमः श्रीमहादेवानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीत्रिपुरानन्दनाथाय नमः श्रीत्रिपुरानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभैरवानन्दनाथाय नमः श्रीभैरवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

सिद्धौघादिगुरुणां आवाहनम्—भूपुर के उत्तर दिशा में सिद्धौघ गुरु का आवाहन करे—

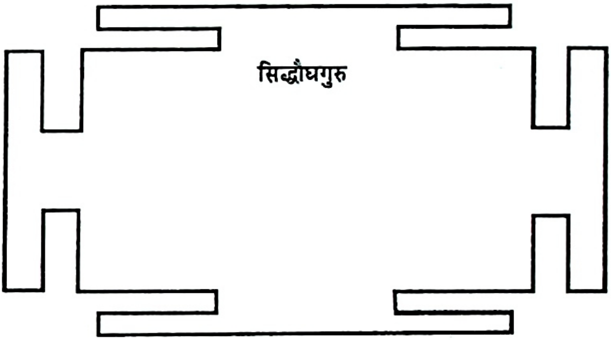

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीब्रह्मानन्दनाथाय नमः श्रीब्रह्मानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीपूर्णदेवानन्दनाथाय नमः श्रीपूर्णदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीचलचित्तानन्दनाथाय नमः श्रीचलचित्तानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीचलचलानन्दनाथाय नमः श्रीचलचलानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकुमारानन्दनाथाय नमः श्रीकुमारानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीक्रोधानन्दनाथाय नमः श्रीक्रोधानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीवरदानन्दनाथाय नमः श्रीवरदानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीस्मरदीपानन्दनाथाय नमः श्रीस्मरदीपानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमायाम्बायै नमः श्रीमायाम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमायावत्याम्बायै नमः श्रीमायावत्याम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

मानवौघादिगुरुणां आवाहनम्—वायव्य कोण में मानवौघगुरुओं का आवाहन करे—

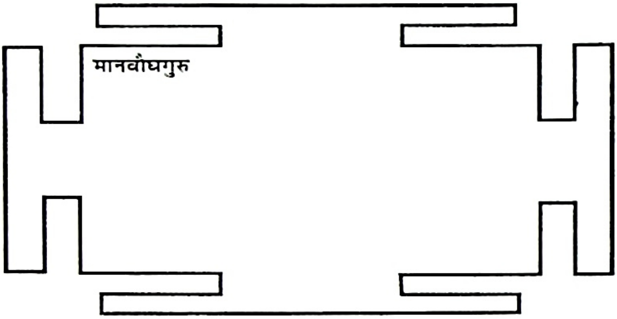

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीविमलानन्दनाथाय नमः श्रीविमलानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकुशलानन्दनाथाय नमः श्रीकुशलानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमत्सेनानन्दनाथाय नमः श्रीमत्सेनानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसुधाकरानन्दनाथाय नमः श्रीसुधाकरानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीप्रह्लादानन्दनाथाय नमः श्रीप्रह्लादानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसनकानन्दनाथाय नमः श्रीसनकानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीवसिष्ठानन्दनाथाय नमः श्रीवसिष्ठानन्दनांथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीबोधानन्दनाथाय नमः श्रीबोधानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमीनानन्दनाथाय नमः श्रीमीनानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीगोरक्षानन्दनाथाय नमः श्रीगोरक्षानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभोजदेवानन्दनाथाय नमः श्रीभोजदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीप्रजापत्यानन्दनाथाय नमः श्रीप्रजापत्यानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमूलदेवानन्दनाथाय नमः श्रीमूलदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीरन्तिदेवानन्दनाथाय नमः श्रीरन्तिदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीविघ्नेशरानन्दनाथाय नमः श्रीविघ्नेशरानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीहुताशनानन्दनाथाय नमः श्रीहुताशनानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसमयानन्दनाथाय नमः श्रीसमयानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसन्तोषानन्दनाथाय नमः श्रीसन्तोषानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीनिजगुरवानन्दनाथाय नमः श्रीनिजगुरवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

द्वितीयावरणं त्रिकोणे त्रिदेवआवाहनम्

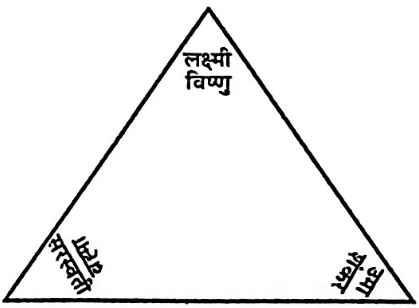

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सरस्वतीसहितायब्रह्मणे नमः सरस्वतीसहितायब्रह्मा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लक्ष्मीसहितायविष्णवे नमः लक्ष्मीसहितायविष्णु इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ उमासहितायशङ्कराय नमः उमासहितायशङ्कर इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

तृतीयावरणं पञ्चकोणे ऐशान्यादिआवाहनम्

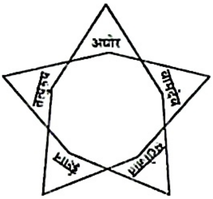

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ईशानाय नमः ईशान इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ तत्पुरुषाय नमः तत्पुरुष इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अघोराय नमः अघोर इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वामदेवाय नमः वामदेव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सद्योजाताय नमः सद्योजात इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अन्तः पञ्चकोणे पञ्चवक्त्रआवाहनम्

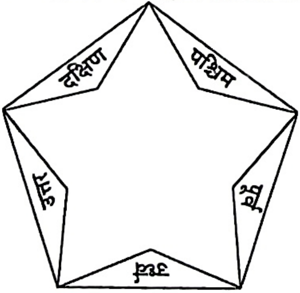

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊर्ध्ववक्त्राय ईशानाय

नमः ऊर्ध्ववक्त्रईशान इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ उत्तरवक्त्राय तत्पुरुषाय नमः उत्तरवक्त्रतत्पुरुष इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दक्षिणवक्त्राय अघोराय नमः दक्षिणवक्त्रअघोर इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पश्चिमवक्त्राय वामदेवाय नमः पश्चिमवक्त्रायवामदेव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पूर्ववक्त्राय सद्योजाताय नमः पूर्ववक्त्रसद्योजात इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

चतुर्थावरणं षडदले आनन्दनाथादि आवाहनम्

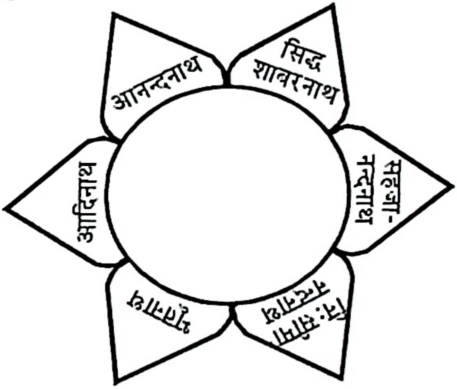

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूतनाथाय नमः भूतनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आदिनाथाय नमः आदिनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आनन्दनाथाय नमः आनन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सिद्धशाबरनाथाय नमः सिद्धशाबरनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सहजानन्दनाथाय नमः सहजानन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निःसीमानन्दनाथाय नमः नन्दनाथ इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अन्तः षडदले रुद्रादिपुत्राणां आवाहनम्

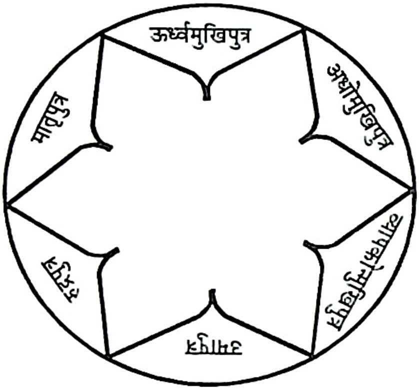
ऊर्ध्वमुखिपुत्र
अधोमुखिपुत्र
व्यापकोन्मुखिपुत्र
उमापुत्र
रुद्रपुत्र
मातृपुत्र

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ उमापुत्राय नमः उमापुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रुद्रपुत्राय नमः रुद्रपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ मातृपुत्राय नमः मातृपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऊर्ध्वमुखिपुत्राय नमः ऊर्ध्वमुखिपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अधोमुखिपुत्राय नमः अधोमुखिपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ व्यापकोन्मुखिपुत्राय नमः व्यापकोन्मुखिपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

पञ्चमावरणं अष्टकोणे डाकिन्यापुत्राणां आवाहनम्

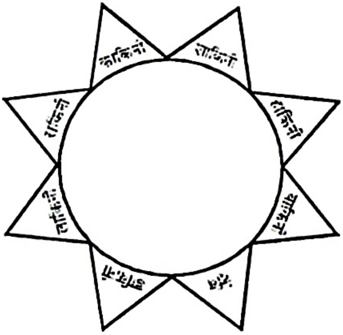
काकिनी
साकिनी
हाकिनी
राकिनी
लाकिनी
डाकिनी

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ डाकिनीपुत्राय नमः डाकिनीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ राकिनीपुत्राय नमः राकिनीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लाकिनीपुत्राय नमः लाकिनीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ काकिनीपुत्राय नमः काकिनीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शाकिनीपुत्राय नमः शकिनीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हाकिनीपुत्राय नमः हाकिनीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ याकिनीपुत्राय नमः याकिनीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ देविपुत्राय नमः देविपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अन्तःअष्टकोणे ब्राह्यादिपुत्राणां आवाहनम्

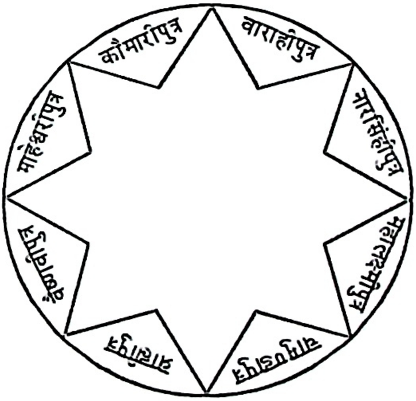

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ब्रह्मीपुत्राय नमः ब्रह्मीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वैष्णवीपुत्राय नमः वैष्णवीपुत्र इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ माहेश्वरीपुत्राय नमः महेश्वरीपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कौमारीपुत्राय नमः कौमारीपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वाराहीपुत्राय नमः वाराहीपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ नारसिंहिपुत्राय नमः नारसिंहिपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऐन्द्रीपुत्राय नमः ऐन्द्रीपुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चामुण्डापुत्राय नमः चामुण्डापुत्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

षष्ठावरणं द्वितीय अष्टदले भैरवादिआवाहनम्

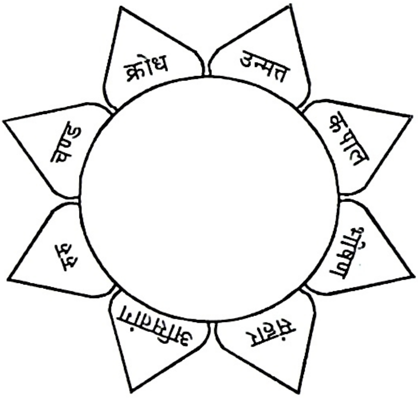

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कपालभैरवाय नमः कपालभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ संहारभैरवाय नमः संहारभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

सप्तमावरणं षोडशकोणे कलानां आवाहनम्

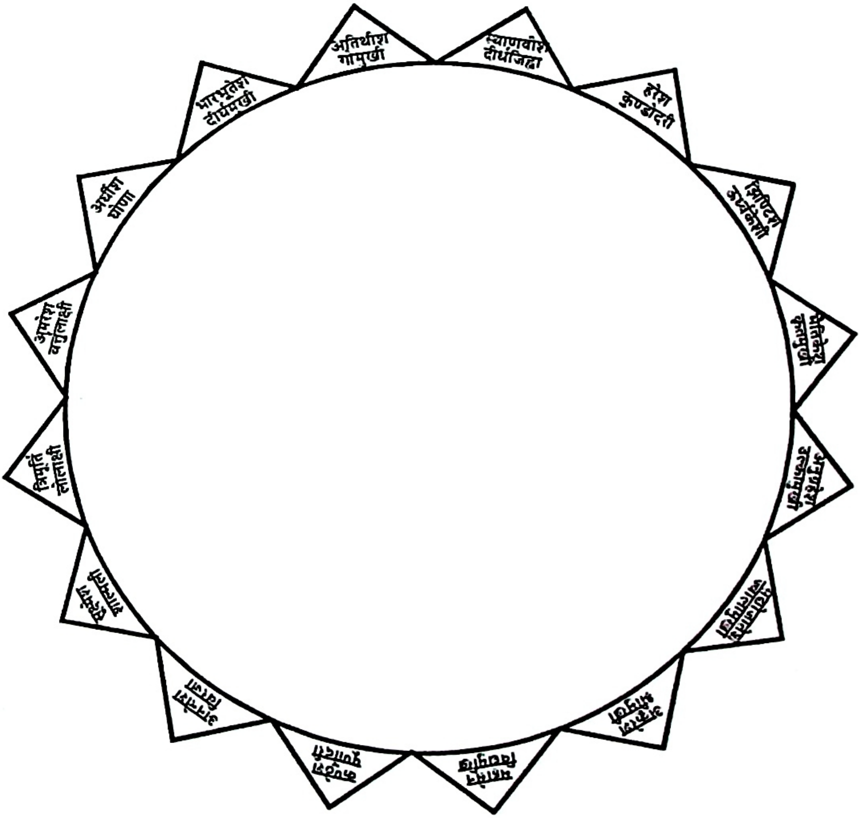
अतिथीश गामुखी
स्थाणवीश दीर्घजिह्वा
भारभूतेश दीर्घमुखी
हरेश कुण्डोदरी
अर्घीश घोणा
झिण्टीश ऊर्ध्वकेशी
अमरेश वर्तुलाक्षी
भौतिकेश विकृतमुखी
त्रिमूर्ति लोलाक्षी
अनुग्रहेश उल्कामुखी
सूक्ष्मेश शाल्मली
सद्योजातेश ज्वालामुखी
अनन्तेश विरजा
अक्रूरेश श्रीमुखी
कण्ठेश पूर्णोदरी
महासेन विद्यमुखि

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः श्रीकण्ठेशपूर्णोदरी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअनन्तेशविरजाभ्यां नमः श्रीअनन्तेशविरजा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः श्रीसूक्ष्मेशशाल्मली इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमः श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः श्रीअमरेशवर्तुलाक्षी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअर्धीशघोणाभ्यां नमः श्रीअर्धीशघोणा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां नमः श्रीभारभूतेशदीर्घमुखी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअतिथीशगोमुखीभ्यां नमः श्रीअतिथीशगोमुखी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीहरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः श्रीहरेशकुण्डोदरी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः श्रीभौतिकेशविकृतमुखी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः श्रीसद्योजातेशज्वालामुखी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखीभ्यां नमः श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः श्रीअक्रूरेशश्रीमुखी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमहासेनविद्यामुखीभ्यां

नमः श्रीमहासेनविद्यामुखी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अन्तः षोडशकोणे कलानां आवाहनम्

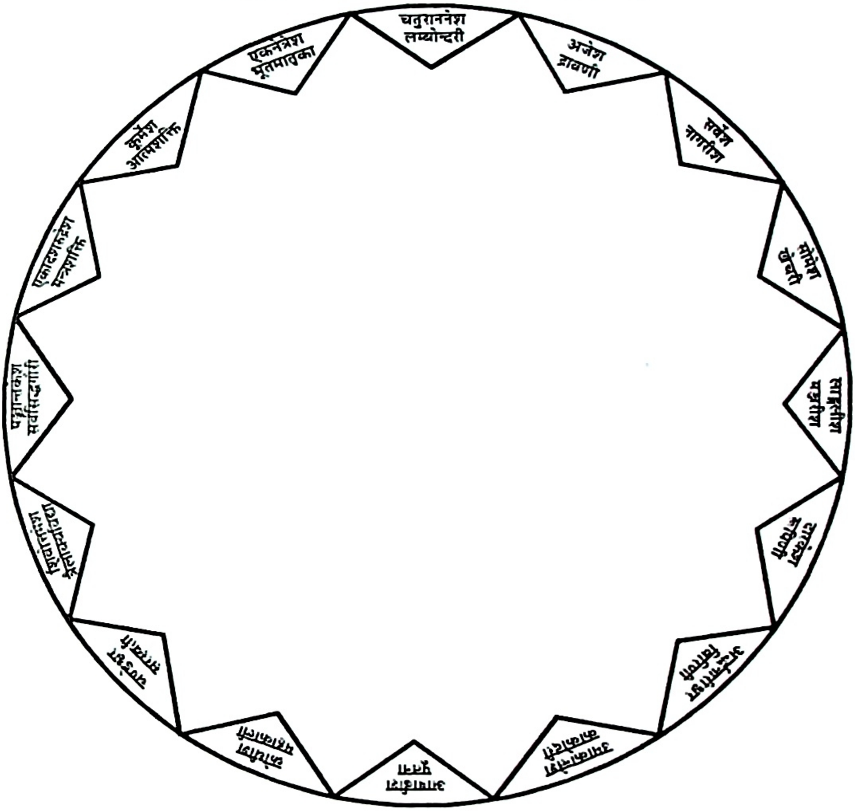
चतुराननेश लम्बोन्दरी
अजेश द्रावणी
सर्वेश नागरी
सोमेश खेचरी
लाङ्गलीश मञ्जरीश
दारुकेश रूपिणी
अर्द्धनारीश विरिणी
उमाकान्तेश काकोदरी
आषाढीश पूतना
क्रोधीश महाकाली
चण्डेश सरस्वती
शिवोत्तमेश त्रैलोक्यविद्या
पञ्चान्तकेश सर्वसिद्धगौरी
एकादशरुद्रेश मन्त्रशक्ति
कूर्मेश आत्मशक्ति
एकनेत्रेश भूतमातृका

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीक्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः श्रीक्रोधीशमहाकाली इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीचण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः श्रीचण्डेशसरस्वती इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्या इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्ति इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः श्रीकूर्मेशात्मशक्ति इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीएकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः श्रीएकनेत्रेशभूतमातृ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीचतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः श्रीचतुराननेशलम्बोदरी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअजेशद्रावणीभ्यां नमः श्रीअजेशद्रावणी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसर्वेशनागरीभ्यां नमः श्रीसर्वेशनागरी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसोमेशखेचरीभ्यां नमः श्रीसोमेशखेचरी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीलाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः श्रीलाङ्गलीशमञ्जरी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीदारकेशरूपिणीभ्यां नमः श्रीदारकेशरूपिणी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीअर्द्धनारीशवीरिणीभ्यां नमः श्रीअर्द्धनारीशवीरिणी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीउमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः श्रीउमाकान्तेशकाकोदरी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीआषाढीशपूतनाभ्यां नमः श्रीआषाढीशपूतना इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

बहिर्षोडशपत्रे कलानां आवाहनम्

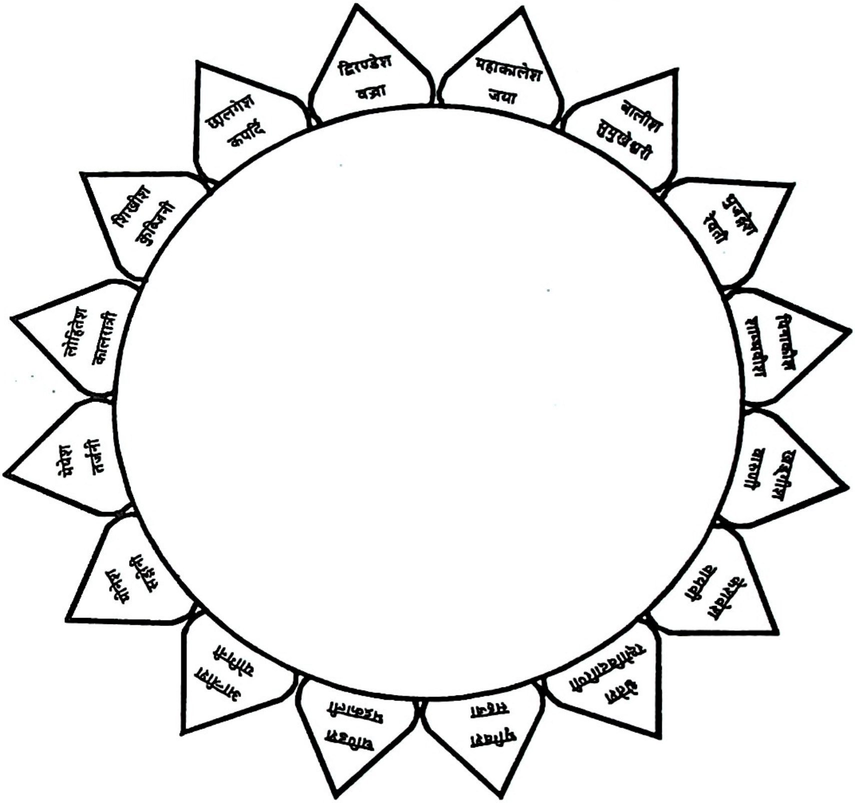
द्विरण्डेश वक्रा
महाकालेश जया
बालीश सुमुखेश्वरी
भुजङ्गेश रेवती
पिनाकीश
खड्गीश वारुणी
केशवेश वायवी
श्वेतेश रक्षोविदारिणी
भृगिश सहजा
चण्डिश भद्रकाली
आन्त्रीश योगिनी
मीनेश शङ्खिनी
मेषेश तर्जनी
लोहितेश कालरात्री
शिखीश कुब्जिनी
छगलेश कपर्दि

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरुं वटुकाय ह्रीँ श्रीचण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः श्रीचण्डीशभद्रकाली इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीआन्त्रीशयोगिनीभ्यां नमः श्रीआन्त्रीशयोगिनी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः श्रीमीनेशशङ्खिनी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमेषेशतर्जनीभ्यां नमः श्रीमेषेशतर्जनी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीलोहितेशकालरात्रीभ्यां नमः श्रीलोहितेशकालरात्री इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीशिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः श्रीशिखीशकुब्जिनी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीछगलगण्डेशकपर्दिभ्यां नमः श्रीछगलगण्डेशकपर्दि इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीद्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः श्रीद्विरण्डेशवज्रा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमहाकालेशजयाभ्यां नमः श्रीमहाकालेशजया इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीबालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः श्रीबालीशसुमुखेश्वरी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः श्रीभुजङ्गेशरेवती इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीपिनाकीशमाधवीभ्यां नमः श्रीपिनाकीशमाधवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीखड्गीशवारुणीभ्यां नमः श्रीखड्गीशवारुणी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीकेशवेशवायवीभ्यां नमः श्रीकेशवेशवायवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां नमः श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीभृग्वीशसहजाभ्यां नमः श्रीभृग्वीशसहजा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीनकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः श्रीनकुलीशलक्ष्मी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीशिवेशव्यापिनीभ्यां नमः श्रीशिवेशव्यापिनी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीसंवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः श्रीसंवर्तकेशमहामाया इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

अष्टमावरणं प्रथम भूपुरे हेतुकादिवटुकानावाहनम्

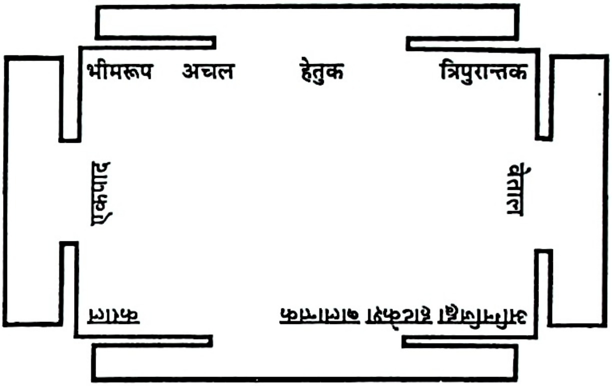

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हेतुकाय नमः हेतुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वेतालाय नमः वेतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अग्निजिह्वाय नमः अग्निजिह्वाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ कालान्तकाय नमः कालान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ करालाय नमः करालायश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ एकपादाय नमः एकपादश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भीमरूपाय नमः भीमरूपश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अचलाय नमः अचलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हाटकेशाय नमः हाटकेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

नवमावरणं द्वितीय भूपुरे लकुलीशादि आवाहनम्

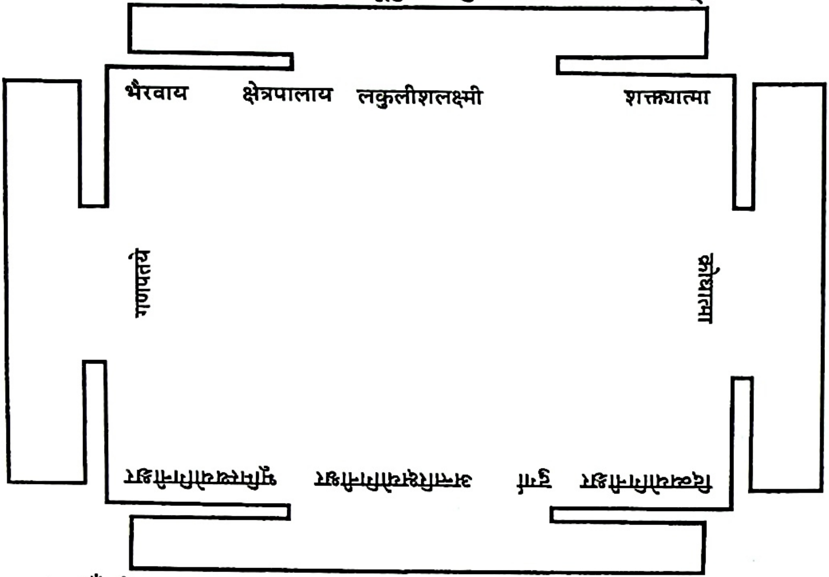

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः लकुलीशलक्ष्मी इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शक्त्यात्मने नमः शक्त्यात्मा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्रोधात्मने नमः क्रोधात्मा इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दिव्ययोगिनीश्वरेभ्यो नमः दिव्ययोगिनीश्वर इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अन्तरिक्षयोगिनीश्वरेभ्यो नमः अन्तरिक्षस्थयोगिनीश्वर इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भूमिस्थयोगिनीश्वरेभ्यो नमः भूमिस्थयोगिनीश्वर इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गणपतये नमः गणपति इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ भैरवाय नमः भैरव इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपाल इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दुर्गायै नमः दुर्गा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

दशमावरणं तृतीय भूपुरे दिग्पालादि आवाहनम्

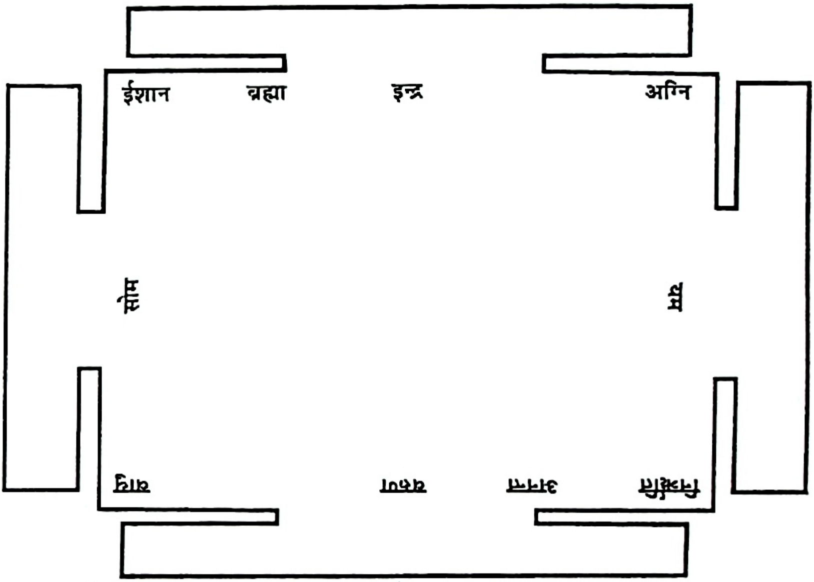

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ इन्द्राय नमः इन्द्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अग्नये नमः अग्नि इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ यमाय नमः यम इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ निर्ऋतये नमः निर्ऋति इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वरुणाय नमः वरुण इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वायवे नमः वायु इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीं वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ सोमाय नमः सोम इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ईशानाय नमः ईशान इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अनन्ताय नमः अनन्त इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

एकादशावरणं तत्रैव दिग्पालास्त्रआवाहनम्

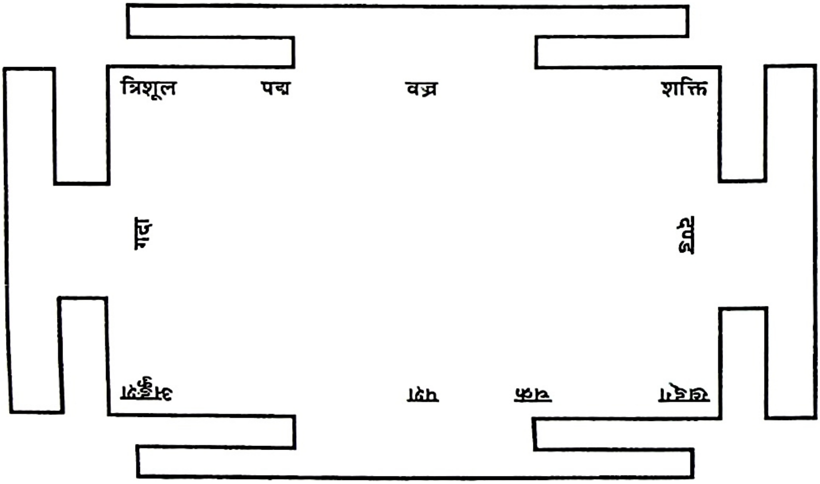

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वज्राय नमः वज्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ शक्तये नमः शक्ति इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ दण्डाय नमः दण्ड इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ खड्गाय नमः खड्ग इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पाशाय नमः पाश इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ अङ्कुशाय नमः अङ्कुश इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ गदायै नमः गदा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ त्रिशूलाय नमः त्रिशूल इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ पद्माय नमः पद्म इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ चक्राय नमः चक्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

भूपुर के चारों कोनों पर वटुकादि तथा मध्य में राजराजेश्वर का आवाहन करे—

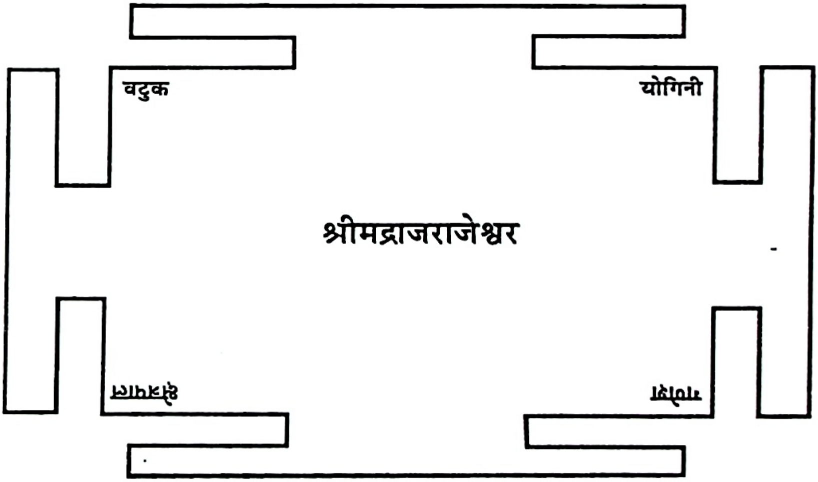

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय नमः वटुक इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ योगिन्यै नमः योगिनी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ गणेशाय नमः गणेश इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपाल इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ राजराजेश्वराय नमः राजराजेश्वर इहागच्छ, इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः विन्दुत्रिकोणअन्तवहिर्पञ्चकोणअन्तर्वहिषड्दलअन्तर्वहिरष्टकोणअष्टदलअन्तर्वहिषोडशकोणषोडशदलभूपुरत्रयात्मकयन्त्रे आवरणदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः विन्दुत्रिकोणअन्तवहिर्पञ्चकोणअन्तर्वहिषड्दलअन्तर्वहिरष्टकोणअष्टदलअन्तर्वहिषोडशकोणषोडशदलभूपुरत्रयात्मकयन्त्रे आवरणदेवतायाः जीव इह स्थितः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ सोऽहं हंसः विन्दुत्रिकोणअन्तवहिर्पञ्चकोणअन्तर्वहिषड्दलअन्तर्वहिरष्टकोणअष्टदलअन्तर्वहिषोडशकोणषोडशदलभूपुरत्रयात्मकयन्त्रे आवरणदेवतायाः सजीवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्य देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ ह्रीँ वँ सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यन्त्र पर समस्त देवताओं की स्थापना हो जाने पर मूल मन्त्र से प्रधान देवता तथा तत्तद् आवरण देवता के नाम मन्त्रों तथा यन्त्र गायत्री से हवन कर हुताज्य भाग का यन्त्र के ऊपर प्रक्षेप करे।

यन्त्रस्थापनं परिपूर्णम्

* * *

जपमालासंस्कारम्

एक समान सुन्दर रुद्राक्ष लाकर १०८ दाने को और एक दाना सुमेरु के लिए, समान सूत्र में माला को पिरो कर प्रत्येक मणि के बीच एक एक गांठ देते हुए तैयार करके फिर उसमें सुमेरु गुम्फित माला को परिपूर्ण करके, माला को पीपल के नव पत्रों को अष्टपद्मवत् रख कर उस पर माले को स्थापित कर, पञ्चगव्यादि से प्रच्छालित करके, पञ्चामृत से स्नान करा कर, शुद्धोदक से अच्छी तरह धोकर संस्कार करे।

पञ्चगव्यसंस्कारम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह॥ वृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिःशम्म्यन्तुत्त्वा॥ पञ्चगव्य से प्रच्छालित करे।

ॐ पयःपृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्रदिशःसन्तुमह्यम्॥ दूध से प्रच्छालित करे।

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्त्प्राणऽआयूꣳषितारिषत्॥ दही से प्रच्छालित करे।

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ घृत से प्रच्छालित करे।

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोवनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥ मधु से प्रच्छालित करे।

ॐ अपाꣳरसमुद्द्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्ट्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्ट्टतमम॥ शर्करा से प्रच्छालित करे।

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ पञ्चामृत से प्रच्छालित करे।

ॐ शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्द्रायपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअविलिप्तारौद्द्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ स्वच्छ जल से प्रच्छालित करे।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।। भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। जल से प्रच्छालित करे।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।। अष्टगन्धादि चन्दन लेपन करे।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। धूपादि से धूपित करे।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। दीपक दिखा कर दीप्त करे।

ॐ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेऽस्तुसदाशिवोऽम्।। प्रत्येक मणियों मे १०८ बार अभिमन्त्रित कर मूलमन्त्र सहित मातृकाओं का विन्यास कर माला में प्राणप्रतिष्ठा विधि से श्रीमद्वटुकभैरव की प्रतिष्ठा कर पूजन करने के वाद मातृकाओं का विन्यास करे।

मातृकाविन्यासम्

१.ॐ ह्रीँ वँ अँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२.ॐ ह्रीँ वँ आँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३.ॐ ह्रीँ वँ इँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४.ॐ ह्रीँ वँ ईँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५.ॐ ह्रीँ वँ उँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६.ॐ ह्रीँ वँ ऊँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७.ॐ ह्रीँ वँ ऋँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८.ॐ ह्रीँ वँ ॠँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९.ॐ ह्रीँ वँ लृँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०.ॐ ह्रीँ वँ लॄँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

११.ॐ ह्रीँ वँ एँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१२.ॐ ह्रीँ वँ ऐँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१३.ॐ ह्रीँ वँ ओँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१४.ॐ ह्रीँ वँ औँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१५.ॐ ह्रीँ वँ अँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१६.ॐ ह्रीँ वँ अः ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१७.ॐ ह्रीँ वँ कँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१८.ॐ ह्रीँ वँ खँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१९.ॐ ह्रीँ वँ गँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२०.ॐ ह्रीँ वँ घँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२१.ॐ ह्रीँ वँ ङँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२२.ॐ ह्रीँ वँ चँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२३.ॐ ह्रीँ वँ छँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२४.ॐ ह्रीँ वँ जँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२५.ॐ ह्रीँ वँ झँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२६.ॐ ह्रीँ वँ ञँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२७.ॐ ह्रीँ वँ टँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयमि विन्यसामि।

२८.ॐ ह्रीँ वँ ठँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

२९.ॐ ह्रीँ वँ डँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३०.ॐ ह्रीँ वँ ढँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३१.ॐ ह्रीँ वँ णँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३२.ॐ ह्रीँ वँ तँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३३.ॐ ह्रीँ वँ थँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३४.ॐ ह्रीँ वँ दँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३५.ॐ ह्रीँ वँ धँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३६.ॐ ह्रीँ वँ नँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३७.ॐ ह्रीँ वँ पँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३८.ॐ ह्रीँ वँ फँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

३९.ॐ ह्रीँ वँ बँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४०.ॐ ह्रीँ वँ भँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४१.ॐ ह्रीँ वँ मँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४२.ॐ ह्रीँ वँ यँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४३.ॐ ह्रीँ वँ रँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४४.ॐ ह्रीँ वँ लँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४५.ॐ ह्रीँ वँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४६.ॐ ह्रीँ वँ शँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४७.ॐ ह्रीँ वँ षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४८.ॐ ह्रीँ वँ सँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

४९.ॐ ह्रीँ वँ ळँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५०.ॐ ह्रीँ वँ हँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५१.ॐ ह्रीँ वँ हँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५२.ॐ ह्रीँ वँ ळँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५३.ॐ ह्रीँ वँ सँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५४. ॐ ह्रीँ वँ षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५५. ॐ ह्रीँ वँ शँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५६. ॐ ह्रीँ वँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५७. ॐ ह्रीँ वँ लँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५८. ॐ ह्रीँ वँ रँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

५९. ॐ ह्रीँ वँ यँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६०. ॐ ह्रीँ वँ मँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६१. ॐ ह्रीँ वँ भँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६२. ॐ ह्रीँ वँ बँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६३. ॐ ह्रीँ वँ फँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६४. ॐ ह्रीँ वँ पँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६५. ॐ ह्रीँ वँ नँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६६. ॐ ह्रीँ वँ धँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६७. ॐ ह्रीँ वँ दँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६८. ॐ ह्रीँ वँ थँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

६९.ॐ ह्रीँ वँ तँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७०.ॐ ह्रीँ वँ णँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७१.ॐ ह्रीँ वँ ढँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७२.ॐ ह्रीँ वँ डँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७३.ॐ ह्रीँ वँ ठँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७४.ॐ ह्रीँ वँ टँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७५.ॐ ह्रीँ वँ ञँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७६.ॐ ह्रीँ वँ झँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७७.ॐ ह्रीँ वँ जँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७८.ॐ ह्रीँ वँ छँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

७९.ॐ ह्रीँ वँ चँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८०.ॐ ह्रीँ वँ ङँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८१.ॐ ह्रीँ वँ घँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८२.ॐ ह्रीँ वँ गँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८३.ॐ ह्रीँ वँ खँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८४.ॐ ह्रौँ वँ कँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८५.ॐ ह्रौँ वँ अः ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८६.ॐ ह्रौँ वँ अँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८७.ॐ ह्रौँ वँ औँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८८.ॐ ह्रौँ वँ ओँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

८९.ॐ ह्रौँ वँ ऐँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९०.ॐ ह्रौँ वँ एँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९१.ॐ ह्रौँ वँ लॄँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९२.ॐ ह्रौँ वँ लृँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९३.ॐ ह्रौँ वँ ॠँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९४.ॐ ह्रौँ वँ ऋँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९५.ॐ ह्रौँ वँ ऊँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९६.ॐ ह्रौँ वँ उँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९७.ॐ ह्रौँ वँ ईँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९८.ॐ ह्रौँ वँ इँ ॐ ह्रौँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रौँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

९९.ॐ ह्रीँ वँ आँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१००.ॐ ह्रीँ वँ अँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०१.ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०२.ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०३.ॐ ह्रीँ वँ चँ छँ जँ झँ ञँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०४.ॐ ह्रीँ वँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०५.ॐ ह्रीँ वँ तँ थँ दँ धँ नँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०६.ॐ ह्रीँ वँ पँ फँ बँ भँ मँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०७.ॐ ह्रीँ वँ यँ रँ लँ वँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०८.ॐ ह्रीँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

१०९.ॐ ह्रीँ वँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ आवाहयामि स्थापयामि विन्यसामि।

माला में इष्टदेवता प्रतिष्ठा

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ ह्रीँ वँ ऋग्यजुस्सामानि छन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ ह्रीँ वँ प्राणशक्तयै नमः हृदि।

ॐ ह्रीँ वँ आँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ह्रीँ वँ क्रौँ प्राणशक्त्यै नमः सर्वाङ्गे।

कराक्षरन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ आकाशवाय्वाग्न्यपभूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीँ वँ चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रीँ वँ टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीँ वँ तँ थँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीँ वँ पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीँ वँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ बुद्धिमनोहङ्कारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयाद्यक्षरन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ कँ खँ गँ घँ ङँ आकाशवाय्वाग्न्यपभूम्यात्मने हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीँ वँ चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रीँ वँ टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्रत्वक्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वौषट्।

ॐ ह्रीँ वँ तँ थँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हूम्।

ॐ ह्रीँ वँ पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रीँ वँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ बुद्धिमनोहङ्कारचित्तात्मने अस्त्राय फट्।

व्यापकाक्षरन्यासः

ॐ ह्रीँ वँ आँ नाभ्यारभ्य पादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ह्रीँ हृदयारभ्य नाभ्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ क्रौँ मस्तकारभ्य हृदयान्तं न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ यँ त्वगात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ रँ असृगात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ लँ मांसात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ वँ मेदात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ शँ अस्थ्यात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ षँ मज्जात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ सँ शुक्रात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ हौँ ओजात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ हूँ प्राणात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ सँ जीवात्मने नमः न्यस्यामि।

लेलिहान मुद्रा से हृदयादि पर न्यास करने के बाद।

ॐ ह्रीँ वँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। माला के मणियों में न्यास करे।

ॐ ह्रीँ वँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्तं पीठदेवताभ्यो नमः।

ॐ ह्रीँ वँ जयादिशक्तिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ पीठाय नमः।

ध्यानम्

ॐ पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषून्छूलैर्हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तादिवत्पोत रक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥

ध्यान के बाद माला में इष्टदेवता की प्रतिष्ठा करे—

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् रुद्राक्षमालिकाया प्रत्येक मणये श्रीमद्बटुकभैरवस्य प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् रुद्राक्षमालिकाया प्रत्येक मणये श्रीमद्बटुकभैरवस्य जीव इह स्थितः।

ॐ ह्रीँ वँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् रुद्राक्षमालिकाया प्रत्येक मणये श्रीमद्बटुकभैरवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाक्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् रुद्राक्षमालिकाया प्रत्येक मणये श्रीमद्बटुकभैरवस्य गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

इसके बाद माला का षोडशोपचार पूजन करे।

मालासंस्कारं परिपूर्णम्

❁

मन्त्रसंस्कारम्

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमेतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदे मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं श्रीमद्वटुकभैरवमन्त्रस्य छिन्नत्वादि पञ्चाशद्दोष-परिहारार्थं आराध्यकर्मणे विघ्नविच्छेदजनितप्रत्यवायपरिहारद्वारा श्रीष्टवटुकभैरवप्रीत्यर्थं जननादि संस्काराणि कर्म करिष्ये।**

१.शापोद्धारम्—ताम्रपात्र पर चन्दन से स्वाहायुक्त मूल मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को हस्रौं बीज से सम्पुटित कर लिखे, विधिपूर्वक पूजन कर एक हजार जप करे।

हस्रौँ ॐ हस्रौँ, हस्रौँ ह्रीँ हस्रौँ, हस्रौँ वँ हस्रौँ, हस्रौँ व हस्रौँ, हस्रौँ टु हस्रौँ, हस्रौँ का हस्रौँ, हस्रौँ य हस्रौँ, हस्रौँ आ हस्रौँ, हस्रौँ प हस्रौँ, हस्रौँ दु हस्रौँ, हस्रौँ द्धा हस्रौँ, हस्रौँ र हस्रौँ, हस्रौँ णा हस्रौँ, हस्रौँ य हस्रौँ, हस्रौँ कु हस्रौँ, हस्रौँ रु हस्रौँ, हस्रौँ कु हस्रौँ, हस्रौँ रु हस्रौँ, हस्रौँ व हस्रौँ, हस्रौँ टु हस्रौँ, हस्रौँ का हस्रौँ, हस्रौँ य हस्रौँ, हस्रौँ ह्रीँ हस्रौँ।

२.उत्कीलनम्—ताम्रपात्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को हस्क्लीं बीज से सम्पुटित करके लिखे तथा विधिपूर्वक पूजन करके एक माला जप करे।

हस्क्लीँ ॐ हस्क्लीँ, हस्क्लीँ ह्रीँ हस्क्लीँ, हस्क्लीँ वँ हस्क्लीँ, हस्क्लीँ व हस्क्लीँ, हस्क्लीँ टु हस्क्लीँ, हस्क्लीँ का हस्क्लीँ, हस्क्लीँ य हस्क्लीँ, हस्क्लीँ आ हस्क्लीँ, हस्क्लीँ प हस्क्लीँ, हस्क्लीँ दु हस्क्लीँ, हस्क्लीँ द्धा हस्क्लीँ, हस्क्लीँ र हस्क्लीँ, हस्क्लीँ णा हस्क्लीँ, हस्क्लीँ य हस्क्लीँ, हस्क्लीँ कु हस्क्लीँ, हस्क्लीँ रु हस्क्लीँ, हस्क्लीँ कु हस्क्लीँ, हस्क्लीँ रु हस्क्लीँ, हस्क्लीँ व हस्क्लीँ, हस्क्लीँ टु हस्क्लीँ, हस्क्लीँ का हस्क्लीँ, हस्क्लीँ य ह्रीँ हस्क्लीँ।

३.चेतनीम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ईं ऐं औं से सम्पुटित करके लिख कर विधिवत् पूजन करके एक माला जप करे।

ईँ ऐँ औँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ईँ ऐँ औँ।

४.आह्लादनीम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ॐ क्लीँ नमः से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ॐ क्लीँ नमः ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ क्लीँ नमः।

५.तेजोद्दीपनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को वद वद वाग्वादिनी से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

वद वद वाग्वादिनि ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वद वद वाग्वादिनि।

६.मन्त्राभ्यजननम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मन्त्र को अनुलोमविलोम मातृका से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ लँ हँ क्षँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्षँ हँ लँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अं औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ ऌँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ।

७.सूतकनिवारणम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को वालामन्त्र ऐं क्लीं सौः से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ऐँ क्लीँ सौः ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ऐँ क्लीँ सौः।

८.उभयसूतकत्यागम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को ॐ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ॐ ॐ ॐ, ॐ ह्रीँ ॐ, ॐ वँ ॐ, ॐ व ॐ, ॐ टु ॐ, ॐ का ॐ, ॐ य ॐ, ॐ आ ॐ, ॐ प ॐ, ॐ दु ॐ, ॐ द्धा ॐ, ॐ र ॐ, ॐ णा ॐ, ॐ य ॐ, ॐ कु ॐ, ॐ रु ॐ, ॐ कु ॐ, ॐ रु ॐ, ॐ व ॐ, ॐ टु ॐ, ॐ का ॐ, ॐ य ॐ, ॐ ह्रीँ ॐ।

९.मन्त्रप्रत्यक्षम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को श्रीँ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

श्रीँ ॐ श्रीँ, श्रीँ ह्रीँ श्रीँ, श्रीँ वँ श्रीँ, श्रीँ व श्रीँ, श्रीँ टु श्रीँ, श्रीँ का श्रीँ, श्रीँ य श्रीँ, श्रीँ आ श्रीँ, श्रीँ प श्रीँ, श्रीँ दु श्रीँ, श्रीँ द्धा श्रीँ, श्रीँ र श्रीँ, श्रीँ णा श्रीँ, श्रीँ य

श्रीँ, श्रीँ कु श्रीँ, श्रीँ रु श्रीँ, श्रीँ कु श्रीँ, श्रीँ रु श्रीँ, श्रीँ व श्रीँ, श्रीँ टु श्रीँ, श्रीँ का श्रीँ, श्रीँ य श्रीँ, श्रीँ ह्रीँ श्रीँ।

१०.प्राणस्थापनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को ऐँ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ऐँ ॐ ऐँ, ऐँ ह्रीँ ऐँ, ऐँ वँ ऐँ, ऐँ व ऐँ, ऐँ टु ऐँ, ऐँ का ऐँ, ऐँ य ऐँ, ऐँ आ ऐँ, ऐँ प ऐँ, ऐँ दु ऐँ, ऐँ द्धा ऐँ, ऐँ र ऐँ, ऐँ णा ऐँ, ऐँ य ऐँ, ऐँ कु ऐँ, ऐँ रु ऐँ, ऐँ कु ऐँ, ऐँ रु ऐँ, ऐँ व ऐँ, ऐँ टु ऐँ, ऐँ का ऐँ, ऐँ य ऐँ, ऐँ ह्रीँ ऐँ।

११.मन्त्रस्पन्दनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ॐ ह्रीं ॐ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ ह्रीँ ॐ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ ह्रीँ ॐ।

१२.मन्त्रदीपनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र को हंसमन्त्र से सम्पुटित करके चित्रानुसार लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

सोऽहं हंसः ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ हंसः सोऽहं।

१३.मन्त्रताडनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ॐ यँ फट् से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ यँ फट् ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ यँ फट्।

१४.मन्त्रनिबोधनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को ह्रूँ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ह्रूँ ॐ ह्रूँ, ह्रूँ ह्रीँ ह्रूँ, ह्रूँ वँ ह्रूँ, ह्रूँ व ह्रूँ, ह्रूँ टु ह्रूँ, ह्रूँ का ह्रूँ, ह्रूँ य ह्रूँ, ह्रूँ आ ह्रूँ, ह्रूँ प ह्रूँ, ह्रूँ दु ह्रूँ, ह्रूँ द्धा ह्रूँ, ह्रूँ र ह्रूँ, ह्रूँ णा ह्रूँ, ह्रूँ य ह्रूँ, ह्रूँ कु ह्रूँ, ह्रूँ रु ह्रूँ, ह्रूँ कु ह्रूँ, ह्रूँ रु ह्रूँ, ह्रूँ व ह्रूँ, ह्रूँ टु ह्रूँ, ह्रूँ का ह्रूँ, ह्रूँ य ह्रूँ, ह्रूँ ह्रीँ ह्रूँ।

१५.मन्त्राभिषेचनम्—ताम्रपात्र पर मूल मन्त्र लिख कर पूजन करके जल से एक हजार बार मार्जन करे।

ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँअभिषिञ्चामि।

१६.मन्त्रदाहनम्—ताम्रपात्र पर चित्रानुसार मन्त्र को लिखे पूजन करके एक माला जप करे।

रँ ॐ रँ, रँ ह्रीँ रँ, रँ वँ रँ, रँ व रँ, रँ टु रँ, रँ का रँ, रँ य रँ, रँ आ रँ, रँ प रँ, रँ दु

रँ, रँ द्धा रँ, रँ र रँ, रँ णा रँ, रँ य रँ, रँ कु रँ, रँ रु रँ, रँ कु रँ, रँ रु रँ, रँ व रँ, रँ टु रँ, रँ का रँ, रँ य रँ, रँ ह्रीँ रँ।

रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ ॐ रँ, रँ ह्रीँ रँ, रँ वँ रँ, रँ व रँ, रँ टु रँ, रँ का रँ, रँ य रँ,
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ आ रँ, रँ प रँ, रँ दु रँ, रँ द्धा रँ, रँ र रँ, रँ णा रँ, रँ य रँ, रँ कु रँ,
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ रु रँ, रँ कु रँ, रँ रु रँ, रँ व रँ, रँ टु रँ, रँ का रँ, रँ य रँ, रँ ह्रीँ रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ

१७.मन्त्रविमलीकरणम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र को ॐ ह्रौँ वषट् से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ ह्रौँ वषट् ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ ह्रौँ वषट्।

१८.मन्त्रपुनर्जीवनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र को वषट् से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

वषट् ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वषट्।

१९.मन्त्रप्रोक्षणम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र को **ॐ क्रौँ** से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ क्रौँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ क्रौ ॐ।

२०.मन्त्र आप्यायनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूल मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को ह्सौँ से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

ह्सौँ ॐ ह्सौँ, ह्सौँ ह्रीँ ह्सौँ, ह्सौँ वँ ह्सौँ, ह्सौँ व ह्सौँ, ह्सौँ टु ह्सौँ, ह्सौँ का ह्सौँ, ह्सौँ य ह्सौँ, ह्सौँ आ ह्सौँ, ह्सौँ प ह्सौँ, ह्सौँ दु ह्सौँ, ह्सौँ द्धा ह्सौँ, ह्सौँ र ह्सौँ, ह्सौँ णा ह्सौँ, ह्सौँ य ह्सौँ, ह्सौँ कु ह्सौँ, ह्सौँ रु ह्सौँ, ह्सौँ कु ह्सौँ, ह्सौँ रु ह्सौँ, ह्सौँ व ह्सौँ, ह्सौँ टु ह्सौँ, ह्सौँ का ह्सौँ, ह्सौँ य ह्सौँ, ह्सौँ ह्रीँ ह्सौँ।

२१.तर्पणम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर अधोलिखित विधि से लिख कर पूजन करे तथा सहस्र बार तर्पण करे।

ॐ स्वधा विद्महे तत् प्रधानाय धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ श्रीमद्वटुकभैरवं तर्पयामि।

२२.पुनर्दीपनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र को ॐ क्रीं श्रीं से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा दश माला जप करे।

ॐ क्रीँ श्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ॐ क्रीँ श्रीँ।

२३.गोपनम्—ताम्रपात्र या भोजपत्र पर मूलमन्त्र के प्रत्येक अक्षर को क्रीं से सम्पुटित करके लिख कर पूजन करे तथा एक माला जप करे।

क्रीँ ॐ क्रीँ, क्रीँ ह्रीँ क्रीँ, क्रीँ वँ क्रीँ, क्रीँ व क्रीँ, क्रीँ टु क्रीँ, क्रीँ का क्रीँ, क्रीँ य क्रीँ, क्रीँ आ क्रीँ, क्रीँ प क्रीँ, क्रीँ दु क्रीँ, क्रीँ द्धा क्रीँ, क्रीँ र क्रीँ, क्रीँ णा क्रीँ, क्रीँ य क्रीँ, क्रीँ कु क्रीँ, क्रीँ रु क्रीँ, क्रीँ कु क्रीँ, क्रीँ रु क्रीँ, क्रीँ व क्रीँ, क्रीँ टु क्रीँ, क्रीँ का क्रीँ, क्रीँ य क्रीँ, क्रीँ ह्रीँ क्रीँ।

उपर्युक्त प्रकार से संस्कार करके पुनः मूल मन्त्र का विधिवत् पुरश्चरण करने से सद्यः प्रत्यक्ष सिद्धि प्राप्त होती है इसी प्रकार से भैरव के अन्य मन्त्रों का संस्कार करे।

छिन्नत्वादिकदोषा ये पञ्चाशन्मन्त्रसंस्थिता।
तैर्दोषैः सकला व्याप्ता मनवः सप्तकोटयः॥

समस्त मन्त्रों के छिन्नत्वादि जो ५० दोष है, उनसे सातों कोटि मन्त्र व्याप्त है। अतः इन दोषों की शान्ति के लिए मन्त्रों के संस्कार निश्चय ही करना चाहिये।

मन्त्रसंस्कारविधिं परिपूर्णम्

❀

शिवागमतन्त्रोक्त श्रीमद्वटुकभैरवदीपदानम्

पार्वत्युवाच

देव देव जगन्नाथः भक्तानुग्रकारक।
दीपदानविधिं ब्रूहि वटुकस्य महात्मनः॥१॥

पार्वती ने कहा—हे देवों के देव महादेव जगन्नाथ! भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले, महात्मा वटुकनाथ के प्रसन्नता के लिए दीपदान विधि को हमसे कहें॥१॥

महादेव उवाच

नोक्तपूर्वं महेशनि! दीपं वै भैरवस्य च।
आपत्काले महादेवि! दीपयागंसमाचरेत्॥२॥

महादेव ने कहा—हे महेशानि! वटुक भैरव के लिए पूर्व में जो दीपदान विधि नहीं कहा उसे भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए तुमसे कहता हूँ। हे महादेवि! आपत्तिकाल में दीपदान करना चहिए॥२॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगकरणे शशी।
न राशिर्न च सूर्यादिग्रहान्नैव विचिन्तयेत्॥३॥

इसके लिए न तिथि, न नक्षत्र, न योगकरण, न चन्द्र, न राशि, न सूर्यादिग्रहों की अनकूलता का ही विचार किया जाता है अर्थात् इसके लिए किसी मुहूर्त के विचार की आवश्यकता नहीं होती है॥३॥

भक्तानां स्वहितार्थाय आपत्तिकालोपस्थिते।
यंदा चोत्पद्यते कार्यं दीपं तत्र प्रयोजयेत्॥४॥

भक्तों को आपत्तिकाल जिस समय आ जाये उसी काल में अपत्ति समाप्त करने के लिए दीपदान करना चाहिए॥४॥

त्रिकोणं चैव षट्कोणमेवं यन्त्रं समुद्धरेत्।
तत्रदीपं प्रतिष्ठाप्य यथोक्तं ध्यानयोगतः॥५॥

त्रिकोण, षट्कोण पूर्वक यन्त्र का निमार्ण कर उसपर दीप प्रतिष्ठापूर्वक स्थापित कर ध्यान और योग के सहित पूजन करना चाहिए॥५॥

क्रूरकार्येषु सर्वेषु ध्यानं वै तामसस्मृतम्।
वश्येविद्वेषणेस्तम्भे राजसं परिकीर्तितम्॥६॥

सर्वत्र क्रूरादि कार्यो में तामस ध्यान करना चाहिए तथा वशीकरण, विद्वेषण और स्तम्भनादि कार्यों में राजस ध्यान करना चाहिए।।६।।

सात्त्विकं सर्वकार्येषु ध्यानभेदः प्रकीर्तितः।
पात्रस्य वर्त्तिकायाश्च मानं तैलस्य सुन्दरि।।७।।

शेष सभी कार्यों में सात्त्विक ध्यान करना चाहिए यही कार्यानुसार ध्यान भेद हमारे द्वारा पूर्व में कहे गये है।।७।।

पलैः षोडशकैः पात्रमर्द्धं तैलस्य भामिनि।
वर्तिमानं महेशानि तन्तुषोडशकैः शुभैः।।८।।

हे भमिनि! सोलह पल के पात्र में सोलह तन्तुओं की वर्त्तिका तथा उसके आधे प्रमाण का तैल रखना शुभकारक होता है।।८।।

सौवर्णं राजतं ताम्रं दीपपात्रं प्रशस्यते।
त्रिषष्टिपलमानस्यान्महत्कार्ये विशेषतः।।९।।

हे महेशानि! सोने का पात्र सर्वोत्तम, रजत का पात्र मध्यम तथा ताम्र का पात्र अधमादि संज्ञक दीपपात्र प्रसस्त होता है, महान् कार्यों में विशेषरूप से तिरसठपलमान का पात्र प्रशस्थ होता है।।९।।

प्रयोगेषु च सर्वेषु लौहपात्रं प्रशस्यते।
मारणोच्चाटने चैव मानमेतत्प्रकीर्तितम्।।१०।।

मारण, उच्चाटनादि कार्य तथा सर्वत्र क्रूरादि कठिन कार्यों में लौह का दीपपात्र अनुकूल होता है।।१०।।

आसने उपविश्याथ सम्यग्वै कृष्ण कम्बले।
तद्दिनात्तद्दिनं यावत्तावदष्टोत्तरं शतम्।।११।।

कार्यानुसार ही आसन का प्रयोग करना चाहिए, सात्त्विकादि कार्यों में श्वेत, राजस कार्यों में रजत तथा क्रूरादि कार्यों में कृष्ण वर्ण के आसन का प्रयोग करना चाहिए।।११।।

पार्वतयुवाच

यः सूचितो पुरा नाथ विधिर्वै वटुकस्य च।
तं ब्रूहि येन देवेश षट्कर्माणि प्रसादयेत्।।१२।।

पार्वती ने कहा—हे देवेश! पूर्व में आपने वटुकनाथ की उपासना तथा दीपदान विधि बताये अब षट्कर्मों की विधि प्रसन्नता पूर्वक बतायें।।१२।।

ईश्वर उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि वटुकस्य वरानने।
दीपदानं सर्वकार्यसाधनं प्रत्ययावहम्।।१३।।

ईश्वर ने कहा— हे वरानने! वटुकभैरव के प्रसन्नता के लिए किया जानेवाले दीपदान का सम्पूर्ण प्रयोग तुमसे कहता हूँ।।१३।।

चतुरस्रं भुवं सम्यक्कल्पयेत्सुरवन्दिते।।१४।।
गोमयेनोपलिप्याथ मण्डलं रचयेत्ततः।
कीलाष्टकं चाष्टदिक्षु दद्याद्वस्त्रेण वेष्टयेत्।।१५।।
कीलानि क्षीरवृक्षस्य कार्याणि कुलसुन्दरि।
तेषु कीलेषु विधिवद्बलिं दीपसमन्वितम्।।१६।।
पूर्वादिपूजितं रक्तं चन्दनैः करवीरजैः।
ह्रीँ जयन्ताय कुसुमैः ह्रीँ मे घोराय सुन्दरि।।१७।।
ह्रीँ चामीकराय तथा ह्रीँ प्रसिद्धाय वै नमः।
ह्रीँ तीक्ष्णाय प्रचण्डाय करालाय कपालिने।।१८।।
जयन्तश्चाथ घोराऽथ चामीकरसिताङ्ककौ।
भीषणश्च प्रचण्डश्च करालश्च कपालकः।।१९।।
नमस्कृत्य गणेशानं गुरुं क्षेत्रेशमेव च।
तन्मध्ये विलिखेत्स्पष्टं रक्तचन्दनवारिणा।।२०।।
चतुरस्रसमं वाह्ये तन्मध्ये तु षडस्रकम्।
तन्मध्ये तत्रमालिख्य तत्र देवं विचिन्तयेत्।।२१।।
तण्डुलैः पूरयित्वा तु रक्तचन्दनलोहितैः।
पीठपूजां विधायाथ पात्रं संस्थाप्य तत्र वै।।२२।।
तत्तत्कार्यवशाद्देवि तत्तद्द्रव्यं प्रपूरयेत्।
गव्यमाकर्षणे कृत्ये कौसुम्भं स्तम्भेन स्मृतम्।।२३।।
तिलतैल तथा गव्यं घृतं वश्ये प्रकल्पयेत्।
कटुतैलं द्वेषणे च मारणे राजिकं स्मृतम्।।२४।।
आज्यं चौष्ट्रं माहिषं च मैषमुच्चाटने मतम्।
अथवा तिलतैलं तु सर्वकार्ये प्रशस्यते।।२५।।
बन्दीबन्धनमोक्षे च तथा भूतपिशाचके।
सार्पिष तैलमापूर्य दीपदानं विधीयते।।२६।।
शतमष्टोत्तरं चाथ पलानि प्रथमे विधौ।
अष्टाशीतिर्द्वितीये च परेष्टाविंशतिः प्रिये।।२७।।
सर्वकार्येषु देवेशि सङ्ख्याप्रोक्ता त्रिधात्र वै।
शुभकार्ये ताम्रमयं विपरीते तु लौहजम्।।२८।।
शुभे सौम्यमुखो दीपा ह्यशुभे दक्षिणामुखः।
शतेन त्रिशतेनाथ सहस्रेणथ वर्त्तिकाम्।।२९।।

कारयित्वा शुभे पात्रे सन्स्थाप्य ज्वालयेत्तथ।
दीपं सम्यक्प्रपूज्याथ तत्र सङ्कल्पमाचरेत्॥३०॥
प्रणवं(ॐ)पूर्वमुद्धृत्य ततो लज्जां(ह्रीँ)रमामथ(श्रीँ)।
कामं(क्लीँ)लज्जां(ह्रीँरमामों(श्रीँॐ)च सर्वज्ञेतिपदं ततः॥३१॥
ङेऽन्तं तथा च चण्डेति पराक्रमपदं ततः।
ङेऽन्तं वटुकमुद्धृत्य इमं दीपं ततो वदेत्॥३२॥
प्रगृहाण चिन्तितं च सर्वकार्याणि साधयेत्।
दुष्टान्नाशय युग्मान्ते त्रासयेतिपदं द्विधा॥३३॥
सर्वतो मम रक्षां च कुरु युग्मं च वर्म च।
अस्त्रमग्निवधूप्रोक्तो दीपदाने मनुस्त्वयम्॥३४॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ ॐ ह्रीँ वँ वटुकं इमं दीहपं गृहाण गृहाण मम सर्व कार्याणि साधय साधय सर्व दुष्टान्नाशय नाशय त्राशय त्राशय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु हुँ फट् स्वाहा।

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मायां वाणी ततो वदेत्।
कमलाकामवाणीञ्च सर्वज्ञाय ततो वदेत्॥३५॥
प्रचण्डपराक्रमाय वटुकाय स्वरूपकम्।
कार्याणि साधय द्वन्द्वं दुष्टान्नाशय नासय॥३६॥
सर्वतो मम रक्षां च कुरु द्वन्द्वं हुँ फट् स्वाहा।
अनेन मनुना देवि! गृह्य पुष्पाक्षतं जलम्॥३७॥
वटुकाय इमं दीपं निवेदयामि सम्वदेत्।
प्रतिष्ठां पूजनं साङ्गं बलिं देवाय दापयेत्॥३८॥

ॐ ह्रीँ ऐँ श्रीँ क्लीँ ऐँ ॐ ह्रीँ वँ सर्वज्ञाय प्रचण्डपराक्रमाय वटुकाय मम सर्व कार्याणि साधय साधय सर्व दुष्टान्नाशय नाशय त्राशय त्राशय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु हुँ फट् स्वाहा वटुकाय इमं दीपं निवेदयामि।

तेनदीपं परिज्वाल्य वटुकाय बलिं हरेत्।
तैलाभ्यङ्गं पुरा कृत्वा वटुकं भोजयेत्ततः॥३९॥
दधिदुग्धघृताद्यैश्च वटकैः स्नेपाचितैः।
न वदेदशुभं वाक्यं यावद्दीपस्य साधनम्॥४०॥
अथान्यदपि वक्ष्यामि साधनं परमाद्भतम्।
वश्ये विद्वेषणे स्तम्भे कर्त्तव्योयं सुरेश्वरि॥४१॥
कन्यार्थी च सुतार्थी च दीपंप्रज्वालयेत्ततः।
दीपनाशं पुनर्दीपं कृत्वा शान्तिं च कारयेत्॥४२॥

गणेशान्वटुकान्कन्या भोजयेद्विघ्नशान्तये।
पञ्चवर्षा भवेत् कन्या नववर्षो गणेश्वरः॥४३॥
षट् चाष्टौ वटुकः साक्षान्नारी स्यात्षोडशाब्दिका।
ततो शान्तिस्तुतिं कुर्याद्वटुकस्य महात्मनः॥४४॥
यस्यार्चनेन विधिना किमपीह लोके,
कर्मप्रसिद्धिमिति नामफलं प्रसूते।
द्वैजं च सकलसाधकचित्तवृत्तिं,
चिन्तामणिं सुरगणाधिपतिं नमामि॥४५॥
रक्ताम्बरं ज्वलनपिङ्गजटाकलापं,
ज्वालीवलाकुटिल चण्डधरप्रचण्डम्।
बालर्कसुद्युतिकमुत्पलधातुवर्ण ,
देवीसुतं वटुकनाथमहं नमामि॥४६॥
हरतु कुलगणेशो विघ्नसन्धानशेषान्,
नयतु कुलसपर्यां पूर्णतां साधकानाम्।
पिवतु वटुकनाथः शोणितं निन्दकानां,
सकलकामाल्लौकिकान्वो गणेशः॥४७॥
अथ दीपविधिः प्रोक्तो वटुकस्य तवानघे।
गोपनीयः प्रयत्नेन सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥४८॥
दीपस्य दक्षिणे भागे दक्षिणाग्रामधोमुखीम्।
छुरिकां निखनेद्भूमौ शत्रुपक्षनिबर्हणम्॥४९॥
षोडशाङ्गुलि विन्यासां शलाकां स्वर्णनिर्मितां।
दीपस्य दक्षिणे भागे स्थापयेत्साधकोत्तमः॥५०॥
यथा कामस्तथा ध्यानं कारयेत्साधकोत्तमः।
एवं दीपविधिः प्रोक्तो ह्यावरणानि प्रपूजयेत्॥५१॥
वटुकाष्टकमष्टाषु दिक्षु वै भैरवाष्टकम्।
राकिन्यादिभवेत्यष्टौ परिवाराष्टकं ततः॥५२॥
गणाश्चाष्टौ शक्तयश्च ह्यष्टौ पूज्याविशेषतः।
अम्बाश्चाष्टौ पादुकाश्चाष्टौ सायुधवाहनस्तथा॥५३॥
परिवारसमायुक्ताः सपुत्राश्च सपत्निकाः।
सर्वान्देवान्प्रपूज्याथावरणेन समन्वितान्॥५४॥
मध्ये तु पूजयेद्देवं वटुकं दीपमध्यतः।
पञ्चोपचारैः सम्पूज्य धूपदीपादीभिः क्रमात्॥५५॥
कवचं अष्टोत्तरस्तवराजञ्च आपदुद्धारणं जपेद्।

्स्तवराजं च कवचं च दीपाग्रे प्रपठेत्पुनः॥५६॥
मन्त्रं लक्षं जपेद्देवि कवचमयुतं पठेत्।
सहस्रं स्तवराजं च कार्यमुद्दिश्य मन्त्रवित्॥५७॥
कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तं दीपाग्रे प्रपठेत्सदा।
सूर्यास्तकालमारभ्य यावत्सूर्योदयो भवेत्॥५८॥
तावन्मन्त्रं जपेद्रात्रौ कार्यमुद्दिश्य मन्त्रवित्।
आदौ तु बलिदानं वै पाठहोमादिकं ततः॥५९॥
होमान्ते च जपान्ते च पुनर्बलिं समुद्धरेत्।
अष्टमीदिमारभ्य यावत्कृष्णा चतुर्दशी॥६०॥
यावन्मन्त्रं जपेद्रात्रौ सर्वकार्यप्रसाधनम्।
नदीतीरे शिवागारे बिल्वमूले गिरौ तथा॥६१॥
गुहायां सिद्धपीठे च सन्निधौ भैरवस्य च।
पुत्रप्राप्तिः सहस्रे स्याद्द्विगुणे च धनागमः॥६२॥
त्रिगुणे बन्धनान्मुक्तिः चतुःसङ्ख्ये प्रियागमः।
बाणसङ्ख्ये स्तम्भनं स्याद्रससङ्ख्ये क्षयो भवेत्॥६३॥
सप्तसङ्ख्ये जगद्वश्यमष्टसङ्ख्ये तु मोहनम्।
अङ्कसङ्ख्ये महोत्साह उच्चाटो दशसङ्ख्यके॥६४॥
एकदशेन देवेशि ह्यखिलाः सिद्धयः स्मृताः।
लक्षेणैकेन देवेशि चक्रवर्ती भवेद् ध्रुवम्॥६५॥
कोटिसङ्ख्ये महादेवि भवेद्भैरवसन्निभः।
नौकाया व्यवहारे च जपेत्सप्तशतं तथा॥६६॥
कृषिकर्मणि वाणिज्ये रुद्रसङ्ख्याशतानि च।
दीपाग्रे कलशाग्रे च त्रिकोणे रसकोणके॥६७॥
अणिमाद्यष्टसिद्धिनां पूजनं परिकीर्तितम्।
अष्टदिक्षु ततः कुर्याद्भूतानामपसर्पणम्॥६८॥
वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे यावत्पूजां करोम्यहम्॥६९॥
गोमयेनोपलिप्तायां भूमौ मण्डलमालिखेत्।
त्रिकोणं रसकोणं च ह्यष्टकोणं च भूपुरम्॥७०॥
एवं मण्डलमालिख्य दीपपात्रं हि स्थापयेत्।
दीपपात्रे च पूर्वोक्तं यन्त्रं सँलिख्य मन्त्रवित्॥७१॥
बीजं विलिख्य तन्मध्ये वर्तिं तैलं च निक्षिपेत्।

घृतं वा पूरयेद्विद्वाँस्ततो दीपं प्रबोधयेत्॥७२॥
ततो दीपस्य प्राणानां प्रतिष्ठापनमाचरेत्।
पञ्चोपचारैर्बटुकं पूजयेत्तत्र मानवः॥७३॥
दीपस्य कलशे तत्र कुर्यादावरणर्चनम्।
बलिदानं ततः कार्यं दीपस्य प्रार्थना ततः॥७४॥
दीपाग्रे च यथा शक्ति गायत्रीं वटुकस्य च।
जपेद्दीपं समर्प्याथ कवचं प्रजपेत्ततः॥७५॥
मन्त्रं जप्त्वा पुनर्वर्म पठेन्मन्त्रं ततः परम्।
स्तवराज पठित्वा तु मन्त्रं जप्त्वा निवेदयेत्॥७६॥
शीतलाप्रसादपौत्रेण वायुनन्दनपुत्रेण।
क्रियते रामप्रियेण दीपदानविधिः शुभम्॥७७॥
वैशखश्रावणाश्विनकार्त्तिकादिकपञ्चके ।
शुक्लेपक्षे प्रकर्त्तव्या यावत्कृष्णा च पञ्चमी॥७८॥
सप्तमी पूर्णिमा चैव द्वितीया पञ्चमी तथा।
त्रयोदशी च दशमी तृतीया प्रतिपत्तथा॥७९॥
द्वादशी च तथा षष्ठी ह्येता स्युस्तिथयः शुभाः।
सौभाग्यशोभनायुष्मान्सुकर्माधृतिप्रीतयः ॥८०॥
वृद्धिर्वैधृतिपाताश्च एते योगाः शुभाः स्मृताः।
बालवं कौलवं चैव गरं चेति शुभानि वै॥८१॥
ग्रीष्मं विना शुभा पञ्च ऋतवः प्ररिकीर्तिताः।
मासद्वयात्मकाः श्रेष्ठाः दिनं दिनार्धमेव च॥८२॥
सूर्योदयं समारभ्य यावदस्तं गतो रविः।
अहोरात्रप्रमाणेन ग्रीष्मादिः परिकीर्त्तितः॥८३॥
दिवा पूर्वाह्णकः कालो रात्रौ निशीथ एव च।
यद्वा सर्वत्र रात्रौ तु सूर्यचन्द्रोपरागयोः॥८४॥
अद्धोदये महाष्टभ्यां कालमोहश्च रात्रिके।
साधकः स्वहितार्थाय कुर्याद्दीपं तु भैरवः॥८५॥
सौवर्ण सिद्धिदं पात्रे वश्ये रौप्यं प्रकल्पयेत्।
विद्वेषणकरं लौह मारणे मृण्मयं तथा॥८६॥
उच्चाटनकरं कान्स्यं मोहे पित्तलजं स्मृतम्।
अत्रोक्त सर्वकार्येषु सर्वाभावे तु ताम्रजम्॥८७॥
श्वेतं शान्तौ तथा पीतं स्तम्भे वश्ये तु रक्तकम्।

माञ्जिष्ठ द्वेषणे प्रोक्तं मारेण कृष्णसूत्रकम्॥८८॥
सर्वाभावे महादेवि श्वेतसूत्रं प्रशस्यते।
दीपदाने भवेद्वर्त्ति रक्तवर्णं विशेषतः॥८९॥
एकापञ्च तथा सप्त एकविंशतिसङ्ख्यया।
अयुग्माथ प्रकर्त्तव्या युग्मां नैव तु कारयेत्॥९०॥
वर्त्तिरिका प्रकर्त्तव्या तिस्रो वा वर्तयस्तथा।
स्वङ्गितार्थाय भैरवभक्तस्कुर्याद्विशेषतः॥९१॥
गोघृते सर्वसिद्धिः स्यान्माहिषं मारणे स्मृतम्।
उष्ट्रीयं द्वेषणे प्रोक्तं गाडरं शान्तिकर्मणि॥९२॥
अजामुच्चाटने कार्यं सर्वाभावे च गोघृतम्।
घृताभावे भवेत्तैलं दीपदाने विशेषतः॥९३॥
घृतेन दीपो दातव्यस्तिलतैलेन वा पुनः।
वासमेदोद्भवं तैलं प्रयत्नेन विवर्जयेत्॥९४॥
अथ पात्रमानं तथा प्रोक्तमेवं तथा पुनः।
विंशत्पलमितं पात्रं बुध्नेच्छ्राये षडङ्गुलम्॥९५॥
विस्तारे अङ्गुलान्येव षोडशपरिकीर्त्तितः।
पञ्चाशत्पलगव्यं च वश्ये चौर्यादिकर्मणि॥९६॥
त्रिंशद्दशपले पात्रे मानं तद्वत्प्रकीर्त्तितम्।
षष्टिपलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये नवाङ्गुलम्॥९७॥
अङ्गुलानि चतुर्विंशदायामे परिकल्पयेत्।
पञ्चसप्तमिते तैले सर्वशत्रुविनाशनम्॥९८॥
द्विपञ्चाशत्पले पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु षष्ठिमात्।
शतपलमिते तैले दीपाद्वैरिविनाशनम्॥९९॥
शतपलमिते पात्रे उच्छ्रायो द्वादशाङ्गुलः।
द्वात्रिंशच्चैव आयामे तन्मध्ये तु सहस्रकम्॥१००॥
सर्वकर्माणि सिद्धिः स्याद्दीपे पलसहस्रके।
सपादशतपात्रे च पञ्चोत्तरशताधिके॥१०१॥
पञ्चदशाङ्गुलोच्छ्रायं व्यायामे षट्त्रिंशके।
अयुतपलदीपश्च निगडाद्बन्दिमुक्तये॥१०२॥
सहस्रपलदीपे च वन्दिमोक्षः प्रजायते।
त्रिंशत्पलमिते पात्रे मान्यं चैव तु पूर्ववत्॥१०३॥
त्रिंशत्पलमिते तैले दिनान्येकोनविंशतिः।

कान्याभिकाङ्क्षी तैलेन प्रत्यहं दीपमाचरेत्॥१०४॥
ईप्सितां लभते कन्यां भैरवस्य प्रसादतः।
नृपपलमिते पात्रे उच्छ्रायं च रसाङ्गुलम्॥१०५॥
विशंत्पलमिते दीपे प्रत्यहं विंशतिर्दिनम्।
सर्वरोगविनाशाय क्षयापस्मारदारुणे॥१०६॥
दशपलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु त्रिंशतम्।
दशपलमितं तैलं प्रत्यहं सप्तवासरे॥१०७॥
राजावश्यकरं क्षिप्रं यदि साक्षाज्जगत्पतिः।
त्रिंशत्पलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु पूर्ववत्॥१०८॥
त्रिंशत्पलमिते तैले क्षुद्ररोगविनाशकृत्।
एकादशपलमिते उच्छ्राये तु षडङ्गुलम्॥१०९॥
पञ्चविंशत्पलेदीपे पात्रं भूतादिनाशनम्।
एकादशपले पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु षोडशम्॥११०॥
नृपपलमिते तैले ग्रहपीडानिवारणम्।
शतपलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु षोडश॥१११॥
व्यायामं तु भवेत्सार्द्धं चतुर्विंशतिरङ्गुलैः।
तन्मध्ये च प्रकर्त्तव्यो दीपः शतत्रयात्मकः॥११२॥
सिंहव्याघ्रादिसर्पाणां भयं नैव प्रजायते।
एकादशपलेपात्रे उच्छ्रायं चैव पूर्ववत्॥११३॥
अष्टपलघृतोदीपो यात्राकाले प्रकल्पयेत्।
तस्यमार्गे भयं नास्ति स्वस्थश्च गृहमाप्नुयात्॥११४॥
त्रिंशत्पलमितेपात्रे व्यायामे चैव पूर्ववत्।
शतपलमिते दीपे मेधारोग्यविवर्धनम्॥११५॥
नित्यदीपप्रमाणे तु पात्रं पलत्रयं स्मृतम्।
बुध्नोच्छ्राये भवेत्सार्द्धमङ्गुष्ठोदरमध्यगः॥११६॥
तन्मध्ये तु भवेत्तैलं यथाकामनया सुधीः।
पलमात्रं पलार्द्धं वा दीपं प्रज्वालयेत्सुधीः॥११७॥
अङ्गुष्ठोदरचत्वारि व्यायामः परिकीर्त्तितः।
एकावर्त्तिः प्रकर्त्तव्या एकविंशतितन्तुभिः॥११८॥
पात्रमध्ये मण्डलं तु कुर्याद्वा साधकोत्तमः।
षट्कोणान्तस्त्रिकोणस्थां मध्ये मायां प्रकल्पयेत्॥११९॥
तन्मध्ये च भवेद्वर्तिस्ततो दीवं प्रकल्पयेत्।

भूतशुद्धिः प्रतिष्ठा च ऋष्यादि च षडङ्गकम्॥१२०॥
मातुकान्यासपूर्वं ही ततो बलिं समुद्धरेत्।
आवरणार्चनकं कुर्यान्मध्ये देवं प्रपूजयेत्॥१२१॥
दिक्पालाँल्लोकपालांश्च समग्रपरिवारतः।
सवाहनान्सायुधांश्च पत्नीपुत्रादिभिर्युतान्॥१२२॥
अपसर्पणपूर्वं हि सर्वत्र पूजनं चरेत्।
धूपदीपादिनैवेद्यस्ताम्बूलारार्तिकादिभिः ॥१२३॥
यदक्षरपदेनैव सर्वपापं क्षमस्व मे।
कवचं स्तवराजञ्च दीपाग्रे प्रपठेत्सुधीः॥१२४॥
ततो मन्त्रजपं कुर्याद्दैवताय समर्पयेत्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥१२५॥
स्तवराजशतेनैव फलमाप्नोति मानवः।
स्तवराजसहस्रेणलभेद्वै वाञ्छितं फलम्॥१२६॥
एकादशसहस्रेण तस्य सिद्धिरनेकधा।
सम्पुटस्तवराजेन मन्त्रस्याष्टोत्तरं शतम्॥१२७॥
पुरश्चरणं तु यः कुर्यादेकादशसहस्रकम्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति मानवः॥१२८॥
होमादौ च जपादौ च बलिदानं प्रकल्पयेत्।
होमान्ते च जपान्ते च बलिद्वये सुसिद्धिदम्॥१२९॥
(रुद्रयामलेविशेषः)विन्दोस्त्रिकोणंषट्कोणंवृत्ताष्टदलकं तथा।
दलानि षोडशान्येव चतुरस्त्रं ततः परम्॥१३०॥
एवं यन्त्रं समालिख्य तत्र सम्पूज्य देवताः।
तस्योपरि दीपपात्रं स्थापयेत्साधकोत्तमः॥१३१॥
तैलं घृतं वा वर्त्तिं च स्थाप्यदीपं प्रबोधयेत्।
तैलवर्त्तिस्थापने तु इमं मन्त्रं समुच्चरेत्॥१३२॥

ॐ नमो भगवते वटुकभैरवाय देवीपुत्राय सर्वदुष्टजनमुखस्तम्भं कुरु कुरु ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ठः ठः ठः हुँ फट् स्वाहा॥

इत्यनेनाष्टवारं तदाभिमन्त्र्य निधापयेत्।
मूलमन्त्रेण तं दीपं ततः प्रज्वालयेत्सुधीः॥१३३॥
दीपार्पणे तु यो मन्त्रः स तु पूर्वमुदीरितः।
त्रिवारं तं समुच्चार्य देवाय दीपमर्पयेत्॥१३४॥
मूलमन्त्रं ततः किञ्चिज्जप्त्वा बलिं समर्पयेत्।

माषान्नं माषभक्तं वा पात्रे चैव सदीपकम्॥१३५॥
पायसान्नं मोदकञ्च चणकादीनि निक्षिपेत्।
शङ्खोदकेनसम्प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य च॥१३६॥
अमृतीकरणं कृत्वा गन्धदिभिश्च पूजयेत्।
बलिनिवेदनं मन्त्रं त्रिवारं च पठेन्नरः॥१३७॥
बलिपात्रस्याधोभागे त्रिकोणं रसकोणकम्।
चतुरस्त्रं मण्डलं वै कृत्वा पात्रं निधापयेत्॥१३८॥

ॐ ह्रीँ वटुकनाथ देवीपुत्र कपिलजटाभारलसद्भास्वर त्रिनेत्रज्वालामुखरित सर्वविघ्नान्निवारय निवारय सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सकलशास्त्रछन्दोनिबद्धांवाणीं मे कुरु कुरु इमं यथोकल्पितं बलिं गृह्ण गृह्ण ई ब्राँ ब्रीँ ब्रूँ ब्लाँ ब्लूँ बलिं गृह्ण गृह्ण सिद्धिं देहि देहि हुँ फट् स्वाहा॥

तस्मिन्दीपे महेशानि ध्यात्वा वटुकभैरवम्।
छुरिकास्थापनं कृत्वा बलिदानं समाचरेत्॥१३९॥
दीाग्रे त्वशुभां वाणीं पतितस्य च दर्शनम्।
अस्पर्शानिष्टवचनमधोवातविसर्जनम् ॥१४०॥
वर्जयेच्च प्रयत्नेन सावधानः सदा शुचिः।
मार्जारमूषकादिभ्यो जन्ततुभ्यः साधकोत्तमः॥१४१॥
दीपरक्षां प्रकुर्वीत नोचेदापदमाप्नुयात्।
अथ पुष्पाञ्जलिं दद्यान्मन्त्रेणानेन पार्वति॥१४२॥
अनेन दीपवर्येण पश्चिमाभिमुखेन च।
यथाविधि कृतेनात्र पूर्णाः सन्तु मनोरथाः॥१४३॥
इत्थं सम्पूज्य विधिवत्प्रणमेच्च कृताञ्जलिः।
इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्साधकोत्तमसिद्धिदम्॥१४४॥
श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि महादीपविधिं शुभम्।
अभिचारे त्रयं कुर्याद्दक्षिणोत्तरपश्चिमे॥१४५॥
पुष्पवासिततैलं च सर्वकामफलप्रदम्।
तिलतैलं श्रियो हेतुः पथिकागमनं प्रति॥१४६॥
अलसीतैलममुद्दिष्टं वश्यकर्मणि निश्चितम्।
सर्पिषं रोगनाशाय मारणे राजिकोद्भवम्॥१४७॥
उच्चाटने करञ्जोत्थं विद्वेषे मधुवृक्षजम्।
गोघृतेनकृतेदीपे देवतां वशमानयेत्॥१४८॥
गोधूमाश्च तिलामाषामुद्गाश्च तण्डुलाः क्रमात्।

पञ्चधान्यमिदं प्रोक्तं सर्वदा दीपदापने॥१४९॥
वश्ये तण्डुलमपिष्टोत्थं मारणे माषपिष्टजम्।
तिलपिष्टसमुद्भूतममुच्चाटनविधौ स्मृतम्॥१५०॥
प्रियस्यागमने प्रोक्तं गोधूमोत्थं सतण्डुलम्।
मोहने मुद्गजं प्रोक्तं पात्रद्रव्यमनुक्रमात्॥१५१॥
सौवर्णं राजतं वापि ताम्रजं वापि शक्तितः।
पलत्रयमितं देवि नित्यं दीपे प्रकीर्तितम्॥१५२॥
शतसङ्ख्ये महादीपे पात्रं युग्मशरैः स्मृतम्।
सहस्रपलदीपे तु पात्रं शतपलैः स्मृतम्॥१५३॥
घृतायुतपले पात्रं स्मृतं पञ्चशरैः कृतम्।
तत्तकार्यविभेदेन पात्रं कुर्याद्यथाविधिः॥१५४॥
वश्ये भये विषादे च शस्त्रसंग्रामसङ्कटे।
द्यूते सैन्ये स्तम्भने च विद्वेषोच्चाटमारणे॥१५५॥
मयोक्तविधिना दीपः कर्त्तव्यो भैरवस्य तु।
पश्चिमाभिमुखःस्थाप्यो महादीपो महेश्वरि॥१५६॥
साधयेत्सर्वकार्याणि साधकस्य न संशयः।
रविवारे पायसान्नं सोमवारे च मोदकम्॥१५७॥
भौमे गुडाज्यगोधूमा बुधे च दधिशर्करा।
गोधूमपूरिका युक्ता घृतमध्ये सुपाचिताः॥१५८॥
गुड़ौ चडकखण्डाज्यं केवलं चणकं भृगौ।
शनौमाषान्नतैलं च इति वारबलिः क्रमात्॥१५९॥
दीपं प्रज्वाल्य देवेशि वटुकाय बलिं हरेत्।
त्रिराचम्यं च मन्त्रैश्च हस्तं प्रक्षाल्य वै तदा॥१६०॥
हस्ते जलं ततो गृह्य विनियोगं पठेत्प्रिये।
ततो न्यासं प्रकुर्वीत ध्यानं कुर्यात्ततः परम्॥१६१॥
सात्त्विकं ध्यानमाख्यातं प्रागेव तव सुव्रते।
इदानं राजसं ध्यानं शृणु वक्ष्ये सुरेश्वरि॥१६२॥
उद्यत्सूर्यसहस्राभं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।
रक्ताङ्गरागमारक्तं माल्याम्बरविभूषितम्॥१६३॥
स्मेराननं नीलकण्ठं नानाभरण वश्यताम्।
माहिषेण घृतेनेह शत्रुनाशो भवेद् ध्रुवम्॥१६४॥
अजाघृतस्य दीपेन शत्रुभङ्गो भवेदिह।

निर्गुंण्डीतैलदीपेन शत्रुसेना पराङ्मुखी॥१६५॥
एरण्डीतैलदीपेन भोगवाञ्झायते नरः।
जातीतैलेन दीपेन राजमान्यो भवेच्छुभः॥१६६॥
कपिलाया घृतेनैव भोगवाञ्झयते नरः।
पात्रे तु त्रिपलारभ्य शतसङ्ख्यावधि क्रमात्॥१६७॥
त्रिपञ्चसप्तनवभिः पात्रं कुर्याद्विचक्षणः।
द्वात्रिंशत्पलसङ्ख्याकं तैलं तत्र तदर्द्धकम्॥१६८॥
चतुर्विंशतिसङ्ख्याकैस्तन्तुभिर्वर्त्तिका भवेत्।
मारणोच्चाटने चैव मानमेतत्प्रकीर्तितम्॥१६९॥
शत्रुगृहीतराज्यस्य पुनः प्राप्ते च सुन्दरि।
पलानां शतसङ्ख्याकं पात्रं तत्र प्रकल्पयेत्॥१७०॥
तदर्द्धतन्तुभिर्वर्तिः स्नेहं तस्माच्चतुर्गुणम्।
कन्यार्थी तु महादेवि दीपं प्रज्वाल्य यत्नतः॥१७१॥
असीतिपात्रमानं च तदर्धं तैलवर्तिकाः।
एकादशपलैः पात्रं भूतोपद्रवनाशने॥१७२॥
महारोगभये प्राप्ते द्वात्रिंशत्पलसङ्ख्यया।
एकादशं षोडशञ्च विंशतिपलसङ्ख्यकम्॥१७३॥
चतुविंशच्च द्वात्रिंशच्चत्वारिंशत्प्रकीर्तितम्।
अशीतिशतमानं च तथा चाष्टोत्तरं शतम्॥१७४॥
पात्रमानं प्रकर्त्तव्यं कार्यभेदेन सुन्दरि।
नित्यदीपे त्रिपलं पात्रं त्रिपलं स्नेहमीरितम्॥१७५॥
अष्टाशीतिपलैः पात्रं तथाष्टाविंशति प्रिये।
वर्तिश्चैव तथा कार्या शतमेकादशैव तु॥१७६॥
सहस्रतन्तुभिर्वापि त्रिशतं शतमेव वा।
चत्वारिंशच्च पञ्चाशत्तथाष्टाविंशति प्रिये॥१७७॥
एकविंशति तन्तुभिर्वर्त्तैः कार्या वरानने।
कौसुम्भं कर्बुरं श्वेतं रक्तं पीतञ्च श्यामकम्॥१७८॥
श्वेतं तु सर्वकार्येषु प्रशस्तं सूत्रमीरितम्।
वेदिकायां लिखेद्यन्त्रं ततः कीलाष्टकार्चनम्॥१७९॥
दीपपात्रं च संस्थाप्य तैलवर्तिसमन्वितम्।
दीपं प्रज्वाल्य मन्त्रेण प्राणस्थापनमाचरेत्॥१८०॥
भैरवं तत्र सम्पूज्य साङ्गावरणकं प्रिये।

बलिं दत्त्वा विधानेन तदग्रे स्थापयेद् घटम्॥१८१॥
ताम्रं वापि सुवर्णं वा जलेनापूर्य मन्त्रवित्।
वेदोक्तेन विधानेन सप्तधान्यदिपल्लवैः॥१८२॥
तस्योपरि न्यसेत्पूर्णपात्रं तस्योपरि न्यसेत्।
यन्त्रं वै भैरवस्याथ पूजयेच्च यथाविधि॥१८३॥
साङ्गं सावर्णकं देवं पूजयेच्च विचक्षणः।
बलिं दत्त्वाथ नीराज्यं तदग्रे जपमाचरेत्॥१८४॥
स्तोत्रं पाठादिकं सर्वं पुरश्चरणमाचरेत्।
कार्यस्य चानुसारेण ब्राह्मणान्वृणुयात्प्रिये॥१८५॥
पञ्चसप्त तथाष्टौ वा एकादशावधिस्तदा।
तान्सर्वान्भक्ष्यभोज्यैश्च वस्त्रैश्चैव मनोहरैः॥१८६॥
आसनोदकपात्रैश्च पूजयित्वा प्रणम्य च।
आचार्यमग्रतः कृत्वा दीपकार्ये नियोजयेत्॥१८७॥
आसने चापविश्याथ तैरेव ब्राह्मणैः शुभैः।
शवद्दीपस्माप्तिः स्यादशुभं नैवभाषयेत्॥१८८॥
दधियुक्तैश्च चणकवटकैः स्नेहपाचितैः।
आपूपैर्मधुसंयुक्तैर्बलिर्देयो दिनेदिने॥१८९॥
दीपनाशे पुनर्दीपं कृत्वा शान्तिं समाचरेत्।
वमने च तथा शब्दे फट्कारे चट्चटे घटे॥१९०॥
एवं जाते कृताशान्तिः शुभं भवति नान्यथा।
मद्यमांसादिभिर्देयो भैरवस्य बलिः प्रिये॥१९१॥
छागादिभिर्बलिर्देयः शान्तिस्तोत्रं पठेत्सुधीः।
साधकान्भोजयेत्पश्चान्नरनारीश्च कन्यकाः॥१९२॥
गणेशान्वटुकान्स्तत्र भोजयेद्विघ्नशान्तये।
एवं सन्तोष्य विधिवच्छान्तिस्तोत्रं पठेत्सुधीः॥१९३॥
पशुपाशायविद्महे शिरच्छेदाय धीमहि।
तन्नः पशुः प्रचोदयात् बलिदानमिदं मन्त्रः॥१९४॥

ॐ अपिपिशितमांसान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष दुं दुं दुर्गायै नमः अलिपिशितमांसान्नबलिं गृह्ण गृह्ण शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं दिने दिने भक्षय भक्षय गणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितः सर्वगणेभ्यो नमः आमिषं गृह्ण गृह्ण भक्षय भक्षय मां रक्ष रक्ष स्वाहा॥

शिवागमतन्त्रोक्त श्रीमद्वटुकभैरवर्दीपदानं परिपूर्णम्

* * *

अथ दीपदानपद्धतिः

दीपदानकालः—तत्रात्मनो यजमानस्य चन्द्रतारानुकूले शुभेऽह्नि तिथिवासरलग्नेषु त्वरितकार्य चेदमृतघटीषु शुभहोरायां वा दीपारम्भं कुर्यात्स च ग्रहणे कृष्णाष्टम्यां दुर्गोत्सवेऽर्घ्योदयादि महापर्वेषु कृतस्तात्कालिकफलप्रदो भवति।

दीपदान का समय—यजमान का जब चन्द्रतारादि अनुकूल हो तो शुभ दिन में तिथि वार तथा लग्न में त्वरित कार्य फल हेतु अमृत लग्न में शुभ होरा में दीप दान करना चाहिये। ग्रहण काल, कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन, दुर्गोत्सव महापर्व काल में (आश्विन नवरात्र काल) अर्घ्योदयादि के सहित किया गया कार्य त्वरित फलवान होता है।

दीपदानसम्भाराः—कपिलागोमयं चिञ्चाद्याम्लद्रव्यं यथाकामनया दीपपात्रं यथोक्तमाज्य तैलं वा यथोक्तवर्तयः शीघ्रकार्ये पात्रपलं चतुषष्टि(६४), द्रव्यपलमष्टोत्तरशतं(१०८), तन्तुं सहस्त्रं(१०००)।

दीपदान की सामग्री—कपिला गाय के गोबर और गोमुत्र का भूमि पर अनुलेपन करके यजमान की कामनानुसार दीपपात्र उसके अनुकूल घी अथवा तेल और तदुनुकूल वत्तियों का निर्माण करना चाहिये। उत्तम पक्ष के अनुसार शीघ्र कार्य की सिद्धि के लिए चौसठ पल का पात्र, एक सौ आठ पल द्रव्य तथा सहस्र तन्तु का संग्रह करना चाहिये।

द्वितीयपक्षे—पात्रपलं द्वात्रिंशत्(३२), द्रव्यपलं अष्टाऽष्टाशीति(८८), तन्तुं शतत्रयं(३००)।

द्वितीय पक्ष—बत्तीस पल का पात्र, अष्ठासी पल द्रव्य तथा तीन सौ तन्तुओंवाली बत्ती का संग्रह करना चाहिये।

मध्यमप्रकारे—पात्रपल त्रयं(३), द्रव्यपलमेकं(१), तन्तुमेकविशतिः(२१)।

मध्यम प्रकार—पात्र तीन पल का, एक पल द्रव्य तथा इक्कीस तन्तुओं की बत्ती का संग्रह करना चाहिये।

दीपमुखं—

साधकः पूर्वाभिमुखः आधारयन्त्रमुखोत्तरे।
अशुभे दीपयन्त्रसाधकानां मुखं दक्षिणे॥१॥

दीपक का मुख—साधक का मुख पूर्व दिशा की ओर तथा आधार यन्त्र उत्तर मुख रखना चाहिये तथा अशुभ कार्य में दीप यन्त्र को दक्षिण मुख रखना चाहिये।

नित्ये षडङ्गुलानि कीलानि(६)। नैमित्तिके द्वादशाङ्गुलानि कीलानि(८)। दीपाग्रे प्रथमकीलपूजनं दक्षिणावर्त्ते। दीपिकाष्टकीलं(८) प्रत्येकस्यामेकम्। वशीकरणे मोहने कीलत्रयं ३ शुभाः। मारणोच्चाटने आकर्षणे विद्वेषणे चत्वारि(४)। अखण्ड-तन्डुलाः रक्तचन्दनं करवीरादि कुसुमानि रक्तक्षौमं तीक्ष्णछुरिकां पञ्चगव्यं स्वर्णादि-शलाकां सदशवासेयुगलानि नारिकेलविल्वफलं चन्दनं ताम्रकुम्भः पूगीफलानि अष्टगन्धं यन्त्रं पत्रं शरावः स्वादुफलानि पञ्चपल्लवाः कुंकुमसिन्दूरादिपूजासामग्री ब्राह्मणानां वरणसामग्री नित्यदक्षिणा पात्रमिति सामग्री।

कीलदि प्रकार—नित्य कर्म में छः अङ्गुल की कील, नैमित्तिक कर्म में द्वादश अङ्गुल की आठ कील दक्षिणावर्ति आठो दिशाओं में स्थापित करना चाहिये। वशीकरण और मोहनादि कार्य में तीन कील शुभ होती हैं। मारणोच्चाटन आकर्षण विद्वेषणादि कार्य में चार कील शुभ होती हैं। विना टुटा हुआ खड़ा खड़ा चावल अखण्ड जलने लायक तन्तु, रक्तचन्दन, करवीरादि पुष्प, रक्तक्षौम, तीक्ष्ण क्षुरिकादि, पञ्चगव्य, स्वर्णादिशलाका, सुन्दर युग्म वस्त्र, नारिकेल तथा विल्वफल, चन्दन, ताबें का कलश पूङ्गीफल, अष्टगन्ध, यन्त्र बनाने का पत्र, सुस्वादु फल, पञ्च-पल्लव, कुङ्कुम सिन्दूरादि पूजन सामग्री, ब्राह्मणों के वरण निमित्त समग्री, नित्य दक्षिणा तथा नूतन पात्रादि का संग्रह करना चाहिये।

तत्र शकुनानि निरीक्ष्य दीपदानात्पूर्वदिने सामग्रीं सम्पाद्य आचार्यो यजमानश्च गणपतिं स्मृत्वा आवश्यकं निर्वर्त्य दन्तान्संशोध्याचम्य स्नात्वा प्राणानायम्य नित्यसन्ध्यां च कृत्वा कर्मसमाप्य पूर्वोक्तसम्भारान्सम्भृत्य कम्बलाद्यासनेषूपविश्य आदौ गणपति पूजनं कृत्वा अर्घ्यसम्पुटं कृत्वा वस्त्राभूषणानि निवेद्य दक्षिणां दत्वा।

शुभ शकुनादि—शुभ शकुन को देख कर दीपदान के पूर्व दिन सामग्री को एकत्रित करके आचार्य और यजमान को गणपति का स्मरण करना आवश्यक है। प्रातः दन्तधावनादि करके स्नानादि के उपरान्त प्राणायाम और नित्य सन्ध्या से निवृत्त होकर समस्त सामग्री को संग्रहीत कर कम्बलादि आसन पर आसीन होकर सर्व प्रथम गणपति का पूजन कर अर्घ्यादि से पूजित करके वस्त्रादि आभूषण निवेदन पूर्वक दक्षिणादि प्रदान कर अनुमति प्राप्त करने के लिए देवतादि की स्तुति करे।

भक्त्यासमागतोऽहं ते पादयोर्भक्तवत्सल।
दीपकार्यं च भवता सम्पाद्यं वै नमो नमः॥२॥

दीपदान की अनुमति—हे भक्तवत्सल महाभैरव! भक्तिपूर्वक आपके सम्मुख दीपकार्य के लिए उपस्थित हैं, आपकें चरणयुगल में नमस्कार है पुनः पुनः नमस्कार है।

इति मन्त्रेण दण्डवन्नमस्कृत्य अन्यांस्त्रीन्पञ्च सप्त नवैकादश वा ब्राह्मणान्वृणुयात्। तैर्ब्राह्मणैः सह पुण्याहवाचनादीनि नान्दिश्राद्धान्तानि कृत्वा पश्चात्तैर्ब्राह्मणैः सहाचार्यो भूशुद्धिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तं मातृकाबहिर्मातृकान्यासान्मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिन्यासकर-

षडङ्गन्यासाङ्गन्यासपदन्यासाक्षरन्यासैकादशन्यासपीठन्यासादीन्पद्धत्युक्तमार्गेण कृत्वा सपादहस्तां समन्ततश्चतुरस्त्रां चतुरङ्गुलोच्चां दीपवेदीं शोधितस्थले निर्मायकपिलागोमयेन उपलिप्य तत्र रक्तचन्दनेन विन्दुविकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलचतुर्द्वारसंयुतं यन्त्रं विलिख्य ततो दीपवेदिकाग्रे कलशं संस्थाप्य तन्दुलेनाष्टदलं कृत्वा तदुपरि कलशं संस्थाप्य भूरसीति भूमिं प्रार्थ्य आजिघ्रेति कलशं महीद्यौरिति जलं या: फलिनीति फल हिरण्यगर्भेति सुवर्णमुद्राम् अश्वत्थेति पञ्चपल्लवान् सुजातो ज्योतिषेति वस्त्रयुग्मं पूर्णादर्वीति पूर्णपात्रं तदुपरि पूजायन्त्रं मध्ये सुवर्णरचितां मूर्तिं संस्थाप्य अग्न्युत्तारणं लोहोत्तारणं कृत्वा तदग्रेपात्रस्थापनं पद्धतिप्रोक्तविधिनाकृत्वा अन्तर्यागं कृत्वा तन्मयोभूत्वा वहिर्यागमावरण-पूजां कृत्वाबलिदानादिनीराजनान्तं कृत्वा होमं सम्पाद्य पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा देवाज्ञां दीपदानं कुर्यात्।

कलश स्थापन विधि—उपर्युक्त मन्त्र से प्रार्थना कर दण्डवत् नमस्कार कर, तीन, पाँच, नव तथा एकादश ब्राह्मणों का वरण कर, उन ब्राह्मणों के साथ पुण्याहवाचनादि के साथ नान्दिश्राद्धादि करने के बाद, उन ब्राह्मणों के साथ आचार्य भूशुद्धि, भूतशुद्धि से प्राणप्रतिष्ठा तक अन्तर्मातृका बहिर्मातृका न्यास, मूलमन्त्र का ऋष्यादि न्यास कर, षडङ्गन्यास, करन्यास, पदन्यास, अक्षरन्यास, एकादशन्यास, पीठन्यास पद्धति में वतलाये हुए विधि से करके सवाहाथ परिमापवाला चतुरस्त्र चार अङ्गुल ऊँचा दीप के लिए वेदी का स्थान शोधित करने के पश्चात् निर्माण कर, कपिला गौ के गोबर से अनुलेपन कर, रक्त चन्दन से विन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलचतुर्द्वार युक्त यन्त्र लिखकर उस दीप वेदि के सम्मुख चावल से अष्टदल निर्मित कर, कलश सन्स्थापित कर, भूरसि० मन्त्र से भूमि की प्रार्थना कर आजिघ्र० मन्त्र से कलशस्थापित कर, महीद्यौ:० मन्त्र से जल तथा फलादि, हिरण्यगर्भ० मन्त्र से सुवर्णमुद्रा, अश्वत्थेवो० मन्त्र से पञ्चपल्लव, सुजातो० मन्त्र से वस्त्राच्छादन कर पूर्णादर्विपरा० मन्त्र से पूर्णपात्र स्थापित कर, उसके ऊपर पूजन यन्त्र रख कर, उस यन्त्र के मध्य सुवर्ण निर्मित प्रतिमा की अग्न्युत्तारण पूर्वक स्थापना कर, उसके आगे पात्रास्थाप कर पद्धति के विधि से अन्तर्याग करके तन्मय(देवमय) होकर, बहिर्याग तथा आवरण पूजा करके बलिदानादि का विधान करते हुए निराजन करने के बाद होमादि सम्पादित करने के पश्चात् देवता को पुष्पाञ्जलि प्रदान करके देवाज्ञा प्राप्त करे।

तद्यथा—आसने उपविश्य वामे गुरुभ्यो नम: दक्षिणे गणपतये नम: हृदि वं वटुकाय नम:। इति नमस्कृत्य अद्येत्यादिप्रयोगमुच्चार्य मम यजमानस्य वा सकलमनोरथसिद्धये प्रयोगानुसारेण चत्वारिंशद्दिनं वाष्टाविंशतिदिनं वा एकाविंशद्दिनं वा पञ्चदशदिनं वा सप्तदिनपर्यन्तममुकसङ्ख्याकमितेन पात्रेण घृतेन तैलेन वा अमुकसङ्ख्याभिर्वर्तिभिर्दीपदानमहं करिष्ये इति सङ्कल्प:॥

यथा—आसन पर बैठ कर साधक अपने बाँये गुरुभ्यो नम: मन्त्र से, अपने दक्षिण

गणपतये नमः मन्त्र से तथा हृदय में वँ वटुकाय नमः मन्त्र से नमस्कार कर, गन्धाक्षत से पूजन करने के बाद अद्येत्यादि देशकालादि का उच्चारण करने के पश्चात् मम अथवा यजमानस्य का समस्त मनोरथ के सिद्धि के लिए पद्धति में निर्दिष्ट प्रयोगानुसार चालिस दिन अथवा अट्ठाईस दिन अथवा इक्कीस दिन अथवा पन्द्रह दिन अथवा सात दिन पर्यन्त अमुक सङ्ख्यात्मक पात्रों से घृत अथवा तेल का अमुक सङ्ख्यात्मक वत्तियों से युक्त दीपदान हम कर रहें है। इस प्रकार का सङ्कल्प करे।

ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवदीपदानमालामन्त्रस्य मन्मथ ऋषिः॥ पंक्तिच्छन्दः॥ आपदुद्धारकवटुकभैरवो देवता॥ वँ बीजं॥ ह्रीँ शक्तिः॥ ॐकीलकं मम सर्वमनोरथसिद्धये दीपदाने विनियोगः॥

विनियोग—हाथ में जल लेकर इस श्रीवटुकभैरव दीपदान माला मन्त्र के मन्मथ ऋषि, पक्ति छन्द, आपत्ति से उद्धार करनेवाले वटुकभैरव देवता, वँ बीज, ह्रीँ शक्ति, ॐ कीलक है, इसका अपने समस्त मनोरथ की पूर्ति के लिए विनियोग करता हूँ। मन्त्र बोल कर विनियोग करे।

अथ मालामन्त्रन्यासः॥ मन्मथऋषये नमः शिरसि॥ पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे॥ वटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये॥ वँ बीजाय नमः गुह्ये॥ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः॥ ॐ कीलकाय नमः नाभौ॥ श्रीमद्वटुकभैरवदेवतायै नमः सर्वाङ्गे॥

मालामन्त्र का ऋष्यादि न्यास—मन्मथ ऋषि का शिर पर, पक्तिछन्द का मुख में, वटुकभैरव देवता का हृदय पर, वँ बीज का गुह्य स्थान पर, ह्रीँ शक्ति का पैरों पर, ॐकार कीलक का नाभि स्थान पर तथा वटुकभैरव का सम्पूर्ण अङ्गों पर न्यास करे।

अथ बीजशक्तिन्यासः॥ ॐ ह्राँ वाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वीँ तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा॥ ॐ ह्रूँ वूँ मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट्॥ ॐ ह्रैँ वैँ अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हुम्॥ ॐ ह्रौँ वौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठभ्यां नमः, अस्त्राय फट्॥ इति करषडङ्गबीजशक्तिन्यासाः॥

बीजशक्ति का न्यास—ॐ ह्राँ वाँ बीज का अङ्गुष्ठ और हृदय पर, ॐ हीँ वीँ बीज का तर्जनी और शिर स्थान में, ॐ ह्रूँ वूँ बीज का मध्यमाङ्गुलि तथा शिखा स्थान पर, ॐ ह्रैँ वैँ बीज का अनाकाङ्गुलि तथा दोनों भुजाओं पर, ॐ ह्रौँ वौँ बीज का कनिष्ठिकाङ्गुलि तथा नेत्रों पर, ॐ ह्रः वः बीज का दोनों हाथों के करतलपरपृष्ठ तथा अपने चारों तरफ रक्षार्थ न्यास करे। इस प्रकार बीज शक्तियों का न्यास करने के बाद आगे का कर्म करे।

प्रयोगानुसारेण सात्त्विकं राजसं तामसं ध्यानं कृत्वा ततः पूर्वोक्तदीपवेद्युपरि लिखितं यद्यन्त्र तदक्षतैः पूरयित्वा तस्या वेद्याः अष्टदिक्षुखदिरवृक्षोद्भवानष्टकीलान्निखाय पूजनं कुर्यात्॥

पद्धति में बतलाये हुए प्रयोग विधि के अनुसार श्रीवटुकभैरव का सात्त्विक, राजस तथा तामस ध्यान करके, पहले से निर्मित दीप वेदि के ऊपर लिखित यन्त्र को अक्षत से पूरित कर, उस वेदि के चारो ओर दिशाओं विदिशाओं में गुलर, पीपल, पाकड, वट, खदिरादि निर्दिष्ट वृक्षों से निर्मित आठ कीलों को रक्षादि मन्त्र से अभिमन्त्रित तथा प्रतिष्ठित कर तत्तद स्थानों पर गाड़ने के बाद पूजन करे, पूजन के पश्चात् अष्टभैरवों को बलि प्रदान करे।

तद्यथा।। तेषु कीलेषु पूर्वादिदिक् क्रमेण माषान्नचणकादिदीपयुतं साधारं बलिं संस्थाप्य पूर्वे 'ॐ ह्रौँ जयन्तभैरव एहि एहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रौँ जयन्तभैरवाय नमः।। इति बलिं दत्त्वा।।

यथा—उन कीलों के पास पूर्वादि दिशा क्रम से माषदधिचूड़ादि युक्त दीप सहित साधार बलि की स्थापन पूजन कर ॐ ह्रौं जयन्तभैरव० मन्त्र से बलि प्रदान करे।

आग्नेये पूर्ववत् अघोरं सम्पूज्य।। ॐ ह्रौँ अघोराभैरव एहि एहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रौँ अघोरभैरवाय नमः।। इति बलिं दत्त्वा।।

यथा—पूर्व के समान ही अग्निकोण में माषदधिचूड़ादि युक्त दीप सहित साधार बलि की स्थापना पूजन कर ॐ ह्रौं अघोरभैरव० मन्त्र से बलि प्रदान करे।

दक्षिणे पूर्ववत् चामीकरं सम्पूज्य।। ॐ ह्रौँ चामीकरभैरव एहि एहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रौँ चामीकरभैरवाय नमः।। इति बलिं दत्त्वा।।

यथा—पूर्व के समान ही दक्षिण दिशा में माषदधिचूड़ादि युक्त दीप सहित साधार बलि की स्थापन पूजन कर ॐ ह्रौं चामीकरभैरव० मन्त्र से बलि प्रदान करे।

नैर्ऋत्ये पूर्ववतसिताङ्गभैरवं सम्पूज्य।। ॐ ह्रौँ असिताङ्गभैरव एहि एहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रौँ असिताङ्गभैरवाय नमः।। इति बलिं दत्त्वा।।

यथा—पूर्व के समान ही नैर्ऋत्य कोण में माषदधिचूड़ादि युक्त दीप सहित साधार बलि की स्थापना पूजन कर ॐ ह्रौं असिताङ्गभैरव० मन्त्र से बलि प्रदान करे।

पश्चिमे पूर्ववद्भीषणं सम्पूज्य ॐ ह्रौँ भीषणभैरव एहि एहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रौँ भीपणभैरवाय नमः।। इति बलिं दत्त्वा।।

यथा—पूर्व के समान ही पश्चिम दिशा में माषदधिचूड़ादि युक्त दीप सहित साधार बलि की स्थापना पूजन कर ॐ ह्रौं भीषणभैरव० मन्त्र से बलि प्रदान करे।

वायव्ये पूर्ववत्प्रचण्डभैरवं सम्पूज्य।। ॐ ह्रौँ प्रचण्डभैरव एहि एहि इमं सदीपं

माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीँ प्रचण्डभैरवाय नमः॥ इति बलिं दत्त्वा॥

यथा—पूर्व के समान ही वायव्य कोण में माषदधिचूड़ादि युक्त दीप सहित साधार बलि की स्थापना पूजन कर ॐ ह्रीं प्रचण्डभैरव० मन्त्र से बलि प्रदान करे।

उत्तरे पूर्ववत्करालभैरवं सम्पूज्य॥ ॐ ह्रीँ करालभैरव एहि एहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीँ करालभैरवाय नमः॥ इति बलिं दत्त्वा॥

यथा—पूर्व के समान ही उत्तर दिशा में माषदधिचूड़ादि युक्त दीप सहित साधार बलि की स्थापना पूजन कर ॐ ह्रीं करालभैरव० मन्त्र से बलि प्रदान करे।

ईशान्ये पूर्ववत्कपालभैरवं सम्पूज्य॥ ॐ ह्रीँ कपालभैरव एहि एहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीँ कपालभैरवाय नमः॥ इति बलिं दत्त्वा॥

यथा—पूर्व के समान ही ईशान कोण में माषदधिचूड़ादि युक्त दीप सहित साधार बलि की स्थापना पूजन कर ॐ ह्रीं कपालभैरव० मन्त्र से बलि प्रदान करे।

इत्यष्टदिक्षु बलिदानेन सम्पूज्य गुरुभ्यो नमः॥ परमगुरुभ्यो नमः॥ परात्परगुरुभ्यो नमः॥ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः॥ ग्लौँ गणपतये नमः॥ क्षौँ क्षेत्रपालाय नम इति नत्वा रक्तचन्दनेन ताम्रपत्रोपरि दीपयन्त्रं लिखेत्॥

पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में बलिप्रदान करने के बाद गुरु(अपने गुरु), परमगुरु(अपने गुरु के गुरु), परात्परगुरु(अपने गुरु के गुरु के गुरु), परमेष्ठिगुरु(सर्वोच्च गुरु भगवान शङ्कर) का गन्धाक्षतपुष्प से पूजन कर गणपति तथा क्षेत्रपाल को गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करने के बाद रक्त चन्दन से ताम्रपात्र के ऊपर दीपयन्त्र का लेखन करे।

त्रिकोणं षट्कोणं चतुरस्रं ताम्रपात्रोत्कीर्णं वा तत्र सन्स्थाप्य रक्तचन्दनाक्तैस्तन्दुलैः पूरयित्वा तत्र पीठशक्तिं पूजयेत्॥

दीप यन्त्र यथा—त्रिकोण, षट्कोण, चतुरस्र ताम्रपात्र के ऊपर निर्मित कर रक्तचन्दन युक्त चावल से पूरित कर पीठ शक्तियों का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ मण्डूकाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ कालाग्निरुद्राय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ कच्छपाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ मूलप्रकृतये नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ आधारशक्तये नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ प्रकृतये नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ कूर्माय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ अनन्ताय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ पृथिव्यै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ क्षीरसमुद्राय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ रत्नद्वीपाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ कल्पवृक्षाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ श्मशानाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ मणिमण्डपाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ धर्माय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ ज्ञानाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ वैराग्याय नमः॥ ॐ

ह्रीँ वँ ऐश्वर्याय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ अधर्माय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ अज्ञानाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ अवैराज्ञाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ अनैश्वर्याय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ पद्माय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ आनन्दकन्दाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ संविन्नालाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः॥

ॐ ह्रीँ तथा वँ बीज से युक्त कर मण्डूक, कालाग्निरुद्र, कच्छप, मूलप्रकृति, आधारशक्ति, प्रकृति, कूर्म, अनन्त, पृथिवी, क्षीरसमुद्र, रत्नद्वीप, कल्पवृक्ष, श्मशान, मणिमण्डप, स्वर्णसिंहासन, धर्म, ज्ञान, वैराज्ञ, ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराज्ञ, अनैश्वर्य, कल्पान्तकार अनन्त, पद्म, आनन्दकन्द, संविन्नाल, विकारमयकेशर, प्रकृत्यात्मकपत्र, पञ्चाशद्वर्णकर्णिका पीठों का पूजन कर, अग्न्यादि मण्डलों का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ मँ दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ अँ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ ऊँ षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ सत्त्वाय नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ रजसे नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ तमसे नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ आत्मने नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ अन्तरात्मने नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ परमात्मने नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ ज्ञानात्मने नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ परतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ वामायै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ ज्येष्ठायै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ रौद्र्यै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ काल्यै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ कलविकरणायै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ बलविकरणायै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ बलप्रमथिन्यै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ सर्वभूतदमन्यै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ मनोन्मनायै नमः॥ ॐ ह्रीँ वँ नमो भगवते सकलगुणात्म-शक्तियुक्ताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः॥

सर्वत्र ॐ ह्रीँ वँ बीज के सहित ॐकार में स्थित मकार तथा दश कलाओं से युक्त अग्नि मण्डल, ॐकार में स्थित अकार तथा द्वादशकलाओं से युक्त सूर्यमण्डल तथा ॐकार स्थित उकार युक्त षोडशकला सहित सोममण्डल का पूजन कर, सत्त्व, रज, तम, आत्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा, ज्ञानात्मा, परतत्त्वान्तपीठदेवता, वामा, ज्येष्ठा, रौद्री, काली, कलविकरणा, बलविकरणा, बलप्रमथिनी, सर्वभूतदमनी, मनोन्मनी, सकलगुणात्मशक्तियुक्त अनन्त योगपीठ का पूजन करे।

इति पीठं सम्पूज्य ततः षट्कोणे ह्राँ वाँ हृदयाय नमः हृदयं पूजयामि॥ ॐ ह्रीँ वीँ शिरसे स्वाहा शिरः पूजयामि॥ ॐ ह्रूँ वूँ शिखायै वषट् शिखां पूजयामि॥ ॐ ह्रैँ वैँ कवचाय हुं कवचं पूजयामि॥ ॐ ह्रौँ वौँ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयं पूजयामि॥ ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् अस्त्रं पूजयामि॥

सर्वत्र ॐ ह्रीँ वँ बीज के सहित षट् कोणों पर हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्रत्रय, अस्त्र पूजन करे।

इति सम्पूज्य यथाकामनया कृतं स्वर्णादिदीपपात्रं सन्स्थाप्य वटुकगायत्रीमन्त्रेण

गोघृतं तिलादितैलं वा सम्पूर्य तत्र गायत्रीमन्त्रेण यथाकामनासङ्ख्यवर्त्तिं निधाय॥ तन्तुसङ्ख्यायावस्तावद्भिर्मन्त्रावृत्तिभिरभिमन्त्र्य मूलमन्त्रेण दीपानुरूपां शलाकां निधाय दक्षिणधरां छुरिकां निखाय ॐ ह्रीँ छ्रीँ छुरिके मम शत्रुच्छेदिनि रिपून्निर्द्दलय निर्द्दलय मां पाहि पाहि स्वाहा॥ इति छुरिकां सम्पूज्य ॐ ह्राँ ह्रीँ सर्वाङ्गसुन्दर्यै शलाकायै नमः इति शलाकां सम्पूज्य पूर्वसन्स्थां वा उत्तरसन्स्थां वा पश्चिमसन्स्थां वा शुभकार्ये अशुभे दक्षिणसन्स्थावर्त्तिं निधाय अद्येत्यादि अमुककामनासिद्ध्ये दीपदानं करिष्ये इति सङ्कल्प्य मूलेन गायत्रीमन्त्रेण वा दीपं प्रज्वालयेत्॥ ततः पूर्ववदृष्यादिषडङ्गकरन्यासं कृत्वा दीपं सङ्कल्पयेत्॥ तत्र मन्त्रः॥ ॐ ह्रीँ ऐँ श्रीँ क्लीँ ऐँ हीँ श्रीँ सर्वज्ञाय प्रचण्डपराक्रमाय वटुकाय इमं दीपं गृहाण सर्वकार्याणि साधय साधय दुष्टान्नाशय नाशय त्रासय त्रासय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा॥ इति मन्त्रेणाक्षतचन्दनपुष्पसहितं जलं दीपाग्रे निक्षिपेत्॥

पूजन करके जैसी कामना हो उसके अनुसार स्वर्णादि निर्मित दीपपात्र की स्थापना कर, वटुकगायत्री मन्त्र से गाय का घी तथा तेल भर कर, गायत्री मन्त्र से ही कामनानुसार बत्तीयों को रख क़र, गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, मूल मन्त्र से दीपक के अनुरूप शलाका रख कर दक्षिण दिशा की ओर धार कर, छुरिका रख कर, ॐ ह्रीँ छ्रीँ छुरिके० मन्त्र से छुरिका का पूजन कर, ॐ ह्राँ ह्रीँ सर्वाङ्ग० मन्त्र से शलाका का पूजन कर, शुभ कार्य में पूर्व, उत्तर तथा पश्चिम की तरफ मुख कर, अशुभ कार्य में दक्षिण की तरफ मुख करके रखना चाहिये। अद्येत्यादि देशकाल बोल कर सङ्कल्प कर ॐ ह्रीँ ऐँ श्रीँ क्लीँ ऐँ हीँ श्रीँ सर्वज्ञाय० मन्त्र से अक्षतचन्दनपुष्पादि समर्पित कर, पूजन कर प्रार्थना करे।

पुनर्दक्षहस्ते जलमादाय॥ पुनः हाथ में जल लेकर।

गृहाणदीपं देवेश वटुकेश महाप्रभो।
ममाभीष्टं कुरु क्षिप्रमापद्भ्यो मां समुद्धर॥३॥

हे वटुकभैरव! महाप्रभु दीपक को ग्रहण कर हमारे समस्त आपत्तियों तथा विपत्तियों को नष्ट कर उद्धार करें तथा हमारे अभिष्ट को पूर्ण करें।

मूलमुच्चार्य वटुकाय इमं दीपं निवेदयामि इति जलं भूमौ निक्षिपेत्। ततो दीपस्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

हाथ में जल ग्रहण कर मूल मन्त्र को उच्चारण पुर्वक वटुकाय इमं दीपं निवेदयामि बोल कर जल को भूमि पर छोड़ने के पश्चात् अधोलिखित प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से दीपक की प्राण प्रतिष्ठा करे।

प्राणप्रतिष्ठामन्त्रम् यथा–ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्य दीपस्य प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं

हंसः अस्य दीपस्य जीव इह स्थितः। ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्य दीपस्य सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा दीपं वटुकमावाह्य यथाकामनया ध्यात्वा आवाहनादिमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन गन्धक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य दीपकलशोपरि आवरणपूजां कुर्यात्।

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र के द्वारा दीपक में वटुकभैरव का आवाहन कर, कामनानुसार ध्यान कर, आवाहनादि मुद्रा प्रदर्शित कर, मूल मन्त्र से गन्धाक्षपुष्पधूपदीपनैवेद्यादि से पूजन कर, दीप कलश के ऊपर स्थापित यन्त्र पर आवरण पूजा करे।

यथा—ॐ ह्राँ वाँ असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरवं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ कपालभैरवाय नमः कपालभैरवं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ संहारभैरवाय नमः संहारभैरवं पूजयामि तर्पयामि।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥४॥

यथा—ॐ ह्राँ वाँ बीज का योजन कर असिताङ्गभैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, उन्मत्तभैरव,कपालभैरव, भीषणभैरव, संहारभैरव का पूजन तथा तर्पण करने के बाद अभिष्ट सिद्धिं मन्त्र बोल कर प्रथमावरण पूजन का समर्पण करे।

ॐ ह्राँ वाँ हृदयायनमः हृदयं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ शिरसे नमः शिरः पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ शिखाय नमः शिखां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ कवचाय नमः कवचं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ नेत्रत्रयाय नमः नेत्रत्रयं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्राँ वाँ अस्त्राय नमः अस्त्रं पूजयामि तर्पयामि।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥५॥

हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्रत्रय, अस्त्र का पूजन तथा तर्पण करने के बाद डाकिन्यादि पुत्रों का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ डाकिनीपुत्रेभ्यो नमः डाकिनीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ राकिनीपुत्रेभ्यो नमः राकिनीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः लाकिनीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ काकिनीपुत्रेभ्यो नमः काकिनीपुत्रं पूजयामि

तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः शाकिनीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः हाकिनीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ मालिनीपुत्रेभ्यो नमः मालिनीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ देवीपुत्रेभ्यो नमः देवीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ उमापुत्रेभ्यो नमः उमापुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ उर्ध्वपुत्रेभ्यो नमः उर्ध्वपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ अधोमुखीपुत्रेभ्यो नमः अधोमुखीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥६॥

डाकिनीपुत्र, राकिनीपुत्र, लाकिनीपुत्र, काकिनीपुत्र, शाकिनीपुत्र, हाकिनीपुत्र, मालिनीपुत्र, देवीपुत्र, उमापुत्र, उर्ध्वपुत्र, अधोमुखीपुत्रों का पूजन तथा तर्पण करने के बाद अभिष्ट सिद्धिं मन्त्र बोल कर तृतीयावरण पूजन का समर्पण करे।

ततः पूर्वे ॐ ह्रीँ वँ ब्राह्मीपुत्राय नमः ब्राह्मीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। ईशाने ॐ ह्रीँ वँ माहेश्वरीपुत्राय नमः माहेश्वरीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। उत्तरे ॐ ह्रीँ वँ वैष्णवीपुत्राय नमः वैष्णवीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। वायव्ये ॐ ह्रीँ वँ नारसिंहीपुत्राय नमः नारसिंहीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। पश्चिमे ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राणीपुत्राय नमः इन्द्राणीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। नैर्ऋत्ये ॐ ह्रीँ वँ महालक्ष्मीपुत्राय नमः महालक्ष्मीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। दक्षिणे ॐ ह्रीँ वँ वाराहीपुत्राय नमः वाराहीपुत्रं पूजयामि तर्पयामि। आग्नेये ॐ ह्रीँ वँ चामुण्डापुत्राय नमः चामुण्डापुत्रं पूजयामि तर्पयामि।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥७॥

ब्राह्मीपुत्र, माहेश्वरीपुत्र, वैष्णवीपुत्र, नारसिंहीपुत्र, इन्द्राणीपुत्र, महालक्ष्मीपुत्र, वाराहीपुत्र, चामुण्डापुत्रों का पूजन तथा तर्पण करने के बाद अभिष्ट सिद्धिं मन्त्र बोल कर चतुर्थावरण पूजन का समर्पण करे।

दशदिग्क्षु प्रादक्षिणक्रमेण ॐ ह्रीँ वँ हेतुकाय नमः हेतुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ वेतालाय नमः वेतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ अग्निजिह्वाय नमः अग्निजिह्वाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ कालान्तकाय नमः कालान्तक-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ करालाय नमः करालायश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ एकपादाय नमः एकपादश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ भीमरूपाय नमः भीमरूपश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ अचलाय नमः अचलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ हाटकेशाय नमः हाटकेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥८॥

दशों दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से हेतुक, त्रिपुरान्तक, वेताल, अग्निजिह्वा, कालान्तक, कराल, एकपाद, भीमरूप, अचल, हाटकेशादि का पूजन तथा तर्पण करने के बाद अभिष्ट सिद्धिं मन्त्र बोल कर पञ्चमावरण पूजन का समर्पण करे।

ॐ ह्रौँ वँ श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः श्रीकण्ठेशपूर्णोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीअनन्तेशविरजाभ्यां नमः श्रीअनन्तेशविरजा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीसूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः श्रीसूक्ष्मेशशाल्मली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमः श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीअमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः श्रीअमरेशवर्तुलाक्षी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीअर्धीशघोणाभ्यां नमः श्रीअर्धीशघोणा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीभारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां नमः श्रीभारभूतेशदीर्घमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीअतिथीशगोमुखीभ्यां नमः श्रीअतिथीशगोमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीहरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः श्रीहरेशकुण्डोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीभौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः श्रीभौतिकेशविकृतमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीसद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः श्रीसद्योजातेशज्वालामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखीभ्यां नमः श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीअक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः श्रीअक्रूरेशश्रीमुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीमहासेनविद्यामुखीभ्यां नमः श्रीमहासेनविद्यामुखी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीक्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः श्रीक्रोधीशमहाकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीचण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः श्रीचण्डेशसरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीकूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः श्रीकूर्मेशात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीएकनेत्रेशभूतमातृभ्यां नमः श्रीएकनेत्रेशभूतमातृ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीचतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः श्रीचतुराननेशलम्बोदरी

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीअजेशद्रावणीभ्यां नमः श्रीअजेशद्रावणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीसर्वेशनागरीभ्यां नमः श्रीसर्वेशनागरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीसोमेशखेचरीभ्यां नमः श्रीसोमेशखेचरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीलाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः श्रीलाङ्गलीशमञ्जरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीदारकेशरूपिणीभ्यां नमः श्रीदारकेशरूपिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीअर्द्धनारीशवीरिणीभ्यां नमः श्रीअर्द्धनारीशवीरिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीउमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः श्रीउमाकान्तेशकाकोदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीआषाढीशपूतनाभ्यां नमः श्रीआषाढीशपूतना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीचण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः श्रीचण्डीशभद्रकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीआन्त्रीशयोगिनीभ्यां नमः श्रीआन्त्रीशयोगिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीमीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः श्रीमीनेशशङ्खिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीमेषेशतर्जनीभ्यां नमः श्रीमेषेशतर्जनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीलोहितेशकालरात्रीभ्यां नमः श्रीलोहितेशकालरात्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीशिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः श्रीशिखीशकुब्जिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीछालगण्डेशकपर्दिभ्यां नमः श्रीछागलण्डेशकपर्दि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीद्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः श्रीद्विरण्डेशवज्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीमहाकालेशजयाभ्यां नमः श्रीमहाकालेशजया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीबालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः श्रीबालीशसुमुखेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीभुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः श्रीभुजङ्गेशरेवती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीपिनाकीशमाधवीभ्यां नमः श्रीपिनाकीशमाधवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीखड्गीशवारुणीभ्यां नमः श्रीखड्गीशवारुणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीकेशवेशवायवीभ्यां नमः श्रीकेशवेशवायवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां नमः श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीभृग्वीशसहजाभ्यां नमः श्रीभृग्वीशसहजा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीनकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः श्रीनकुलीशलक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीशिवेशव्यापिनीभ्यां नमः श्रीशिवेशव्यापिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौँ वँ श्रीसंवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः श्रीसंवर्तकेशमहामाया श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं पष्ठावरणार्चनम्॥९॥

श्रीकण्ठेशपूर्णोदरी, श्रीअनन्तेशविरजा, श्रीसूक्ष्मेशशाल्मली, श्रीत्रिमूर्तिलोलाक्षी, श्रीअमरेशवर्तुलाक्षी, श्रीअर्धीशघोणा, श्रीभारभूतेशदीर्घमुखी, श्रीअतिर्थीशगोमुखी, श्रीस्थाण्वीशदीर्घजिह्वा, श्रीहरेशकुण्डोदरी, श्रीझिण्टीशऊर्ध्वकेशी, श्रीभौतिकेशविकृतमुखी, श्रीसद्योजातेशज्वालामुखी, श्रीअनुग्रहेशउल्कामुखी, श्रीअक्रूरेशश्रीमुखी श्रीमहासेनविद्यामुखी, श्रीक्रोधीशमहाकाली, श्रीचण्डेशसरस्वती, श्रीपञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरी, श्रीशिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्या, श्रीएकादशरुद्रेशमन्त्रशक्ति, श्रीकूर्मेशात्मशक्ति, श्रीएकनेत्रेशभूतमातृ, श्रीचतुराननेशलम्बोदरी, श्रीअजेशद्रावणी, श्रीसर्वेशनागरी, श्रीसोमेशखेचरी, श्रीलाङ्गलीशमञ्जरी, श्रीदारकेशरूपिणी, श्रीअर्द्धनारीशवीरिणी, श्रीउमाकान्तेशकाकोदरी, श्रीआषाढीशपूतना, श्रीचण्डीशभद्रकाली, श्रीआन्त्रीशयोगिनी, श्रीमीनेशशङ्खिनी, श्रीमेषेशतर्जनी, श्रीलोहितेशकालरात्री, श्रीशिखीशकुब्जिनी, श्रीछालगण्डेशकपर्दि, श्रीद्विरण्डेशवज्रा, श्रीमहाकालेशजया, श्रीबालीशसुमुखेश्वरी श्रीभुजङ्गेशरेवती, श्रीपिनाकीशमाधवी, श्रीखड्गीशवारुणी, श्रीकेशवेशवायवी, श्रीश्वेतेशरक्षोविदारिणी, श्रीभृग्वीशसहजा, श्रीनकुलीशलक्ष्मी, श्रीशिवेशव्यापिनी, श्रीसंवर्तकेशमहामायादि का पूजन तथा तर्पण करने के बाद अभिष्ट सिद्धिं मन्त्र बोल कर षष्ठावरण पूजन का समर्पण करें।

ॐ ह्रीँ वँ लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः लकुलीशलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ शक्त्यात्मने नमः शक्त्यात्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ क्रोधात्मने नमः क्रोधात्माश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ दिव्ययोगिनीश्वरेभ्यो नमः दिव्ययोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ अन्तरिक्षयोगिनीश्वरेभ्यो नमः अन्तरिक्षस्थयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ भूमिस्थयोगिनीश्वरेभ्यो नमः भूमिस्थयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ गणपतये नमः गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ भैरवाय नमः भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीँ वँ दुर्गायै नमः दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥१०॥

लकुलीशलक्ष्मी, शक्त्यात्मा, क्रोधात्मा, दिव्ययोगिनी अन्तरिक्षस्थयोगिनी भूमिस्थयोगिनी, गणपति, भैरव, क्षेत्रपाल, दुर्गादि का पूजन तथा तर्पण करने के बाद अभिष्ट सिद्धिं मन्त्र बोल कर सप्तमावरण पूजन का समर्पण करे।

पुनर्मूलेन गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिभिर्वटुकं सम्पूज्य बलिं दद्यात्। दीपस्य वामभागे त्रिकोणवृत्तषट्कोणमण्डलं कृत्वा बलिमण्डलाय नमः इति गन्धाक्षतैः सम्पूज्य तत्राधारे संस्थाप्य तत्र क्षत्रियादिभिः समांसो बलिर्देयः। शाल्योदनशर्करालाजाचूर्णगुडापूपशष्कुलीसमूहसूपपायसान्नादिघृतप्लुतमनेकजातीयं बलिंद्रव्यं त्रिमधुयुतं घृतमधुशर्करामोदकमाषवटकानि विविधभक्ष्यद्रव्याणि वा यथा सम्भवं मापमुद्गान्नप्रधानबलिद्रव्यं

संस्थाप्य बलिद्रव्योपरि घृत रक्तपुष्पं पिष्टदीपं च संस्थाप्य आचम्य मूलेन प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकफलवाप्तये श्रीवटुकभैरवप्रीतये अमुकद्रव्येण बलिदानमहं करिष्ये इति सङ्कप्य ॐ ह्रीँ वँ वटुकबलिद्रव्याय नम इति मन्त्रेण गन्धाक्षतपुष्पैबलिद्रव्यं सम्पूज्य वामकराङ्गुष्ठेन दक्षहस्ते जलमादाय मूलमुच्चार्य ॐ एहि एहि विदुषि पुरं भञ्जय भञ्जय नर्तय नर्तय विग्रह विग्रह महाभैरव वटुक बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। ॐ ह्रीँ वँ एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभार भासुरत्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा इति मन्त्राभ्यां जलमुत्सृजेत्।। समांसबलिपक्षे ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरच्छेदाय धीमहि तन्नः पशु प्रचोदयात्।। ॐ अलिपिशितमांसान्नबलिं गृह्ण गृह्ण मां रक्ष रक्ष दुं दुर्गायै नमः अलिपिशितमांसान्नबलिं गृह्ण गृह्ण शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं दिने दिने भक्ष्य भक्ष्य गणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितः सर्वगणेभ्यो नमः आमिषं गृह्ण गृह्ण भक्ष्य भक्ष्य मां रक्ष रक्ष स्वाहा।। इति मन्त्राभ्यां जलमुत्सृजेत्। ततः स्वहस्ते जलमादायेमं बलिं भुञ्जानं वरदं प्रभुं ध्यायेत्। ततो दीपपात्राभिमुखं यन्त्रमुद्धृत्य प्रथमं कलशस्थापनादिपूजनं न कृतं चेदत्रावसरे पद्धतिरीत्या विधिवत्पूजयेत्। ततोष्टोत्तरशतमष्टोत्तरसहस्रं वा यथाशक्ति मूलं प्रजप्य अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं च एकविंशतिवारं एकादशवारं वा शतवारं महाप्रयोगश्चेत्सहस्रवारं वा ब्राह्मणैः सहावृत्य मन्त्रं प्रजप्य गुह्यातिगुह्येति मन्त्रेण जपं समर्प्य ततः स्तोत्रकवचसहस्रनामादि दीपं समाप्तिपर्यन्तं प्रत्यहं पाठादि कार्यम्। यावद्दीपं तावदशुभं न वदेत् क्रोधपरनिन्दापैशुन्यपरद्रोहपरस्त्रीषु पराङ्मुखो भवेत्। ततो वटुककुमारिकां सुवासिनीश्च पायसान्नैर्वटकमोदकैश्चणकैश्च नानाभक्ष्यभोज्यैश्च तर्पयेत्। तत आचार्यः स्वयं वा शान्तिस्तोत्रं पठेत्।

पुनः मूलमन्त्र से गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यादि के सहित वटुक का पूजन कर, बलि प्रदान करे। दीप के वामभाग में त्रिकोणवृत्तषट्कोण युक्त मण्डल बनाकर, पूजन कर, आधार के ऊपर बलि को स्थापित कर, क्षत्रियादि मांसादि के सहित बलि प्रदान करे। शालि चावल, शर्करा, लावा, गुडादि का चूर्ण, पूआ, पूडी, दाल, खीरादि को घी से संल्पुत करके बलिद्रव्य को त्रिमधु (घृत, मधु, शर्करा के सम्मिश्रण को त्रिमधु कहते हैं) से युक्त कर लड्डू, उर्द का बडा, अनेक प्रकार के भक्ष्य द्रव्य अथवा यथा संभव द्रव्य संग्रह कर, बलि में रख कर, बलि द्रव्य के ऊपर घृत से संप्लुत कर, रक्त पुष्प से वेष्टित कर, दीपक को रखने के बाद आचमन प्राणायामादि करने के पश्चात् देशकाल का उच्चारण पूर्वक श्रीवटुकभैरव के प्रसन्नता के लिए समस्त द्रव्यों का नाम लेकर बलि प्रदान कर रहे है इस प्रकार का सङ्कल्प करे। ॐ ह्रीं वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः इस मन्त्र से गन्धाक्षतपुष्प से बलिद्रव्य का पूजन कर, वाम कराङ्गुष्ठ से दक्षहस्त मे जल लेकर मूल मन्त्र का उच्चारण कर, ॐ एहि एहि० मन्त्र बोलने के बाद एह्येहि० मन्त्र बोल कर, सङ्कल्प का जल छोड़े। मांस का यदि

बलि प्रदान करना हो तो ॐ पशुपाशाय०, ॐ अलिपिशितमांसान्नबलिं० मन्त्र को बोल कर, छोड़ने के पश्चात् अपने हाथ मे जल लेकर, इमं बलिं भुञ्जानं० बोल कर ध्यान कर, दीपपात्र के सामने यन्त्र बनाकर, पहले यदि कलशस्थापनादि पूजन न किया हो तो पद्धति की रीती से विधिवत्पूजन करे। पश्चात् अष्टोत्तरशत, अष्टोत्तरसहस्र, अथवा यथाशक्ति मूल मन्त्र जप कर, अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र का एकविंशतिवार एकादशवार अथवा सौवार, महाप्रयोग के स्थिति में सहस्रबार ब्राह्मणों के साथ आवृत्ति पूर्वक पाठ और जप कर, गुह्यातिगुह्य० मन्त्र से जप का समर्पण कर, स्तोत्र, कवच, सहस्रनामादि का दीप समाप्ति पर्यन्त पाठ करे। जबतक दीपक जलता रहे तब तक अशुभ न बोले, क्रोध, परनिन्दा, पैशून्य, परद्रोह, परस्त्री से पराङ्मुख बना रहे। पश्चात् वटुक कुमारियों सुवासिनियों का खीर, पुड़ी, बड़ा, लड्डू आदि नाना प्रकार के पक्वान्न से भोजन करा कर, सन्तुष्ट कर, गुरु का पूजन कर, आचार्य ब्राह्मणों के साथ शान्ति पाठ कर प्रार्थना करे। जैसा कि अधोलिखित यस्यार्चनेन से गुरुः सदा तक श्लोकों का पाठ करे—

तद्यथा—

यस्यार्चनेन विधिना किमपीह लोके,
कर्मप्रसिद्धिमिति नामफलं प्रसूते।
तं सन्ततं सकलसाधकवाञ्छिताप्ति,
चिन्तामणिसुरगणाधिपतिं नमामि॥११॥
रक्ताम्बरं ज्वलनपिङ्गजटाकलापं,
ज्वालापतिकुटिलचन्द्रधरं त्रिनेत्रम्।
बालार्कधूमफलकाञ्चनतुल्यवर्णं ,
देवीसुतं वटुकनाथमहं नमामि॥१२॥
हरतुकुलगणेशो विघ्नसन्धानशेषान्,
नयतुकुलसपर्यापूर्णतां साधकानाम्।
पिबतुवटुकनाथः शोणितं निन्दकानां,
दिशतुसकलकामान्साधकानां गणेशः॥१३॥
सततवितततेजश्चक्रभासाविनम्र ,
ग्रसमसमुदितो वै श्वाससन्दोहनाभिः।
प्रलयनयननाभिः किन्तु चात्मोद्भवाभिः,
भवतु भुवनगर्भो भैरवो नः पुनातुः॥१४॥
याकाचिद्योगिनीरौद्रा सौम्या घोरतरा पर।
गृह्यतां बलिपूजां सा मम व्याधिं व्यपोहतु॥१५॥
नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु प्रदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा॥१६॥

इति पठीत्वा पश्चात् जपदशांशेन होमादिब्राह्मणभोजनान्तैः सन्तर्प्य ब्राह्मणाज्जपानुसारेण दक्षिणाभिः सन्तोष्य आचार्यं कार्यानुसारेण दक्षिणावस्त्रालङ्कारादिभिः सन्तोष्य प्रणमेत्।

प्रार्थना करने के बाद जप का दशाशं होमादि कर ब्राह्मणों को भोजनादि से सन्तुष्ट कर, जप के अनुसार ब्राह्मणों को दक्षिणादि से सन्तुष्ट कर, आचार्य को कार्यानुसार दक्षिणा, वस्त्र अलङ्कारादि से सन्तुष्ट कर प्रणाम कर, आशिर्वाद ग्रहण करे।

अथ वीरसाधनम्

तत्र साधकेन्द्रः कृतनित्यक्रियः पालाशपत्रकृतषोडशपुटेषु जलेन प्रफुल्लितान् सुपक्वानपक्वान्वा माषान् मुद्गान्मसूराञ्चणकान् ओदनं क्षीरम् अपूपन् सुहालीन् प्रत्येकमेकैकः पदार्थो द्वे द्वे पात्रे एवं षोडशपात्रे सम्पूर्य अन्यपात्रे किञ्चिदधिकं च पूर्वोक्तं सर्वं कन्यया कर्त्तितं कर्पाससूत्रं रञ्जितान् क्षीरवृक्षभवानष्टौ कीलान् स्तम्भनार्थं एकं कीलं तेभ्यः स्थूलं एवं अष्टौकीलान् गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपानष्टौताम्बूलानि फलानि च गृहीत्वा उत्तरसाधकसहितः श्मशाननिकटे गत्वा हस्तौपादौ प्रक्षाल्य आचम्य स्वेष्ट देवतां स्मृत्वा कृताञ्जलिरिदं वाक्यं वदेत्।

अत्र श्मशाने याः काचिद्देवता निवसन्ति हि।
ताः प्रयच्छन्तु मे सिद्धिं प्रसन्नाः सन्तु पन्तु माम्॥१७॥

वीरसाधनप्रयोग—साधक को नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पलाश पत्र से निर्मित सोलह दोनों में जल भर कर, माष, मुद्ग, मसूर, चणक, ओदन, दुध, पुआ, सुहाली प्रत्येक एक एक सुपक्वान्न पदार्थों दो पात्रों और सोलह पात्रों में भर कर, अन्य पात्र में कुछ अधिक रख कर, पहले से कन्या द्वारा काते हुए कपास के सूत और सजायें हुए दुधदार वृक्ष के आठ कीलें स्तम्भनार्थ लेकर उन कीलों को गन्धाक्षतपुष्पादि से पूजन करने के बाद श्मशान के निकट जाकर हाथपैर धोकर आचमन प्राणायाम कर, अपने इष्ट देवता का स्मरण कर, हाथ से अञ्जलि बनाकर अत्रश्मशानेयाः० वाक्योच्चारण पूर्वक प्रार्थना करे।

इति सम्प्रार्थ्य आत्मरक्षां कुर्यात्। इस प्रकार प्रार्थना करके अधोलिखित कवच पाठ पूर्वक आत्म रक्षा करना चाहिये। **तद्यथा।** जैसे—

पूर्वे मां शङ्करः पातु तथाग्नेयां च शूलधृक्।
कपाली दक्षिणे पातु नैर्ऋत्ये जटिलोऽवतु॥१८॥
पश्चिमे पार्वतीनाथो वायव्ये प्रमथाधिपः।
उत्तरे मुण्डमालोऽव्यादीशान्ये वृषभध्वजः॥१९॥
उर्ध्वं पातु तथा शम्भुरधस्ताद्धूलिधूसरः।
अग्रतो भैरवः पातु पृष्ठतः पातु खेचरः॥२०॥

दक्षिणे भूचरः पातु वामे च पिशिताशनः।
केशान्पातु विशालाक्षो मूर्धानं च मरुत्प्रियः॥२१॥
मस्तकं पातु भृग्वीशो नेत्रे पातु महामनाः।
कपोलौ पातु वीरेशो गण्डौगण्डाभिमर्दनः॥२२॥
उत्तरोष्ठे विरूपाक्षो ह्यधरे योगिनीप्रियः।
अक्षरेषु दक्षविध्वंसी चिबुके तु कपालधृत्॥२३॥
कण्ठे रक्षतु मां देवो नीलकण्ठो जगद्गुरुः।
दक्षस्कन्धे गिरीन्द्रेशो वामस्कन्धे वसुञ्जयः॥२४॥
दक्षिणे च भुजे सर्वमन्त्रनाथः सदावतु।
वामे भुजे सर्वभौमो हृदये पातु पाण्डुरः॥२५॥
दक्षस्तनेपशुपतिर्वामे पातु महेश्वरः।
उदरे सर्वकल्याणकारकोऽवतु मां सदा॥२६॥
नाभौ कामप्रविध्वन्सि जङ्घे पातु दयामयः।
जानुनी पातु जामित्रो गुल्फौ गौरीपतिः सदा॥२७॥
पादपृष्ठे सामनिधिस्तथा पादाङ्गुलिर्हरः।
पादाधः पातु सततं व्योमकेशो जगत्प्रियः॥२८॥

इति रक्षामन्त्रान्पठित्वा पूर्वादिदिक्षु रक्षाबीजमन्त्रान्पठन्नमस्कुर्यात्। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः नमः पूर्वे॥ ॐ ह्रीँ ह्रूँ ह्रौँ नमः आग्नेये॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ नमः दक्षिणे॥ ॐ ग्लूँ न्लूँ नग नग नैर्ऋत्ये॥ ॐ न्यूँ म्रूँ प्रूँ सं सः नमः पश्चिमे॥ ॐ म्राँ म्राँ नमः वायव्ये॥ ॐ भ्राँ भ्राँ भैरवे नमः उत्तरे॥ ॐ ब्रूँ ब्रूँ म्रूँ फट् नमः ईशान्ये॥ ॐ ग्लौँ ब्लूँ नमः ऊर्ध्वे॥ ॐ घ्राँ घ्रीँ घ्रः नमः अधोदेशे। एवं बीजमन्त्रेण रक्षां कृत्वा।

रक्षा कवच का पाठ करने के बाद पूर्वादि दिशाओं में रक्षा बीज मन्त्र पाठ पूर्वक नमस्कार करने के पश्चात् स्तम्भनार्थ कीलों को आठो दिशाओं में अधोलिखित विधि से भूमि में गाड़े तथा तत्तद मन्त्रों से बलिदान प्रदान करे।

ततः पूर्वाद्यष्टदिक्षु कीलाष्टकं मध्यश्मशाने च स्तम्भार्थं कीलकं च निखाय पूजासाहित्यं मध्यस्तम्भसमीपे सन्थाप्य पूर्वाभिमुखो भैरवं प्रार्थयेत्। ॐ भाँ भैरवभैरवाय नमः भाँ भैरव भैरव भयङ्कर हर मां रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा। इति प्रार्थयित्वा। ततः सिद्धमाषभरितपालाशपुटकं गन्धपुष्पधूपदीपादिपूजासामग्रीं गृहीत्वा पायसोदकपात्रहस्तो निर्भयः पूर्वकीलसमीपं गत्वा। तत्र ॐ लँ इन्द्रं साङ्गं सपरिवारं इहागच्छेत्यावाह्य। ऐरावतारूढं वज्रहस्तं पीतवर्णं सहस्राक्षं सुरगणपरिवारं ध्यात्वा। ॐ लँ इन्द्राय नमः आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र माषपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्

ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ भो इन्द्र सुरनायक शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धिं मे देहि रक्षा मां इमं माषबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत्। तत आग्नेयकोणेगतकीलसमीपं गत्वा तत्र ॐ रँ अग्ने साङ्गं सपरिवारं इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। मेषमारूढं शक्तिहस्तं त्रिनेत्रं तेजोनिधिं ध्यात्वा। ॐ रँ अग्नये नमः आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र मुद्गभरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ॐ ह्लाँ ह्लीँ ह्लूँ भो अग्नि तेजोनायक शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धिं मे देहि रक्षा मां इमं माषबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत्। ततः दक्षिणकीलसमीपं गत्वा तत्र ॐ यँ यम साङ्गंसपरिवारं इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं प्रेतगणपरिवेष्टितं ध्यात्वा। ॐ यँ यमाय नमः आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र मसूरभरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ॐ प्राँ प्रीँ प्रूँ भो यम प्रेताधिपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धिं मे देहि रक्षा मां इमं माषबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत्। ततः नैर्ऋत्यकोणगतकीलसमीपं गत्वा तत्र। ॐ क्षँ नैर्ऋत्ये नमः साङ्गं सपरिवारं इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। प्रेतारूढं धूम्रवर्णं खड्गहस्तं रक्षोभिः परिवृतं ध्यात्वा। ॐ क्षँ निर्ऋतये नमः आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र चणकभरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ॐ फ्राँ फ्रीँ फ्रीँ भो भो रक्षोनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धिं मे देहि रक्षा मां इमं चणकबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत्। ततः पश्चिमकीलसमीपं गत्वा तत्र ॐ वँ वरुणं साङ्गं सपरिवारं इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। मकरारूढं पाशहस्तं श्वेतवर्णं यादोगणपरिवारसहितं ध्यात्वा। ॐ वँ वरुणाय नमः आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र मुद्गभरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ॐ व्राँ व्रीँ व्रूँ भो भो वरुण जलनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धिं मे देहि रक्षा मां इमं ओदनबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत्। ततो वायुकोणगतकीलसमीपं गत्वा तत्र ॐ वायो साङ्गं सपरिवारं इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। मृगारूढं वृक्षायुधधरं स्वमरुद्गणसहितं ध्यात्वा। ॐ यँ वायवे नमः आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र पायसपूरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं

गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ॐ वाँ वीँ वूँ भो भो वायो भुवनपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धिं मे देहि रक्षा मां इमं माषबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत्। ततः उत्तरदिग्गतकीलसमीपं गत्वा तत्र ॐ कुँ कुबेर साङ्गं सपरिवारं इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। नरारूढं गदाहस्तं शुक्लवर्णं यक्षगणपरिवृतं ध्यात्वा। ॐ कुँ कुबेराय नमः आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र अपूपभरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ भो भो कुबेर यक्षनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धिं मे देहि रक्षा मां इमं माषबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत्। ततः ईशानकोणगतकीलसमीपं गत्वा तत्र ॐ हँ ईशान साङ्गं सपरिवारं इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। वृषभारूढं त्रिशूलहस्तं श्वेतवर्णं त्रिनेत्रं तेजोनिधिं विद्यागणसेवितं ईशानं ध्यात्वा। ॐ हँ ईशानाय नमः आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र सुहालीभरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ॐ श्राँ श्रीँ श्रूँ भो भो ईशान विद्याधिपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धिं मे देहि रक्षा मां इमं शष्कुलीबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्त्वा प्रणमेत्। इत्यष्टदिक्पालबलिं दत्त्वा मध्यस्तम्भसमीपं गत्वा निर्भयः सन्। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः क्ष्राँ क्ष्रीँ क्ष्रूँ क्ष्रः ख्राँ ख्रीँ ख्रूँ ख्रः घ्राँ घ्रीँ घ्रूँ घ्रः म्राँ म्रीँ म्रूँ म्रः म्रेँ म्रैँ म्रोँ म्रौँ ह्रोँ ह्रौँ ह्रोँ ह्रौँ क्लौँ क्लौँ क्लौँ क्लौँ श्रौँ श्रौँ श्रौँ श्रौँ ज्रौँ ज्रौँ ज्रौँ ज्रौँ हुँ हुँ हुँ हुँ हुँ हुँ हुँ फट् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरवनाथ नाथ हुं फट् इति मन्त्रेण स्वशरीरे व्यापकरूपेणात्मरक्षां कृत्वा स्तम्भसमीपे स्वासने पूजिते पूर्वाभिमुखमुपविश्य स्वपुरतः स्तम्भात्पश्चिमे सुसमे भूतलेऽष्टदलं पद्मं कृत्वा तद्बहिः पुनरष्टदलम्, तद्बहिश्चतुर्द्वायुक्तं चतुरस्त्रत्रयं च कृत्वा तन्मध्ये देवमावाह्य आसनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य। अङ्गानि सम्पूज्य।

अठो दिशाओं में कीलों को गाड़ने के पश्चात् व्यापक रूप से आत्मरक्षा कर, स्तम्भ के समीप अपने पूजित आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर, अपने आगे स्तम्भ के पश्चिम भूतल पर अष्टदल कमल का निर्माण कर, उसके बाहर पुन: अष्टदल पद्म का निर्माण कर, उसके बाहर चतुद्वार युक्त कर, उस चक्र के मध्य देवता का आवाहन तथा आसनादि उपचारों से पूजन कर अङ्ग(आवरण) देवताओं का पूजन करे।

तत्राष्टदले पूर्वादिक्रमेण ॐ ह्रीँ वँ असिताङ्गभैरवाय नमः। ॐ ह्रीँ वँ रुरुभैरवाय नमः। ॐ ह्रीँ वँ चण्डभैरवाय नमः। ॐ ह्रीँ वँ क्रोधभैरवाय नमः। ॐ ह्रीँ वँ उन्मत्तभैरवाय नमः। ॐ ह्रीँ वँ कपालभैरवाय नमः। ॐ ह्रीँ वँ भीषणभैरवाय नमः। ॐ ह्रीँ वँ संहारभैरवाय नमः।

इत्याद्यावाह्य ततः षोडशदलेषु वटुकमित्राणिपूजयेत् पूर्वादिक्रमेण। तद्यथा—

वहीं अष्टदल पर पूर्वादि क्रम से असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाल, भीषण, संहारादि भैरवों का पूजन करने के पश्चात् सोलह पत्रों पर वटुकभैरव के मित्रों का पूर्वादि क्रम से पूजन करे। यथा—

ॐ ह्रीँ वँ कुलिशाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ सुकुलिशाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ जामित्राय नमः, ॐ ह्रीँ वँ रामठाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ अरिभाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ प्रचण्डाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ चण्डकेशाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ चण्डात्मने नमः, ॐ ह्रीँ वँ चामराय नमः, ॐ ह्रीँ वँ चरित्राय नमः, ॐ ह्रीँ वँ चत्मत्काराय नमः, ॐ ह्रीँ वँ चञ्चलाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ चारूभूषणाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ चामीकराय नमः, ॐ ह्रीँ वँ चारुवाहाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ कितवाय नमः इति सम्पूज्य तद्बहिरष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण।

सोलह पत्रों पर कुलिशादि वटुकमित्रों का पूजन करने के बाद ब्रह्मी आदि शक्तियों का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ ब्राह्म्यै नमः, ॐ ह्रीँ वँ माहेश्वर्य्यै नमः, ॐ ह्रीँ वँ कौमार्यै नमः, ॐ ह्रीँ वँ वैष्णव्यै नमः, ॐ ह्रीँ वँ वाराह्यै नमः, ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राण्यै नमः, ॐ ह्रीँ वँ चामुण्डायै नमः, ॐ ह्रीँ वँ महालक्ष्म्यै नम इति मातृः सम्पूज्य बहिः चतुरस्रे दिक्पालान् पूजयेत् पूर्वादिक्रमेण। तद्यथा—

ब्राह्मी आदि मातृ शक्तियों के पूजन करने के पश्चात् चतुरस्र पर दिक्पालों का पूर्वादि क्रम से पूजन करने के बाद वज्रादि अस्त्रों का पूजन करे।

ॐ ह्रीँ वँ इन्द्राय नमः, ॐ ह्रीँ वँ अग्नये नमः, ॐ ह्रीँ वँ यमाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ निर्ऋतये नमः, ॐ ह्रीँ वँ वरुणाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ वायवे नमः, ॐ ह्रीँ वँ कुबेराय नमः, ॐ ह्रीँ वँ ईशानाय नम इति लोकेशान सम्पूज्य तन्निकटे अस्त्राणि पूजयेत्पूर्वादिक्रमेण ॐ ह्रीँ वँ वज्राय नमः, ॐ ह्रीँ वँ शक्तये नमः, ॐ ह्रीँ वँ दण्डाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ खड्गाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ पाशाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ अङ्कुशायुधाय नमः, ॐ ह्रीँ वँ गदायै नमः, ॐ ह्रीँ वँ त्रिशूलाय नम इत्याद्यस्त्राणि सम्पूज्य मध्ये श्रीवटुकभैरव सम्पूज्य आवाहितदेवताभ्यो गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपान् पृथक् पृथक् पात्रेषु च पायसनैवेद्य च समर्प्य अक्षतानादाय स्थापितयन्त्रदेवतामण्डले विकिरन् वीरशान्तिं पठेत्।

दस दिग्पालों और दिग्पालास्त्रों का पूजन करने के बाद मध्य में श्रीवटुकभैरव का पूजन कर, आवाहित देवताओं का गन्धाक्षतपुष्प से पूजन कर, अलग अलग पात्रों में पायसान्नादि नैवेद्यो का समर्पण कर, हाथ में अक्षत ग्रहण कर, स्थापित यन्त्र देवता मण्डल पर छोड़े।

ॐ ह्रीँ वँ चण्डआयाहि, ॐ ह्रीँ वँ प्रचण्डआयाहि, ॐ ह्रीँ वँ ऊर्ध्वकेशआयाहि,

ॐ ह्रीँ वँ भीषणआयाहि, ॐ ह्रीँ वँ प्रभीषणआयाहि, ॐ ह्रीँ वँ व्योमकेशआयाहि, ॐ ह्रीँ वँ व्योमवाहोआयाहि, ॐ ह्रीँ वँ व्योमव्यापकआयाहि इत्याहूय पृथग्गन्धादिभिरुपचारैः सम्पूज्य पायसनैवेद्यं च पृथक् पृथक् समर्प्य निर्भयः सन् पश्चिमाभिमुखः प्राणायामऋष्यादिन्यासपूर्वक पूर्वोक्तान् न्यासान्कृत्वा प्राग्वन्मालां सम्पूज्य मूलमन्त्रस्याष्टाक्षरपदोच्चारणपूर्वकमुच्चेस्तरां जपन् वामहस्तेन पायसपात्रमादाय देवं भोजयन् प्रसन्नचित्तो जपं कुर्यात्।

यन्त्रादि के पूजन के बाद चण्ड, प्रचण्ड, ऊर्ध्वकेश, भीषण, प्रभीषण, व्योमकेश, व्योमवाहू, व्योमव्यापकादि का आवाहन करके उनका पृथक् पृथकपूजन कर, पायसान्नादि बलिदान देकर निर्भय होकर, पश्चिमाभिमुख पूर्वोक्त विधि से प्राणायामऋष्यादि न्यास कर, माला का पूजन कर, मूल मन्त्र उच्चारण पूर्वक जप कर, वायें हाथ से पायस पात्र ग्रहण कर देवता को भोग लगाकर प्रसन्न चित्त हो उपांशु जप करे।

ततस्तृप्तो देवो वरं वरयेति ब्रूयात्तदा दण्डवद्भूमौ प्रणम्य निजेप्सितवरं गृहीत्वा स्वयं गत्वा महोत्सवं कुर्यात्॥ इति वीरसाधन विधिः॥

जप पूजनादि से तृप्त देवता वर प्रदान करते हैं, उनसे अभिलषित कामना निवेदित कर भूमि पर दण्डवत् प्रणाम कर, अभिलषित वर प्राप्त कर, घर जाकर महोत्सव करे।

दीपदानपद्धतिं परिपूर्णम्

⁂

पूजनोपयोगीसामग्री

रोली—१०० ग्रा०

मौली—१ वण्डल बड़ारील

अबीर—१०० ग्रा०

बुक्का—१० ग्रा०

कपूर—२५० ग्रा०

लवङ्ग—५० ग्रा०

इलायची—५० ग्रा०

चावल खड़ा—५ कि०ग्रा०

रङ्ग (लाल, हरा, पीला, काला—१० ग्रा० प्रत्येक)

दियासलाई—१ बण्डल

अगरबत्ती—५ बण्डल सुगन्धित

यज्ञोपवीत—४० पीस

घी—५ कि०ग्रा०

शहद—२५० ग्रा०

चीनी—२५० ग्रा०

रुई—१०० ग्रा०

इत्र—१० मि०ग्रा०

गुलाब जल—५०० मि०ग्रा०

पीली सरसों—२५ ग्रा०

पञ्चरत्न—८ पुड़िया

सप्तमृत्तिका—८ पुड़िया

सर्वौषधी—८ पुड़िया

जौ—१ कि० ग्रा०

शतावरी—५० ग्रा०

सुपाड़ीबड़ी—२ कि०ग्रा०

पञ्चमेवा—५०० ग्रा०

गरिगोला—२ नग

नारियल—१२ नग

मेंहदी—२५० ग्रा०

हल्दी—२५० ग्रा०

कालीमिर्च—२५० ग्रा०

पलास का पत्तल—५० नग

कालाउर्द—१ कि० ग्रा०

तिल का तेल—२ कि० ग्रा०

सफेद कपड़ा—५ मी०

लाल कपड़ा—१ मी०

धोती सूती—१ नग

गमछा—१२ नग

साड़ी-साया-ब्लाउज—२ सेट

सुहाग पिटारी—२ नग

कलश बड़ा मिट्टी का ढ़क्कन सहित—१ नग

कलश छोटा मिट्टी का ढ़क्कन सहित—७ नग

कसोरा—५० नग

दीया—२०० नग

दोना—२०० नग

पूर्णपात्र—१ नग

चरुपात्र—१ नग

चौकी—२ नग २ फुट लम्बा चौडा
पाटा—३ नग २ फुट लम्बा चौडा
दूध—२५० ग्रा०
दही—२५० ग्रा०
पान का पत्ता—२५ पीस प्रतिदिन
फल—१ कि०ग्रा० प्रतिदिन
मीठा—१ कि०ग्रा० प्रतिदिन
माला—२५ नग प्रतिदिन
फूल—५०० ग्रा० प्रतिदिन
दूर्वा—१ मुट्ठा प्रतिदिन
तुलसी—५० नग प्रतिदिन
विल्वपत्र—१०० नग प्रतिदिन
आम्रपल्लव—१० नग
कुशा—१०० नग
गोबर—१०० ग्रा०
गोमुत्र—१०० ग्रा०
हवन सामग्री—
काला तिल—१० कि०ग्रा०
सफेद तिल—२ कि०ग्रा०
पीला सरसों—२ कि०ग्रा०
राई—२ कि०ग्रा०
कमलगट्टा—१ कि०ग्रा०
गुगुल—२५० ग्रा०
लोहबान—१ कि० ग्रा०
सुगन्धवाला—२५० ग्रा०
सुगन्धकोकिला—२५० ग्रा०
लाल चन्दन का चूरा—१ कि० ग्रा०
सफेद चन्दन का चूरा—१ कि० ग्रा०
सेंधा नमक चूरा—२ कि० ग्रा०
धान का लावा—२५० ग्रा०
पञ्चमेवा—५०० ग्रा०
धत्तुर फल का बीज—२५० ग्रा०
मदार का पत्ता—१०० नग
मदार की लकड़ी—१०८ नग
आम की लकड़ी—२५ कि०ग्रा०
बेर की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
लाल चिचिडी की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
पीपल की लकड़ी—५ कि०ग्रा०
गाय की गोहरी—२०० नग
गुलर की लकड़ी—१००८ नग
पलास की लकड़ी—१००८ नग
वट की लकड़ी—१००८ नग